॥ प्रस्तावना ॥

॥ श्री वीतराग परमात्माएं बे प्रकारनो धर्म उपदेश्यो छे, जेनी परंपरा अनादिकालथी चाली आवे छे, तेमां प्रथम सर्वोत्कृष्ट धर्म तो साधुजनने अंगीकार करवा योग्य सर्वत्यागरूप पंचमहाव्रत छे, ते धर्म सर्वथकी कहेवाय छे अने बीजो देशथकी धर्म ते श्रावकजननें अंगीकार करवा योग्य श्री सम्यक्त्व मूल बारव्रत रूप छे. तेमां कोइएक श्रावक तो संपूर्ण बारे व्रत अंगीकार करे छे, कोइएक, द्वितीयव्रतादि संपूर्ण अंगीकार करे छे. कोइएक वली प्रत्येक व्रत मांहेलो जेटलो जेटलो भाग तेनाथी पलाइ शकाय छे, तेटलो भागल अंगीकार करे छे. एम जे जेटलां व्रत अथवा जे व्रतमांहेलो जेटलो विभाग पालवाने शक्तिमान् थाय छे, ते तेटलो विभाग अंगीकार करे छे. ए श्रावकनां बार व्रत अथवा ते मांहेलो कोइ पण विभाग जे सेवन करवो ते यतिनां पांच माहाव्रत सेवन करवा रूप कार्यनुं कारण छे. एटले यतिधर्म कार्य छे अने श्रावकधर्म तेनुं कारण छे.

ते कारण रूप श्रावक धर्मने सेवन करनारा एवा अनेक उत्तम जीवो पण छेवट यतिना पांच महाव्रत रूप कार्यधर्मनी प्राप्ति करी ते धर्मनुं सेवन करी मोक्षरूप नगरें पहोंच्या छे,तेवा लक्षावधि महान्पुरुषोनां चरित्रो श्री जैनग्रंथोमां परंपरायें हरहमेश चाल्यां आवे छे अने आ मध्यम कालमां एटले आज वर्त्तमान समयमां पण तेवां चरित्रो मांहेला सहस्रो गमे चरित्र विद्यमान छे, जे मांहेला अनेक ग्रंथोना नाम दररोज व्याख्यान करनारा तथा श्रवण करनारा साधु अने श्रावक जनोने स्मरणमां पण छे, तथापि ते सर्व ग्रंथोनी पंक्तिमां प्रथम गणना करवा योग्य आ श्रीजयानंद केवलीनी कथा छे कारण के एमणे शुद्ध श्रद्धान पूर्वक अतिचार न लगाडतां यत्नसहित शूरवीर पणे श्रावकनां व्रत सेवन कर्यां छे. ए महा पुरुषना जन्म निर्वाणादि सर्व, नवमा श्री सुविधिनाथ परमात्माना तीर्थमां थयेलां छे.

ए प्रतापी पुरुषना चरित्रनी परंपरा जोतां एमनुं छेल्लुं चरित्र संवत् पन्नरसेंना शैकामां श्रीजैनशासनोन्नतिकारक,त्रिदश तरंगिणी आदिक सेंकडो ग्रंथोना कर्त्ता श्रीमुनिसुंदर सूरि माहाराजें संस्कृत भाषामां रच्युं छे. परंतु हालमां घणा ग्रंथोने पद्यबंध रास रूपें रचवानो चाल वधारे पसंद होवाथी मुनि

श्रीपद्मविजयजी महाराजें ए ग्रंथनी जूदी जूदी देशियोमां वर्णेने ते ढाल करीने रास रूपें रच्युं छे, जेथी ए कथा जाग सर्व वांचनार साहेबोने घणोज स हेलाइथी समजवामां आवशे.

आ महान् प्रतापी पुरुषना चरित्रमां मुख्यत्वें करी, श्रावक व्रत पाल वाना फलनुं महात्म्य संपूर्ण दीपामां आवशे, ए श्री जयानंदजीयें आगल मतिसुंदर नामे प्रधानना जवमां श्रावकने आचरवा योग्य प्राणातिपातादिक द्वादश व्रत शुद्ध श्रद्धान पूर्वक पाल्यां, तेमना फल पण तेमने तेवांज मल्यां छे. प्रथमतो देवादिकनां सुख जोगवीने फरी वेचोने पण जितवाने दुर्लन एवा महा पराक्रमी श्रीजयानंदनामें राजा थया छे, जेना प्रबल प्र ताप विषयिक महा अद्भुत अने आश्चर्य कारक वांचनारना हृदयमां आ नंद उपजावनारी एवी नवा नवा कौतुको सहित चमत्कारिक कथाउ आ चरित्रना नवे खंममां संपूर्ण दीपामां आवशे.

नविन बोधबीजनी प्राप्ति वांछनार जव्य जीवोने आ चरित्र वांचवा थी तथा श्रवण करवाथी,श्रावक व्रत पालवाना फलनो निश्चय थशे, तेमज यति धर्म पालवाथकी जे उत्तम सुखोनी प्राप्ति थाय छे, ते पण स्पष्ट दृष्टि गोचर थशे, तथा गतजवें जे स्वल्प मात्र पण शुनाशुन कृत्य आचरण कर्युं होय तेना सुख दुःखादि शुनाशुन फल पण अवश्य जोगववां पडे छे ते पण प्रत्यक्ष समजवामां आवशे, जेथकी तेमने बोधि पामवी सुलन थशे.

ए श्रीजयानंदजी पूर्वकृत पुण्यानुसारें, गाम गाम सर्वकार्यनी सिद्धि पाम्या छे,तथा नवी नवी राज कन्याउ परण्या छे, तेमज राजादिको सार्थे युद्ध करवामां जय पाम्या, ते तो साधारण वात छे. परंतु केटलाएक वखत देव देवीयोनी सार्थे संग्राम करी तेमने पण जितीनें पोताना सेवक कर्या छे. एवा ए महा पराक्रमी थया छे एमनी जेटली प्रशंसा करियें एटली थोडीज छे,

आ चरित्र छापतां प्रथम एना चौद फारम सुधी तो एकज प्रति म ...हस्तगत थइ हती; अने त्यार पछी बीजी प्रति मली आवी तेथी सं ... करवाने अनुकूलता थइ; तथापि दृष्टिदोष, कंपोस करनारनी चू ... महारी स्वल्पबुद्धिने लीधे जे जूल थइ होय ते सुज्ञानियें सुधारी माहारा उपर जूल चूकनी क्षमा करवी. एवी महारी प्रार्थना छे.

श्रावक. जीमसिंह. माणक.

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ पंमितश्री पद्मविजयजीविरचित ॥

॥ श्रीजयानंद केवलीनो रासप्रारंभः ॥



॥ दोहा ॥

॥ प्रथम प्रथम प्रणमुं प्रनु, सोहे अंसें जास ॥ कुंतल कनक कलश शिरे, नील कमल मनु न्यास ॥ १ ॥ सिद्धारथ सुत सिविहगुं, वंदूं तिविहा वीर ॥ जनक सिद्धारथ डुविह जिन, धरणीधर पइ धीर ॥ २ ॥ कल्याणकें जस सुर करे, अवनी कलप अविशेष ॥ ते सुगुणा वरतो सवे, जपंना जिन शेष ॥ ३ ॥ मात परें पद मांमवा, शास्त्र मारग समजाव ॥ शेशुपरें कविनें शीखवे, प्रणमुं सरसति पाय ॥ ४ ॥ गुरु उत्तमगुणगणरया, मुज उपकार महंत ॥ प्रणमुं पदकज प्रेमशुं, आणी हरख अत्यंत ॥ ५ ॥ श्रीजयानंद सोनागीया, केवल लखमी कंत ॥ धर्म डुविध आराधिने, शिवसुख जे साधंत ॥ ६ ॥ नव्यप्रतिबोधन नणी, चरित्र नणुं सुविचार ॥ नवखंनें करी निर्मलो, रचशुं रास उदार ॥ ७ ॥ प्रिया सहित पुरलवें, समकेतनें वली शील ॥ दान धर्म वली दाखवुं, लहे जिम लखमी लील ॥ ८ ॥ चमत्कारकारी चरित, सुणतां होशे स्वाद ॥ डुख दोहग दूरे जशे, विकथा मूकी वाद ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ जंबुद्वीप लख योजन मान, सात क्षेत्र तेहमां परधान, सात वरष पण पट वर्ष धरो, चमत्कारी ए वातें खरो ॥ १ ॥ लखमी रासण विधियें करो, जगती कोट अठ योजन धस्यो ॥ खाई लवण सायरनी करी, तर्ने द्वीप लख रह्या अनुसरी ॥ २ ॥ तेहमां नरत दक्षिण दिशें कह्यो, वैताढ्य दंम लेइनें रह्यो ॥ आपद वारण मानुं एह, पट खंनें शोजित ने जेह ॥ ३ ॥ खंम क्लेश मली रखे करे, तिणें धाता विचें आटल धरे ॥ नंदा सिधुने वली पाढ, वैताढ्य रजत तणो अतिगाढ ॥ ४ ॥ नेत्राह जिन

वर पमुहा होय, मध्य खंभ ते एहवो जोय ॥ रतिवर्द्धन तिहां नगरी अ छे, स्वर्ग तणी शोना तेह पछें ॥ ५ ॥ फटिक कुंन तिहां चैत्यनें शिरें, अंधकार ते दूरें करे ॥ पूनम अमासनो वहेरो नही, सयल अनीति गइ दूरें वही ॥६॥ नृप गजशालायें कलह ते कह्यो, बंधन नारि धम्मिल्लें रह्यो ॥ दंम प्रासादनें मस्तक होय, स्नेह हानि दीपकमां जोय ॥ ७ ॥ छुहिया मंदिर दीसे घणां, खड्ग मांहिं रह्यां निर्दयी पणां ॥ कोरणी नहीं ते नगर मजार, पण कोरणी घर घरनें बार ॥ ८ ॥ अलकापुरी परें तेहनो जोस, पण बहु ईश्वर तिहां नहीं दोष ॥ नूति घणी तस मंदिर वली, धनद बहु रहे नेला मली ॥ ९ ॥ तिहां नरवीर अने राजान, ठकुराई जस इंड समान ॥ कटक रजें ढांक्यो जब सूर, तस प्रताप उद्योत करे नूर ॥ १० ॥ राणीउं गुणवंती बहु जास, कीर्त्तिसुंदरी पटराणी तास ॥ मतिसुंदर तेहनें परधान, चतुराईनो तेह निधान ॥ ११ ॥ रूपवंत बहु शास्त्रनो जाण, सुर गुरु जीत्यो वुद्धि प्रमाण ॥ जीवमात्र ते मानुं रह्यो, ग्रंथें जीव तिणें ए कह्यो ॥ १२ ॥ गुणग्राहीनें बहु दातार, क्षमा प्रमुख गुणवंत अपार ॥ विनयी न्यायी ज्ञाता जेह, नृपति नगतो अति संसनेह ॥ १३ ॥ मंत्रीश्वर महोटो जे कवी, राज्य नार तेहने शिर ठवी ॥ आप निचिंत निर्नेय थइ राय, रात दिवस नोगें लयलाय ॥ १४ ॥ मंत्रीश्वरनें कामिनी दोय, प्रीतिसुंदरी पहेली तिहां होय ॥ गुणसुंदरी बीजी तस नाम, रूप कलायी अति अनिराम ॥१५॥ देवितणुं सवि लेइ रूप, विमन थइ माने निजरूप ॥ ते दुःखें नवि निद्रा करे, देवीउं स्वापरहित तिणे फिरे ॥ १६ ॥ वृद्धपणे विह्वल विधि थयो, ए अपवाद विदारण नयो ॥ निपजावी ए करी विज्ञान, नक्ति देखाडे निज असमान ॥ १७ ॥ दान शीलादिक गुण बहु तास, जिम आनरणें माणक वास ॥ नृपनें एक पुरोहित वली, वसुसार नामें ते ठली ॥ १८ ॥ अतीत अनागत वातों कहे, निमित्त बलें ते सहु सद्दहे ॥ योग्य राजा परधान, मंत्री नारी पण गुणह निधान ॥ १९ ॥ पण नवि लह्या कोय, तेणें मिथ्यात्वी सयलां होय ॥ पुरोहित नास्ति पणी. तेहनी वात सवे निर्गुणी ॥ २० ॥ श्रीजयानंद केवलीनो रास सुणतां लीलविलास ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयथी लही, प्रथम इम पद्म कही ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नास्तिक मत निश्चय करी, काढे जोगमां काल ॥ पुरोहित महा पा पीयो, आले फोगट आल ॥ १ ॥ जीवादिक नव तत्त्व जे, नवि माने निर धार ॥ खावुं पीवुं सुख गणे, परजवनो न प्रकार ॥ २ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ करेलडां गड दे रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मंत्रीनें घरे, ज्ञण ज्ञान संयुत ॥ मुनिवर फिरता गोचरी, रूप अति अद्भुत ॥ जविक जन नमीयें रे ॥१॥ जव जव संचित पाप, सवि निर्गमीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ पुण्यराशि मनु ढग कस्यो, मयगल परें महारा ज ॥ मासखमणनें पारणें, आव्या महा ऋषिराज ॥ ज० ॥ २ ॥ मंत्री मुनि देखी करी, शुजलक्षण शुज वान ॥ मन चिंते मुज जाग्यथी, आव्या एह अचान ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रथम नारिनें इंम कहे, आपो मुनिनें दान ॥ दान पणुं तस वालहुं, हरखी चित्त निदान ॥ ज० ॥ ४ ॥ खीरखांम्ड ते नीपनां, महोटा जाजन मांहि ॥ तेहमांथी कांइ लेइ करी, आवे मुनिवर ज्यांहिं ॥ ज० ॥ ५ ॥ लीलायें लटके करी, वचमां ढोलती तेह ॥ आवी मुनिने वी नवे, सुंदर आहार ल्यो एह ॥ ज० ॥ ६ ॥ मुनि बोले व्रत वंतने, नवि सू जे ए आहार ॥ तव ते मूकी लावती, कूर अति मनोहार ॥ ज० ॥ ७ ॥ पण अग्नि ऊपर रह्युं, जाजनमांथी आण ॥ सूजे नहीं मुनिवर कहे, अ तिशय मीठी वाण ॥ ज० ॥ ८ ॥ सचित्त ढांकणुं ढांकीउं, तेहथी लावी दाल ॥ ए पण मुज सूजे नहीं, मुनि कहे वयण रसाल ॥ ज० ॥ ए ॥ क ण ऊपर रह्युं घृत वली, मुनिवर न लीये तेह ॥ कण मिश्रित वली श र्करा, शुद्धमान नहीं एह ॥ ज० ॥ १० ॥ दो दिन उपर दधि जिको, न वि लीये मुनिवर सोय ॥ ते पण मूक्यूं तेणीयें, वली जे घरमां होय ॥ ज० ॥ ॥ ११ ॥ गत कालें मोदक कस्या, जावें लावी नारि ॥ मुनि कहे अम सू जे नहीं, एह मोदक इंण वार ॥ ज० ॥ १२ ॥ बे नारी मंत्री मली, जक्तें आग्रह कीध ॥ आशय अणजाणे थके, पण मुनिवरें नवि लीध ॥ ज० ॥ ॥ १३ ॥ अणलेतां देखी करी, मनमां उपनो खेद ॥ अथ मंगल चित्त चिं तवी, बोले इंणिपरें जेद ॥ ज० ॥ १४ ॥ मोदक अमृत सारिखा, जो न वि सूजे एह ॥ तो किम विष तुज सूजशे, किंवा नेत्र गयां देह ॥ ज० ॥ ॥१५॥ पहेली स्त्री कहे जैनना, यतिने दाक्षिण्य नांहि ॥ दाक्षिण्य शुद्ध कुलें

हुए, एहतुं कुल कुण मांहि ॥ न० ॥ १६ ॥ बीजी कहे उद्योतमां, जो नवि सूजे कांय ॥ तो आपो ए अंधने, निज जणी तुम जाय ॥ न० ॥ ॥ १७ ॥ पात्र घणां ए नयरमां, तेहनें देशुं दान ॥ मंगल करशुं आपणें, देशुं आदर मान ॥ न० ॥ १८ ॥ जिहां तिहां दीधुं दान जे, ते निष्फल न वि जाय ॥ पात्रें दीधुं दान ते, सहस कोडिगुणुं थाय ॥ न० ॥ १९ ॥ दु र्वाक्यें ते त्रण जणे, बांध्युं कर्म कठोर ॥ रोष शोष विण मुनि हवे, नी कलीया तप घोर ॥ न० ॥ २० ॥ एक श्रावक मंत्रि घरे, आव्यो कार्य विशेष ॥ पण ते मंत्रीमित्र छे, अंतर नहीं तस रेख ॥ न० ॥ २१ ॥ धर्मरुचि ते नामथी, आपी आसन तास ॥ उचित वयण संतोषिनें, वात क हे हवे खास ॥ न० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी बीजी ढाल ॥ ॥ पद्म कहे श्रोता घरे, होजो मंगलमाल ॥ न० ॥ २३॥ सर्वगाथा ॥ ५५॥

॥ दोहा ॥

॥ नाई कोइ मुज घरजणी,आव्यो निक्षु एक ॥ जैन यति जाणी करी, विनयें धरी विवेक ॥ १ ॥ प्रियायें प्रारथना करी, देवा मांग्युं दान ॥ उ त्तम नोजन आपवा, बहु आदर बहु मान ॥ २ ॥ आज प्रथम मुज आं गणें, आव्युं पातर एह ॥ वीण लीधे वलीउ वली, समजण नांही सनेह ॥ ३ ॥ अप मंगल करो उलखो,कोण हतो कहो नाथ ॥ उलखो तो आ खो तुमें, श्रावक कहे समजाय ॥ ४ ॥ हमणां मलीया हेजशुं, मुनिवर ते महिराण ॥ प्रणम्या में प्रेमें करी, उलखीया असमान ॥ ५ ॥ कान देइनें जे कहुं, सांजलो चतुर सुजाण ॥ चित्रकारी जस चरित्र छे, सुणतां आवे शान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाडी फूली अति जली॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सिंधूदेश सोहामणो, मुनि नमीयें रे ॥ सौवीर नगर मकार ॥ पाप निगमीयें रे ॥ वलिउ अतिबल राजीउ ॥ मु० ॥ तस सम नही शिरदार ॥ पा० ॥ १ ॥ तास सजामां अन्यदा ॥ मु० ॥ परदेशी नट आय ॥ पा० ॥ मांग्युं नाटक आनिनवुं ॥मु०॥ देखतां अचरिज थाय ॥ पा० ॥२ ॥ देखी सगर चक्री तणुं ॥ मु० ॥ नाटक पुत्र वियोग ॥ पा० ॥ पीडा तेहनी देखी नें ॥ मु० ॥ ध्याये चित्त शुनयोग ॥ पा० ॥ ३ ॥ अहो जव दुःखमय दे खीयें ॥ मु० ॥ बूज्या ते महाराय ॥पा०॥ निजसुत बालकनें ठवी ॥ मु०

॥ राज्य तखत निरमाय ॥ पा० ॥ ४ ॥ धर्माकर गुरु सन्निधें ॥ मु० ॥
दीक्षा लीधे महाधीर ॥ पा० ॥ द्विविध शिक्षा अभ्यासता ॥ मु० ॥ बहु श्रुत
थया गंनीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ अद्भुत वैराग्यनो धणी ॥ मु० ॥ बारसविह
तप सार ॥ पा० ॥ अप्रमादी नित्य विचरता ॥ मु० ॥ लब्धि तणा भंमार
॥ पा० ॥ ६ ॥ कोंध असाध्य न तपथकी ॥ मु० ॥ योग्य जाणी गुरु पा
य ॥पा० ॥ एक विहार आणा करे ॥मु०॥ सद्गुरु करिय पसाय ॥ पा०
॥ ७ ॥ सिंह परें ते विचरता ॥ मु० ॥ परिसहनें उपसर्ग ॥ पा० ॥
ते नृगथी बीहे नहीं ॥ मु० ॥ साधंता अपवर्ग ॥ पा०॥८॥ गजपुर आव्या
अन्यदा ॥ मु० ॥ ध्यान तपें तेह लीन ॥ पा० ॥ उद्यानें रह्या मुनिवरू ॥
॥ मु० ॥ निज आतम करे पीन ॥ पा० ॥ ९ ॥ विविध अतिशय गुण
थकी ॥ मु० ॥ सुखीया होय सवि जीव ॥ पा० ॥ नीमराय तिहां राजी
उ ॥ मु० ॥ शत्रुनें नीम अतीव ॥ पा० ॥ १० ॥ राजस गुण धारे स
दा ॥ मु० ॥ सर्व दर्शननो राग ॥ पा० ॥ मतिसार मंत्री तेहनें ॥ मु० ॥
बुद्धिनिधि महानाग ॥ पा० ॥ ११ ॥ राज्यनार धोरी कह्यो ॥ मु० ॥ राज
मूरति मानुं एह ॥ पा० ॥ थोडे अपराधें करी ॥ मु० ॥ मारे तस्कर तेह
॥ पा० ॥ १२ ॥ अकाम निर्झराथी थयो ॥ मु० ॥ निर्झर व्यंतर सार
॥ पा० ॥ ज्ञानविभंगें पाठलो ॥ मु० ॥ नव दीठो अविकार ॥ पा० ॥
॥ १३ ॥ पुण्यवंत राजा नणी ॥ मु० ॥ न शक्यो परानव देण ॥ पा० ॥
गज मरगी अति आकरी ॥ मु० ॥ कीधी कारण तेण ॥ पा० ॥ १४ ॥
नृप मन खेद लहे घणो ॥ मु० ॥ करे अनेक उपाय ॥ पा० ॥ पण नवि
शांति हुइ किमें ॥ मु० ॥ मंत्रीनें कहे राय ॥ पा० ॥ १५ ॥ करो उपाय
कोइ वेगशुं ॥ मु० ॥ तस पण चिंता थाय ॥ पा० ॥ उद्यानें गयो अन्यदा
॥ मु० ॥ गीत वाजित्र सुणाय ॥ पा० ॥ १६ ॥ विस्मित चित्तथी आवीउ
॥ मु० ॥ मंत्री मुनिनें पास ॥ पा० ॥ देवी नाटक तिहां देखीउ ॥ मु० ॥
हाव नाव सुविलास ॥ पा० ॥ १७ ॥ महाप्रनाव ऋषिराजनो ॥ मु० ॥
जाणी नमीउ पाय ॥ पा० ॥ पद फरसित रज लेइने ॥ मु० ॥ आव्यो ते
निज ठाय ॥ पा० ॥१८॥ सवि गज रेणुतिलक कर्यां ॥ मु० ॥ मरगी नाठी
जाय ॥ पा० ॥ ते वृत्तांत आवी कहे ॥ मु० ॥ हरख थकी निजराय ॥ पा०
॥ १९ ॥ मुनिवर स्तवना बहु करे ॥ मु० ॥ तव उच्छव करे राय ॥ पा०॥

नृपति मंत्री बिहुं उच्चवें ॥ मु० ॥ आवे मुनिवर पाय ॥ पा० ॥२०॥ मुनि प्रणमीनें उपविशे ॥ मु० ॥ पारे मुनिवर ध्यान ॥ पा० ॥ धर्म लाभ देइ हवे ॥ मु० ॥ करे देशना दान ॥ पा० ॥ २१ ॥ श्रीजयानंदना रासमां ॥ मु० ॥ नांखी त्रीजी ढाल ॥ पा० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ मु० ॥ आगल वात रसाल ॥ पा० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुविध धर्म तिहां दाखवे, वर्णव करी विस्तार ॥ गुणधर मुनिवर गृही तणो, सम्यग शुद्धाचार ॥ १ ॥ बूज्या नृप मंत्री बिहुं, बीजा पण बहु लोक ॥ धर्म यथाशक्ते करी, आव्या निज निज उक ॥२॥ मुनिवर संयम माल्हता, अप्रतिबद्ध अणगार ॥ पृथिवीनें पावन करे, वरते उग्रविहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ मालीकेरे बागमें, दोय नारिंग पके रे लो ॥ अहो दोय० ॥ ए देशी ॥

॥ वीरपुरें हवे आवीया, तिहां बे नरमारी रे लो ॥ अहो ति० ॥ वलसार तेहनो राजीउ, प्रजा पीडा अपार रे लो ॥ अहो प्र० ॥ १ ॥ देखी उपाय करे घणा, पण न थइ शांति रे लो ॥ अहो प० ॥ एक दिन भीमनरेंद्रनो, दूत तिहां आयात रे लो ॥ अहो दू० ॥ २ ॥ उद्यानें मुनि देखीया, उलखी प्रणमंत रे लो ॥ अहो उ० ॥ राज्यसनामां आवीउ, प्रणमे नृपकंत रे लो ॥ अहो प्र० ॥ ३ ॥ राय कहे किम आववुं, कार्य तेह दाखो रे लो ॥ अहो का० ॥ राज काज सवि वारता, होय ते तुमें आखो रे लो ॥ अहो हो० ॥ ४ ॥ तेणे पण वात कहेतां थकां, कह्युं एम प्रसंगें रे लो ॥ अहो क० ॥ गजमरगी गइ भीमनें, मुनि महिमा रंगें रे लो ॥ अहो मु० ॥ ५ ॥ ते तुम जाग्यें तुम तणा, उद्यानमां आव्या रे लो ॥ अहो उ० मेंप्रणम्या महाजाग्यथी, मुज मनमां भाव्या रे लो ॥ अहो मु० ॥ ६ ॥ विस्मय लही नृप हरखीउ, राज्य उत्तर देइ रे लो ॥ अहो रा० ॥ विसरज्यो ते दूतनें, सत्कार करेइ रे लो ॥ अहो स० ॥ ७ ॥ मुनिमहिमा ते नयरमां, उद्घोषणा करता रेलो ॥ अहो उ० ॥ ते उद्घोषण सांजली, चित्तमां सहु धरता रे लो ॥ अहो चि० ॥ ८ ॥ मुनि फरसित रज जइ करी, करे तिलक ते भालें रे लो ॥ अहो क० ॥ राय रंक सहु सारिखा, आप आप संभाले रे लो ॥ अहो आ० ॥ ९ ॥ मरगी गइ सवि नयरथी, हूउ जयजय

कार रे लो ॥ अहो हू० ॥ उच्छव रंग वधामणां, हूआ घर घर वार रे लो ॥ अहो हू० ॥ १० ॥ अहो तप महिमा अचिंत्य छे. चक्रीनुं सैन्य चूरे रे लो ॥ अहो च० ॥ क्रोधथी वली सुप्रसादथी, तत रूद्धि पूरे रे लो ॥ अहो त० ॥ ११ ॥ यतः॥ मुनयश्चक्रिणःसैन्य, मपि क्रुधादहंत्यहो ॥ तपः प्रभाव तस्तस्य. समृद्धि दर्शयंतिच ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ राय प्रमुख मुनिरायनें, नमीयानें खमीया रे लो ॥ अहो न० ॥ मुनिदर्शित धर्म आदरे, शकति न गोपवीया रे लो ॥ अहो श० ॥ १२ ॥ विहार करी मुनि तिहां थकी, क्षेमा पुरी उद्याने रे लो ॥ अहो क्षे० ॥ ज्ञान ध्यानमांहि रह्या. नहीं आहारनें पान रे लो ॥ अहो न० ॥ १३ ॥ मासखमणनें पारणे, आव्या नयर मझार रे लो ॥ अहो आ० ॥ घर घर निक्षानें फरे, लेवा शुद्ध आहार रे लो ॥ अहो ले० ॥ १४ ॥ गोखें बेठो तिहां कणे, एक पुरोहित पुत्त रे लो ॥ अहो ए०॥ जिनधर्मद्वेषी आकरो, मिथ्यात्व आकूत रे लो ॥ अहो मि० ॥ १५ ॥ धन यौवन मद आकरो. आवी मुनिवर पासें रे लो ॥ अहो आ० ॥ मस्तक खा सडां मारीआं, मुनि समता विलास रे लो ॥ अहो मु० ॥ १६ ॥ यतः ॥ मृगमीनसज्जनानां, तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनां ॥ लुब्धकधीवरपिशुना, निष्कारणवैरिणोजगति ॥१॥ कज्जल तजे न श्यामता, सज्जन तजे न हेत ॥ दुरिजन तजे न कुटिलता, एह जाणो संकेत ॥२॥ कोकिलानां स्वरं रूपं, स्त्री णां रूपं पतिव्रता ॥ विद्यारूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनां ॥ ३ ॥ढाल॥ कोप करे नही मुनिवरा, मेरुपरें धीर रे लो ॥ अहो मे० ॥ ते उपर करता कृपा, कृश तपथी शरीर रे लो ॥ अहो कृ० ॥१७॥ ऋषिजी चाल्या आगलें, तव तपनें जोरें रे लो ॥ अहो त० ॥ कोप्या शासन देवता, बांध्यो विहुं तोरे रे लो ॥ अहो बां० ॥ १८ ॥ अहनिश रही क्रोधें करी, आक्रंद करावे रे लो ॥ अहो आ० ॥ पीडा बहु उपजे तिणें. मावित्र तिहां आवे रे लो॥ अहो मा०॥ ॥१९॥वात सवे मावित्रनें, पोतानी सुणावे रे लो ॥ अहो पो०॥ तेपण खेद करी कहे, धिग धिग तुज थावे रे लो ॥ अहो धि०॥२०॥ कोइ उपाय सूजे न ही. आवे मुनिवर पासें रे लो ॥ अहो आ० ॥ प्रणमी करजोडीकहे, तुम थी दुःख जाशे रे लो॥ अहो तु०॥२१॥ तुमें बहु महिमाना धणी, तुम शक्ति अगाध रे लो ॥ अहो तु० ॥ तुमें अर्चित त्रण जगतनें, तुमथी निराबाध रे लो ॥ अहो तु० ॥ २२ ॥ तेजमयी सूरय तुमें, बाल धूक समान रे लो

॥ अहो वा० ॥ नवि उंलख्या तिणे मूरखें, कीधुं ए अपमान रे लो ॥ अहो की० ॥२३॥ तुम अपराध कखो घणो, खमो कृपा निधान रे लो॥ अहो ख० ॥ मोहोटा रोष राखे नहीं, एतो बहु अज्ञान रे लो ॥ अहो ए० ॥ ॥ २४ ॥ तुम शरणें आव्या नणी, अनुकंपा कीजें रे लो ॥ अहो अ० ॥ वालना कर साजा करो, सेवक गणी लीजें रे लो ॥ अहो से० ॥ २५ ॥ तुमविण कोइ दूजो नही, जेहनें जइ कहीयें रे लो ॥ अहो जे० ॥ मुनि कहे रोष न माहरे, त्रण कालें कइयें रे लो ॥ अहो त्र० ॥ २६ ॥ पण ए शासन देवता, एहनें शिक्षा दीधी रे लो ॥ अहो ए० ॥ आकाशें परगट थइ, तव वाणी कीधी रे लो ॥ अहो त० ॥ २७ ॥ पापीनें साजो नवि करुं, पूज्यनें दुःख दीधुं रे लो ॥ अहो पू० ॥ पूजा प्रमुखे संतुष्टथी, फरी वचन ते कीधुं रे लो॥ अहो फ० ॥२८॥ मुनि पासें दीक्षा लीये, तो साजो करीयें रे लो ॥ अहो तो० ॥ ते पण तेणें अंगीकखुं, देवी वयण आदरीयें रे लो ॥ अहो दे० ॥ २९ ॥ देवीयें शक्ति अचिंत्यथी, कर नूतन कीधा रे लो ॥ अहो क० ॥ तव हरखित थया सहु तिहां, मनोवंछित सीधा रे लो ॥ अहो म०॥ ॥ ३० ॥ मुनि शिर उपर फूलनी, थइ वृष्टि अत्यंत रे लो ॥ अहो थ० ॥ पश्चातापें खमावीया, मुनिवर मार्दव रे लो ॥ अहो मु० ॥ ३१ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, कही चोथी ढाल रे लो॥ अहो क० ॥ पद्म कहे मुनि प्रणमतां, होये मंगल माल रे लो ॥ अहो हो० ॥ ३२ ॥ सर्वगाथा ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दिये मुनिवर तव देशना, समज्यो चतुर सुजाण ॥ मावित्र आपे अनुमति, दीक्षानुं करे दाण ॥ १ ॥ थिविर कल्पमां थापीआ, शिक्षा ग्रहण संकेत ॥ मुनि प्रणमी मावित्र मुख, चमत्कार चित्त चेत ॥ २ ॥ नृप प्रमुख बहु नाविद्या, जैनधर्म जगसार ॥ पाम्या तेह प्रशंसता, गया ते निज आगार ॥ ३ ॥ पारणुं करीनें पांगख्या, मास खमण मुनिराय ॥ आव्या विचरंता अहीं, निर्ममनें निरमाय ॥ ४ ॥ उद्यानें अवनी तलें, ध्यान निश्चल मुनि ध्याय ॥ अवधिज्ञान वली ऊपनो, शुद्धयोग समुदाय ॥ ५ ॥ ते मुनि आव्या तुज घरें, शुद्ध गवेषे साध ॥ मासांतर करे मास तिम, निर्लेपी निरबाध ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वालम वहेला आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मरुचि श्रावक इम कहे, सुणो मंत्री तुमें वाणि रे ॥ कल्पतरु सम एह महामुनि, महिमावंत गुण खाणि रे ॥ धर्मरुचि० ॥ १ ॥ सुगुण श्राक र्पित सुरवरा, करे नित्य जस सेव रे ॥ पूजा निंदा करे एहनी, तेहनें फल ततखेव रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तूसे रूसे नहीं ए कदा, इम सुणी तस वाणी रे ॥ वहु पश्चात्ताप नय विव्हलो, प्रिया दोय तिम जाणी रे ॥ ध० ॥३॥ सचिव कहे विस्मित इणी परें, हाहा मुनि अपराध रे ॥ कीधलो एह अ जाणतें, फल तास अगाध रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ में तथा दोय नारी मली, कखो अतिय आक्रोश रे ॥ एहनां फल कहो श्यां थशे, इम मंत्री करे शोष रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ यतः ॥ साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूताहि साध वः ॥ कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधुसमागमः ॥ १ ॥ ढाल ॥ जैन मु निनो धर्म नवि लहुं, वगर अन्यास आचार रे ॥ बीक लागे एह मुनि थकी, देशे शाप ए वार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ धर्मरुचि कहे एह मुनिवरु, द यावंत शिरदार रे ॥ शाप नवि कोयनें ए दीये, पाले शुद्ध आचार रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ हेलना पण अणगारनी, उनयलोक दुःखदाय रे ॥ जइ खमावो तिण ए मुनि, पापशांति ते थाय रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ मंत्री कहे एह करशुं सवे, पण एक कहो वात रे ॥ पायस प्रमुख वहु आपतां, नवि लीधुं कि ण नांत रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ श्रावक कहे हुं जोई कहुं, जव जूवे तिण ठाण रे ॥ खीर विंडयें वहु कीटिका, पगें होय तस हाण रे ॥ ध० ॥ १०॥मं त्रीने तेह देखावतो, दया नवि रहे एण रे ॥ अगनि विराधना कूरथी, इ त्यादिक कहणेण रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ आतपें दधि वली मूकीनें, मूकी अल तालुं पोतुं रे ॥ उज्ज्वल सूक्ष्म जीवनें, मंत्रीनें कहे जो तुं रे ॥ ध० ॥ ॥ १२ ॥ नविग्रह लीधुं इण कारणें, हवे मोदक वात रे ॥ नवि ग्रह्या तेह जाणुं नहीं, मुनि कहेशे साक्षात रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ एहवुं सांनली देखी नें, मंत्री विस्मय पामे रे ॥ सूक्ष्म धर्म अहो जैननो, नवि दीठो कोइ ठामे रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ दान वहु पात्रमां में दीयां, नण्यो शास्त्र अनेक रे ॥ निरीहता एहवी जिहां होये, तेहवुं ठाण न एक रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ श्रा वक कहे मुनि वंदवा, जइयें आपण नाथ रे ॥ जनम कृतारथ कीजीयें, वली नव दुःख जाय रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ मंत्री कहे हुं अपराधीयो, मुख

केम देखाय रे ॥ श्रावक कहे मुनि दरिशणें, कीती लाज कराय रे ॥ ध० ॥ ॥ १७ ॥ दोष तो एह देखे नही, ईम कही सहु जाय रे ॥ मुनिवर प्रणमी या नक्तिथी, चित्त हरख न माय रे ॥ ध० ॥ १८ ॥ देइ धर्मलान संतोषी या, मंत्री कहे कर जोडी रे ॥ स्वामी अपराध में बहु कस्यो, खमो एह मुज कोडी रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ कोटि नर नस्म क्षणमां करे, तप तेजें मुनि राय रे ॥ गुणनिधि करो कृपा अम नणी, अमें रज तुम पाय रे ॥ ध० ॥ ॥ २० ॥ दोय नार्या पण मुनि नमी, पश्चात्ताप करंती रे ॥ मुनि खमावे निज निंदती, घणी नक्ति धरंती रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ मुनि कहे कोप नहीं माहरे, तुमें नय मत आणो रे ॥ दृष्टि स्वरूप जाणो नहीं, तेह शुद्ध पि ठाणो रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां, कही पांचमी ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे सांनलो, मुनि वात रसाल रे ॥ ध० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ १४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आखि कह्यो अणगारजी, मंत्री कहे ईम जाम ॥ दोय नेद छे दृष्टिना, मुनिवर ईम कहे ताम ॥ १ ॥ चरमरूप मूल चक्षु जे, समजो बाह्य सुजा ण ॥ अन्यंतर हवे उलखो, ज्ञान दर्शन गुण जाण ॥ २ ॥ दोष बेंतालीश देखि यें, आहार तणे अविकार ॥ दोय दृष्टि तेणें देइनें, उपयोगें लउं आहार ॥ ३ ॥

॥ ते बेंतालीश दोषनां नाम गाथायें करी कहे छेः—गाथा ॥ आहाकम्मु १ देसिय, २ पूइकम्मेअ ३ मीसजाएअ ॥ ४ ॥ ठवणा ५ पाहुडियाए ६, पाउअ र ७ कीय ८ पामिच्चे ९ ॥ १ ॥ परिअट्टिए १० अनिहड ११, निन्ने १२ मालोहडेअ १३ अच्छिज्जे १४ ॥ अणिसिट्ठे १५ अज्झोयर १६, सोल स पिंडुग्गमे दोसा ॥ २ ॥ धाई १ दूई २ निमित्तं ३, आजीव ४ वणिमगे ५ तिगिछाय ६ ॥ कोहे ७ माणे ८ माया ९, लोनेय १० हवंति दस एए ॥ ३ ॥ पुव्विं पच्छासंथव ११, विया १२ मंतेअ १३ चुन्न १४ जोगेअ १५ ॥ उप्पायणाइ दोसा, सोलसमे मूल कम्मेअ ॥ ४ ॥ एवं बत्रीश ॥ संकिअ १ मक्खिअ २ निक्खित्त ३, पिहियं ४ साहरिअ ५ दायगु ६ म्मीसे ७ ॥ अप रिणय ८ लित्त ९ छड्डिअ १०, एसण दोसा दस हवंति ॥ ५ ॥ एवं बेंहेंता लीश ॥ संजोयणा १ पमाणे २, इंगाले ३ धूम ४ कारणे ५ इति ॥ ग्रासेप णा दोषाः ॥ एवं सुडतालीस दोषगाथा ॥

॥ ढाल ४ठी ॥ माह्यरुं मन मोह्युं रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥

॥ अमिय समाणी रे वाणी मुनि कहे रे, सुण मंत्रीसर वाण ॥ आ क्रोश क्रोध कस्यो तुमें इणि परें रे, नयन सरूप अजाण ॥ अ० ॥१॥ सम ता नावें रे में खमीउं सवे रे, हवे श्रावक परधान ॥ विहुं मली पूछे रे स्वा मी नांखीयें रे, मोदक केरुं निदान ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनि कहे रात्रें दासी यें रांधतां रे, चूल्हा ऊपर रह्यो नाग ॥ धूमें आकुल व्याकुल ते थयो रे, नाखि गरल अताग ॥ अ० ॥ ३ ॥ तिहां चंदरुआ रे केरे अनावथी रे, विषमयी मोदक थाय ॥ परनां लोकें कांय जाण्युं नहीं रे, जेर तणो समु दाय ॥ अ० ॥ ४ ॥ संयम घात कारण नवि में लीधा रे, मंत्रीयें सांन ली तेह ॥ दासी पास मगाव्या लाडुआ रे, परीक्षा कारण एह ॥ अ० ॥ ५ ॥ माखी मरती देखी जाणीयुं रे, मुनिनुं साचुं रे ज्ञान ॥ अहो अ हो ज्ञान मुनि तुम केरडुं रे, अमचुं वडुं रे अज्ञान ॥ अ० ॥ ६ ॥ एह मोदकथी कुटुंब सहित अमें रे, मरण लहत ततखेव ॥ हुं उरणिउं किम था णुं कहो रे, जो करुं अहोनिश सेव ॥ अ० ॥ ७ ॥ मित्र वचनथी सहु लाडु तिहां रे, परठवीया ते एकांत ॥ प्राणदायक नें शरण मुनिवरू रे, मु निवरनें कहे स्वांत ॥ अ० ॥ ८ ॥ ए उपगार कस्यो तुमें मोटको रे, हवे दाखो उपदेश ॥ मुनि जांखे सुण धर्म ते जैननो रे, सवि अधर्म जे शेष ॥ अ० ॥ ए ॥ देव गुरु वली धर्मनें उलखो रे, श्रद्धा ते प्रतीत ॥ श्रद्धा सहि त विरति दोय नेदथी रे, सर्व देशें धरो चित्त ॥ अ० ॥ १० ॥ क्षांत्यादि क दशधा मुनिराजनो रे, द्वादशधा गृहिधर्म ॥ धूल प्राणातिपात प्रमुख कह्यो रे, इत्यादिक सवि मर्म ॥ अ० ॥ ११ ॥ सांजली प्रतिबूज्यो ति हां मंत्रवी रे, तिम तेहनी दोय नारि ॥ सर्वविरति स्वामी न करी शकुं रे, देशथी द्यो अणगार ॥ अ० ॥ १२ ॥ मुनि पण द्वादश व्रत उच्चरावी यो रे, शीखवे आवश्यक सार ॥ दानादिक गुण तिम उपदेशिया रे, पाम्या श्राद्ध आचार ॥ अ० ॥ १३ ॥ मुनि वंदन करी सहुयें घरें गया रे, मुनि आशातना जेह ॥ निंदा गर्हा आलोचना मुख्यें रे, कर्म खपावे बहु तेह ॥ अ० ॥ १४ ॥ तो पण कांयक शेष रह्युं खरुं रे, जोगवशे एक वार ॥ धर्म रुचि प्रमुखा सहु मुनि नमी रे, पोहोता निज घर बार ॥ अ० ॥ १५ ॥ मा सखमण मुनिनें पूरुं थतां रे, मंत्री करे नित्य सेव ॥ श्रावक संगथी पूरण

श्रावक थया रे, जाएया जीवादिक हेय ॥ अ० ॥ १६ ॥ शास्त्राभ्यास हतो पूर्वे घणो रे, वली जिनधर्म प्रसंग ॥ न खलाये मति सूक्ष्म अर्थमां रे, जिनधर्मे दृढरंग ॥ अ० ॥ १७ ॥ न चलावे सुरपति पण धर्मथी रे, पर वादीनो करे अंत ॥ जिनशासन शोनावे बहु परें रे, कोइ न तास ठलंत ॥ अ० ॥ १८ ॥ पारण दिवस जाणी निमंत्रणा रे, करे मुनिनें सुरसाल ॥ करिय कृपा मुनिवर पण आवीआ रे, निःस्पृह परम दयाल ॥ अ० ॥ ॥ १९ ॥ मंत्री दोय नारी बहु जावथी रे, आपे शुद्ध आहार ॥ परमन्नादिक तिहां परगट थयां रे, पंचदिव्य मनोहार ॥ अ० ॥ २० ॥ पाणी सुगंध वर पुष्पवृष्टि थइ रे, वली होवे वसुधार ॥ डुंडुनिनाद अहो दानघोषणा रे, मुनिवर करे तिहां आहार ॥ अ० ॥ २१ ॥ दान प्रजावें त्रण्य जणें बांधीयुं रे, जोग करम अति गाढ ॥ मुनि उद्यान जइ काउस्सग्ग रह्या रे, ध्यान निश्चल जिम पाढ ॥ अ० ॥ २२ ॥ डुंडुनिस्वर सुणी नृप पूढावीयोउं रे, निजनर कहे ते वृत्तांत ॥ नृप चिंते धिगधिग मुजनें इहां रे, एहवा मुनिवर माहंत ॥ अ० ॥ २३ ॥ एहवा मुनिवर माहारा नयरमां रे, हुं नवि जाणुं रे कांय ॥ प्रातसमय वंदुं परिवारथी रे, इंम करतां दिन जाय ॥ अ० ॥ २४ ॥ रातें मुनिवर क्षपक श्रेणी करी रे,ध्याये शुकल ते ध्यान ॥ सर्व प्राणीहित वंठक पामीआ रे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ अ० ॥ २५ ॥ श्रीजयानंदना रासमां ए कही रे, ठठी ढाल रसाल ॥ पंमित उत्तमविजय कृपा थकी रे,पद्मविजय कहे बाल ॥ अ०॥२६॥सर्वगाथा॥१७६॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर केवल पामीया, जानु उदयें परजात॥ नाद थयो देवडुंडुनि, मनमां हरख न मात ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर आवीया, गीत वाजित्र गवाय ॥ परगट वृष्टि पुष्पनी, सुवर्ण कमल सुर ठाय ॥ २ ॥ तिहां वेगा केवली तदा, देखी दिव्य उद्योत ॥ नृपति पूछे ज्रांतिथी, जुउं ए शी ठे ज्योत ॥ ३ ॥ तव मंत्री नर ततक्षणें,आवी कहे अवदात ॥ रायनें प्रणमी रंगशुं, वांनवे सुणो ते वात ॥ ४ ॥ स्वामी सुणो ए साधुनें, उपनुं केवल आम ॥ जइ वंदो बहु जुगतिशुं, करो कृतारथ काम ॥ ५ ॥ जैनधर्म नथी जाणतो, नइक जावी नृप ॥ नक्ति आश्चर्य जराइउं, अवनीपति अनूप ॥ ६ ॥ सामत मंत्री शामटा, परवरिउ परिवार॥ गज वेगे अति गेलशुं,वाजित्रनां बहु

कार ॥ ७ ॥ उयानें अवनीपति, प्रणमे मुनिना पाय ॥ सुर नर असुर स
ना मली. वेठा वेसण ठाय ॥ ८ ॥ धर्मज्ञान देइ धर्मनी. देशना दीये मु
णींद ॥ आलस अंग उतारीनें. सांजलजो सुखकंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ एह संसार असारमां.दोहेलो नरजव पामी रे ॥ धर्म करो नवि प्राणी
आ, डुःखदानी सुखकामी रे ॥ नाव धरी नवि आदरो ॥ १ ॥ ए आंक
णी ॥ समकित सार संसारमां.डुर्लज पामवुं प्राणी रे॥ चिंतामणि परें जा
णियें. इष्ट दीये गुणखाणी रे ॥ जा० ॥ २ ॥ यतः ॥ मूलं दारं पइठाणं,
आहारो जायणं निही ॥ डुक्कयस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तंवि आहियं ॥ १॥
॥ ढाल ॥ देवगुरुने रे धर्मनी. श्रद्धा कीजें सुजाण रे ॥ दोष अढार रहित
सदा, आपे शिवपुर गण रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ हास्यादिक षट वेगला. त्रय
कह्या चार कषाय रे ॥ प्रेम पंचाश्रव मद नही. केलि अढार ए थाय रे॥
॥ जा० ॥ ४ ॥ एहवा देवनें सेवीयें. जे संसारना रोग रे ॥ तेहना वैद्य
शोहामणा. गत संयोग वियोग रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ रत्नत्रयीयुत गुरु कह्या,
अथवा महाव्रत धार रे ॥ शय्यावस्त्रनें पात्र जे, शुद्धमान लीये आ
हार रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ सम्यक धरम दायक वली, आप तरे पर तारे रे॥
पंच महाव्रत धर्म ते,हिंसा प्रमुखनें वारे रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ द्वादश व्रत गृ
हिधर्म छे, थूलहिंसानृत चोरी रे ॥ स्वदारा संतोषची. नवि इछे पर गोरी
रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ धन परिमाण करे सदा, ए अणुव्रत कह्यां पंच रे ॥ दि
शि परिमाण वली करे, जोगोपजोग प्रपंच रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ त्याग अनर्थ
दंम जांखीउं, गुणव्रत एह उदार रे ॥ अणुव्रतने जेह गुण करे, हवे शिक्षा
व्रत चार रे ॥ जा० ॥ १० ॥ अवतरें सामायिक करे, रात्रें अने वली दीह
रे ॥ संक्षेप दश व्रतनुं, दशमुं व्रत कहे ईश रे॥ जा० ॥ ११ ॥ पर्वतिथें
पोसह करे, कोइ दिवस तथा रात्र रे ॥ कोइ अहोरात्रि आदरे, ईम जांखे
सिद्धांत रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ अतिथिनें दिये दान जे, शिक्षा चोथुं ए धार
रे ॥ बालक शीखे जिम फिरी फिरी, तिम शिक्षा व्रत सार रे ॥ जा० ॥
॥ १३ ॥ तिम षट आवश्यक नित्य करे, दान शीयल तप जाव रे ॥ धर्म
कह्यो ए श्रावक तणो, यथाशक्ति तणो दाव रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ आरा
धयां दीये इहनें,परजव नृप चक्रि ऋद्धि रे ॥ स्वर्गनां सुख वली जे दीये, अ

नुक्रमें लहे तेह सिद्धि रे ॥ना०॥१५॥ उत्कृष्टा तेहिज नवें,साधु मोक्ष ते पाम रे ॥ बारमुं स्वर्ग गृहस्थनुं, उत्कृष्टुं लहे गम रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ बिहुनें स्वर्ग जघन्यथी, पहेलुं देवलोक जाणो रे ॥ एहमां एक अंगीकरो, निज निज शक्ति प्रमाणो रे ॥ ना०॥१७ ॥ एहवी देशना सांनली, श्राव क व्रत धरे राय रे ॥ केइक चारित्र आदरे, नव उदवेग निर्माय रे ॥ना०॥ ॥ १८ ॥ देशविरति केइ आदरे, केइक समकेत खास रे ॥ राय प्रमुख मु नि प्रणमीने, आवे निज आवास रे ॥ ना० ॥ १९ ॥ बहु परिवार ज्ञानी गुरु, उपगारी करे विहार रे ॥ नवि रहे एकण थानकें, रवि परें करे उप गार रे ॥ ना० ॥ २० ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी सातमी ढाल रे॥ प द्मविजय कहे सांनलो, आगल वात रसाल रे॥ ना०॥ २१ ॥सर्वगाथा॥२०६॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरोहित महापापीउं, कोरो कर्म कठोर ॥ उंषध नाहीं असाध्यनें, जो होय वैद्यनुं जोर ॥ १ ॥ नास्तिकता ठांमी नहीं, मंत्री हवे महाजाण॥ स्वपर समय समजावतो, नरपतिनें निरवाण ॥ २ ॥ नरपति मंत्री सानि धें, धर्में दृढता धार ॥ सामंत मंत्री प्रमुख सजा, पृथिवीपति पुर प्यार ॥ ॥ ३ ॥ मणिसिंहासन मलपतो,विशद ठत्रवर धार ॥ चंचल शोनित चाम रें, वेठा सहु दरबार ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ ललनांनी देशी ॥

॥ वात प्रसंगें वर्णवे, साधुना गुण नरराय ॥ ललनां ॥ श्रावक गुण सो हामणा,हियडे हरख न माय ॥ ल० ॥ १ ॥ अहो जिनशासन जग ज यो ॥ ए आंकणी ॥ धन्य मुनीश्वर जैनना, जे निरमम निरमाय ॥ ल० ॥ साधे जे परलोकनें, निरवांछक मुनिराय ॥ ल० ॥ अ० ॥ २ ॥ इत्यादिक नृप वचन ते, वृश्चिक मंक समान ॥ ल० ॥ लाग्युं पुरोहितनें तदा, अ वसरें बोल्यो अज्ञान ॥ ल० ॥ अ० ॥ ३ ॥ इंद्रजालीआनी परें, वंचे लो क अपार ॥ ल० ॥ वीहिक दाखे परलोकनी, जैनना जे अणगार ॥ ल० ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ लोक नोलो कुशास्त्रथी, नोग तजावे आप ॥ ल० ॥ विवि ध तपस्या करावता, म करो कोइ पाप ॥ ल० ॥ अ० ॥५॥ पूजा माननें इ ष्ठता,खोटुं धरे अनिमान ॥ ल० ॥ पुण्यनें पाप देखावता, फल शुन अशु न अमान ॥ ल० ॥ अ० ॥ ६ ॥ पण जगमां जीवज नथी, तिणे ए न

घटे कांय ॥ ल० ॥ जीव होय तो सवि घटे, परलोकें कुण जाय ॥ल०॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ जेटलुं नयणें निरखीयें, इंद्रिय गोचर एह ॥ ल० ॥ लोक एटलो जाणीयें, वृकपदनी परें तेह ॥ ल० ॥ अ० ॥ ८ ॥ खाउं पीउं सु खथी रमो, समुदाय मात्र ए देह ॥ ल० ॥ काल गयो आवे नही, इंम निजनारी कहेह ॥ ल० ॥ अ० ॥ ए ॥ यतः ॥ पिव खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ॥ नहि नीरु गतं निवर्त्तते. समुदयमात्रमिदं कले वरम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ आलोक सुख ठंमी करी, परनव सुखनी आश ॥ल०॥ तप करी वे नव हारता, जंबू करे तस पास ॥ ल० ॥ अ० ॥ १० ॥मांस पेशी तटें ठंमीनें, मीन लेवा जिम जाय ॥ ल० ॥ गृध्र मांस लेई गयो, ज लमां मीन बूडाय ॥ ल० ॥ अ० ॥ ११ ॥ उनयच्रष्ट जंबुक थयो, ति म इहां ठंमी नोग ॥ ल० ॥ परनव आशायें दोडता, उनयच्रष्ट होये लो ग ॥ ल० ॥ अ० ॥ १२ ॥ कष्ट करे इह लोकमां, परनव आशा चित्त ॥ ॥ ल० ॥ जीव विना परनव नहीं, एतो मोहोटी अनीति ॥ ल० ॥ अ० ॥ ॥ १३ ॥ कर्णसूचि सम सांनली, पुरोहित वचन नूपाल ॥ ल० ॥ गोपवे रोष गंनीर ते, मंत्री मुखडुं नालि ॥ ल० ॥ अ० ॥ १४ ॥ विद्यावंत मंत्री कहे. अनुनव सिद्ध ए जीव ॥ ल० ॥ रे मूरख देखे नहीं, उंलवे केम अ तीव ॥ ल० ॥ अ० ॥ १५ ॥ पुत्रनो जन्म सुणी करी, डुःखिउ पण लहे सु ख ॥ ल० ॥ तास मरण वली सांनली, सुखमां किम लहे डुःख ॥ ल० ॥ ॥ अ० ॥ १६ ॥ मातुं कृश मुज अंग ए, ए स्वामी मति केम ॥ ल० ॥ नू प पृथिवी परें निन्न ए, जीव शरीर ए नेम ॥ ल० ॥ अ० ॥ १७ ॥ जीव उत्तो ए शाश्वतो, तिणें परनव पण जाय ॥ ल० ॥ पुण्य पाप पण सहु उ त्तां, सुख डुःख फल पण थाय ॥ ल० ॥ अ० ॥ १८ ॥ दानथी देवलोक पामीयें, तपथी थाये सिद्ध ॥ ल० ॥ हिंसा प्रमुखें जाये नरकमां, ए शास्त्रें परसिद्ध ॥ ल० ॥ अ० ॥ १ए ॥ हेतुगर्जित युगतें करी.हत प्रतिहत कर्यो तास ॥ ल० ॥ लोकसनामें निंद्रीउं, ताहरो इयो विश्वास ॥ ल०॥अ०॥ ॥ २० ॥ नरपतियें अपमानीउं, लाज्यो तेह अत्यंत ॥ ल०॥ राजसनामां आवे नहीं, ते दिनथी धरी भ्रांत ॥ ल० ॥ अ० ॥ २१ ॥ मंत्रीनें सतकार ता, लोक तथा नरराय ॥ ल० ॥ स्तवना करतां सहु गयां,हरखी निज निज गय ॥ ल० ॥ अ० ॥२२॥ श्रीजयानंदना रासमां, नांखी आठमी ढाल ॥

॥ज०॥ पद्मविजय कहे नविजना, धर्मे थाउं उजमाल॥ज०॥अ०॥२३॥२४३॥

॥ दोहा ॥

॥ सना विसर्जि शुन परें, स्नान नोजन संनाल॥ नोजन करी बहुनाति नां, साधे सर्व स्वकाल ॥ १ ॥ नित्य मंत्रीनें नरपति, चिंतवे धर्म विचार॥ सखरो शासन रागीयो, परधानें कस्यो प्यार ॥ २ ॥ काल गयो ईम केटलो, नरपतिनें एक दिन्न ॥ माथी वेदन मस्तकें, अतिशय ते उपन्न ॥ ३ ॥ औ षध प्रमुख उपाय ते, वैद्यें नव नव कीध ॥ पण उपशम पामी नहीं, पा म्यो बहु प्रतिद्ध ॥ ४ ॥ पुरोहित तव पाथरो, सांनरीयो ससनेह ॥ एह उ पाय जाणे अवल, मंत्र विद्यानो मेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरोहितनें तेडावीउं रे, नरपति आदर आण ॥ मंत्रादिक उपचार थी रे, वेदनानी करी हाण ॥ सुगुणि नर, कर्मना विचित्र प्रकार ॥ १ ॥ गुण जाणे परनो कस्यो रे, मोहोटा पुरुष जे होय ॥ आवे नित्य कचेरी यें रे, तेहनें वारे न कोय ॥ सु० ॥ २ ॥ जन पण आदर बहु करे रे, प रजा राज प्रमाण ॥ धर्म मिश्रित नीति कामना रे, शास्त्र सुणावे जाण ॥ ॥ सु० ॥ ३ ॥ राजानुं चित्त रीजवे रे, थयो विश्वासी तेह ॥ ते देखी मं त्री कहे रे, शी संगति करो एह ॥ सु० ॥ ४ ॥ स्वामी चंमाल ए नास्ति को रे, नृप सुणी रह्यो मौन ॥ क्रोधें दुर्बुद्धि धमधम्यो रे, डुष्ट ए सरिखो कोण ॥ सु० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण कुल हुं उपनो रे, मुजनें कहे चंमाल ॥ रा जमान मद बहु करे रे, एह मंत्री वाचाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ हाहा पराजव बहु कस्यो रे, मुजने सना समक्ष ॥ पूरवलो जीवाडीउं रे, ईणें पराजव प्रत्यक्ष ॥ सु० ॥ ७ ॥ जो अपमान ए सही रहुं रे, तो मुज अधमता थाय ॥ मालीनें पराजव थकी रे, प्राण समूला जाय ॥ सु० ॥ ८ ॥ य तः ॥ वरं प्राणपरित्यागो, न मानपरिखंमनं॥ प्राणनाशात् क्षणं दुःखं, मा नजंगाद्दिने दिने ॥ १ ॥ ढाल ॥ हीणुं करे रूसे नहीं रे, तूसे न कीधे न व्य ॥ ते नर कोइ सेंमे नहीं रे, गणतीमां सव्या पसव्य ॥ सु० ॥ ए ॥ पंक ते मरदे पगथको रे, पण नवि अगनिने कोय ॥ तेज देखावुं एहनें रे, ते जसी नमे सहु कोय ॥ सु० ॥ १० ॥ पराक्रमी मातुं करे रे, तो पण चाहे तात॥ पग्वालो पग अनलनें रे, मर्दण करे नित्य तात ॥ सु०॥ ११॥ कोइ उपायें

मंत्रिने रे. करुं अनरथनो विचार॥ लखमी प्राण जातां जगें रे. उत्तम सुख दाता र॥सु०॥ १२॥ यतः॥ उपायानीर्वते वार्ड, वेध्येते च द्विषौ॥ उपायानि सु लंघ्य. किमुपायान्न सिध्यति॥१॥ ढाल॥ खोले रुप हवे मंत्रीनां रे, पण चिंते वली एम॥ जैनधर्मी नर रायनें रे. हुं नास्तिक करुं केम॥ सु०॥ ॥ १३॥ जैनगुरु पासें जइ रे. शीख्यो किरिया कलाप॥ कपटी श्राव क थइ हवे रे. नृपशुं करे आलाप॥ सु०॥ १४॥ मंत्रीनी परें कपट थी रे. दाखवे शुद्ध आचार॥ धर्म कपटें नृपनें गम्यो रे. जिम ते अनय कुमार॥ सु०॥ १५॥ मंत्री माया जाणतां रे, उवेख्यो नरराय॥ रा ज मानीतो जाणीनें रे, न चले कोइ उपाय॥ सु०॥ १६॥ धर्मशाल नित्य उपदेशे रे, विचें विचें कामनी वात॥ पुरोहित रायनें रीजवे रे, क पटपकी साक्षात॥ सु०॥ १७॥ धर्म राग अति दोहिलो रे, तुरत पा पनो राग॥ रंग गलीनो जिम होवे रे. नही तिम मजीठनो लाग॥ सु०॥ ॥ १८॥ कामरागें रंगाइउ रे, धर्मराग दुइ हाथि॥ मजिठ काजल संगें थया रे, लसण अगर परें जाण॥ सु०॥ १९॥ एकदिन मंत्री घरें गयो रे. कोइ कारय वसुसार॥ आसन दान बोलाववुं रें, बहु आदर सतका र॥ सु०॥ २०॥ घर आव्या मिथ्यात्वीनें रे. करवो पडे सतकार॥ शुं कहीयें नृपमान्यनुं रे, एतो उचित प्रकार॥ सु०॥ २१॥ यदुक्तं॥ गेहागयाण उचियं, विसणावडि आण तह समुद्धरणं॥ दुहिया ण दया एसो, सबेसिं सम्मउ धम्मो॥ १॥ ढाल॥ श्रीजयानं दना रासमां रे, चाली नवमी ढाल॥ पद्मविजय कहे सांभलो रे, श्रोता वात रसाल॥ सु०॥ २२॥ सर्वगाथा॥ २६०॥

॥ दोहा॥

॥ आई अवलुं अवलोकतां, निरखी मंत्री नार॥ रति प्रीति रूपें करी. सुगुण स्त्री शिरदार॥ १॥ मंत्रीनें धन्य मानतो, रमणी देखी रूप॥ जो ग योग एहनें भला, एहनें अति अनुरूप॥ २॥ मुज चिंता अथवा मि टी, कार्य प्रत्युत्तर कीध॥ आव्यो घरें उतावलो, समजे कारय सिद्ध॥३॥ लगन वर्ले नृपालनें, कहे अनागत कोय॥ राजानें इंम रीजवी. नित्य वेसे नृप पाय॥ ४॥ विश्वासी वसुसारनें, पूछे प्रश्न उदार॥ उंनुं मुज राज्यें अछे, संपूरण किमु सार॥ ५॥

॥ ढाल दशमी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुरोहित कहे तुम राज्यमां रे, गज रथ तुरंग अपार ॥ कामज अधिक वखाणीयें रे, पुरुषारथमां सार रे ॥ प्राणी, जूर्ड जूर्ड कपट विचार ॥ डुर्गतिनुं ए द्वार रे ॥ प्रा० ॥ तिहां नही कोइ आधार रे ॥ प्रा० ॥ जू० ॥ ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ धर्म अरथ जे साधीयें रे, ते एक कामनें काज ॥ काम साधन नारी कही रे, ते नहिं तुमचे राज रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ नारी विना निःष्फल सवे रे, राज रूद्धि परिवार ॥ विस्मय लही नृप बोलीर्ड रे, किम कहे जूठ ए वार रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ रूपवंतीने गुणवंती रे, माहारे छे बहु नारि ॥ विप्र कहे तुज सारिखी रे, एहनां न हीं कोइ सार रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ४ ॥ नाममात्रथी शुं होये रे, कोद्रव पण कहे आहार ॥ वाकलां पण वस्त्र थानकें रे, काचादिक अलंकार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ पण घेवर सुरद्रुप्यनें रे, स्वर्ण माणिकनें तोल ॥ नवि आवे तिम तुज प्रिया रे, नवि आवे कांय मोल रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ राय कहे मुज नारियी रे, अधिकी कोण सरूप ॥ दीठीनें वली सांजली रे, जगमां अति अदनूत रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ विप्र कहे दीठी विहुं रे, अदनूत रूपें निधान ॥ ते आगल तुज नारीनें रे, तृण पण नही उपमान रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ तिणे रूपें जींती रमा रे, हरि नवि माने तास ॥ ते अरतें थई अथिरता रे, लखमी न एक निवास रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ए ॥ ईम सांजली नृप बोलीयो रे, कोने छे आधीन ॥ परणिके कन्या अछे रे, नांखो विप्र प्रवीण रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ तव ब्राह्मण कहे पापीर्ड रे, ए शुं पूछो स्वाम ॥ अनुद्यमी असमर्थने रे, रूडुं अजाण्युं काम रे ॥ प्रा० ॥ ॥ ११ ॥ मुज शक्ति किहां नवि फुरे रे, राय कहे कहो तेह ॥ इष्ट कामें उद्यम नहीं रे, तेह कहो ससनेह रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ विप्र कहे सुणो स्वामीजी रे, तुज आधीन ए दोय ॥ तुज प्रधाननी वल्लजा रे, वल्लज ते घणुं होय रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ तुज किंकर ए तेहमां रे, शुं पराक्रमनुं काम ॥ उद्यम करी बोलाविनें रे, मूको अंतेउर धाम रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ नारी तुज अनुरूप छे रे, ए विण निष्फल सर्व ॥ हय गय राज्य तणो किस्यो रे, फोकट करवो गर्व रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ यतः ॥ स्त्रीरत्नं नाति नास्थाने, स्थाने नाति च योजितं ॥ ऐन्ने कंठे मणिघंटा, भ्राजते नतु गर्दने ॥ १ ॥ ढाल ॥ शूर अधिक नवि सहि शके रे ॥ प्रिया अधिक तुज दास ॥ किम स

ही सकीयें ते कहो रें ॥ लाज न आवे तास रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ स्वामि थ
की उंड़ं करे रे, वेप दान ने गेह ॥ नोग अधिक सेवक घरे रे, क्षण क्षण
साले तेह रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ ए नवि समज्यो जो कदा रे, स्वामी नक्ति
नहीं न्याय ॥ तो तस कामिनी अपहरी रे. शिक्षा देवी थाय रे ॥ प्रा० ॥
॥ १८ ॥ राय वचन सुणी विप्रनां रे,जाग्यो अंतर काम ॥ पण चिंते पर
नारीनुं रे. मुज पच्चखाण उद्दाम रे ॥ प्रा० ॥ १ए ॥ तेतो नवि जोवुं क
दा रे, वाले उत्तर तास ॥ अवसरें सवि वनी आवशे रे, विसरज्यो सुविला
स रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे, दशमी ढाल रसाल ॥ प
म्र कहे श्रोता सुणो रे, धन धन ए नूपाल रे ॥ प्रा० ॥ २१॥सर्वगाथा॥२८६॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी अनुमति पामीनें, चैत्य करे चित्त लाय ॥ मंत्रीश्वर मन नाव
तुं, प्रतिमा पण प्रतिष्ठाय ॥ १ ॥ सामी वत्सल करे सामटुं, निमंत्र्यो नर
राय ॥ तस पत्नी जोवा तणी, उत्कंठा पण थाय ॥ २ ॥ इष्ट वैद्य उपदे
शिउं, जाणी चतुर सुजाण ॥ अवनीपति आव्यो तुरत, मंत्रीवर मंडाण
॥ ३ ॥ नोजन सामग्री सरस, प्रिया सहित परधान ॥ आरंनी आचमनथी,
सद्य करे तिम स्नान ॥ ४ ॥ आसन कनकनां आपीआं, मणिना थाल महं
त ॥ रतन कचोलां रंगशुं, आणीने अरपंत ॥ ५ ॥ विश्वासें विनता विहुं,
पीरसवा आवे पाण ॥ खाद्य नोज्य व्यंजन सखर, वली घृत अधिक वखा
ण ॥६॥ विंजे मंत्री वायरो, आदर करी अपार ॥ नक्ति नावथी नलि परें,
संतोपे शिरदार ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ देखी कामिनी दोय के कामें व्यापीउ रेके० ॥ ए देशी॥

॥ देखी कामिनी दोय के कामें वश थयो रेके ॥ का० ॥ पुरोहित उ
र वचन, विश्वास ते आवियो रे ॥ वि० ॥ तोपण गोपवी निज, आकार
नोजन करें रे ॥ आ० ॥ तद्गत चित्त नोजन रस, मनमां नवि धरे रे के
॥ म० ॥ १ ॥ तांबूल वस्त्रानरण, प्रमुखें सतकारिया रे ॥ प्र० ॥ आव्या
निजघर राय के, चित्त विकारिया रे के ॥ चि० ॥ एकांतें एक दिन्न के, वसु
तारनें कहे रे के ॥ व० ॥ तादरी वात साची कही, कोण न सद्दहे रे के
॥ को० ॥ २ ॥ विप्र कहे कोण सेवक, स्वामीनें ठगे रे के ॥ स्वा० ॥ ला
जी मूको अंतेउर, जिम कोइ नवि चगे रे के ॥ जि० ॥ राय कहे किम क

रोयें, अकारज एहवुं रे ॥ अ० ॥ परनारी पञ्चखाण, चंगें डुर्गतें जवुं रे ॥ चं० ॥ ३ ॥ लोकमांहे अपवाद, अजश बहु विस्तरे रे ॥ अ० ॥ ए कुल मलिनता हेतु के, वात नविस्तरे रे के ॥ वा० ॥ वली मुज मंत्रि सुश्रावक, स्वामी नको घणो रे के ॥ स्वा० ॥ धर्मनुं साहाय्य देवे, उपकारी ए मुज तणो रे ॥ उप० ॥ ४ ॥ विनयनें न्यायी पराक्रमी, बुद्धियें अागलो रे के ॥ बु० ॥ निर्दोषीनें दोष, आरोपण नहि जलो रे ॥ आ० ॥ वली विश्वासनो घात ते, पाप मोहोटुं कह्युं रेके ॥ पा०॥ पापमूल परनारि, विरुद्ध ए किम ग्रहुं रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ एह सुणी डुर्बुद्धि, पुरोहित चिंतवे रे ॥ पु० ॥ अंतर डुष्ट कहे हवे, नृपनें कैतवें रे के ॥ नृ० ॥ वात विचार करो पण, नीति जाणो नहीं रे के ॥ नी० ॥ जे जे रत्न होये निज देशमां, ते ते रहे तहीं रे के ॥ ते० ॥ ६ ॥ तरु धान्यादिक सर्वना, स्वामी तुमें प्रनु रे के ॥ स्वा० ॥ तुज देशमां रतनी ए, नारीनो तुं विजुरे के ॥ ना० ॥ ए सघली स्त्री ताहरी, परस्त्री न ताहरे रे के ॥ प० ॥ एहमां पाप होय तो, ते शिर माहरे रे के ॥ ते० ॥ ७ ॥ नारी न आपे केम जो, स्वामिनको होये रे के ॥ स्वा० ॥ सुणी वली वात ए वपरी, अंतें तुं जोये रे के ॥ अं० ॥ ते तुं काले जाणीश, हमणां शुं कहुं रे के ॥ ह० ॥ तेहनें स्वामी नको, कहे केम सद्दहुं रे ॥ स० ॥ ८ ॥ मायावीशुं प्रीतिनुं, सरल ने नवि घटे रे के ॥ स० ॥ चिंतवे ताहरो द्रोह के, श्रावक किम सटे रे के ॥ श्रा० ॥ साहायकारी तुज एह, विश्वास पमाडवा रे ॥ वि० ॥ एहवा डुर्जन लोक, ते निश्चय जाडवा रे के ॥ नि० ॥ ९ ॥ करशो जो विश्वास तो, अंतें जाणशो रे के ॥ अं० ॥ रावि देखाडशुं परगट, ताम वखाणशो रे के ॥ ता० ॥ सांजली विस्मय खेद, आनंद राजा लहे रे ॥ आ० ॥ किम ए सत्य के जूठ, पुरोहित मुज कहे रे ॥ पु० ॥ १० ॥ कहे पुरोहितनें करशुं, वात ए चित्त धरी रे के ॥ वा० ॥ विसर्ज्यो ईम विप्र, चित्त संशय करी रे के ॥ चि० ॥ ते दिनथी हवे नरपति, संशय पामीयो रे के ॥ सं० ॥ बाह्य मित्राईनें तास, प्रियानो कामीयो रे ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ स्वजन पेठो करे नाश, सज्जनताइ पणो रे ॥ स० ॥ अंतर शत्रु करे छेद, खोर नीमज तणो रे के ॥ खी० ॥ १२ ॥ डुष्ट ते शिष्टनें कष्ट, नती होवे सदा रे ॥ न० ॥ सज्जनने डुर्जन दीये, पूरण आपदा रे के ॥ पू० ॥ हवे सिंहलगन नयरें, समरवीर नरपति रे ॥ स० ॥ एक दि

न सीमनें काजें. विरोध घयो अति रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ ते कारण नरवीर, राजायें निज नरें रे ॥ रा० ॥ दरवाजे लेखहारक, नुं शोधन करे रेके ॥नुं०॥ हवे ब्राह्मण अपकार, करण मंत्री नणी रे ॥ क० ॥ अवसर जाणी कूट, लेख लिखे आफणी रे ॥ ले० ॥ १४ ॥ हवे कोइ इव्य रहित द्विज, इव्यें लोनवी रे के ॥ इ० ॥ बूबी माया शीखवी, दलदीयें नोलवी रे के ॥ द० ॥ सोनानां पत्र चार, दीये प्रपंचथी रे ॥ दी० ॥ ते पण सुवर्ण लेख लेइ, चाल्यो संचयी रे के ॥ चा० ॥१५ ॥ गामांतर जइ आव्यो, दरवाजे ते फरी रे ॥ द० ॥ दूरदेशथी आव्यो, शरीर रजें नरी रे ॥ श०॥ रोक्यो जब दरवानें, नूपाल पुरुष मली रे ॥ नू० ॥ शोधन करतां सुवर्ण, लेख दीगे वली रे के ॥ ले० ॥ १६ ॥ पूढे तास स्वरूप के, तव बोले नहीं रे के ॥ त० ॥ सोंप्यो रायनें ताम, जइ तिणें गहगही रे ॥ ज० ॥ राय पूछे तुं कोण छे, तव ते इंम कहे रे के ॥ त० ॥ निर्इव्य ब्राह्मण वित्त, उपार्जवा मन रहे रे ॥ उ० ॥ १७ ॥ तुम नगरें वसतां में, सांनल्युं एकदा रे के ॥ सां० ॥ समरवीर नृप गिरि,संगम नगरें सदा रे ॥ सं० ॥ विप्र अपूर्वनें कनक, चतुष्टय पत्र दीये रे ॥ च० ॥ हुं पण लोनें गयो तिहां, हरख घणो हीये रे के ॥ ह० ॥ १८ ॥ दीधी आशीष पूछे तव, किहांथी आवीया रे के ॥ कि० ॥ में कह्युं रतिवर्द्धन, पुरथी तुम नावीया रे ॥पु०॥ तव तिणे स्वर्णने लेख, आप्यो हर्ष करी रे ॥ आ० ॥ मतिसुंदर मंत्रीनें, देजो इंम उच्चरी रे ॥ दे० ॥ १९ ॥ मत देजो ए पत्र, कोइना हाथमां रे के ॥ को० ॥ लेख कनक लेइ आव्यो, एकाकी न साथमां रे ॥ ए० ॥ हुं नवि जाणुं ए पत्र, मांहे तिणें शुं लिख्युं रे ॥ मां० ॥ हुं तो जाणुं जेटलुं, ते तुमनें नख्युं रे के ॥ ते० ॥ २० ॥ विप्र विसरजी लेख, वांचे हवे नूपति रे ॥ वां० ॥ पद्मविजय इग्यारमी, ढाल ए जिम हती रे के ॥ ढा० ॥ श्रीजयानंदना रासमां, एह कपट कथा रे के ॥ ए० ॥ तेह सांनलो वात, लिख्युं ते हमां यथा रे ॥ लि० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ३१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री प्रणमी प्रनु. लिखे राजाधिराज ॥ श्रीगिरिसंगम नगरथी, समरवीर शिरताज ॥ १ ॥ श्रीमति रतिवर्द्धनपुरें, मतिसुंदर जस नाम ॥ महामंत्री मुज मित्रहुं, लिखुं लेख अनिराम ॥ २ ॥ प्रीति सहित आलि

गनें, खेम कुशल छे अत्र ॥ नित्य नित्य वांछुं तुम तणा, खेम कुशलना प त्र ॥ ३ ॥ साचा अंतर मित्र गो, तुमथी अधिक न कोय ॥ लिखजो ते अ म सारिखुं, जे तुम कारय होय ॥ ४ ॥ समाचार एक प्रीछजो, तुमें अमनें कछुं जाण ॥ नृप विश्वासमां नाखीनें, पकडी लेशुं अचान ॥ ५ ॥ राज्य ते तुमनें आपशुं अवसर लही ततकाल ॥ तुमें सवि सामग्री सहित, आ वजो अवसर न्हाल ॥ ६ ॥ परिकर भेद करुं अछुं, ते सवि करजो काम ॥ सावधानर हेजो सदा, लिखजो दिवसनुं नाम ॥ ७ ॥ ते दिन कपर आवशुं, सर्व लेइ अनिसार ॥ राज्य अर्द्ध तुम भांखीयुं, देशुं ते निर्धार ॥ ८ ॥ संदे ह रहित ते जाणजो, तुमें मोटा परधान ॥ काम काज कहेवरावजो, सर्व स मय सावधान ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ लाल सुरंगा रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ पत्र वांचीनें रे नृपति, विस्मय क्रोध भराय रे ॥ दीठुं सांभल्युं नहीं कदा, हा किम एहवुं थाय रे ॥ मंत्री श्रावक भाय रे, एतो नवि संभवाय रे, कोपनुं कपट ए आय रे ॥ १ ॥ जुउं जुउं वात ए कर्मनी ॥ ए आंकणी ॥ अ थवा लेवी एहनी प्रिया, इहां शी वात विचार रे ॥ लोकनें जणवीनें लीजी यें, लाधुं एहनुं छार रे ॥ नृप्योने जिम आहार रे. नहीं अपवादनुं गार रे, इंगित थयुं निरधार रे ॥ जु० ॥ २ ॥ ईम चिंति दोये पत्रनें, मंत्री हाथमां राय रे, मंत्री जोइनें चिंतवे, पुरोहित कपट ए थाय रे ॥ खल होये दुःखदाय रे, खल करे प्रछन्न घाय रे, काम ते मलिन कराय रे ॥ जु० ॥ ३ ॥ मंत्री क हे नररायनें, कोइ ए वेरीनुं काम रे ॥ क्रोध भराणो रे नृपति, बोले निठुर ताम रे ॥ कपट करे रे तुं आम रे, धिठाईनुं तुं धाम रे, चाले मुजथकी वाम रे ॥ जु० ॥ ४ ॥ पानें दोष ते आचरी, नाखे परशिर ढाल रे ॥ ताहरे वि श्वासें हुं रहुं, तुं मल्यो वयरी नृपाल रे ॥ राय सभानें निहाल रे, लेख दे खावे ततकाल रे, जुउं ए वात निहाल रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ ते पण सहु चि त्त चिंतवे, संभवे वात न एह रे ॥ पण कांइ खबर पडे नहीं, मंत्री धर्मनुं गे ह रे ॥ सूज पडे नही रेह रे, गजब थयां मंत्री देह रे, मौन करी रह्या तेह रे ॥ जु० ॥ ६ ॥ राजा काम क्रोधें करी, निजनर हुकम ते कीध रे ॥ बेडी घा ली मंत्री प्रत्यें, बंदीखाने ते दीध रे ॥ तस भामिनी दोष लीध रे, कंदर्पे छूटे सिद्ध रे, माने कारय सिद्ध रे ॥ जु० ॥ ७ ॥ मंत्रीनो परिवार जे, नाठो ग

यो तिवार रे ॥ मुड़ा दीधी मंत्री गृहें, माने धन अवतार रे ॥ सजा वित्त नें सवार रे. मंत्री चिंते तिवार रे, नरपति प्रथम शिरदार रे ॥ जु० ॥ ८ ॥ नृपति नवि होये आपणा, करियें जो सहस्र उपगार रे ॥ सयलो ए परपंच कस्यो, हरवा माहरी नार रे ॥ नृप करतो जब आहार रे, दीठो में दृष्टि विकार रे, तेहिज कस्यो अणाचार रे ॥ जु० ॥ ए ॥ सर्पनें खल वली नृपति, अग्निनें जमराय रे ॥ याचक शल्यनें जामिनी, विधि नें विष वली खाय रे ॥ अपथ्य नोजन वली प्राय रे, पोतानां नवि थाय रे, करियें कोडी उपाय रे ॥ जु० ॥ १० ॥ कुलवंतो नीति जाणतो, जैनमां कुशल कहाय रे ॥ निर्दोषी मुज ऊपरें, कीधो एह अन्याय रे ॥ धिग् ए कंदर्पराय रे, देव गुरु माय ताय रे, धर्मनें पण न गणाय रे ॥ जु० ॥ ११ ॥ तप जप किरिया रे तिहां लगें, जिहां लगें कंदर्प बाण रे ॥ नवि लागां जस अंगमां, लागे तो लीये प्राण रे ॥ माह्या होये अजाण रे, न गणे गण कुगण रे, लघुता लहे महाराण रे ॥ जु० ॥ १२ ॥ यतः ॥ तीर लगो गोला लगो, लगो मरमके घाय ॥ नैना किसीकों मत लगो, उनका नहीं उपाय ॥ १ ॥ नास्ति कामसमोव्याधि, र्नास्ति क्रोधसमोऽनलः ॥ नास्ति ज्ञानसमंसुखं, नास्ति मोहसमोरिपुः ॥ १ ॥ विष वेश्या नारी नदी, अग्नि जुआरी काल ॥ ए साते नहीं आपणा, वली विशेषें नृपाल ॥ १ ॥ मित्रवद्धमा ज्ञेया, आज्ञ स्वं मित्रवद्रिपुः ॥ विषवन्नानृता विद्या, परस्त्री चामृतं विषम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ इंद्र अहिल्याशुं लागीयो, धाता पुत्रीशुं लग्ग रे ॥ रावण सीतानें लेइ गयो. ते जाणे सहु जग्ग रे ॥ शिर चुंब्यां जस कग्ग रे, नवि चाले जेह मग्ग रे, तेहने किहां थी होय सग्ग रे ॥ जु० ॥ १३ ॥ अथवा पुरोहित दोष ए, नहीं नृपनो तिल मात रे ॥ इंणें सहुयें ए कीधलुं, राय प्रेख्यो इंणी वात रे ॥ नास्तिक करे एह घात रे, अथवा कर्म आघात रे, कोइनो वांक न थात रे ॥ जु० ॥ १४ ॥ किम करे कलुषित आतमा, कर्मथी अधिक न कोय रे ॥ ताहरां कीधां ते आवीयां, कर्म करे तेह होय रे ॥ स्याने मूढ तुं रोय रे, पुण्य पाप साहामुं जोय रे, उपशमे कर्मनें धोय रे ॥ जु० ॥ १५ ॥ नृप थयो इंम वांकडो, हवे नहीं कोइ आधार रे ॥ नारीनुं शील ए खंमलो, शरण ते धर्मनुं सार रे ॥ शासन सुर सुखकार रे, आवजो आमां ए वार रे, नहीं कोइ धन परिवार रे ॥ जु० ॥ १६ ॥ जे दिनथी में अंगीकस्युं, शासन जैननुं एह रे ॥

जो न विराध्युं होये मनें, समकेत शील ते रेह रे ॥ तो अधिष्ठायक जेह रे, आपद टालो मुज तेह रे, इंम कही काउस्सग्ग करेह रे ॥ जु० ॥१७॥ ते काउस्सग्ग प्रजावथी. शासन देवता आय रे॥ ते कहे पारो काउस्सग्गनें, आपद गइ ते पलाय रे ॥ नृप सत्कार कराय रे, विहाणें तेडीनें राय रे, तव जाणशो तुमें न्याय रे, जिनशासन सुपसाय रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ इंम कही देवता गइ हवे, पारे काउस्सग्ग ताम रे ॥ विस्मय पामीनें मंत्रवी, नारी अंतेउर गाम रे ॥ ते पण चिंतवे आम रे, नृप आतुर थयो काम रे, नांगशे शील अभिराम रे ॥ जु० ॥ १९ ॥ राजा दासीनें मोकले, मूकी कुल मरयाद रे, चाटु वयण ते बोलती, धिक्कारनो करी साद रे ॥ काढी तिहांथी अविवाद रे, पामी अति विषवाद रे, किहां जइयें फरीयाद रे ॥ जु० ॥ ॥ २० ॥ चित्रशालामां वेगीयकी, माने ते कारागार रे ॥ शीलनंग करशे हवे, विरह थयो जरतार रे ॥ दूर रह्यो परिवार रे, मरवुं निश्चय निरधार रे, पालवुं शील उदार रे॥ जु० ॥ २१ ॥ यतः ॥ वरं प्राणपरित्यागो, नतु शीलस्य खंमनं ॥ प्राणत्यागे क्षणं दुःखं, नरकः शीलखंमने ॥१॥ ढाल ॥ पामे पराजव कोयथी; नृपनें शरणे ते जाय रे ॥ गंमे मरयादा नरपति,तो आमो कुण थाय रे. हवे एक धर्म उपाय रे, संकट विकटें सहाय रे, अवर नहीं सुखदाय रे ॥ जु० ॥२२॥ समकित शील जो मनथकी, न विराध्युं अमें रेप रे ॥ तो सही शासन देवता, टालो विघ्न विशेष रे अमचुं दुःख तुमें देख रे, दूर करो नृपद्वेष रे, रहुं हुं काउस्सग्ग वेष रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ ध्यान वलें आवी देवता, बोली प्रत्यक्ष वाच रे ॥ शीलरक्षा तुमची थशे, मानो एह साच रे, अमचोजूठ एह नाच रे, शोल राखो जिम पाच रे, एहमां नहीं खल खांच रे ॥ जु० ॥ २४ ॥ काउस्सग्ग पारो तुमें सुखें, देवता थइ विसराल रे ॥ श्रीजयानंदना रासमां, जांखी बारमी ढाल रे ॥ पद्मविजय सुरसाल रे, शीलथी लक्ष्मी विशाल रे, शीलथी मंगल माल रे, शील पालो उजमाल रे, वंछित फले ततकाल रे, व्याल होये फुलमाल रे, जाये दूर जंजाल रे, हरि करि नासे विकराल रे, जल होय अग्निनी जाल रें ॥जु०॥२५ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रातें कामारत थको, अंतेउरमां आवि ॥ तेहनें दासी तेडवा, नृपें

मोकली नावि ॥ १ ॥ काउस्सग्ग पारी कोमद्धुं, आवी नृप आसन्न ॥ तव जोवे नरपति तुरत, तरुणी केरुं तन्न ॥ २ ॥ पद मुख मूकी पाथरुं, सघ लुं तास शरीर ॥ कोढें व्यापित कामिनी, देखी थयो दिलगीर ॥ ३ ॥ पार्थि व तेहनें पूछतो, कोढ ए थयो किवार ॥ चिरकालीन अछे चतुर, वैद्य अ साध्य विचार ॥ ४ ॥ बीजीनें बोलावतो, डुर्गंध देवें कीध ॥ नाक मरडी नें नरपति, दैवें पुंगव दीध ॥ ५ ॥ तेहनें पण पूछे तुरत, कहो ए गंध किवार, कर्मथकी बहु कालनो, वैद्य असाध्य विचार ॥ ६ ॥ चित्रशालायें चित्तथी, महीपति मोकले ताम ॥ अहो दैव ए शुं थयुं, अबलानें किम आम ॥ ७ ॥ खेद लही क्षण चिंतवे, नोजन वेला नाम ॥ जोइ पण जा णी नही, एहवीनें वली आम ॥ ८ ॥ वस्त्राछादित वेगलुं, न लहुं वात निदान ॥ पुरोहित महा पापीउ, जल्पी वात अजाण ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ वाहालो माहारो वाय छे वांसली रे ॥ ए देशी॥

॥ नृपति इणी परे चिंतवे रे, दोष देखाडी एण ॥ पाप अघोर करावी [illegible]ुं रे, त्रूटीश हवे कहो केण ॥ १ ॥ वाहालो महारो पाप निंदा करे रे ॥ [illegible] आंकणी ॥ कष्ट दीधुं ए मंत्रीप्रत्यें रे, नारी तणे संकेत ॥ कीर्त्तिनें कुल [illegible]श धर्मनें रे, मलिन कखां एह हेत ॥ वा० ॥ २ ॥ मंत्री मल्यो वयरी प्र [illegible]यें रे, ए कोण माने वात ॥ एह कपट पुरोहित तणुं रे,जाणे जग विख्या [illegible] ॥ वा० ॥ ३ ॥ एह अधर्मी कपटी पणो रे, मंत्रीयें कखो तिरस्कार ॥ [illegible]पी ते कर्म करतां थकां रे, बीहे नहीं ते लगार ॥ वा० ॥ ४ ॥ प्रात स [illegible]यें निश्चय करी रे, बुद्धि तणे रे उपाय ॥ निर्दोषी करी मंत्रीनें रे, थापुं [illegible]रव ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ एहनी प्रिया पाछी आपशुं रे, देशुं डुर्जन दंम [illegible]इंम टलवलतां रयणी गइ रे, खेद आश्चर्य प्रचंम ॥ वा०॥६॥ प्रात समय [illegible]वे राजीउ रे, वेगे सना मझार ॥ मदेता मुत्सद्दी सहुये मल्या रे, तेडयो [illegible]ाहां लेखहार ॥ वा० ॥ ७ ॥ रे तुं साचुं मुज बोलजे रे, लेख दीउं तुज [illegible]ण ॥ नवि बोल्यो नय लही करी रे, मार देवराव्यो तेण ॥ वा० ॥ ८ ॥ [illegible]ार खातां तेह बोलीउ रे, मारो सुधा केम मुक्क ॥ बहु इव्यें हुं लोनावी रे, एह पुरोहित थुक्क ॥ वा० ॥ ए ॥ पुरोहित अक्षर जोइ करी रे, नि [illegible]य कखो निरधार ॥ एह अकर्म इणें करयुं रे, पुरोहित डुष्ट अपार ॥ वा० ॥ १० ॥ निगड भंगावी मंत्री तणी रे, तास खमावे राय ॥ वस्त्राचरणें स

त्कारियो रे, दीये तेहनी दोय नार ॥ वा० ॥ ११ ॥ गज वेसारी दोय ना रिशुं रे, राजतना संयुत्त ॥ घर पोहोंचाडचा आडंबरें रे, जंखाणो तेह धू त ॥ वा० ॥ १२ ॥ मंत्री तथा हुवे दोय प्रिया रे, करे परस्पर वात ॥ देव ता वाणी प्रमुख सवे रे, धर्म दृढता थात ॥ वा० ॥ १३ ॥ करि धिक्का रनें क्रोधथी रे, दंमी ते वसुसार ॥ देशथी काढे ते नृपति रे, माथे ते से खसार ॥ वा० ॥ १४ ॥ राज्यविरोध मिटाविउं रे, मंत्री बुद्धि निधान ॥ मंत्री संगें नजी वर्त्ततो रे, गांमी कुसंग निदान ॥ वा० ॥ १५ ॥ एक दि न बेसी कचेरीयें रे, मंत्रीनें कहे राय ॥ बीजी प्रिया परणे नहीं रे, ते हनुं कारण कांय ॥ वा० ॥ १६ ॥ मंत्री कहे छतुं नवि कहुं रे, तुम आ गल महाराज ॥ निर्दूपण मुज नारया रे, नारी सवे शिरताज ॥ वा० ॥ ॥ १७ ॥ पण कोइ शासन देवता रे, कीधो ए प्रतिकार ॥ काउस्सग्ग प्रमु ख सहे कर्युं रे, धुरथी सवि अधिकार ॥ वा० ॥ १८ ॥ राय विचारे मु ज नाग्यथी रे, अनुकंपा मुज कीध ॥ जस्म कस्यो नहीं मुऊने रे, इंणी परें समजण दीध ॥ वा० ॥ १९ ॥ धर्म महिमा प्रशंसतो रे, मंत्रीनें सर्व समक्ष ॥ आप अकारण नींदतो रे, नृपति थइ घणुं दक्ष ॥ वा० ॥ २० ॥ समकित शील महिमा हुवे रे, जाणी नगरी मांहि ॥ विस्तास्यो बहु हर्ष थी रे, अरिहंत धर्म उछाहि ॥ वा० ॥ २१ ॥ बहुजनें तेह अंगीकस्यो रे, गुरु पासें एक दिन्न ॥ पाप आलोइनें नृपति रे, प्रायश्चित प्रतिपन्न ॥ वा० ॥ २२ ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे, जांखी तेरमी ढाल ॥ पद्मविज य कहे धर्मथी रे, होवे मंगल माल ॥ वा० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥३००॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति हुवे नीरजावती, राखी धर्म रंग ॥ नगर ग्राम पुर नवनवां, चैत्य जैनना चंग ॥ १ ॥ साधर्मिक सुखीया कस्या, देइ इष्ट वरदान ॥ कर मूकी कारय कस्यां, मुनिजननें दिये मान ॥ २ ॥ गुरुपूजा गुरु नक्ति थी, दान अनघ दातार ॥ निजदेशें नीरजावती, पुण्य तणा परकार ॥ ३ ॥ जगत पूरे इम जश थकी, काढे इंणिपरें काल ॥ सयली करणी सचिव तणा, सात्त्वनो संतान ॥ ४ ॥ प्रिया सहित परधान ते, शक्तें पु ण्य संताति ॥ अरिहंत पूजा आदरी, त्रण्य काल ततकाल ॥ ५ ॥ दोय टंकनां दिन प्रत्यें, पडिक्कमणां पच्चखाण ॥ काउस्सग्ग पोसह वली करें,

दीये सुपात्रें दान ॥ ६ ॥ मंत्रीश्वरनी मानिनी, पण करे पुण्य प्रधान ॥ केइक कोडी वरस करे, धर्म ते सहु सावधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ सांजलजो हवे कर्म विपाक कहे मुनि रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन अतिबल केवली तिहां पाउ धारिया रे, वनपालक तिहां आवि वधाव्यो राय रे ॥ दान देइ तस संतोषी परिवारशुं रे, सामंत मंत्री शुं मुनि वंदन जाय रे ॥ १ ॥ सांजलजो तमें कर्मविपाक केवली कहे रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रदक्षिणा देइ वंदना करी बेठा सहु रे, धर्मलाज देइ गुरु पण दीये उपदेश रे ॥ सुलना अरथी प्राणी ते अरिहंतना रे, धर्मथी पा मे तथलां सुख सुविशेष रे ॥ सां० ॥ २ ॥ जोग शरीर अनित्य वली लख मी राज्यनी रे, नित्य धर्म ते लहीयें मोक्षनें काज रे ॥ सांजली नृपादिक संवेगें वासीआ रे, पूछे मंत्री निज पूरव जव साज रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ जि नपूजा महिमानें तस प्रतिबोधवा रे, केवली कहे मंत्री पूरव जव वात रे ॥ इणे जरतें रत्नसंचय नगरें नृप हूउ रे. नरदत्त नामें शत्रु विनाश वि ख्यात रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ नृप मानीतो माली नंदन नामथी रे, सुनंदा सु जगा दोय नारी तास रे ॥ मालती जाइ जुइ चंपक वृक्षशुं रे,नृप दीया आराम ते पाले खास रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ फूल गुंथ्यां अणगुंथ्यां नृपनें आ पतो रे, देवपूजा तिम अंगजोगनें काम रे ॥ मुकुट प्रमुख अलंकार तथा घर फूलनां रे. कुसुमनी शय्या करी आपे अजिराम रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ ति ण उद्यानें रुषजदेवनुं देहरुं रे, नगर लोक तिहां पूजे करे बहु मान रे ॥ ते देखीनें चिंते माली ए मोटको रे,एहनें पूज्यां अरच्यां फल वलमान रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ प्रजु आगल फल ढोतां जननें देखीनें रे, बीजोरुं जावें करी ढोयुं एक रे ॥ ते दिन फूल आनरणे राजा रीजीउ रे, बहु परसाद क खो नृपें धरिय विवेक रे ॥ सां० ॥ ८ ॥ माली माने फलनुं फल मुज ए थयुं रे, ते दिनथी फल कुसुम पत्र सुविशेष रे ॥ पूजा करे अरिहंतनी गु ण अणजाणतो रे, राज्य मानादिक अधिक अधिक फल देख रे ॥ सां० ॥ ॥ ए ॥ दोय प्रिया पण ईर्षाहिल जिनपूजा करे रे, फल दीठें कहो आ लस कोण करे जीव रे ॥ नाम सुवंद घारर एक कदिन आग्य धणी रे, फूल जार ते पुरमां लावे सदैव रे ॥ सां० ॥ १० ॥ एकदिन पुष्प जार लेइ पुरमां आवतो रे, साहमो माली मलीउ ते कहे एम रे ॥ नृपपूजानो अ

वसर जाय उतावलो रे,वेडीयें घाल्यो कोइये नाव्यो केम रें ॥ सां० ॥११॥ ते सांनलीनें चाकर तिहां रोपें करी रे, नाखी नारनें चाल्यो बीजे देश रे ॥ तादृश संगथकी ते तापस व्रत ग्रहे रे, कष्ट करे अज्ञान तपें सुविशेष रे ॥ सां० ॥ १२ ॥ माली पण अति कोप करी उवेखीउं रे, पोतें फूल लेइ जइ दीधां राय रे ॥ जैनधर्म प्रनावें तस लक्ष्मी वधी रे, कल्पलता परें इह नव पण सुख दाय रे ॥ सां० ॥ १३ ॥ तेहथी नाव अधिक नित्य नित्य पूजा करे रे, माली आयु पूरुं करी थयो तुं प्रधान रे ॥ पूरवनव पत्नी ते तुज पत्नी थइ रे, तापस कष्ट करीनें तप अज्ञान रे ॥ सां०॥१४॥ आयुक्षयें पुरोहित थयो वसुसार ए रे, पूरवनव अन्यासें द्वेषी तुज्ज रे ॥ वेडीयें घाल्यो वयणथी तें धिक्कारियो रे, तेणें तुज वेडी प्रपंचथी ए फल गुज्ज रे ॥ सां० ॥ १५ ॥ कर्म करे जे वयणथी ते नर नोगवे रे, कर्म साक्षात् पणे इंम जाणी नव्य रे ॥ कर्म न कीजें सांनली इंम मंत्री हवे रे, प्रिया सहित लहें जातिस्मरण नय रे ॥ सां० ॥ १६ ॥ केवलीनें कहे में पण दीठुं ए सवे रे, पण अव्यक्तपणे पूजा फल एह रे ॥ व्यक्त पणाना फलनुं तो कहेवुं किश्युं रे, स्वर्ग तथा अपवर्गनां फल दीये जेह रे ॥सां०॥ ॥१७॥मंत्री नृप नवनीरु लह्या संवेगनें रें ,धर्म यथाशक्ति ग्रही केवली पास रे॥ नृप मंत्री मंत्रीप्रिया सहु प्रणमी मुनि रे, परम संवेगें पोहोता निज आवास रे ॥ सां० ॥ १८ ॥ श्रीजयानंदना रासमां पद्मविजयें कही रे, कर्मविपाक तणी वर चौदमी ढाल रे ॥ कर्म शुनाशुन जेहनें जेहवां आचर्यां रे, तेहने तेहवां आव्यां उदय विशाल रे ॥ सां० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति मंत्रीने घणा, कला संजुत्त कुमार ॥ रूप यौवन मद राग शुं, परण्या प्रेम अपार ॥ १ ॥ एकदिन नृप अमात्य दो, धर्म विचारी धीर ॥ निज निजसुत निज पदें ठवे, सुंदर जास शरीर ॥२॥ नववैराग्य नावे घणुं, सचित्त त्याग शुनचित्त ॥ ब्रह्मचर्य पाले वरत, नृप मंत्री नवनीत॥३॥ अरिहंत गुरु उपासतां, पुण्यवंत परिवार ॥ एकदिन पौषध आलयें, पौषध करे अतिप्यार ॥ ४ ॥ रातें काउस्सग्गें रह्या, उठ्यो अगनि अनंत ॥ पवन प्रचंमें प्रेरिउ, हाहाकार हवंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ तोरणथी रथ फेरीर्ज रे हां ॥ ए देशी ॥

॥ लागती अगनि आवी तिहां रेहां, लोक करे पोकार ॥ मेरे साहिबा, उलवे धूलि जलें करी रे हां, पण ते न शमे लगार ॥ मे० ॥ १ ॥ लोक देखे बहु वाधती रेहां,आवी पौषधागार ॥ मे० ॥ पोसहमां परिवार जे रेहां, नयथी कहे तिणवार ॥ मे० ॥ २ ॥ अग्नि चिहुं दिशि फरी वली रेहां, मंत्री सहित तुमें राय ॥ मे० ॥ नीकलो प्राण उगारवा रेहां, एहमां दुख न वि थाय ॥ मे० ॥ ३ ॥ राय मंत्री तव चिंतवे रेहां, आज प्रतिज्ञा कीध ॥ मे० ॥ ते काउस्सग्ग किम भांगीयें रेहां, जे पच्चखाण प्रसिद्ध ॥ मे० ॥ ॥ ४ ॥ जीवन मरण होवे इंण समे रेहां, पण नवि व्रत लोपाय ॥ मे० ॥ जीवित अधिक ए धर्म छे रेहां, पामवो डुर्लन थाय ॥ मे० ॥ ५ ॥ प्राण तो नव नव सोहिलां रेहां, राखवो धर्म दृढाव ॥ मे० ॥ नृप मंत्री ते बिहु जणा रेहां, नवि चूके ते दाव ॥ मे० ॥ ६ ॥ बीजा पौषधना धणी रेहां, सहु नीकलीया तेह ॥ मे० ॥ अगनि पसखो जन रव सुणी रेहां, निश्चित मरण करेह ॥ मे० ॥७॥ सागारी अणसण करी रेहां, तव नवि अगनि देखाय ॥ मे० ॥ कोलाहल पण को नहीं रेहां, सहु परिवार रह्या ठाय ॥ मे०॥८॥ अमनें क्षोन पमाडवा रेहां, कीधुं ए सवि काम ॥ मे०॥ विस्मयथी इंम चिंतवे रेहां, कोइक सुरवर ताम ॥ मे० ॥९॥ फूलवृष्टि बिहुं उपरें रेहां, करतो दिशि उद्योत ॥ मे० ॥ बोले तुम व्रत दृढपणुं रेहां, नवसायरें जिम पोत ॥ मे० ॥ १० ॥ सौधर्मेंइ वखाणियुं रेहां, सुरवर सना मझार ॥ मे० ॥ हुं अण मान्ये आवीर्ज रेहां, कीधी परीक्षा सार ॥ मे० ॥ ११ ॥ तुमें प्रतिज्ञा निर्वही रेहां, तुमनें हो परणाम ॥ मे० ॥ इंम कही ऊंडुनि वजाडतो रेहां, विस्मय लही तिण ठाम ॥ मे० ॥ १२ ॥ कनक रयण वरसी हवे रेहां, प्रणमी जाय निजवास ॥ मे० ॥ काउसग्ग पोसह पारिर्ज रेहां, धर्म सुणे गुरु पास ॥ मे० ॥ १३ ॥ पारणुं पाप वारण करे रेहां, मुनिवर देइ दान ॥ मे० ॥ लोक प्रशंसा बहु करे रेहां, रायनी तिम प्रधान ॥ मे० ॥ ॥ १४ ॥ एकदिन श्रावकनी वहे रेहां, प्रतिमा जे अगीयार ॥ मे० ॥ राय प्रधान बिहु जणा रेहां, डुर्बलतनु सुकुमार ॥ मे० ॥ १५ ॥ यतः ॥ दंसण वय सामाइय, पोसह पडिमा अबंन सचित्ते ॥ आरंन पेस उद्दिठ, वज्जए समण नूएय ॥ १ ॥ ढाल ॥ शुद्ध करी आराधना रेहां, पंच परमेष्टी ध्या

न ॥मे०॥ मरण समाधि लहे तदा रेहां, पच्चखी अन्ननें पान ॥ मे० ॥१६॥ शुक्र कल्पें दोय कपनां रेहां, शक्र सामानिक देव ॥ मे० ॥ मंत्री प्रिया पण इं णी परें रेहां, सम्यग करी धर्म सेव ॥ मे० ॥ १७ ॥ मित्र पणे सुर बिहुं थया रेहां, सातमे देवलोकें तेह ॥ मे० ॥ जय जय रव सुरवर करे रेहां, स्तवनां करे सुरि नेह ॥ मे० ॥ १८ ॥ देवनी उत्पत्ति केरडां रेहां, विधि पूर्वक करी काज ॥ मे० ॥ वचन अगोचर सुख तिहां रे हां, जोगवे सुर साम्राज्य ॥ मे० ॥ १९ ॥ नंदीश्वरादिक तीर्थनी रेहां, यात्रा करे सुविवेक ॥ ॥ मे० ॥ तीर्थंकर पासें सुणे रेहां, देशना समकित टेक ॥ मे० ॥ २० ॥ सुख जोगवंतां तेहनें रेहां, जातो न जाणे काल ॥ मे० ॥ दान दीधुं मंत्री जवें रेहां, मुनिवरनें असराल ॥ मे० ॥२१॥ तिणें अधिकुं कांय, जोगवें रेहां, देवपणे सुख सार ॥ मे० ॥ हवे पुरोहित काढयो तदा रेहां, अन्यायें वसुसार ॥ मे० ॥ २२ ॥ देश अनेक जम्यो तिहां रेहां, नवि लह्यो किहांये गम ॥ मे० ॥ जोला लोकनें जोलवे रेहां, डुष्ट वासना काम ॥ ॥ मे० ॥ २३ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यानें मरी रेहां, रतन प्रजायें जाय ॥ मे० ॥ वेदना त्रिविध सही तिहां रेहां, पूर्व कर्म पसाय ॥ मे० ॥ २४ ॥ तिहांथी तिर्यंचमां जम्यो रेहां, वार असंख्याती तेह ॥ मे० ॥ दरिद्री डुःखी दोजागी उ रेहां, विप्र थयो वली एह ॥ मे० ॥ २५ ॥ ते डुःखथी उदवेगीउ रेहां परिव्राजक वली थाय ॥ मे० ॥ धूमकेतु ज्योतिषी थयो रेहां, मिथ्याती सुर राय ॥ मे० ॥ २६ ॥ हवे ते अतिबल केवली रेहां, राज रुषि करे विहार ॥ मे० ॥ जिणे नृप मंत्री बोधीया रेहां, तिम बहु जन उपगार ॥मे०॥ ॥ २७ ॥ शैलेशी करी शिव वखा रेहां, एम दानादिक धर्म ॥ मे० ॥ चारित्र धर्म तिम वरणव्यो रेहां, जेह दीये शिवशर्म ॥ मे० ॥ २८ ॥ श्रीजयानंदना रासमां रेहां, पन्नरमी ए ढाल ॥ मे० ॥ प्रथम खंम पूरण थयो रेहां, पूरवजव सुरसाल ॥ मे० ॥२९॥ संवेगी शिर सेहरो रेहां, सत्यविजय पन्यास ॥ मे० ॥ कपूर विजय तेहना कवि रेहां, खिमाविजय शिष्य तास ॥ मे० ॥ ३० ॥ जिनविजयो जगमां जयो रेहां, तास शिष्य वड जाग ॥ मे० ॥ तेहना उत्तमविजयजी रेहां, बहुश्रुत महावैराग ॥ मे० ॥ ३१ ॥ तास शिष्य पद्में कह्यो रेहां, प्रेमें पहेलो खंम ॥ मे० ॥ श्रोता जन सुणतां थकां रेहां, पामो पुण्य अखंम ॥ मे० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४३ ॥

इति श्रीमत्तंविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर पंमित श्रीउत्तमविजय जिनणिविनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानंदकेवलिचरित्रे तत्प्रागनवमंत्रिजीव वो धिवीजलानातिवल राजर्षि केवलिदृष्टांतसूचितयतिधर्मफ लवर्णनादि नवत्रय नरवीर नृप नवद्वय वसुसार पुरोहित सरूपातिवल राजर्षि मोक्षगमनवर्णनं नामा प्रथमः खंडः समाप्तः ॥ १ ॥सर्वगाथा ॥ ४४३ ॥ वक्र गाथा ॥ श्लोक ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सीमंधर स्वामी नमुं, विचरंता नगवान ॥ सीमंधर ए सारिखो, नही कोइ जगत निधान ॥ १ ॥ प्रथमखंम पूरण कस्यो, बीजानो हवे वहार ॥ श्रोताजन सुणजो सवे, आलस वंध वतार ॥ २ ॥ जंबूद्वीप लख जोयणो, नरत क्षेत्र तिहां नाल ॥ पर्वत जोयण पंचास ते, वैताढ्य नाम विशाल ॥ ३ ॥ पचवीश ऊंचो पण कह्यो, पूर्वापर जस प्रांत ॥ रूपानो रलियामणो, शोना तणो निशांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आदीश्वरनी विनतिनी देशी ॥ श्रीरिसहेसर देव रे, शेत्रुंजा धणी ॥ ए देशी ॥

॥ ऊंचो जोयण पचवीश रे, गिरिवर ए कह्यो ॥ पृथिवीथी दश जोयणा ए ॥ १ ॥ विद्याधरनी श्रेणी रे, उत्तर दक्षिणे, शाठ पचास नगर तिहां ए ॥ २ ॥ अरिहंतना गुण गाय रे, गीत सुकंठथी, खेट युगल तिहां क्रीडता ए ॥ ३ ॥ कनक रतनमयी गेह रे, नगरमां शोनतां, तिहांथी दश जोयण गइ ए ॥ ४ ॥ दोय श्रेणी तिहां होय रे, सौधर्म इंद्रना, लोकपालना देवता ए ॥ ५ ॥ आनिर्योगिकनां गण रे, मणिमय रूअडां, सुरालय ते जाणीयें ए ॥ ६ ॥ तिहांथी जोयण पांच रे, गिरिशिर ऊपरें, सिद्धायतणादिक अछे ए ॥ ७ ॥ नवकूट अति मनोहार रे, देवदेवी तिहां, क्रीडा करे अतिरंगशुं ए ॥ ८ ॥ हवे उत्तरश्रेणि मांहि रे, गगनवल्लन पुरें, कनकमणिमय मेह छे ए ॥ ए ॥ ते मणिगृह उद्योतें रे, नेद दिन रयणीनो, न लहे लोक कोकल लहे ए ॥ १० ॥ विद्याधरनो स्वामी रे, सहस्रायुध नामें, तेह नगर

नो राजीयो ए ॥ ११ ॥ सूरय परें तपे तेह रे, पण ए नित्य तपे, रवि विपरी त ते देखीयें ए ॥ १२ ॥ मालिनी नामें तास रे, शील गुण मालिनी, कांता अनुरक्ता घणुं ए ॥ १३ ॥ सुपनें चक्री देखि रे, कहे नरतारनें, राति स मय ते अन्यदा ए ॥ १४ ॥ चक्रीसम तुज पुत्र रे, होशे पति कहे, सांन ली ते हरखी घणुं ए ॥ १५ ॥ नरवीर नृपनो जीव रे, शुक्रयकी चवी, ते हनी कूखें उपनो ए ॥ १६ ॥ शुनमुहूर्त्ते शुन दिन्न रे, जनम थयो हवे, लक्षण लक्षित देहडी ए ॥ १७ ॥ अंग तेजें उद्योत रे, दश दिशि दाख तो, जनम महोत्सव नृप करे ए ॥ १८ ॥ वाजित्र नाद विनोद रे, दा न दीये घणुं, वधामणां बहु आवतां ए ॥ १९ ॥ मात सुपन अनु सारें रे, चक्रायुध नाम, सोनागी सुतनुं ठवे ए ॥ २० ॥ दिन दिन वाधे कुमार रे, प्रियदर्शन घणुं, पंच धावि पालीजतो ए ॥ २१ ॥ प्रजा मनोरथ साथ रे, कल्पांकुर परें, अनुक्रमें ते मोहोटो थयो ए ॥ २२ ॥ नणवा मूक्यो पुत्र रे, अवसर जाणीनें, कष्ट विना ते शीखतो ए ॥ २३ ॥ कला शस्त्र नें शास्त्र रे, बहु अन्यासतो, साखी मात्र गुरु करे ए ॥ २४ ॥ विनयवंतो हवे जाणी रे, निधि सोनाग्यनो, विद्या आपे पुत्रने ए ॥ २५ ॥ प्रज्ञप्ति देइ आदि रे, महाविद्या दीये, सहस गमे गंनीरनें ए ॥ २६ ॥ ते सवि साधे कुमार रे, लीलायें करी, विधि पूर्वक उद्यम करी ए २७ ॥ स्वनाग्यथी तास रें, सिद्ध थई सवे, सिद्धि तेहनें वश अछे ए ॥ २८ ॥ दिव्य शस्त्र बहु जाति रे, ते पण सीधलां, पुण्यनें दुःकर को नहिं ए ॥ २९ ॥ स्वयंवरा कन्या ताम रे, विद्याधर तणी, रूपें रंन हरावती ए ॥ ३० ॥ ब हु शत संख्या तास रे, नृप परणावतो, तेहशुं सुख विलसे सदा ए ॥ ३१ ॥ चारण श्रमण मुणिंद रे, एक दिन आवीया, भुवनानंद नामें गुरु ए ॥ ३२ ॥ ज्ञानवंत गुरु तेह रे, शिष्यें परिवस्या, सहस्रायुध हवे राजीउं ए ॥ ३३ ॥ बहुविद्याधर साथ रे, ऋद्धें परिवस्यो, प्रणमी धर्म सुणे तिहां ए ॥ ३४ ॥ पामी ते प्रतिबोध रे, लघुकर्मा हवे, चक्रायुध राज्यें ठवी ए ॥ ३५ ॥ गुरु च रणे लीये दीक्षा रे, नृपचक्रायुध, समकेतादिक आदरे ए ॥ ३६ ॥ बीजा पण बहु जीव रे, यथाशक्ति करी, धर्म आदरी घर गया ए ॥ ३७ ॥ बीजे खंमें एह रे, ढाल प्रथम कही, पद्मविजय प्रेमें करी ए ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहस्त्रायुध हवे साधुजी. विचरे गुरुशुं वेग ॥ शिक्षा डुविध शीखे सदा, सत्य संयम संवेग ॥ १ ॥ अंग पूरव अन्यासीयां, जाणी गुरुजी योग्य ॥ आचारय पद थापियुं, गुणवंता गतरोग ॥ २ ॥ चक्रायुध नरपति चतुर, विक्रमवंत वखाणि ॥ विद्या देवीयें वेगशुं, प्रगट चक्र दिउं पाणि ॥ ३ ॥ सान्वय नाम सोहामणुं, कृत्रिम वीजां कीध ॥ रयणवियाना जो रची, सत्य चक्रीपणुं सिद्ध ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीजी ॥ अष्टापदगिरि जात्रा करणकुं ॥ ए देशी ॥

॥ नंदीश्वरवर जात्रा करणकुं, एकदिन चक्री आया ॥ प्रिया सहित पूजा करी नकें, वाजित्र नाद वजाया ॥ १ ॥ श्रीजिनपूजा कीजें लाल, नरभव सफल करीजें ॥ ए आंकणी ॥ नाटक चक्रवर्त्ती करे सुंदर, प्रिया वाजित्र वजावे ॥ गीत गाये जिनवरनां नकें, नाटक तान मिलावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ नाटक देखी कोइक सुरवर, तुष्टमान थयो शकें ॥ कामित करी विद्या तस आपे, श्रीजिनराजनी नकें ॥ श्री० ॥ ३ ॥ साधन विधिशुं विनय करीनें, विद्या लीधी रंगें ॥ प्रभु प्रणमी ते देव नमीनें, आवे निजपुर संगें ॥ श्री० ॥ ॥ ४ ॥ ते विद्या साधवा हवे एकदिन, शाङ्गल वनमां मांहे ॥ तप ध्यानें तिहां परवत उपरें, अन्य काम तवि ठांहे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इंणि अवसर लंकानो राजा, शतकंठ नाम सोहावे ॥ प्रिया सहित मेरु जिन नमीनें, वलतां ते तिहां आवे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ विद्या साधतां सातमो दिन छे, तास विमान खलाय ॥ देव लूए तव देखी तेहनें, क्रोध मांहि ते जराय ॥ श्री० ॥ ॥ ७ ॥ नागपाश विद्यायें विकुर्वी, बांध्यो तरुथी गाढो ॥ तो पण निज ध्यानें ते चक्री, कांइ थयो नवि टाढो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विद्या सिद्ध थइ ते नृपति, त्रूटा ते नागपाश ॥ देवी कहे तुज सत्त्वें तूठी, फलशे ताहरी आश ॥ श्री० ॥ ९ ॥ काम पडे मुजनें संनारे, इंम कही गइ निज गामें ॥ प्रज्ञप्तियी लंकापतिनी, चेष्टा खबर ते पामे ॥ श्री० ॥ १० ॥ चक्री निजपुर आव्यो ते हवे, दोय विद्याधर आवी ॥ कन्या आव अयोध्यापतिनें, ठे ते वात सुणावी ॥ श्री० ॥ ११ ॥ नारीमांही जिम ते सर्वोत्तम, पुरुषमां रूप तुमारुं ॥ जो तुमें परणो तो होय सुंदर, हृदय ते माने अमारुं ॥ श्री० ॥ १२ ॥ पहिलां पण दिग्यात्रा मनोरथ, वली ए वातें प्रेरो ॥ प्रौढसेना लेइ कीध प्रयाणुं.

हो लोहनार हजारनो, लाला मोघर मस्तकें दीध ॥ जीहो तेहथी परानव नवि थयो, लाला पण कांय मूर्छा कीध ॥ न० ॥ १७ ॥ जीहो अणगमती नारी परें, लाला मूर्छा मूकी दूर ॥ जीहो वज्र मुजरें लंकापति, लाला हएयो पीडा थइ चूर ॥ न० ॥१८॥ जीहो रुधिर जरे मूर्छा लह्यो, लाला निगडित्त कीधो रे दीन ॥ जीहो वडवृद्धें पशुनी परें, लाला बांध्युं बंधन पीन ॥ न० ॥ १९ ॥ जीहो चक्री शक्र पराक्रमी, लाला मूकी तिहां रखवाल ॥ जीहो धैर्य देइ तस सैन्यने, लाला निःशंकित नृपाल ॥ न० ॥ २० ॥ जीहो निज सैन्यें आवी करी, लाला सुख निद्रा करे तेह ॥ जीहो तव शतकंठ चित्त चिंतवे, लाला आणी धर्मस्नेह ॥ न० ॥ २१ ॥ जीहो निजकृत कर्म सहे अहो, लाला सुखदुःख इह पर लोक ॥ जीहो में परानव ध्यानें कर्यो, लाला तेहनुं फल ए रोक ॥ न० ॥ २२ ॥ जीहो दोष ए माहारो मूलगो, लाला फलीउं मुज ततकाल, जीहो आरंनादिक इणी परें, लाला फलशे मुज जंजाल ॥ न० ॥ २३ ॥ जीहो राज्य आरंननुं मूल छे, लाला एम करी ते आलोच ॥ जीहो दीक्षा लेउं एम चिंतवी, लाला पंच मुष्टि करे लोच ॥ न० ॥ २४ ॥ जीहो नाव मुनि थया तेहने, लाला शासन देवता ताम ॥ जीहो बंधन छेदीनें दीयो, लाला मुनिवर वेश उदाम ॥ न० ॥ ॥२५॥ जीहो इव्यनावथी मुनि थया, लाला तिहांहीज काउस्सग्ग ठाय ॥ ॥जीहो समता दृष्टि करी रह्या, लाला निर्ममनें निर्माय ॥ न० ॥ २६ ॥ जीहो श्रीजयानंदना रासमां, लाला बीजे खंमें रे सार ॥ जीहो पश्में ढाल त्रीजी कही, लाला धन्य राय ऋषि अणगार ॥न०॥२७॥ गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ *आरक्तक आनन थकी, सांनली विस्मित थाय ॥ सेना क्षय संपुत* हवे, पोहोतो मुनिवर पाय ॥१॥ तुमें तो मोहोटा माहाव्रती, तुम बल तुमची पाज ॥ अमें न याये एहवुं, मुनिने कहे महाराज ॥ २ ॥ खमावे खांतें करी, लीलायें लंका जाय ॥ श्रीकंठ सुतनें सोंपतो, राज्य करी तस राय ॥ ३ ॥ आण मनावी आपथी, तेहनी दीधी ताम ॥ कन्या शतनो कर ग्रहे, कीधुं आपणुं काम ॥ ४ ॥ अन्यद्वीप अवनीपति, नमीआ चक्री नाम ॥ वधू सवली लेइ वल्यो, वैताढ्यें विश्राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सोनानी जारी हे ॥ ए देशी ॥

॥ दक्षिण श्रेणी हे, साहेब माहारा सरोवर तीर ॥ मेरा जंबू दीप, सह स्स कन्या तिहां क्रीडतीजी ॥ रूपगुणवंती हे, सा० ॥ निज अनुरक्त, जा णी अपहरी तेह, मनमथ मनमां पीडतीजी ॥ १ ॥ कन्या कंचुकी हे,सा०॥ चक्रीनी वात, जणवे कन्या ताय, तेह आवी संगर करेजी ॥ नाग ते सहु ए, सा० ॥ दक्षिण स्वामि, बहु खेचर करे सेव, वन्हिवेग रथनूपुरेंजी ॥२॥ सहु जइ तेहने हे, सा० ॥ जांखी वात, वन्हिवेग तव दूत, मोकली कहे वरावे इश्युंजी ॥ हठथी कन्या हे, सा० ॥ लीधी ते मूक, नहीं तो करो सं ग्राम, अन्यायें न करो किश्युंजी ॥ ३ ॥ तेह सांजली हे, सा० ॥ मान्यो संग्राम, नूख्याने जिम आहार, करे निमंत्रणा तिणीपरेंजी ॥ रथनूपुर हे, सा० ॥ नगरें आय, वन्हिवेग पण ताम, सैन्य लेइनें नीसरेजी ॥४॥ बलमदथी तेह हे, सा० ॥ ते दिन जोर, दारुण थयो संग्राम, ते बिहुं लश करनें तिहांजी ॥ वन्हिवेग तव हे, सा० ॥ देखे एम, बहु गज पायक आ दि, मरण लह्या प्राणी जिहांजी ॥ ५ ॥ अति दयावंतो हे, सा० ॥ चक्री नें एम, जांखे वाणी रसाल, आपण अरिहंत मत धणीजी ॥ शुद्ध श्राव क हे, सा० ॥ न घटे एह, जिणें हत्यादिक जीव, समुदय दोय मरण ज णीजी ॥ ६ ॥ युद्ध करीयें हे, सा० ॥ आपण दोय, वीर मानी करो यु द्ध, शाने लोक मरावीयेंजी ॥ शूर न वांछे हे, सा० ॥ जय संविनाग, अं गीकरे दोय ताम, निज निज बलनें ठावीयेंजी ॥ ७ ॥ बाणनें खंने हे, सा० ॥ दंन्म गदाय, सम विक्रम तेह दोय, लडतां कोइ न हारियोजी ॥ दोय सिंह लडता हे, सा० ॥ जीते न कोय, चक्री पाम्यो खेद, ज्वलतुं चक्र संजारीयुंजी ॥ ८ ॥ आव्युं ततक्षण हे, सा० ॥ हृदयें मारि, मूर्छा ल ह्यो वन्हिवेग, धरणी पड्यो वायें द्रुम यथाजी ॥ जाणी साधर्मिक हे, सा० ॥ चक्री ताम, अंचलें घाले वाय, जिम संज्ञा पामे तथाजी ॥ ९ ॥ फरे लडाइ हे, सा० ॥ धरतां एम, दया हृदयमां जोय, धन्य जिनशासन जग जयोजी ॥ ठठयो बलियो हे, सा० ॥ जे वज्रकाय, चिर मूर्छा नवि हो य, जिम श्रावक स्त्री परि थयोजी ॥ १० ॥ देखी चक्रीनें हे, सा० ॥ चिं ते तेह, ए मुज तात समान, करे उपगार एणी परेंजी ॥ एह परानव हे, सा० ॥ नवि देखंत, दीक्षा लीधी होत, जे जव तारणी सुख करेजी ॥

॥ ११ ॥ इंण अवसर हे, सा० ॥ चक्रथी मुज, मरण आवत निरधार,तो डुर्गति जातो सहीजी॥ पुण्य हीननें हे, सा० ॥ सद्गति नांहिं, राजानें तो विशेष, सद्गति आरंनें नहीजी ॥ १२ ॥ चक्री कृपालु हे, सा० ॥ वात्स ल्यवंत, संतोषी ए राय, अवसर योग्य करुं हवेजी॥ इंम चिंतवी हे, सा०॥ बोले वाणि, ताहारी कृपा अदनूत, एणे आचरणे सूचवेजी ॥ १३ ॥ बां धव साथें हे, सा० ॥ न करुं युद्ध, लीजें माहरुं राज्य, हुंतो दीक्षा आद रुंजी॥ चक्री बोले हे, सा० ॥ नहीं मुज काम, नोगवो सुखथी राज्य, हुं नवि लेउं ताहरुंजी ॥ १४ ॥ हुंतो इशुं हे, सा० ॥ एक प्रणाम, धुरथी की धो तेह, तव प्रार्थना करी निजपुरेंजी ॥ आव्यो चक्री हे, सा० ॥ निज प र जेह, कन्यानो समुदाय, पांचशें दीये चक्री करेंजी ॥ १५ ॥ लीधी पूरवें हे, सा० ॥ हवथी तेह, आपे तेहना तात, हर्ष करीनें हेजशुंजी ॥ दक्षिण श्रे णिना हे, सा० ॥ सर्व राजान, आवी प्रणमे पाय, देखी संयुत तेजशुंजी ॥ १६ ॥ हयगय नेटण हे,सा० ॥ करता तेह, आज्ञा मानी तास, सहस गमे कन्या दीयेजी ॥ वन्हिवेगनें हे, सा० ॥ आपे ताम, मुख्य नगर जे आठ, हरख धरीनें ते लीयेजी॥ १७ ॥ बीजा खेटनें हे, सा० ॥ आपे शेष, हवे उत्तर श्रेणी आय, लीलायें जीते नरवरूजी॥ आपे कन्या हे, सा० ॥ तेह राजान, सहस्र तणे परिमाण, यौवन रूप मनोहरूजी ॥ १८ ॥ पूर्वापर सद्ध ए, सा० ॥ शोल हजार, राणीनो समुदाय, जीते शेष वैरी बलीजी ॥ इंम जय करीनें हे, सा० ॥ नोगवे राज्य, निजपुर आवी सार, मानुं च क्रीनी ऋद्धि मलीजी ॥ १९ ॥ वन्हिवेग हवे हे, सा० ॥ पूर्णसंवेग, गुरु संयो ग अनाव, रहेवुं पडयुं घरमां तिणेजी ॥ महावेग मुनिवर हे, सा० ॥ जे नि ज तात, चउनाणी उद्यान, समवसर्या गुरु तिहां किणेजी ॥ २० ॥ सांन ली हरख्यो हे, सा० ॥ गुरु कनें जाय, प्रणमी गुरुना पाय, तेह पासें व्रत आदरेजी, सातशें पुरुषशुं हे, सा० ॥ सातशें नारि, परवरिउं परिवार, नि रतिचार संयम धरेजी॥ २१ ॥ श्रीवन्हिवेग हे, सा०॥ श्रीचंड्राय, सहस्रा युध नर नाथ, त्रणे राजवी तिण नवेंजी ॥ पामी केवल हे, सा० ॥ अहो अहो एह, वरीया अव्याबाध, सकल करमनें क्षय थवेजी॥ २२ ॥ लंका पति पण हे, सा० ॥ चारित्र पाली, पंचम नवें लहे सिद्धि, अहो चारित्र महिमा वडोजी ॥ इंम श्रावकनो हे, सा० ॥ साधुनो धर्म, पालतां लहे शि

वळमें, तिणे जैन महिमा ए वडोजी ॥ १३ ॥ बीजे खंडें हे, सा० ॥ चोथी ढाल, श्रीजयानंदनें रास, चक्रायुध अधिकार एजी ॥ पद्मविजयें हे,सा० ॥ जांख्यो रसाल, सुणतां मंगल माल, होवे जयजयकार एजी ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नरतें अवनी तलें, विजयपुर सुखखाण ॥ विधियें कीधी वानकी, स्वर्ग तणी सुख खाण ॥ १ ॥ स्वर्ग अर्थी सज्जन जिके, परगट कीजें पुण्य ॥ आदर करवा एणी परें, निरति कीधी नुन्न ॥ २ ॥ कोट चैत्यनें उंक जे, वापी वनश्री विशेष ॥ जेहनी शोजा जोइनें, नाकी थया अनिमेष ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ तिहां जय नामें राय, युवराजा तस जाय, आछे लाल विजयनामें जितशत्रुनेंजी ॥ १ ॥ पृथिवी पाले न्याय, चंद्र सूर्य समुदाय, आ० ॥ क्यांहि अनीतितम नवि रहेजी ॥ २ ॥ मित्र शत्रुनें दोय, त्रुग रुग होय, आ० ॥ क्षिति आपे अचरिज अहोजी ॥ ३ ॥ जयनें विमला नारि, विजयनें कमला धारि, आ० ॥ नयन ते राज्य लक्ष्मी तणांजी ॥ ४ ॥ रति प्रीति दोय नारि, हरदग्ध अनंग विसारि, आ० ॥ सुख अर्थे आवी इहांजी ॥ ५ ॥ एकदिन सूती राति, सुपनें सूअर साक्षात, आ० ॥ हरि युत खोळे आवी रह्योजी ॥ ६ ॥ सूअर मूकी ताम, हरि गयो कोइ गाम, आ० ॥ जागी कहे नरतारनेंजी ॥ ७ ॥ पुत्र ते सूअर समान, होशे कहे राजान, आ० ॥ अन्यनें हरि सम सुत थशेजी ॥ ८ ॥ पण बेहुनें पशे प्रीत, साथें विचरशे नित्य, आ० ॥ सांजली खेद हरख लहेजी ॥ ९ ॥ वसुसार जीव तिहां थाय, पूरण करी सुर आय, आ० ॥ तेहनी कूखें उपन्योजी ॥ १० ॥ हिंसा डोहादिक नाव, मायनें दोहद प्रनाव, आ० ॥ क्रूरता प्रमुख घणी थइजी ॥ ११ ॥ अनुक्रमें जनम ते थाय, दासी वधाइ खाय, आ० ॥ दान नरिंदें बहु दीयांजी ॥ १२ ॥ जनम महोत्सव करे राय, हरिदर्शन चित्त लाय, आ० ॥ सिंहसार अनिधा वर्युंजी ॥ १३ ॥ कमला पण एक दिन, सूतां रयणी सुपन्न, आ० ॥ सिंह सूअर दीठा बिहुंजी ॥ १४ ॥ नयन सौम्य बलवंत, उत्संगें रह्यो संत, आ० ॥ कोल गयो अन्य थानकेंजी ॥ १५ ॥ संजलावे नरतार, सांजली हर्ष अपार ॥ आ० ॥ सुपन तणुं फल ते कहेजी ॥ १६ ॥ ताहरे सिंह समान, गुणधी ते असमान, आ० ॥

वीजीनें सूअर सारिखोजी ॥ १७ ॥ वयण सुणीनें तेह,रूपवंती यइ देह, आ० ॥ कमला कमलमुखी तदाजी ॥ १८ ॥ सत्तर सागर आय, मंत्री जीव सुर राय, आ० ॥ सातमा देवलोकथी चवीजी ॥ १९ ॥ तास कुखें अवतार, शुज दोहला तेणी वार, आ० ॥ उपजे धर्म करण तणाजी ॥ ॥ २० ॥ पूरे ते युवराय, आनंद अंग न माय, आ० ॥ अवसरें पुत्र जनम थयोजी ॥ २१ ॥ शुज लग्नें शुज वार, जासुर अति देदार, आ० ॥ पूरव दिशें सूरज परेंजी ॥ २२ ॥ इंण समे शंख पुरीश, मानवीर नरईश, आ० ॥ ते उपरें जय नृप चढेजी ॥ २३ ॥ विनयें निवारी राय, चडीया तव युवराय, आ० ॥ जय करी बांधी लावीयाजी ॥ २४ ॥ दासी वधावे ताम, कमला सुत थयो स्वामि, आ० ॥ आवी बीजी दासी तदाजी ॥ २५ ॥ दोय वधाया राय, नाल निक्षेपनें ठाय, आ० ॥ पुत्र जनमनें अवसरेंजी ॥ २६ ॥ नीकल्यो कुंज निधान, हरख्या वेहु राजान, आ० ॥ तिहां मगावी जोइयोजी ॥ २७ ॥ तात नामांकित तेह, देखी चिंतवे जेह, आ० ॥ पुत्रपुण्यें गयो निधि लइयोजी ॥ २८ ॥ शत्रुजय थयो एम,लखमी आवी नेम, आ० ॥ पुत्र जनम कारण थयोजी ॥२९॥ दासी संतोषी दान, देइ तास अमान, आ०॥ बीजे खंमें एम कहीजी ॥ ३० ॥ पाचमी ढाल रसाल,सुणतां मंगल माल, आ०॥ पद्मविजयें प्रेमें कहीजी॥३१॥ सर्वगाथा ॥ १६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वधामणां वर आवतां, वंदी बिरुद बोलाय ॥ युगपत जय जय रव होये, गीत नाटक गवराय ॥ १ मूक्या बंदी मोकला, दान माहा देवाय ॥ दशदिश वाजित्र नादथी, प्रमोद प्रजा बहु पाय ॥ २ ॥ इष्ट अर्थ आगमनथी, प्रीतें आशीष पढाय ॥ दर्पे पुत्रना हेतथी, जगमां जनम जणाय ॥ ३ ॥ पहिवजी आणा प्रेमथी, मानवीर महाराय ॥ दंम लेइनें दंन विनु, शीख दीये समजाय ॥ ४ ॥ शत्रुजय सहु जीवनें, आनंद आपणहार ॥ श्रीजयानंद सज्जन मली, दीधुं नाम उदार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ फतमल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति श्रीजयानंद कुमार, सिंहसार साथें वधे ॥ न० ॥ धावें पाली लता तेह, तात मनोरथ नित्य सधे ॥ १ ॥ न० ॥ पांसुक्रीडा करे साथ, तिम बीजी रामत सम करे ॥ न० ॥ यथा कलानें योग, नृप कलाचार्य

पाळें धरे ॥ २ ॥ न० ॥ शस्त्र शास्त्रनी जेह, शीखवे कळा नळी परें ॥ न० ॥ नाग्य प्रमाणे तेह, पाम्या उदम पर परें ॥ ३ ॥ न० ॥ बहु धन आपी रा य, कलाचार्य संतोषीउं ॥ न० ॥ यौवन पाम्या दोय, काम राय जिहां पोषीउं ॥ ४ ॥ न० ॥ वापी वन आराम, मित्र साथें क्रीडा करे ॥ न० ॥ सामग्री सम दोय, पण प्रकृति निन्नज धरे ॥५॥ न० ॥ सहुनां कर्म विजिन्न, सिंहसा र क्रूरज पणो ॥ न० ॥ लोकनें करे उदवेग, लागे सवि अळखामणो ॥ ॥ ६ ॥ न० ॥ दोनागी अविनीत, अप्रियनाखी अधर्मियो ॥ न० ॥ श्रीजया नंद कुमार, सौनागी घणो धर्मियो ॥ ७ ॥ न० ॥ लावण्य लीलावंत, त्यागी शूर सोनागीयो ॥ न० ॥ न्यरुत मनमथ रूप, सहुजन जेहनो रागीयो ॥ ॥ ८ ॥ न० ॥ प्रकृतें उदार कृतज्ञ, प्रियवादी उपगारीयो ॥ न० ॥ सर्वने हित करनार, गुण गणनो ते धारीयो ॥९॥ न० ॥ लोक मुखें जस वाद, सिं हसार तस सांनळे ॥ न० ॥ खेद लहे चित्तमांहि, कारमी प्रीति करी च लें ॥ १० ॥ न० ॥ सरल ते श्रीजयानंद, साचुं करीनें सद्दहे ॥ न० ॥ सा ची प्रीति धरेह, तस गुणमांहि नजर रहे ॥ ११ ॥ न० ॥ गुणी गुण देखे सर्व, निर्गुणी ते अवगुण ग्रहे ॥ न० ॥ एकदिन क्रीडा उद्यान, वसंत ऋतें बाहिर रहे ॥ १२ ॥ न० ॥ रातें सुणे दिव्य गीत, वाजित्रध्वनि मीठो घ णुं ॥ न० ॥ तव साहसिक ते दोय, चाल्या धरत धीरपपणुं ॥ १३ ॥ ॥ न० ॥ कौतुकें पोहोच्या दूर, क्रीडा पर्वत उपरें ॥ न० ॥ काउस्सग्गमां लीन, कोइक ऋषि ध्यानज धरे ॥१४॥ न० ॥ कोइ सुर दिव्य स्वरूप, देवीयुत देखे तदा ॥ न० ॥ पटह वजावे देव, नृत्य करे एक सुरी यदा ॥ १५ ॥ ॥ न० ॥ एक वजावे ताल, वीणाघोषवती वळी ॥ न० ॥ वंश वजावे एक, मुनि आगळ मननी रुळी ॥ १६ ॥ न० ॥ गावे मुनिगुण नक्ति, नाटक वेहु हरखें लुवे ॥ न० ॥ विश्वमोहन अदनूत, करतां कर्मकादव धूवे ॥ न० ॥ १७ ॥ मुनि समता नंमार, शुक्लध्यान श्रेणें चडया ॥ न० ॥ पाम्या केवल ज्ञान, घाती कर्म साथें वढया ॥ १८ ॥ न० ॥ महोत्सव करवा काज, चार निकायना देवता ॥ न० ॥ मळिया वाजित्र नाद, करता केवळी सेवता ॥ १९ ॥ न० ॥ कनक कमळ रचे तह, केवळी तिहां वेसी करी ॥ न० ॥ सहुनें देइ धर्म लान, देशना दिये चित्तमां धरी ॥ २० ॥ न० ॥ समकेत अणुव्रत आदि, सांनळी देशना हित करे ॥ न० ॥ श्रीजयानंद कुमार, बूझया सम

केत आदरें ॥ २१ ॥ न० ॥ श्रीजयानंदने रास,बीजे खंमें ए कही ॥ न०॥ बही ढाल रसाल, पद्मविजय गुरुथी लही ॥॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंद पूछे इस्युं, सुर ए स्वामी कवण ॥ नाटक कीधुं निर्मलुं, वात कहे मुनि वयण ॥ १ ॥ वैताढये खेचरवई, नाम जयंत निदान ॥ सूरय ग्रहणे समजियो, दीक्षा करुं आदान ॥ २ ॥ ज्ञानवंत थयो गुरुथकी, आपी मुजनें आण ॥ एकाकीनी अवनीयें, विचरुं अवसर जाण ॥ ३ ॥ विंध्यगुफामां आवीयो, चोमासुं चउमास ॥ करी उपवास तिहां किणे, रह्यो हुं रीजी उल्लास ॥ ४ ॥ तिहांथी दोय जोयण तदा, नयरगिरि डुर्ग नाम ॥ सुनंद तिहां नृपति सदा, राज्य करे अजिराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ सुंदर पापस्थानक कह्युं सोलमुं ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर दोय सेवक छे तेहनें, जीम सोम अजिधान हो ॥ सुंदर ॥ एक गाउ ते गुफाथकी, रायनुं गोकुल थान हो ॥ १ ॥ सुंदर ॥ गति परिमाणें मति होये ॥ ए आंकणी ॥ सुं० ॥ राय आणाथी बिहुं जणा, पामी नृप आदेश हो ॥ सुं० ॥ गोकुलमां वासो वसे, शूरवीर सुविशेष हो ॥ सुं० ॥ ॥ग०॥२॥सुं०॥ मृगया अरथें एकदा, आव्या गुफानें पास हो ॥सुं०॥ मृगयूथ देखी बहु तिहां, मूके बाण ते तास हो॥ सुं० ॥ ग० ॥ ३ ॥ सुं० ॥ कोइ मृगनें नवि लागीयुं, बाण ते थया निराश हो ॥सुं० ॥ विस्मय ते बिहुं पामीया, मृग आव्या मुज पास हो ॥सुं०॥ ग०॥ ४ ॥सुं०॥ मुज पासें सुणे देशना, मृग पूठें ते दोय हो ॥ सुं० ॥ आव्या मुज देखी करी, तास विचार ते होय हो ॥ सुं० ॥ ग० ॥ ५ ॥ सुं० ॥ ए मुनिना महिमाथकी, मृगनें न लाग्यां बाण हो ॥ सुं० ॥ ए तपसी ऋषिराजीया, करे उपकारनें हाण हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ ६ ॥ सुं० ॥ मनमां बीहीना अतिघणुं, कीधो मुज परणाम हो ॥ सुं० ॥ कहे अपराध ए अम तणो, खमो तुमें तपसी स्वामि हो॥सुं०॥ग०॥७ ॥ सुं० ॥ अमें तुम मृग नहीं मारीयें,मत करजो अमराष हो ॥सुं०॥ मुनि धर्म लाज देइ कहे, जय नवि आणो सराख हो ॥ सुं०॥ ॥ ग० ॥ ८ ॥ सुं० ॥ तुमनें अजय छे पण सुणो, धर्मतत्त्व एकांत हो ॥ सुं० ॥ सुखइछक सहु जीवडा, जीववुं सहु इछंत हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ ए ॥ सुं० ॥ तेहनां प्राण जे अपहरे, नरकें जाये तेह हो ॥ सुं० ॥ मांसाहारी

जीवडा, परस्त्रीगमन करे जेह हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ १० ॥ सुं० ॥ पंचेंद्रिय वध आचरे, तेहनें नरकमां ठाण हो ॥ सुं०॥ हिंसा न करे जे नरा, तस सुख जस कल्याण हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ ११ ॥ सुं० ॥ आरोग्यता बल आ उखुं, पामे लक्ष्मी रूप हो ॥ सुं०॥ परजवें सुरवर सुख होवे, अनुक्रमें मो क्षस्वरूप हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १२ ॥ सुं० ॥ सांजली धर्मनें बूजीया, सम कित पामे सार हो ॥सुं०॥ प्रथम अणुव्रत आदरे, वली पचखे मांसाहार हो॥सुं०॥ग०॥१३॥ सुं० ॥ हरखें श्रमनें वंदीया, पोहोता निज आवास हो ॥ सुं०॥ अहोनिश ते व्रत पालता, माने जीवित खास हो ॥ सुं० ॥ ॥ग० ॥ १४ ॥ सुं० ॥ राय सुणे ते वारता, मिथ्यात्वी शिरदार हो ॥ सुं० ॥ हिंसकपरिणामी पणो, कोप करी तिणी वार हो ॥सुं०॥ग०॥१५ ॥ सुं० ॥ मृगया करी मृगमांसनें, लावो निज्ञ निज्ञ दोय हो ॥ सुं०॥ मुज मृगमांस खावा तणी, आज इछा छे जोय हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १६ ॥ सुं० ॥ नृप आ णा अंगीकरी. चाल्या दोय ते ताम हो ॥सुं०॥ आज तो मृग लाधा नहीं, उत्तर देशुं स्वामी हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १७ ॥ सुं० ॥ वनमां दोय गया हवे, मृग दीठा तेणे ताम हो ॥सुं०॥ जीम चिंते चित्तमां तदा, मृग हणीयें मां स काम हो ॥सुं०॥ ग० ॥ १८ ॥ सुं० ॥ तो व्रत नांगे मूलथुं, पण होये कोप नरिंद हो ॥सुं०॥ दोष नहीं परवश पणे, ईम कहे श्रीजिनचंद हो॥ सुं०॥ग०॥१ए॥ सुं०॥ व्रत तो काले फल दीये, आजज फल नृप कोप हो॥ सुं० ॥ सोमें वार्यो पण नवि रह्यो, कीधो व्रतनो लोप हो ।सुं०॥ग०॥२०॥ ॥सुं०॥मृग हणी मांस लेइ वल्यो, श्रीजयानंदनें रास हो ॥सुं०॥ बीजे खंमें पमें कह्यो, सातमी ढाल विलास हो ॥ सुं०॥ ग० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्राण जाय परलोक जो, पण व्रत नवि लोपाय ॥ बीजो तो ईम व हु परें, सोम चित्त समजाय ॥१॥ प्राण राखवा आपणो, परनां न हणुं प्राण ॥ माहारां वाहालां मुजने, परनें तिमज प्रमाण ॥ २ ॥ राजा रूसो मुज उपरें. प्राण धरो परदेश ॥ मृगनें हुं माहारी करी, लोपुं नहीं व्रत ले श ॥ ३ ॥ यतः ॥ निंदंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवंतु, लक्ष्मीः समाविश तु गछतु वा यथेष्टं ॥ अद्यैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलं ति कदापि धीराः ॥१॥ निमित्तमासाद्य जवेन किंचन, स्वधर्ममार्गं विसृजंति

वाज़िशाः ॥ तपःश्रुतज्ञानधनास्तुसाधवो, न यांति कष्टोपगमेपि विक्रियं ॥ ॥ २ ॥ दोहो ॥ सोम विचारी सत्त्वथी, मृग नवि मखो तेण ॥ उत्तर रायनें थापीयो, श्रमनें न जडयो एण ॥ ४ ॥

॥ ढाल श्रावमी ॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सोम श्राव्यो निज घरजणी रे, नीम प्रशंसे राय ॥ मृग श्रामिष जे श्राणीयुं रे, खाधुं उदर नराय रे ॥ कर्म विटंबणा ॥ १ ॥ कर्मे जुउं छुं होय रे, डुर्गति चेटणा ॥ कर्म न छूटे कोय रे, नवनव ङुःखिउं सोय रे ॥ क० ॥ ए श्रांकणी ॥ नीमनें पूठे नूपति रे, सोम न लायो रे केम ॥ तव ईर्ष्यायें नांखीयुं रे, एहने ठे ए नेम रे ॥ क० ॥ २ ॥ मृग लाधां प ण नवि हएयां रे, तव रुगे नरराय ॥ मुज श्राणा लोपी इंणे रे, बांधी लावो जाय रे ॥ क० ॥ ३ ॥ गाम एक तुज श्रापशुं रे, तव हवे लोनथी तेह ॥ सुनट साथें तस घर गयो रे, मारण चित्त धरेह रे ॥ क० ॥ ४ ॥ कष्पे हाथ करी हाथमां रे, श्राव्यो तिहां किण जाम ॥ सोम शंकावंत धु रथकी रे, वात सुणी वली ताम रे ॥ क० ॥ ५ ॥ सोम नाठो घरथी हवे रे, परवत जावुं रे धारि ॥ नगर बाहिर जव नीकल्यो रे, नीम पण पद श्रनुसार रे ॥ क० ॥ ६ ॥ नीम पूठें सोम श्रागलें रे, लग नग मलिया रे तेह ॥ सोम विव्हल जय नासतो रे, जाणे श्राव्या एह रे ॥ क० ॥७॥ सुनट कहे किहां जाय ठे रे, करी नृपनो श्रपराध ॥ किहां जाइश तुं ना शिनें रे, रुगे राय श्रगाध रे ॥ क० ॥ ८ ॥ कडुश्रां वयण सुणी इश्यां रे, जय श्राणी मनमांहि ॥ श्रति उतावलो नासतो रे, मनथी गनचग्राह रे ॥ क० ॥ए॥ इंणे श्रवसरें मारग विचें रे, देडकी सूक्ष्म श्रपार ॥ चालती केइ केइ थिर रही रे, देखे सोम तिवार रे ॥ क० ॥१०॥ लखोगमे पग मू कवा रे, न मले गाम विचाल ॥ केम जाउं इंम चिंतवे रे, सोम महा कि रपाल रे ॥ क० ॥११॥ पर्वत श्राव्यो ढूंकडो रे, पहोचुं शीघ्रथी तेथ ॥ सु नटें नवि पकडाईयें रे, पण मंकुकी मरे एथ रे ॥ क० ॥ १२ ॥ पण मुज प्राण जतां थकां रे, व्रत लोपुं किण रीत ॥ इत्यादिक ध्यातां थकां रे, करे श्रणसण ते श्रनीत रे ॥ क० ॥ १३ ॥ काउस्सग्ग करीनें रह्यो रे, परमेष्ठी करे ध्यान ॥ एहवे नीमादिक सहु रे, श्राव्या नट ते थान रे॥ ॥क० ॥ १४ ॥ विविध शस्त्र मूके तदा रे, क्रूर महा विकराल ॥ पण

कोइ शस्त्र लागे नही रे, तेहनें अंग विशाल रे ॥ क० ॥ १५ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी रे, थइ वली दुंदुभि ध्यान ॥ ते देखी विस्मित हुदें रे, उना रहे तिण थान रे ॥ क० ॥ १६ ॥ तव पाषाण पडे तिहां रे, मस्तक उपरें तास ॥ ते ते पथरे मारीजता रे, धुंब करे जिम दास रे ॥ १७ ॥ क० ॥ जय विव्हल लोग तिहां रे, नृपनें कहे सर्व वात ॥ देवी परगट सोमनें रे, दिव्य शरीर विख्यात रे ॥ क० ॥ १८ ॥ देहकी सघली अपहरी रे, तु ष्टमान थइ तेह ॥ धीर पारो काउस्सग्गनें रे, दीठो तुज व्रतनेह रे ॥ क० ॥१९॥ में तुज परीक्षा कारणें रे, देहकी वरितण दीध ॥ तुजनें काले परो ढीवे रे, राज्य थशे प्रसिद्ध रे ॥क०॥२०॥ श्रीजयानंदना रासमां रे,नांखी आव मी ढाल ॥ बीजे खंमें पद्म कहे रे, आगल वात रसाल रे ॥क०॥२१॥ २४५॥

॥ दोहा ॥

॥ महाव्रतवंता मुनि कनें, रहेजे जइनें रात ॥ एम कहीनें अदृश थइ, सोमने थइ सुखशात ॥ १ ॥ पारखो काउस्सग्ग प्रेमथी, हियडे हरख न मा त ॥ प्रणमे जाणी मुज प्रतें, उपसर्गनो अवदात ॥ २ ॥ रातें पूछे रागीयो, मुजनें कहो मुनिराय ॥ जीवाडयो मुजनें जिणें, माहारी कोण ते माय ॥३॥ में जांख्युं माहारी घणुं, जगतिवंती जलि जांति ॥ समकेत पामी ए सुरी, अम पासें एकांत ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ निणदल बींदली दे ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें धर्म पाम्या एम जाणी, पूछे मुजनें सपराणी हो ॥ जविजन धर्म करो ॥ व्रत पालशो के ए नाहीं, मुजने जांखो ते आंही हो ॥ ज० ॥ १॥ में कह्युं विराधशे जीम, आराधशे सोम ए नीम हो ॥ज०॥ तुज परीक्षा करवा आवी, तुज धैर्य देखी थइ जावी हो ॥ ज० ॥ २ ॥ तव सोम सुणी मुज धर्म, चिंतवे जीवादिक मर्म हो ॥ ज० ॥ हवे नृपति सोमनी वात, देव ता कृत साह्य विख्यात हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ ते सांजली विस्मित नृप, थयुं मांत अजीर्ण अनूप हो ॥ ज० ॥ थइ गूढ विशुचिका ताम, तेह रातिमां गयो यमधाम हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ बीजी नरकें उत्पन्न, महापापथी तेह अधन्य हो ॥ ज० ॥ अति उग्र पुण्यके पाप, फले तुरत ए शास्त्रें ढाप हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ स्वामीनकें मानुं जीम, करी पाप अघोर निःसीम हो ॥ ज० ॥ तेहज नरकें गयो तेह, व्रतजंग तणुं फल एह हो ॥ ज० ॥ ६ ॥

मृतकारज करी हवे विहाणे, अपुत्रीयो नृप ए टाणे हो ॥ न० ॥ खोले ह वे योग्य राजान, राज्य मंत्रीनें परधान हो ॥ न० ॥ ७ ॥ पंच दिव्य प्रग ट करी वासें, नगरीथी बाहीर निकासे हो ॥ न० ॥ परवत पासें जाय जा म, सोम कुटुंब खबरनें काम हो ॥ न० ॥ ८ ॥ जाय ते नगरीमांहि, गज रायें दीठो उछाहि हो ॥ न० ॥ तिहां कलशनुं जल शिर नामे, आरोपे पृष्ठ नें ठामें हो ॥ न० ॥ ए ॥ वली छत्र चामर वींजाय, हेषारव तुरंग कराय हो ॥ न० ॥ आकाशें देवी ते बोली, सांजलो सहु हियडुं खोली हो ॥ न० ॥ ॥ १० ॥ सोम नाम ए तुमनें राय, में आप्यो गुण समुदाय हो ॥ न० ॥ ए हनी जे खंमशे आण, तस जमवरें देइश ठाण हो ॥ न० ॥ ११ ॥ इम कही अदृश थइ देवी, सहु हरख्या तेह सुणेवि हो ॥ न० ॥ तेहनें सहु क रे प्रणाम, सहु माने रायनें ठाम हो ॥ न० ॥ १२ ॥ वाजित्रध्वनि नव न वि माय, बंदीजन बिरुद बोलाय हो ॥ न० ॥ महा रुद्धिथी प्रवेश उछिठा, आवी सिंहासनें बेठा हो ॥ न० ॥ १३ ॥ न्यायें परजानें पाले, दया धर्म घ णो अजुआले हो ॥ न० ॥ सोम दृढधर्मा दया पाली, इण जव पण सु खनी आली हो ॥ न० ॥ १४ ॥ जीम हिंसायें गयो नरकें, पापी किम जा ये सरगें हो ॥ न० ॥ मुज नमवा नृपति आयो, निज देशें अमारी वजा यो हो ॥ न० ॥ १५ ॥ सेवे गुरु तिम शुद्ध धर्म, प्रत्यक्ष दीठो जिणें मर्म हो ॥ न० ॥ एम धर्ममयी राज्य पाली, सौधर्मे गयो दुःख गाली हो ॥ ॥ न० ॥ १६ ॥ ते सामानिक थयो देव, में विहार कर्यो ततखेव हो ॥ ॥ न० ॥.॥ फरी आव्यो हुं इण थान ॥ देवता जुवे अवधिज्ञान हो ॥ न० ॥ ॥ १७ ॥ आव्यो उपकार संजारी, प्रणमी नाटक करे जारी हो ॥ न० ॥ गुरु सेवानें अहिंसा, तेहनां फल स्वर्गमां शंस्यां हो ॥ न० ॥ १८ ॥ सां जली कहे श्रीजयानंद, जसु धर्मे बुद्धि अमंद हो ॥ न० ॥ युद्धादिक का रण टाली, स्थूलहिंसा नहीं करुं जाली हो ॥ न० ॥ १९ ॥ परस्त्रीनो त्या ग में कीधो, समकित व्रत तुमथी लीधो हो ॥ न० ॥ गुरु कहे तुं सम्य ग पाले, ए कल्पवृक्ष सम जाले हो ॥ न० ॥२०॥ एहथी थशे तुज क ल्याण, कहे कुमर स्वामी परमाण हो ॥ न० ॥ निज आत्म कृतारथ जा णे, मुनि प्रणमी गया घर विहाणे हो ॥ न० ॥२१॥ गुरुकर्मा ते सिंह सार, नवि प्रणम्यो धर्म लगार हो ॥ न० ॥ सुर प्रमुख ते गया निज था

न, लही श्रद्धा प्रमुख प्रधान हो ॥ न० ॥२२॥ अलगें मुनि करे विहार, युवराज नंदन हवे सार हो ॥ न० ॥ लीधो ते धर्मनें पाले, गुरु देव भक्ति अजुवाले हो ॥न०॥२३॥ ढाल नवमी बीजे खंमें,कही धर्मनो राग अखंमें हो ॥न०॥ गुरु उत्तमविजयनो बाल, कहे पद्मविजय सु रसाल हो ॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन जय अवनीपति, पूछे प्रश्न प्रकार ॥ सामुद्रिक पणुं समज णो, कुण सुलक्षण कुमार ॥१॥ निमित्तियो दोय निरखीनें, सर्वांगें शुन रीति ॥ नृपनें कहे निमित्तियो, निर्णय कीधो नीति ॥२॥ सिंहसारनां लांछनो, तुमें ल क्षण ततकाल ॥ अनरथ स्वजननें आपशे, लोक द्वेष जिम काल ॥ ३ ॥ क्रूर बुद्धि कृतघ्न कह्यो, पदें पदें आपद गेह ॥ दुर्गतिगामी दुःख लहे, धर्म नो द्वेष धरेह ॥४॥ श्रीजयानंद सोजागीयो, शुन लक्षण सर्वांग ॥ सुख कर्त्ता सवि विश्वनें, चक्रधारी ए चंग ॥५॥ त्रण खंमनो अधिपति, बहुराजा बलवंत ॥ सेवा एहनी सारशे, उपकारी ए अनंत ॥६॥ न्याय धर्ममां निपुण ए, जस प्रताप जयवंत ॥ शिवगामी सुस्वर धणी, एहना गुण छे अनंत ॥ ७ ॥ विसरजे बारु परें, निमित्तियो नरनाह ॥ धरणीपति धारी करी अनुजने कहे वग्राह ॥८॥ गोप्य अने पण गाइयें, तुज आगल तहकीक ॥ सिंहसार तो शुन नहीं, श्रीजयानंद सश्रीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ रामचंद्रके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ एणे समें दासी एक, राय तंबोल तणी री ॥ जाणी विश्वासी तेह, वात ते सर्व सुणी री ॥१॥ अवसर पामी राय, नाना प्रकार करी री ॥ परी क्षा कीधी तास, नैमित्त वचन धरी री ॥२॥ निश्चय कीधो तास, हवे सिंह सार पुरें री ॥ क्रीडतो करे उन्माद, लोकनें दुःख धरे री ॥३॥ शंका न ध रे कांय, स्वेछायें विचरे री ॥ नर नारी आजरण, लूंटी लीये सुपरें री ॥४॥ फोडे नारीना कुंन, नारी सुरूपा हरे री ॥ शकट लूंटी लूंटी जाय, बहु अन्याय करे री ॥ ५ ॥ तुरंग खेलावे तेह, मारगमांहि जइ री ॥ कोप्या नगरनो लोक, वीनवे जइ नरवइ री ॥ ६ ॥ लोकनें करी सत्कार, मोकले आप घरें री ॥ कुमर निभ्रंछी राय, अति अपमान करे री ॥ ७ ॥ इणी परें बे त्रण वार, वार्यो पण न रहे री ॥ एक दिन दासी तेह, जाती दे खी कहे री ॥ ८ ॥ शुं लेइ जाये एह, ते कहे कंम खले री ॥ नृप अर्थे

तंबोल, सुणी तिणें लीधुं वलें री ॥ ए ॥ रूठी कहे रे दुष्ट, नैमित्त साच वदे री ॥ कुमरें ज्ञोलावी तास, कहे तुं जेह ह्रदे री ॥१०॥ दासी कहे वृ त्तांत, सघलो जेह थयोरी ॥ कुमरें धारी वात, दुर्मन तेह नयोरी ॥११॥ यतः ॥ न तरुस्तटिनीतटे चिरं, न खले प्रीतिरयात्मनींदिरा ॥ नच धर्मेर सोतिल्लोनके, नच गूढं हृदि तिष्ठति स्त्रियाः ॥ १ ॥ ढाल ॥ दासीयें क ही सवि वात, कुमरें अन्याय कस्यो री ॥ रायें बोलावी ताम, नांखे क्रो ध नस्यो री ॥१२॥ रे पापी अन्याय, नगरमां नित्य दमे री ॥ लोक करे पो कार, सहुनें तुं न गमे री ॥१३॥ घरमां पण ए रीति, कुलमां कलंक स मो री ॥ जा ह्वे नगरथी दूर, देशांतरमां नमो री ॥१४॥ रहीश जो नगरी मांहि, तो हुं नाहिं सहुं री ॥ कापीश नाकनें कान, पुत्र ठे पणए कहुं री ॥१५॥चिंते सिंहकुमार, जाउं परदेश यदा री ॥ श्रीजयानंद कुमार, नृपति थाये तदा री ॥ १६ ॥ रागी लोकनें राय, एहनो देखुं सही री ॥ लेई जा उं परदेश, तो रहे दूध दहीं री ॥ १७ ॥ राज्य वेलायें मुझ, बोलावे दर्प धरी री ॥ त्रीजो नहीं कोइ योग्य, एहिज वात खरी री ॥१८॥ इंम चिंति एक दिन्न, मायावंत वदे री ॥ सांनली श्रीजयानंद, आपण एक ह्रदें री ॥१९॥ देशांतर चलो नाय, जिहां आश्चर्य होवे री ॥ अतुल कला शीखा य, नाग्य परीक्षा जोवे री ॥ २० ॥ तीर्थ अनेक वंदाय, तनु ए क्लेश सहे री ॥ धूर्त्तथी नवि वंचाय, दुर्जन सयण लहे री ॥२१॥ एम अनेक गुण थाय, नहीं एक ठाण रह्यां री ॥ तुज विरहो न खमाय, तिणे ए व यण कह्यां री ॥२२॥ श्रीजयानंदनें रास, दशमी ढाल कही री ॥ खंम बी जे कहे पद्म, कपटें सिद्धि नही री ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कारण चालो तुमें, दिश धारी कोइ देश ॥ पित्रादिक अण पूठीनें, वारु करशुं विशेष ॥१॥ सरल ते जाणे सहु खरुं, पुण्यवंत परधान ॥ सु कृतिमांहे शिरोमणि, मान्युं वचन प्रमाण ॥ २ ॥ रातें चाल्या रंगशुं, विहुंये करी बनाव ॥ खड्ग सखाइ खांतशुं, जावे कांइक जाव ॥ ३ ॥ कथा प्रसं ग करतां थकां, वारु धर्म विचार ॥ श्रीजयानंद कहे सुणो, पुण्यें सर्व प्र कार ॥ ४ ॥ पुण्यें लखमी पामीयें, पायक सेवे पाय ॥ जस कीरति जग जागती, सुकुलें जन्म सदाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ तत्तरसुं पापनुं ठाम ॥ ए देशी ॥

॥ धरमें सुख पामे प्राणी, आपदा जाय सर्व उजाणि ॥ सुर नरमां कीर ति गवाणी हो लाल ॥ १ ॥ धर्म करो नवि प्राणी ॥ ए आंकणी ॥ खाण्यो पृथिवीनें तरु जे आपे, मणिद्रव्यनें फल दुःख कापे ॥ ए धर्मथकी नही पापें हो लाल ॥ ध० ॥ २ ॥ अरिहंतनो धर्मज रूडो, बीजो जाणे सहू कूडो ॥ नवि माने अधर्मा भूंडो हो लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ हवे बोले तिहां सिंहसार, नाई तुम वचन उदार ॥ सत्य मानुं हुं निरधार हो लाल ॥ध०॥ ॥ ४ ॥ पण वात एक अवधारो, अधर्मीनें द्रव्य वधारो ॥ हमणां अधर्म सुखकारो हो लाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ धर्मी जन दुःखीया दीसे, ए वात छे विश्वावीशे ॥ अधर्मीथी दुःख जाय रीशें हो लाल ॥ ध०॥ ६ ॥ तव श्रीज यानंदजी बोले, मूरख नही ताहरे तोले ॥ तुं खोटी वातमां मोले हो ला ल ॥ ध० ॥ ७ ॥ पापानुबंधी पुण्य, तेणे लखमी होये अगण्य ॥ तुं देखे हृदयथी शून्य हो लाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ वली पुण्यानुबंधी पाप, तेणें आ नवमां संताप ॥ ए परनव कीधलां आप हो लाल ॥ ध० ॥ ए ॥ इण नव मां जे जे करशे, तेहनां फल आगल नोगवशे ॥ वावशे ते कालें फलशे हो लाल ॥ ध० ॥ १० ॥ तव दुष्ट कहे सिंहसार, वाद ते प्रेमनो हरनार ॥ नाई म करो वाद विचार हो लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ कोइ निपुणनें पूछीयें वात, ते नांखे जे अवदात ॥ ते धारियें निश्चय भ्रात हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१२॥ ते श्रीजयानंदजी माने, बीजो दुष्ट ते एम मन जाणे ॥ एहने राय प्रजा सहु माने हो लाल ॥ ध० ॥ १३ ॥ राज्य योग्य टले तेम करीयें, ए वातमां पण कांय धरीयें ॥ एहनां नेत्र कदि अपहरियें हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१४॥ पछी राज्य ते माहरे आवे, एम चिंतवी कहे इंण दावें ॥ नाइ प ण विना काम न आवे हो लाल ॥ ध० ॥ १५ ॥ जे हारे ते आपे नयण, एम सिंहसार कहे वयण ॥ श्रीजयानंद माने सयण हो लाल ॥ ध० ॥ ॥१६॥ कोइ गाममांहि हवे पेठा, गामठाकुर लोकशुं बेठा ॥ सिंहसारें ते सहु दीठा हो लाल ॥ ध० ॥१७॥ तस प्रणमीनें कहे एम, हुं पापथी शुन कहुं नेम ॥ आतो धर्मथी कहे ए केम हो लाल ॥ ध० ॥ १८ ॥ ते रूप वेष तस देखी, माया नाटक वली पेखी ॥ बोले ठाकुर सवि उवेखी हो लाल ॥ ध० ॥१ए॥ नाई ताहरी वात ते साची, सांजली सिंह मनमां मा

ची ॥ नाइशुं चाल्यो हवे नाची हो लाल ॥ ध० ॥ २० ॥ आगल जइ ने त्र ते जाचे, कहे श्रीजयानंद एम वाचें ॥ गामडीयाने वयणें शुं माचे हो लाल ॥ ध० ॥२१॥ बीजे खंमें अग्यारमी ढाल, कही पद्मविजय सुरसाल, धर्मथी होय मंगलमाल हो लाल ॥ ध० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥३२१॥

॥ दोहा ॥

॥ गामडीया ने गमार ए, धर्म न लहे अधर्म ॥ कूड साखी केवल कह्या, मूरख न लहे मर्म ॥ १ ॥ जूतुं बोले ए जडा, श्यो एहनो विश्वास ॥ गाम डियानो मत गणे, कोइ विश्वास चकास ॥ २ ॥ हंस काग दृष्टांत हे, सांजल जे तुं सीह ॥ श्रीजय कहे ते सांजलो, बहु गंजीर अबीह ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ धन्य पुरें एक इह मोहोटो अछे, तिहां बहु मत्स्यनी जाति॥सुवंधव॥ मीन लेवा एक काग पडयो तिहां, मीन तो जलमांहे जात ॥ सु० ॥१॥ गाम डीयानो विश्वास न कीजीयें ॥ ए आंकणी ॥ कागनी पांखो जलनीनी थई, न तराये न उमाय ॥ सु०॥ जलमांहे हवे बूडशे कागडो, इण समे अचरज थाय ॥ सु० ॥ गा० ॥ २ ॥ हंसी हंसने कहे सुणो स्वामीजी, कागडो बूडे छे एह ॥ सु०॥ नीचें पेशी पूठें धरी तुमें, काढो करुणा रे नेह॥सु० ॥ गा०॥३॥ तेमज कर्युं तिणें काकनें काढीयो, स्वस्थ थयो हवे काग ॥सु०॥ प्रार्थना करी हंसी सुत हंसनें, तुमें उपगारी महानाग ॥ सु० ॥ गा० ॥ ४ ॥ एम कही पोतानें वड लइ गयो, वातो करी विवेक ॥ सु० ॥ चंचुपुटें फल लावी आपीयां, वावरे प्रीति विवेक ॥ सु० ॥ गा० ॥ ५ ॥ हंसी सहित हवे हं सलो उडवा, मांमे जेटले ताम ॥ सु०॥ काक कहे रे प्रिया तुं जाय किहां, हंसी रोकी ते गाम ॥ सु० ॥ गा० ॥ ६ ॥ हंस कहे माहारी ए नारी छे, ताहरी ए नहिं नारी ॥सु०॥ तुंतो मिश सरिखो महा श्याम छे, एतो शशी अ नुहार ॥ सु०॥ गा०॥ ७ ॥ काक कहे तेहनो श्यो मेल छे, परकुलनी होये ना र ॥ सु० ॥ जगिनी होय तो समरूपें होय, एक कूखें अवतार ॥ सु०॥ गा० ॥ ॥ ८ ॥ जो नवि माने मुज ए वातडी, तो ए गामना लोक ॥सु०॥ हुं ए परण्यो तव सहु दीठलो, मली मली सहुयें रे थोक ॥सु०॥ गा० ॥ ९ ॥ ते कहेशे तो मानशो के नहीं, हंसे मानी ते वात ॥सु०॥ पित्रादिकनें सोंप्यो हंसलो, काक ते मामें आपात ॥ सु० ॥ गा० ॥ १० ॥ आप विवाद सुणाव्यो लोकनें, नर

नाखें कहे वाणी ॥ सु० ॥ कूडी साखें मुज साचो करो, नहीं तो तुम करुं हाण ॥ सु०॥ गा०॥ ११ ॥ नारी शिरें पट हुं अशुचि करुं, पशु व्रण खोडुं रे तेम ॥ सु० ॥ पीडा उपजावुं अति आकरी, कदेशो न कयुं रे केम ॥ सु०॥ गा० ॥ १२ ॥ नर नारी शिर वेसी वडो जाउं,तावड सूक्यां जे धान ॥सु० ॥ ते कणनक्षण करुं वली वालथी, करुं अशनादि आदान ॥सु०॥ गा० ॥ ॥ १३ ॥ वीजा पण अनरथ हुं बहु करुं. करो घर लोक अन्याय ॥ सु० ॥ मनुष्य वाणी सुणी विस्मय पामीया, वीहिना सहु समुदाय ॥सु०॥ गा०॥ ॥ १४ ॥ धर्माधर्म विचार कखो नहीं, मानी कूडी रे साख ॥ सु० ॥ धिग ए काक तथा धिग लोकनें, करे अन्याय ए नाख ॥सु० ॥ गा० ॥ १५ ॥ हवे ते काक हंस नेला मली, पूछे आवी रे न्याय ॥ सु०॥ लोक कहे अ में परणतां देखीयो, सुणि हंस अति दुःखी थाय ॥सु०॥ गा०॥ १६ ॥ काक कहे हवे हंसनें सांनलो, ल्यो ए तुम प्रिया सार ॥सु०॥ प्राण दीया तुमें मुजनें तुम तणो, न करुं डोह लगार ॥सु०॥गा० ॥ १७ ॥ गामडीया पर ख्या इण रीतिशुं, ग्राम्यनें कहे हवे काग ॥सु०॥ रे मूरखो तुमें थोडे कारणें, कयो कूडी साख लाग ॥ सु०॥ गा०॥ १८ ॥ इह नव परनव तुमनें दुःख घणां, कूडी साख सम पाप ॥सु०॥ नहीं जगमां जेहथी सवि ऊपजे, हिंसादिकनो रे व्याप ॥सु० ॥ गा० ॥ १९ ॥ हंस काग मली क्रोधयकी हवे, चांचें लावी रे आग ॥ सु० ॥ वरशी अंगारानें वालीया, तेहनो घर नहीं ताग ॥ सु०॥ गा० ॥ २० ॥ मरण लही ते दुर्गतिमां गया, कूडी साख प्र नाव ॥सु०॥ एह कथा गामडीयानी सुणी, मत विश्वास तुं लाव ॥सु०॥ गा० ॥ २१ ॥ वात सुणी कहे सिंह नाई सुणो, कूड कथा कही मुज ॥ सु०॥ मनुष्य परें पशु नवि वोले कदा,न उगावं वातें तुज ॥सु०॥गा०॥२२ श्रीजयानंद कहे ए सत्य छे, सांनलो कारण तास ॥सु० ॥ वीजे खंमें वारमी ढाल ए, पद्म कहे सुविलास ॥सु०॥ गा० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥२५८॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीमुख यक्ष वसे इहां, अर्चे लोक अगाध ॥ नंदी यक्ष नंदी पुरें, नि हुं मित्र निर्वाध ॥ १ ॥ श्रीमुख नंदीघर सुखें, पोहोतो धारी प्रीत ॥ कहे नंदीनें किम नवि, मुज घर आवो मित्त ॥ २ ॥ नंदी कहे नावुं तिणें, गामडीया जे गमार ॥ तेहनी बीक धरी तथा, विगत विवेक विचार ॥३॥

ज्ञान बुद्धि गत ए जना, जोवुं वदन न योग्य ॥ श्रीमुख कहे किम सत्य ए, फनि परीक्षा विण फोक ॥४॥ तेह परीक्षा तेहनी, करवा कारण दोय ॥ हंस काग थइ हरखछुं, सघछुं कीधुं सोय ॥ ५ ॥ हंस काक बोल्या हता, सत्य तुं जाण सुजाण ॥ न वदे आणंद नृप परें, जूठ जते पण प्राण ॥६॥ कहे सिंह आणंद किश्यो, जेह न बोल्यो जूठ ॥ श्रीजय कहे तमें सांजलो, उत्तम एह अछूठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ लालननी देशी ॥ अथवा पापथानक अगीयारमुं रूडुं ॥ ए देशी ॥

॥ नंदीपुर नगरें अति शोहे, आणंद नरपति जनमन मोहे लालन, जनमन मोहे ॥ श्रीअरिहंतना धर्मनो रागी, पापजीरु मोहोटो वडनागी ला० ॥ मो० ॥ १ ॥ बत्रीश लक्षण अंग बिराजे, आवे बहु नृप सेवना काजें ला० ॥ से० ॥ कोडी मूलथी उंचुं न राखे, आजरण ते निज अंगें सराखे ला० ॥ अं० ॥ २ ॥ क्रीडा करवा एकदिन आवे, पुर बाहिर आजरणें सोहावे ला० ॥ आ० ॥ विविध गतें तव वाजी खेलावे, तुरंग तदा चडी आकाशें जावे ला० ॥ आ०. ॥ ३ ॥ लावे अटवीमां नृप एकाकी, छुष्ट जाणी नृप उत्तर्यो ताकी ला० ॥ उ० ॥ नूमी पडचो हय अदृश्य हूउ, नमे एकाकी तिहां अचरिज जूउ ला० ॥ अ० ॥ ४ ॥ उघाडे शस्त्र चोर ते चार, मलीया नवि खोजाणो लगार ला० ॥ खो० ॥ चोर कहे अम जाग्यें मलीयो, अलंकार युत्त तुज अटकलीयो ला० ॥ तु० ॥५॥ चरित्र अमारुं सांजल राय, सूरिपुर नृप सेव कराय ला०॥से०॥ क्षत्रीपुंगव कांय अपराध कीनो,अमने देश निकाल ते दीनो ला० ॥नि०॥६॥ गुरु कन्हे धर्म सुणी अमें लीधुं, नवि लेवुं कोइनुं अण दीधुं ला० ॥ को० ॥ पण अमचो निर्वाह न थाय, नूपति विण बीजो पीडाय ला० ॥ बी० ॥७॥ लक्षथी उंची चोरी न करीयें, नित्य परिणाम न हीणडा धरीयें ला० ॥ही०॥ तेणे नृपनुं धन बहु अमें लेशुं, तेहवुं नहीं होय तो अमें जावाने देशुं ला० ॥जा०॥८॥ तुं कोण छे आजरण श्यां मूलां, सत्य कहो अम वयण अमूलां ला० ॥ ॥ व० ॥ ह्यो अलंकार ए नृप मन चिंते, आजीविका करो छुःख अतीतें ला० ॥ छुः० ॥९॥ पापनुं मूल अनृत नवि बोलुं, धन छे विनाशी तेणें चित्त न मोलुं ला० ॥ चि० ॥ धनथी मल्युं सुख धर्मे अनंत, सत्य समान न

धर्मे जयवंत ला० ॥ध० ॥१०॥ इम चिंती कहुं कुरघी तातुं, चाखुं घरेथुं
कतारी वातुं ला० ॥ क० ॥ हल्ल धरी ते तस्कर मार्या, नृप ते वनमां
आगल चाल्या ला० ॥ आ० ॥११॥ तापस आश्रम पामीने बेसे, कुलप
ति कहे किम आश्रमें पेसे ला० ॥ आ० ॥ कोण तुं किम इहां आयो माहे,
तव नृप कहे तवि चिन लगाइ ला० ॥ चि० ॥१२॥ कुलपति कहे सुण रा
जन एक, इण वन वसतां नांही विवेक ला० ॥ ना० ॥ तापस विण मास
लने मारे, तेणें तुं तापस वेषने धारे ला० ॥ वे० ॥१३॥ एम कही तापस
वेषने आपे, नृप पण निज अंगें ते थापे ला० ॥ अं० ॥ करी फल आहा
रने सरोवर आवे, न्हावाने जव लक्ष ते पावे ला० ॥ ल० ॥१४॥ तव रा
क्षस आवी कहे एम, निठुर नवो तुं आव्यो जे केम ला० ॥ आ० ॥ माह
री वात सांभल तुं एक, नर भखी दिन एक राखुं हुं टेक ला० ॥ र० ॥
॥१५॥ वरीश लखलो नलीयें राजा, एक वरस लगें रहीयें ते ताजा
ला० ॥ एहवो नृप नंदीपुर स्वामी, पण रहे नित्य नित्य परवशो धामी
ला० ॥ प० ॥ १६ ॥ तेण माहारो कोई दाव न फावे, पण एक वात
सुणी इंणे रावें ला० ॥ सु० ॥ तुरंग हरी अटवीमां लावे, एह वात खरी
होय तो फावे ला० ॥ हो० ॥ १७ ॥ जाणतो होय तो कहे मुज वात,
सांभली चिंतवे नृप विख्यात ला० ॥ ताहुं कहुं तो ए मुज खाये, जुठुं
कहुं तो व्रत मुज जाय ला० ॥ व्र० ॥ १८ ॥ अथवा प्राणने अरथें जुठुं,
बोलुं तो लागे पाप अपूठुं ला० ॥ पा० ॥ प्राणथी अधिको धर्म ए मोहो
टो, नवि कहुं जूठ न पाउं खोटो ॥ ला० ॥ धा० ॥ १९ ॥ मुज तनु देइ
बीजा उगारुं, लाभ मोहोटो होये आतम तारूं ला० ॥ आ० ॥ होशे
दया एह वरस प्रमाण, निश्चय करो इम आप विनाण ला० ॥ आ० ॥
॥ २० ॥ राय कहे हुं तेहज राय, कर तुं ताहरे जे मन भाय ला० ॥ जे० ॥
ते कहे सुनि नवि माहरे कहे ताहुं, खरो तापस के कांय बे कातुं ला० ॥
॥ खां० ॥ २१ ॥ नृप कहे मुनियें आप्यो बे वेश, कोण्य कहे तुज जातियें
विशेष ला० ॥ ज० ॥ इट देव संभार तुं रंग, नृप पण निज वोसिरावे अं
ग ला० ॥ वो० ॥ २२ ॥ पंच परमेष्ठिनुं ध्यान ते ध्याय, राक्षस घोररूपें
तिहां थाय ला० ॥ रू० ॥ अट्टाट्ट हास्य स्थूल ते दंत, खावा धाये नृप
अडोल वंत ला० ॥ अ० ॥ २३ ॥ राक्षस अटवी रूपनां न देखे, निज

पुर बाहिर क्रीडातो पेखे ला० ॥ क्री० ॥ सैन्यनें नृपण तेह तुरंग, तिम हीज देखे पूरव रंग ला० ॥ पू० ॥ २४ ॥ पुष्पवृष्टि आकाशथी थाय, ईइजाल के नवि समजाय ला० ॥ गगनें देदीप्यमान देव दो दीसे, एक कहे सुणो वात जगीशें ला० ॥ वा० ॥ २५ ॥ बीजे खंडें तेरमी ढाल, सांजलतां होये मंगलमाल ला० ॥ मं० ॥ श्रीजयानंदना रासमां नांखी, पद्मविजय कहे चरित्र छे साखी ला० ॥ च० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥३०५॥

॥ दोहा ॥

॥ इणहिज उद्याने अछुं, नंदी यक्ष इण नाम ॥ मित्र श्रीयक्ष सुरूनें, तेडयो हुं गयो ताम ॥ १ ॥ कूट साखी परीक्षा करी, गामडियानी गमार ॥ मुजनें कहे हवे मित्र ते, कहो तुम नयर प्रकार ॥ २ ॥ में कह्युं उत्तम मादरा, नयरमां नृप नर नारि ॥ सत्यवादी शुन लक्षणा, श्रीमुख कहे श्रीकार ॥३॥ जिम मानुं सानुं करी, ईम संदेह अपार ॥ आवी परीक्षा अमें करी, सत्यवादी शिरदार ॥४॥ धन्य तुं दृढव्रतनो धणी, नवि चूक्यो निज नेम ॥ पामीश इह नव परनवें, इछित संपद एम ॥ ५ ॥ आमयहर मणि आपीयो, खड्ग शत्रुजय खांत ॥ आपीनें अदृश थया, सांजली प्रजा प्रशांत ॥६॥ नृपतणी स्तवना जणे, प्रजालोक पुण्यवंत ॥ मणिथी रोग गमावतो, खड्गें रिपुजय खांत ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वादिक व्रत सवि, पाली पूरण प्रीति ॥ सात क्षेत्रें धन साचवी, सुरवर थया सुरीति ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ अढीयानी देशी ॥

॥ कहे श्रीजय सुण सिंह,वात कहुं निरबीह॥उत्तम नर लही ए, पूछीयें तिहां सही ए ॥ १ ॥ ते कहेशे ते साच, करशुं प्रमाण तस वाच ॥ सिंह अमी करे ए, आगल संचरे ए ॥ २ ॥ श्रीविशालपुर नाम, पोहोता क्रमें तिण ठाम ॥ तास उद्याननां ए, देवता शानमां ए ॥३॥ विद्याविलास अनिधान, कलाचारज गुनवान ॥ धनुर्वेदादिका ए, बहुत कला जिका ए ॥ ४॥ नृप पुत्रादिक जेह, पांचशें छात्रनें तेह ॥ शीखवे शुन परें ए, गया तस परिसरें ए ॥ ५ ॥ सिंहशुं श्रीजयानंद,नमी तस पद अरविंद ॥ पूछे आपनी ए, वात गुन पापनी ए ॥ ६ ॥ कहे कलाचारज वात, शास्त्र लोक अवदात ॥ सुज ते धर्मथी ए, अशुन अधर्मथी ए ॥ ७ ॥ सांजली श्रीजयानंद, पाम्या परमानंद ॥ कुमलायो थलो ए, सिंह ते मन बलो ए ॥ ८ ॥ कलाचारजनी

पात, करवा कला अन्यात ॥ जणवा तिहां रह्या ए, चित्तमां गहगह्या ए ॥ ए ॥ कलाचारज वश कीध, छात्रोगानन हरी लीध ॥ विनयादिक करी ए, श्रीजय चित्त धरी ए ॥ १० ॥ अल्प दिनें जाण्यो तेह, सकल कला गुण गेह ॥ अनुक्रमें थाय हीए, कलाचारयनी सही ए ॥ ११ ॥ छात्र जणावे ताम, एम सहु मन अभिराम ॥ सहुनें वल्लन घणो ए, लागे शोहामणो ए ॥ १२ ॥ स्पर्द्धायें जणे सिंह, ते पण रातनें दीह ॥ बहुदिनें अल्प लह्यो ए, नाग्य प्रमाण कह्यो ए ॥ १३ ॥ नाम विशाल जयराय, पट पट माले थाय ॥ परीक्षा सहु तणी ए, करतो नृपमणी ए ॥ १४ ॥ एक दिन आव्यो तेह, पुत्रादिकनें स्नेह ॥ सहुनें परखतो ए; नयणें निरखतो ए ॥ १५ ॥ ताड शिरें तच्युं एक, मोरपिछ अनि ठेक ॥ वींधे धनुर्द्धरा ए, तेह कुमरवरा ए ॥ १६ ॥ कह्यो तंतु न छेदाय. पावक मन कलपाय ॥ आण श्रीजयतणी ए,करता ते गुणी ए ॥ १७ ॥ तंतु बताव्यो जेह, वींध्यो श्रीजयें तेह ॥ हरख्या तव सहु ए, देखी कला बहु ए ॥ १८ ॥ पंत्र मुक्तादिक वात, चरित्र मांहे घणी जात ॥ ते तिहांथी लहो ए, इहां संक्षेप कह्यो ए ॥ १९ ॥ बीजे खंडें ढाल, चौदमी अति सुरसाल ॥ पद्मविजय कही ए, नविजनें सदही ए ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ ४१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कमलपत्र तिहां मांमीनें,गुरु बतावे जेह ॥ श्रीजय छेदे ते तंतु,खड्ग न वीडुं रेह ॥ १ ॥ वली मूके कर चक्रनें, छेदे जे सहु ताल, गिरिशिर दूर शिला रही, चूरे ते ततकाल ॥ २ ॥ अश्वयुद्ध करतां थकां, सुनट हजारो तेण ॥ महावीर्यथी जीतिया,श्रीजयें बहु शस्त्रेण ॥ ३ ॥ वली धारा गति अश्वनें, वट शाखा विलग्ग ॥ पवन वेग विहंगमपकी, अश्वने उपाडयो सलग्ग ॥ ४ ॥ ईम गज युद्ध पाडीया, आधोरणादिक वीर ॥ इत्यादिक बहु देखीनें, नृपें जाण्यो धीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ साहेला हे ॥ ए देशी ॥

॥ साहेला हे, ते नृपादिक सर्व, विस्मित मुदित थया हवे हो लाल ॥ सा० ॥ शिर धूणावता तेह, सिंह विना सहु ए स्तवे हो लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ वीर्य कला गुण देख, पूछे पावकनें नृपति हो लाल ॥सा०॥ ए कोण पुरुष रतन्न, पावक कहे सुणो सांप्रति हो लाल ॥ २ ॥ सा० ॥ प

रदेशी कोइ एह, बांधव सहित कला नणे हो लाल ॥ सा० ॥ क्षत्री पुं गव शुद्ध, नवि जाणुं रहे किहां कणे हो लाल ॥ ३ ॥ सा०॥ चिंतवे नरप ति ताम, राज्य योग्य निश्चय करे हो लाल ॥ सा० ॥ ए न्हे राजकुमार, ल क्षण सवि तेहनां धरे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥ आदर करिय अपार, पूजी पावक पर परें हो लाल ॥ सा० ॥ शास्त्र नणावण आण, देई नृप गया मं दिरें हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ श्रीजयानंद कुमार, गीत नाटयादिक बहु नणे हो लाल ॥ सा० ॥ कला बहोंतेर विशेष, पामी पसाय गुरुतणे हो लाल ॥ ६ ॥ सा० ॥ शास्त्र नणावे नित्य, गुरुनें वीसामो करे हो ला ल ॥ सा० ॥ एकदा परीक्षा निमित्त, रायनो ढंढेरो फिरे हो लाल ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ तेहनें इच्छित देश, आपुं जे तोले करी हो लाल ॥ सा० ॥ श्री जय तोले ताम, गजनें नावामां धरी हो लाल ॥ ८ ॥ सा० ॥ जलमां मूके तेह, बूडे तिहां रेखा करे हो लाल ॥ सा० ॥ गज उतारी तेह, ना वामां पत्थर नरे हो लाल ॥ सा० ॥ ए ॥ रेखा लगें जल आय, तव पत्थ र तोले सवे हो लाल ॥ सा० ॥ तेहना नार प्रमाण, हाथीनुं पण संनवे हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ नृपति विस्मय पामि, आदरथी घर लावियो हो लाल ॥ सा० ॥ स्नान नोजन शुन रीत, बहु गौरव करे नावियो हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥ सर्व कलामां प्रवीण, गुणवंतो पंमित लही हो लाल ॥ सा० ॥ रूप कला गुणें तास, निजपुत्री अनुरूप सही हो ला ल ॥ १२ ॥ सा० ॥ अण इछतां पण राय, पुत्री मणिमंजरी तणो हो लाल ॥ सा० ॥ कीधो शुन विवाह, नृप दायजो आपे घणो हो लाल ॥ ॥ १३ ॥ सा० ॥ हय गय रथने पत्ति, देश एक आपे वली हो लाल ॥ ॥ सा० ॥ घर उपकरण समेत, मोहोल एक दीये मनरुली हो लाल ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ मणिमंजरीशुं नोग, दिन दिन नोगवे अनिनवा हो ला ल ॥ सा० ॥ जीती नृप अनेक, सोंपे नृपनें नवनवा हो लाल ॥ १५ ॥ ॥ पामे प्रतिष्ठा सार, हवे एक नृप शूररायनें हो लाल ॥ सा० ॥ जातां निषेध, करी कहे जीतुं हुं जायनें हो लाल ॥ १६ ॥ सा० ॥ ॥ लेइ गयो तेह, साहमो आव्यो नृपति हो लाल ॥ सा० ॥ युद्ध य द्धोय सैन्य, नाग्यो कुमर सेनापति हो लाल ॥ १७ ॥ सा० ॥ कव्या कु मर नरिंद, युद्ध कर्युं तिहां तेणिपरें हो लाल ॥ सा० ॥ वैरी सेना नष्ठ,

शूर उठ्यो तव ततपरें हो लाल ॥ १८ ॥ सा० ॥ वाणें वेहु करे युद्ध, गगन दिशो सघली नरी हो लाल ॥ सा० ॥ अनुक्रमें सात धनुष, छेदे कुमार शरें करी हो लाल ॥ १९ ॥ सा० ॥ नांग्यो रथ वली वर्म, खड्ग ले इनें धावियो हो लाल ॥ सा० ॥ कुमरें खड्गें खड्ग, खंम करीनें वधावियो हो लाल ॥ २० ॥ सा० ॥ मोघरें मोघर नांगी, गदायें गदा चूरण करे हो लाल ॥ सा० ॥ शस्त्र रहित थयो तेह, बाहु युद्ध मल्लनी परें हो लाल ॥ २१ ॥ सा० ॥ बहु वेला करी युद्ध, शूरनें हृदयमां ताडियो हो लाल ॥ सा० ॥ मूर्छा लही पड्यो नूमि, यश अंबर लगें चाडियो हो लाल ॥ २२ ॥ सा० ॥ निगडबंध करी तास, जीवन गंटी सज्ज कस्यो हो लाल॥ सा० ॥ सैन्यने अनय ते दीध, जइ नृपनें आगल धस्यो हो लाल ॥ २३ ॥ सा० ॥ कुमर वयणें करी तास, मूक्यो दंम लेइ यदा हो लाल ॥ सा० ॥ दयावंत एम जाणी, मूके शत्रु नम्यो तदा हो लाल ॥ २४ ॥ सा० ॥ वालें जींत्यो युद्ध, एह वैराग्य धरी मनें हो लाल ॥ सा० ॥ पुत्रनें आपी राज्य, दीक्षा लीधी गुरु कनें हो लाल ॥ २५ ॥ सा० ॥ पाली निरतिचार, केवल लही शिवपद वस्यो हो लाल ॥ सा० ॥ धन्य एहनो अवतार, एणी परें अंतर रण कस्यो हो लाल ॥ २६ ॥ सा० ॥ बीजे खंमें ढाल, पन्नरमी ए सोहामणी हो लाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे एम, धर्म ते जिम चिंतामणि हो लाल ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नाग्यवंत नोगी नला, राज्य वृद्धि करनार ॥ नगर लोक नरपति नणी, हर्ष पमाडण हार ॥ १ ॥ सुखमां काल श्रीजयतणो, जाय नित्य जयकार ॥ खेदाये खर नानुयें, सिंह जिम घूक शिरदार ॥ २ ॥ लखमी आपे नवि लीये, ईर्षानें अनिमान ॥ अवलुं चिंते उधमी, नावे शान निदान ॥ ३ ॥ यतः ॥ खलः क्रियतएवान्य, रुद्धिनिः सत्कृतोप्यलम् ॥ पश्यन् साम्यश्रियं शुष्येत्, सिक्तोऽपि हि च वासकः ॥ १ ॥ दोहा ॥ देशांतरें डुःख टालवा, लेई जाउं हुं लाहार ॥ एम चिंतीनें एम कहे, वात सुणो सुविचार ॥ ४ ॥ निजनयरीथी नीकल्या, देश दर्शननें दूर ॥ मनवंछित मनमां रह्युं, पाम्या न कौतुक पूर ॥ ५ ॥ आसन्न रहेतां आपणें, जाणे मावित्र जाम ॥

रदेशी कोइ एह, बांधव सहित कला जणे हो लाल ॥ सा० ॥ क्षत्री पुंगव शुद्ध, नवि जाणुं रहे किहां कणे हो लाल ॥ ३ ॥ सा०॥ चिंतवे नरपति ताम, राज्य योग्य निश्चय करे हो लाल ॥ सा० ॥ ए बे राजकुमार, लक्षण सवि तेहनां धरे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥ आदर करिय अपार, पूजी पाठक पर परें हो लाल ॥ सा० ॥ छात्र नणावण आण, देई नृप गया मंदिरें हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ श्रीजयानंद कुमार, गीत नाट्यादिक बहु नणे हो लाल ॥ सा० ॥ कला बहोंतेर विशेष, पामी पसाय गुरुतणे हो लाल ॥ ६ ॥ सा० ॥ छात्र नणावे नित्य, गुरुनें वीसामो करे हो लाल ॥ सा० ॥ एकदा परीक्षा निमित्त, रायनो ढंढेरो फिरे हो लाल ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ तेहनें इछित देश, आपुं जे तोले करी हो लाल ॥ सा० ॥ श्री जय तोले ताम, गजनें नावामां धरी हो लाल ॥ ८ ॥ सा० ॥ जलमां मूके तेह, बूडे तिहां रेखा करे हो लाल ॥ सा० ॥ गज उतारी तेह, नावामां पत्थर नरे हो लाल ॥ सा० ॥ ए ॥ रेखा लगें जल आय, तव पत्थर तोले सवे हो लाल ॥ सा० ॥ तेहना नार प्रमाण, हाथीनुं पण संनवे हो लाल ॥ १० ॥ सा० ॥ नृपति विस्मय पामि, आदरथी घर लावियो हो लाल ॥ सा० ॥ स्नान नोजन शुन रीत, बहु गौरव करे नावियो हो लाल ॥ ११ ॥ सा० ॥ सर्व कलामां प्रवीण, गुणवंतो पंमित लही हो लाल ॥ सा० ॥ रूप कला गुणें तास, निजपुत्री अनुरूप सही हो लाल ॥ १२ ॥ सा० ॥ अण इछतां पण राय, पुत्री मणिमंजरी तणो हो लाल ॥ सा० ॥ कीधो शुन विवाह, नृप दायजो आपे घणो हो लाल ॥ ॥ १३ ॥ सा० ॥ हय गय रथने पत्ति, देश एक आपे वली हो लाल ॥ ॥ सा० ॥ घर उपकरण समेत, मोहोल एक दीये मनरुली हो लाल ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ मणिमंजरीशुं नोग, दिन दिन नोगवे अनिनवा हो लाल ॥ सा० ॥ जींती नृप अनेक, सोंपे नृपनें नव[illegible] हो लाल ॥ १५ ॥ ॥ सा० ॥ पामे प्रतिष्ठा सार, [illegible] नृप [illegible] लाल
जींतवा जातां निषेध, करी कहे [illegible]
सेना लेइ गयो तेह, साहमो आ[illegible]
सुं दोय सैन्य, नाग्यो कुमर [illegible]
मर नरिंद, युद्ध कर्युं तिहां ते[illegible]

शूर चढ्यो तब ततपरें हो लाल ॥ १८ ॥ सा० ॥ बाणें वेढ़ करे युद्ध, गगन दिशो सघली भरी हो लाल ॥ सा० ॥ अनुक्रमें सात धनुष, छेदे कुमार शरें करी हो लाल ॥ १९ ॥ सा० ॥ भांग्यो रथ वली वर्म, खड़ ले इनें धावियो हो लाल ॥ सा० ॥ कुमरें खड़े खड़, खंड करीनें वधावियो हो लाल ॥ २० ॥ सा० ॥ मोघरें मोघर भांगी. गदायें गदा चूरण करे हो लाल ॥ सा० ॥ शस्त्र रहित थयो तेह, बाहु युद्ध मल्लनी परें हो लाल ॥ २१ ॥ सा० ॥ बहु वेला करी युद्ध, शूरनें हृदयमां ताडियो हो लाल ॥ सा० ॥ मूर्छा लही पड्यो भूमि, यश अंबर लगें चाडियो हो लाल ॥ २२ ॥ सा० ॥ निगडबंध करी तात, जीवन छांटी सज्ज कर्यो हो लाल॥ सा० ॥ सैन्यने अभय ते दीध, जइ नृपनें आगल धर्यो हो लाल ॥ २३ ॥ सा० ॥ कुमर वयणें करी तात, मूक्यो दंम लेइ यदा हो लाल ॥ सा० ॥ दयावंत एम जाणी, मूके शत्रु नम्यो तदा हो लाल ॥ २४ ॥ सा० ॥ बालें जीत्यो सुल्ल, एह वैराग्य धरी मनें हो लाल ॥ सा० ॥ पुत्रनें आपी राज्य, दीक्षा लीधी गुरु कनें हो लाल ॥ २५ ॥ सा० ॥ पाली निरतिचार, केवल लही शिवपद वर्यो हो लाल ॥ सा० ॥ धन्य एहनो अवतार, एणी परें अंतर रण कर्यो हो लाल ॥ २६ ॥ सा० ॥ बीजे खंडें ढाल, पन्नरमी ए सोहामणी हो लाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे एम, धर्म ते जिम चिंतामणि हो लाल ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भाग्यवंत भोगी भला, राज्य वृद्धि करनार ॥ नगर लोक नरपति भणी, हर्ष पमाडण हार ॥ १ ॥ सुखमां काल श्रीजयतणो, जाय नित्य जय कार ॥ खेदाये खर भानुयें, सिंह जिम धूक शिरदार ॥ २ ॥ लखमी आपे नवि लीये, ईर्ष्यानें अभिमान ॥ अवर्त्तु चिंते उदमी, नावे ज्ञान निदान ॥ ३ ॥ यतः ॥ खलः सियतएवान्य, स्कृद्धिभिः सत्कृतोप्यलम् ॥ पश्यन् साम्यद्धिपं शुष्येत्, सिक्तोऽपि हि च यातकः ॥ १ ॥ दोहा ॥ देशांतरें दुःख दाखवा, लेई जाउं हुं जाहार ॥ एम चिंतीनें एम कहे, वात सुणो सुविचार ॥ ४ ॥ निजनयरीथी नीकल्या, देश दर्शननें दूर ॥ मनवंछित मनमां रमे, पाम्या न कौतुक पूर ॥ ५ ॥ आलस रहेतां आपणें, जाणे मात्रि जाम ॥

माविन्न माणस मोकली, तेडावी लिये ताम ॥ ६ ॥ सुख गिरिधर मुज सा थ जो, नहीं आवो मनधार ॥ एकाकी जाशुं अमें,तुज वियोग दुःख त्यार॥७॥

॥ ढाल शोलमी ॥ एकवीशानी देशी ॥

॥ मन चिंतवे रे, श्रीजयानंद शिरोमणि ॥ मुज आशय रे, आव्यो सहुनें अवगणी ॥ केम एकलो रे, मूकुं तेणें जावूं खरुं ॥ तस नांखे रे, आवशुं सार्थे तिम करुं ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तिम करुं एम कही करे सामग्री,वास घर द्वार शाख ए ॥ श्रीजयानंद लखे श्लोकह, तेहमां एम नाख ए ॥ यतः ॥ रंत्वा जलाशयेष्वष्टौ, मासान्मित्रेषु कौतुकात् ॥ वर्षासु कुरुते हंसः, स्वपदे मानसे रतिं ॥ १ ॥ निजनारीशुं परिवार सहुनें, वंची खड्ग सहाय ए ॥ सिंह सार्थे नीकल्यो ते, नगरथी निरमाय ए ॥ २ ॥ पुरमानें रे, फरतां इशानें करी ॥ जोवे कौतुक रे, इंण अवसर मणिमंजरी ॥ प्रात समयें रे, चिंतवे मुज पति किहां गया ॥ पूछे परिकर रे, ते पण सहु विलखा थया ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ तेणें पण नृपनें जणाव्युं, मूकी निज नर राय ए ॥ ग्राम नगर उद्यान प्रमुखें, बहु परें शोधाय ए ॥ खोलतां नवि शोध लाधी, शोकातुर नृप बहु थया ॥ इंण अवसर श्लोक देखी, मणिमंजरी आणंद नया ॥ ४ ॥ कहे तातनें रे, कौतुकें देश जोई करी, वर्षायें आवशे रे, मु जपति जाणजो इहां फरी ॥ तव धीरज रे, धरीनें राय प्रमुख रह्या॥ हवे दोय जण रे, चाल्या आगें मन गह गह्या ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ सिंह एकदा ज यनें नांखे, अधर्म लहुं कष्ट ए ॥ तुं सहेशे कष्ट एणि परें, तुंतो धर्मे लष्ट ए ॥ कहे श्रीजयानंद ताहरे, संगें पामुं आपदा ॥ पापी संगें धर्मवंत, सीदा ये जाये संपदा ॥६॥ यतः ॥ तेजोमयोऽपि पूज्योऽपि, पापिना नीच धातुना ॥ अयसा संगतोवन्हिः, सहते घनताडनम् ॥ १ ॥ ढाल ॥ कुसंगतें रे, म हिमा मोटाटानो नवि रहे ॥ लसण संगें रे, गंध कपूर तवे जहे ॥ तव पा पी रे, क्रोधें बोल्यो एणी परें ॥ वाद आपणो रे, हजीय न नांग्यो कोइ नरें ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कलाचार्यनां वचन बहुविध, तेह नांही प्रमाण ए ॥ विना द्रव्यें जेह आपे, अशननें वली पान ए ॥ तेहनो मत खरो जाणे, पण तो चहुनें अन्ने ॥ श्रीजयानंदें मानीयुं तव, हरख्यो सिंह कहे पछे ॥ ८ ॥ ॥ त्रुटक ॥ नांकि परीक्षण आज आगल, जाशुं हुं पुर गाम ए ॥ तुमें विलं बे आवजो नाई, पूर्वे भोजन काम ए ॥ जो न सांझि काम मुजथी, तो तुमें

पछे तापजो ॥ आज मुजथी काम सीफ, काल तो तमें वापजो ॥ ए ॥ ए
म कहीनें रे, आगल चाल्यो ते हवे ॥ चंद्रसेन रे, शतकूटगिरिप्रत्ये एह
वे ॥ नंदिशाल रे. नगरें अवस्कंध कारणें ॥ जाय छे निहां रे, सिंह पड्यो
निज मारणें ॥ १० ॥ त्रुटक ॥ बांध्यो सिंहनें लोनवशथी. पल्लिपतिनें दी
धए ॥ पापी नरकमां पड्यो परमा. धामीयें जिम कीध ए ॥ कोलाहल सु
णी श्रीजयानंद, दया स्नेह धरी घरी ॥ वीर आवी कहे जाओ. किहां बांध
व मुज धरी ॥ ११ ॥ लुंटया आमेरण रे, पल्लिपतियें तेहना ॥ युद्ध करवा
रे. अमसेना भट जेहना ॥ बाण वरसी रे. हत प्रहत सहुनें कस्या ॥ चं
द्रसेनें रे, आवी सुभट धीरज धस्या ॥ १२ ॥ शृंगनादें थया भेला. युद्ध
करवानें सहु ॥ युद्ध करतां तेह साथें. मारतो निजनें बहु ॥ कालनी परें
श्रीजय आव्यो, एह नवि जीताय ए ॥ मरण जाणी पल्लिपति निज, कहे
एम सुणो न्याय ए ॥ १३ ॥ कंम मारे रे, महारा सुभटनें एणी परें, तव
ते कहे रे, बांध्यो जेहनें घुन परें ॥ तेहनो हुं रे, लघु बांधव मूको ते
णें ॥ नहीं मारुं रे, जाउ पछे निर्भय पणे ॥ १४ ॥ त्रुटक ॥ चंद्रसेन क
हे भाई ताहरो, लेई मूक संग्राम ए ॥ आपणे आजथी प्रीति जाणे. सांभ
ली श्रीजय ताम ए ॥ मूक्युं रण तेणें सिंह आप्यो, पल्लीशें प्रार्थना करी ॥
आव्या पाल्लीमां दोय भाई, कार्य निज चित्तमां धरी ॥ १५ ॥ बिहु जण
करी रे, नोजन सुखमां तिहां कणे ॥ तत्र आमहें रे, रहिया तेहने दा
क्षिणें ॥ श्रीजय कनें रे, शीखे धनुर्विद्या कला ॥ पल्लिपति रे, गुण ग्राहक
गुण आगला ॥ १६ ॥ त्रुटक ॥ बीजे खंडें शोलमी ए, ढाल कही शोहा
मणी ॥ धर्मथी सघले सुख पामे, धर्म जिम चिंतामणि ॥ पंडित उत्तम
विजय केरो, शिष्य पद्मविजय कहे ॥ जेह प्राणी धर्म उद्यम, करे ते संप
द लहे ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मृगया चोरी धाडमां, साथें जावे सिंह ॥ नीच कर्म नित्य नित्य क
रे, वनणुं ते निरबीह ॥१॥ सहस्र कूटमां एणे समे, महासेन महाराण ॥
चंद्र वैरी चंद्रसेननो, पल्लिपति लीयें प्राण ॥ २ ॥ एकदिन्न चंद्रसेन एम,
सिंह सहित एम ताम ॥ वयणें श्रीजयने वदे, करो अमारुं काम ॥ ३ ॥
साधे सिद्ध नणी स्वामीजी, राख्या छे रणकाज ॥ पाछे सखायी स्थिर थइ,

जाणीयें आप्युं राज ॥ ४ ॥ तास वचन ते ततक्षणें, मान्युं वचन प्रमाण ॥ उत्तमजन अंगी करे, प्रार्थनायें दिये प्राण ॥ ५ ॥ सर्व सामग्री सामटी, करी आव्यो सहस्रकूट ॥ शृंगशब्दें सपले तिहां, वात विशेषें स्फुट ॥ ६ ॥ महासेन निज मानवी, परवस्यो पाळीनें बाहार ॥ नीकलियो जट मानवी, क्रोधें जम अनुकार ॥ ७ ॥ वसन चित्रक करी व्याघ्रनां, मृगपशुनां महा मान ॥ विविध लता वींटी शिरें, मोर पिछ असमान ॥८॥ काहिल नादें क्रोधथी, युद्ध करणनें जोध ॥ विविध आयुधशुं आविया, शत्रु करता शोध ॥९॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ धवल शेठ लेई नेटणुं ॥ ए देशी ॥

॥ सैन्य मल्यां दोय सामटां, गर्जारवें गिरि गाजे रे ॥ कडुआं वचन वदे घणां, वाजित्र बहु तिहां वाजे रे ॥ सै० ॥ १ ॥ एक एक शत्रु बोलावता, खड्ग कुंतें केइ मारे रे ॥ बाण लेइ केइ उछले, शत्रु केइ संहारे रे ॥ सै० ॥ ॥ २ ॥ रण करतां चंद्रसेननुं, नागुं सैन्य ते नासे रे ॥ कोलाहल सुणी आवियो, सिंहसार ते पासें रे ॥ सै० ॥ ३ ॥ धीरज देई तेहनें, वरसे बाण अखंड रे ॥ निन्न नासे ते उपड्वें, जिम घनें रेणु प्रचंड रे ॥ सै० ॥ ४ ॥ माहासेन ते देखीनें, उठ्यो जिम जमराय रे ॥ बाण वरसे सिंह उपरें, निन्न ते नाग जाय रे ॥ सै० ॥ ५ ॥ सिंहनां बाण छेदे शरें, शत्रु शरण न कोय रे ॥ सिंहधनुष्य छेदी करी, सिंह व्याकुल तिहां होय रे ॥ सै० ॥ ६ ॥ बांधीने निज सैन्यमां, मोकले सुन्नटनें संगें रे ॥ चंद्रसेन ते देखीनें, सन्नद्धबद्ध थइ रंगें रे ॥ सै० ॥ ७ ॥ महासेन बोलावियो, क्रोधें थइ विकराल रे ॥ बिहुं धीर स्पर्द्धायकी, लडे ज्युं डुर्द्धर व्याल रे ॥ सै० ॥ ८ ॥ गाजे गर्जारवें गिरिगुफा, घनपरें वरसे बाण रे ॥ घोर संग्राम कस्यो तेणें, वीर तणुं घणुं मान रे ॥ सै० ॥ ९ ॥ महासेन बलीयो हवे, चंद्रसेन धनु वर्म रे ॥ बाणें छेदी विव्हल कस्यो, गयो तेहनो अति मर्म रे ॥ सै० ॥ १० ॥ सेनायें सेना त्रासवी, कुंत तीर तरवार रे ॥ चंद्रसेन बीजुं धनु, लीये अति धीरज धार रे ॥ सै० ॥ ११ ॥ हवे महासेन तणुं धनु, बाणे करीनें कापे रे ॥ पापनें कापे जेम व्रती, विघन महामंत्रने जापें रे ॥ सै० ॥ १२ ॥ शिलाखंड लेई हवे, चंद्रसेन शिर दीधी रे ॥ तेह पीडायें तेहनें, पापीयें मूर्छा कीधी रे ॥ सै० ॥ १३ ॥ चंद्रसेननें बांधवा, आवे महासेन जेतें रे ॥ अकस्मात श्रीजय तिहां, आवी बोलाव्यो तेतें रे ॥ सै० ॥ १४ ॥ महासे

न पण अमरष धरी, चाप आस्फाले कोपें रे ॥ श्रीजय साहामो धाईनें, क हे क्रोध आटोपें रे ॥ सै० ॥ १५ ॥ निरपराधी हणुं नहीं, निज्ञनी जाति विशेषें रे ॥ क्षत्री कुल हुं उपन्यो, लागे कलंक सहु देखे रे ॥ सै० ॥१६॥ नाई माहारो तें बांधीयो, एटलो काल उवेख्यो रे ॥ हवे हुं महारीश तुज नें, क्रोधें करीनें विशेष्यो रे ॥ सै० ॥ १७ ॥ नहीं तो कह्य जे हुं कहुं, मू क माहारो तुं नाई रे ॥ मेल करो चंमसेनशुं, राज्य नोगव तुं सवाई रे ॥ ॥ सै० ॥ १८ ॥ महासेन कहे मानीपणे, क्षत्रीपणुं हवे लेहेशुं रे ॥ मृ गशुं हरिनें मेल श्यो, आगल सहु तुज कहेशुं रे ॥ सै० ॥ १९ ॥ हरिथी मृग मूकावशे, एहवो कोण छे धीर रे ॥ गुणथी वीर वखाणीयें, नवि वय णें होये वीर रे ॥ सै० ॥ २० ॥ स्पर्द्धायें करी बिहुं जणा, महानट माहा उत्साह रे ॥ महामानी महापराक्रमी, महायोध धरत उमाह रे ॥ सै० ॥ ॥ २१ ॥ बाणयुद्धें ते योधता, पराक्रमथी पनोता रे ॥ बिहुं दल पण सन्नद्ध थइ, रण संग्राममां पोहोता रे ॥ सै० ॥ २२ ॥ श्रीजय बाण समू हथी, सहुदिशें सुनट ते वेगा रे ॥ कायर थइ निर्जयपणे, तेहनें शरणें पे ठा रे ॥ सै० ॥ २३ ॥ एहवो नट नवि को रह्यो, अंकित जे नवि कीधो रे ॥ पण श्रीजयें किरपाथकी, यम नृप पर नवि कीधो रे ॥ सै० ॥ २४॥ वल नागुं महासेननुं, क्रोधें अधिक नराणो रे ॥ बाण निरंतर मूकतो, छेदे श्रीजय उजाणो रे ॥ सै० ॥ २५ ॥ बखतर धनुष छेदी करी, छेदे तस तरवार रे ॥ शस्त्र रहित मुष्टिथकी, श्रीजय हृदयमां मारे रे ॥ सै० ॥ ॥ २६ ॥ मूर्छा लही धरणी ढल्यो, निज्ञ पासें बंधावी रे ॥ पाणी पाई सज्ज कर्यो, दिये चंमसेनने लावी रे ॥ सै० ॥ २७ ॥ बीजे खंमें ए कही, सत्तरमी वर ढाल रे ॥ पद्मविजय कहे धर्मथी, होवे मंगलमाल रे ॥ ॥ सै० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंद तस सैन्यनें, आश्वासन बहु आपि ॥ सिंह तेडावी सज्ज करे, कपरां बंधन कापि ॥ १ ॥ श्रीजयनी सेवा करे, चातुर ते चंमसेन ॥ स्तवना करे सारी परें, हियडे हर्ष नरेण ॥ २ ॥ अहो नाग्य अमारडुं, कुलदेवें करी महेर ॥ पाम्या तुम सरिखा पुरुष, सेवा लीला लहेर ॥ ३ ॥ श्रीजय स्तवना शुन परें, करी पालि निज पाण ॥ कोइक तिहां थापी क

री, सिंह लेइ सपराण ॥ ४ ॥ महासेन लेइ मोजशुं, पोहोता आपणी पाल ॥ श्रीजयनें सामी गणे, काढे एणी परें काल ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चित्रोडा राणा रे ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन दंम लेइ रे, मूक्यो सुख सेंइ रे ॥ श्रीजय न करेइ, कोप तस कपरें रे ॥ १ ॥ मन चिंते सिंह रे, धिग माहारा दीह रे ॥ दोय वार अवीह, मूकाव्यो जीवतो रे ॥ २ ॥ अधिकुं डुःख पायो रे, बंधथी मूकायो रे ॥ एह वातनें गायो, श्रीजय एम वदे रे ॥ ३ ॥ खेद म करो भाई रे, वात ते चित्त लाई रे ॥ जीत हार कमाई, देशादिक लही रे ॥ ४ ॥ सिंह चूको फाल रे, वनमां कोइ काल रे ॥ तोहि महा व्यालनें, मारे ते खरो रे ॥ ५ ॥ एम श्रीजय बोल्या रे, पण सिंह न मोल्या रे ॥ जस रोग असाध्य सुण्या, औषध कीशुं रे ॥ ६ ॥ श्रीजय उपगारी रे, काम अनुतकारी रे ॥ पण उत्सुकता धारी, श्रीजय नहीं कदा रे ॥ ७ ॥ दोय वार दियो प्राण रे, पण खल अप्रमाण रे ॥ देवा डुःखगाण, विचारे सिंह तदा रे ॥ ८ ॥ जावा परदेश रे, मन कीधुं विशेष रे ॥ कोइ म्लेछ देशमां, रहे एम जाणतो रे ॥ ए ॥ श्रीजय केइ दिन्न रे, रह्या लही दाखिन्न रे ॥ गुण आकीर्ण, ते करे उपगारनें रे ॥ १० ॥ कोइ काल व्यतीतें रे, शूल रोग प्रतीतें रे ॥ परलोक गतें गयो, पल्लिपति हवे रे ॥ ११ ॥ तस पुत्र न कोई रे, पालिनो धणी होइ रे ॥ पराक्रम जोइ, श्रीजयनें कहे रे ॥ ॥ १२ ॥ भिल्ल मल्लीनें ताम रे, कहे थाउ अम स्वाम रे ॥ कुराज्यनो नाम, देखीनें नवि ग्रहे रे ॥ १३ ॥ इहां सिंह सार रे, अन्य नाहीं तेवा र रे ॥ भिल्लराय उदार ते, थाप्यो सिंहनें रे ॥ १४ ॥ करे कर्म ते क्रूर रे, गर्व धरतो प्रचूर रे ॥ धरे नृरि प्रमोदनें, पाले पालिनें रे ॥ १५ ॥ देशांतर जाशुं रे, हुं इहां नवि गशुं रे ॥ श्रीजयें प्रकाश्युं, तव सिंह चिंतवे रे ॥ ॥ १६ ॥ मावित्र जो जाणे रे, एहनें तेडी पराणें रे ॥ आपशे कोइ टाले, एहनें राज्यनें रे ॥ १७ ॥ एम चिंतवी तेह रे, माया धरी नेह रे ॥ तुज विरह न रेह, खमी शकुं हुं कदा रे ॥ १८ ॥ तव श्रीजय गाया रे, एकदिन सिंह राया रे ॥ कहे गर्व भराया, श्रीजयानंदनें रे ॥ १ए ॥ हुं अधर्मकारी रे, पाम्यो राज्य विचारी रे ॥ जूउं चित्तमां धारी, तव श्रीजय कहे रे ॥ २० ॥ पामी खलसंग रे, रंक गर्व प्रचंम रे ॥ केम मा

न उद्यम. धरे जागरिके रे ॥ २१ ॥ उपनो अति काप रे, पण दीधो गोप रे ॥ आटोप करे केम. वलीया आगलें रे ॥ २२॥ पण मूषक लेवा रे, करे गात्र संग्वेवा रे ॥ उंदुरपरें देवा रे, सिंहना जाणजो रे ॥ २३ ॥ इसी प्रेम देखाडे रे, बहु रीज पमाडे रे ॥ बहु दिवस गमाडे रे, एकदिन सिंह कहे रे ॥ २४ ॥ सांजलो तुमें वात रे, गिरिकूट नग ख्यात रे ॥ तेह वाण रहात. गिरिमालिनी सुरी रे ॥ २५ ॥ एक गाउ थाय रे, पल्लिपतियें पूजाय रे ॥ कालि चउदश थाय, थाल तेणे सांजलो रे ॥ २६ ॥ मंत्र जपतां थाय रे. मांहि बहु अंतराय रे ॥ जो उत्तर साधक थाय,तो काज नीपजे रे ॥ २७ ॥ मान्युं श्रीजयानंदें रे, लेइ खड्ग आणंदें रे ॥ पूजा उपकरण वृंदें, सिंह ते चालीयो रे ॥ २८ ॥ देवीनें धाम रे, श्रीजय अभिराम रे ॥ उपगारनें काम, गयो साथें तिहां रे ॥ २९ ॥ बीजे खंमें उदार रे, ढाल थइ सुप्रकार रे ॥ सिंहसारनुं चरित्र, सुणो हवे जे होये रे ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूजी देवी पाधरी, जपतो कपटें जाप ॥ तेहनी आगल ते रही, उंघ चलावे आप ॥ १ ॥ श्रीजय खड्ग सवाहीनें, सात्त्विकमां शिरदार ॥ देवालयनें चिहुं दिशें, करतो तिहां हुंकार ॥ २ ॥ त्रास पमाडे जूतनें, प्रेत ते सहु पलाय ॥ उत्तर साधक आफणी, थयो तास थिर थाय ॥ ३ ॥ मंत्र थयो सिद्ध माहरे, तुम प्रजाव ततकाल ॥ दह पणे दोष पोहोरमां, सिंह कहे संजाल ॥ ४ ॥ मंत्रजागरिका माहरे, करवी डे तेणे काम ॥ सूउ श्रांत थया तुमें, रक्षक हुं आराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी, जोलीडा हंसा रे, विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ आशय तेहनो रे अणजाणे थकें, सूता श्रीजयानंद ॥ निद्रा आवी रे बहु थाकें करी, अवसर लही ते नरींद ॥ १ ॥ पापी डुर्जन एणीपरें जाणीयें, न गणे कांय उपकार ॥ सज्जननें डुःखदायी कलटो, तेहथी आन श्रीकार ॥ पा० ॥ २ ॥ काढ्यो वज्र लही शस्त्रीयें करी, काढ्यां नेत्र विशाल ॥ कहे मुज पक्ष अधर्मनें डुःखवे, तिम मुज राज्य रसाल ॥ पा० ॥ ॥ ३ ॥ हाखो नेत्र न आपे मुजनें, बलथी लीधी में डुष्ट ॥ धर्मनां फल जो गव हवे आंधला, मरण तणुं लहे कष्ट ॥ पा० ॥ ४ ॥ एम कहीनें रे आ

व्यो पाछिमां, डुर्गतिनुं रे प्रस्थान ॥ साधुनें नेत्र गयां जे नांखीयां, मंत्री नवें ते निदान ॥ पा०॥ ५ ॥ अज्ञानें जे कर्म उपारज्युं, क्रोधें करीनें अपार ॥ निंदा गर्हा आलोचनादिकथकी, क्षय कीधुं तेणी वार ॥ पा० ॥ ६ ॥ शेष रह्युं ते रे जोगववुं पड्युं, हवे बहु वेदना थाय ॥ शास्त्रवेदी पण मुजनें धिक पडो, खल विश्वास कराय ॥ पा० ॥ ७ ॥ यतः ॥ जीर्णो जोजन मात्रेय, कपिलः प्राणिनां दया ॥ बृहस्पतिरविश्वासं, पांचालः स्त्रीषु मार्दवं ॥ १ ॥ ढाल ॥ जीवतो राख्यो रे तो पण एम थयो,ते मुज कर्म प्रमाण ॥ कर्म कर्यां ते रे जोगवे प्राणीयो, निश्चय एह विन्नाण ॥ पा० ॥ ८ ॥ क्षेत्र कालादिक सामग्री मले, पाके शुजाशुज कर्म ॥ ते सहेतां नही हाणी वे तादरे, क्रोध ते करवो अधर्म ॥ पा०॥ ए ॥ यतः ॥ पुनरपि सहनीयो, डुःख पाकास्त्वयैव, न खलु जवति नाशः कर्मणां संचितानां ॥ इति सह गणयित्वा यद्यदा याति सम्यक्, सदसदितिविवेको ऽन्यत्र जूयः कुतस्ते ॥१॥ ढाल ॥ आपद पामे रे धीरय धारवुं, सज्जननो ए स्वनाव ॥ वृक्ष कंपे पण पर्वत नवि चले, वायुएं ए निजनाव ॥ पा० ॥ १० ॥ कर्मनो क्षय होय ध्यान बलें करी, तेणेंकरी ध्यावुं रे तेह ॥ समकित निश्चल सुखदायक अछे, आपद अग्नियें मेह ॥ पा० ॥ ११ ॥ एम विचारी रे काउस्सग्ग धारतो, ध्यातो परमेष्ठि मंत ॥ शत्रु मित्र समोवड त्रेवडे, मन एकाग्र करंत ॥ पा० ॥ १२ ॥ समकेत ध्यानबलें गिरिमालिनी, कंपित आसन आय ॥ कहे तुज सुपुरुष केरी आपदा, हरवा आवी रे जाय ॥ पा० ॥ १३ ॥ कहे एक पशुयें रे पुजा माहरी, कर तुं नयननें काम ॥ काउस्सग्ग पूरो करि पारी हवे, देवीनें कहे आम ॥ पा० ॥ १४ ॥ आंखनें प्राण जाउ नवि मूलगां, न हणुं प्राणीनां प्राण ॥ वलिनें जोज्य प्रणाम वली जाचती, देवी तेह अजाण ॥ पा० ॥ १५ ॥ समकेत मलिन थवानें कारणें, तुं मिथ्यात्विणी जेण ॥ न करुं तुजनें रे कोपी ते तदा, बोली क्रोध जरेण ॥ पा० ॥ १६ ॥ न करे मुजनें प्रणाम पण डुरमति, तो तस फल तुं रे देख ॥ एम कही डुर्द्दर वायु विकूर्वती, रज कडे सुविशेष ॥ पा० ॥ १७ ॥ पर्वत शिला रे पडतां शब्दथी, बीपे देवनां वृंद ॥ उपाडीनें आकाशें जमाडीयो, पीडा अतिही अमंद ॥ पा० ॥ १८ ॥ पण न खोनाणो रे श्रीजय धर्मथी, पडतो जडफे रे तेह ॥ कहे हुं तूठी रे तुज सत्त्वें करी, तुं गुण ग

ए मणि गेह ॥ पा० ॥ १९ ॥ औषधि ले तुं लक्ष कर नयननें, लेइ प सी जलमांहे ॥ रेडी आंखमां रे, लक्ष थयां नयन ते, धरतो अंग उ ह्राह ॥ पा० ॥ २० ॥ औषधिने मणि मंत्र प्रनाव जे, वयणें नवि क हेवाय ॥ दिव्य नेत्र थई देवी देखतो, आणंद अंग न माय ॥ पा० ॥२१॥ देवी कहे तें रे समकित कारणें. क्लेश सह्यो रे अपार ॥ तास स्वरूप कहो मुज साहेबा, तव ते श्रीजयकुमार ॥ पा० ॥ २२ ॥ देवादिकनुं स्वरूप सुविस्तरें, श्रावकधर्म विस्तार ॥ सांजली पूरवजव संस्कारथी, जाणे अ वधें विचार ॥ पा० ॥ २३ ॥ उगणीशमी ए रे बीजा खंममां, जांखी अ नुपम ढाल ॥ पद्मविजय कहे धर्म करो सवे, धर्मथी मंगलमाल ॥ पा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत उंची तुमें मानवी,सांजलतां श्रीकार ॥ श्रीजयानंदजी सारिखा, अनरथ लह्या अपार ॥ १ ॥ समकेत पामी ते सुरी, पूरवजव परबंध ॥ श्रीजयनें कहे सांजलो, अन्य दर्शनें थइ अंध ॥ २ ॥ समकित धारी श्रावि का, व्रत धारी गुणवंत ॥ पुत्र महारो मांदो पड्यो, तास उपायने तंत ॥ ३ ॥ पूबुं हुं लिंगी प्रतें, प्रतिक्रिया परकार ॥ परिव्राजक एक पापरो, आव्यो मुज आगार ॥ ४ ॥ नृत दोष मुज जांखीनें, मंत्र चूर्णादिक मेलि ॥ साजो कीधो सुत प्रतें, जिक्षा देउं मन नेलि ॥ ५ ॥ लेवा जिक्षा लाल चें, आवी आखे धर्म ॥ शौच मूलने सांजली, मुज मन पाम्यो नर्म ॥ ६ ॥ शौच धर्म साचो हशे, अथवा मलमय एह ॥ एम शंकादिक अति चरी.समकितमां संदेह ॥७॥ काल बहु एम काढीयो,आलोयुं नही आल ॥ गिरशिर हुं गिरिमालिनी, देवी थई दयाल ॥ ८ ॥ मिथ्या दृष्टि शिरोमणि, करुं कर्म अतिक्रूर ॥ तुज वयणें मुज तम गयुं, समकित काग्यो सूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ रहो तो हुं रांधुं खीचडी ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी में पूरवजव माहरो, जांख्यो तुम आगल एह ॥ स्वामी मोरा हे. हवे तुम आधीन हुं रहुं, कहो मुजनें करवुं जेह ॥ स्वा० ॥ १ ॥ उन म नर एम जाणीयें ॥ ए आंकणी ॥ तुज साखें में आदरयुं, जलुं समकित जगमां सार ॥ स्वा० ॥ वली निरपराधी जीवनें. हणवुं नहीं कोइ प्रका र ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ २ ॥ पण में हिंसा करी घणी, तेह किम छूप थाशे

मुज ॥ स्वा० ॥ कुमर कहे तुमें देवता, तप प्रमुख न होये तुज ॥ स्वा० ॥ ॥ उ० ॥ ३ ॥ पण श्रीअरिहंतना चैत्यनी, करो पूजा निर्मल चित्त ॥ स्वा० ॥ वली शासननी प्रजावना, धर्म सहाय करो नित्य नित्य ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ४ ॥ तेह देवी अंगी करे, पढी देवी कहे सुणो स्वामि ॥ स्वा० ॥ तुमें महारा उपकारीया, तुम मूकुं कहो कुण गाम ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ५ ॥ कुमर कहे तुं धन्य ठे, तुजनें थयो एम उपगार ॥ स्वा० ॥ हेमपुरना उद्यानमां, मुजनें मूके तुं धरी प्यार ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ६ ॥ ततक्षण मूक्यो तिहां जइ, वली आपी ओषधि दोय ॥ स्वा० ॥ एक विषनी अपहारिणी, नेत्र सज करणी बीजी जोय ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ७ ॥ दिव्यवस्त्रनें पथ्य वली दीयां, तिम बहुमूला अलंकार ॥ स्वा० ॥ करी प्रणाम अदृश थई, हवे ते सवि अंगें धार ॥ ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ८ ॥ पेठो हवे ते नयरमां, मोह पामे लोकना वृंद ॥ ॥ स्वा० ॥ दीठ रमता जुवटूं, तिहां बेठो मन आणंद ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ॥ ९ ॥ नृपण पणमां धरी करी, दस दाव रम्यो ते गाम ॥ स्वा० ॥ दश लक्ष लीलायें जीतीयो, राजकुमर हाख्या ते ताम ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १० ॥ हवे हाख्याना नयथकी, नवि रमियो कोइ कुमार ॥ स्वा० ॥ हवे गवरावे गंधर्वप्रत्यें, जिनवरनां गीत उदार ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ ११ ॥ दश लाख याचकनें दीयां, एह सांजली चरित्र उदार ॥ स्वा० ॥ हेमप्रजरायें तेडियो, दीठो अद्भुत आकार ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १२ ॥ दिव्य अलंकृत वस्त्रनें, वली अद्भुत लावण्यरूप ॥ स्वा० ॥ लहे व्यामोह सनाजना, जइनें तिहां प्रणम्यो नृप. ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १३ ॥ विस्मय लही आलिंगीयो, कहे अर्धासने तुं बेश ॥ स्वा० ॥ विनयें नवि बेठो तिहां, तेह उचित न चूके लेश ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १४ ॥ बेठो ते नीचे आसनें, नृप पूठे कुशल ठे तुज ॥ स्वा० ॥ ते कहे तुम दरशनथकी, थयुं जनम नयन फल मुज ॥ ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १५ ॥ यतः ॥ तीर्थानां प्रथमं तीर्थं, नृपतिर्नयपावनः ॥ दर्शनादपि योत्राऽपि, दत्तेऽनीष्टाद्भुतश्रियः ॥ १ ॥ ढाल ॥ विनय आकारादिक सवे, नांखे तुज गुण असमान ॥ स्वा० ॥ मूरति तुज सरखी नही, एम कहे वारं वार राजान ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १६ ॥ कुमर कहे तुम दृष्टिथी, हुं सौनागी थयो आज ॥ स्वा० ॥ एम वातें वेला गमी, आव्यो शिर उपर दिनराज ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १७ ॥ सना विसर्जी राजीये, हवे स्नान

भोजन करे राय ॥ स्वा०॥ कुमर संघातें सहु करी, नृप शय्यायें जइ ठाय ॥
॥ स्वा० ॥ उ० ॥ १८ ॥ कुमरनें आसन आपीनें, कहे नृप सुणो तुमें वा
त ॥ स्वा० ॥ जे कारण तुम तेडीया, ते सांजलो मुज अवदात ॥ स्वा० ॥
॥ उ० ॥ १९ ॥ बीजा खंममां वीशमी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ स्वा० ॥
श्रीजयानंदना रातमां, आगल सुणो वात रसाल ॥ स्वा० ॥ उ० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राणी पांचशे रूअडी, माहारे ठे मनोहार ॥ ललिता विमला लीला
वती, केलि कलादिक सार ॥ १ ॥ शत पुत्रह सोहामणा, जानु जानुवर
नाम ॥ जानुवीर सुजानु नें, वरदत्त सुदत्त सुधाम ॥ २ ॥ सुसेन रवितेजा
सुगुण, सुजीम सुमुख सुजाण ॥ इत्यादिक उपर अठे, पुत्री रूप निधान
॥३॥ ललिता पटराणी लहे, गुणोत्तर सरवंग ॥ सौजाग्य मंजरी सुरलता,
सरखी यौवन संग ॥ ४ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ मोहनजी मोकलोनें मोशाला ॥ ए देशी ॥

॥ ते चोशठ कला निधान, प्रिय मधुर वदे सुप्रधान ॥ तेहनां वर उत्तम
काज, वेगे कुलदेवी समाज ॥ १ ॥ मोहनजी सांजलो अरदास ॥ तुम
सम नहीं जग सुविलास ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ रेलणी कुलदेवी नाम,
मौन ध्याननें जप शुज गाम ॥ त्रीजे दिन तूठी रातें, मुज सुपनमां कहे इं
ण जातें ॥ मो० ॥ २ ॥ युवराज गृह द्वार पासें, द्यूतपदें रमें उल्लासें ॥
दिव्य वस्त्र अलंकृति जास, खड्गधर दिव्याकृति खास ॥ मो० ॥ ३ ॥ दश
लक्ष जींती दान देशे, सौजाग्यमंजरी पतिवेशे ॥ हरख्यो हुं सांजली ते
ह, विहाणे पूजी गयो गेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ पारणुं डुःखवारणुं कीधुं, ते
सुजटोनें जाण न दीधुं ॥ एहवो नर कोइ आवे, लावजो मुज पासें जावें
॥ मो० ॥ ५ ॥ ते कारण तुमनें लाव्या, देखी अम मन घणुं जाव्या ॥ प
रणो ए महारी कुमरी, जस रूपथी हारी अमरी ॥ मो० ॥ ६ ॥ कहे कु
मर न जाणो वंश, गुण अवगुण न लहो अंश ॥ केम आपो कन्या मु
ज, एमां हाणी आवे ठे तुज ॥ मो० ॥ ७ ॥ यतः ॥ कुलं शीलं वपुर्वि
द्या, वयोवित्तं सनाथता ॥ वरे सप्त गुणा मृग्या, स्ततो जाग्यवशा कनी
॥ १ ॥ ढाल ॥ कहे राय देवीनी वाणी, आकार विनयादिक जाणी ॥
जाण्यो तुम उत्तम वंश, एहमां नही संशय अंश ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुज

प्रार्थना भंग न कीजें, तव कुमरें मौन रहीजें ॥ वाजे ते ढोल ददाम, शुभ लगनें परण्या ताम ॥ मो० ॥ ए ॥ हय गयने पायक गाम, दासी दासनें पुरवर दाम ॥ राय सौध रहेवानें काम, बहु उपकरण भरे ते धाम ॥मो०॥ ॥ १० ॥ तिहां भोगवता वर भोग, नृप सेवा करे शुभयोग ॥ ते दिनथी लखमी वाधे, बहु राय प्रमुख नृप साधे ॥ मो० ॥ ११ ॥ श्रीवर्द्धन अभिधा थापे, तेहनो जश दश दिशें व्यापे ॥ एक दिन नृप भांखे कुमार, सुणो अमकुल ए आचार ॥ मो० ॥ १२ ॥ परणीनें बहु भरतार, उन्नवशुं हर्ष अपार ॥ कुल देवता मासने अंतें, पूजे एक पशुयें सुचित्तें ॥ मो०॥ १३ ॥ चौदशनी रात्रें पूजो, तुम विघन होये ते धूजो ॥ कहे कुमर न काम ए कीजें, अपराध विना न मारीजें ॥ मो० ॥ १४ ॥ यतः ॥ नास्ति हिंसा समं पापं, नरकादिप्रदानतः ॥ न चाहिंसासमं पुण्यं, दानात्स्वर्गापवर्गयोः ॥ १ ॥ अमृतं नीरगा६क्रात्, नैवापथ्याज्ञदक्षयः ॥ साधुवादोविवादान्न, न शांतिः प्राणिनां वधात् ॥ २ ॥ ढाल ॥ भोज्यादिकें नृपति भांखे, अरचो जिम विघन न दाखे ॥ कहे कुमर मिथ्यात्विणी एह, तत्त्वज्ञानी पूजुं कहो केह ॥ मो० ॥ १५ ॥ जेहनें देव गुरु धर्म राखे, तेहनें इह अनर्थ न दाखे ॥ ए रांकडीनो स्यो भार, तुमें रहो सुखमां निरधार ॥ मो० ॥१६॥ यतः ॥ ग्रहाः प्रसन्नावशवर्त्तिनःसुरा, न दुष्टनृपाः प्रभवंति नो खलाः ॥ न ह्यंति विघ्नाविलसंति संपदो, यदि स्थितोयत्र जिनः सुपूज्यते ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ जमाईनें नवि कहेवाय, अधिकुं एम कही घर जाय ॥ कुलदेवीनें कहे एम, तें आप्यो जमाई प्रेम ॥ मो० ॥ १७ ॥ ते पण तुजनें नवि पूजे, बीजुं मुजनें नवि सूजे ॥ तूनें ते जमाई जाणो, शुं करुं पण भक्ति न राणो ॥ मो० ॥ १८ ॥ नमी देवीनें गयो नृप, कुमरें लह्युं तास सरूप ॥ स प्रत्यया देवी जाणी, हवे रयणीयें गुणमणिखाणी॥ मो० ॥ १९ ॥ कांईक तस शंका करतो, पट्टमां जिनप्रतिमा धरतो ॥ धूप पुष्प सुगंध धरीनें, बेठो जिनध्यान करीनें ॥ मो० ॥ २० ॥ एकवीशमी बीजे खंडें, ढाल भांखी रंग अखंडें ॥ धर्म दृढ एम मन करजो, कहे पद्मविजय शिव वरजो ॥ ॥ मो० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अप्रमत्त आसन पछुं, पोहर बीजे तिहां पेसी॥ धूमघटा दश दिश धरी,

देवीकृत ए देखी ॥ १ ॥ कोलाहल परिकर करी, दहदिशें नागो दूर ॥ कुम र वीहीक मन नवि करे, परमेष्टि ध्यान पमूर ॥ २ ॥ काउस्सग्ग तव करी रह्यो, घूममयो ते ध्यान ॥ जाज्वल्य मान ज्वाला थई, परगट ते पहिचान ॥ ३ ॥ रौद्ररूप करी रेखणी, मस्तक मूढक समान ॥ अग्नि वाणशी थां खडी, ताड मान पद तान ॥ ४ ॥ पेट बन्युं पर्वत गुफा, कीलक दंत क राल ॥ चक्र त्रिशूल खड्ग चगचगे, नीषण अतिशय चाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ .हामानी देशी ॥

॥ अट्टाट्ट हास्यनें मूकती डमरूक वजाडे, बहुत्राल घमाडे, कर चक्र न माडे, मानुं आकाश तल फोडशे रे ॥१॥ में तुजनें नररायनी, लखमी बहु दीधी, कन्या प्रसिद्धि, ताहरे कर कीधी, तोहि तें निंदा कीधी माहरी रे ॥ २ ॥ हजीअ पूजा कर माहरी, वली कर परणाम, नहीं तो यम धाम, पामिश सूत्राम, राखण काम पण नावशे रे ॥ ३ ॥ तोहे पण क्षो न्यो नही. तव रोश चढावी, अगनि वरसावी, जाला शिर आवी, तो पण लावी कुमरें मन नहीं रे ॥ ४ ॥ जिनवर ध्यानधारा धरे, अगनि उंला य, तव हरि मूकाय, गर्जारव थाय, नक्षण करवा जाय ते हवे रे ॥ ५ ॥ पुछांबोटें कंपावतो, धरतीनें जाम, नख आयुध गाम, दाढा पडी ताम, नख आम नांगा जिन ध्यानथी रे ॥ ६ ॥ सिंह गयो हवे सर्पथी, मूक्या बहु नाग, हुंकारनो लाग, नरे अंबर नाग, श्यामनो राग नव मेघथ्यो रे ॥ ॥ ७ ॥ शतगमे मणि घणुं दीपता, मानुं यम कर दंम, फणाटोप प्रचंम, वींटे ते अखंम, वेदना चंम करे रोषथी रे ॥ ८ ॥ फणाटोपें मारे घणुं, वली तनुनें मरडे, दशने वली करडे, लालायें खरडे, दंत पडे रे तेह नागना रे ॥ ९ ॥ फणथी मणि त्रुटी पडे, वली नांगे हाड, वायरे जिम जाड, नवि लागे पहाड, कुमर पहाड तनु उपरें रे ॥ १० ॥ नाग सवे विलखा थइ, ते नाग जाय, विस्मय सुरी थाय, मन चिंते थाय, पीडा उपाय नवि एहनें रे ॥ ११ ॥ ध्यान बलें न खोनी शकुं, करुं ध्याननें पी डा, अनुकूल पणे क्रीडा, करी शुन कहुं ईडा, एहमां रे व्रीडा नहीं मुज नें रे ॥ १२ ॥ एम विचारी नारीनुं, कीधुं वली रूप, अलंकृत अनुरूप, मुख चंद स्वरूप, कामनो भूप मानूं ए बनी रे ॥ १३ ॥ घुघरी चरणे रणजणे, लीला गतें चाले, कुमर मुख नाले, निज मानें गाले, बोले रसालें वयण

एणीपरें रे ॥ १४ ॥ माहारो खम अपराध रे, सात्विक सोनागी, तुजशुं लय लागी, मुज नावठ नांगी, हुं थइ रागी हवे ताहरी रें ॥ १५ ॥ एवा पुरुषनें पामवा, में परीक्षा कीधी, हुं तुजशुं गिद्धी, मुजनें क्रय लीधी, देव नी क्रद्धि नोगव नरपणें रे ॥ १६ ॥ अंगीकार कर मुजनें, हुं ताहरी दासी, स्नेही सुविलासी, नित्य नृत्य प्रकाशी, गीत गाशी रे सहु तुज आगलें रे ॥ १७ ॥ कामने वयणें न वेधी रे, न चलाव्युं ध्यान, व्रत उपर ज्ञान ॥ जिनवर बहुमान, मान न दीधुं रे देवीनें तेणें रे ॥ १८ ॥ बीजे खंमें बावी शमी, वर नांखी ढाल, पद्में सुरसाल, परीक्षाने काल, मंगलमाल होये थिर घतां रे ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विस्मय पामी व्यंतरी, बोले एहवा बोल ॥ तुज उपर तूठी अछुं, सां तें वचनज खोल ॥ १ ॥ हवे उपसर्ग करुं नहीं, पण कहे ताहरी पास ॥ इयो छे मंत्र सोहामणो, परगट तेह प्रकाश ॥ २ ॥ जास प्रनावें मुज जरा, जालिम न चव्यो जोर ॥ कोण धर्म पूजा करे, सांनलुं मूकी सोर ॥ ३ ॥ हुं ताहरो हितकारिणी, पूजे नहीं तूं पाणि ॥ काउस्सग्ग पारी कुंवर ते, उत्तर आपे आणि ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ महाविदेहक्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे सुण रेव्हणी, पंच परमेष्ठी ध्यान लाल रे ॥ जगत पूज्यनुं हुं करुं, केवल अमृत पान लाल रे ॥कु०॥ १ ॥ त्रिविधें जेह ध्यातां थकां, सकल दुःख क्षय थाय लाल रे ॥ धर्म ते अरिहंतनो कह्यो, सयल जीव हितदाय लाल रे ॥ कु० ॥ २ ॥ समकेतधारी प्राणीया, मिथ्यादृष्टि जे होय लाल रे ॥ तेहनी पूजा नवि करे,प्राणांतें पण जोय लाल रे ॥कु०॥ ॥ ३ ॥ तेमाटे देवी सुणो, इह्यो जो आतम हेत लाल रे ॥ त्रिविधें हिंसा नवि करो, हिंसा नरक संकेत लाल रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ धर्म अरिहंतनो मुज नें, नांखो करी विस्तार लाल रे ॥ तव कुमारें विस्तर करी, नांख्यो धर्मवि चार लाल रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ हिंसानां फल दाखीयां, तेमज दयानां विशाल लाल रे ॥ सांनली बूजी ते हवे, समकेत ग्रहे सुरसाल लाल रे ॥ कु० ॥ ॥ ६ ॥ विरमी प्राणीवधथकी, पूर्वे जे हिंसा कीध लाल रे ॥ तेह रोगनें टालवा, उषध आकरुं दीध लाल रे ॥ कु० ॥ ७ ॥ अरिहंतनी पूजा करो,

धर्म सहाय करेह लाल रे ॥ शासननी परजावना. संघ उपरें ससनेह ला ल रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ देवी सेवा धर्मथी, कुमर देवी लह्या हर्षे लाल रे ॥ वृ ष्टि कदंबना फूलनें, मेघ धारा जिम वर्ष लाल रे ॥ कु० ॥ ए ॥ गुरु नर्को दिव्यौषधि, आपे महिमावंत लाल रे ॥ निज पर शिर घापीथकी, इच्छित रूप करंत लाल रे ॥ कु० ॥ १० ॥ वस्त्र नूषण वली आपती, वर्षे कनक मणिराशि लाल रे ॥ देव डुंडंनि वजाडीनें, अदृश्य हुई तास लाल रे ॥ ॥ कु० ॥ ११ ॥ जई राजा बोलावीयो, तंवे जागे ठे के केम लाल रे ॥ जाएं हुं नरपति कहे, तंच आवे केम एम लाल रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ धूम्या दिक जमाई घरें, देखी डुःख अपार लाल रे ॥ सा कहे सांजल जे कहुं, तुं ज जमाई उदार लाल रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ अनुकूल प्रतिकूल में कस्या, उप सर्ग तास अनेक लाल रे ॥ पण सात्त्विक उत्तम घणो, नवि मूकी निज टेक लाल रे ॥ कु० ॥ १४ ॥ जीवदया मूल आदस्यो, में एह पासें धर्म ला ल रे ॥ तुं पण धर्म एहनी कनें, लेजे तंमी अधर्म लाल रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ एम कही ए अदृश्य थई, हवे विहाणें सहु आय लाल रे ॥ राय प्रमुख रयणी तणो, जोवा कुमरनें गय लाल रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ कुमर आनूषण वस्त्रथी. दिव्यें देखी हरखाय लाल रे ॥ रत्नपुंज देखी करी, आनंद अंग न माय लाल रे ॥ कु० ॥ १७ ॥ पूठे नृप कुमारनें, श्यो रयणी वृत्तांत लाल रे ॥ कुमरें यथास्थित नांखीयो, चित्त करी एकांत लाल रे ॥ कु० ॥ ॥ १८ ॥ कुमर सत्त्व प्रशंसता, तिम जिन धर्म प्रजाव लाल रे ॥ चमत कार पामी करी, राय प्रमुख सन्नाव लाल रे ॥ कु० ॥ १९ ॥ धर्म ग्रहवा नृप मन करे, उद्यान पालक ताम लाल रे ॥ दीये वधामणी आवीया, धर्मयशा गुरु नाम लाल रे ॥ कु० ॥ २० ॥ बहु परिवारें परिवस्या, धर्म मूर्त्ति मानुं तेह लाल रे ॥ कुमरवयणें राजा हवे, वंदे गुरु ससनेह लाल ॥ कु० ॥ २१ ॥ धर्म सांजली आदरे, समकेतादिक शुद्ध लाल रे ॥ राज पुत्र राज्यवर्गीया, नागर पण प्रतिबुद्ध लाल रे ॥ कु० ॥ २२ ॥ कुमत मूकी धर्मी थया, देखो कुमार चरित्र लाल रे ॥ काल काढे एम धर्ममां, श्रीवर्द्धन सुपवित्र लाल रे ॥ कु० ॥ २३ ॥ बीजे खंनें त्रेवीशमी, पद्म कहे एम ढाल लाल रे ॥ श्रीजयानंदना रासमां, आगल वात रसाल लाल रे ॥ कु० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन आस्थानें रह्यो, सौधर्म सना समान॥ शत सुत श्रीवर्द्ध न सहित, पागीयानें परधान ॥ १ ॥ वन पालक आवी कहे, क्रीडा वनमां क्रोड॥ घोर शब्द घुघुर करे, खराखर करे खोड ॥२॥ काल रूपें ए कोल डे, नटनें पण दीये नीक ॥ नाशी जाये निक्षरा, एहमां नहीं अलीक ॥ ३ ॥ अवनीपति उठे यदा, वारे पुत्र विनीत ॥ शत पुत्र उठे सामटा, सन्नद्ध थ या शुन रीत ॥ ४ ॥ कुंमर पशु जाणी करी, उवेखीयुं तमाम ॥ कौतुकथी केडें गयो, बुद्धिमंत बलधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ जइ सूअर बोलावीयोजी, हय गय परिवृत तेह ॥ साहामो सूअर आवीयोजी, क्रोध करालित देह ॥ १ ॥ नवि नाव धरीनें सुणजो अचरज वात ॥ ए आंकणी ॥ समकालें सुत रायनाजी, बाण श्रेणी वरसंत ॥ उछ ली उछली ते सवेजी, दाढायें खंम करंत ॥ नवि०॥ २॥ हय गयनें पण पा डियाजी, खड्ग मोघर गदा घात ॥ तेहने अणगणतो थकोजी, बहु सुनट क रे पात ॥ नवि० ॥ ३ ॥ क्षण गगनें क्षण धरतीयेंजी, फाल दीये बलवंत ॥ लस्करमां सहु देखताजी, आदि मध्यें वली अंत ॥ नवि० ॥ ४ ॥ आकु ल व्याकुल सहु थयाजी, राजकुमर तेणी वार ॥ तेहनी रक्षा कारणेंजी, श्री जयानंद कुमार ॥ नवि० ॥ ५ ॥ शस्त्र रहित ते देखीनेंजी, मूके खड्ग तुरंग ॥ वांधी केडें बोलावीयोजी, सूअरनें निज संग ॥ नवि० ॥ ६ ॥ फाल देइ कुमर शिरेंजी, आवे कोल ते जाम ॥ मुष्टियें हणी दोय दाढनेंजी, खं म खंम करी ताम ॥ नवि०॥ ७ ॥ तो पण सत्त्व पराक्रमेंजी, श्रीजय उपर तेह ॥ पडवा मांम्युं तेटलेजी, पग पकडी च्रम देह ॥ नवि० ॥ ८ ॥ ते फे रि दूर फेंकी दीयोजी, धीर बली महावीर ॥ सात ताड दूरें पड्योजी, श्री जयशूर कोटीर ॥ नवि० ॥ ए ॥ नागो बुंबारव करीजी, थयो नख दाढनो नंग ॥ पेठो गहनें नाशिनेंजी, पूठें कुमर गया संग ॥ नवि० ॥ १० ॥ दीठो नहीं ते वराहनेंजी, आवतो लूए गजराज ॥ श्वेत चार दंतुशलें जी, शो नित आव्यो समाज ॥ नवि० ॥ ११ ॥ मोद लहीनें नमाडियोजी, मुष्टि यें कीध प्रहार ॥ वश करी शिर उपर चढ्योजी, श्रीजयानंद कुमार ॥नवि० ॥ १२ ॥ वाले ते हिमपुर नणीजी, पण वन सनमुख धाय ॥ वायुवेगें दूरें

जइजी. गगनें पंखीपरें जाय ॥ नवि० ॥ १३ ॥ देखे पृथिवीयें तदाजी, गो पद सम कासार ॥ उदेही शिखर परें नग तदाजी. नदीयो नीक श्रनुहार ॥ नवि० ॥ १४ ॥ ग्राम पुरादिक देखतोजी, बालक्रीडा पुर रीति ॥ कुमर वि चारे चित्तमांजी, वैरी कोइक दिये नीति ॥ नवि० ॥ १५ ॥ रखे तापरमां नाखतोजी. वज्रमुष्टियें कस्यो थाय ॥ तेहनुं वल न सही शक्योजी, डुःख पीडा श्रति थाय ॥ नवि० ॥ १६ ॥ गगनें ठांमीनें गयोजी, समरे श्रौप धि ताम ॥ विघ्न निवारणी नामथीजी, सरोवर पडियो उद्दाम ॥ नवि० ॥ ॥ १७ ॥ तेह तरी तीरें गयोजी, मारग जोवा काम ॥ चढीयो एक वड उपरेंजी, दीठो मारग वली गाम ॥ नवि० ॥ १८ ॥ उतरवा इछा करेजी, वडथी जावा जाम ॥ वड उम्यो श्राकाशमांजी. जइ महारणनें ठाम ॥ नवि० ॥ १९ ॥ पर्वतनिकूटें वड रह्योजी, उतस्यो हवे वनमांहि ॥ पा णी सींच्यां वृक्षनांजी. फल दीठां रे उछाहि ॥ नवि० ॥ २० ॥ पांचशें ताप सना तिहांजी, श्राश्रमें गयो ते कुमार ॥ तिहां एक शय्यायें रह्योजी, व्या घ्र दीठो मनोहार ॥ नवि० ॥ २१ ॥ वाघ सेवा तापस करेजी, विस्मय ल ह्यो कुमार ॥ तव तापस उभा थइजी, श्रालिंगन दिये सार ॥ नवि० ॥ ॥ २२ ॥ खेम कुशल पूछे वलीजी, श्रमृत नरियां नयण ॥ वेसारे उचिता सनेंजी, कुमर पूछे एम वयण ॥ नवि० ॥ २३ ॥ एह वाघ कहो कोण छे जी. केम सेवा करो तास ॥ तापस कहे मोहोटी कथाजी, छे ते कहेशुं उ ल्लास ॥नवि०॥ २४ ॥ श्रीजयानंदना रासमांजी, चोवीशमी ए ढाल ॥ खंम बीजे पदमें कह्योजी, सुणतां मंगलमाल ॥ नवि० ॥ २५॥सर्वगाथा॥७१२॥

॥ दोहा ॥

॥ स्नान करीने शुद्ध थया, गौरवथी गुणवंत ॥ नोजन करवा नाजनें, पायस ते पिरसंत ॥ १ ॥ इष्ट फलादिक श्रापियां, नोजन करीनें नावि ॥ तापसशुं तिहां ततक्षणें, श्रासन वेग श्रावि ॥ २ ॥ तापस एक युवान त य, हरिवीर हितकार ॥ कुमरनें तेह कथा कहे, व्याघ्रनी करी विस्तार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ वींठीयानी देशीमां ॥

॥ महापुरें नरसुंदर राजियो, गाजीयो शत्रुजय हेत रे ॥ हरिवीर कु लीमां गाजीयो, नृप तेहशुं हित बहु देत रे ॥ १ ॥ जूठ जूठ वात विनो दनी ॥ ए श्रांकणी ॥ नृप बालमित्र सेनापति, निज नंदन श्रधिक प्रमाण

रे ॥ एहवें निज मातुल नरपति, नोगपुरीमां नोगराजान रे ॥ जू० ॥ २ ॥ तस वैरी तस पुरें आवियो, राजा वलीयो शूरपाल रे ॥ नोगराय ते तेह शुं जूफीउं, नाशुं निजबल तिण काल रे ॥ जू० ॥ ३ ॥ नोगराय पेठो निज नयरमां, परधानें लख्यो ते लेख रे ॥ ठानो नाणेज तेडावियो, नरसुंदर लेख ते देख रे ॥ जू० ॥ ४ ॥ धीर वीर माने निज धन्यता, आज स्वजननें आव्युं काम रे ॥ करुं उपकार हुं तेहनें, राखुं सहुनी एम माम रे ॥ जू० ॥ ५ ॥ यतः ॥ किं तद्राज्यं रमा सा किं, यतोनोपकृतिः परे ॥ सर्वेंपूपचिकीर्षंति, महांतः किं पुनर्निजे ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली ॥ एम चिंतवी जावा उद्यम करे, तेटले नृपनें निषिद्ध रे ॥ सेनानी कहे नेक उपरें, केम गरुड पराक्रम सिद्ध रे ॥ जू० ॥ ६ ॥ शूरनगरें जइ शूरपालनें, जींती राखुं नोगराय रे ॥ मुज द्यो आदेश तव नूपति, आण आपे करी सुपसाय रे ॥ जू० ॥ ७ ॥ गजरथ दोयसहस्र ते आपीया, पांच लाख तुरंगम दीध रे ॥ पायक पांच कोडीशुं परिवर्यो, नीसाणे मंको कीध रे ॥ जू० ॥ ॥ ८ ॥ हरिवीर चाल्यो नोगपुर नणी, महामानी माहा जोद्धार रे ॥ शूरपालनें जइ बोलावीयो, नोगरायें जाण्यो ते प्रकार रे ॥ जू० ॥ ए ॥ लेइ सैन्यनें तेह नेलो थयो,शूरपाल सैन्य दोय साथ रे ॥ लडे तास वाजित्र गर्जारवें, गाजे जिम सायर पाथ रे ॥ जू० ॥ १० ॥ गर्जे गज तुरंगें तुरंग लडे, रथी पायक सम करे युद्ध रे ॥ शर कुंत खड्ग न्यायें लडे, क्षीण शस्त्रे केइ थइ क्रुद्ध रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ बाहु मुष्टियुद्धें वली जूफता, पदें पद दंतें वली दंत रे ॥ केशें केश नखें नख वलगता, मस्तकें मस्तक फूटंत रे ॥ ॥ जू० ॥ १२ ॥ केइ मोघरे रथनें चूरता, पापड परें वली गदाघात रे ॥ करी पाडे गज नगटूक ज्यूं, जम सरिखा ते साक्षात रे ॥ जू० ॥ १३ ॥ हय पग पकडी उछालता, लघु उपल परें वली केइ रे ॥ पग पकडी सुनट नमाडता, जेम शिशु उछाड करेइ रे ॥ जू० ॥ १४ ॥ केइ मूर्छा पडचा गृद्ध पांखना, पवनें सज्ज युद्ध कराय रे ॥ रणधरति दुःसंचर थइ, प्रेतें करी गगन नराय रे ॥ जू० ॥ १५ ॥ एम घोर रणें शूरपालनें, सैन्यें दोय सैन्यनें तेली रे ॥ तव उंसख्या कांयक हारथी, रणथंज मर्यादा मेली रे ॥ ॥ जू० ॥ १६ ॥ नोगराय कठ्यो तव रथ चडी, अनिमानथी युद्ध करेय रे ॥ शूरपालनुं सैन्य नाठुं तदा, देखी शूरपाल उठेय रे ॥ जू० ॥ १७ ॥

रथ वेगो क्रोधथी एम कहे, नाशि गयो तुं एकवार रे ॥ हवे जाश्यो किहां परबलथकी,वेलु तपे केतिक वार रे ॥जू०॥१८॥ जोगराय कोप करीनें कहे, एक वार चूको दीपीकालें रे, पण वानर मारतां वार शी, परथी तप्यो थय तृण वाले रे ॥ जू० ॥ १९ ॥ तेजस्वी अवज्ञा नवि खमे, लागुं तिहां रण अतराल रे ॥ जोगरायनुं धनुर छेद्युं शरें, रथ जांज्यो थइ विकराल रे ॥ जू० ॥ २० ॥ शिरस्त्राण वर्म सवि जेदीयां, जोगराय थयो जोगहीन रे ॥ हरिवीरें रथ वच्चें नाखियो, करे युद्ध थइ अदीन रे॥ जू० ॥ २१ ॥ कहे शूरपाल तुं केम मरे, पर अर्थे कहे तव तेह रे ॥ निजपरनां काम स मोवडें, गणे सज्जन प्राणी जेह रे ॥ जू० ॥ २२ ॥ मरवुं तो देवनें हाथ छे, तुज श्वानें न आधीन रे ॥ एम कही शरनो मंमप रच्यो, शूरपाल से ना थई दीन रे ॥ जू० ॥ २३ ॥ पत्ति ते विपत्ति पामीया, रथ रहित थ या रथवंत रे ॥ एम निज निज वाहन सवि गयां, मूक्यां संग्राम महंत रे ॥ जू० ॥ २४ ॥ हय गय जड तूर्यना नादथी, प्रस्फोट परें आकाश रे ॥ युद्ध करतां जयश्री अंतरें, रही न लह्यो वर अवकाश रे ॥ जु० ॥ २५ ॥ वादिहत परें ते हेतीनें, छेदे ते परस्पर योध रे ॥ सात धनुष छेद्यां शूर पालनां, अनुक्रमें सेनानीयें क्रोध रे ॥ जू० ॥ २६ ॥ तव विधुर चिंते तनु कंपतो, जे लेउं ते छेदे एह रे॥ हुं थाको एह नवा परें, सेना जागी गइ जेह रे ॥ जू० ॥२७॥ इहां रहुं तो मरण लहुं खरो, जइ पामे जीव जोजीव रे॥ लज्जा नहीं शूरथी नासतां, एम चिंतवे चित्त अतीव रे ॥ जु० ॥२८॥ एम चिंतवी रथ वाल्यो तेणें, मूकी वनमां जट श्रेणी रे ॥ नाठो शूरपाल लेई चमू, जोगराय पूर्वे थयो तेणी रे ॥ जु० ॥ २९ ॥ गज घोडा शस्त्र लूं टी लीये, मतें बकतरनें अलंकार रे ॥ नासंतां लूंटवुं शोहलुं, तव हुउं जय जयकार रे ॥ जू० ॥ ३० ॥ बीजे खंमें पचवीशमी, ढाल श्रीनयानंदनें रास रे॥ कहे पद्मविजय पुण्ये करी, लहियें नित्य लीलविलास रे ॥ जू० ॥ ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ ७४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान याचकनें देयतां, सेनानी लइ संग ॥ जोगराय निजपुर जणी, आव्या अति उछरंग ॥१॥ जोगराय मानें नृनुं, जीवनो दायक लाण ॥ से नानीनां गुन परें,बारु करे वखाण ॥ २ ॥ देवा कन्या मोदशुं, उपकारीनें

एह ॥ सजानें पूछे सुगुण, कन्या छे कोइ गेह ॥ ३ ॥ दंमनायक शूरदत्त ते, बोल्यो एहवा बोल ॥ सुजगा नाम सोहामणी, आवे एहनें तोल ॥ ४ ॥ अद्भुत कन्या एहवी, माहारे छे महाराय ॥ एकांतें अनुरूप जोइ, मनमां मोद न माय ॥ ५ ॥ हरिवीरनें दीये हर्षथी, अवनीपति लही आण ॥ पाणीग्रहण प्रेमें करी, महोत्सव विविध मंमाण ॥ ६ ॥ आपे अति आदर करी, करमोचननें काल ॥ शूरदत्त निजशक्तिथी, अनुपम धन असराल ॥ ७ ॥ जोगराय पण जक्तिथी, आपे वस्त्र अनेक ॥ पुर गाम दिये प्रेमें करी, चारु धरीय विवेक ॥ ८ ॥ काल केतोएक काढतो, जोगवतो सुख जोग ॥ जावा निजपुर जेटले, जुडतो कीधो योग ॥ ए ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुजगा कहे एणे अवसरें रे, पेटपीडा मुज थाय ॥ कपट न शीखववुं पडे रे, नारीमां सहज ए आय ॥१॥ जूर्ड गति नारीनी रे ॥ नारी कपट न कोय जणाय ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ मांचे तडफडती पडी रे,पिता करे प्रतिकार ॥ तिम तिम बूंब पाडे घणुं रे, दाखवे अतिय विकार ॥ जू० ॥ २ ॥ जाग्ययोगें जरता मल्यो रे, उत्तम सुगुण निधान ॥ एणे अवसर पीडा थई रे, धिग् मुज पाप निदान ॥ जू० ॥ ३ ॥ सासू ससरा सेववा रे, उत्सुकता रही एम ॥ एम सांजली निज ऊपरें रे, दंमनायक लहे प्रेम ॥ जू० ॥ ४ ॥ स्वामी मलवा मन घणुं रे, पण टकीयो कोई दिन्न ॥ पण शाता तस नवि थई रे, खाये नवि वली अन्न ॥ जू० ॥ ५ ॥ कगाडी कह्यो कोण शके रे, जागतो ऊंघे जेह ॥ हवे ससरादिक एम कहे रे, साजी थाये जव एह ॥ जू० ॥ ६ ॥ तव तुमें तेडवा आवजो रे, जूपनें जणव्युं तेह ॥ जूपें जूपनें मोकल्यां रे, हय गय अद्भुत जेह ॥ जू० ॥ ॥ ७ ॥ सेनानी ते लई चल्यो रे, दूरें पोहोतो जाणि ॥ स्वैरिणी सुजगा हर्षथी रे, साजी थइ तेणे ठाय ॥ जू० ॥ ८ ॥ तात चाकर मधुकंठशुं रे, सेवे काम विलास ॥ नाना उपचारें करी रे, ते पण वश छे तास ॥ जू० ॥ ए ॥ मोही तेहना स्वरथकी रे, क्रीडा करे आसक्त ॥ पण निपुणाइ तेहनी रे, कोई न जाणे रक्त ॥ जू० ॥ १०॥ नारी चरित्र न को लहे रे, धाता पण मुंजाय ॥ शूरदत्त हरख्यो घणुं रे, सरल ते नारीनो ताय ॥ ॥ जू० ॥ ११ ॥ यतः ॥ जलमज्के मच्छिपयं, आगासे पंखीयाण पयपंती॥

महिला हियपाए मग्गो, तिन्निवि विरला पयंपंती ॥ १ ॥ रविचरियं गह चरियं, तारा चरियं च राहु चरियं च ॥ जाणंति बुद्धिमंता, महिला चरियं न जाणंति ॥ २ ॥ दोहा ॥ जामातानें विंछी वाय, मद्यपानी मूरख अज्ञात ॥ नगिनीसुत पृथिवीको नाथ, कीधो गुण नवि जाणे तात ॥ ३ ॥ धूता धूते मूढकुं, चतुर न धूत्यो जात ॥ नारी धूते चतुरकुं, एह वडी एक वात ॥ ४ ॥ नूख्यो नाट वगाडुं ढोर, हाख्यो जुआरी बांध्यो चोर ॥ रांम नांमने मातो सांढ, ए तातेची टलीपा मांम ॥ ५ ॥ ढाल पूर्वली ॥ जणव्युं जमाईनें तेणें रे, ते आव्यो ततकाल ॥ उचित प्रतिपत्ति करी रे, संतोष्यो सुरताल ॥ जु० ॥ १२ ॥ सुनगा कुमलाणी मनें रे, दीठी देखी जेम नाग ॥ बाहिर स्नेह देखावतां रे, कहे मुज जाग्यां नाग्य ॥ ॥ जु० ॥ १३ ॥ यतः ॥ कबहुं वनिता मृदु वाच वदे, कबहुं तिनसुं कटु वाच कहे ॥ कबहु मनरंग विरंग धरे, कबहुंज विरागिनी होइ रहे ॥ कबहु एक बोल सहे न नलो, कबहुं कटु बोल अनेक सहे ॥ मुनि धन्य कहे जगदीश विना, त्रियकी करणी कहो कौन लहे ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ हवे स्त्री लईने जावता रे. हरिवीर थयो वजमाल ॥ तव कपटें पहेली थई रे, शिर कंपे विकराल ॥ जु० ॥ १४ ॥ अट्टहास्य मुख बोलती रे, आंखे बीहाडे लोक ॥ नाजन नांगे नाचती रे, मारे बालादि थोक ॥ जु० ॥ ॥ १५ ॥ निज परनें गालो दीये रे, कांइ न ढांके अंग ॥ कारण विण रुवे हसे रे. ताली दीये गाये रंग ॥ जु० ॥ १६ ॥ विच विचमां माही होये रे, वावडीमां करे क्रीड ॥ खेद लहे पित्रादिका रे, धरता अतिशय व्रीड ॥ जु० ॥ १७ ॥ मंत्रवादी तेडया घणा रे, करता बहु प्रतिकार ॥ देवी ग्रह प्रेत शाकिनी रे, व्यंतर शंका धार ॥ जु० ॥ १८ ॥ सन्निपात उन्मादता रे, जाणी दोष अपार ॥ विविध प्रयोग औषध करे रे, पण गुण न थयो लगार ॥ जु० ॥ १९ ॥ कुलदेवी पूजा करे रे, मात पिता थया राग ॥ हरिवीर पण करे मानता रे, देव देवीनी लाग ॥ जु० ॥ २० ॥ गुण न थयो कोपयो हवे रे, विलखो थयो हरिवीर ॥ सालादिक हांसी करे रे, चिर रहेतां जाय नीर ॥ जु० ॥ २१ ॥ रूपवती सती प्रेयसी रे, अनु चायी घणो स्नेह ॥ एम दुःखणी न खमी शकुं रे, चिंतवे लाउं गेह ॥ जु० ॥ ॥ २२ ॥ घरें लाउं एहनें मूकीनें रे, मित्रादिक करे हास ॥ मुख दाखी

शकुं केणी परें रे, एके नहीं अवकाश ॥ जू० ॥ २३ ॥ कर्म तणी गति कोण लहे रे, जावुं निश्चय धाम ॥ पूछे श्वसुरनें ते कहे रे, आवजो फरि तुमें आम ॥ जू० ॥ २४ ॥ आण लही चाल्यो घरें रे, पोहोतो अनुक्रमें तेह ॥ स्वजननें सहु संजलावतो रे, धरतो तास सनेह ॥ जू० ॥२५॥ खंमें बीजे छवीशमी रे.पद्मविजयें कही ढाल ॥ धन्य मुनिवर जेणें परिहरी रे, नारी डुःखजंजाल ॥ जू० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलदेवी पूजा करे, शकुन देखावे साच ॥ निमित्त पूछे बहु निमित्तिया, नारी करावे नाच ॥ १ ॥ कोइ संगम स्त्रीनो कहे, इव्यादिक दीये तास ॥ नारी आसक्त नरनें होये, सर्व विचार विनाश ॥ २ ॥ सुजगा वली साजी थई, पूरव रीति पिछाण ॥ तेडवुं मूकवुं हाथ तस, मांयपणुं सुप्रमाण ॥ ३ ॥ पित्रादिक परमोदथी, तेडाव्यो जामात ॥ आव्यो ते कतावलो, भूख्यानें जेम भात ॥ ४ ॥ शूरदत्तादिक साचवे, उचितकृत्य उजमाल ॥ सुजगा दाखवे सुखणी, स्नेह हियामां साल ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ राग खंजाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

सुजगा नामें नार, डुजगापणुं ते आचरेजी ॥ जेम नश कहे नाम, पण अनइ सहुने करेजी ॥ १ ॥ कामस्नेह उपचार, करी जरतारनें रीजवेजी ॥ वश थयो नारीनें तेह, एक दिन एकांतें चवेजी ॥ २ ॥ जब करीयें प्रयाण, तब मुज तातनें मागजोजी ॥ मधुकंठ आपो साथ, ए बहु कामनो जाणजोजी ॥ ३ ॥ मारगनो छे जाण, ढूकडे मारग लइ जशेजी ॥ जक्तिवंतो ने समर्थ, एहथकी गुण बहु थशेजी ॥ ४ ॥ मानी मूरखें वात, तेमज कयुं ते अवसरेंजी ॥ वस्त्रालंकार सत्कार, दासी दास दीये तस करेंजी ॥ ५ ॥ मधुकंठ पण दीयो तास, हवे जावा उद्यम करेजी ॥ मात पिता पडी पाय, सुजगा आखें आंसु जरेजी ॥ ६ ॥ मात पिता दीये शीख, जरता देवपरें गणेजी ॥ पालजो शील उदार, अनाचार सवि अवगणेजी ॥ ७ ॥ पूर्वे न कीजें शयन, कठीयें जरता पूरवेंजी ॥ सासु नणंदनी जक्ति, करजो जेम डुःख चूरवेजी ॥८॥ बंधु परिजन जेह, वदन प्रसन्न निज राखजेजी ॥ शोक्य साथें धरे राग, पतिवल्लभनें आदर करेजी ॥ ए ॥ पतिद्वेषीनें उवेखि, शुज आचारें संचरेजी ॥इत्या

हिक दीठे मोह, कुमर पण अंगीकरेजी ॥ जगत तणी जे नारी, मात पिता ते नवि धरेजी ॥ १० ॥ दंपती चाल्यां तेथ, चोळावी नहुवे वस्यांजी ॥ मदुकंठ दक्षिणभागे, ते मार्गे नहुवे वस्यांजी ॥ ११ ॥ ना म्यां इहां जेह, तेह तपन नामे तदाजी ॥ घणुं नामे वीरवीर, नदी वाली तिहां एकदाजी ॥ १२ ॥ वन निकुंज तस तीर, उत्तम सोहन कारणेजी ॥ दंपती सोहन कीध, कुमर कहे प्रिय तारणेजी ॥ १३ ॥ ए सरिता रमणीक, वन अंतर सोहामणुंजी ॥ क्रीडा करीये इहांक, कुम मन एहवो कामनाजी ॥ १४ ॥ मदुकंठ रदक एह, अंतर सेवक वारणो जी ॥ लाजने भय इहां नहिं, नवि आवे कोइ तांतणोजी ॥ १५ ॥ पेठां सरितामांहिं, जलक्रीडा पहेलुं करेजी ॥ जलक्रीडा करी एम, पेठां ते वन मन्दरेजी ॥ १६ ॥ कामक्रीडा करे तह, आलिंगन गाढुं दीयेजी ॥ विविध करी रतिक्रीड, एक पोहोर वसंत लियेजी ॥ १७ ॥ रहा निज मदुकंठ, रथ देखी फरे विहुं दिशेजी ॥ फिकर करे चोफेर, नीकल्यां नहीं कारण कीहांजी ॥ १८ ॥ बीजे खंडे ढाळ, तवावीशमी सोहामणीजी ॥ पद्म कहे मुनिराज, धन्य जेहो नारी खवनणीजी ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ८८५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुंवर आवे मनमां नहीं, केम इहां करीये वार ॥ शंका लही मदुकंठ, चोकीयाने दीध चार ॥ १ ॥ कमर नवि आव्यो किमे, वनमां शुं विचार ॥ सेनानी कुमर तथा, नवि दीठां निरधार ॥ २ ॥ बहु विहांपक दीठुं नहीं, अनिट घडु आशंक ॥ मदुकंठ खोजत मांगीयो, नवि आव्यो निशंक ॥ ३ ॥ शोधे वंडूल नहु, विकार विविध विशेष ॥ पवनथां पण अब पेखता, पहती रमणी पेख ॥ ४ ॥ त्रिपाना ग्रतमान परे, काढी कुस्तमां अब ॥ वनस्पति कांई आणीने, चाल्या मांगती चाज ॥ ५ ॥

॥ ढाळ अठावीशमी ॥ चंद्रावळानी देशी ॥

॥ अनुक्रमे पोहोंता मदुकंठ रे, नमीया वड भूपाळ ॥ आंसुपदी थां इ वरे रे, वात कहेता विकराळ ॥ लालच तरुण, शोकवंत थयो तत्कालजी भू प ॥ तैनाहिके करीने चोर, सोभावे बहु दिन ते अनूप ॥ १ ॥ जी रावन की वरि ॥ लाव्यो मुने मद मोकली रे, आव्यो बहु मानि ॥ वात निज रा वा तणी रे, नवि आव्यो एकांत ॥ नवि आव्यो एकांत लेवाने, कुमरपदी ते

ह अधिको धारे ॥ शोक विलाप करे सहु नारे, तेम तेम नृपति घणुं पोका रे ॥ जी० ॥ २ ॥ सेनानीनुं कुटुंब ते रे, रूइ रूइ बहु काल ॥ प्राणी कर्म नां उदयथी रे, सहे एकलो दुःखजाल ॥ स० ॥ ते राजा, मंत्र्यादिक प्र तिबोधे जाजा ॥ अन्य सेनानी थापे अतिआजा, जेहनी कोय न लोपे मा जा ॥ जी० ॥ ३ ॥ अनुक्रमें शोक मूकी करी रे, एकदिन जाये गज लेवा ॥ विंध्या अटवी आवीयो रे, सामग्रीशुं कलेवा ॥ सामग्रीशुं मेरामां वेगे, बहु परिवारें परिवृत्त जेगे ॥ शबर आवी एक वेगे देगे, वानर नाच करावे उक्तिगे ॥ जी० ॥ ४ ॥ वानर वानरी नाचतां रे, विचविच करे थुतकार ॥ वलगे चूंबे आलिंगतां रे, युद्ध करे ते अपार ॥ युद्ध० ॥ ते जोइ, सहुज न चित्तमां अचरज होई ॥ एहवो नाच न दीगे कोई, सहु एम कहे ते न यणें पलोई ॥ जी० ॥ ५ ॥ राजा देखी रीजियो रे, आपे तस बहु दान ॥ तेहमां मुख्य जे वानरो रे, देखी हरखे राजान ॥ राजा देखी वानर रोवे, पाय पडी आंसुयें पग धोवे ॥ सहु एहवुं अचरिज ते जोवे, राय तणे म न विस्मय होवे ॥ जी० ॥ ६ ॥ चेष्टायें सवि दाखवे रे, पण वचनें न क हाय ॥ आशय कोइ समजे नहीं रे, पण कांइक अभिप्राय ॥ कांइक अभि प्राय जाणी लेवें, कपिनुं वृंद नृप ततखेवें ॥ इच्छित शबरनें धन बहु देवे, नाटकथी नृपनें कपि सेवे ॥ जी० ॥ ७ ॥ केलिवीर पशुपालनें रे, आप्यो शिक्षा हेत ॥ राजा केइक दिन रही रे, चाल्यो पृथिवी नेत ॥ पृथिवीनेत लेई गज वलीयो, निजधामें पोहोतो सुख चलीयो ॥ अवसर जोइ केलि वीर ते कलियो, नृत्य करावे नृपपुर हलीयो ॥ जी० ॥ ८ ॥ कपि पालक कपिनें दीये रे, ग्रास अधिक नरराय ॥ तत्त्व जाणे नहीं पण तिहां रे, रा ग ते अधिको थाय ॥ अधिका रागथी नृप करावे, कनकमणि अलंकार ज डावे ॥ सोनी आभरण लेइनें आवे, नृत्य अंतें नृप आगल ठावे ॥ जी० ॥ ९ ॥ नृपें कलाद संतोषीयो रे, दान देइ शुभ रीति ॥ तेह आभरण प हेराववा रे, निज हाथें धरी प्रीति ॥ प्रीति धरी पहेराववा काम, लोहनुं व लय अछे गल ताम ॥ नवीन पहेरावचा काढे जाम, वानर पुरुष रूप हुउ ताम ॥ जी० ॥ १० ॥ नृपतिनें चरणे नमे रे, सेनानी हरिवीर ॥ उगाडी आलिंगीयो रे, नयणें झरंतो नीर ॥ नयणें नीर झरंतो देखी, जोवा रह थइ सवि उवेखी ॥ नृपें आश्वास्यो संभ्रम पेखी, आसनें बेसाड्यो सुवि

शेरी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वाजित्र गीत बहु थयां रे, बंदी मंगल बोले ॥ सांभली कुटुंब ते यावीनें रे, दुःखनां बंधन खोले ॥ बंधन दुःखनां खोला पूछे, अचरिज वात कहो ए शुं छे ॥ नवि दीठुं नवि सांभलीयुं छे, ह रिवीर कहे तमें सांभलो ज्युं छे ॥ जी०॥ १२॥ कर्मथी बलीयो को नही रे, कर्म तिरिमां घाल्यो ॥ तेहमांथी तुमें उद्धरी रे, मानवनो भव आल्यो ॥ आल्यो मानवनो भव रूडो, तवि संसारनो मोह छे कूडो ॥ बिंदु दीपे ए क जिम मधुपूडो, सुख माने परमारथें मूंमो ॥ जी० ॥ १३ ॥ यतः ॥ शौर्ये च धैर्ये च धने च पूर्णे, ऐश्वर्ययोगेऽप्यखिले बले च ॥ मित्रे च नृपे पि हृते कवित्वे, नृत्यत्यहो कर्मगतिर्विचित्रा ॥ १ ॥ यन्मनोरथगतेरगोच रं, यत् स्टशंति न गिरः कवेरपि ॥ स्वप्नवृत्तिरपि यत्र दुर्लभा, हेलयैव विदधा ति कर्म तत् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ बीजे खंमें ए कही रे, अछावीशमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे सांभलो रे, आगल वात रसाल ॥ आगल वात रसाल सुसार, सांभलतां होय जयजयकार ॥ श्रीजयानंदजीनें अधिकार, हरि वीर कहे निज वात प्रकार ॥ जी० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ८२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेयसीशुं पेंवो वनें, तिहां लगें मालिम तुम्ह ॥ नावि वात सुणो न शुं, अंतर वन गयां अम्ह ॥ १ ॥ स्मरचेष्टा संलापथी, मुंजावे मुज मन्न ॥ मलयगिरि मारुतथकी, टाढुं थाये तन्न ॥ २ ॥ कोकिलरव कानें सुणुं, चंपुर लता संबंध ॥ नमतां जोतां मानिनी, बोली करी निर्बंध ॥ ३ ॥ माधवी मंमप रम्य छे, आपण रमीयें एथ ॥ तास वचन तहनि करी, ततद्दण पोंनो तेथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥ वणजारानी देशी ॥

॥ पल्लव सायरो पापरो ॥ सुणो राजा रे ॥ कामक्रीडा करी ताम नृपनि सुण ताजा रे ॥ तिहां एक कपि देखी करी ॥ सु० ॥ सुजनें कहे ते नाम ॥ नृ० ॥ १ ॥ सामी हुं पापणी पढा ॥ सु० ॥ मांही थइ दीप वार ॥ नृ० ॥ मूकी गया तमें मुजनें ॥ सु० ॥ दैवथी थयो करार ॥ नृ० ॥२॥ तुम वियोगें दुःख धरुं ॥ सु० ॥ एण समे आवी एक ॥ नृ० ॥ परिव्राजि का माही थणी ॥ सु० ॥ धरती अंग विवेक ॥ नृ० ॥ ३ ॥ पानें औषधि गांठडी ॥ सु० ॥ जाणी एह विचार ॥ नृ० ॥ दान इष्ट देइ वश करी ॥ सु० ॥

तूंही कहे मुज सार ॥ चू० ॥ ४ ॥ केम महारी सेवा करे ॥ सु० ॥ काम होये ते चांख ॥ चू० ॥ सर्वे वातें समरथ छुं ॥ सु० ॥ मनमां मत का य राख ॥ चू० ॥ ५ ॥ में कह्युं स्वामिनी सांजलो ॥ सु० ॥ रोग आवे मु ज देह ॥ चू० ॥ विघन करे कामनोगमां ॥ सु० ॥ प्रिय संगम नवि रेह ॥ चू० ॥ ६ ॥ महारां विघन दूरें करो ॥ सु० ॥ तव तेणें औषधि जुत्त ॥ ॥ चू० ॥ लोह वलय मुज आपियुं ॥ सु०॥ मुजनें एणी पेरें उत्त ॥चू०॥ ॥ ७ ॥ ए औषधि पासें थकां ॥ सु० ॥ विघन थाये विसराल ॥ चू० ॥ रोग आवे नहीं सर्वथा ॥ सु० ॥ न परानवे सिंह व्याल ॥ चू० ॥ ८ ॥ सुर नर कोइ न डुःख दीये ॥ सु० ॥ हरख लइ हुं अपार ॥ चू० ॥ त्रिसर जी पूजी नमी ॥ सु० ॥ महिमा घणो श्रीकार ॥ चू० ॥ ए ॥ तेणें तुम संगम मुज थयो ॥ सु० ॥ वली अंगें नीरोग ॥ चू० ॥ महारे शिव तुम जोइयें ॥ सु० ॥ तुम कंठें करुं योग ॥ चू० ॥ १० ॥ उंशीके हमणां ठवुं ॥ ॥ सु० ॥ रतक्रीडायें कस्यो खेद ॥ चू० ॥ अवसरें सहु सारुं थशे ॥ सु० ॥ हमणां सुउ सुख वेद ॥ चू० ॥ ११ ॥ एम कही देसाडी मनें ॥ सु० ॥ मूकी उंशीसा मूल ॥ चू० ॥ मूढ थयो एना वयणथी ॥ सु० ॥ नवि जाणी प्रतिकूल ॥ चू० ॥ १२ ॥ करी विश्वासनें वंचीयो ॥ सु० ॥ मुज कंठें ते दीध ॥ चू० ॥ वैरणी प्रायें निडडी ॥ सु० ॥ जाग्यो देखी कपि कीध ॥ ॥ चू० ॥ १३ ॥ खेद लह्यो हुं मनथकी ॥ सु० ॥ धायो पूठें तास ॥ ॥ चू० ॥ रथ वेरी मधुकंठशुं ॥ सु० ॥ करती लील विलास ॥ चू० ॥ १४ ॥ जाती दीठी स्नेहथी ॥ सु० ॥ हुं करतो लाल पाल ॥ चू० ॥ ते कहे मूढ जाणे नहि॥सु०॥हजीअ स्नेहनो काल ॥चू०॥१५॥ दोहा ॥ मूरख घर लडी घणी, अरु विद्या अकुलीन ॥ महीला माने नीचकुं, वरसो मेह गरीन ॥१॥ पाप होय सब लोनथें, रस थें व्याधिविशेष ॥ अति डुःख उपजे स्नेह थें, त्रिहुं गेडे सुख देख ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एक पखो कहो निर्वहे ॥सु०॥ स्नेह ते केतो काल ॥ चू० ॥ विवाह प्रमुख पितायें कस्यो ॥ सु० ॥ ते परवश पणे माल ॥ चू० ॥ १६ ॥ बालथी हुंतो स्वैरिणी ॥ सु० ॥ मधु कंठशुं अतिराग ॥ चू० ॥ मधुरस्वरें मोही घणुं ॥ सु० ॥ गीत कलानें ला ग ॥ चू० ॥ १७ ॥ निजघरमां एहशुं रमुं ॥ सु० ॥ एहज मुज नरतार ॥ ॥ चू० ॥ अद्भुत रूप तुज देखनें ॥ सु० ॥ वली तुज चरित्र आचार ॥

॥ नू०॥ १७ ॥ दोहा॥ और गंग खोजी खुजे, जब लगें पोहोंचे हाथ ॥ प्रेमगांठ अंतर पडी, सरके शिरके साथ ॥ १ ॥ ढाल ॥ विवाह सहुयें मना वीयो ॥ सु० ॥ पण मुज राग न कोय ॥ नू० ॥ सहुने विश्वास पमाडवा ॥ ॥ सु० ॥ स्नेह देखाडयो तोय ॥ नू० ॥ १९ ॥ दोहा ॥ सारी नारी किन्न री. चोया हे जुआ ॥ जागा सो ऊगरया, वेध्या सो मूआ ॥ १ ॥ ढाल ॥ वार विहुं तुज फेरव्यो ॥ सु० ॥ तोही न समज्यो गमार ॥ नू० ॥ परि व्राजिकदत्त वलयथी ॥ सु० ॥ कपि कीधो एणी वार ॥ ॥नू० ॥ २० ॥ जो गव तिरिपणुं भोजमां ॥ सु० ॥ समज्यो न मुज आकूत ॥ नू० ॥ माहा रो दोष इहां नथी ॥ सु० ॥ ज्ञाने करे ठे वृत ॥ नू० ॥ २१ ॥ तात वंचीला वी बहु ॥ सु० ॥ जाणुं कांइक धन लेह ॥ नू० ॥ क्रीडीशुं इष्टायकी ॥ ॥ सु० ॥ तुं कपिगणमां रमेय ॥ नू० ॥ २२ ॥ एम कही रथ प्रेरियो ॥सु०॥ इछित दिशि नणी तेण ॥ नू० ॥ फाल देई हुं वलगीयो ॥ सु० ॥ वलीय विदारुं नखेण ॥ नू० ॥ २३ ॥ मारयो परांणे मुझनें ॥ सु० ॥ तोही न मूकुं तास ॥ नू० ॥ म्यान सहित खड्ग हण्यो ॥ सु० ॥ तव कस्यो क्रोधें निराश॥ ॥ नू० ॥ २४ ॥ मूर्छित थइ जूयें पडयो ॥ सु० ॥ वातयोगें थयो सज्ज॥ ॥ नू० ॥ राति गई विहाणुं थयुं ॥ सु० ॥ नवि लहुं कज्ज अकज्ज ॥नू०॥ ॥ २५ ॥ वानरीयूथ देखी करी ॥ सु० ॥ निरयासो यूयेश ॥ नू० ॥ वानरीशुं क्रीडा करुं ॥ सु० ॥ यूथपति हुं विशेष ॥ नू० ॥ २६ ॥ शबरें पकडी एक दिनें ॥ सु० ॥ शिखव्युं नाटक सुज्ज ॥ नू० ॥ तुम आप्यो तु में नर कर्यो ॥ सु० ॥ ए मुज वातनुं गुज्ज ॥ नू० ॥ २७ ॥ मुज पूठो तो नारिनो ॥ सु० ॥ कोइ न करशो संग ॥ नू० ॥ विषयासक्त जे जे होवे ॥ ॥ सु० ॥ आपद लहे एकंग ॥ नू० ॥ २८ ॥ बीजे खंडें ए कही ॥सु०॥ ठगणत्रीशमी ढाल ॥नू०॥ पद्म कहे ते धन्य मुनि ॥सु०॥ जे न लूबे नामिनी जाल ॥ २९ ॥ सर्वगाथा ॥ ८५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदोन्मत्त मूढा परें, नष्ट हृदय जोइ नार ॥ सर्वखमा ने सामठुं, करे विपरीत विकार ॥ १ ॥ वाणी सांनली नूप वदे, मत खेदाउं मन्न ॥ शील वंती श्यामा करी, नोगवो नोग अखिन्न ॥ २ ॥ सेनानी कहे सांनलो,ना मिनी मुख्य नोगांग ॥ रात दिवस बीहितो रहुं, सिंहिणी जिम सारंग ॥

॥ ३ ॥ यतः ॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोनता ॥ अशौचं
र्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वनावजाः ॥१॥ दोहा ॥ नामिनी तजइं न
की, इह परनव सुख श्राय ॥ तपोवनमां जइ तप करुं, श्राणा तुम श्र
य ॥ ४ ॥ राय विचारे हृदयमां, उपरांगे थयो एह ॥ अथवा देखी
बुं, कहो विरचे नहीं केह ॥ ५ ॥
॥ ढाल त्रीशमी ॥ वटाउनी देशी ॥
॥ नृपति मनमां चिंतवे रे, गज रथ अश्व अनेक ॥ माहारे ले पण
वि शक्यो, स्त्री उःखथी ए व्यतिरेक रे ॥ जीव उःख सहे अनेक रे,
नहीं आधार विवेक रे, कर्म वैरी परानव छेक रे ॥ १ ॥ कर्मतणी गति
हवी मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ इंइ ते कीडो उपजे रे, चक्री नरकें जाय
नरपति ते पायक होये, धनवंत दरिड़ी थाय रे ॥ शक्तिवंतनी शक्ति जाय
सुखीयो ते उःखनर गाय रे, नीरामय ते सरोगी काय रे ॥ कर्म० ॥
सुनग दोनागी नीपजे रे, इण नव परनव एम ॥ कर्मे कस्यां छूटे नहीं,
ऊपर आस्था केम रे, एतो अनियत सुख छे नेम रे, सुख विषयना
प्रेम रे, ते तो खरज खनन सुख जेम रे ॥कर्म०॥३॥ विषय आशा फो
करे रे, मृग तृष्णा परें तेह ॥ नारी आहेडी यानकें, मारे नग मृगनें जेह
फोकट धरे तस नेह रे, नारी बाले नरनी देह रे, एतो उःख वन
मेह रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ रगी आवी निज ताततें रे, तिरि कीधो नरता
एम कोइ राणी मुंजने, करे तो श्यो तस प्रतिकार रे ॥ एक नारीयें
उःख धार रे, माहारे तो अनेक छे नार रे, सापण वाघण अनुकार रे
॥ कर्म० ॥ ५ ॥ नव उदवेग एम नावतो रे, आव्यो नर कोइ ताम
राय वधाव्यो एणी परें, स्वामी हेमजट तापस नाम रे ॥ परिवार
उद्याम रे, तुम पुर सीमानें गाम रे, धरे ज्ञान ध्यान अनिराम रे ॥कर्म
॥ ६ ॥ ते गुरु आव्या सांनली रे, नृप करतो बहु मान ॥ घृतपूरमां
कर परें, जाणी चाल्यो उद्यान रे ॥ वंदनानुं धारी ध्यान रे, जई दीठ
रुतलें थान रे, नमतां दीये आशीष दान रे ॥ कर्म० ॥७॥ तापसन
नृपति रे, सांनले तस उपदेश ॥ आयु अथिर धन चपल छे, स्वारथी
सकान विशेष रे ॥ क्षण क्षण क्षय थाय तनु शेष रे, नारी राक्षसणीने
इा रे, उःख उपजावे संक्लेष रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ नृप सुणी ते देशना

अधिक वैराग्य धरेय ॥ राज्य ठवि निज पुत्रनें, सार्थे हरिवीरादिक लेय रे ॥ तापस व्रत अंगी करेय रे, स्वर्णजट तस अभिधा देय रे, गुरु लाजनो दर्प धरेय रे ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ पट्टराणी सुर सुंदरी रे, चूजी सार्थे थाय ॥ तापसणी पण नवि कह्यो, निज गर्ने ते व्रत अंतराय रे ॥ मन धारी पण निरमाय रे, पांचशे तापस समुदाय रे, अमें तप करीयें इण ठाय रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १० ॥ दिन दिन गर्भ प्रगट थयो रे, पूठयो तास विचार ॥ वात यथारथ राणीयें, सवि जांखी निज जरतार रे ॥ प्रसवे पुत्री मनोहार रे, शुन लगन नखेतर वार रे, पाले तापसणी परिवार रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ लक्षण पुण्य लावण्यवती रे, तापससुंदरी नाम ॥ बुद्धियें जीती शारदा, तस तात शिखावे ताम रे ॥ चोशठ कला गुणधाम रे, हवे हेमजट आपणे गाम रे, स्वर्णजट थापे अनिराम रे ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ पल्यंकविद्या आपतो रे, साधनविधियें समेत ॥ ते सुरसुख जोगी थयो, कुलपति स्वर्णजट थयो नेत रे ॥ तापस पाले अनिप्रेत रे, विद्या साधन संकेत रे, उपवास विधि समवेत रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ गिरि उपर गिरिचूडनुं रे, पहनुं देहरुं एक ॥ ध्यान आसन करी तिहां रह्यो, जप लाख करे सुविवेक रे ॥ देखी कुलपतिनी टेक रे, तुष्टमान थयो अतिरेक रे, एकवीश दिनें ते नेक रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ गगनगामी दियो ढोलीयो रे, कुलपति प्रणम्यो तास ॥ स्तवना करी पारणुं करे, पल्यंक राखे निज पास रे ॥ ते उपर करिय निवास रे, विद्याधर परें उल्लास रे, तीरथ वंदे अति खास रे ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ यौवन पामी कन्यका रे, सौनाग्य अद्भुत रूप ॥ कमला ते चपला थई, दुःखें देखी तास सरूप रे ॥ पडयो तास पिता चिंताकूप रे, वर खोलवा तस अनुरूप रे, जमे पल्यंकें क्षितिनूप रे ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ नृप पुत्र बहु देखतो रे, कोइ न आव्यो दाय ॥ एकनृप रूप देखी करी, व्याघ्ररूपें घातक आय रे ॥ पल्यंक उपर ते ठाय रे, देखी बीहीना ऋषि समुदाय रे, जाय नाठा तेह पलाय रे ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ संज्ञायें धीरी करी रे, बोलाव्या ऋषि तेह ॥ नरवधी नृमि अक्षर लखी, स्वर्णजट तुम कुलपति जेह रे ॥ कोइ देव शरापें एह रे, थयो व्याघ्र तणो ए देह रे, एहमां म धरो मन संदेह रे ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ धर्मतत्त्व ज्ञानीपकी रे, नर थाइश निरधार ॥ खोली लावो तेहनें, बीजे खंमें अधिकार रे ॥ सुणे श्रीजयानंद कुमार

रे, ढाल त्रीशमी अति मनोहार रे, कहे पद्मविजय सुखकार रे, जिनधर्म थी जयजय काररे ॥ कर्म० ॥१९॥ सर्वगाथा ॥ ८८१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमचा धर्मने ऊपरें, उत्कृष्टो नहीं अन्य ॥ मंत्रविद्या बहु मांहे थी, धर्म ते न थयो धन्य ॥ १ ॥ अक्षपादनें उलुकना, सांख्य शैव सहु कोय ॥ कठिन थई उद्यम करे, होशे विफला होय ॥ २ ॥ तापस तव चिंतातुरा, आव्यो नही उपाय ॥ मुज आदे देइ सहुमुनि, गिरिचूडनें गया ठाय ॥ ३ ॥ पवित्र थइनें पाथर्यो, दर्न संथारो दक्ष ॥ ध्यानासन वेसी घु रें, जाप करे सुर यक्ष ॥ ४ ॥ उपवासी आदर करी, संनारे सुर तेह ॥ अंतें आठ उपवासनें, आवी पूछे एह ॥ ५ ॥तव बोल्या ते कुलपति, स्वामी करो स्वरूप ॥ सुर कहे हुं समरथ नही, सांजलो तास सरूप ॥ ६ ॥ शक्ति ए महोटा सुर तणी, कहो बीजी कांइ वात ॥ तापस कहे धर्म तत्त्व नो, जाण लावो जोइ जात ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे, दश गज फाटो चीर ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानीने पूछी करी रे, धर्मतत्त्वनो जाण रे प्राणी ॥ सुर कहे जूठी नही वात ए प्रमाणी ॥ १ ॥ क्षणेक जइनें आवियो रे, कहे सुणो चोथे दिन रे तेह ॥ मलशे कही देव, गयो गगनें सनेह ॥२॥ मुज आदें तापस सहु रे, पारणा दिनथी आज रे जाणो ॥ वाट जोतां चोथे दिनें, नाग्य थी पीगल्यो ॥ ३ ॥ शक्ति होय जो तुम्हमां रे, तो करो ए उपकार रे स्वामी ॥ संत करे उपकार, परनें पामी ॥ ४ ॥ हरिवीरनां मुखथी सुणी रे, व्याघ्र चरित्र विचित्र रे बोले ॥ करशुं तुमचुं काम अमें, धर्मथी अमोलें ॥ ॥५॥ पण तुमें सर्वज्ञ नांखायो रे, धर्म करो अंगीकार रे रूडो ॥ तो तिरिय णुं वेन्नी, काढशुं ए कूडो ॥ ६ ॥ ते कहे काम अमारडुं रे, करशो तव सुर वयणथी ए जाणुं ॥ तत्त्व जाण गुरु, सत्य ए वखाणुं ॥ ७ ॥ लावो वन्हि कुमर कहे रे, चली फल प्रमुख अनेक ते मगावे ॥ ते पण सर्व लावे, चि त्तशुं सजावें ॥ ८ ॥ आमंबरें ए मानशे रे, एम चिंतवी वन्हिकुंम कर्यो तेणें ॥ स्नान मुद्रा ध्यान, आसनादिक जेणें ॥ ९ ॥ वाघ पासें वेसाडीनें रे, मंत्र उच्चरी करी होम हाथें करशे ॥ फूंक दीये जूठ, काम केवुं करशे ॥१०॥ मंत्रोयथा ॥ ॐ नमोऽर्हन्भ्यः ह्रींसर्वसंपद्वशीकरेन्भ्यः ह्रींनमः सर्वसिद्धेन्भ्यः सि

ध्यानंतचतुष्टयेन्यः ॐनमः आचार्येन्यः पंचाचारधरेन्यः ॐ नमः उपाध्यायेन्यः सर्वविघ्नपापहारिन्यः ॐ नमः सर्वसाधुन्यः सर्वदुष्टगणोच्चाटनेन्यः सर्वा नोद्यान् साधय साधय सर्वविघ्नान् स्फुटय स्फुटय सर्वदुष्टानुच्चाटयोच्चाटय ह्रूँ फुट् स्वाहा ॥ ढाल पूर्वली ॥ रेखणी दीधी उरथी रे, इच्छित रूप पा पे तेह मूके हाथें ॥ लघुलाघवी कला, करी व्याघ्र माथे ॥ ११ ॥ तास प्र नावें नर हूउं रे, कुलपतिनें नमे तेह मोहें माता ॥ स्तवना करे कुमर केरी, तुंही मात भ्राता ॥ १२ ॥ कुलपति आलिंगन करी रे, कहे मुज हो नमस्का र रे नाई ॥ हारो मानव नव ते, तें दीधो ए आई ॥ १३ ॥ पूछे कुमर ता पस भली रे, कुलपतिनें वृत्तांत तव नाखे ॥ कन्याघरनें अर्थें भमुं, गाम नगर लाखें ॥ १४ ॥ पर्यंक साथें एकदा, पर्वतशिर पहयो ताम निज देखुं ॥ व्याघ्ररूपें तव, डुःखनुं न लेखुं ॥ १५ ॥ शिला उपर ध्यानें रह्या रे, जै न मुनि एक देव तस आगें ॥ चार देवीशुं परिवस्यो तिहां, साधुजीनें रा गें ॥ १६ ॥ गीत वाजित्र नाटक करे रे, विश्वनें नवणानंद रे थाये ॥ में चिंत्युं मुज अपराध कोइ आयें ॥ १७ ॥ ए मुनियें मुज नाखीयो रे, प्रण म्यो डुःखथी ताम हुं रोतो ॥ निज नाषायें बोलुं एम, आडुं अवलुं लोतो ॥ १८ ॥ स्यो अपराध स्वामी कहो रे, मुज कस्यो वाघ हवे मुजकृपा की जें ॥ खमी अपराध माहारुं, मानवपणुं दीजें ॥ १९ ॥ कल्पना पण हुं करुं नहीं रे, मुनि कहे मनमां अंश रे जाणो ॥ पण सुरवर कस्युं कांइ रो षथी नराणो ॥ २० ॥ नाटक पूरुं जब कस्युं रे, में मुनि पूछया ताम रे स्वामी ॥ कोण ए देव कोप्यो, केम मुजमां खामी ॥ २१ ॥ मुनि कहे सां नल ते कथा रे, बीजे खंमें एकत्रीशमी ए ढाल ॥ पद्मविजय कहे, सुणतां मंगलमाल ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधरमां हुं वडो, रमणी तजी वली ऋद्धि ॥ प्रव्रज्या में पडिव जी, पढयो आगम परसिद्ध ॥ १ ॥ एकाकी आणा लही, विचरुं वारु री ति ॥ प्रतिबोधुं नव्य प्राणीनें, तप तपतो धरी प्रीति ॥ २ ॥ गगनें जातां गिरिशिरें, एक दिन दीठुं एम ॥ सामजनें सिंह मारतो, न शक्यो देखी नेम ॥ ३ ॥ अंतरथी हुं कतस्यो, तप परनावें ताम ॥ सिंह नाठो शंका धरी, करि उपकारने काम ॥ ४ ॥ पाप सर्व पच्चखावीयां, दीधा नवपद

सार ॥ सर्व खमावे सत्त्वनें, पामी गुरु उपगार ॥ ५ ॥ शुन ध्यानें मरी सो हर्मे,मणिचूड सुर नाम ॥ पंच परमेष्टि प्रनावथी, उत्तम गुण अनिराम॥६॥

॥ ढाल ॥ बत्रीशमी ॥ मोरा साहेब हो श्रीशीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ तेह देवता हो चिंते उहीनाण के,पूरव पुण्य में घुं कखुं ॥ तव जा एयो हो महारो उपकारके, बीजा सर्व कामें सखुं ॥ १ ॥ बहु नक्तें हो प्रणम्यो मुज पाय के, मुज वृत्तांत संनलावीयुं ॥ एहवे तुज हो पर्यकनी गय के ॥ देखी क्रोधमां आवीयो ॥ २ ॥ आशातना हो मुज उपर देखि के, देइ शराप डुःखी कखो ॥ एम सांनली हो मुनिवरनी वाणी के, ते सुर आगल संचखो ॥ ३ ॥ आंसु जरतो हो कहे दीन वचन्न के, मूको स राप करो रूपा ॥ कहे निर्झर हो राज्यादिक गंमी कें, रे मूढ तुं उे गतत्र पा ॥ ४ ॥ मुनि केरी हो आशातना कीध के, फोकट तप तुं आचरे ॥ जा निज पद हो पर्यकें वेश के, मुज परनावें संचरे ॥ ५ ॥ एक मासें हो धर्मतत्त्वनो जाण के, मूलरूपें करशे तनें ॥ ते पासें हो समजी धर्मत त्त्व के, कन्या तुज देजे मनें ॥ ६ ॥ हुं आव्यो हो तिहांथी एणें गामके, वात आगल जाणो सवे ॥ ते सांनली हो तापस नें कुमार के, विस्मयथी गुण संस्तवे ॥ ७ ॥ करे उत्सव हो मंगलनां गीत के, गाये तापसणी घ णुं॥ कहे कुमरनें हो समजावो धर्म के, जेम भ्रम जाये मिथ्यापणुं ॥८॥ विस्तारें हो कुमरें कह्यो धर्म के, साधु श्रावक बहु नेदथी ॥ बूझ्या ताप स हो समकेतशुं शुद्ध के, अणुव्रत लिये गतखेदथी ॥ ए ॥ कहे कुलप ति हो देवें कह्यो मुऊ के, कन्या नावि वर तुम्हो ॥ तेणें परणो हो करी वयण प्रमाण के, जेम राजी थाउं अम्हो ॥ १० ॥ नवि वोल्या हो सुणी तेह कुमार के, ताम कुसुम वृष्टि थई॥ देखी तापस हो विस्मय ल ह्या चित्त के, तव गिरिचूड तिहां सुरवई ॥ ११ ॥ थई परगट हो कहे सांनलो वात के, में ते ज्ञानी पूछ्या जइ ॥ नर थाशे हो केणी परें कहो स्वामी के, तत्त्वज्ञानी कहे शुनमई ॥ १२ ॥ त त्त्वज्ञानी हो संगें नर थाय के, में पूछ्युं केम जाणीयें ॥ ज्ञानी बोल्या हो तुज सुथर रूप के, जीतशे एह अहिनाणीयें ॥ १३ ॥ तव हुं नम्यो हो राजधानी अनेक के, कोलरूपें पण को नहीं ॥ मुज जीत्यो हो तव हेमपुर जाय के, चंनजंज वाड करुं तहीं ॥ १४ ॥

नृपना सुत हो शत नाठा जाय के, विण शस्त्रें एणें जीतियो ॥ गजरूपें हो हरि लाव्यो ताम के, कही एम वातो अतीतियो ॥ १५ ॥ उदारता हो शौर्यता उपकार के, धर्म प्रमुख गुण एहवो ॥ नहीं बीजो हो जगमां अ द्भुत के, अनुजवीयो में जेहवो ॥ १६ ॥ कौतुकें करी हो रही छानो अ त्र के, सवि जोतुं नयणें करी॥ वली सांनल्यो हो अरिहंतनो धर्म के, न वसायरमां ए तरी ॥ १७ ॥ पूरवजव हो संस्कारने जोग के, बूज्यो ते हु में सांनलो ॥ धन्यपुरमां हो धनवंत धन्यनाम के, धनदेव आगल सामलो ॥ १८॥ प्रिया वसुमती हो श्रावक एक मित्र के. तस संगें वली गुरु मल्या ॥ समकित मूल हो अंगी कर्यो धर्म के, गुरु वयणां तेणें सांनल्यां ॥ १९॥ एक दिन तस हो नारीनें रोग के, रूपनो ते उपशम नणी ॥ तेडया वैद्यनें हो कथा बहु उपचार के. पण नवि गुण कीधो सुणी ॥ २० ॥ घणुं रागें हो मंत्रवादी तेडि के, ते पण सवि निःफल थया ॥ गाढस्नेहें हो घहेला परें तेह के, पग पग पूछे पति तथा ॥ २१ ॥ जटी कापडी हो प्रयोगना जाण के, जे साजी करे मुज प्रिया ॥ तेहनें आपुं हो लक्ष सुणी एम नात के, ए क जटी कहे करुं क्रिया ॥ २२ ॥ क्षणमां करुं हो नीरोगी नारि के. पण तेहुं मुखें जे कहुं ॥ मानी तेणें हो विनयें करी वाणि के, बोल्युं ते हुं नवि जहुं ॥ २३ ॥ जोई नारीनें हो तेणें कीध उपाय के, रोग गयो अनुक्रमें वही ॥ तेह देखी हो विस्मय लह्यो चित्त के, साचो ते एहज सही ॥ ॥ २४ ॥ करी आग्रह हो राख्यो एक मास के, तेणें जैनधर्म शिथिल क र्यो ॥ जेणें पाम्यो हो व्यंतर जव एह के, शेठ ते हुं दुर्गति धर्यो ॥ २५ ॥ तापस साथें हो समकित लहुं आज के, धर्मतणी वाणी सुणी ॥ गुरु माथे हो फूलनी करी वृष्टि के, ए सरिखो जग नहीं गुणी ॥ २६ ॥ बीजे खंमें हो बत्रीशमी ढाल के, पद्मविजय एणि परें कही ॥ सुणो श्रोता हो चित्त राखी ठाम के, निद्रा विकथा सवि लही ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ९४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव कहे यो एहनें, यौवन कन्या योग ॥ सुरवरें नांख्यो ए सखर, सु धो ए संयोग ॥ १ ॥ उंचवयी उपगारीनें,परणावो धरी प्रेम ॥ थाउं कृता रथ एणी परें, जाय फिकर वली जेम ॥ २ ॥ कुलपतियें अंगीकर्युं,कुमरनें प्रार्थना कीध ॥ सामग्री सुरवर करे, प्रत्युपकार प्रसिद्ध ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ झुमखडानी देशी ॥

॥ कनक मंमप तिहां सुर रचे, रयणमयी रचे थंन ॥ सोनागी सांन लो ॥ तोरण मुक्तामालनां, देखी होय अचंन ॥ सो० ॥ १ ॥ देवी तापस णी मली, गावे मंगल गीत ॥ सो० ॥ डुंडुनिनाद वजावता,कुसुममाल सु रनीत ॥ सो० ॥ २ ॥ बिरुदावली सुर बोलता, विद्याधर संजुत्त ॥ सो० ॥ उत्सव सुर तिहां बहु करे, उपकारी आकूत ॥ सो०॥ ३ ॥ कन्या तापस सुं दरी, दिव्यनूषण वस्त्रधार ॥ सो० ॥ तापसें परणावी तदा, कुमरें परणी नारि ॥ सो० ॥ ४ ॥ कुमरनें आपे देवता, वस्त्रानरण अनेक ॥ सो० ॥ ग गनगामि दीये ढोलियो, कुलपति धरिय विवेक ॥ सो०॥ ५ ॥ ते वन रमणी कमां रचे, गिरिचूड देव विशाल ॥ सो० ॥ सतनूमि शोनामयी, महोल ति हां तनकाल ॥सो०॥६॥ सर्गविमान ज्युं शोनतो,तेह कुमरने काज ॥सो०॥ खादिम स्वादिम पूरीयो, सर्वांगें सुखसाज ॥ सो० ॥ ७ ॥ बहु सुरना परि वारशुं,सेवा करे सुप्रकार ॥सो०॥ अप्सरा सरखी नारिशुं,नोगवे नोग कुमा र ॥ सो० ॥ ८ ॥ तीर्थ अनेकनें वांदता, पल्यंकनें बलें तेह ॥ सो० ॥ कोइ दिन नारी विना जाये, कोइ दिन नारीशुं तेह ॥ सो० ॥ ए ॥ नदी वनमां क्रीडा करे, वली तापसनें कुमार ॥ सो० ॥ जैन धर्म विधि शीखवे, सम्यक् नेद प्रकार ॥ सो० ॥ १० ॥ उपदेश चारित्रनो दीये, ज्ञानतणुं फल सार ॥ सो० ॥ उचित जाण्या ते अनुक्रमें, जाणे क्रिया व्यवहार ॥ सो०॥११॥ दक्ष थयां जिनशासनें, चारित्र इग्रावंत ॥ सो० ॥ नववैराग्यथी ते रहे,नि त्य वैराग महंत ॥ सो० ॥ १२ ॥ बीजे खंमें ए कही, तेत्रीशमी वर ढाल ॥ सो० ॥ श्रीजयानंद रासें थयो, बीजो खंम रसाल ॥ सो० ॥ १३ ॥ स त्यविजय पन्यासना, कपूरविजय वर शिष्य ॥ सो० ॥ खिमाविजय वर तेह ना, चडती जास जगीश ॥ सो० ॥ १४ ॥ जिनविजयो जगमां जयो, तेह ना शिष्य अनेक ॥ सो० ॥ उत्तमविजय तेहमां थया, पंमित वारू विवेक ॥ सो० ॥ १५ ॥ तस पदपंकज अलि समो, पद्मविजय जसु नाम ॥सो०॥ तास कराबी जांणीयो, खंम बीजो अनिराम ॥ सो० ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमत्तपगच्छीय पंमितप्रवर पंमित श्री उत्तमविजयजीगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानंदकेवलिच रित्रे सहस्रायुधादि राजर्षिचतुष्टयचरित्रेण चारित्रधर्मवर्णन श्राद्धधर्मक

लितचक्रायुधचरित्रवर्णन प्रथमव्रतपालनमहात्म्यसूचकन्नीमलोमदृष्टांत श्रीजयानंदप्रतिबोधादिवर्णन हंसकाकनिदर्शनेन श्रीमहानंदराजदृष्टांतेन च द्वितीयव्रतपालनफलदर्शन श्रीजयानंदकुमारकलाग्रहण मणिमंजरी प्रथमपत्नीपरिणयन श्रीजयानंदकुमारस्य महासेनपल्लीशविजयगिरिमालिनीदेवीप्रतिबोध तदर्पितमहौपधिद्वयलाज हेमपुरपुरागमन सौजाग्यमंजरीद्वितीयपत्नीपरिणयन रेलणीदेवीप्रतिबोधतदर्पितकामितरूपकारी महौपधिप्राप्ति हेमप्रजनृपादि प्रतिबोधलाजादि श्रीजयानंदकुमारस्य देशांतरचर्यायां हेमपुरपुरोद्यानगतडुर्जयकोलविजयतापसाश्रमगमन सुवर्णजटकुलपत्यादि तापसपंचसतीसहित गिरिचूडयक्षप्रतिबोध कुलपतिपुत्रीतापससुंदरी तृतीयपत्नीपरिणयनकुलपतिदत्तपल्यंकविद्यान्वितगगनगामिपल्यंकबलेन नानातीर्थेनमस्करणादिवर्णनोनामा द्वितीयः खंडः समाप्तः ॥ प्रथमखंडे गाथा ॥ ४४३ ॥ द्वितीयखंडे गाथा ॥ ९६२ ॥ सर्वमली गाथा ॥१४०५॥ तथा प्रथमखंडे उक्त श्लोक ॥१३॥ अने द्वितीयखंडे उक्त श्लोक ॥ १९॥ सर्व श्लोक ॥ ३२ ॥ तथा सर्वईयो एक छे. इति द्वितीयखंडः समाप्तः ॥ २ ॥

॥ श्रीशांतीश्वरोजयति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीतृतीयखंड प्रारंभः॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन नायक समरीयें, वर्द्धमान विख्यात ॥ देवारयनें द्रव्यगुण, सर्वे जावा विख्यात ॥ १ ॥ बीजो खंड बहु जातिशुं, विगतें वरणव्यो एम ॥ त्रीजो खंड कहुं तुरत, सांजलो श्रोता प्रेम ॥ २ ॥ उंघे ने अति आलसु, शिशु रमवे करे शान ॥ थाकुंनें अवलुं जूवे, वक्ता शुं करे व्याख्यान ॥३॥ नयनें नयन मेलावीनें, वदन विकस्वरवंत ॥ वाणी सुणे वक्ता तणी, ते दीपे हर्ष अत्यंत ॥ ४ ॥ तेमाटे निजमति तजी, सांजलो चतुर सुजाण ॥ श्रीजयानंदना रासमां, आगल कहुं आख्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ जीरे माहारे जाग्यो कुमर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे माहारे एकदिन सातमी जूमि, वेग रयण सिंहासने जीरेजी॥

॥ जी० ॥ गगनें निरखे कुमार,आवतो देखे निजकनें जीरेजी ॥ १ ॥ जी०
परिव्राजक सुरूप, यौवनवय आव्यो तिहां जीरेजी ॥ जी० ॥ देइ आशी
वईंव, कुमर कहे रहो गे किहां जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ कोण तुमें सेहेत
आव्या ते कारण कहो जीरेजी ॥ जी० ॥ कीजें ते तुम काम, थावं कृत
रथ अमें अहो जीरेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जाणी न करे काम, आवे कर्त
दाता नणी जीरेजी ॥ जी० ॥ तेह कृतारथ जाण, आश पूरे याचक
णी जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ अवलुं मुख करी जेह, याचक देखीनें रह
जीरेजी ॥ जी० ॥ डुम गिरि समुइ न नार, ते धरतीनें नारे कह्या जी
जी ॥ ५ ॥ यतः ॥ दीयतां कथमनीप्सितमेषां, दीयतां डुतमयाचित मेव
तं धिगस्तुकलयन्नपि वांबा, मर्थिवागवसरं सहते यः ॥ १ ॥ ढाल पूर्वली
॥ जी० ॥ कुमर चिंतवे एम, केम बोल्या विण जाणीयें जीरेजी ॥ जी०
परिव्राजक कहे ताम, तुं शूरवीर कुलखाणीयें जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥
ज असाध्य न कांय, परउपकारी तुं वडो जीरेजी ॥ जी० ॥ तुज सम
यर न कोय, तुं जगमां जेम केवडो जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ सांजल मा
री वात, गंगातटें मुज गुरु रहे जीरेजी ॥ जी० ॥ नइदत्त अनिधान,
आम्नाय बहु लहे जीरेजी ॥ ८ ॥ जी० ॥ हुं गंगदत्त तस शिष्य,औषधि
कल्प गुरु दीये जीरेजी ॥ जी० ॥ मलयकूटें बहु तेह, उलखुं सघली बे
ये जीरेजी ॥ ए ॥ जी० ॥ जाणुं सम्यक् ताम, साधुविधिथी ए यदा जी
जी ॥ जी० ॥ जई तिहां बहु वार, साधवा मांमी में तदा जीरेजी ॥ १० ॥
॥ जी० ॥ मलयमाल क्षेत्रपाल, ए पर्वतनो अधिपति जीरेजी ॥ जी० ॥
बीवरावे मुज तेह, करे उपसर्ग वली अति जीरेजी ॥ ११ ॥ जी० ॥ पाद ले
गुरु दीध, तेह आम्नायथी अंबरें जीरेजी ॥ जी० ॥ योजन एक उतपात
जाउं हुं ए शक्तिवरें जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ आव्यो इण वन मांहि, दीठुं
धाम कनकतणुं जीरेजी ॥ जी० ॥ पूठी तापसनें वात, उत्तर सुणी हरख्य
घणुं जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोकोत्तर तुज वात, सुर पण तुज नवि ज
य करे जीरेजी ॥ जी० ॥ जाचवा तुमची पास, सार्थसिद्धि तुम आशरें जी
रेजी ॥ १४ ॥ जी० ॥ योग्यनें याचना जेह, तेहमां लाज आवे नही जी
रेजी ॥ जी० ॥ जो समरथ गे ताम, उत्तर साधक हो वही जीरेजी ॥
॥ १५ ॥ जी० ॥ कुंअर बोल्या ताम, एहमां शुं नारे अबे जीरेजी ॥ जी० ॥

एम जीती करुं काम, तेहथी सहु हलका पडे जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ परिव्राजक कहे ताम, ए सवि तुममां संजवे जीरेजी ॥जी०॥ पण शो यो जन दूर, पर्वत इहांथी होय जवे जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ बारशें मांमवो मात्र, पूरो होय त्रयेंणे दिनें जीरेजी ॥ जी० ॥ जो निरविघ्नें था य, चौदशने दिन सिद्ध बने जीरेजी ॥ १८ ॥ जी०॥ यदि आगम ते आ ज, सह्य थाउं विद्याएं चालीयें जीरेजी ॥ जी० ॥ खंधें वेसाडी तुज, जा तां त्रण दिन चालीयें जीरेजी ॥ १९ ॥ जी० ॥ हसीनें कहे कुमार, स्वार्थ साधो तुमें जाउं सुखें जीरेजी ॥ जी० ॥ बारशें आवशुं प्रनात,निज शकें जाणो सुखें जीरेजी ॥ २० ॥ जी० ॥ म धरो संदेह लगार, वयण सयण नां नवि चले जीरेजी ॥ जी० ॥ अचला मेरुदृष्टांत, सांनली तेह हरखज धरे जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ जणवी मलया गाम,परिव्राजक थानक गयो जीरेजी ॥ जी० ॥ नारिनें कहे कुमार, पर उपकार अवसर थयो जीरेजी ॥ २२ ॥ जी० ॥ दिवस थशे मुज त्रण, कार्य करी आवुं खरो जीरेजी ॥ जी०॥ पुण्य अंश थशे तुज,तातनो विनय तुमें करो जीरेजी ॥२३॥जी०॥ एकादशीनी रात, कुमर पल्यंकें आवीयो जीरेजी ॥जी०॥ पल्यंक गोपवी त ब, साधकनें मल्यो नावीयो जीरेजी ॥ २४ ॥ जी० ॥ त्रीजें खंमें एह,प हेली ढाल सोहामणी जीरेजी ॥ जी० ॥ पद्मविजय कहे वात, आगल प णी रलियामणी जीरेजी ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥३०॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर ते साधकनें कहे, सुखमां विद्या साध ॥ तेणें पण मांमी ततक्ष णें, विधियें करी विण वाध ॥ १ ॥ श्रीजय सायुध अति सुनट, विघन करे विसराल ॥ पुरवदिशि निशि पेखतो, धूम बहु धूंधाल ॥ २ ॥ अंचित्त दिशि मुख अति थयुं, देवीयें औषधि दीध ॥ ते संजारे ततक्षणें, नमस्कार वली निद्ध ॥ ३ विलय थयो वारु परें, अगनि देखे आप ॥ अट्टाट्टहास्य नीपण अति, ततक्षण आपे ताप ॥ ४ ॥ तोपण क्षोन्यो ते नहीं, धीरज हृदयें धार ॥ अंबर वाणी एहवी, सांनले अतिहिं असार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वन्यो रे कुंअरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥

॥ कहे तो पहेलां साधक नखुं, के उत्तर साधक एह रे कुमार ॥ तव त्र टकी श्रीजय बोलीयो,खा पछर एह लगेह रे सुरिंद ॥ १ ॥ श्रीजय देवशुं

जूजतो ॥ ए आंकणी ॥ नहीं ताहरे वश अमें दोष छुं, केम केशरीनें मृग खाय रे सुरिंद ॥ अथवा सिंहें मृग राखियो, तेह साहमुं नवि जोवाय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २ ॥ जीतुं हुं शक्र समाननें, तो ताहरी केही वात रे सुरिंद ॥ फरि देव बोल्यो आकाशमां, तुं मानव कीटक मात रे कुमार ॥ श्री०॥ ॥ ३ ॥ कोण मूरख कोइ माटें मरे, तुं नवि जाणे कांय बाल रे कुमार ॥ केम सुरनें जीते मानवी, ए जाणे बाल गोपाल रे कुमार ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जा दूरें तुं तुजनें नही हणुं, तुं निरपराधी जेण रे कुमार ॥ तुं रक्षक वते पण मारशुं, साधक सापराधी तेण रे कुमार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ मुज पर्वत औषधि इछतो, विद्या साधे छे एह रे कुमार ॥ मुज अर्चादिक न कर्युं एणें, तेणें मारीश निःसंदेह रे कुमार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तव बोले कुमर हसी करी, शुं अहत्य रही करे वात रे सुरिंद ॥ जो वीरपणुं चित्तमां धरे, तो परगट था साक्षात रे सुरिंद ॥ श्री०॥ ७ ॥ एम तर्जित अमर कोपें करी, थयो कोलरूपें परगट्ट रे सुरिंद ॥ पादाहत कंपित गिरि, साहामो आव्यो रण रट्ट रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ८ ॥ देवीदीधी औषधि बलें, कुमरें कर्युं सूअ ररूप रे सुरिंद ॥ क्रोधें करी युद्ध बेहु करे, महाडंबर रौद्र सरूप रे सुरिंद॥ ॥ श्री० ॥ ९ ॥ घोर घुघुर गरजे घणुं, तेणें गिरिगुफा करती गाज रे सुरिंद ॥ मांहो मांहे ते विदारता, तेम नख कर्कश अति साज रे सुरिंद ॥श्री०॥ ॥ १० ॥ महाकायनें महापराक्रमी, स्पर्द्धावंत बेहु बलगंत रे सुरिंद ॥ पर्वत धरनी कंपावता, वज्रे वज्री देव पडंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ११ ॥ नी पण रण एणीपरें बहु कर्युं, देवता सूअरनी दाढ रे सुरिंद ॥ कुंअर कोलें लागी तिहां, जेहनो हतो अतिशय गाढ रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १२ ॥ करी घुंघारव नाशी गयो, कुंवर कोलयो सुरकोल रे सुरिंद ॥ करी हस्तीनुं रूप प्रगट थयो, उछालतो सूंढ कल्लोल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १३ ॥ तव हस्तिरूप कुंअर करी. करे युद्ध चलावे भूमि रे सुरिंद ॥ गिरिशृंग पडे गर्जारवें, मानुं फूटशे हमणां व्योम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १४ ॥ दंतनांगा सूंढ पीडा थइ, नाठा सुर कुंजिर ताम रे ॥ सुरिंद ॥ तिम सिंहरूपें बेहु जूजता, सुरकेशरी हार्यो ते ठाम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १५ ॥ एम सर्व युद्ध सुर हारियो, तव क्राध चढ्यो अत्यंत रे सुरिंद ॥ जीवण रूप करे हवे, अतिरोइ बिनत्स दे खंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १६ ॥ ताड वृक्ष स्थूल जंघा घनी, गिरिकंदरा वद

र वखाण रे सुरिंद ॥ एपु लांबी शिला सम हृदय ने, लांबी रुश कोटि प्र
माण रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १८ ॥ वडशाखा सम भुजा जेहनी, स्थूल रज्जु
समी नसा जाल रे सुरिंद ॥ नीसातरा सम जस अंगुली, अंजन सम वर्ण
काल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ १८ ॥ कीलक सम दंतावली, अगनि स्थानक स
म नयन रे सुरिंद ॥ स्थूलनें लघु चिपट नासिका, कटाह समान वदन्न रे
सुरिंद ॥ श्री० ॥ ॥ १९ ॥ शिर त्रणकोण मूढक समुं, स्थूल कावरा जेहना
केश रे सुरिंद ॥ बिल कान गाल वेसी गया, नादें गाजे शैलेश रे सुरिंद ॥
॥ श्री० ॥ २० ॥ डमरुक वजावे करथकी, स्फुटाटोप करे वली नाग रे सुरिं
द ॥ मोघर करवाल धर्यो करें, एम चार हाथनो लाग रे सुरिंद ॥श्री०॥२१॥
भुजास्फोट अट्टाट्ट हास्यें हवे, सांभल रे हुं क्षेत्रपाल रे सुरिंद ॥ मलयमा
ल नामें वडो, करुं वैरीनो हुं काल रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २२ ॥ बुलथुं में
युद्ध कर्युं जिके, ते युद्धक्रीडानें काज रे सुरिंद ॥ मत जाणजे हुं जीत्यो
अछुं, सुर न जीताये कोइ व्याज रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २३ ॥ हजी कांइ ग
युं नथी ताहरुं, मरे परनें अर्थे केम रे सुरिंद ॥ मुज बालनें मारतां ज
स नहीं, जीवतो मूक्यो जा खेम रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २४ ॥ कहे कुमर ता
हरे क्रीडा थइ, माहरे थयो परउपकार रे सुरिंद ॥ सुर असुरपनि पण न
वि गणुं, मुज आगल तुज स्यो चार रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २५ ॥ जीतायें
तेजें न वयथकी, नगशिर दीये पद रविबाल रे सुरिंद ॥ धीर मरण इछे च
पकारथो,मत मरणनी बीहीक देखाड रे सुरिंद ॥ २६ ॥ यतः ॥ हस्तिस्थू
लतमः सचांकुशवशः किं हस्तिमात्रांकुशो, वज्रेण।विहताः पतंति गिरयः किं
वज्रमात्रोगिरिः॥ दीपे प्रज्वलिते प्रणश्यति तमः किं दीपमात्रं तम, स्तेजो
यस्य विराजते स बलवान्स्थूलेषु कः प्रत्ययः ॥१॥ ढाल पूर्वली ॥ जय मर
ण जाणशुं युद्ध करी,फरि युद्ध करो जो होंश होय रे सुरिंद ॥ एम सांभ
ल क्रोध लही करी, धायो अति मोघर लइ सोय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २७ ॥
कुमरें कर्युं रूप ते सारिखुं, संभारी तव नवकार रे सुरिंद ॥ लेई खड्ग धायो
सुर उपरें, दोय घा वंचावे तेवार रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ २८ ॥ एम खड्गयु
द्ध बहुविध करी, दुर्जय लाग्यो ए कुमार रे सुरिंद ॥ करी नागनें करडे कु
मारनें, एक हाथें धरी तरवार रे सुरिंद ॥ श्री०॥ २९ ॥ एकहाथें मोघर ले
ई करी, एक हाथें वजावे तूर रे सुरिंद ॥ सर्वशक्ति जूजे चत्र करे, तव श्री

जय पण अतिशूर रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३० ॥ विघ्नहर औषधिना वलय की, वली धर्म पराक्रम तास रे सुरिंद ॥ करवालें मुग्दरुक जेदियुं, खंमोखंम कस्या नागपाश रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ खड्गनें मोघर पण चूरीयां, तव वृक्ष उपाडे देव रे सुरिंद ॥ कुमरें पण वृक्षें चूरियो, पुल्यें करी तत त तखेव रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ एम नव नव वृक्षें जूफीया, वली स्थूल शिला सुरें लीध रे सुरिंद ॥ कुमरें पण कीध तेणी परें, देवनें पण विस्मय दीध रे सुरिंद श्री० ॥ ३३ ॥ हवे बल युद्धथी जूफता, वंध जुज शिर स्फोट करंत रे सुरिंद ॥ पदथी धरती कंपावता, कुर्कट परें उपरें पडंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ करे मुष्टिप्रहार वेहु जणा, पडे उपडे पण न जणाय रे सुरिंद ॥ आलोटे पृथिवी ऊपरें, ऊपर हेठल वली थाय रे सुरिंद ॥ ॥ श्री० ॥ ३५ ॥ युद्धें पण मले विठडे यदा, तव राग परें परखाय रे सुरिंद ॥ सिंहनादनें मुष्टिप्रहार जे, स्कंधाघात जुजास्फोट कराय रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३६ ॥ तस नादें विश्व कंपावता, गिरि गाजे पृथिवी चलंत रे सुरिंद ॥ दिश बहेरी नदीयो विसंस्थुला, सायरनी वेली वधंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३७ ॥ पडे वृक्षथी फल त्रूटी करी, नगशृंगथी तेम शिला पात रे सुरिंद ॥ प्रेत नाचेनें वली नासता, प्रीतिनें वली जय आपात रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ३८ ॥ मुष्ट्यादिकें श्रीजयानंदजी, करी श्रांत लीलायें तास रे सुरिंद ॥ उलाली दूर नाखी दियो, पड्यो शिला ऊपर दुःखराशि रे सुरिंद ॥ ॥ श्री० ॥ ३९ ॥ घोर शब्दें ने शिला चूरण थई, पीडा थइ तास अत्यंत रे सुरिंद ॥ पण देव माटे खंम नवि थयो, सुर चमक्यो चित्त अनंत रे सुरिंद ॥ श्री० ॥ ४० ॥ तस महिमा पराक्रम देखीनें, माने मुज जीत्यो एण रे सुरिंद ॥ कहे वीर तुं जगमां एक छे, निज रूप प्रगट करी तेण रे सुरिंद ॥श्री०॥४१॥त्रीजे खंमें पूरण थइ, ए त्रीजी ढाल रसाल रे सुरिंद ॥ कहेप अविजय पुल्यें करी,सघले लहे मंगलमाल रे सुरिंद॥श्री०॥४२॥सर्वगाथा॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ नवी जीत्यो मुजने किणे, जीत्यो मुजनें जेण ॥ जग जीत्यो ते जाणमो, तुजनें मानुं तेण ॥ १ ॥ मंत्रधर्म तादृशो मनें, कहे मुज करुणा आण ॥ जिण वलथी तुं जीतीयो, मोहोटोनें माहाराण ॥ २ ॥ जाणी श्रीजयानंदजी, धर्मयक्षी धरे शांत, धरी सहजाकृति धर्मनें, जांखे अति जाग्य

वंत ॥ ३ ॥ वीतराग मुज देव ने,संयमी गुरु सुजाण ॥ अरिहंत नाषित धा रूं, सार धर्म सपराण ॥ ४ ॥ तेणें हुं तुजनें जीतीयो, सुणी धर्म विस्ता र ॥ सुर कहे बूज्यो समो परें, पोहोंचाडयो नवपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मुनिमन सरोवर हंसलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी सांजलो, धर्मदत्त इंण नामें रे ॥ पाछले नव हुं श्रावक हुतो, रुद्धि घणी मुज धामें रे ॥ श्रीजया० ॥ १ ॥ एक दिन दीठो उद्यान मां, मास क्षपण करनार रे ॥ परिव्राजक निष्कलासनी, ध्यान लीन सुविचा र रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ नाम धनेश्वर तेहनुं, चार कोडी धन त्यागी रे ॥ माह री मित्र गृहस्थमां, लोक वंदन आवे रागी रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ में परशंस्यो तेहनें, अहो तप त्यागनें ध्यान रे ॥ श्राद्ध प्रशंसित कारणें, राय प्रमुख दि ये मान रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ एम समकितमां लगाडियो, चोथो में अतिचा र रे ॥ बहु मिथ्यात्व वर्त्ताविउं, दर्शन हाख्यो तिवार रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ थ यो मिथ्यात्वी देवता, समकेतवंत जो होय रे ॥ वैमानिक सुर ऊपजे, नही संदेह ते कोय रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ यतः ॥ सम्मदिठी जीवो, विमाणवज्जं न बंधए आउ ॥ जइ नवि सम्मत्त जढो, अहव न बद्धाउर्ड पुर्वि ॥ १ ॥ ढा ल ॥ बोधि विराधीनें ऊपजे, नीच देवमांहे प्राणी रे ॥ फरी समकित लहे दोहिलुं, बहुनव नमे कहे नाणी रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ धर्म आराध्यो अतिच री, न गयां कुगति तेणें रे ॥ तुजथकी समकित पामीयो, पूर्व संस्कार हतो जेणें रे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ ज्ञानें जाणीनें नांखीयुं, तेणें मुज तुं उपकारी रे ॥ तुंहिज मित्र बांधव गुरु, दे समकित निरधारी रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ योग्य निय म वली आपियें, सांजली तेह कुमार रे ॥ श्रीजय कहे तुं धन्य ने, तुज सफ ल अवतार रे ॥ श्री० ॥ १० ॥ समकित तेहनें आपीयुं, हिंसानो नियम आपे रे ॥ सुर कहे धर्मदायक तुमें, तुक रुण केणीपरें कापे रे ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ वर मागो कांइ मुखथकी, देई पूछुं तुम पाय रे ॥ कुमर कहे कांइ रूप नहीं, तो पण सांजल नाय रे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ साधक पुरुषनें औष धि, आपो वांछित जेह रे ॥ उद्यम श्रम विहुं एहनो, सफल करो तुमें तेह रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ देव कहे देगुं सही, पण नहीं रहे एह पासें रे ॥ ना ग्य विना दरिद्री घरें, रयण निधान न ठाशे रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ में आ णा करी एहनें, औषधि ल्यो मन नावे रे ॥ पंचिन औषधि कल्पमां, गुरु

कीधो सुप्रस्तावें रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥ पण तुं सार औषधि लइ, मुजने कर उपकार रे ॥ गुरु पूजा होये माहरे, कुमर बोल्या तेवार रे ॥ श्री० ॥१६॥ पांच औषधि दीये देवता, श्रीजयकुमरें ते लीधी रे ॥ सुर कहे महिमा सां भलो, एहवी जग परसिद्धि रे ॥ श्री० ॥ १७ ॥ बे आंगुल जाडी वली, लांबी आंगुल चार रे ॥ पीली ते मंत्र जपे थके,सीजे बार हजार रे ॥ ॥ श्री० ॥ १८ ॥ मंत्रश्चायं ॥ ॐ महाभैरवी ह्रां ह्रौं ह्रः श्रियं वितर वि तर स्वाहा ॥ ढाल ॥ रत्न पांचशें आपशें, अर्च्यां दिन दिन एह रे ॥ हवे बीजी पण एहवी, वरणें राती छे जेह रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥ तेहनो महि मा पूज्यायकी, शुं आपे एम नांखे रे ॥ मागयाथी वमणुं दियो तुमें, त्यों त्रिगुणुं एम दाखे रे ॥ श्री० ॥ २० ॥ कहे पण आपे कांइ नही. पण कौतुक एह दीसे रे ॥ पूरव परें एहनी साधना, सुणतां हियडुं हीसे रे ॥ ॥ श्री० ॥ २१ ॥ मंत्रश्चायं ॥ ॐ महावादिनी फ्रॉं फ्रॅं फ्रौं महाश्रियं वद वद स्वाहा॥ ढाल ॥ त्रीजी उजली औषधी, पूरवथी अर्द्ध मानें रे ॥ एह नी साधनां कांइ नथी, पण महिमा सुणो कानें रे ॥ श्री०॥ २२ ॥ स्थावर जंगम विष हणे, रोग सवे मटी जाय रे ॥ घात व्रणादिक एहना, जाये नी र सींचाय रे ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अर्द्ध मानें चोथी एहवी, औषधि वरणें नी ली रे ॥ पूर्वपरें मंत्र साधना, साधे काम एकेली रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥ चेतन अथवा पूतली, मस्तकें औषधि दीधी रे ॥ अतीत अनागत वारता, पूछो कहे सवि सीधी रे ॥ श्री०॥ २५ ॥ मंत्रो यथा ॥ ॐ माहाघंटे चंमे चंमशा लिनि प्रश्नार्थे वद वद कें स्वाहा ॥ ढाल ॥ चोथी ए ज्ञानी समी कहे, हवे पां चमी जेह श्याम रे ॥ दुष्ट कामण मंत्र चूर्ण जे, टाले ए अभिराम रे ॥ ॥ श्री० ॥ २६ ॥ ए विधि महिमा जे नांखीयो, कुमरें धार्यो विलासें रे ॥ क्षेत्रपालशुं आवीया, साधक पुरुषनें पासें रे ॥ श्री० ॥ २७ ॥ त्रीजे खंमें त्रीजी कही, ढाल अधिक उल्लासें रे ॥ पद्मविजय कही पुण्यनी, श्रीजयानं दनें रासें रे ॥ श्री० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ ११० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुर कहे साधक सांभले,ले औषधि मन लाय ॥ ध्यान मूकी धारी करी. जइ जे मनमां नाय ॥ १ ॥ एह कुमर अनुभाव छे, सांभली सुर पू जेय ॥ निर्क्षर कुमर नमी कहे, श्रीजयानंद सुणेय ॥ २ ॥ काम पडे सम

रण करे, पूठी प्रणमी पाय ॥ निज थानक निर्जर गयो, साधक हवे सजा य ॥ ३ ॥ नमि नमिनें मन नावती, औषधि लीये अपार ॥ नाग प्रमा णें नली परें, विधि पूर्वक अवधार ॥ ४ ॥ साधक कुमरनें कहे सुणो, सघ लुं सीधुं काज ॥ तुम पसायथी ततक्षणें, माहारुं ए महाराज ॥ ५ ॥ तु म आणायें जाउं तुरत, निज थानक निरधार ॥ परउपगार प्रमोदथी, करे आणा ते कुमार ॥ ६ ॥ पल्यंक बेशी कुमर पण, आवे अंबर राह ॥ रतन पुरनें ऊपरें, उपवनमांहें अवाह ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राय कहे राणीप्रत्यें ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां जिनचैत्य मनोहरु, देखीनें विचारे ॥ उल्लंघन आशातना, रखे थाय केवारें ॥ हुं वारी एह जिणंदनी, जे नव दुःख वारे ॥ १ ॥ उ तरी पेसे चैत्यमां, विधियें प्रणमंतो ॥ योग्यता जाणी ढोलीयो, किहां यक गोपंतो ॥ हुं वारी० ॥ २ ॥ विधि सामग्री मेलवी, जिनध्यानमां लीनो ॥ त्रण उपवास करी तिहां, मंत्र जापज कीनो ॥ हुं० ॥ ३ ॥ त्रणे मंत्र ते साधीया, प्रभु करननी पासें ॥ जिनवर पूजी नावशुं, आणी हर्ष उल्लासें ॥ हुं० ॥ ४ ॥ पारणुं फलथी करे हवे, आद्य औषधि पासें ॥ पां चशें रत्न ते पामीयो, जेहथी दुःख नासे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ अठाइ महोत्सव ते हनो, करी पुरमां आवे ॥ निर्धन श्रावकनें घरें, नाडुं जे थावे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ आपी तेहनें थिर रहे, मन हर्ष ते आणी ॥ गोशीर्ष चंदननी करे, प्रतिमा गुणखाणी ॥ हुं० ॥ ७ ॥ ते लघुप्रतिमा गुरु कनें, प्रतिष्ठावी थापे ॥ नित्य पूजा करे तेहनी, अति आनंद व्यापे ॥ हुं० ॥ ८ ॥ औषधि प्रतिमा एकठी, झाबडामां मूके ॥ झाबडो गर्भगृहें ठवे, तस विधि नवि चूके ॥ हुं० ॥ ९ ॥ पांचशें रत्न ते नित दीये, पहेली औषधि जेह ॥ अर्थ कामनें धर्म ते, सा धे ससनेह ॥ हुं० ॥ १० ॥ श्राद्ध कुटुंब सेवा करे, कुमरनी नक्के ॥ दान दी ये तेणें वश सहु, अटलक अतिशक्के ॥ हुं० ॥ ११ ॥ बहु परिवार कस्यो ति हां, देतो याचक दान ॥ राज्य पंथें ते करावतो, वेशी गीत गान ॥ हुं० ॥ ॥ १२ ॥ मूल नाम अणजाणते, लोकें दीधुं नाम ॥ श्रीविलास सान्वय प णे, इछित करे काम ॥ हुं० ॥ १३ ॥ तिण नगरीनो राजीयो, रत्नरथ इति नाम ॥ गांनीर्य शौर्य ऐश्वर्यता, बहु त्रिया गाम ॥ हुं० ॥ १४ ॥ विजय या त्रायें जेहनें, अचला चल थाय ॥ रतिमाला गणिका तिहां, रूपें रंभ हराय

॥ हुं० ॥ १५ ॥ तरुण पुरुष मन जींपती,कला चोशठ धाम ॥ चंद्र जीती पद्र नख मिशें, करावे परणाम ॥ हुं० ॥ १६ ॥ राय तणुं चित रीजव्युं, क्रमें पुत्री आवी ॥ पूर्वे पुत्री अनावथी. नृप चित्त अति जावी ॥ हुं० ॥ १७ ॥ जन्ममहोत्सव नूपति करे, लक्षण रूपवंती ॥ रतिरंजादिक नारीनें,लावण्यें जीपंती ॥ हुं० ॥ १८ ॥ स्वजन जमाडी थापतो, रतिसुंदरी नाम ॥ थापे कल्पवेली परें, वधती अनिराम ॥ हुं० ॥ १९ ॥ वय स्पर्द्धायें नित्य वधे, गुण विनयनें रूप ॥ सुंदरता लावण्य वली, दाक्षिण्य अनूप ॥ हुं० ॥ २० ॥ योग्य थइ कला ग्रहणनें, कलाचारय पास ॥ जणवा मूके नूपति, करवा अन्यास ॥ हुं० ॥ २१ ॥ प्रज्ञायें जीते सरसती, जणी थोडा दिनमां ॥ त्रण वर्गना शास्त्रनी, जाण थइ सहु जनमां ॥ हुं० ॥ २२ ॥ पट्दर्शननां रहस्य ते, जाणे रूडी रीतें ॥ जारती बिहुं रूपें थई, मानु आवी प्रीतें ॥ हुं० ॥ २३ ॥ पूरव जव संस्कारथी, वली जैनी जणावे ॥ तेणे जिन शासनमां थई,घणुं ते दृढनावें ॥ हुं० ॥ २४ ॥ सरसती पुस्तक लेई करें, मानुं जोवे एम ॥ एहवी कोय थइ के थशे, एम जाणवा नेम ॥ हुं० ॥ २५ ॥ त्रीजे खंमें चोथी कही, पद्मविजयें ढाल ॥ कुमरी गर्व रहित घणुं, जैनजावें रसाल ॥ ॥ हुं० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वर जोवा वालू परें,रूप देखीनें राय ॥ दिशो दिश मूके दूतनें,जोवा ते पण जाय ॥ १ ॥ अन्य राणीनी ईरषा, जाणी नृप सुजाण ॥ रतिमाला पुर बाहिरें, ठवी आवासनें ठाण ॥ २ ॥ कलास्थैर्यनें कारणें, रतिसुंदरीनें राय ॥ पासें राखे प्रेमशुं, आपे ड्व्य अमाय ॥ ३ ॥ नृप कुलदेवी नामथी, उपवन मांहें अचल ॥ चंडेश्वरी चैत्यमां रहे, नित्य थापे पूजन वल ॥ ४ ॥ उपकारी अणगारजी, चोमासुं चित्त लाय ॥ चोमासी तप आचरी, आवासें कोइ आय ॥ ५ ॥ सजाय ध्यानशुं लीन जे, ते सुणी देवी ताम ॥ गुणरागी रीजी घणुं, आदर करे उद्दाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ पूरवजव तस सांजलोजी, सांजलो जांखीयें तेह ॥ विप्रदेवशर्मा नंदी पूरें जी, नंदिनी पुत्री डुःख रेह ॥ १ ॥ कर्म विचित्रता सांजलो जी ॥ ए आंकणी ॥ परणी सुशर्मा वाडव प्रत्यें जी, दैवथी वरष थयुं एक ॥ मर

ण लहुं तास पति अन्यदा जी, निकट आलयमां आयात ॥ क० ॥ २ ॥ देइ प्रतिबोध श्राविका करी जी, समकित अणुव्रत शील ॥ धर्ममां दृढम ती ते थई जी, साध्वी पासें रहे लील ॥ क० ॥ ३ ॥ तात आणायें तप ते करे जी, षट आवश्यक करे नित्य ॥ देवगुरु नक्तिवंती घणुं जी, अल्प आरंन सुविनीत ॥ क० ॥ ४ ॥ काम घरनां हवे तस पिता जी, नवि करा वे तस पास ॥ धर्ममां विघन जाणी करी जी, करे हवे धर्म उल्लास ॥क०॥ ॥ ५ ॥ एम करतां हवे अन्यदा जी, गुरु प्रमुख तणे रे अनाव ॥ श्रासन मठ परिव्राजिका जी, तास संयोग सनाव ॥ क० ॥ ६ ॥ गोठ तेहसुं बनी तेहनें जी, मधुर वचणें करे वात ॥ समकित मलिन अतिचारथी जी, पा सत्नो परिचय स्यात ॥ क० ॥ ७ ॥ प्रीति थई ते पिता वारतो जी, पण नवी मूके तस संग ॥ एह सनाव बे स्त्री तणो जी, संग सरिखो होये रं ग ॥ क० ॥ ८ ॥ एणे समे सावित्री ब्राह्मणी जी, बे पाडोसण तस पुत्र ॥ यज्ञदत्त अंजना तस प्रिया जी, पण नहीं प्रीति संयुत ॥ क० ॥ ९ ॥ पर नव गयो नंदिनीपिता जी, यज्ञदत्त देखी तस रूप ॥ मोहीयो पण नवि ते मल्लो जी, खेद पामे प्रतिरूप ॥ क० ॥ १० ॥ दिन दिन दूबलो ते हो ये जी, पूछे तस सावित्री माय ॥ लाज मूकी कहुं मातनें जी, मात कहे शानें खेदाय ॥ क० ॥ ११ ॥ तुज मनोरथ सफल करुं जी, हवे एक दिन तस माय ॥ नंदिनीनें एकांतें कहे जी, देइ विश्वास शुन दाय ॥क०॥ ॥ १२ ॥ माहारो पुत्र तुज इछतो जी, यौवनवय स्मर रूप ॥ धन्य तुं तेह अंगीकरी जी, यौवन सफल अनुरूप ॥ क० ॥ १३ ॥ नारीना नोग विण विफल बे जी, रूप लावण्य सोनाग ॥ यौवन विनव निःफल सवे जी, तेणे धर तुज सुत राग ॥ क० ॥ १४ ॥ वृद्धवयें तप करवुं घटे जी, तरुणपणुं फोक मत हार ॥ पति मरणें कह्युं पावने जी, अन्यपति करण वि चार ॥ क० ॥ १५ ॥ यडुक्तं ॥ नष्टे मृते प्रव्रजिते, क्लीबे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्यो विधीयते ॥ १ ॥ ढाल ॥ सांनली तेह कोपें चढी जी, मूढ तुजनें रे धिक्कार ॥ कर्णकटुक ए तुं शुं लवी जी, ड गतिनो अधिकार ॥ क० ॥ १६ ॥ सतीय ते शील लोपे नहीं जी, जो क दी होय प्राणांत ॥ इह परलोक विरुद्ध ते जी, आचरे केम निःभ्रांत ॥ ॥ क० ॥ १७ ॥ तडुक्तं ॥ वरं प्रविष्टं ज्वलितं हुताशनं, नचापि नग्नं सु

जनार्चितं व्रतं ॥ वरंहि मृत्युः शुचिशुद्धकर्मणा, नचापि शीलस्खलितस
जीवितम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ काम शास्त्रोक्त किरिया थकी जी, नरकग
नवि अवराय ॥ शीलखंमनथकी निश्चयें जी, प्राणीयो नरकमां जाय
॥ क० ॥ १० ॥ एम प्रतिहत करी तेहनें जी, मौन करी गइ निजगेह
दोय त्रण वार एम कह्युं थणुं जी, पण विलखी थइ तेह ॥ क० ॥ १ए
कार्य असाध्य निजथी लही जी, तेह परिव्राजिका पास ॥ नंदिनी ता
वश जाणीनें जी, सेवना करती उल्लास ॥ क० ॥ २० ॥ पूछे परिव्राजि
एकदा जी, केम करे सेवना मुऊ ॥ सावित्रीयें सघलुं कह्युं जी, मोहव
साध्य छे तुऊ ॥ क० ॥ २१ ॥ अंगीकरी तास विसर्जती जी, हवे करे त
स उपाय ॥ कूतरी एक तेणें वश करी जी, अशनपानादिक दाय ॥ क०
॥ २२ ॥ पादपतनादि चेष्टा प्रतें जी, शीखवे अतीव अन्यास ॥ नंदि
देखतां एकदा जी, कूतरी तेडी निज पास ॥ क० ॥ २३ ॥ चक्षुमां चूर
नाख्युं यदा जी, तेह करती अश्रुपात ॥ पाय लगाडी शुनीप्रत्यें जी, नं
नी देखी साक्षात ॥ क० ॥ २४ ॥ पूछे परिव्राजिकाने तदा जी, एहशुं कौ
क आज ॥ सा कहे पूर्वनव सांनलो जी, मुजशुं एहनें जे काज ॥ क०
॥ २५ ॥ पृथिवीपुरें दत्त ब्राह्मण वसे जी, तेहनें दीकरी दोय ॥ प्रथमन
अग्निदत्त परणीयो जी, पुत्र त्रण तेहनें होय ॥ क० ॥ २६ ॥ पति मू
थइ परिव्राजिका जी, नगिनी लघु ते पण ताम ॥ अग्निशर्मानें ते परणत
जी, मास पटें विधि थयो वाम ॥ क० ॥ २७ ॥ धव मरी गयो अतिरूप
णीजी, इछतो हरिदत्त तास ॥ सा न इछे हरिदत्तनेंजी, शील खंडुं नही स
स ॥ क० ॥ २८ ॥ धूर्त्त वपदेश तस चित्त वस्योजी, नवि लहे नोग अंतर
य ॥ वृद्धनगिनीनें कहे व्रत दीयोजी, ते कहे नवीय अपाय ॥ क० ॥२ए
अपुत्रिणी नहीं व्रत योग्यनेंजी, तेह वारी पण एम ॥ नवि रही थइ प
व्राजिकाजी, नवि इछे कोयनें तेम ॥ क० ॥ ३० ॥ आयुपूरें थई कूतर
जी, देखी मुज जाति संनारि ॥ पाय पडे ए रोती थकीजी, हुं गइ मनुष्य
नवहार ॥ क० ॥ ३१ ॥ नोग अंतरायनें शोचती जी, तेणें सुणी नंदिनी
वात ॥ प्रार्थना नंग नवि कीजीयेंजी, नोग अंतराय बंधात ॥ क० ॥३२
कपटणी एम कपटें करीजी, नोलवी नंदिनी नार ॥ हीणी संगतिथी ह
णापणुंजी, आवतां नवि करे वार ॥ क० ॥ ३३ ॥ खंम त्रीजे कही पांच

ी, उत्तम एह वर ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमांजी, पद्मविजय सुर
॥ क० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ १०३ ॥

॥ दोहा ॥

। वह्न पालंती ब्राह्मणी,कूतरी थइ किरतार ॥ कष्ट सह्युं ते किहां गयुं,
ोइ अवर प्रकार ॥ १ ॥ मुज पण एम मत नीपजे, नोगवुं तेणें हुं
॥ श्रावी निज आगारमां,लक्षणें जाणे लोग ॥ २ ॥ सावित्री इंगित
परगट एणी परें पेखी, पूरव परें कहे पापिणी, कणिम नही कांइ रेख
॥ नंदिनी कहे नारी प्रतें, सावित्री सुण वाणि ॥ बांधवथी बीहुं बहु,
करो विन्नाण ॥ ४ ॥ सावित्री कहे साचलुं, जाशुं तीरथ जात ॥ शं
ाम नवि संपजे, ए ठलनो अवदात ॥ ५ ॥ नोगव नोग नली परें,
ेंजइ दक्ष ॥ इव्य पितानुं दीधलुं, निज हस्तें करी न्यक्ष ॥ ६ ॥
ही इव्य उपार्जना, पुत्र मूके परदेश ॥ पीयर मोकले वहू प्रतें,
। करती वेश ॥ ७ ॥ नंदिनीनें सेवा निमित्त, जाणी घरें रही
॥ सुव्रता थार्या तिणे समे, थाव्यां अवसर पाम ॥ ८ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ सुण वेहेनी पियुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

ूरव परिचित थार्या आव्यां, नंदिनी मनमां नाव्यां रे ॥ नंदिनी प्र
रव ते पूछे,धर्म वात तुम शुं छे रे ॥ पू० ॥ १ ॥ वात प्रसंगें साशय
, थार्यायें तव दाख्यो रे ॥ नोली रे तुं केम मूलाणी, एतो नरक
ी रे ॥ पू० ॥ २ ॥ अरिहंत मारगमां तुं साचो, कल्पित वात सां
॥ रागी द्वेषी मूढ जे प्राणी, ते कल्पित कहे वाणी रे ॥ पू० ॥३॥
ानुं ज्ञान न एहनें, कपट पाटव छे जेहनें रे ॥ पुत्रथी स्वर्ग लहे
इ, तो उत्तर सुण सोइ रे ॥पू०॥४॥ नागिण कुर्कटीनें वली शूकरी,
ुनीनें वकरी रे ॥ स्वर्ग तेह जशे सहु पहेलां, व्रत तप जप करे व
॥ पू० ॥ ५ ॥ ते कारण जिनमत लही साचो, जेहवो हीरो जा
तेणे शीलें मन म म कर काचो, वीतरागमतें राचो रे ॥ पू० ॥ ६ ॥
रागाद्वा द्वेषाद्वा, मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतं ॥ यस्य तु नैते दो
ानृतकारणं किं स्यात् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ शीलखंमनथी जिनवर ना
ाद एणे नव चाखे रे ॥ परनव नरक निगोदमां जावे, वंचो दोही
रे ॥ पू० ॥ ७ ॥ वली तीर्यंचणी गर्दनी थाये, तुरगी मृगी फुःख

दाय रे ॥ सूअरणी उंदरडो डुःख लहेती, नार घणो तिहां वहेती रे ॥ पू० ॥ ८ ॥ कुरूपीने कडुई वाणी, योनिरोगें अकुलाणी रे ॥ कोढरोग हीनांगनें विकला, निकलानें वली डुकुला रे ॥ पू० ॥ ए ॥ डुष्ट जीवित अल्पायु पामे. पुत्र वियोग सुख वामे रे ॥ कुशील कर्म किमे नवी तूटे, न वनव डुःख नवि त्रूटे रे ॥ पू० ॥ १० ॥ वात सुणी ते नरकथी बीहीनी. साधवी वयणें जीनी रे ॥ स्थिर धर्म शीलें थइ बोले, नावे कोइ तुम तोलें रे ॥ पू० ॥ ११ ॥ डुर्गति पडती मुजनें राखी, जिनवचनामृत चाखी रे ॥ डुष्टबोध विषनो कस्खो नाश, न पडुं हवे कोइ पास रे ॥ पू० ॥ १२ ॥ एणी परें कहीनें प्रणमी पाया, निजघर मांहे आया रे ॥ वली सावित्री तास बोलावे, तेहनें कहे इण रावें रे ॥ पू० ॥ १३ ॥ हवे हुं नीच आचार न सेवुं, मत कहे मुजनें एहवुं रे ॥ जो ए वात कहीश हवे मुजनें, डुःख देवरावीश तुजनें रे ॥ पू० ॥ १४ ॥ नंदिनी त्रातथी बीहीती नासे, गइ निज पुत्रनी पासें रे ॥ अन्यदेशें गयां साधवी विचरी, धर्ममां तत्पर इतरी रे ॥ पू० ॥ १५ ॥ तप करे मुक्तावली रत्नावली, पाखंम संग तजे जाली रे ॥ परपाखंमनो परिचय पामी, समकितमां थइ खामी रे ॥ पू० ॥ १६ ॥ सहस्र वरस श्रावक धर्म पाल्यो, पण नवि कर्मनें गाल्यो रे ॥ मरण लही चंडेश्वरी देवी, थई अल्प ऋद्धि कहेवी रे ॥ पू० ॥ १७ ॥ वैमानिक सुखथी वंचाणी, विराधितनी कमाणी रे ॥ तेणे मुनिवंदन करीनें देवी, निज अवदात कहेवी रे ॥ पू० ॥ १८ ॥ समकित पामी मुनिवर पासें, सेवा करी चउमासें रे ॥ मुनि विचरे संघ साहाय्य करंती, विघन ते सहुनां हरंती रे ॥ पू० ॥ १९ ॥ ढाली ढाल ए त्रीजे खंमें, नांखी रंग अखंमें रे ॥ पद्मविजय कहे उत्तम संगें, उत्तमता होये रंगें रे ॥ पू० ॥ २० ॥२१०॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्रनावा देवी सुणी. रतिसुंदरी अनुरूप ॥ नर्ता मले एम नावती, नंजन चिंता नूप ॥ १ ॥ अरचे देवी आदरें, तुष्टमान थइ तेह ॥ सुपरें नांखे स्फुट परें, सांनलजे ससनेह ॥ २ ॥ नरपति आगल नाचतां, पूतली दोय प्रधान ॥ छतरी थंनथी आवशे, चामर लेई आचान ॥ ३ ॥ वींणवादकनें वींजशे, पूरवनव पति तेह ॥ वासुदेव सम वरणव्यो, इह नव नरता एह ॥ ४ ॥ जागीनें जिनराजनी, पूजा करे प्रणाम ॥ दक्षा पूजे दे

वीने. न सुणे अन्यनुं नाम ॥५॥ दासीयो दूरें करे, पुरुष न आवे पास ॥ पू रवजवपति पामवा, आदरीयो अन्यास ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ एणें अवसर तिहां मूंबनुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन नाटकणी तिहां रे, आवी विजया नाम रे ॥ चतुर नर ॥ निज योग्य बहु परिवारशुं रे लोल ॥ आवी महाराष्ट्र देशथी रे, नृपवर पो लनें ठाम रे ॥ च० ॥ चारीनें नीर मूके तदा रे लोल ॥१॥ नाटकें जींते मुजनें रे, दासी थाउं तास रे ॥ च० ॥ नहीं तो तस दासी करुं रे लोल ॥ एह प्र तिज्ञा माहरी रे, उद्घोषणा करे खास रे ॥ च० ॥ नृप पण पडह वजाव तो रे लोल ॥ २ ॥ पण नवि कोइ परगट थयो रे, नगरमां जीतणहार रे ॥ ॥ च० ॥ राय विषाद लई करी रे लोल ॥ चिंतवे मुज पुरमां नहीं रे, कोई क लानंमार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी ते जाणीनें रे लोल ॥ ३ ॥ तातनो खेद निवारवा रे, कहे जीतुं एह नारी रे ॥ च० ॥ पण नरपरखदमां नही रे लोल ॥ नृप कहे नर दूरें रहे रे, तव सा करे अंगीकार रे ॥ च० ॥ दिव स ठरावी घरें गइ रे लोल ॥ ४ ॥ उक्त दिनें नरपति हवे रे, विजया तेडा वे तह रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी नृप आणथी रे लोल ॥ बेसी प्रवर सुखास नें रे, उपकरण नृत्य लह रे ॥ च० ॥ दासीयो नर दूरें करे रे लोल ॥५॥ बहु परिवारें परवरी रे, पण चित्त चिंतवे एम रे ॥ च० ॥ मुज नाटकने सारखी रे लोल ॥ वीणावादिका कोइ नहीं रे, तेणें करशुं कहो केम रे ॥ च० ॥ श्रीविलास चोहटें रह्या रे लोल ॥ ६ ॥ देखी अचरज पामी नें रे, पूछे कोइकनें वात रे ॥ च० ॥ ते पण सवि मांमी कहे रे लोल ॥ ना टक जोवा कौतुकी रे, पण नरथी न जवात रे ॥ च० ॥ रूप करे तव नारीनुं रे लोल ॥ ७ ॥ मनगमती वीणा तदा रे, मागी लाव्यो कोइ पास रे ॥ च० ॥ तेह पेटकमांहे भली रे लोल ॥ राय सनामां ते गई रे, धर ती मन उल्लास रे ॥ च० ॥ थोडी सनायें नृप उपविशे रे लोल ॥ ८ ॥ कौ तुक जोनारा जिके रे, ते नर राख्या दूर रे ॥ च० ॥ विजयानें नृप आणा करे रे लोल ॥ विजयायें नाटक मांमियुं रे, नाना करणादि पूर रे ॥ च० ॥ गीत वाजित्रशुं मेलवी रे लोल ॥ ९ ॥ रीझवे ते सघली सना रे, वंशनट्टा में नाच रे ॥ च० ॥ असि छुरिकामें तेम वली रे लोल ॥ वंडुलपुंजें सूचा ढवी रे, ऊपर फूलनो ताच रे ॥ च० ॥ नाटक कर्युं तेह ऊपरें रे लोल ॥

॥१०॥ नाटक नाटकें नृप दीये रे, दान अने बहुमान रे ॥च०॥ नाटक करत
तेहनें रे लाल ॥ भ्रू नख अंगुलि भंगनां रे, विपरीत थयां तेणें थान रे
॥ च० ॥ रतिसुंदरी सहुनें दाखवे रे लाल ॥ ११ ॥ नृप आदेशें रतिसुंद
रे, नाटक करे अद्भुत रे ॥ च० ॥ देवता पण मोही रहे रे लाल ॥ कुम
नारी बजावती रे, वीणा नृत्य आकूत रे ॥ च० ॥ ते ध्वनि श्रवण सुध
समी रे लाल ॥ १२ ॥ नाद तथाविध कीधो रे, देवनें दुर्लभ जाण रे
॥ च० ॥ हय गय पशु पण थिर रह्यां रे लाल ॥ तो नरनुं कहेवुं किस
रे, नाटक पण तिणें ठाण रे ॥ च० ॥ रंभा हरावती सुंदरी रे लाल
॥ १३ ॥ विजयानो भारज किस्यो रे, तिहां देवी प्रभाव रे ॥ च० ॥
णिपूतली दोष कतरी रे लाल ॥ वींजे सवीणा नारीनें रे, सहु लहा
स्वय ताव रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी चित्त चिंतवे रे लाल ॥ १४ ॥ देवी
णुं ते गयि मस्युं रे, पण नरता केम नारी रे ॥ च० ॥ माया इहां कां
संभवे रे लाल ॥ अथवा जाणशुं आगलें रे, नरनो निरधार रे ॥ च०
पण गरावी पासें सही रे लाल ॥ १५ ॥ पद्म तंतु ऊपर करे रे, विजय
नाटक सार रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरी तव नाचती रे लाल ॥ सूता तंतु उ
पर सही रे, जीती ए निरधार रे ॥ च० ॥ जय जय रव परगट थयो रे
लाल ॥ १६ ॥ रतिमाला नृप आणयी रे, करे उत्सव सुप्रकार रे ॥ च०
निजघर लावे पुत्रीनें रे लाल ॥ रतिसुंदरी तव मोकले रे, तेडवा कुंवर
नारि रे ॥ च० ॥ निज प्रतिहारियो मानयी रे लाल ॥ १७ ॥ केटली नृ
मि आविया रे, नारीरूपें कुमार रे ॥ च० ॥ नागरूपें तेआवीनें रे लाल ॥
आव्या सरूपें निजघरें रे, हवे विजया जे नारि रे ॥ च० ॥ दासी थई दंभ
धारणी रे लाल ॥ १८ ॥ दासीयो लोजे कुमारनें रे, पण नवि दीठी ते
नारि रे ॥ च० ॥ रतिसुंदरीनें ते सवि कह्युं रे लाल ॥ सांभली दुःखणी
ते थई रे, करे प्रतिज्ञा सार रे ॥ च० ॥ आरतध्यानें ते पडी रे लाल ॥
॥१९॥ न मले ए नारी जिहां लगें रे, तिहां लगें न करुं आहार रे ॥च०॥
व्याकुल व्याकुल सहु थयां रे लाल ॥ रतिमाला मुख बहु कहे रे, न करे
आहार लगार रे ॥ च० ॥ दासीयो नृपने ते जइ कहे रे लाल ॥ २० ॥
त्रण दिन नगर गोखावीयुं रे, न जडी कोई उपाय रे ॥ च० ॥ कुमर हवे
चोथे दिनें रे लाल ॥ एकांतें हुआ रागिणी रे, आहार विना मरी जाय रे

॥ च० ॥ पूरव नवना रागथी रे लोल ॥ २१ ॥ नारी रूप धरी करी रे, वेगी तस घर बार रे ॥ च० ॥ दासीयो देखीने उलखी रे लोल ॥ रतिसुंदरीनें व धामणी रे, दीधी तव अलंकार रे ॥ च० ॥ बहु मूला दीये दासीनें रे लोल ॥ ॥ २२ ॥ साहामी जइ रतिसुंदरी रे, लागी तेहने पाय रे ॥ च० ॥ ऊग वे बहु हर्षथी रे लोल ॥ कुशल ने तुजनें हे सखी रे, माहारी जीवितदा य रे ॥ च० ॥ अनुकंपा करी माहरी रे लोल ॥ २३ ॥ चालो घरमांहे हवे रे, लावी ते घरमांह रे ॥ च० ॥ पल्यंकें बेसारीनें रे लोल ॥ धर्म शास्त्र कला तणा रे, करे विनोद उत्साह रे ॥ च० ॥ निज हस्तें न्हवरावती रे लोल ॥ २४ ॥ अमृत सम भुंजाविनें रे, पोतें वावरे आहार रे ॥ च० ॥ नक्तियें निजघर राखती रे लोल ॥ ते पण पूर्वमोहें करी रे,रही हवे बिहु नें प्यार रे ॥ च० ॥ दिन दिन अधिकेरो धरे रे लोल ॥ २५॥ सातमी त्री जा खंममां रे, पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ च० ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे लोल ॥ धर्म काम अर्थ शास्त्रनी रे, वातो करे सुरसाल रे ॥ च० ॥ पूरव नवना प्रेमथी रे लोल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ २४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहुदिन काढे एम बिहु, रतिसुंदरी सुप्रसन्न ॥ सामुद्रिक साचुं लहे, एम चिंते एक दिन्न ॥ १ ॥ लक्षण जोतां हुं लखुं, चक्री सम ले चेन ॥ ना रीपणे तो नवि होये, जाची ले वली जैन ॥ २ ॥ गति चेष्टा स्वर मुख गु णा, पुरुष योग्य परधान ॥ कोइक कारणथी कखुं, नारी रूप निदान ॥३॥ एम निश्चय करी आखती, स्मेरमुखी ससनेह ॥ जाणुं हुं जुगतें करी,तहत करी सुणो तेह ॥ ४ ॥ देवी वयणें दाखीयें,पूरव नवपति प्रेम ॥ कला दे खावीय कारमी, कृत्रिम रूपें केम ॥ ५ ॥ अनुग्रह कीजें अम नणी,स्वाना विक थाउ स्वामि, स्नेहथकी साचुं कहे, प्रियानो आग्रह पामि ॥ ६ ॥ इइ स्मरथी अधिक श्री, देखी तास देदार ॥ रोमांचित रमणी थई, आनंद अंग अपार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ प्रेमनां वादल वरश्यां दाहाडा सोहिला॥ ए देशी ॥

॥ आज आनंद थयो, पूरवनव पति मलियो धन्य दिन आजनो ॥ ए आंकणी ॥ आज पूरवपुण्य विनव फलियो, अणचिंत्यो चिंतामणि मलियो ॥ आ० ॥ कहे श्रीजयानंद सुणो नारी, तुज सौनाग्यता बावडी सारी ॥

॥ आ० ॥ १ ॥ मुज मन कज हंस तिहां रमियो, नवि पंकिलजल
नें गमियो ॥ आ० ॥ रतिमाला दासी मुखें जाणी, आवी खूंटणा क
उजाणी ॥ आ० ॥ २ ॥ हवे जइ दासी कहे राय, तुम पुत्री
आज प्रगटाय ॥ आ० ॥ रायें तस दीधुं बहुदान, वली मोकले तेडवा
रधान ॥ आ० ॥ ३ ॥ कुमर पण नृपति कनें जावे, उठी आलिंगन
रे नृप नावें ॥ आ० ॥ कांइ प्रेममां अंतर नवि राखे, तो पण वयणें
परें नांखे ॥आ०॥४॥ तुज रूप अनुत्तर हुं देखी, थयो लीन घणुं सवि
वेखी ॥ आ० ॥ तुम सेवा कहो शी शी करीयें, तुम सुजगता अम म
हरीयें ॥ आ० ॥ ५ ॥ तुम कुल पूछणनुं नहीं काम, नवि देवी वाणी
हे वाम ॥ आ० ॥ पण जनमें पवित्र करी नयरी, तुमें ते कहो अ
सवि विवरी ॥ आ० ॥ ६ ॥ हुं विजयपुरी नयरीवासी, कहे कुमर
लो उल्लासी ॥ आ० ॥ कौतुक जोवानें नीसरीयो, देश गाम गाम कु
रीयो ॥ आ० ॥ ७ ॥ फरतो फरतो तुम्ह पुर आव्यो, इत्यादिक सर्वे
लाव्यो ॥ आ० ॥ हवे स्नान नोजन सायें राय, करे हर्ष हियामां
माय ॥ आ० ॥ ८ ॥ कहे नृप ए मुज कन्या परणो, एहनें ए संधा
नवि वरणो ॥ आ० ॥ कुंवर कहे जस कुल नवि जाणो, तस कन्या
श्यो टाणो ॥ आ० ॥ ए ॥ कहे नृप एक तो देवीवाणी, वली प्रकृति
कृति गुणनी खाणी ॥ आ० ॥ एम कुल जाण्युं अमें तुम तणुं, तमें
प्रमाणो अम तणुं ॥ आ० ॥ १० ॥ तव मौन कुमर करे ज्यारें, हवे
न जोवरावे नृप त्यारें ॥ आ० ॥ परणावे नृप रतिसुंदरी, गज घोडा
मनोहार करी ॥ आ० ॥ ११ ॥ तेहमां कुमार न ले कांय, तव आग्रह
करीनें राय ॥ आ० ॥ आठ नगर आपे घणुं मनोहार, ते आपे पियानें
ह धार ॥ आ० ॥ १२ ॥ रतिसुंदरी सोंपे मातने, तस चिंताना
वदातनें ॥ आ० ॥ रहे नृपति दीधा आवासें, सुख नोगवे विषयनां
सें ॥ आ० ॥ १३ ॥ कदी वापी वनमां करे क्रीडा, नवि देवे कोई ज
पीडा ॥ आ० ॥ कदी नृत्य करावे प्रिया पासें, पोतें वाद्य वजावे सुवि
सें ॥ आ० ॥ १४ ॥ करे देवगुरुना गुणग्राम, याचकनें बहु आपे दा
॥ आ० ॥ दीनादिकनें दीये अति दान, लहे कीर्त्ति धर्म ते अप्रमा
॥ आ० ॥ १५ ॥ जिमे देव गुरुनी पूज करी, जिमे दान सुपात्रे ते

री ॥ आ० ॥ करी उरडी देहरासर मांहिं, गोपवो प्रतिमा उपधि त्यांहिं ॥
॥ आ० ॥ १६ ॥ तालुं देइ नारीनें दीये कूंची, सा आनूपणमां गुप्त मू
ची ॥ आ० ॥ निज जीवितनी परें रखवाले, ते पण नित्य पांचशें रत्न आ
ले ॥ आ० ॥ १७ ॥ निज नारीनें रत्न दीये तेह, तेतो एकजीव मानुं दो दे
ह ॥ आ० ॥ निज पुत्रीप्रेमें रतिमाला, नित्य आवे हर्षे सुकुमाला ॥ आ० ॥
॥ १८ ॥ पुर आठ तणुं जे इव्य आवे, आपे निज पुत्रीनें चावें ॥ आ० ॥
एकदिन चिंते विस्मय पामी, नृप दीधा धननो ए नहीं कामी ॥ आ० ॥
॥ १९ ॥ पुर आठना धननुं न नाम ग्रहे, मागवुं तो ते दूरें रहे ॥ आ० ॥
दान जोग करे सुरनी परें, एह अचरिज वात हृदय धरे ॥ आ० ॥ २० ॥
धन आगम मारग नवि लहुं, ए वात एहनें पूढुं सहु ॥ आ० ॥ पूछे श्रीज
यनें रतिमाला, तव श्रीजय बोले रढीयाला ॥ आ० ॥ २१ ॥ ते कहे सु
ज तात दीधुं धन्न, में पण उपराज्युं बहु दिन्न ॥ आ० ॥ ते वात सुणी मा
नी नहीं, तेणीयें निज पुत्रीनें कही ॥ आ० ॥ २२ ॥ धन किहांथी काढे ठे
ए घणुं, माहारुं ए टाल कौतुक पणुं ॥ आ० ॥ पुत्री कहे प्रश्ननुं शुं का
म. इछित पूरे ठे अभिराम ॥ आ० ॥ २३ ॥ त्रीजे खंमें आठमी ढाल,
कहे पद्मविजय सुणो सुरसाल ॥ आ० ॥ हवे वेश्या श्यो परपंच करे, निज
जाति देखावे एणी परें ॥ आ० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्रीनें पण्यांगना, क्रोध करी कहे एम ॥ एमहीज में उदरें धरी,कौ
तुक न कहे केम ॥ १ ॥ सरल पणें रतिसुंदरी, आखे दाक्षिण आण ॥ जा
णुं हुं ते जल्पियें, सांनल मात सुजाण ॥ २ ॥ देहेरासरथी दीपतां, र
त्न तणो लेइ राशि ॥ तालुं देई निसरे तथा, कूंची दे मुज सकाश ॥ ३ ॥
वावरतां जे वाधीयां, आपे मुजने आवि ॥ वीजुं कांइ बूजुं नहीं, जुगतो
जेह जमाव ॥ ४ ॥ देहरासरमां दाखीयो, एणीयें एह उपाय ॥ पुत्रीनें ए
म प्रेमशुं, चिंती कहे चित्त लाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ वीछुं पापनुं स्थान ॥ ए देशी ॥

॥ देरासर देखडाव, ए मुज कोम पूराव ॥ आज हो रतिसुंदरी कहे मत
बोलो तुमें मातजी रे ॥ १ ॥ मरणांतें पण एह, वात थाये कहो केह ॥
॥ आ० ॥ वेश्या रे कहे तो मुज कूंची आपीयें रे ॥ २ ॥ एह मनोरथ तु

ज, सौंके न जीवतां मुज ॥ आ० ॥ रतिसुंदरी कहे तूसो अथवा रूसजो रे ॥ ३ ॥ डोह न करुं नरतार, प्राण सोंप्यां तस सार ॥ आ० ॥ रतिमाला यें निश्चय जाण्यो पुत्रीनो रे ॥ ४ ॥ कपटें देई विश्वास, एक दिन सुरा चं डहास ॥ आ० ॥ पाई रे दधिघोलमां तव मूर्छा लही रे ॥ ५ ॥ सूती प ल्यंकें तेह, जोई पुत्री देह ॥ आ० ॥ लाधी रे कूंची तव तालुं कपाडीयुं रे ॥ ६ ॥ जुवे देहरासर जाम,ओषधि दीठी ताम ॥ आ० ॥ रत्नदायक जा णीनें लेइ पाठी वली रे ॥ ७ ॥ तालूं देइ तह, कूंची मूके हती जह ॥ ॥ आ० ॥ चेतना लही जागी रतिसुंदरी तेटले रे ॥ ८ ॥ सघलुं दीठुं तेम, शंका न आवी एम ॥ आ० ॥ धूतारे कोण नवि वंचाये मानवी रे ॥ ९ ॥ बीजे दिनें ते कुमार,पूजा करीनें प्यार ॥ आ० ॥ ओषधि पूजवा जुवे तो नवि लाधी तदा रे ॥ १० ॥ तव पूछे निज नारि,चित्तमां शंका धारि॥आ०॥ चतुरा रे चमकी तव पतिनें वीनवे रे ॥ ११ ॥ नहीं कोइनो परवेश, कूंची न दछुं अन्यदेश ॥ आ० ॥ मात दीधी सुरा काल तेणें हुं अचेत थई रे ॥ १२ ॥ तेणें जाणुं हल मात, बीजो न जाणुं वात ॥ आ० ॥ इंगित आ कारें करी ए निश्चय दशे रे ॥ १३ ॥ प्रश्नादिक सवि वाच, कही देखाडी साच ॥ आ० ॥ कुमरें पण निश्चय कस्यो सासुयें हरी रे ॥ १४ ॥ सासूनें कहे वात, आ न्या ने अवदात ॥ आ० ॥ गणिका रे कहे कान ढांकीने एणी परें रे ॥ १५ ॥ आपवुं तो रहुं दूर,कलंक चढावो नूर ॥ आ० ॥ राजानें वली तुमें मुज इटकारी हतां रे ॥ १६ ॥ चोरी करुं शे काम, मुज परिवार पण नाम ॥ आ० ॥ चोरीलुं नवि जाणे न आवे ढूकडा रे ॥ १७ ॥ पूछो तमें निज नारि, साचवे जे रति धारि ॥ आ० ॥ शंका जो होये मनमां तो टालो परी रे ॥ १८ ॥ सांभली श्रीजयानंद, चिंतवे धिक् ए मंद ॥ आ० ॥ निजपुत्री शिर दोष दिये पोतें करी रे ॥ १९ ॥ देशे न वगर उपाय,शिक्षा दे उं एणें ठाय ॥ आ० ॥ एम चिंतीनें कहे जोशुं यीजे स्थलें रे ॥ २० ॥ हर्ष लही सुणी तेह, गइ निज थानकें नेह ॥ आ० ॥ देहरासरमां बीजे दिन कुं वर गया रे ॥ २१ ॥ ठानां सहस्र रतन्न, मूके करीनें जतन्न ॥ आ० ॥ पू जीने जिन पहुतादृ ओषधि पूजनां रे ॥ २२ ॥ पांचमी ओषधि पास, मागे रत्न उल्लास ॥ आ० ॥ ओषधि कहे तुं रत्न सहस ले रीजवी रे ॥ २३ ॥ ले इ रत्न हजार, निकलीयो तेवार ॥ आ० ॥ पूरव परें तालुं प्रमुख देइ करी

रे ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें ढाल, नवमी कही सुरसाल ॥ आ० ॥ पद्मविजयें ह वे सांनलो वात सोहामणी रे ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन नारीनें एम कहे, मूकी कूंची मन आण ॥ जननी तुज दे खे यथा, जुवे ते मनमां जाण ॥ १ ॥ दूर रही तुं देखजे, जाणे नही ए जे म ॥ तेमज करे ते ततक्षणें, प्रेयसी आणी प्रेम ॥२॥ रतिमाला जुवे रंग शुं, ध्याये देखी ध्यान ॥ वमणां रत्न बनाववुं, लावें ए अमिलान ॥ ३ ॥ एक दिन विस्मय आणिनें, देवपूजा क्षण दाव ॥ सांनले वात सोहामणी, नणे जे औषधि नाव ॥ ४ ॥ पूरव औषधि पासथी, नवि लह्यां रत्न नि दान ॥ विधि साध विण विफल ते, एम नवि लहे अज्ञान ॥ ५ ॥ उताव लमां में अवर, औषधि लीधी एह ॥ बीजी साची बाहिरें,रही न दीठो रेह ॥ ६ ॥ अर्थयकी आपे अधिक, एहनें औषधि एह ॥ अवसर पामी एहनो, वदलुं विंहुयें नेह ॥ ७ ॥ चिंतामणि पामी चतुर,कांकरे ठूसे कोण ॥ अ वसर पामी एकदिनें, ग्रहे ते मूकी गौण ॥ ८ ॥ हर्षित थया कुंवर हवे, चित्तमां करे विचार ॥ वाक्पटु औषधि वालशुं, करि उपाय किवार ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ लाल रंगावो वरनां मोलीयां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे गणिका औषधि पूजीनें, रत्न मागे पण नवि आपे रे ॥ नवि बो ले साधन विधि विना, पण पाछी ठामें न थापे रे ॥ १ ॥ नवि पुण्य विना फल पामीयें ॥ ए आंकणी ॥ करे खेद घणो विधि जाणवा, नवि वदन राग पलटावे रे ॥ करे सासू जमाइ गोठडी, धूरतें धूरत केम फावे रे ॥ न० ॥२॥ प्रीतें तिहां करतां वातडी, कुंवरनें गणिका पूछे रे ॥ वत्स शुं शुं विज्ञान जा णो तुमें, कहे कुमर काम तुम शुं छे रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जाणुं विविध प्रकार नी औषधि, वली सकल कला पण जाणुं रे ॥ विज्ञान विविध लहुं मंत्रनें, कुरूपनें रूप देउं नाणुं रे ॥ न० ॥ ४ ॥ रूप होये तो अधिकेरूं करुं, रूडा विधिथी जो आराधे रे ॥ सौनाग्यनें यौवन नित्य रहे, मन इच्छित वरनें साधे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ सासू कहे मुज एहवी करो, जेहथी नृपति मुज मा नें रे ॥ जेम मान मडुं सवि शोक्यनुं, कोइनें न बोलावे शानें रे ॥ न०॥६॥ कहे कुमर मूंमाचो शिर तुमें, वदनें वली मशिका लींपो रे ॥ उपवास करो हैयडे धरी, वली मंत्र देउं ते जंपो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ रुरु बुरु रुरु बुरु बुरु बु

रु साहा, तेणीयें हवें सहु कीधुं रे ॥ पासें आव्या संध्यायें कुमरजी, दोष जाणे वंचित लीधुं रे ॥ न० ॥ ७ ॥ बहु आमंबर देखावतो, औपधियें सू अरणी कीधी रे ॥ वांधी थांने सांकलथी पापिणी.तें औषधि माहरी लीधी रे ॥ न० ॥ ए ॥ पुत्री शिर दोष देखावती, फल नोगव चोरी केरां रे ॥ ल्यो औषधि एम देखावती, तमें दयावंतमां धोरी रे ॥ न० ॥ १० ॥ नारी वयणथी हवे कृपा करी. मूलरूपें कीधी तास रे ॥ औपधि देइ पुत्री ज माईनें. खमावती देइ विश्वास रे ॥ न० ॥ ११ ॥ तेहुयें पण खमी राखी घरें, एक दिन हवे श्रीजयकुमार रे ॥ सासुने धर्म अरथें कहे, खमो मात तुमें पूज्यतार रे ॥ न० ॥ १२ ॥ तुमनें जे विटंबना में करी, तुम प्रति गोधननें काज रे ॥ अदत्तनुं फल इह परनवें,दुःख आपे दुर्गति राज्य रे ॥ ॥ न० ॥ १३ ॥ नरकें जइयें दुर्नाग्यता, वली दरिद्र पणुं ते आवे रे ॥ को ण इश अदत्त एम जाणीनें, कोण अदत्त लेवानें जावे रे ॥ न० ॥ १४ ॥ प्राणनाशें अदत्त न लीजीयें, थोडुं पण इहां दृष्टांत रे ॥ लखमीपुंज जे म लखमी लह्या, सांजलजो तस वृत्तांत रे ॥ न० ॥ १५ ॥ हस्तिपुरमां राय पुरंदर, पौलोमी नामें राणी रे, तेतो पौलोमी परें शोनती,शीलवंती चातुर जाणी रे ॥ न० ॥ १६ ॥ तिहां शेठ सुधर्मा नामथी, जिनशासन नो घणो रागी रे ॥ दयावंतनें गुरुनक्ो घणुं, धन्या गेहिनी पति अनुरा गी रे ॥ न० ॥ १७ ॥ धन क्षीण थयुं तस अन्यदा, अंतराय लाजनो आ यो रे ॥ पण श्रीअरिहंतना धर्मनें, नवि छांडे स्नेही जेम जायो रे ॥ न० ॥ ॥ १८ ॥ देवपूजानें आवश्यक प्रमुख जे, ते अंगीकर्युं नवि चूके रे ॥ एक दिन पुण्यवंत सुत सूचवे, एहवुं सुपन नारीनें ढूके रे ॥ न० ॥ १ए ॥ पद्म सरोवर पद्में अलंकर्युं, नरतारनें आवी नाखे रे ॥ शेठ पण तस अर्थ वि चारीनें, नारी आगल एम प्रकाशे रे ॥ न० ॥ २० ॥ लखमी लावण्य पुण्य वंतो वली, सुत होशे सांजली हर्षे रे ॥ रत्नखाण परें गर्न धारती, प्रिया अंगें शोना वर्षे रे ॥ न० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंमें दशमी ढाल ए, कही पद्मवि जय हरखालो रे श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां होये मंगलमालो रे ॥ ॥ न० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ३३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अंगें शोना अतिघणी, गर्नप्रनावें गेहि ॥ शेठनुं दारिद्र गयुं सवे,कर

ता अहोनिशि केलि ॥ १ ॥ करतां क्रय विक्रय वली, पाम्या लाज अपार ॥ सज्जनें बहु सन्मानिया, अधिकी शोज आगार ॥ २ ॥ पूरणमासें प्रसवियो, शुजलगनें शुज वार ॥ तिथि करण निर्दोष तेम, योग घणुं जयकार ॥ ॥ ३ ॥ वाय सुगंधी वाय ते, डुर्जिक्ष नहीं निज देश ॥ जनपद सुखिया जन सवे, वारु पहेखा वेश ॥४ ॥ प्रात समय उज्ज्वल पखें, पुण्य प्रजावें पूत ॥ पूरवदिशि सूरय परें, शोजावे घरसूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ वारी रंग ढोलणां ॥ ए देशी ॥

॥ आवी वधामणी एहवे हो राज, शेठनें हर्ष न माय ॥ सोनाणी सुत आवियो ॥ घर वाहेर वेठां थकां हो राज, आपवा धन निरमाय ॥ सो० ॥ ॥ १ ॥ खोले पण धन नहीं तदा हो राज, शेठ चिंते मनमांहि ॥ सो० ॥ दान वेला धन ढोहिलुं हो राज, होय ते आपे नांहिं ॥ सो० ॥ २ ॥ आमण दूमणो ते थयो हो राज, नीचुं मुख करी शेठ ॥ सो० ॥ अंगुलीयें परती खणे हो राज, नजर करीनें हेठ ॥ सो० ॥ ३ ॥ कीडीनगरा जेटलुं हो राज, दीठुं विवर ते ठार ॥ सो० ॥ अधिक खणे महोटुं थयुं हो राज, दीठुं सुवर्ण इव्यसार ॥ सो० ॥ ४ ॥ धन अनर्गल देखी करी हो राज, चिंते चित्त मकार ॥ सो० ॥ अद्भुत जाग्य ए सुत तणुं हो राज, आपुं वित्त उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ आपे वधामणी तेहनें हो राज, तेहमांथी धन लाख ॥ ॥ सो० ॥ वस्त्र जूषण घृत गुड घणा हो राज, दरिड न राखे सराख ॥सो०॥ ॥ ६ ॥ दीन अनाथनें आपतो हो राज, वाजित्र वाजे गेह ॥ सो० ॥ सज्जन लावे घणां जेटणां हो राज, हर्ष न माये देह ॥ सो० ॥ ७॥धवलमंगल गाये सुंदरी हो राज, नाटक नव नव थाय ॥ सो० ॥ एम नव नव उत्सव थकी हो राज, दश दिवस वही जाय ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंड सूरय दर्शन करे हो राज, उठी जागर वली होय ॥ सो० ॥ एम उत्सव थटे जे दिनें हो राज, ते ते दिन करे सोय ॥ सो० ॥ ए ॥ शेठ चिंते जे दिनथकी हो राज, आव्यो ढे सुत एह ॥ सो० ॥ ते दिनथी लखमी लह्यो हो राज, मंगलमाला गेह ॥ सो० ॥ १० ॥ दीनादिक संतोषिया हो राज, तोही न खूटे इव्य ॥ सो० ॥ इव्य जठयुं संजलावीयें हो राज, नृपनें तो होये जव्य ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ अन्यथा राय अदत्त होये हो राज, श्रावक माटे शेठ ॥ ॥ सो० ॥ एम चिंती लेइ जेटणुं हो राज, गयो नृप पासें शेठ ॥सो०॥१२॥

वात यथास्थित तिहां कही हो राज, नृपति बोल्यो न्याय ॥ सो० ॥ श्राव क अदत्त ग्रहे नही हो राज, नृपति हर्षित थाय ॥ सो० ॥ १३ ॥ नाग्य निधि सुत पुण्यथी हो राज, धन प्रगट्युं असराल ॥ सो० ॥ राख तुं धन्य ए तादृरुं हो राज, तुज हो मंगलमाल ॥ सो० ॥ १४ ॥ राजप्रसाद लही करी हो राज, वाजते गाजते गेह ॥ सो० ॥ आव्या शुन मुहूर्त्तें हवे हो राज, पुत्रनामनें नेह ॥ सो० ॥ १५ ॥ स्वजन कुटुंब जमाडियुं हो राज, अ र्थे धरी मनमांहि ॥ सो० ॥ लक्ष्मीपुंज इण नामथी हो राज,थाप्युं हर्ष उ छाहि ॥ सो० ॥ १६ ॥ दिन दिन कल्पांकुर परें हो राज, माचित्र उमेदने सा थ ॥ सो० ॥ वाधे सुखदायी घणो हो राज, सहु जाणे अम आथ ॥सो०॥ ॥१७॥ दांत आव्या पग मांमतो हो राज, इत्यादिक सहु ठाम ॥सो०॥ ता स पिता उत्सव करे हो राज, बालक्रीडा करे ताम ॥ सो० ॥१८॥ नीशा ले नणवा ठव्यो हो राज, विनय घणो गुरु कीध ॥ सो० ॥ पाठक पण तस हर्षथी हो राज, विद्या सघली दीध ॥ सो० ॥ १९ ॥ विद्या शास्त्र न तेह वुं हो राज, जे नवि जाणे कुमार ॥ सो० ॥ साखी मात्र पाठक थयो हो राज,सकल कला नंमार ॥ सो० ॥ २० ॥ तिम जिनधर्म कला लह्यो हो राज, सूक्ष्म बुद्धि सुरूप ॥ सो० ॥ जैनशास्त्र शिरोमणि हो राज, कला विज्ञाननो नूप ॥ २१ ॥ काव्य छंद नाटक वली हो राज, प्रश्न प्रहेलिका न्याय ॥ सो० ॥ गीत नाटकनें विनोदमां हो राज, नित्य नित्य काल ग माय ॥ सो० ॥ २२ ॥ एकदिन मित्रें परवस्यो हो राज, क्रीडतो उपवन जाय ॥ सो० ॥ मुनिवर एकांतें रह्या हो राज, देखी प्रणमे पाय ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ धर्मलान मुनियें दियो हो राज, धर्म सुणे मुनिपास ॥ सो० ॥ बाल कालनां आदरे हो राज, समकित व्रत उल्लास ॥ सो० ॥ २४ ॥ त्रीजे खंनें अगियारमी हो राज, पद्मविजयें कही ढाल ॥ सो० ॥ श्रीजयानंदना रासमां हो राज, सुणतां मंगलमाल ॥२५॥ सो० ॥ ३६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मावित्र वचन माने सदा, समकितनें सदाचार ॥ विनय करे बालरा गनो, गुरुजनको गुणधार ॥ १ ॥ यौवन आव्युं जेटले, विवाहनी करे वात, इहे कन्या एहनें, श्रीदेवी साक्षात ॥२॥ धनेश्वरनें पृथ्वीधर, कन्या केरा तात ॥ श्रीधर यशोधर श्रीपति, वली धनावह विख्यात ॥ ३ ॥ श्रेष्ठी

धन ते सातमा, जिनदास श्रावमा जाण ॥ दाता ज्ञाता दीपता, ख्याता गु णमणि खाण ॥ ४ ॥ शेठनें नमे सोनागीया, नांखे श्रावी नाप ॥ पुत्री श्रम तुम पुत्रनें, श्रापणनो श्रनिज्ञाप ॥ ५ ॥ रूपश्रीनें रूपरेखा, पद्माव ती पहेंचाण ॥ पद्मा धनश्री पद्मिणी, वली लखमीनुं वखाण ॥ ६ ॥ म दनसिरी लखमीवती, रूपें रति श्रनुकार ॥ परणवुं मानो प्रेमशुं, श्रम श्रा ग्रह श्रनुसार ॥७॥ शेठ कहे तुमें सांजलो, श्राव्या तुमें श्रम धाम ॥ कन्या उद्देशी कह्यो, मान्य विशेषें श्राम ॥ ८ ॥ पंथीनें नोजन परें, तेणें मानी तुम वात ॥ दर्प लह्या ते दोंशधी, उत्सवें घर श्रायात ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तुमें पीतांबर पहेरोजी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे लगन दिवस निरधारेजी ॥ रंगवधामणां ॥ सहु सज्जन तेडी घर वारेंजी ॥ रं० ॥ निज निज घर उत्सव रंगेंजी ॥ रं० ॥ करे चित्र विचित्र उमंगेंजी ॥ रं० ॥ १ ॥ तोरण मंमप रूडा रचीयाजी ॥ रं० ॥ तेतो साव सोनेरी खचीयाजी ॥ रं० ॥ पापड वडीयो देवायजी ॥ रं० ॥ पकान्न विवि ध केळवायजी ॥ रं० ॥ २ ॥ कंचन मणि थाट घडायजी ॥ रं० ॥ वस्त्र विवि ध प्रकार शिवडायजी ॥ रं० ॥ सोपारी पत्र मगावेजी ॥ रं० ॥ वेदिका व ली जवहरा वावेजी ॥ रं० ॥ ३ ॥ रचुं माहिरुं चोरी बंधावेजी ॥ रं० ॥ वली धवल मंगल गवरावेजी ॥ रं० ॥ एम विवाह सामग्री कीधीजी ॥ रं० ॥ निमित्तिये वेला नली दीधीजी ॥ रं० ॥ ४ ॥ वरघोडे कुंवर चडियाजी ॥ रं० ॥ ठाम ठाम दान देवा निडियाजी ॥ रं० ॥ मलियुं साजन बहु सं गेंजी ॥ रं० ॥ सांवेला बहु उछरंगेंजी ॥ रं० ॥ ५ ॥ लामणदीवो माता ह्यापेजी ॥ रं० ॥ जानणी गीत गाये सायेंजी ॥ रं० ॥ कन्या श्रावे सम कालेंजी ॥ रं० ॥ करपीडन कखुं तेणें तालेंजी ॥ रं० ॥ ६ ॥ मणि कनक नें रयणें जडियाजी ॥ रं० ॥ जाणे स्वर्गमांहे ते घडियाजी ॥ रं० ॥ सस रा सहुये मली श्रापेजी ॥ लखमीपुंज कुमार पुर थापेजी ॥ रं० ॥ ७ ॥ तारुण्य वय इंद्र समानजी ॥ रं० ॥ शचीसम श्रावछुं शुनवानजी ॥ रं० ॥ नोग नोगवे श्रतिय रसालाजी ॥ रं० ॥ निज तात पसाय विशालाजी ॥ ॥ रं० ॥ ८ ॥ कांय चिंता नहीं परनारजी ॥ रं० ॥ पण धर्म न पामे हा रजी ॥ रं० ॥ श्रावकनुं लक्षण एहजी ॥ रं० ॥ एम नीडमां धर्म धरेहजी ॥ रं० ॥ ९ ॥ यतः ॥ सामग्गि श्रनावेवि हु, वसणेवि सुहेवि तह कुसंगे

वि ॥ जस्स न हायइ धम्मो, निच्चयउ जाण तं सद्धं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ पूं
व पुण्यनें सुपसायजी ॥ रं० ॥ सघले ते सुखिया थायजी ॥ रं० ॥ एम न
ग्यवंत गुणवंतोजी ॥ रं० ॥ जिनधर्म उपर दृढचित्तोजी ॥ रं० ॥ १० ॥
चाकर पण धर्मी देखीजी ॥ रं० ॥ धर्मी थया सर्व उवेखीजी ॥ रं० ॥ न
वि करे पराजव कोईजी ॥ रं० ॥ जस पुण्यप्रकृति दृढ होईजी ॥रं०॥११॥
जेम वेलडी वृक्षने वलगे जी ॥ रं० ॥ जेम सरिता सायर सलगेंजी ॥रं०॥
तेम लखमी स्वयंवरा आवेजी ॥ रं०॥ अनुरक्त थई स्थिर थावेजी ॥ रं०॥
॥ १२ ॥ मणिमंत्रनें चूरण जोगेंजी ॥ रं० ॥ जिम वश करियें कोइ जो
गेंजी ॥ रं० ॥ जेम राशें बांधी राखेजी ॥ रं० ॥ तेम लखमी न ठंमे सराखेंजी
॥ रं०॥ १३ ॥ अंगें जोग सुपात्रें दानजी ॥रं०॥ बहुजननें खानने पानजी
॥ रं० ॥ सज्जन वाणोतर कामेंजी ॥ रं० ॥ आवे वली धर्म पण पामेजी
॥ रं० ॥ १४ ॥ यतः ॥ गृहकूपी कृपणानां, लक्ष्मीर्व्यवहारिणां नगरवापी ॥
व्यापारिणां च सरसी, तरंगिणीव क्षितीशानाम् ॥१॥ सा लक्ष्मीर्या धर्मकर्मो
पयुक्ता, सा लक्ष्मीर्या बंधुवर्गोपभुक्ता ॥ सा लक्ष्मीर्या स्वांगजोगप्रसक्ता, याऽ
न्या मान्या सा तु लक्ष्मीरलक्ष्मीः॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ पुत्रनुं पुण्य शेठ हवे जा
णीजी ॥ रं० ॥ दानादिक करे मन आणीजी ॥ रं० ॥ व्यापार करे नें करा
वेजी ॥ रं० ॥ कोडगो गमे लाज तिहां आवेजी ॥ रं० ॥ १५ ॥ एम धर्म सा
धन करी शेठजी ॥रं०॥ सौधर्मे सुर थया ठेठजी ॥ रं०॥ माता पण गृहिधर्म
पालीजी ॥ रं० ॥ स्वर्गें गइ धर्म अजुवालीजी ॥ रं० ॥ १६ ॥ तेहनें मरणें
पण वाधेजी ॥ रं० ॥ सुख यश स्त्री सुख नवि वाधेजी ॥ रं० ॥ सुत महत्त्व
प्रमुख नवि उंगांजी ॥ रं० ॥ संतनें केम होय ते ओगांजी ॥ रं० ॥ १७ ॥
पाठली रातें एक दिन्नजी ॥ रं० ॥ धर्म ध्यानमां तत्पर मन्नजी ॥ रं० ॥ केम
लखमी जनमथी पाम्योजी ॥ रं० ॥ नवि खूटे दुःख सवि वाम्योजी ॥ रं०॥
॥ १८ ॥ एम चिंतवतां एक देवजी ॥ रं० ॥ परगट थयो करतो सेवजी ॥
॥ रं० ॥ संशय छेदननें नाणीजी ॥ रं० ॥ मन चिंते ए कोण प्राणीजी ॥
॥ रं० ॥ १९ ॥ देव दानव के जोगींइजी ॥ रं० ॥ खेचरपतिनें योगींइजी ॥
॥ रं० ॥ मन माने ते हो एहजी ॥ रं० ॥ पण तेजस्वी गुणी देहजी ॥रं०॥
॥ २० ॥ निजघरें शत्रु जो आवेजी ॥ रं० ॥ पण पूजवा योग्य ते थावेजी
॥ रं० ॥ तेम एहना गुण नवि जाणुंजी ॥ रं० ॥ पण मणिपरें पूजन टाणुं

जी ॥ रं० ॥ २१ ॥ विनयें करी करे परणामजी ॥ रं० ॥ तुमें कोणनें आव्या शे कामजी ॥ रं० ॥ किहांथी तुमें आव्या स्वामीजी ॥ रं० ॥ ते चिंते सुर विनय न खामीजी ॥ रं० ॥ २२ ॥ कहे हुं हुं देवता जाणो जी ॥ रं० ॥ पूर्वस्नेह रक्तु बंधाणोजी ॥ रं० ॥ मुज थानकथी इहां आव्योजी ॥ रं० ॥ तुज संशय मुज मन नाव्योजी ॥ रं० ॥ २३ ॥ ते टा लवा हुं इहां आयोजी ॥ रं० ॥ कहुं ते सांनल सुखदायोजी ॥ रं० ॥ बा रमी कही त्रीजे खंमेंजी ॥ रं० ॥ ढाल पमें रंग अखंमेंजी ॥ रं० ॥ २४ ॥ २९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबूनरतार्द्धे जाणीयें, मध्यखंमें मणिपूर ॥ नगरें श्रीपाल नरपति, डुशमन कीधा दूर ॥ १ ॥ धन्य वसे तिहां धनपति, नामें सारथवाह ॥ प्रीतिमती सति तस प्रिया, अंगें धरे उबाह ॥ २ ॥ सूत्राम नामें सुत नलो, गुणधर गिरुउ जेह ॥ कला बहोंतेर केलवे, यौवन पाम्यो जेह ॥ ३ ॥ शेवनी कन्या सामटी, उत्सव करी अपार ॥ परणावे तेहनो पिता, सुख नोगवे श्रीकार ॥ ४ ॥ विविध प्रकारें व्यवहरे, उपराजे बहु आथ ॥ क्रीडा करवा एकदा, सजिउं मित्र लेइ साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नणंदल विंदलि दे ॥ ए देशी ॥

॥वनमां सूरीश्वर देखे, क्रीडा करतां शुनवेषें हो ॥ नवियण मुनि वंदो ॥ मुनि अध्यवसाय शुन ध्यान, चारण मुनिनें चार ज्ञान हो ॥ न० ॥१॥ जइनें मुनि चरणे वंदे, मुनि निरखी मन आणंदे हो ॥ न० ॥ धर्मलान दिये मुनि तास, नइक जाणी सुविलास हो ॥ न० ॥ २ ॥ अणुव्रत पांचे विस्तारें, सर्वविरति कहे सुप्रकारें हो ॥ न० ॥ दृष्टांतनें फल देखावे, ते कु मर सुणे शुननावें हो ॥ न० ॥ ३ ॥ समकित करे अंगीकार, करे अन क्ष तणो परिहार हो ॥ न० ॥ निज उचित अनंतकाय वारे, वली अदत्त आदान व्रत धारे हो ॥ न० ॥ ४ ॥ सुविशेषें निरतिचार, वली पूछे तास विचार हो ॥ न० ॥ मुनि कहे सांनल तुं नाई, ए व्रतनी वात वराई हो ॥ न० ॥ ५ ॥ मणिनें तृण जे पर केरुं, अण आप्युं न लीजें अनेरुं हो ॥ न० ॥ मुनि त्रिविध त्रिविध व्रत पाले, गृही डुविध त्रिविध संनाले हो ॥ न० ॥ ६ ॥ बीजा पण बहु ले नेद, पण कायर पुरुषना वेद हो ॥ न० ॥ जे नेदें आदर्युं जेणें, ते पाली सुख लह्यां तेणें हो ॥ न० ॥

जोवं आकार आचारनेंजी ॥ दृढता हो व्रतें दृढता जोवं तास, जेहना हो गुरु जेहना वखाणे व्यापारनें जी ॥१०॥ तेणें में हो तुज तेणें परीक्षा कीध, कुंमल हो आदें कुंमल प्रमुखनी जाणजेजी ॥ अश्व हो कह्यो अश्व ते अति शय मंद, करणी हो माहारी करणी बीजानी मश्चाणजेजी ॥११॥ पाणी हो तुमें पाणी न पीधुं रेख,तरप्यां हो तुमें तरप्यां पण अचरिज कयुं जी ॥ सा ची हो एह साची प्रतिज्ञा तुज्झ, कनक हो परें कनक परें व्रत तुमें धर्युंजी ॥१२॥ गुरुनी हो इहां गुरुनी मलि सवि वात, मिछामि हो तुज मिछामि डु क्कड हुं देवंजी ॥ तूठो हो तुज तूठो मागो कांय,आपी हो मुज आपी जनमतुं फल लेवं जी॥१३॥ पठित हो सिद्धिपठित सिद्धि दिये ताम, गगन हो गामी गगनगामिनी विद्या वली जी ॥ बीजी हो घणी बीजी विद्याउ अनेक, आपी हो हवे आपी धन आपे वलीजी ॥१४॥ पूछे हो तव पूछे सारथवाह, केहतुं हो ए केहतुं वित्त छे ते कहो जी ॥ खेचर हो कहे खेचर कांयक मुज्झ, कांइ क हो वली कांइक पारकुं ए लहो जी ॥ १५ ॥ सांजली हो कहे सांजली सा रथवाह, निंदित हो कहो निंदित वात केणी परें जी ॥ धर्मनी हो कहो ध र्मनी एक तो वात, बीजुं हो दियो बीजुं अदत्त एणी परें जी ॥ १६ ॥ चो रीयें हो आव्युं चोरीयें शुद्ध पण एह, अशुद्ध हो थगुं अशुद्ध मदिरायें जल यथाजी ॥ धर्म हो लह्या धर्म जो तातनी पास, मूको हो तुमें मूको लाव्या तिम तथाजी ॥ १७ ॥ जाणो हो जेहनुं जाणो सांजरें जेह, वावखुं हो अथ अणवावखुं ते आपीयें जी ॥ तिणथी हो थाय तिणथी बहु जश वाद, पुण्यनो हो वली पुण्यनो संचय थापीयेंजी॥१८॥ सांजली हो तव सां नली सार्थप वाणि, कीधुं हो तव कीधुं जेह सवे कह्युंजी ॥ साजो हो थयो साजो अश्व तेणीवार, खेचर हो धन खेचर दीये ते नवि लह्युं जी ॥ १९ ॥ साखें हो तस साखें कयुं धर्मगम, पण ते हो कांइ पण ते नवि राख्युं त दाजी ॥ पोहोता हो ते पोहोता निजनिज गम, वरते हो तुं वरते धर्ममांहे सदाजी ॥ २० ॥ वावरे हो धन वावरे साते क्षेत्र, दीनने हो दीये दीन अनाथनें संपदाजी ॥ पाले हो व्रत पाले निरतिचार, टाले हो वली टाले लोकनी आपदा जी॥ २१ ॥ मेरु हो वली मेरुनें गिरनार, सिद्धगिरि हो वली सिद्धगिरि नंदीश्वर करेजी ॥ जात्रा हो करे जात्रा तीरथनी एम, गगनें हो जाय गगनें विद्याधर परेंजी॥ २२ ॥ उत्सव हो करे उत्सव पू

ा गीत, सफलो हो करे सफलो मानव नव तिहां जी ॥ धर्म हो करी
र्म दानादिक चार, कपन्यो हो तुं छपन्यो आयु क्षयें इहां जी ॥ २३ ॥
ीजे हो खंमें त्रीजे पन्नरमी ढाल, नांखी हो श्रीनांखी श्रीज्ञयानंदरासमां
। ॥ उत्तम हो गुरु उत्तमविजय पसाय, पदमें हो नांखी पद्मविजयें उल्ला
र्मा जी ॥२४॥ सर्वगाथा ॥ ४७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर गुरु वाणीथी, पाल्यो धर्म प्रपंच ॥ आयुक्षयें तिहां उप
ो, सुर महाऋद्धिनो संच ॥ १ ॥ व्यंतर पल्य आयु वडो, देवता थयो
ाल ॥ पूरवनव व्रत पालिनें, तुं तिरियंत रसाल ॥ २ ॥ तुज जनमथी
हरे, घर लखमी घणी होय ॥ पूरवनव कृत पुण्यना, योगथी सयलुं
य ॥ ३ ॥ धर्मस्नेह पूरव धरी, आव्यो तुज पर आप ॥ लखमी पूंठें
ा गमे, भोजपत्री विण माप ॥ ४ ॥ अधिपति व्यंतरनो अछुं, आव्यो
ाहेवा आज ॥ आनूषण वस्त्र आपिनें, स्वघर गयो सुरराज ॥ ५ ॥
ल्यो लखमीपुंज हवे, जाति समरण जात ॥ सुर कह्युं जाणी साचलुं,
दृढ थई धात ॥ ६ ॥ दान अनर्गल देयतो, सुख भोगवे सुरसाल ॥
ाल्यो एकदिन देशना, लह्यो वैराग विशाल ॥ ७ ॥ गुरु पासें दीक्षा ग्र
उत्सव करी अपार ॥ अंग भण्या अगीयार ते, तप वली बहु तपना
८ ॥ चोखुं पाली चरण ते, अणसण विधें आराधि ॥ देवलोक बार
वता, बावीश अयर अबाधि ॥ ९ ॥ नोगवी आउखुं सुरनवें, नृप थ
रनव पाम ॥ केवलज्ञान लही करी, विचरे नवि विश्राम ॥ १० ॥
र वरे सुख शाश्वता, ए धारी अवदात ॥ बीजुं व्रत पालो तुमें, सहु
जिम सुख शात ॥ ११ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥ गुजरो ल्योनें जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

सांनली रतिमाला जे कुमर कह्युं, लखमीपुंज दृष्टांत ॥ त्रूजो अद
न निषेधती, अदत्त न लेचें एकांत ॥ १ ॥ व्रत एम पालो नविक
मणुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रावक धर्म तिहां अंगी करे, हवे साधर्मिक
॥ त्रिहुं जण प्रीतें सुखमांहे रहे, धर्में काल गमाय ॥ व्र० ॥ २ ॥
समय एकदिन सूतां थकां, देखे सुपन कुमार ॥ कोइक नगरें पर्वत
।, जिह्नुनो अवतार ॥ व्र० ॥ ३ ॥ काष्ठ नार कपाडयो मस्तकें, कु

रूपी शिरदार ॥ चोटामां कनो एम देखीनें, जाग्यो तेह कुमार ॥ ब्र० ॥४॥ मन चिंते ए सुपननुं फल किश्युं, वात असंनव एह ॥ जमणुं लोचन फर क्युं तेणे समे, सुपननी साख पूरेह ॥ ब्र० ॥ ५ ॥ चित्तथी तास उपाय वि चारीनें, मोहोटो पट एक कीध ॥ स्वप्न दीतुं जिम नगरादिक तणुं, तेम आलेखावी लीध ॥ ब्र० ॥ ६ ॥ क्रीडा परवत वाव्य सरोवर, चहुटा हाटनें गेह ॥ नव नव रंगें चित्रित पट थयो, मनोहर अतिशय एह ॥ ब्र० ॥ ७ ॥ तेह नगरनां बाह्य उद्यानमां, चैत्य ते ऋषन जिणंद ॥ तेहना बारने मल तुं बारणुं, शत्रुसालकरंद ॥ ब्र० ॥ ८ ॥ तस आगल एक पीठ करावतो, तेडी वर सूत्रधार ॥ दानशाला मंमावी तिहां कणे, दीन अनाथ उद्धार ॥ ॥ ब्र० ॥ ए ॥ चाकर मूक्या तास जिमाडवा, सेवक दक्ष वली जेह ॥ पट विस्तार देखाडे लोकनें, जूवें अति ससनेह ॥ ब्र० ॥ १० ॥ जे जूवे दृष्टि करी स्थिर तेहनें, कहे नगरादिक नाम ॥ ते मुजनें मेलवजो पुरुपनें, पट जालवज्यो सुगम ॥ ब्र० ॥ ११ ॥ ते पण सेवक कह्युं तिमहिज करे, वर्णव करे सहु लोक ॥ देहरे आवे ते सहु देखता, मलि मलि थोकें थोक ॥ब्र०॥१२॥ एक दिन पंथी आव्या दूरथी, धूलें खरडित देह ॥देखी प टने विस्मय पामिया, अहो केणे चितर्यो एह ॥ ब्र० ॥ १३ ॥ पटने जोइ जोइ आनंद हुवे घणो, सुंदर शोनागेह ॥ अमचुं नगर वसुं अमें एहमां, नामें पद्मपुर जेह ॥ ब्र० ॥ १४ ॥ पटपालक कहे आव्या किहांथकी, को ण तुमें किहां वास ॥ ते कहे पद्मपुरथी आविया, लाव्या ते कुमरनें पा स ॥ ब्र० ॥ १५ ॥ कुमरें वात सुणी तस मुखथकी, संतोष्या नली री ति ॥ कुमर पूढे फरी तास सरूपनें, ते पण कहे धरी प्रीति ॥ ब्र० ॥ ॥ १६ ॥ शो योजन ते नगर इहांथकी, पद्मकूटगिरि पास ॥ राजा पद्म रथ तिहां राजियो, कोइ न जोडी वे तास ॥ ब्र० ॥ १७ ॥ रूप ऐश्वर्यें जीते इंद्रनें, चंद्र उज्ज्वल गुण जास ॥ पण ते नास्तिक धर्मी आकरो, चंद्र कलंक परें तास ॥ ब्र० ॥ १८ ॥ सांजली कुमरें तास विसर्जिया, दे ई इछित दान ॥ तिण नगरी जावानुं चित्त धरी, नारीनें कहे सावधान ॥ ॥ ब्र० ॥ १ए ॥ तीरथ नमीनें आवुं जिहां लगें, रहेजो मातानी पास ॥ अड पुर धननुं दान देजो सदा, करजो कलानो अन्यास ॥ ब्र० ॥ २० ॥ खेद लही पण आणा पालवी, एह पतिव्रताधर्म ॥ मान्युं तव ते वेशी

दोहीये, गगनें चाल्यो सुदाम ॥ क० ॥ २१ ॥ पद्मकूट गिरि पोहोतो रंग शुं, त्रीजे खंमें रे ढाल ॥ पद्मविजयें रंगें कही सोलमी, सुणो हवे वात रसाल ॥ क० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ५२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पल्यंक किहां एक गोपवी, रूप करे कुरूप ॥ निज काष्ठ भारो धरी, चाल्यो मन धरी चूंप ॥ १ ॥ पद्मपुरमां पाधरो, आव्यो पहुंटे आप ॥ वे चण जनो वेगळुं, पण मनुं मूरति पाप ॥ २ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ कर्म न त्रूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ राजपुरुष तिहां आविया, देखे निजनें ताम ॥ कुंतल पीत जाडा प णुं, होठ लांबा वली श्याम ॥ १ ॥ कर्म न त्रूटे रे आतमा ॥ ए आंक णी ॥ मस्तक कडाह तजिया समुं, दंतुरनें स्थूल पाय ॥ आंख्यो पीळीनें श्यामली, नाक चिपुट वेसी जाय ॥ क० ॥ २ ॥ स्थूल नसाजाल देखीयें, कंकाल जेरच रूप ॥ कुलक्षण सवि अंगनां, मानुं पिशाच सरूप ॥ क० ॥ ॥३॥ चीटी माथे रे वेलडी, वस्त्र ते कोपीन एक ॥ देखी थु थु करे सवे, बो ले एणी परें छेक ॥ क० ॥ ४ ॥ बोलावे तुज नृपति, चालो सना मजार ॥ ते कहे हुं किहां राजा किहां, हुं नवि आवुं केवार ॥ क० ॥ ५ ॥ जो तुम काष्ठनो खप होये, तो ल्यो काष्ठनो नार ॥ पण तिहां हुं नवि आवशुं, त व ते बोले विचार ॥ क० ॥ ६ ॥ बीहीक म कर तुं रे बापडा, राजा करशे पसाय ॥ तेहनी साथें तव चालियो, देखाडयो तेह राय ॥ क० ॥ ७ ॥ भे टणुं काष्ठनारा तणुं, करीनें ऊनो किरात ॥ पूछे नृपति एणी परें, कोण तुं किहांथी आयात ॥ क० ॥ ८ ॥ नाम किश्युं तुज किहां वसे, ते कहे पिवर मुज नाम ॥ पद्मकूटगिरिमां वसुं, माहरे रहेवा नहीं धाम ॥ क० ॥ ॥ ९ ॥ काष्ठनो भार वेची करी, आजीविका करुं स्वामि ॥ नृप कहे दुःखि यो मुज नगरमां, केम तुं रहे छे रे आम ॥ क० ॥ १० ॥ ते कहे तुम पु र स्वर्ग ज्युं, हुं दुःखीयो वसुं एम ॥ सरोवर पाणी नयुं घणुं, चातक त रस्यो रहे तेम ॥ क० ॥ ११ ॥ नृप कहे माग जे जोइयें, ते कहे उदर तुं पूर ॥ काष्ठथकी सुखमां होये, नाग्यथी अधिकुं होय दूर ॥ क० ॥ ॥ १२ ॥ तुमें तूठा मुज खप नही, चीवर दोलत दाम ॥ पण नही धा न्यनी रंधनी, आपो तो होय काम ॥ क० ॥ १३ ॥ नृप कहे देउं रंधनी,

एम कही बोलावे ताम ॥ विजय सुंदरी निज सुता, कहे तेहनें नृप आम ॥ ॥ क० ॥ १४ ॥ जिनधर्में तुज सुख होये, तो जोगवो जोग रसाल ॥ ए तुज जर्त्ता में आपियो, कर्म फल्यां ततकाल ॥ क० ॥ १५ ॥ एहथी तुजने बहु सुख थशे, तव बोली तेह वाणि ॥ तातनुं वचन प्रमाण छे, खेद नहीं इण गाण ॥ क० ॥ १६ ॥ कुलस्त्रीनो एह धर्म छे, तातें दीधो जे कंत ॥ जाणे देव तणी परें, आराधे मन संत ॥ क० ॥ १७ ॥ पूरवजवना संबंध थी, जो पण दीसे कुरूप ॥ पण तस प्रेम घणो धरे, निज पण तदअनु रूप ॥ क० ॥ १८ ॥ कोइक ज्योतिषी तिहां रह्यो, ज्ञानी कहे एम वात ॥ एह मुहूर्त्तें परणे जिके, ते होये चक्री विख्यात ॥ क० ॥ १९ ॥ राणी होये ते तेहनी, स्त्रीमां उत्तम नार ॥ एहनी खबर न को पडे, शुं फल होशे ए वार ॥ क० ॥ २०॥ ईर्ष्या कोपथी नृपति, साहस अतिशय धार ॥ राय सजा मांहे एम कहे, सांजलजो निरधार ॥ क० ॥ २१ ॥ वरना वेषनें सारिखो, लावो वधूनो रे वेष ॥ तव ते पुरुष लेवा गया, रायनी आण विशेष ॥ ॥ क० ॥ २२ ॥ वलय लाव्या रे कथीरनां, सोहासणीनुं निशाण ॥ कोईक नीचना घरथकी, साडी लाव्या पुराण ॥ क० ॥ २३ ॥ पूरव वेश मूकी करी, नवलो पहेरो ते वेष ॥ निज कहे तव रायनें, शी ए वात नरेश ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मणिघंटा नवि सोहियें, रासन केरे रे कंठ ॥ काणी कूडी नें सामली, दासी वो योग्य वंठ ॥ क० ॥ २५ ॥ कागनें योग्य ते कागडी, हंसली पामे न सोह ॥ निज कहे पण रायनें, नवि लागो पडिबोह ॥ ॥ क० ॥ २६ ॥ विजयसुंदरी ए धन्य छे, कीधो नवि मन खेद ॥ एहवी जीड पडे थके, नवि पामी निरवेद ॥ क० ॥ २७ ॥ सत्तरमी त्रीजा खंममां, पद्मविजय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥ ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपसार रंजातणुं, करी धाता लेई केलि ॥ तेहनें पवनसी लघु तुमें, निज कहे करि मन जेलि ॥ १ ॥ चंद्रमुखी चोशठ कला, पद्मनेत्रापि कराव ॥ धर्मजाण धर्मचारिणी, जाग्यवंती जलो जाव ॥ २ ॥ राजहंस गति राजती, रति जींते रूपेण ॥ विनयादिक गुणवंत ए, सोजागी सुस्वरेण ॥ ३ ॥ निज किहां दोजागीयो, कठीयारोनें कुरूप ॥ लक्षण हीण ल

खी मनें. निजनें कम थो नृप ॥ ४ ॥ न्हेद खदे बहु परखदा. हा हा ए शुं होय ॥ मंत्री कहे एतनी नहीं मणा. कहे एणी परें सहु होय ॥ ५ ॥ अ पत्य उपर अति क्रोध इयो, कुःख आगल देनार ॥ विपदा लहियें विरुद्ध थी, नृपति नणे तिवार ॥ ६ ॥ दोष शाने मुज दाखवो, जैनधर्मिणी जे ह ॥ मंत्री दोष न माहरो, आपें वरियो एह ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ घरें आवो जी आंबो मोहोरी यो ॥ ए देशी ॥

॥ कहे नृपति सांनलो मंत्रवी,नरपतिनी रीति ने एह ॥ निज नाग्य प्र माणें पति वरे, साखी मात्र पिता होये जेह ॥ १ ॥ नवि दृष्टिराग तुमें परिहरो, दृष्टिराग अनर्थनो गाय ॥ दृष्टिरागें नृपति कहे निजनें, में दी धी ते फेर न थाय ॥ न० ॥ २ ॥ कलावंतीशुं सुख नोगव सुखें, तुज सा हेब तूठो जाण ॥ कहे पुत्रीनें पंमित मानती, करी कुल आचारनी हाण ॥ न० ॥ ३ ॥ अवज्ञा पितानी करी घणी, निज आपें वरियो एह ॥ तेह नां फल नोगवो मोजशुं, करो अरिहंत धर्मशुं नेह ॥ न० ॥ ४ ॥ कहे वि जयसुंदरी तातनें, इहां वांक नहीं तुम रेख ॥ सुख दुःख जे जगमां पामीयें, ते कर्म तणा ने विशेष ॥ न० ॥ ५ ॥ यतः ॥ सव्वो पुव्व कयाणं, कम्माणं पावए फल विवागं ॥ अवराहे सुगुणे सुध. निमित्त मित्तं परो होइ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तुम कुल अजुवालीन तातजी, एह नर्ता इंद्र समान ॥ ते सां नली नृप क्रोधें चढ्यो, जेम अग्निमां घृत असमान ॥ न० ॥ ६ ॥ विष ना वित तांबूल आपियुं, अण पोहोरें अंध ते थाय ॥ नोजन अंतें निज पुत्री नें, वरनें दीधुं सुधि जाय ॥ न० ॥ ७ ॥ नृप कहे जाउ निजथानकें, सांन ली चाल्यो निज थान ॥ गायनी परें नृपनंदिनी, चाली नरता अनुमान ॥ न० ॥ ८ ॥ राजा कहे सहुनें सांनलो, जे जाशे एहनी साथ ॥ अथवा धन आपशे एहने, तो मारीश तेहने हाथ ॥ न० ॥ ए ॥ नृपक्रोधथी मौ न करी रह्या, सचिवादिक पुरनां लोक ॥ देवनें उलंनो आपता, धरता म नमां अति शोक ॥ न० ॥ १० ॥ पुर बाहिर आव्यां दंपती, देवकुलमां कीध आवास ॥ पतिपद उत्संगें लेइ करी, उल्लासें निज करें तास ॥ न० ॥ ॥ ११ ॥ ते देखी दूरथी नृप नयें, स्तवना करे नारीनी ताम ॥ नृपनी निं दा करे सहु जना, नृप माहा अधर्मनुं धाम ॥ न० ॥ १२ ॥ हवे पूछे नि ल निज नारिनें, तुं रूपें रंजसमान ॥ केम मुजनें आपी तुज पिता, तव सुं

दरी कहे धरी शान ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे महोटी कथा छे एहनी, सांजलो पद्मरथ नूपाल ॥ पद्मपुरमां राज्य करे सदा, अरि काल सबल करवाल ॥ ज० ॥ १४ ॥ प्रजानें सुखदायी सदा, पण नास्तिक मतमां सोय ॥ राणी दोय अतिशय वालही,पदमा कमला नामें होय ॥ ज० ॥ १५ ॥प दमा पतिधर्म ते आचरे, कमला जैन गुरु उपदेश ॥ वली श्रावककुलमां ऊपनी, तेणें जैनधर्म सुविशेष ॥ ज० ॥ १६ ॥ पद्म नामें पुत्र पद्मा तणो, जयसुंदरी पुत्री एक ॥ कमलानें तो एक पुत्रिका, नामें विजयसुंदरी सुवि वेक ॥ ज० ॥ १७ ॥ दोय कुमरी धाव पाली लली, वधतां थइ जणवा यो ग्य ॥ मिथ्यात्वी पाठकनी कनें, पद्मा मूके ते अयोग्य ॥ ज० ॥ १८ ॥ जे जै नकलाचारय होय, निज पुत्री कमला मूके ॥ तस पासें शास्त्र अभ्यासवा, कांय विनय विवेक न चूके ॥ ज० ॥ १९ ॥ जयसुंदरी मात संयोगथी, ते म अध्यापक अज्ञान ॥ तेणें कौलधर्मी थइ आकरी, बीजी जैनधर्म वि ज्ञान ॥ ज० ॥ २० ॥ ते पाठक बिहुं तस मातनें, सोंपे लही यौवन वेद ॥ धन आपे अध्यापक प्रत्यें, करे प्रीतिवंत गतखेद ॥ ज० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंमें अढारमी, कही पद्मविजय वर ढाल ॥ दृष्टिराग तजो तुमें नविज ना, दृष्टिरागथी बहुजंजाल ॥ ज० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शणगारी बेंहू सुता, पाठकशुं नृप पास ॥ चिंता वरनी चिंतवी, जण वानो अन्यास ॥ १ ॥ जोवा मूके जालवी, माता मनमां आण ॥ पोहोती नरपति पाउले, सकलकला गुन जाण ॥ २ ॥ बेसाडी उत्संग बिहु, पूछे पा ठ स्वरूप ॥ पाठक बोलावी पछे, नव नव प्रश्न अनूप ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ साहेलडीयांनी देशी ॥

॥ पूछे नृप निजनंदिनी ॥ साहेलडीयां ॥ पद समस्यानुं एक ॥ गुण वे लडीयां ॥ कहे तमें जो निज शास्त्रमां ॥ सा० ॥ मति कीधी होये ठेक ॥गु० ॥ १ ॥ (समस्यापदं यथा ॥ पेरकई सुरक सयाइं) ते जयसुंदरी सांजली ॥ ॥ सा० ॥ तात धरममां जेह ॥ गु० ॥ पद समस्यानुं पूरती ॥ सा० ॥ सांज लो आगल तेह ॥ गु० ॥ २ ॥ उक्तो ॥ तुह संकर तुह बंज निव, तुह पुरि सुत्तम ताय ॥ तुज्झ पसाइण सव पया, पेरकई सुरक सयाइं ॥१॥ पूर्वढाल॥ सांजली राजा रंजियो ॥ सा० ॥ सहु परखदनां लोक ॥ गु० ॥ पाठकनें सुं

दरी तणा ॥ सा० ॥ गुण स्तवे मलि मलि थोक ॥ गु० ॥ ३ ॥ पण बीजी कन्या हसे ॥ सा० ॥ पेखे नरपति ताम ॥ गु० ॥ कारण पूछे नृपति ॥ ॥ सा० ॥ हसवुं शे थयुं आम ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुमरी कहे कांइ नही ॥ ॥ सा० ॥ तव आग्रह करे नृप ॥ गु० ॥ विजयसुंदरी तव कहे ॥ सा० ॥ सांजलो तात अनूप ॥ गु० ॥ ५ ॥ बृहस्पति जीत्यो बुद्धिथी ॥ सा० ॥ नीति शास्त्रना जाण ॥ गु० ॥ तुमें अति निपुण गो लोकमां ॥ सा० ॥ ज गमां अधिक विन्नाण ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुज नगिनी पद सांजली ॥ सा० ॥ मोद लह्या अतिरेक ॥ गु० ॥ तत्त्व न समजे ए सजा ॥ सा० ॥ प्रशंसे अ विवेक ॥ गु० ॥ ७ ॥ तत्त्व अजाणने आगलें ॥ सा० ॥ जाण ते वर्त्ते केम ॥ गु० ॥ एहवुं अचरज देखीने ॥ सा० ॥ मुज हसवुं थयुं एम ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ॥ सा० ॥ तुमें तत्त्वनां जाण ॥ गु० ॥ पू रो समस्या हवे तुमें ॥ सा० ॥ जोइयें तुम विन्नाण ॥ गु० ॥ ए ॥ नृप आणा हवे सही करी ॥ सा० ॥ तत्त्ववासित मति जास ॥ गु० ॥ हरखी समस्या पूरती ॥ सा० ॥ जैनागम अन्यास ॥ गु० ॥ १० ॥ दुहो ॥ जि णवर जसु हियडे वसे, जिण सुणि जिण तत्ताइं ॥ ते पंमिय जिण जन य नव, पिरकइ सुरक सयाइं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एह समस्या सांजली ॥ ॥ सा० ॥ पावक पाम्या दर्प ॥ गु० ॥ सजालोक पण कोइ जना ॥ सा० ॥ हरख्या अति उत्कर्ष ॥ गु० ॥ ११ ॥ पण नृपतिना जयथकी ॥ सा० ॥ मौ न करी रह्या तेह ॥ गु० ॥ चमत्कार चित्त पामीया ॥ सा० ॥ अतिशय ध रता नेह ॥ गु० ॥ १२ ॥ नृप पूछे सहु लोकनें ॥ सा० ॥ बोलो तुमें सहु साच ॥ गु० ॥ केहनी समस्या तत्त्वनी ॥ सा० ॥ केहनी रूडी वाच ॥ गु० ॥ ॥ १३ ॥ कहे ते आय साची कही ॥ सा० ॥ अनुनव सिद्ध ए अर्थ ॥ गु० ॥ विजयसुंदरीनें कहे ॥ सा० ॥ नृपति तें कह्युं व्यर्थ ॥ गु० ॥ १४ ॥ रे कटु नाषिणी तुं सुता ॥ सा० ॥ बोले लोक विरुद्ध ॥ गु० ॥ पुत्री वैरिणी ना वथी ॥ सा० ॥ एम बोले नृप क्रुद्ध ॥ गु० ॥ १५ ॥ कुमरी कहे में तुम क ह्युं ॥ सा० ॥ तत्त्व न जाणे लोक ॥ गु० ॥ हाजी हा सघला करे ॥ सा० ॥ रूडुं मनावे फोक ॥ गु० ॥ १६ ॥ कोपें राजा कलकल्यो ॥ सा० ॥ कहे तुं कोण पसाय ॥ गु० ॥ सुख नोगवे तव में कह्युं ॥ सा० ॥ कर्म प्रसादें राय ॥ गु० ॥ १७ ॥ सहुये निज निज कर्मथी ॥ सा० ॥ सुख दुःख लहे

संसार ॥ गु० ॥ तुम प्रसाद जो सुख होये ॥ सा० ॥ केइ दुःखीया केम धार ॥ गु० ॥ १८ ॥ तव राजा क्रोधें चढ्यो ॥ सा० ॥ कहे नरता कोण तुझ ॥ गु० ॥ में कहुं जे तुमें आपशो ॥ सा० ॥ देव समान ते मुझ ॥ ॥ गु० ॥ १९ ॥ कर्म प्रमाणें आपशो ॥ सा० ॥ तुमें पण मुज नरतार ॥ ॥ गु० ॥ क्रोधें कहे मुज जा परी ॥ सा० ॥ आवजे तेहुं तेवार ॥ गु० ॥ ॥ २० ॥ निज थानक वेहु अमें गया ॥ सा० ॥ निज नटनें कहे राय ॥ गु० ॥ दुःखीयो जे कोइ नयरमां ॥ सा० ॥ ते लावो मुज पाय ॥गु०॥ ॥ २१ ॥ ते पण तुमनें लावीया ॥ सा० ॥ आगल जाणो सर्व ॥ गु० ॥ एम सांनली विस्मय लह्यो ॥ सा०॥ निज्ञ कहे अहो गर्व ॥ गु० ॥ २२॥ निज अपत्यनें कपरें ॥ सा० ॥ केवुं अकारय कीध ॥ गु० ॥ नास्तिकनें कह्यो केम होये ॥ सा० ॥ जैनविवेक प्रसिद्ध ॥ गु० ॥ २३ ॥ निज्ञ विचारे चित्तमां ॥ सा० ॥ शील तथा वली स्नेह ॥ गु० ॥ जोउं दृढता एहमां ॥ सा० ॥ धर्मस्नेह वली जेह ॥ गु० ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें ए कही ॥सा०॥ ठंगणीसमी वर ढाल ॥ गु० ॥ पद्मविजयें सोहामणी ॥ सा० ॥ धर्म मंगलमाल ॥ गु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तांबूल नखियुं तेहवुं,विष व्याप्युं विकराल ॥ आंख व्यथा थइ आकरी, निम्ननें कहे जुउ नाल ॥ १ ॥ नृप पासें विष छे नवल,जेहथी आंख्यो जाय ॥ त्रण पोहोरमां ततक्षणें, वेदन अति वेदाय ॥ २॥ विश्वासी वैरी जणो, आपे अवनीपाल ॥ तंबोलमांहे तेहनें, कोपें थई कराल ॥ ३ ॥ में परसाद जाण्यो मनें, लायुं तंबोल खांत ॥ कर्म शुनाशुन कीधलां, आवे उदय एकांत ॥ ४ ॥ आंख्यो जाशे आपणी, देवें अंधापो दीध ॥ केम तुम सेवा कारणनां, थशे मनोरथ सिद्ध ॥ ५ ॥ नारनूत तुमने थई, वधि वेदन तेणी वार ॥ रोवे तेम रोवरावती, वनमां पशुनां वाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ कोयलो पर्वत धुंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो, कर्म कर्यां नवि जाय रे ॥ नविकजन ॥ वचन योगें करी बांधीयां रे लो, कायायोगें नोगवाय रे ॥ न०॥ १ ॥ कर्म म करजो प्राणीया रे लो ॥ ए आंकणी ॥ मंत्रीनी स्त्रीयें मुनिनें कह्युं रे लो, नवि सूजे तुम केम रे ॥ न० ॥ एहवा सूर्य प्रकाशमां रे लो, अंध

जणाउं एम रे ॥ न० ॥क०॥३॥ अंधनें आपो नित्तनें रे लो, ए पूरव नव बांध्यु रे ॥ न० ॥ आलोपुं ने पडिकम्युं रे लो. पश्चात्ताप बहु आणि रे ॥ ॥ न० ॥ क०॥३॥ पण एक नवें जे जोगवे रे लो, तेटलुं रह्युं तस शेष रे ॥न०॥ कर्म कह्यां तूटे नहीं रे लो.जोगव्या विण ते अशेष रे ॥न०॥क०॥ ॥ ४ ॥ नित्तनें दीधो आल्यो गई रे लो, एणे नवें आव्युं कर्म रे ॥न०॥ आशातना मुनिराजनी रे लो,महा दुःखदायी अधर्म रे ॥ न०॥ क०॥ ५ ॥ रायें मूक्या मानवी रे लो,गना जोवा काज रे ॥न०॥ सवि वृत्तांत जई कह्युं रे लो, तांजली हरख्यो राज रे ॥ न०॥क०॥ ६ ॥ क्रोधी निर्दयीनें कदा रे लो, नवि होये पश्चात्ताप रे ॥ न० ॥ कमला पूरवें मोकली रे लो.कार्य व देशी आप रे ॥न०॥क०॥७॥ इष्ट वियन शंका धरी रे लो, कपट कर्युं एम राय रे ॥ न० ॥ कार्य करी आवी हवे रे लो, वात सुणे सवि माय रे ॥ ॥न०॥क०॥ ८ ॥ मूर्छा पामीनें पडी रे लो,शीतादिक उपचार रे ॥न०॥ दासीयें कीधो तेहथी रे लो, पामी चैतन्य तेवार रे ॥न०॥क०॥९॥ करिय विलाप रुदन करे रे लो,पुत्री जोवा काम रे ॥न०॥ रातें दोय दासी लइ रे लो, पोहोती तिणहिज गाम रे ॥न०॥क०॥१०॥ दूरथी जोइ पाठी वली रे लो, क्रोधनें दुःख अपार रे ॥ न० ॥ रायनें कहे धिग दुर्मति रे लो, सवि विरुद्ध करनार रे ॥न०॥क०॥११॥ चंमाल पण न करे कदा रे लो.निज संतानथुं द्वेष रे ॥ न० ॥ पुत्री विटंबी माहरी रे लो, वली अधित सुविशेष रे ॥ न० ॥क०॥१२॥ वात यथार्थ तुजने कही रे लो,श्यो कीधो अन्याय रे ॥ न० ॥ निंदित कर्मथी तुजनें रे लो, नरकें निश्चय गाय रे ॥ न०॥क०॥ ॥१३॥ पेट छुरी नाखी मरुं रें लो,एम कही नाखे जाम रे ॥ न०॥ ते छुरी उदाली ल्लियें रे लो,नरपति वलथी ताम रे ॥न०॥क०॥१४॥ नृप कहे सुण सुंदरी रे लो, क्रोधें ए कर्युं काम रे ॥ न० ॥ हवे लोक सचिव निंदा करे रे लो, पग पग माहरी आम रे ॥न०॥क०॥१५॥ ताहरी पण प्रेरणाथकी रे लो, पश्चात्ताप घणो थाय रे ॥ न० ॥ विहाणे शोध करावशुं रे लो, आण शुं आपणे गय रे ॥न०॥क०॥१६॥ औषध माहरे छे वली रे लो, अंधापो जेणें जाय रे ॥ न० ॥ ते औषधें साजी करुं रे लो, चिंता न कर तुं कांय रे ॥न०॥क०॥१७॥ देखुं कोइ नृप पुत्रनें रे लो, क्रोधें जे कर्युं काम रे ॥न० ॥ तेह प्रमाण नहीं कदा रे लो, आश्वासें नृप वाम रे ॥न०॥क०॥१८॥ राति

गई दुःखनी तिहां रे लो, विजयसुंदरीनां नयण रे ॥ ज०॥ कामला हवे नि ज कर्मनें रे लो,निंदे दुःखिणी वयण रे ॥ज०॥क०॥१९॥ के जिनवर आशा तना रे लो, अथवा गुरु गुणवंत रे ॥ ज० ॥ गर्हा करी अथ संवनें रे लो, उपद्रव कीध अनंत रे ॥ज०॥क०॥२०॥ हा मुज जनम शाने थयो रे लो, शाने पाली मुज्ज रे ॥ ज०॥ केम नवि मूइ बालक थकां रे लो,पण ए कर्म नुं गुज्ज रे ॥ज०॥क०॥२१॥ एम ते विलपती देखिनें रे लो,कृपा उपनी तव निल रे ॥ ज० ॥ औषधि पाणीयें सज्ज करे रे लो, आंख्यो थइ ते नवल रे ॥ज०॥क०॥२२॥ वेदना नागी सर्वथा रे लो,दिव्य नेत्र थई तेह रे ॥ज०॥ चिंतवे कर्मथकी लह्यो रे लो, एहवो नरता एह रे ॥ ज०॥क०॥२३॥ त्रीजे खंडनें वीशमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ज०॥ श्रीजयानंदना रासमां रे लो, पुण्यें मंगल माल रे ॥ ज० ॥ क० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवतानिध्य पण दोहली,एहवी औषधि एह ॥ निल कहे नमतां थ कां, गिरि उपर गुणगेह ॥ १॥ काष्ठनें अर्थे किहांयके,वृद्ध शबरनें वयण ॥ औषधि महिमा उजलुं,निरखी चिन्हें नयण ॥ २ ॥ लीधी विधि पूर्वक लता, राखी रूडी रीति ॥ हमणां ते सफली हुइ, नेत्रदाननें नीति ॥ ३ ॥ पण द रिद्री कदरूप हुं, जघन्य अने कुलजात ॥ उत्तम कुल तुं कपनी, ताहरो नृ पति तात ॥ ४ ॥ निल हुं नर्त्ता योग्य नहीं, नवि वटलावूं नाम ॥ तुं रूपें रंना जिसी, केम करुं पाप निकाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ वारी हुं गोडी गामने ॥ ए देशी ॥

॥ तुं सुकुमाल शरीर ने,रविकर परस्या नाहिं सुंदरी ॥ तो केम काष्ठ वही के, जा नृप पास वधांहिं सुंदरी ॥ १ ॥ काम विचारी कीजीयें ॥ ए आंक णी ॥ रोष शम्यो हशे हवे, मावित्रनें जे क्रोध सुंदरी ॥ नवि बहु काल लगें रहे, वली अपवादें लह्यो बोध सुंदरी ॥ का० ॥ २ ॥ तुज माता द यित थशे, राजकुमर कोइ सार सुंदरी ॥ तस परणावशे उत्सवें, सफल थ शे अवतार सुंदरी ॥ का० ॥ ३ ॥ करयह मात्रज मुज वरी, हुं आणा देउं तुज्ज सुंदरी ॥ दोर नहीं तुज कोइ इहां, अधिक संबंध न मुज्ज सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ ४ ॥ तुज मूकुं नृपने घरें, जेम नवि जाणे कोय सुंदरी ॥ हुं जाइ श छानो वली, परगट वात न होय सुंदरी ॥ का० ॥ ५ ॥ सांनली खेद ल

ही घणो, गदगद बोले वाणि प्रीतम ॥ शुं बोल्या ए स्वामिजी, वज्राघात समान प्रीतम ॥ का० ॥ ६ ॥ कुलवंती कन्या होये,एकज वार देवाय प्रीत म॥ जेह पितायें पति दियो, प्राणांतें न ठंमाय प्रीतम ॥ का० ॥ ७ ॥ तुमें पति तुमें मति तुमें गति, जेहवा होय ते प्रमाण प्रीतम ॥ शरण तुमारुं आदखुं,अवर ते भ्रात समान प्रीतम ॥ का०॥ ८ ॥ जो तुमें गंमी मुजनें, तो संयम आधार प्रीतम ॥ अथवा अगनि शरण करुं, बीजो को न विचा र प्रीतम ॥ का० ॥ ए ॥ वात सुणी निज्ञ चिंतवे, दृढशीलनें वली स्नेह सुंदरी ॥ आनंदजर निज्ञ बोलियो, सांजलजे कहुं जेह सुंदरी ॥ का० ॥ ॥ १० ॥ तूंही तुज कुलदेवता, वली मातानी आशीष सुंदरी ॥ पुण्य जाग तां ताहरां, ताहरी चढती जगीश सुंदरी ॥ का० ॥ ११ ॥ कारिमो निज्ञ हुं कारणें, स्वाजाविक जो रूप सुंदरी ॥ देखाडुं तुज माहरुं, जो हवे शुद्ध स्वरूप सुंदरी ॥ का० ॥ १२ ॥ एम कही स्वाजाविक करे, अप्सरा मोहे जास सुंदरी ॥ तो नारीनुं कहेवुं किश्युं, देदीप्यमान आजास सुंदरी ॥ ॥ का० ॥ १३ ॥ रत्नोद्योतें देखी करी, आणंद अंग न माय सुंदरी ॥ वि जयसुंदरी एम कहे, ए शुं कौतुक थाय प्रीतम ॥ का० ॥ १४ ॥ नाना रू पें सुरपरें, मुंजवो केणी परें स्वामि प्रीतम ॥ कुमर कहे सुण सुंदरी, क्ष त्रियसुत अजिराम सुंदरी ॥ का० ॥ १५ ॥ देश जमुं कौतुकथकी, कला विज्ञाननें हेत सुंदरी ॥ विविध देश जमतां थकां, थयो बहु कला उपेत सुं दरी ॥ का० ॥ १६ ॥ विविध महिमावंत औषधि, पाम्यो वली देवें दीध सुं दरी ॥ आकाशगामि ढोलीयो, जिणथी मुज प्रसिद्ध सुंदरी ॥ का० ॥१७॥ गिरि नगरादिक बहु जोतं, रत्नपुरें एकदिन्न सुंदरी ॥ नृपपुत्री रतिसुंदरी, परण्यो पूरव पुण्य सुंदरी ॥का०॥१८॥ नृप दीधा आवासमां जोगवुं जोग रसाल सुंदरी ॥ स्वप्न दीठुं में अन्यदा,निज्ञरूप विकराल सुंदरी॥का०॥१ए॥ सुपन विघातनें कारणें, निज्ञरूप कर्युं एह सुंदरी ॥ राजपुरुष मुज ला वीया, तुं जाणे सवि तेह सुंदरी ॥का०॥२०॥ वात कही ते सांजली, हर्ष विकस्वर देह सुंदरी ॥ ज्ञानी वचन साचुं थयुं, एम कहे अहो न संदेह प्री तम ॥का०॥॥२१॥ सुणो एक दिन उद्यानमां,आव्या ज्ञान निधान प्रीतम ॥ गुरु गुणवंत दासीयें कह्या, हुं गइ तेह उद्यान प्रीतम ॥का०॥२२॥ माता सहित वंदन करी, देशना अंतें मात प्रीतम ॥ मुज पुत्री वर कोण थशे,

ध्यजीव रतिसुंदरी विजयसुंदरी महावदातमहोत्सवपाणिग्रहणलक्ष्मीपुंज दृष्टांत तृतीयव्रतपालनादि फलदर्शन कमलसुंदरीकरग्रहणप्रस्तावनादि व र्णनोनामा तृतीयःखंमः समाप्तः ॥

॥ प्रथम खंमे गाथा ॥ ४४४ ॥ द्वितीयखंमे गाथा ॥ ७६६ ॥ तृतीयखं मे गाथा ॥ ७२ए ॥ सर्वमली गाथा ॥ २१३ए ॥ तथा प्रथमखंमे वक्त श्लो क ॥ १३ ॥ द्वितीयखंमे वक्त श्लोक ॥ १ए ॥ तृतीखंमे वक्त श्लोक॥११॥ सर्व मली वक्तश्लोक ॥४३॥ तथा सवईयो एक,समस्या बे ॥ इति ॥ तथा प्रथम खंमे ढाल ॥ १५ ॥ द्वितीयखंमे ढाल ॥ ३३ ॥ तृतीयखंमे ढाल ॥ २३ ॥ सर्व मली ढाल ॥ ७१ ॥ थई बे.

॥ इति तृतीयखंमः संपूर्णतामगमत् ॥

॥ अथ चतुर्थखंमः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन नायक शिवकरण, वंडुं श्रीवर्द्धमान ॥ चोथा खंमतुं चोंपशुं, वर्णवशुं व्याख्यान ॥१॥ सांनलजो श्रोता सवे, आलस दूर उतार ॥ निद्रा विकथा नवि करो, वाधे जिणथी विकार ॥ २ ॥ प्रिया सहित पल्यंकथी,चा ल्यो गगन विचाल ॥ आव्यो कमलपुरें कुंअर, करे वंवित ततकाल ॥ ३ ॥ पल्यंक किहांएक गोपव्यो, उद्यानें एकंत ॥ बुद्धिनिधि शावर तणुं, रूप करे रुचिवंत ॥ ४ ॥ प्रिया शावरी रूपथी,साथें लेई सार ॥ वेष धरी वैद्यज तणो नमतां स्त्री नरतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ उपधिनी हवे ग्रंथि करी, चाल्यो काखमांहे ते धरी ॥ अलंकार प हेख्या बहु मूल, बिहुं जण धरतां सबल डकूल ॥ १ ॥ पेठो नयरीमां अ निराम, साथें लेइ पोतनी वाम ॥ पोहोतो एक शेठनें घर द्वार, शेठनें कहे सांनलो एणी वार ॥ २ ॥ चित्रशाला द्यो रहेवा नणी, नाडुं आपुं तुमनें गणी ॥ शेठ कहे तुमें कोण बो कहो, किहांथी आव्या किहां वासें रहो ॥ ॥ ३ ॥ ते कहे निज्ञ हुं वैद्य सुजाण, टालुं रोग विविध डःख खाण ॥ कौतुकथी नमुं देशांतरें, नारी साथ राखुं शुन परें ॥ ४ ॥ नयर दीठुं ए ऋद्धितुं ठाम, वसवा मागुं तुमचुं धाम ॥ शेठ कहे कोपें कलकल्यो, नि

प्रवादे जा तुं ह्लफल्यो ॥ ५ ॥ निज अशुचिनें अन्नाण, किहां मुज परमां रहेवा गण ॥ किहां मीयांने किहां महादेव, किहां वाणिग घरें तुं रहे हेव ॥ ६ ॥ अर्द्ध लक्ष ल्यो नाई तुमो, थोडा दिन रहेशुं इहां अमो ॥ एम कही आप्युं एक रत्न, शेठ विचार करे शुन यत्न ॥ ७ ॥ धनद हशे के वि द्याधरो. के ईश्वर दानें आकरो ॥ एहवी दान लीला किहां होय, इच्य देखि चित्त चलियो सोय ॥८॥ शेठ निलनें आदर करी,कहे ल्यो चित्रशाला मन हरी ॥ शुचि अशुचि न जाति विचार. गुण ते पवित्र अने संसार ॥ ए ॥ नारी सहित चित्रशालायें रहे, शेठ देखी चित्तमां गहगहे ॥ रत्नें घर वा खरी तस दिये. आणंद शेठने न मापे हिये ॥ १० ॥ रत्नें मनोरथ पूरा करे, नारी रूपें रंना हरे ॥ तेहशुं नोगवे नवला नोग, श्रीजयानंद ते शुन संयोग ॥ ११ ॥ विविध लोकनां औषध करे,लोक तणा बहु रोगज हरे ॥ शवर वैद्य परगट कयुं नाम, नवि लिये कोइ पासेंथी दाम ॥ १२ ॥ वीणा प्रमुख वजावे आप, राग तणा वली करे आलाप ॥ वीण वजावे कोइ दिन नारि, गायन पासें सुणे केइवार ॥ १३ ॥ नाच करावे नाटकणी पास, अढलक दान दीये वली तास ॥ नाम शवर वैश्रमण ते कहुं, लोकें हर षथकी चित्त लहुं ॥ १४ ॥ ए नामें थयो लोक प्रसिद्ध, स्वेछायें विलसे जेम सिद्ध ॥ एकदिन नगर उद्यान मकार, एक ब्राह्मण उत्तम शिरदार ॥१५॥ नरतें कीधा जे आरय वेद, छात्र नणावे बहु गत खेद ॥ महाबुद्धिवंत ते खोले विप्र,विप्र विना वेद नापे क्षीप्र ॥ १६ ॥ एम चिंतिनें पूछे शेठ, जाशुं अमें हवे इहांथी नेठ ॥ घर वाखरी सोंपी लेई नारी, नीकलीयो हवे रात मकार ॥ १७ ॥ रात रह्यो हवे तेह उद्यान, विप्ररूप कीधुं असमान ॥ ब्रा ह्मणीरूपें नारी करी, हेतु तास कह्यो चित्त धरी ॥ १८ ॥ यौवनवय पहेर्यो अलंकार, पेठा विद्याएं नगर मजार ॥ वणिकगृहें पूरवनी परें, नाडुं आपी रहे शुन परें ॥१९॥ घर वाखरी तेणें पण दीध,बहु दास दासी तिहां वली कीध ॥ परीक्षा करी वृद्ध स्त्री वली एक, राखी नारी पासें सुविवेक ॥२०॥ विनय उपाध्यायनो करी हवे, पूजा करवा रतन ते ठवे ॥ उपाध्याय नणावे तास, वेद ते नीति धरम प्रकाश ॥ २१ ॥ चोथे खंमें पहेली ढाल, श्रीज यानंदनुं चरित्र रसाल ॥ पद्म कहे सुणो बाल गोपाल, सुणतां होवे मंगल माल ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाग्यथी अल्प दिनें जस्यो, प्रज्ञावंत प्रधान ॥ पदानुसारिणी पामीयो, सकल वेद सावधान ॥ १ ॥ प्रशंसा बहु पामीयो, गुरु पूजे गुरुदान ॥ दानें गात्र प्रमोदिया, चमक्या सहु पहिचान ॥ २ ॥ जोग रसाला जोगवे, पूरव परें प्रसिद्ध ॥ ब्रह्मवैद्य विख्यातथी, सहुमां थयो समृद्ध ॥ ३ ॥ करे उपकार कोडयो गमे, गीत नाटकनें गान ॥ राजपंथें रलीयामणो, देवे अतिशय दान ॥ ४ ॥ वेद्य वैश्रमण कह्यो वली, दानें अतिदातार ॥ रूप सुवर्णनें रत्ननुं, लेखुं नहीं लगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ जाव श्रावकना जांखीयें ॥ ए देशी ॥

॥ पटह वाजतो एकदिनें, सांजलीयो निज कानें रे, बहुमानें रे, नवि आव्यो राजाकनें ए॥१॥ कन्या लोक शंका धरी, हवे लोक कहे शुं ए देव रे, नहीं टेव रे, अधर जावानी एहने ए ॥ २ ॥ अश्वनीपुत्र ए पण नही, एह रहे निच्य एक रे, सुविवेक रे, दाता एह धनद जिस्यो ए ॥३॥ जेशज दान लीला वली, सकल कला जंमार रे, जूई प्यार रे, एहवा दीठा न सांजस्या ए ॥ ४ ॥ पहेलां निछ एक एहवो, दीठो तेहवो एह रे, गुणगेह रे, मानुं रूपांतरें आवियो ए ॥ ५ ॥ एम विकल्प सहु करे, एकदा बहुजन परिवारें रे, शुन गारें रे, वेठो राज्यपंथें जइ ए ॥६॥ वीणा वजावे कौतुकी, बहु मित्रशुं गावे हर्षे रे, श्रुति वर्षे रे, अमृत रस शुन स्वरथकी ए ॥ ७ ॥ दासी वृंद हवे जायती, पाणी जरवा काम रे, ताम रे, कुब्जा दासी एकले ए ॥ ८ ॥ गीत रसें कली रही, पूछे ब्राह्मण तास रे, किहां वास रे, तारुं हारोनें तुं कोण ने ए ॥ ९ ॥ दासी कहे सुण साहेबा, जोगवती नृप राणी रे, तस जाणी रे, हुं कुब्जा दासी घरें ए ॥ १० ॥ किम कुब्जा ब्राह्मण जणे, सा कहे मुज वायुदोषें रे, विप्र जापे रे, वैद्य कह्यो कोइ नवि मल्यो ए ॥ ११ ॥ सा कहे बहु उपाय कर्या, पण न मल्यो तुम सम कोइ रे, मुज होइ रे, जाग्य मंद ते कारणें ए ॥ १२ ॥ तेडी दासी ढूकडी, जोइ नाडा जाल मर्म रे, शुन कर्म रे, मुष्टियें हणी हणी सज करी ए ॥ १३ ॥ तेह सरल थई हरखती, बोले एम ते वाणी रे, बहु प्राणी रे, जाग्यथकी तुमें आविया ए ॥ १४ ॥ आवो नरपतिनें घरें, तस पुत्र नीरोगी कीजें रे, लीजें रे, पूजा नृपति लोकनी ए ॥ १५ ॥ द्विज कहे जा ताहरे घरे, नहीं राज्य

कुब्जें मुज काम रे, राणी पाम रे, आवी ते उतावली ए ॥१६॥ राणी कहे तुं कोण ठे, कहे हुं कुब्जा तुम दासी रे, नहिं हांसी रे, राणी कहे केम स रल तुं ए ॥१७॥ तव कहे वैद्य वैश्रवणनी, वात ते अचरजकारी रे, मनो हारी रे, सांजली वात राणी वदे ए ॥१८॥ किहां ठे तव दासी कहे, श्री पंथें ठे तेह रे, नेह रे,आणीनें राणी कहे ए॥१९॥ पुत्र साजो करे के नहीं, तव दासी कहे जग ते नहीं,जे अहीं नहीं,शक्ति ते अद्भुत देखीयें ए॥२०॥ राणी कहे जई रायनें, राजा मूके परधान रे, बहुमान रे, करीनें तेहनें तेडया ए॥ २१ ॥ तव आव्यो नृप परषदा, उंषधिगांवडी लेई रे, सुखसंई रे, यज्ञोपवीतादिक धरी ए॥ २२ ॥ आशीष दीये नरनाथनें, हित मितनक्ती वामशायी रे, निर्मायी रे, गदपरें शत्रुजय करो ए॥ २३ ॥ यतः ॥ जुंजा नोहितमितपक्वमेव सात्म्यं कुर्वाणः, श्रममुपसीह वामशायी। स्त्रीसेवा नि लमलमूत्रशल्यमुंचन्, नूतांतर्गदगणवक्ष्यारिचकम् ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ आ शीर्वादमां सांजली, जैषज्यतत्त्वनी वात रे, हर्ष जात रे, कनक आसन देसाडीयो ए॥ २४ ॥ नृप पूछे जइ कोण ठो, आव्या किहांथी बुद्धिनि धान रे, पुरवान रे, तुम आवे वाध्यो घणुं ए ॥ २५ ॥ ते कहे ब्राह्मण हुं अमें, गिरिपालें वसे मुज तात रे, तस ज्ञात रे, वपदेशें बहु उंषधि ए ॥ २६ ॥ पर्वत वनमां बहु जम्यो,उजली उंषधि बहु लीधी रे, कीधी रे, नी रोगी जन श्रेणीनें ए॥ २७ ॥ गाम नगर फरतो फरुं, एक कौतुक परउप कार रे, आगार रे, आव्यो एणीपरें तुमतणे ए॥ २८ ॥ चोथे खंमें ए क ही, पद्मविजय वर ढाल रे, रसाल रे, बीजी सुंदर रासमां ए॥ २९॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे रुडुं कस्युं,आव्या पर उपकार ॥ बोल्या ते पालो वली,तुम उत्तम अवतार ॥ १ ॥ माहरे सुत महा रोगीयो, संकोचाणुं शरीर॥ औ षध शक्ति अचिंत्यथी, परी करो मुज पीड ॥ २ ॥ तुम आकार वचन तथा, महाशय प्रकृति महंत, उपकारी अवनीतलें, प्रगटया तुमें पुण्यवंत ॥ ३ ॥ नंदन तुमचो निरखीयें, वाडव बोले वाणि ॥ साध्य हशे तो साधशुं, प्रथम करुं पहिचाण ॥ ४ ॥ मंत्री राय वाडव मुखा, साथें लेइ सनूर ॥ निजनंदन निरखाववा, हितथी कर्यो हजूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कांकरिया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥
॥ माया विप्र कहे सुणोजी, रोग ए विषम विकार ॥ उषधि साध्य के वल नहींजी, जोइयें मंत्र प्रकार ॥ १ ॥ सुविवेक साजन, जूउं जूउं शक्ति अचिंत्य ॥ ए आंकणी ॥ मंत्र उषध प्रकारथीजी, टालछुं रोग महंत ॥ मंत्रपूजामां जोइयेंजी, उपकरणां अत्यंत ॥ सु० ॥ २ ॥ राजायें पण आणीयोजी, पूजानो सामान ॥ बंधावी परअचि वलीजी, आमंबर असमान ॥ सु० ॥ ३ ॥ लोक करावी वेगलाजी, मंमल रचियुं ताम ॥ चंदन होमी अग्निमांजी, मंत्र बोले हवे आम ॥ सु० ॥ ४ ॥ ॐ नमो अर्हते वलीजी, ॐ ह्रीं सिद्ध सनाद ॥ नमो वषट् इत्यादिकाजी, मंत्र उच्चरे निरबाद ॥ सु० ॥ ५ ॥ ध्यान मुद्रा आसन करेजी, अगर कपूरनें फूल ॥ होम करी वलि नाखतोजी, दश दिश तेह अमूल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मंमल पासें थापीयोजी, नंदन नृपनो तेह ॥ ओषधि जलधारा थकीजी, सींचे तेहनो देह ॥ सु० ॥ ७ ॥ सज्ज थयो कुंवर हवेजी, परिअचि काढी जाम ॥ कुंवरनें जोवा जणीजी, नरपति आव्यो ताम ॥ सु० ॥ ८ ॥ ऊठी कुमर साहामो जइजी, प्रणमे नरपति पाय ॥ राजा पण सुत वेयनेंजी, गाढ आलिंगन दाय ॥ सु० ॥ ए ॥ सोवन आसन ऊपरेंजी, त्रिहुं वेग तेणी वार ॥ मंत्री सामंत सहु मल्याजी, हियडे हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ विविध वाजित्रना शब्दथीजी, गाजी रह्युं आकाश ॥ गीत गान गायन करेजी, मोद जरे सुविलास ॥ सु० ॥ ११ ॥ सोहासण मंगल तणांजी, गाये गीत रसाल ॥ हर्षे माता लुंछणाजी, धरती मोद विशाल ॥ ॥ सु० ॥ १२ ॥ माया विप्र जणी कहेजी, हर्षित ते जूपाल ॥ जाग्य अमारुं मोटकुंजी, जेणें तुमें मलिया दयाल ॥ सु० ॥ १३ ॥ मंत्रवादी तुमें मोटकाजी, अहो उषधि महिमाय ॥ तुम सम उपकारी नहींजी, जगमांहे कोइ राय ॥ सु० ॥ १४ ॥ सर्व राज्य तुम आपतांजी, उरणीया न थवाय ॥ पण अमें आपुं शक्तिथीजी, लेइ अम्ह हर्ष कराय ॥ सु० ॥ ॥ १५ ॥ जे तुमनें मनमां गमेजी, देश उत्तम ल्यो एक ॥ एम कही जूपति मंत्रवीजी, बीजा पण जे अनेक ॥ सु० ॥ १६ ॥ वस्त्रादिक बहु भूलनांजी, रत्न तणा अलंकार ॥ देवा तैय्यारी करीजी, विप्र जणे नाकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ मायाविप्र कहे सुणोजी, करी परनें उपकार ॥ पुण्य

अर्थे इछे नहीं जी, सज्जन प्रत्युपकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ करी चिकित्सा अर्जीयुंजी, पूर्वे धन असराल ॥ करुं निर्वाह तेणें हवेजी, अधिक करुं शुं आल ॥ सु० ॥ १९ ॥ लाने लोन वधे घणोजी, संतोष सुखनुं मूल॥ मात्राहीन जिते नहीजी, मात्राधिक प्रतिकूल ॥ सु० ॥ २० ॥ ईश्वथकी अधिको कह्योजी, संतोषी सुखलीन ॥ देश ते माहरा धर्ममांजी, विघन करे अति पीन ॥ सु० ॥ २१ ॥ राजतीर्थमां ए कह्योजी, धर्म वली लोक नें हर्ष ॥ तेहमां केम हवे वरषियें जी, केम अंगारानो वर्ष ॥ सु० ॥२२॥ तो पण अवसरें जाणशुंजी, चोथे खंडें ढाल ॥ त्रीजी पद्मविजय कहीजी, सुणतां मंगलमाल ॥ सु० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ८९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इत्यादिक वाणी अवल,निरखी वली निरीह ॥ दान अधिक दीपे घणुं, लह्यो धनाढ्यमां लीह ॥ १ ॥ नृपति कहे एमज नलुं, पण कहो एह प्र पंच ॥ किहां रह्यो तव ते कहे, तपलो नाटकसंच ॥ २ ॥ नारीशुं रहुं छुं नरपति,अवनीपति कहे एम ॥मुजघर रहियें मोजशुं,किहांयें रह्यो हवे केम ॥ ३ ॥ विप्रें ते मान्युं वचन, नरपति तेडवा नार ॥ सुखासन तव सन्मुखें, मोकले महापरिवार ॥ ४ ॥ तास प्रिया दासी तथा, वस्तु वीणादिक सर्व, चित्रशाल: तेहनें उचित, आपे राय अगर्व ॥ ५ ॥ चाकर प्रमुखनें चोपशुं, मोकले सेवा मांहिं ॥ नोजन स्नानादिक नली,अधिक करे उत्साहिं॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जीरे जी ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे म्हारे एकदिन ते नरनाथ, बुद्धिवंत मंत्री मली जीरेजी ॥ जी०॥ नोगवती वली नारि, वेग विचार करे वली जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ देशुं महोटो देश, तेहमां कांइ हाणी नही जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या देशुं केम, किहां क्षत्री ब्राह्मण कहीं जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ निक्षाचर कुलें एह, राज कन्या केम दीजीयें जीरेजी ॥ जी० ॥ विण दीधे जाये बोल, जगमां अप यश लीजीयें जीरेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ नरपति वचन अमोघ, व्याघ्र नदी न्याय आवीयो जीरेजी ॥ जी० ॥ कहे मंत्री श्यो खेद, ए मुज मनमां नावीयो जी रेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ विप्र मात्र नही एह. लक्षण शौर्य पराक्रमें जीरेजी ॥ जी० ॥ एहना गुण नृप योग्य, बीजे ठाम न होये किमे जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ कमलसुंदरी नाम, कन्या दीजें एहनें जीरेजी ॥ जी० ॥ कन्या नाग्य

प्रमाण, बीजा तो साखी तेहनें जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ नृपें मानी वात, राणी पण अंगीकरे जीरेजी ॥ जी० ॥ नगर पदमपुर नाम, तिहां एक वात इण अवसरें जीरेजी ॥ ७ ॥ जी० ॥ तिहां पदमरथ राय, पुत्री रूपवंती घणुं जीरेजी ॥ जी० ॥ ते ऊपर करी रोष, वली अतिशय रागस पणुं जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ तादृश चिह्ननें दीध, बहु छबको मंत्री दीये जीरेजी॥ ॥ जी० ॥ राणी पण करे सोर,तव नृप धरे अनुशय हिये जीरेजी ॥ ए ॥ जी० ॥ चिह्ननें शोधवा ताम, चिह्नवाडे नर नीकल्या जीरेजी ॥जी०॥ शोध करी बहु तास, पण नवि कोइ थानकें मल्या जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ नाना पुरवर गाम, पालि गिरि वन निजनरें जीरेजी ॥ जी० ॥ शोध करा वे राय, पण नवि लाधा कोइ परें जीरेजी ॥ ११ ॥ जी० ॥ स्नेह सुतानो आणि, शोच करे नृप दुःख धरी जीरेजी ॥ जी० ॥ अनुक्रमें वारी शोक, बेहो ते परषद करी जीरेजी ॥ १२ ॥ जी० ॥ एणे अवसर नरसिंह, नयर पुरंदरनो धणी जीरेजी ॥जी०॥ नर कुंजर तस पुत्र,आव्या तिहां सेवा नणी जीरेजी ॥ १३ ॥ जी० ॥ जयसुंदरी नृप भूप, राग थयो तेह उपरें जीरेजी ॥ जी० ॥ रायें दीधी तास, उत्सव मांमयो नली परें जीरेजी ॥ १४ ॥ ॥ जी० ॥ निजनयरें गयो तेह, नोग नोगवे तेहशुं जीरेजी ॥ जी० ॥ क मला नयणें देख, दुःख शलक्युं घण नेहशुं जीरेजी ॥ १५ ॥ जी०॥ निज पुत्रीनी शोध, नवि लाधी वली शोक्यनी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्रीनो विवा ह, देखि वियोग विलोकिनी जीरेजी ॥ १६ ॥ जी० ॥ रुदन करी बहु का ल, गय ऊपर क्रोधें नरी जीरेजी ॥ जी० ॥ पुत्री विडंबी मुझ, कांइ मिल न आशा धरी जीरेजी ॥ १७ ॥ जी० ॥ केइक दिवस गमाय, देखी जयसुं दरी तणो जीरेजी ॥ जी० ॥ विवाह शोकनें मोह, वाजित्रादि उत्सव घणो जीरेजी ॥ १८ ॥ जी० ॥ क्रोध ईर्यानें शोक, दुःखथी तिहां नवि रही शकी जीरेजी ॥ जी० ॥ लेई निज परिवार, रायतणी आज्ञा थकी जीरेजी ॥ १९ ॥ ॥ जी० ॥ चाली तातनें गेह, नयर उद्यानें आवी रही जीरेजी ॥ जी० ॥ दासी मोकली ताम, निज नाई पासें वही जीरेजी ॥ २० ॥ ॥ जी० ॥ अंतेउर परिवार, लेई नृप सादमो गयो जीरेजी ॥ जी० ॥ अ नुमें बहेनना पाय, देखी दुःखीयो अति थयो जीरेजी ॥ २१ ॥ जी० ॥ दुःखथी रोती ताम, नृपति अशासन करे जीरेजी ॥ जी० ॥ नृपति पूछे

एम, केम आव्या तुमें एणी परें जीरेजी ॥ २२ ॥ जी० ॥ रुदन करो केम एम, तव मूलथी मांमी कहे जीरेजी ॥ जी० ॥ सांजली नृप खेदाय, दुःख तेहथी अधिकुं लहे जीरेजी ॥ २३ ॥ जी० ॥ निंदे नगिनीनाथ, नास्तिक वादि शिरोमणि ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ मंत्र्यादिक तस मूढ, निंदे सहुनें अवगणी जीरेजी ॥ २४ ॥ जी० ॥ खेद न कीजें बहेन, देशुं शिक्षा अव सरें जीरेजी ॥ जी० ॥ कर्म तणो अपराध, बीजा निमित्त पणुं धरे जीरे जी ॥२५॥जी०॥ एम आश्वासी तास, चोथे खंमें ए कही जीरेजी ॥जी०॥ चोथो ढाल रसाल, पद्मविजय गुरुथी लही जीरेजी ॥ २६ ॥ १२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवो ए अपराधीयो, शिक्षा देशुं तास ॥ सघले शोध करावशुं, पुत्री तुम चिहुं पास ॥ १ ॥ जाणेजी लावी नली, प्रगुण करावुं प्राय ॥ ब्रह्म वैश्रवण वारू अछे, दक्ष ते आवे दाय ॥ २ ॥ पूछे कोण तव नूपति, सघलो कहे संबंध ॥ निज सुत कथो नीरोगीपो, पजणे तेह प्रबंध ॥ ३ ॥ सांजली तेह संबंधनें, आणंद अंग न माय ॥ पुत्री दुःख पाछुं पड्युं, सुखनी वात सुणाय ॥ ४ ॥ नोगवती सुख नामिनी, प्रणमे नणदना पाय ॥ आलिंगन आशीष ये, हियडे हर्ष न माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ देश मनोहर माजवो ॥ ए देशी ॥

॥ थापी सुखासनें बहेनीनें, लावे निज आवास ललनां ॥ मक्षा महो त्सव अति गौरवें, रायनें हर्ष उल्लास ललनां ॥ १ ॥ पुण्यें सवि आवी म ले ॥ ए आंकणी ॥ विजयशूर नत्रीज जे,फइनें प्रणमे पाय ल० ॥ आशीष देइ शिर चुंबती, लुंछणां वलीय कराय ल० ॥ पु० ॥ २ ॥ मणिमुक्ताफलथी करे, वर्द्धापन सुविशेष ल० ॥ कुल नाग्यादिक वर्णवे, ब्रह्म वैश्रवण विशेष ल०॥पु०॥३॥ सर्वनें सतकारी करी,रहे सुखें नाइनें गेह ल० ॥ ब्रह्म वैश्रवण प्रिया प्रत्यें, देखी उपजे नेह ल० ॥ पु० ॥ ४ ॥ पासें राखे ब्राह्मणी, वात करावे प्रेम ल० ॥ मातने ठंलखी ब्राह्मणी, मात न ठंलखे नेम ल० ॥ पु० ॥ ५ ॥ हवे नरपतियें निमित्तियो, तेडयो पूछवा हेत ल० ॥ पूरव परि चित रायनो, पुत्र निमित्त संकेत ल० ॥ पु०॥६॥ जाणेजी शुद्धि पूछतो,ते कहे सांजलो राय ल० ॥ कालें निजपति रुद्धिशुं, मलशे इंणहिज गाय ल० ॥ पु० ॥ ७ ॥ अधिक न जाणुं एहथी, रायें करी सतकार ल० ॥ वि

सज्यों निमित्तियो, धरतो हर्ष अपार ल० ॥ पु०॥ ८ ॥ वहेन भणी आवी कहे, ते पण हर्षित थाय ल० ॥ निज चर चिहुं दिशि मोकले, ग्राम पुरा दिक गाय ल० ॥ पु० ॥ ए ॥ दूत मूक्या वली चिहुं दिशें, पण नवि लाधी शुद्धि ल० ॥ ब्रह्मदत्तनें पासें थकां, पण नवि चाले बुद्धि ल०॥ पु०॥१०॥ ब्रह्म वैश्रवण ते जाणतो, शोध निवारे न तेह ल०॥ नास्तिक शिक्षा दीधा विना, प्रगट थाउं नहीं रेह ल० ॥ पु० ॥ ११ ॥ एहवी प्रतिज्ञा धारतो, प्रगट न थाये तेह ल० ॥ एणें अवसर परदेशियो, आव्यो कला गुणगेह ल० ॥ पु०॥ १२॥ नाटयकला मद आकरो, आप समो परिवार ल० ॥ जे मुज जींते हुं तेहनो, दास थाउं निरधार ल० ॥ पु० ॥ १३ ॥ एहवी प्रतिज्ञा प्रसिद्धथी, चारि तथा वली नीर ल० ॥ राजद्वारें रवे दर्पथी, राय कहे सुण धीर ल० ॥ पु० ॥ १४ ॥ नाटक देखाडो तुमें, जोउं कला अमें जेण ल० ॥ नाटक सूचि असि कुंतना, अग्रनागें कखुं तेण ल० ॥ पु० ॥ १५ ॥ देखी रीज लही सजा, अभिनय वीर चरित्र ल० ॥ नवरस देखाडे तथा, सहु तन्मय थाय चित्र ल० ॥ पु० ॥ १६ ॥ राय प्रमुख सहु ए सजा, विस्मय लही दीये दान ल० ॥ लोक प्रशंसा बहु करे, तास कला नहीं मान ल० ॥ पु० ॥ १७ ॥ ब्रह्मवैश्रवण तदा जणे, मुख मरडीनें वाणि ल० ॥ विपरीत चूनंगादिका, देखाडे जड़ गण ल० ॥ पु० ॥ १८ ॥ निज नाटकिया मेलवी, जांखे एम नृपाल ल० ॥ एहनें जींते एहवो, ले कोइ मुज पुर नाल ल० ॥ पु० ॥ १ए ॥ रायनें नाटकिया घणा, विविध कलाना जाण ल० ॥ पण नीचुं मुख करी रह्या, जींतवा तास अजाण ल०॥ पु० ॥ २० ॥ ब्रह्मवैश्रवण कहे सुणो, शी कला एहमां नृप ल० ॥ ली लायें जींतुं एहनें, जूउ तमें अनुरूप ल० ॥ पु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें ए कही, परवडी पंचमी ढाल ल० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ल० ॥ पु० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ १४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्म वैश्रवण वदे इस्युं, पुरुष नारी परिवार ॥ नाटकीयामां निरखीनें, आपो इणहिज वार ॥१॥ तुम इच्छायें ल्यो तुरत, वातें न करो वार ॥ नृप कहे नटपेटकथकी, लेई शीखवो लार ॥ २ ॥ कुमर कहे करशुं अमें, नाटक सातमे दिन्न ॥ जिम एहनो मद गली जशे, आखुं तुम आसन्न ॥३॥ नरपति

कहे नटनें इस्युं, सातमे दिन तुमें सवे ॥ आवजो एम कही वालिया, ग या ते धरता गर्वे ॥ ४ ॥ नटपेटकमां निरखीनें, कुमरे काढया केई ॥ युवती युवान यथा मति, सहुनें आदरसेंई ॥ ५ ॥

॥ ढाल उही ॥ माली केरा वागमां ॥ ए देशी ॥

॥ हवे तेहनें सवि चातुरी, कला शीखवे सार रेलो ॥ अहो कला शीख वे सार रेलो ॥ सामग्री सवि मेलवी, करी सवि शणगार रेलो ॥ अ० ॥१॥ रायनें कह्यो सातमे दिनें, आव्या सना मझार रेलो ॥ अ० ॥ रंगमंडपमां उपविशे, नृप नृपपरिवार रेलो ॥ अ० ॥ २ ॥ नगरलोक सवि तेडिया, तिम नटपरिवार रेलो ॥ अ० ॥ घहेन कन्या निज राणीयो, पच न्यंतर गार रेलो ॥ अ० ॥ ३ ॥ छिइं ते सवि जोयती, हवे नाटक मांमे रे लो ॥ अ० ॥ वंश वीणादिक वाजतां, मृदंग वली ताडे रेलो ॥ अ० ॥ ४ ॥ नाटकिणी थानें ठवी, निजनारी सुजाण रेलो ॥ अ० ॥ पात्र बीजां तस नूमिका, अनुसार प्रमाण रेलो ॥ अ० ॥ ५ ॥ गंधर्व गीत मधुर ध्वनि, गावे मनोहार रेलो ॥ अ० ॥ तालनें लयना तानशुं, माया बहु विस्तार रे लो ॥ अ० ॥ ६ ॥ मांमयुं चरित्र ते आपनुं, जय विजय दो नाय रेलो ॥ अ० ॥ विजयपुरीना राजीया, पुत्र एकेक थाय रेलो ॥ अ० ॥ ७ ॥ सिंह सार सुत प्रथमनो, अन्यायी तेह रेलो ॥ अ० ॥ श्रीजयानंद बीजा तणो, ते गुणगणगेह रेलो ॥ अ० ॥ ८ ॥ रातें पर्वत ऊपरें, केवलीनें पासें रेलो ॥ अ० ॥ धर्म पामी देशांतरें, जाता उल्लासें रेलो ॥ अ० ॥ ए ॥ विशालपुरें विद्या नण्या, परण्या नृपकन्या रेलो ॥ अ० ॥ प्रतिबोधी गिरिमालिनी, देवी थई धन्या रेलो ॥ अ० ॥ १० ॥ कनकपुरें जूवटुं रम्या, परण्या नृप कुमरी रेलो ॥ अ० ॥ प्रतिबोधि देवी रेलणी, ते अतिशय सुमरी रेलो ॥ अ० ॥ ११ ॥ सूअर युद्ध कर्युं तेणें, कर्यो तापस बोध रेलो ॥ अ० ॥ तस पुत्री परणा वली, शूरवीर ते योध रेलो ॥ अ० ॥ १२ ॥ मलयमाल क्षेत्र देवता, साथें युद्ध कीधुं रेलो ॥ अ० ॥ जींत्या तेहशुं जेटले, उपधि वर दीधुं रेलो ॥ अ० ॥ ॥ १३ ॥ रत्नपुरें नाटक वली, रतिसुंदरी केरो रेलो ॥ अ० ॥ पाणी ग्रहण कर्युं तिहां, निजरूप नलेरो रेलो ॥ अ० ॥ १४ ॥ ते सवि अनि नय विधिथकी, नाटकमां देखावे रेलो ॥ अ० ॥ पद्मपुरें नृप निजनें, क न्या परणावे रेलो ॥ अ० ॥ १५ ॥ देवकुलें ते आंधली, निज औषधि योग

रेलो ॥अ० ॥ नव लोचना करी ततक्षणें,काढयो तस रोग रेलो ॥ अ० ॥ ॥ १६ ॥ जेम नीपन्युं तेम नाटकें, प्रत्यक्ष देखावे रेलो ॥ अ० ॥ निज्ञ पासें ते कुंअरी, सहुनें भ्रम आवे रेलो ॥ अ० ॥ १७ ॥ माता देखे तिहांथी, संकल्प मन थाय रेलो ॥ अ० ॥ नाम परावर्त्तन करे, पद्मपुरनें जाय रेलो ॥ अ० ॥ १८ ॥ भोगपुरें छे राजीयो,नास्तिक भोगदत्त रेलो ॥ अ० ॥ सुजया विजया दोय छे,राणीयो वरगत रेलो॥अ०॥१ए॥ सुदामा सुजगा थई, दोय पुत्री तास रेलो ।।अ०॥ पहेली दीधी कोइ रायनें, बीजी निज्ञ सकाश रेलो ॥ अ० ॥ २० ॥ नाम परावर्त्तन सुण्युं, पण निज्ञनें पासें रेलो ॥ अ० ॥ विजयसुंदरी सत्य देखीनें, माय हर्ष उल्लासें रेलो ॥ अ० ॥ २१ ॥ यवनिकामांथी नीकली, पुत्रीनें गले वलगी रेलो ॥ अ० ॥ भाग्यथी दीठी तुज प्रत्यें. किहां गईती अलगी रेलो ॥ अ० ॥ २२ ॥इत्यादिक कहेतां थकां, चोथे खंमें ढाल रेलो ॥ अ०॥ छठी पद्म कहे सुणो,आगें वात रसाल रेलो ॥ अ०॥२३॥१७६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे ब्राह्मण आवीया, करी ब्राह्मणी ततकाल ॥ कहे माता कां इम करो, भ्रांतें अवलुं भाल ॥ १ ॥ ए माहारी नारी अछे, सुजगा नामें सार ॥ पण तुम ए पुत्री नहीं, सरिखे रूप संसार ॥ २ ॥ रूप नाटकमां जे कर्युं, केम प्रमाण कराय ॥ अद्भुत क्रीडा खेद एम, व्याकुल तस व्यवसाय ॥ ३ ॥ मूकी दीधी मनथकी,करे विचार अनेक ॥ शुं रूपांतरें ए हशे, अथवा सदृश अनेक ॥ ४ ॥ दीठे एहनें दरिशणे, वधतो स्नेह विशेष ॥ ब्राह्मणनी वनिता किमु,आगल लहिशुं अशेष ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ वेडले भार घणो छे राज,वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ सुजगा थई देवकुलमां साजी, तिहां लगें नाटक कीधुं ॥ पण तिहां सर्व सभानुं तेणें, चित्तडुं चोरी लीधुं ॥१॥ साजन प्रेम धरीनें एह, नाटक नवलुं देखो ॥ ए आंकणी ॥ वलिय विशेषें अचरज देतें,नाटक नवलुं करतो ॥ कुंताग्रे सूचि मांमी तसपरें, फूल एक वर धरतो ॥ सा० ॥ २ ॥ ते ऊपर नाटक ते करतो, एम जे जे रस पोखे ॥ ते ते रसमां तन्मय सहुये, न रहे चित्त कोइ धोखे ॥ सा० ॥ ३ ॥ माह्रे पुरुषें नाटक मांहे,पण नवि दोष ते दीठो, भूजंगादिक सूक्ष्म पण कोइ, जोतां नहींअ अनिठो ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ नृपमंत्रीमुख दान दीये ते, नटपेटकनें आपे ॥ महादान

पण आप न लेवे, तेहनुं दारिद्र कापे ॥ सा० ॥ ५ ॥ विस्मय पाम्या तेहनी देखी, कला कलावंत सघला ॥ सायर आगल कूप तणी परें, हंस आगल जेम बगला ॥ सा० ॥ ६ ॥ पूरवलो नाटकियो चमक्यो, वटु नाटकीयो देखी ॥ हाथो वटुकनें पाये लाग्यो, वीजुं सर्व उवेखी ॥ सा० ॥ ७ ॥ कहे ताहारो हुं दास तुं साचो, तें मुजनें आज जीत्यो ॥ कोइ मुजनें नवि जीत्यो न्याई,एटलो काल व्यतीतो ॥ सा० ॥ ८ ॥ सूरय किरणें हिम गले जिम, तिम मुज मद तें गलीयो ॥ परिकर सहित हुं ताहारो चाकर,तुंहि शिरोमणि मलियो ॥ सा० ॥ ए ॥ वटुक कहे मुज नहीं प्रयोजन, जाउ आपणे गाम ॥ अधिक कला जगमांहे दीसे, मद करवो केणे काम ॥सा०॥ ॥ १०॥ रायें विसर्ज्यो नाटकीयो हवे, पोहोतो आपणे गाम ॥ सना विसर्जी नरपति वटुनें,पूछे एम अनिराम ॥ सा० ॥ ११॥ कमला पासें राखी पूछे, नृप अंगज कोण एह ॥ जेहनो अनिनय तें देखाड्यो, नाटकमां धरी नेह ॥ सा० ॥ १२ ॥ निज्ञ ते देवकुलमांथी विहाणें, गयो किहां लेई नारी॥ तव कहे वटुउ सांनल नरपति,आगल कहुं अधिकार ॥सा०॥१३॥ प्रिया सहित हुं कौतुक जोतो, पृथिवीमांहे नमतो ॥ विचित्र प्रकारनां नाटक करतो, नोगपुरें गयो रमतो ॥ सा० ॥ १४ ॥ रहेवा स्थानक वीजे न लह्युं, देवकुलमां कस्यो वास ॥ निज्ञ दंपती दोष विपरीत देखी, मनमां थयो विखास ॥ सा०॥१५॥ निज्ञनें पूछ्युं तुं कुरूपी,एह देवांगना नारी ॥ ताहारे हाथें केणीपरें आवी,कहे तुं तास विचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ त्यारें तेणें सघलुं नांख्युं, चरित्र पोतानुं एह ॥ कोण नवि आदरे एह सुणीनें, चित्रकारी होये जेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ सुखनिशायें सहुये सूतां, विहाणुं विहाणुं ज्यारें, जागीनें अमें जोयुं ततक्षण, नवि दीठुं कोइ त्यारें ॥सा०॥१८॥ प्रिया सहित हुं नमतो नमतो, आव्यो तुमचे गाम ॥ चित्रकारी ए चरित्र जाणीनें, नाटक कीधुं आम ॥ सा० ॥ १ए ॥ आगल वात तो तेहज जाणे, चोथे खंमें ढाल ॥ सातमी पद्मविजय कहे सुणजो, आगल वात रसाल ॥ सा० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणी राजा विस्मय लह्यो, कमला कमल विकाश ॥ अहो वटु एम चिंतवे, स्यो ए वचन विलास ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ तेह नगरमांहे वसे, साहेलडी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जाइ जगिनी एम चिंतवे ॥ साहेलडी रे ॥ एहनां रूप अनुसार तो ॥ दा न धनादिक नवि घटे ॥ सा० ॥ वरसे जेम जलधार तो ॥१॥ विप्ररूपें नि जज इशे ॥ सा० ॥ अथवा उत्तम कोइ विप्र तो ॥ चेष्टा गहन एहनी प णुं ॥ सा० ॥ मालिम न पडे क्षीप्र तो ॥ २ ॥ ब्राह्मणी रूपें मुज सुता ॥ ॥ सा० ॥ के अथवा अन्य एह तो ॥ कलावंतनां चरित्रनी ॥ सा० ॥ को ण जाणे गति जेह तो ॥ ३ ॥ ए हो के अथवा अन्य हो ॥ सा० ॥ पण एक निश्चय थाय तो ॥ कलावंत कोइ जाग्यनिधि ॥ सा० ॥ परण्यो मुज सुता आय तो ॥ ४ ॥ दिव्यनेत्रवंती थई ॥ सा० ॥ दुरख तणो बहु गाय तो ॥ एह बहु इहां रहेतां ॥ सा०॥ जाणशुं आगें जे थाय तो ॥ ५ ॥ क मला एणीपरें चिंतवी ॥ सा० ॥ जांखे जाइनें एम तो ॥ कमलसुंदरी दीजी यें ॥ सा०॥ पूरो प्रतिज्ञा नेम तो ॥ ६ ॥ जिम तिम राखो एहनें ॥सा०॥ एणी परें करीय विचार तो ॥ नरपति बहु तेडी कहे ॥ सा०॥ तुम विज्ञान अपार तो ॥७॥ जे नवि दीठी न सांजली ॥सा०॥ तेह कला तुम पास तो॥ एकज नाटकनी कला ॥ सा० ॥ देखाडी सुविलास तो ॥ ८ ॥ माहारी उन्नति बहु करी ॥सा०॥ बहोंत्तेर कला निधान तो ॥ शोल कलायें चंद्रमा ॥सा०॥ नवि होये तुम समान तो ॥९॥ रहेवुं मुज पासें तुमें ॥सा०॥ इष्ट दर्शन तुम मुज्झ तो ॥ अंगीकार बडव करे ॥सा०॥ पण नवि लहे कोइ गुज्झ तो ॥१०॥ सहु निज निज थानक गया ॥सा०॥ स्तवता तास विज्ञान तो ॥ वधते प्रेमें बटुप्रिया ॥सा०॥ कमला करो सनमान तो ॥ ११ ॥ राखे पुत्रीनी परें ॥सा०॥ करे नित्य प्रीति आलाप तो ॥ राज्य लाजादिकथी घ णो ॥सा०॥ लहे संतोपनो व्याप तो ॥ १२ ॥ कमलसुंदरी हवे एकदा ॥सा०॥ कहे निज मातनें एम तो ॥ ब्राह्मणनें मुज नरपति ॥सा०॥ हजीय न आपे केम तो ॥ १३ ॥ आप प्रतिज्ञा पूरवा ॥सा० ॥ सज्जन न करे वार तो ॥ नाटकथी रीजी तेणें ॥सा०॥ बहु बांजे जरतार तो ॥१४॥ राणीयें कह्यो रा यनें ॥सा०॥ निजपुत्री अजिप्राय तो ॥ नृपति सांजली हरवियो ॥सा०॥ तस आशय शुज गाय तो ॥१५॥ एक दिन शेठ सेनापति ॥सा०॥ मंत्री सामंत परिवार तो ॥ वेगे पूरीने सजा ॥सा०॥ दीपतो जूजरतार तो ॥ १६ ॥ ब्रह्म वैश्रवण ते आविया ॥सा०॥ देई नृपनें आशीर तो ॥ वेगे रायनें ढूकडो

॥सा०॥ चढती जास जगीश तो॥१७॥ राय कहे ब्राह्मण प्रत्यें ॥सा०॥ रूपें रंन समान तो॥ कन्या मुज सुलक्षणी॥सा०॥ परणो देउं बहु मान तो॥१८॥ पुत्र साजो जे मुज करे ॥सा०॥ तेहनें कन्या दान तो॥ करशुं एह प्रतिज्ञा जे ॥सा०॥ न चले मेरुपरें धार तो ॥ १९॥ बहु बोले ए साचलुं ॥सा०॥ पण एक सांजलो वात तो ॥ धान्यनी रांधणी ब्राह्मणी ॥सा०॥ ठे मादरे सुजात तो ॥२०॥ अधिक प्रिया नवि जोइयें ॥सा०॥ जेह सामान्य नर होय तो ॥ मदन कथानें सांजली ॥सा०॥ दोय प्रिया न करे कोय तो ॥ २१ ॥ कोण ते मदन कह्यो तुमें ॥सा०॥ बाडव जांखे ताम तो ॥ सरस कथा तुमें सांजलो ॥सा०॥ मदन कथा कहुं थाम तो ॥ २२ ॥ चोथे खंडें ए कही ॥सा०॥ पद्मविजय वर ढाल तो ॥ आठमी अधिके रंगशुं ॥सा०॥ सुणतां मंगलमाल तो ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखइछक सहु जीव ठे, जाणे सुख नवि कोय ॥ जिहां आत्मिक सुख नीपजे, ते शिवमंदिर होय ॥ १ ॥ डुर्बुद्धि सुखभ्रांतिथी, रमे विषयमां लीन ॥ न गमे सज्जन पुरुषनें, जास सुकृत मति पीन ॥२॥ तेह विषय साधन अठे, मुख्यथकी वर नार ॥ तेतो क्रूर कुटिल कही, सापण परें निर धार ॥ ३ ॥ जुठी क्रोध मुखी घणुं,निर्दयी साहस वंत॥ कलहकारी कपटी वली, पार लहे नहीं संत ॥ ४ ॥ कटुकविपाक परिणामथी, सुणजो इहां दृष्टांत ॥ मदन तथा धनदेवनुं,विवरी कहुं वृत्तांत ॥ ५॥ चरित्र देखी नारी तणुं,विरम्या जेह महंत ॥ ते सुखीया संसारमां, ते थाये गुणवंत ॥६॥ तेष ण ए दृष्टांतथी, लाणो सुगुण निधान ॥ केम आदरी ठांमी वली,जाणी डुःख निदान ॥ ७ ॥ कौतुकनें वैराग्यनो, वात घणुं सुविनोद ॥ सांजलतां सुख ऊपजे, पूरण लहे प्रमोद ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ माली केरा बागमां, दोय नारिंग पक्के रेलो ॥
अहो दोय नारिंग पक्के रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीप लख जोयणो, जगतीशुं सोहे रेलो ॥ अहो जगतीशुं सोहे रेलो ॥ मेरुपर्वत मध्यजागमां,देखी मन मोहे रेलो ॥अ०॥१॥ तेहथी दक्षिण दिश जलुं, क्षेत्र जरत देदारु रेलो ॥ अ० ॥ वचमां नग वैताढ्य ठे,रूपानो चारू रेलो ॥अ०॥२॥ तेहथी दक्षिण जरतमां, साहे सन्निवेश रेलो ॥अ०॥

नाम कुशस्थल जाणीयें, बहु पुण्य प्रवेश रेलो ॥ श्र० ॥ ३ ॥ तिहां कुल पुत्र सोदामणो, रूपें जिस्यो काम रेलो ॥ श्र० ॥ मदन नामें प्रसिद्ध जे, लखमीनुं धाम रेलो ॥ श्र० ॥ ४ ॥ किहांहीथकी बालकालथी, विद्या बहु पामी रेलो ॥ श्र० ॥ क्रोधमुखी कुटिला घणुं, नारी गुणें जामी रेलो ॥ ॥ श्र० ॥ ५ ॥ नारी दोय सोहामणी,जाणीयें रति प्रीति रेलो ॥ श्र० ॥ चंम्मा प्रचंम्मा नामथी, तेम गुणथी प्रतीति रेलो ॥ श्र० ॥ ६ ॥ प्रेम घणो विहुं उपरें, तेहनें पण प्रेम रेलो ॥ श्र० ॥ पण वेहु शोक्यो कलह करे, शोक्य धर्म ए नेम रेलो ॥श्र०॥७॥ यतः ॥ दोहो ॥ शोक्य वैर अति आकरां, जेहवां तीखा तीर ॥ नाला शूल तणीपरें, परें परें दाखे पीर ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मदन वारे पण नवि रहे,कोपनें वली मान रेलो ॥ श्र० ॥ राखी प्रचंम्मा नारिनें, पासें गामने थान रेलो ॥ श्र० ॥ ८ ॥ एक एक दिनना नियमथी, रहे मदन तेवार रेलो ॥ श्र० ॥ मदन ते नियम चूके नही,एम करतां केवार रेलो ॥ श्र० ॥ ए ॥ कारण कोइक पामीनें, परचंम्मा गेह रेलो ॥ श्र० ॥ एक दिन अधिको तिहां रह्यो, धरी तास सनेह रेलो ॥ श्र० ॥ ॥ १० ॥ आव्यो चंम्मानें घरे, कण खांमती तेह रेलो ॥ श्र० ॥ आवतो दीठो निजपति, क्रोधें चरी देह रेलो ॥ श्र० ॥ ११ ॥ मुशलुं नाख्युं सन मुखें,मुखें एणीपरें जास रेलो ॥ श्र० ॥ रे रे दुष्ट अजागीया,तुज नहिं इहां वास रेलो ॥ श्र० ॥ १२ ॥ दुष्ट प्रचंम्मा तुज्जनें, घणुं प्राण आधार रेलो ॥ श्र० ॥ जा तेहने घर सुखथकी, रहेजे धरी प्यार रेलो ॥ श्र०॥१३ ॥ ते देखो बीहिनो अति, नाठो तेणीवेला रेलो ॥ श्र० ॥ थोडी जूमिका जई करी, पूठें जुवे हेला रेलो ॥ श्र० ॥ १४ ॥ सर्पनयंकर देखीयो, फणा टोप विशाल रेलो ॥ श्र० ॥ स्थूल मूशल सम आवतो, जाणीयें महा काल रेलो ॥ श्र० ॥ १५ ॥ नाठो सविशेषें वली, परचंम्मा पास रेलो ॥ श्र० ॥ दीठो तेणीयें आवतो, नवि माये श्वास रेलो ॥श्र०॥१६॥ पूछे केम नयज्रांत तुं, आव्यो ततकाल रेलो ॥ श्र०॥ मदन कहे चंम्मा चरी, पूठें तुं चाल रेलो ॥ श्र० ॥ १७ ॥ सांनली परचंम्मा कहे, मत नय मन आण रेलो ॥ श्र० ॥ तुं मुज प्राणथी वालहो, हुं करशुं त्राण रेलो ॥ श्र० ॥ १८ ॥ धीरो था कांय नय नथी, एहनो श्यो जार रेलो ॥श्र०॥ एम कही आश्वासो तेणें, नारीचरित्र अपार रेलो ॥श्र०॥१ए॥ धन्य धन्य

ते मुनिराजनें, दूर गमी नार रेलो ॥ श्र० ॥ संयम लेइ सुखीया थ या, पाम्या नवपार रेलो ॥ श्र० ॥ २० ॥ नवमी चोया खंममां, नांखी ए म ढाल रेलो ॥ श्र० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो, आगें वात रसाल रेलो ॥ श्र० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रचंमायें दीगे प्रबल, जुजंगम जयकार ॥ आंगणा आगल आवीयो, कीनाशनें अनुकार ॥ १ ॥ क्रोधें ते देखी करी, तनु उद्वर्त्तन ताम ॥ करी मलपिंमनी गोलिका, नाखे सन्मुख जाम ॥ २ ॥ नकुल थया ते ततक्षणें, नाग कर्यो नवखंम ॥ चमक्यो मदन ते चित्तमां, चंमाथीआ प्रचंम ॥३॥ जोतां जोतां नोलीया, सर्व थया विसराल ॥ नाना रस वेदे मनें, चिंते मदन रसाल॥४॥ अहो चंमाना कोपथी, आव्यो प्रचंमा पास ॥ शरण थइ ए मुजनें, राख्यो देइ आश्वास ॥ ५ ॥ पण जो दैवयोगें करी, कोपे प्रचंमा एह ॥ तो कोण शरण हवे तदा, जाउं केहनें गेह ॥ ६ ॥ वाहालो पण कोपे न ही, एहवो ङर्जन कोय ॥ तो नारीनें कुनारजा, नवि कोपे केम होय ॥७॥ ए राक्षसिणी दोय जणी, गंमी जाउं परदेश ॥ आप कुशलनें कारणें, त्य जीयें राज्यनें देश ॥ ८ ॥ यतः ॥ त्यजेदेकं कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ॥ ग्रामं जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ ए देशी ॥

॥ एम चिंतवीनें नीकल्यो रे सुहृज्जन ॥ साथें बहु धन लेय ॥ पुण्य प्रगट थयुं ॥ मदन नमे देशांतरें रे सु० ॥ स्वेछायें गत खेय ॥ पु० ॥ १ ॥ केइक वासर वही गया रे सु० ॥ पृथिवी जोतां तास ॥ पु० ॥ नमतो नमतो आ वियो रे सु०॥ नगर नाम संकाश ॥पु०॥ २ ॥ जीते निज लखमीथकी रे सु०॥ सुरपुरी लंकावास ॥ पु०॥ तेह नगर उद्यानमां रे सु०॥ बेगे अशोक सकाश ॥ पु० ॥ ३ ॥ इण अवसर एक आवियो रे सु०॥ जानुदत्त एणें ना म ॥ पु० ॥ शेठमांहे शिरोमणि रे सु०॥ बोले ते हवे आम ॥ पु० ॥ ४ ॥ म दन सुखें तुं आवियो रे सु० ॥ कुशल अने सुखशात ॥ पु० ॥ चालो निजघर जाइयें रे सु०॥ मानो अमची वात ॥ पु०॥ ५ ॥ नाम सुणी चित्त चमकियो रे सु०॥ शुं जाणे मुज नाम ॥ पु०॥ चाल्यो नगरमां तेहशुं रे सु०॥ पोहोतो तेहनें धाम ॥ पु० ॥ ६ ॥ शेठ करावे तेहनें रे सु० ॥ स्नान जोजन नक्ति

नांत ॥ पु० ॥ गौरव आदर बहु करी रे सु०॥ नांखे एम एकांत ॥ पु०॥७॥ कुमरी निज आगल करी रे सु० ॥ कहे परणो महानाग ॥पु०॥ मदन देखी ते नारीनें रे सु० ॥ नाल अर्द्धचंद्र नाग ॥ पु० ॥ ८ ॥ चतुरा चंपकवानशुं रे सु०॥ वदन ते चंद्र समान ॥ पु०॥ पक्वबिंबोष्ठी नामिनी रे सु०॥ नयण कमलदल जाण ॥ पु० ॥ ९ ॥ रूपें रतिनें हरावती रे सु०॥ बोले अमृत वाण ॥ पु० ॥ नही तिलोत्तमा एहवी रे सु० ॥ बोल्यो मदन सुजाण ॥ पु० ॥ ॥ १० ॥ केम जाणो मुज नामनें रे सु० ॥ नवि जाणो कुल शील ॥ पु०॥ केम गौरव करो एवडुं रे सु० ॥ वली कन्या दीधो लील ॥ पु०॥ ११ ॥ शेठ कहे सुण साहिबा रे सु०॥ माहारे पुत्र छे चार ॥पु०॥ ते उपर एक इच्छतां रे सु० ॥ पुत्री थई मनोहार ॥पु० ॥१२॥ प्राणथकी मुज वालही रे सु०॥ विद्युल्लता इण नाम ॥ पु० ॥ पामवी सकल कला वली रे सु० ॥ आवी यौवन जाम ॥ पु० ॥ १३ ॥ ते देखी में चिंतव्युं रे सु० ॥ वर योग्या थई एह ॥ पु० ॥ देवी कोइ वरने लगे रे सु० ॥ लोक रीति धरी नेह ॥ पु० ॥ ॥ १४ ॥ वलीय वियोग न सही शकुं रे सु० ॥ एहनो क्षण एक मात ॥ पु० ॥ एम चिंतातुर हुं थयो रे सु० ॥ नवि निद्रा आयात ॥ पु०॥ १५ ॥ सुरत तरर राति उपशमी रे सु०॥ नांजयो सवि व्यापार ॥ पु० ॥ शून्यमनें बहु सदा रे सु०॥ सूतो राति मकार ॥पु०॥१६ ॥ मध्यरातें कुलदेवता रे सु० ॥ आवी नांखे एम ॥ पु०॥ वत्स काइ चिंता करे रे सु०॥ कहुं ने सांजल नेम ॥ पु० ॥ १७ ॥ विहाणें नगर उद्यानमां रे सु० ॥ अशोकवृक्षनें मूल ॥ पु० ॥ पुरुष रतन कुल कपन्यो रे सु० ॥ तरुण कला अनुकूल ॥ पु०॥ १८ ॥ दिवस प्रहर एकने समे रे सु०॥ मदन नाम गुणवंत ॥ पु०॥ देखी कन्या देजे तेहनें रे सु०॥ तव में नांख्युं तंत ॥ १९ ॥ चिंतासमुद्रमां बूडतां रे सु० ॥ मुजने उद्धायो मात ॥ पु०॥ अदृश्य थई कुलदेवता रे सु०॥ अनुक्रमें थयो प्रनात ॥पु०॥२०॥ कृत्य करी निद्राणा तणां रे सु०॥ आव्यो हुं इण ठाम ॥ पु०॥ देवी नांख्युं ते सवे रे सु०॥ नयणें दीठुं ताम ॥पु०॥२१॥ दशमी चोथा खंडमां रे सु०॥ नांखी ए वर ढाल ॥ पु०॥ पद्मविजय कहे सांनलो रे सु०॥ आगल वात रसाल ॥ पु०॥ २२ ॥२८४॥

॥ दोहा ॥

॥ ते माटे करुं विनति, जाणुं तुमचुं नाम ॥ माहारुं वचन मानी करी,

करो अमारुं काम ॥ १ ॥ ते सांजलीने चिंतवे, मदन ते चित्त मजार ॥ विना प्रिया हुं एकलो, वंठ परें निरधार ॥ २ ॥ काल गमावुं केणी परें, रहुं हवे किणे ठाण ॥ देवें दीधी कन्यका, आपे ठे मुज पाण ॥ ३ ॥ जाग्य योगें आवी मली. मन विश्रामनुं ठाम ॥ परणीनें धन जोगवुं, एह शेठनें धाम ॥ ४ ॥ एम चिंती अंगी करे, तेह शेठनी वाण ॥ शुन लगनें परण्यो तिहां, मनमां उच्चरंग आण ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥

॥ जानुदत्त हवे शेठीयो, वस्त्र अने अलंकार रे॥ बहुधन कंचन पूरियुं, जवन दिये मनोहार रे ॥ १ ॥ पुण्यवंत एम जाणीयें ॥ ए आंकणी॥त्रियु ललताशुं तिहां रह्यो, सुख जोगवे सुरसाल रे ॥ पुण्यें मनवंछित मलें,डुःख थाये विसराल रे ॥ पु० ॥ २ ॥ सुपुरुष जिहां जाये तिहां, नवि जाणे कुल शील रे ॥ पण ते पुण्य उदय करी, पामे सुख जर लील रे ॥ पु० ॥३॥ जो इछक कल्याणना, इह जव परजव प्राणी रे ॥ तो पुण्य उद्यम आदरे, करियें गुण मणिखाणी रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ श्वसुरद्रव्यथी संपजे, जोग जला जरपूर रे ॥ मदन मगन सुखसागरें, डुःखवात गइ दूर रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ केइक वरस वही गयां, एकदिन पावस आवो रे ॥ पंथीलोक विरही जिके, ते घर जणी सहु धायो रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ कामिनी विरह अप्रियकी, धूमलेखा घनमाला रे ॥ विस्तरी गगनें तेणें करी, मेघ हूआ मानुं काला रे ॥पु०॥ ॥ ७ ॥ दिशिवधूनें आजरण परें, जलद जर्त्तायें दीधुं रे॥ चमके चिहुं दिशें वीज ते, कनकमयी सुप्रसिद्धुं रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ झिंझिम पावस रावनो, चारे दिशें विस्तरीयो रे ॥ हुं राजा हुं एणी परें, लोक गर्जारवें जरीयो रे ॥ ॥ पु० ॥ ९ ॥ मानिनी मान खंमन जणी, खड्गधारा ज्युं प्रचंम रे ॥ वरसे निरंतर तेणे समे,जलधारा ते अखंम रे ॥ पु० ॥ १० ॥ पृथिवी महिलाने हृदे, हारसेर अजिराम रे॥ सरिता पसरी सोहियें, देखी पसरे काम रे॥ ॥ पु० ॥ ११ ॥ कटुज कदंब नें केतकी, सलकी अर्जुन फूल्या रे ॥ क्रौंच चकोरनें मोरना, मद वाध्या ते ममोला रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ मेघघटा महिषी वली, पृथिवीनें आकाशें रे ॥ घय फरती गाजे घणुं, श्यामवरण सुप्रकाशें रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ गर्न धरे बगली तदा, हरितांशुक धरा पहेरे रे ॥ नृपयात्रा रज उपशमे, कामिनी पतिपथ हेरे रे ॥ पु० ॥ १४ ॥ मदन बेठो

तिहां गोंखडे, जोवे पाउस शोहा रे ॥ पाडोशण नयणें पडी, करती दुःख विछोहा रे ॥ पु० ॥ १५ ॥ करती विलाप एणी परें, मूकी मुज्ञ अनाथ रे ॥ देशांतर गयो ते हजी, नवि आव्यो मुंज नाथ रे ॥ पु० ॥ १६ ॥ घन गर्जारव वीजली, दादूर मुल मरपावे रे ॥ कुंपडी पण पाणी करे, थरहर देह कंपावे रे ॥ पुं० ॥ १७ ॥ निरवीयुं घन पूर्वनुं, वालक पण एम रोवे रे ॥ आणी शुं आपुं हवे, देव न साहामुं जोवे रे ॥ पु० ॥ १८ ॥ दुःखकुल भुवन हुं नीपनी, मदन सुणी एम कानें रे ॥ अतिशय करुणा उपनी, चित्तमां धरी एम शानें रे ॥ पु० ॥ १९ ॥ चोथे खंमें अग्यारमी, श्रीजयानंदनें रास रे ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, पामे लीलविलास रे ॥ पु०॥२०॥३०९

॥ दोहा ॥

॥ मदन विचारे चित्तमां, अहो ए रांक अनाथ ॥ पतिविरहें एम विलपति, नही को एहनो साथ ॥ १॥ चंमा प्रचंमा बापडी, माहरो धरतो वियोग ॥ एणिपरें दुःखणी बहु हशे, नरता विण श्यो नोग ॥ २ ॥ एम चिंतवतो तेहवे, नयणें नीर ऊरंत ॥ ते देखीनें नाहनें, विद्युत्लता नणंत ॥ ३ ॥ श्यो उद्वेग तुम चित्तमां, नांखो कारण मुज्ऊ ॥ बहु आग्रहथी नांखिपुं, जे ह हियानुं गुज्ऊ ॥ ४ ॥ पूरव नार्या सांनरी, तेणें मुज दुःख बहु थाय ॥ देखी पाडोशण रोवती, सांनरी चित्तमां आय ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ आधा आम पधारो पूज्य,अम घर वोहोरण वेला ॥ ए देशी ॥

॥ वात सांनली कामिनी ते चित्तमां, करती एम विचार ॥ एणी परें दुःख नागवे मुज सायें, पण सांनरी ते नार ॥ १ ॥ स्वामी सुखें पधारो घेर, तेहनी खबर ते लीजें ॥ ए आंकणी ॥ बाह्य विकार नवि देखावे, बोले एणी परें वाणी ॥ स्वामी एवडुं दुःख उपजावो,शे कारण हित आणी ॥ ॥ स्वा० ॥ २ ॥ तिहां जइनें तस रति उपजावो, मदन कहे तव एम ॥ तारी आणा होय तो जाउं, नहिं तो जाउं केम ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ सांनली चिंतवे ईर्ष्या आणी, जुउं दासी परें सेवुं ॥ वचन न लोपुं एहनुं कबही, करुं एहना चित्त जेहवुं ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तो पण दुःखदायक ते बेहुनें, संनारे छे आम ॥ में तो खमी न शकीयें क्षण पण, दुर्द्धर पीडे काम ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ पाउस ऋतु ए काम जगावे, वात विसारें पाडुं ॥ कालक्षेप करियें कोइ रीतें, एम चिंता करे आडुं ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ स्वामी वाट विषम ए ऋतुमां, मार

ग दुर्गम फचरे ॥ गिरि नदीयो अति विदम ठे वाटें, जावा चित्त केम पसरे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ शरद कालें जब पाउस उतरे, तब जाजो तुमें स्वामी ॥ वात सुणीनें मान्युं मदनें, स्त्रीने वश होवे कामी॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जोगसुखें हवे काल गमावे, शरद ऋतु जब आवे ॥ तब जावा चरकंठित पूबे, जावं जो तुं फरमावे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ कोइ विचार करीनें मान्युं, संबल सायें आपे ॥ करी सुंगधि करंबो विधिशुं, मदननें सायें घापे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ कुशस्थल न णी चाल्यो वेगें, लेइ करंबो तेह ॥ जातां थयो मध्यान्ह समय तव, कोइ गामें गयो एह ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ तास उयानें सरोवर तीरें, तरुमूलें विश्राम ॥ नाही देवगुरु संनारी, इंडे जोजन काम ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चिंतवे जो कोइ आवे अतिथि, नवर्णे इणहिज काल ॥ तो तस ग्रास अर्द्ध आपीनें, पुण्य करुं ततकाल ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ परनें शब्द करीनें जुंजे, जगमां ते ध न्य प्राणी ॥ अतिथि संविजाग करुं तेणें, लखमी करतल आणी ॥स्वा०॥ ॥ १४ ॥ एम चिंतवतां दीठो पासें, देवकुलथी नीकलतो ॥ जटा मुकुटनें जस्म विलेपित, गाम जणी सल सलतो ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ तपसी देखी हरख्यो हृदयें, बोलाव्यो बहु मानें ॥ आप्यो करंबो आहार प्रमाणें, वली वलियो निजथानें ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ चाल्यो तपसी खावा बेठो, तेह सरोवर तीरें ॥ खावा मदन आरंजे जेते, लेई समीप ते नीरें ॥स्वा०॥१७॥ एहवे ठीक थई तव चिंते, कांइ विलंब ते कीजें ॥ एहवे योगी बकरो हूउ,करंब प्रनाव वदीजें ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयप्रनावें, चोथे खंमें ढाल ॥ बारमी पद्मविजय कहे पुण्यें, होवे मंगलमाल ॥ स्वा० ॥१९॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ बें बें करतो बोकडो, चाल्यो नगर सकाश ॥ मदन लह्यो विस्मय घणुं, देखी तेह विलास ॥ १ ॥ किहां जाये ठे बोकडो, जोवं पूठें जाय ॥ एम चिंतीनें चालीयो, कौतुक मन नवि माय ॥ २ ॥ मदन बोकडो बिहु जणा, पोहोता नयर मफार ॥ पेठो बकरो जवनमां, जिहां विद्युल्लता नार ॥३ ॥ मदन जोवा ठानो रह्यो, कोइ थानक ते पास ॥ जोवं बकरो शुं करे, पेशी नें आवास ॥ ४ ॥ बकरो आव्यो जाणीनें, विद्युल्लता दीये हार ॥ लेइ लकुटनें मारवा, उठी चंपो नार ॥ ५ ॥ बूंब पाडे ते बोकडो, तव बोले

ते नार ॥ निरपराध मुजनें त्यजी,रे तुज पडो धिक्कार ॥६॥ बहुकालें पण पू
नी, नारीथी विरम्यो नांहि ॥ चाल्यो त्यां उत्कंठथी, शुं जोइ आव्यो आंहि॥७॥

॥ ढाल तेरमी ॥ करेलडां घड देनें ॥ ए देशी ॥

॥ नारी कहे मुसलें करी, दया करीनें आज ॥ मारुं नहीं नरता नणी
जाणी महोटुं अकाज ॥ १॥ नविकजन सुणजो रे ॥ नारीचरित्र विचित्र
हृदयमां सुणजो रे ॥ ए आंकणी ॥ वीहीनो चंमा मुशलथी, गयो प्रचंमा प
स ॥ मुज मारतां हवे कहो, चित्तमां केहनी आश ॥ न० ॥ २ ॥ कहीक
हीनें एम मारती, मलीयो लोक अपार ॥ मदन विचारे चित्तमां, अहो अहो
चरित्र अपार ॥ न० ॥ ३ ॥ करंबो जो खातो कदा,माहारी पण ए रीत॥
लोक बुंबारव सांनली,देखी एह अनीत ॥ न० ॥४ ॥ रे रे मूढ पशुजणी,
मारे ठे तुं केम ॥ वणिक कुलें तुं उपनी, केम हिंसा करे एम ॥न० ॥५॥
तव पाणी मंत्री करी, ठांटयुं तेहनें जाम ॥ नस्मगुंफित जटा धरी, करण
योगी थयो ताम ॥ न० ॥६॥ लोक देखी पूठे इश्युं, नगवन् शी ए वात ॥
तव ते आंसु नाखतो,नांखे निज अवदात ॥ न० ॥ ७ ॥ वीहीकें तपसी ना
सतो, विस्मय पाम्यो लोक ॥ विद्युतलतानें उपन्यो, मनमांहे घणुं शोक॥
॥ न० ॥ ८ ॥ धिग धिग निरपराधी ए, तपसी माखो आज ॥ नवि जाणुं
किहांही गयो, पति जाणी ए अकाज ॥ न० ॥ ए ॥ मलशे अथवा नहीं म
ले, ते माहारो नरतार ॥ में जाण्युं शिक्षा देई,नोग नोगवशुं सार ॥न०॥
॥ १० ॥ मनना मनोरथ मनमां रह्या, जनमां थयो अपवाद ॥ पतिविरहि
णी हुं थई,किहां करुं शोरनें दाद ॥ न० ॥ ११॥ पहोंक खवाणो पण न
हीं, हाथें दाधो जेम ॥ ए उखाणो मुज थयो,कहो हवे करियें केम ॥न०॥
॥ १२ ॥ मदन विचारे देखीनें,निज चरित्रे करी एह ॥ चंमा प्रचंमा बेहु ज
णी, जीती कपटणी गेह ॥ न० ॥ १३ ॥ योगीनें पण गम्य नहीं, नारीच
रित्रनो अंत ॥ धिग धिग विषयी जीवनें, तो पण तिहां राचंत ॥न०॥१४॥
राक्षसणी सापण वली,वाघणी जीती एण ॥ जे विश्वास करे नरा,ते पशु
नर रूपेण ॥न०॥१५॥ पुण्यें त्रणथी छूटीयो,हवे करुं निज काज॥एम चिंतवतो
आवीयो, नाम हसंती पुरी पाज ॥न०॥१६॥यतः॥ पच्यंते लंघने रोगाः, फलं
कालेन पच्यते ॥ कुमित्रे पच्यते राजा,पापी पापेनपच्यते॥१॥ पूर्वढाल॥ तेरमी
चोथा खंममां, पद्मविजयकहीढाल ॥ पुण्यें मति सबली हुवे,पुण्यें मंगलमाल॥

॥ दोहा ॥

॥ गौरी घर घर वारणे, ईश्वर मानुष्य मात ॥ रंना वन वन देखीयें, प नदनी केइ कहुं वात ॥ १ ॥ गौरी ईश्वर रंना धनद,सहुने दसती तेह ॥ नाम दसंती तेहनुं,सुरपुरी अधिक ने एह ॥ २ ॥ तस उद्यानमां चैत्य ने, जाणे मेरुगिरिंद ॥ कनकथंन पंचालिका, जिहां श्रीकृषन जिणंद ॥३॥

॥ ढाल चौदमी ॥ नवि तुमें वंदो रे, सुमतिनें शांति जिणंदा ॥ ए देशी॥

॥ मदन देवलमां पेंगे हरखें,कृषन जिनेसर दीठ ॥ जनम मरण टाले नवि जननां, मनमां लागा मीठ ॥ १ ॥ जिणवर निरखी लाल,हियडे हर्ष धरीजें ॥ जिनगुण परखी लाल, नरनव सफल करीजें ॥ ए आंकणी ॥ नवसायरमां नमता जननें, आलंबन जिनराया ॥ देवनो देव सुरासुर वंदित, पूरव पुण्यें पाया ॥ जि० ॥ २ ॥ हाथें नही हथियार न माला,नहीं पत्संगें वामा ॥ अविकारी अकषायी मुद्रा, निर्नयीनें गुणधामा ॥ जि० ॥ ॥ ३ ॥ एह सरूप न जगमां दीसे, सफल थयो अवतार ॥ नयन कृतारथ माहारां हूआं, धन्य हुं जग शिरदार ॥ जि० ॥ ४ ॥ नवसायरनो पार हुं पाम्यो, कुलन जिनपद पामी ॥ नवनय कारण नवदुःख वारण, हवे थयो शिवगतिगामी ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम बहु मानें जिनवर प्रणमी, बेगे तिण हिज गम ॥ वणिकपुत्र इण अवसर आव्यो, धनदेव तेहनुं नाम ॥ जि० ॥ ६ ॥ तेपण परमातम प्रणमीने, मनमां उल्लसित नावें ॥ मदननें धनदेव रंग मंमपमां,हरखें बिहु जण आवे ॥ जि०॥ ७ ॥ पूछे धनदेव स्नेह धरीनें, साधर्मिक तस जाणी ॥ नइ तमें आव्या कहो किहांथी, जिन मुख जोवा जाणी ॥ जि० ॥ ८ ॥ दुःख हृदयमां तुम बहु देखुं, तव चिंते ते एम ॥ कोइ महातमा मुजनें पूछे, आणी बहुलो प्रेम ॥ जि० ॥ ९ ॥ बोल्यो मदन नइ हुं आव्यो, नगरसंकाशथी जाणी ॥ दुःख कारण मुज हृदयनुं पूछ्युं, ते सांनल गुणखाणी ॥जि०॥१०॥ वात लज्जा जेहवी ने तो पण, तुमचुं दरिसण देखी ॥ स्नेह घणो दीठें तेणें नांखुं, वीजुं सर्व उवेखी ॥जि०॥११॥ यतः ॥ वरं न राज्यं न कुराजराज्यं, वरं न मित्रं न कुमित्रमित्रं ॥ वरं न दारा न कुदारदारा, वरं न शिष्योन कुशिष्यशिष्यः ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ निजवृत्तांत सर्व तेणें नांख्युं, धनदेव बोल्यो तिहारें ॥ केटलुं मुज दुःख आगल ताहारुं, तुजथी अधिक दुःख माहारे ॥ जि० ॥ १२ ॥

माहारी वात घणी अचरजनी.सुणतां अचरज थाय ॥ नारी माहारे तुज थी अधिकी, सुणतां तुज दुःख जाय ॥ जि०॥ १३ ॥ मदन कहे कहो तुम नारीनी, वात ते विस्मयकारी ॥ धनदेव कहे ते कहियें सुणजो, हर्ष धरी नरनारी ॥ जि० ॥ १४ ॥ चोथे खंमें चौदमी नांखी, श्रीजयाहर्ने रास ॥ पद्मविजय कहे गुणिगुण सुणतां, होये लील विलास ॥जि०॥१५॥३७५॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नयरीमांहे वसे, धनपति नामें शेठ ॥ निश्चल श्रीजिनधर्ममां, वीजुं जाणे वेठ ॥ १ ॥ मुनिजननी सेवा करे, करे वली पर उपकार ॥ गुण रागी गिरुउ घणुं, श्रीमंतमां शिरदार ॥२॥ लखमी नाम सोहामणुं, नाम तिस्यो परिणाम ॥ लखमी घर आंगण वसे,सकल कलानुं धाम ॥३॥ एह वी नारीशुं शेठजी, उनय लोक अविरुद्ध ॥ साधंतां सुत दोय थया, तेह सदा सुविशुद्ध ॥ ४ ॥ तिहां पहेलो धनसार छे, वीजो छे धनदेव ॥ यौवन वय आव्या विहुं, स्वामी कार्त्तिक महादेव ॥ ५ ॥

॥ढाल पंदरमी॥ गेव सागरनी पाल,उनी दोय नागरी माहारा लाल॥ए देशी॥

॥ दोय कला हवे शीख्या, यौवनवय आवीया माहारा लाल ॥ रूप लावण्य विशिष्ट, कन्या परणावीया मा०॥ नित्य नित्य निज व्यापार,करे ते वेहु जणा मा०॥ काल गमावे एणी परें,सहुए एकमना मा०॥१॥जीवलोकनें मरण, अंतें आवे सदा मा०॥ समय समय विणसे रस, रूपनें संपदा मा०॥ धनपति शेठ आयु निज, अथिर जाणी करी मा० ॥ शत्रु मित्र समनाव, हृदयमांहे धरी मा० ॥ २ ॥ थई विरक्त संसारथी, सहु जीव खामणां मा०॥ मन एकाग्रें पंच, परमेष्ठि सुमरणां मा०॥ पंथ साध्यो परलोकनो, धनपति वाणीये मा० ॥ मरण लह्युं एम उत्तम,श्रावक जाणीयें मा० ॥ ३ ॥ निज नरतार वियोग, शोक हवे वहु करे मा० ॥ लखमी पण परवास, बीहामणुं चित्त धरे मा०॥ वहु संवेग विषयथी,विमुखी नित्य रहे मा०॥ तपथी विशेषें शोषवी, काय मरण लहे मा० ॥ ४ ॥ मात पिताना मरणथी, शोक करे घणो मा०॥ नवि सुख पामे किणही, वाम चित्त दोय तणो मा०॥ तजीयो सकल व्यापार,हवे एणे अवसरें मा०॥ श्रीमुनिचंद मुणींद, आव्या पुर परिसरें मा० ॥ ५ ॥ तेणें उपदेश कह्यो एम, नोलो केम करो मा० ॥ एवडो शोक संनार, धरो चित्तमां खरो मा० ॥ नवि संसार सरूप,

निरूपण चित्त करो. मा० ॥ चरथिर सकल संसारमां, सर्वने यम ह रो मा ० ॥ ६ ॥ नित्यपंथी ए प्राण, शरीर ए चल अछे मा० ॥ यौवन चपल मरण ध्रुव, अनुक्रमें सवि गछे मा० ॥ एक जिनेश्वरनाचित. शरण ते धर्म छे मा० ॥ तेह आधार गति स्थिति, अवर अधर्म छे मा०॥ ७ ॥ तेह सुणीनें शोक,मंद करी घर गया मा० ॥ निजघर कार्य व्यापारमां, चिहुंये सक्त थया मा०॥ चिहुंनी नारी ते घरमां, नित्य कलह करे मा० ॥ वेहु जण.समजी चित्त, चित्त राखे घरें मा०॥ ८ ॥ जाते दिन एक दिन, पूढयुं वृद्ध नाइयें मा०॥ केम उदवेग सहित तुज मनडुं पाइयें मा०॥ तव लघु नाइ कहे मुज, नारीनुं दुःख घणुं मा० ॥ तेणें मुज उदवेग थाय, तनु दुर्बलपणुं मा० ॥ ए ॥ महोटो नाइ कहे तुं,मन मत दुःख करे मा०॥ कन्या बीजी परणावुं,तेहथी सुख धरे मा ०॥ लघु नाई कहे एमज, करो जेम सुख लहुं मा०॥ एह वात तुम आगल, लाजी शी कहुं मा०॥ १० ॥ तव वृद्ध नाइयें कोइक, कुलवंती कनी मा०॥ परणाव्यो धनदेवनें, बीजी शोना वनी मा० ॥ चोथे खंमें ढाल, पंदरमी ए कही मा०॥ पद्मविजय कहे श्रीगुरु, उत्तमथी लही मा०॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ३ए१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनिनव परणी नारिशुं,जोगवे नवला नोग ॥ नावि नावना योगथी, सरखो मल्यो संयोग ॥ १ ॥ स्वेछाचारी नारि ते, पहेली सरखी एह ॥ चित्त संतोष न उपन्यो, धनदेवनें तिहां रेह ॥ २ ॥ मन चिंते निर्जाग्य हुं, घर उठयो गयो रत्न ॥ तिहां पण नावि नावथी, लागी वहोत अगन्न ॥ ३ ॥ तास परीक्षा कारणें, जोवे तास चरित्र ॥ एक दिन वेठो धूजतो, नारीनें कहे एणि रीत ॥ ४ ॥ शीतज्वर मुज आवियो, वेशी न शकुं तेण ॥ ॥ वहेली शय्या पाथरो, शयन करुं हुं जेण ॥ ५ ॥ प्रगुण करी शय्या तेणें, धनदेव सूतो जाम ॥ पावरण सीरख प्रमुख, उढाडयां तस ताम॥६॥

॥ ढाल शोलमी ॥ कांकरीया मुनिवर, धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ तेणे समे सूरय आयम्योजी,रातें थयो अंधकार॥ आछादे सवि दीपनें जी, गुहड करे घूतकार ॥ १ ॥ सांजलो सयणा, सांजलो नारीचरित्र ॥ ए आंकणी ॥ घोरनाद कपटें करीजी, उंघे तिहां धनदेव ॥ तव मोहोटी लघुनें कहेजी, सांजल रे तुं हेव ॥ सो० ॥ २ ॥ हुं परचार उतावलीजी,

आपणनें छे काम ॥ तव ते काम पतावनीजी, करीनें प्रगुण थइ ताम ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ घोर निद्रा आव्यो वहीजी, जाणी ते घोर नारि ॥ घरथी ते नीकलीजी, पर उद्यान सहकार ॥ सो० ॥ ४ ॥ ते अपर कोई गईजी, पाछलथी धनदेव ॥ तेनें अनुसारें गयोजी, हलुये हलुयेहेव ॥सो०॥५॥ तेहज आंबि वस्त्रथीजी, गोपुं आप शरीर ॥ गयो वृक्षनी अपरेजी, साहस धरीनें धीर ॥ सो० ॥ ६ ॥ मंत्र संजाव्यो तेणीयेंजी, शक्ति अचिंत्य ने मंत्र ॥ कहीनें आंबो गयोजी, चाल्यो ते गगनांत ॥ सो० ॥ ७ ॥ जलनिधि वीलामणोजी, रयणायर मध्यनाग ॥ रत्नद्वीप रलियामणोजी, अमरद्वीप वडनाग ॥ सो० ॥ ८ ॥ तस शिर मुकुट मणिसमुंजी, नगर रयणपुर तुंग ॥ रत्नें मंडित घर घणांजी, सहुरा मनें ने जंग ॥ सो० ॥ ९ ॥ विद्याधर वासो जिहांजी, रूपें जीत्यो अनंग ॥ विद्याधरी रूपंकरीजी, रति हारी एकंग ॥ सो० ॥ १० ॥ तिण नगरी उद्यानमांजी, उतरीयो सहकार ॥ धनदेव तिहांथी नीकलीजी, दूर गयो कोइ ठार ॥ सो० ॥ ११ ॥ नारीयें पण उतरीजी, पेठी नगर मकार ॥ धनदेव पण पूंठें थयोजी, तास चरण अनुसार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कौतुक नगरीमां घणांजी, नानाविध मनोहार ॥ निज इछायें विचरतीजी, पूंठे तस भरतार ॥ सो० ॥ १३ ॥ तेह चरित्र जोतां थकांजी, चित्तमां चमक्यो एह ॥ जाणे स्वर्गमां आवीयोजी, स्वपन परे लहे तेह ॥ सो० ॥ १४ ॥ चोथे सर्गें ए कहीजी, चौदमी ढाल रसाल ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथीजी, होवे मंगलमाल ॥ सो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर ते नयरमां, श्रीपुंज नामें शेठ ॥ बीजा सहु व्यवहारिया, मानुं एहथी हेठ ॥ १ ॥ चार पुत्र उपर सुता, श्रीमती नामें तास ॥ तिलक समी त्रिहुं लोकमां, रूप लावण्यनो वास ॥ २ ॥ एहवी नारी न पामीयो, क्षीणदेह तेणें काम ॥ हलुये हलुये अनंग थयो, ते दुःखथी मानुं आम ॥ ३ ॥ विद्या कला सरवे तिहां, स्पर्द्धायें कस्यो वास ॥ सौभाग्य स्थानक ए सहुं, नवि लाधुं कोइ पास ॥ ४ ॥ सार्थवाह वसुदत्त तिहां, तेहना पुत्रने तेह ॥ करी विवाह हवे परणवा, मांक्यो उत्सव गेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ राग खंभाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ सारथवाहनो पुत्र, वस्त्र अमूलिक अंगें धरेजी ॥ रयणतणा अलं

कार,तास किरण अति विस्तरेजी ॥१॥ सांबेला श्रीकार, पदेखां वाघा जरक शीजी ॥ नाटक करे वर पात्र, जाणे रंगा वरेशीजी ॥ २ ॥ वाजे विवध वाजित्र, सरणाइ टहके घणीजी ॥ साजन मलियो साथ, मंगल गावे जान णीजी ॥ ३ ॥ बोले विरुद अनेक, लोक जोवा बहु आवीयो जी ॥ श्रीफलनें वली पान, वरराजा कर लावीयोजी ॥ ४ ॥ वींजे चामर पास, छत्र धखुं शिर उपरेंजी ॥ नोबत गडगडे ठंदि, चहुटे चाले एणी परेंजी ॥ ५ ॥ देखी नारीचरित्र, धनदेव चिंते इण समेजी ॥ वलशे जब ए नारि, तव व लशुं हुं अनुक्रमेंजी ॥६॥ जोतो उत्सव तेह, श्रीपुंजशेठ घर आंगणेजी ॥ वन्नो तोरणें तेह, दीसे ते रलीयामणेजी ॥ ७ ॥ एण अवसर वरराय, तुरंग चढयो शोजें घणुंजी ॥ वसुदत्त सुत श्रीपुंज,शेठनुं सोहावे आंगणुंजी ॥ ८ ॥ लोक तणी जीडजाड, जोवा मलीयो बे घणोजी ॥ थंज ते मगीयो ताम, तीखी धार तोरण तणोजी ॥ ९ ॥ पडीयो तिर्छो तेह, जवितव्यता योगें करी करीजी ॥ लाग्यो ते उत्तमांग,वर ततकाल गयो मरीजी ॥ १० ॥ वसुदत्त परिजन जेह, तेह शोकातुर बहु थयोजी ॥ रोवे सवि परिवार, शिर कूटे पीटे हियोजी ॥ ११ ॥ सहु गया ते निजघेर, हवे श्रीपुंज चित्त चिंत वेजी ॥ थयो आव्यो अंतराय, कहो हा शुं करीयें हवेजी ॥ १२ ॥ शी गति होशे धूव, खेद करे चित्त आपणजी ॥ निजपरिवारनें साथ, चिंतवे एणी परें भापणेंजी ॥ १३ ॥ यतः ॥ प्रारब्धमन्यथा कार्यं, दैवेन विदधेऽन्यथा ॥ कोवेत्ति प्राणिनां प्राच्य, कर्म्मणां विषमां गतिम् ॥१ ॥ पूर्व ढाल ॥ परणे नहीं जो आज, लगनें तो ए अन्नागणीजी ॥ एम लोकें परसिद्ध, सकलंकी कन्या जणीजी ॥ १४॥ नहीं परणे नर कोय,सहुनें जीवित वालहुंजी ॥ पर णावुं कोइ आज,कन्यालग्न शाखें कहुंजी ॥१५॥ सयण कहेकांइं खेद,तुम नें करवो नवि घटेजी ॥ विण नावी नवि होय,नावि नाव ते नवि मटेजी ॥ ॥ १६ ॥ धीजानें थयो एह, सोनजी चित्तमां हरखियोजी ॥ निजनरनें करे आण, लावो कोइ नर परखियोजी ॥ १७ ॥ ते नर ततक्षण ताम, वर लो वानें नीकल्याजी ॥ राजमार्ग सवि ताम, जोतां कोइनें नवि मल्याजी ॥१८॥ इण अवसर धनदेव, नयणें पडियो तेहनेंजी ॥ दिव्यरूपधर जेह, आव्यो ते नर यौवनेंजी ॥ १९ ॥ लाव्या शेठनें पास, निजपुत्री सम निरखि योजी ॥ प्रार्थना करे तास, शेठीयो देखे हरखीयोजी ॥ २० ॥ चोथे खंडें

ढाल, सत्तरमी शोहामणीजी ॥ पद्मविजय कही एह, श्रीजयानंद रासज तणीजी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रार्थना सुणी शेठनी, चिंते चित्त मकार ॥ ए रूपवंती देखीयें,जेहवी पूरव नार ॥ १ ॥ क्षेम कुशल निज वांछते, पूरव ठंमवी नार ॥ पण नारी विण माहारो,अफल थयो संसार ॥ २ ॥ अतिथिनें वली प्राहुणा,न लहे आदर मान ॥ नारी विना हाली समो, पुरुष ते विटल समान ॥ ३ ॥ तात करे एम प्रार्थना, आदर करी अपार ॥ एहवी केम ठंडुं हवे,नारी रति अनुहार ॥ ४ ॥ एम करी हाकारो नण्यो,न्हवराव्यो धनदेव ॥ करिय विलेपन चंदनें, वस्त्र पहेर्यां ततखेव ॥ ५ ॥ आनूषण अंगें धर्यां, पहेरीनें फुलमाल ॥ श्रीमती कन्या परणियो, हर्ष थइ उजमाल ॥ ६ ॥ शेठ कन्या धनदेवनें, आणंद वर्त्यो एम ॥ देखी जमाई रूअडो, शेठ धरे बहु प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ वाडी फूली अति नली, मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ धनदेव चिंतातुर थयो, सुणो सयणां रे ॥ बेगो देखे बाहार,लाल सुणो वयणां रे ॥ दोय नार्या धनदेवनी सु० ॥ फरि फरि नयर मकार ला० ॥ १ ॥ सांजली कौतुक अभिनवुं सु० ॥ विवाह जोवा काज ला० ॥ महोटी न्हानीनें कहे सु० ॥ रात घणी छे आज ला० ॥ २ ॥ जोइयें उत्सव हे जशुं सु० ॥ लघुयें पडिवज्युं तेह ला० ॥ जोवे बेहु जणी रंगशुं सु० ॥ लघु बोली सुणो एह ला० ॥३ ॥ देव देवी सम मनहरू सु० ॥ वरवहू अतिहि उदार ला० ॥ आर्यपुत्र सम देखीयें सु० ॥ महोटी कहे तव नार ला० ॥ ४ ॥ नोली तुं कांहिं नवि लहे सु० ॥ सरखा नर बहु होय ला० ॥ आर्यपुत्रनें सारिखो सु० ॥ दीसे बीजो कोय ला० ॥ ५ ॥ शीतज्वरें करी पीडियो सु० ॥ तेतो सूतो गेह ला० ॥ निद्रामांहे आवीयो सु० ॥ नही वियावल एह ला० ॥ ६ ॥ किहांथी आव्यो होय इहां सु० ॥ क्षण एक रही तेणे ठाय ला० ॥ कौतुक देखी बेहु जणी सु० ॥ सहकार साहामी जाय ला० ॥ ७॥ ठंच गोखें बेगो हवे सु० ॥ नवपरिणित स्त्री युत ला० ॥ धनदेव शंका धारतो सु० ॥ गमन नारीनुं युत्त ला० ॥ ८ ॥ श्रीमती वस्त्रनें छेहडे सु० ॥ श्लोक ते लखियो एक ला० ॥ कुंकुम रसथी सहिनाणी सु० ॥ करो निपुणाइ छेक ला० ॥ ९ ॥ यतः ॥ कहसंती कवारत्र, पुर्इ यू

तोऽग्रागः क च ॥ सुनुर्धनपतेर्नाम्ना,धनदेवोऽन्यगात्श्रियं ॥१॥ ढाल ॥ द संती नगरी किहां सु० ॥ किहां रतनपुर गाम ला० ॥ किहां आंबो गगनें चल्यो सु० ॥ किहां कह्यो धनदेव नाम ला० ॥ १०॥ कांइक कार्य उद्देशी नें सु० ॥ नीकलीयो हवे तेह ला० ॥ आंबे चढी ते दोय जणी सु० ॥ म नमां हर्ष धरेय ला० ॥ ११॥ आंबे पूर्वपरें रह्यो सु० ॥ नारीयें गणियो मंत ला० ॥ चाल्यो आकाशें आंबलो सु०॥ पोहोतो निज घर तंत ल०॥ ॥ १२ ॥ उतरयो निज उद्यानमां सु० ॥ धनदेव ठानो ताम ला०॥ घरमां जई सुतो वली सु० ॥ शय्यायें करी आराम ला० ॥१३॥ उंडी निद्रा नर थयो सु० ॥ आवी हवे दोय नार ला० ॥ नरनिद्रायें देखियो सु०॥ सूतो निज नरतार ला० ॥ १४॥ शंका रहित सूती वेहु सु०॥ जागी कृष्णकर्मा जाम ला० ॥ थयो प्रनात रयणी गई सु० ॥ सूरय उग्यो ताम ला० ॥ ॥ १५ ॥ सवि अंधकार नसाडियो सु० ॥ चंमकिरण दिन नाह ला०॥ व लगी घर कारज नणी सु०॥ धंधो घरनो अथाह ला० ॥ १६॥ किमहिंक हवे लघु नारियें सु० ॥ सांड वाहिर रह्यो हाथ ला० ॥ कंकण सहित ते देखीयो सु० ॥ विवाहवंतो नाथ ला० ॥१७॥ मोहोटीनें देखाडीयो सु० तव कहे महोटी वाण ला० ॥ तें तिहां कह्युं ते सवि मल्युं सु० ॥ देखी एहनो पाण ला० ॥ १८ ॥ किमहिंक आव्यो तिहां कणे सु० ॥ परण्यो कन्या ताम ला०॥ जांण्युं एणे आपणुं सु०॥ सवि वृत्तांत ते आम ला०॥ ॥ १९ ॥ मत बीजे मनमांहियी सु० ॥ करशुं तस प्रतिकार ला० ॥ कर वुं तो विहिवुं किशुं सु० ॥ सघलुं याशे सार ला० ॥ २०॥ श्रीजयानंदना रासमां सु० ॥ चोथे खंमें ढाल ला० ॥ अढारमी पूरी कही सु० ॥ आग ल वात रसाल ला० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विहिक म कर तुं वापडी, करुं एहनो उपचार ॥ सात गांठ देइ मं त्रीनें, दोरो कस्यो तैय्यार ॥१॥ धनदेवनें मावे पगें, नारियें बांध्यो ताम ॥ मूरखनें निर्दयीपणुं, कूड कपटनुं धाम ॥ २ ॥ मंत्र तणा प्रनावथी,सूडो थयो ततखेव ॥ देखी निज सूडापणुं,दीन वदन धनदेव ॥ ३ ॥ नवि बोलयुं कंकण करें, नवि सांनरिवुं जेण ॥ धनदेव मनमां चिंतवे, शंका आवी तेण ॥ ४ ॥ रात्रिवृत्तांत जाणी करी, सूडो कीधो आम ॥ एणे चरित्रे ए नारिनें,

असंनाव्य नहीं काम ॥ ५ ॥ मन चिंते हा हारियो, मानवनो अवतार ॥ पशुपणुं हुं पामियो, एम ध्याये तेणी वार ॥ ६ ॥ कडवा जाये जेटले, क रथी चांप्यो तास ॥ एणि परें बोले पापिणी, क्रोध तणो आवास ॥ ७ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ वटाउनी देशी ॥

॥ आंखे समजावे अन्यनें रे, करे वली अन्यशुं वात ॥ अन्य हृदयमां धारती, कांइ नारी कुटिल कुजात रे, जो होये पोतानो भ्रात रे, वली जो होये निजनो तात रे, तेहने पण वंचवा जात रे, एहवा गुण जगत वि ख्यात रे ॥ १ ॥ सयण सलूणे सांनलो मेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ कोयनी न होये ए कदा रे,मूकी निजपति राय ॥ रांक साथें रमे रंगशुं,तस जाणे जी वित प्राय रे,नदीनी परें नीची जाय रे,सापण परें कुटिल सदाय रे,राक्षसिणी परें खावा धाय रे, जिहां मन मान्युं त्यां वजाय रे ॥स०॥२॥ क्षण एक रोवेह ण हसे रे,क्षण देखावे राग ॥ क्षणमां विरागिणी हुइ रहे,क्षणमां कहे मीठी वाग रे,क्षणमां कटु वचननो लाग रे, क्षण रूसे तूसे अथाग रे, क्षणमां करे निजघर ताग रे, क्षणमां दिये निजपति दाग रे ॥स०॥३॥ निजपति परदेशें जतां रे, परम होये सुख देह ॥ मुख कहे तुम विण केम रहुं रे, आ सूनुं ढंढेर ले गेह रे, तुमशुं मुज अतिथ सनेह रे, घडी वरस समी मुज एह रे, हवे थाशे कहो करुं तेह रे, हवे दुःखना वरसशे मेह रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारीरंग पतंग स्यो रे, जातां न लागे वार ॥ जेम वादलनी छांहडी, जेम वीजलीनो चमकार रे, जेम राज्यमान अल्पवाररे, जेम कपटी ध्यान विचार रे,नहीं साचुं वचन किवार रे, अशुचि अपवित्रनंभार रे ॥स० ॥५॥ पंखी पगलुं आकाशमां रे,जलमां मत्स्यपद जोय ॥ तेम नारीना हृदयनो, जन न लहे मारग कोय रे, बुद्धें सुरगुरु यदि होय रे, ताराऽं गणित करे जोय रे, एहनो पार न पामे सोय रे, क्षण हसती क्षणमां रोय रे स०॥६॥ धीठ हृदय नारी हवे रे,बोले एणी परें वाण ॥ अम चरित्र जोवा नणी, तें कीधुं एम मंनाण रे, सूतो जूठो ज्वर आण रे, अम साथें परद्वीप गाण रे,आवी पक डयो कनी पाण रे, आवी सूतो ठंडशुं वस्त्र ताण रे ॥ स०॥ ७ ॥ तेहनुं फल हवे देखजे रे, ते विण न वले शान ॥ एम करी पांजरे घालियो, सुडानें देइ अपमान रे, बहु वचन प्रहारनुं दान रे, सांनले सुडो निजकान रे, जपु मांडीनें करे बहु मान रे, तुम सम नहीं अवर को गान रे ॥ स०॥८॥ पर

परिजन देखी घणुं रे, शुक करे पश्चात्ताप ॥ धिग् मुज सूडानो नव लह्यो, मुज खावी पोहोतुं पाप रे, न कस्यो परमेष्टीनो जाप रे, तेणें पाम्यो एम संताप रे,हवे परवश शुं करुं खाप रे,नवि खामां खावे माय बाप रे स०॥ ॥ ए ॥ घर कारय करतीथकी रे, रांधे जब ते नार ॥ तब नाजी ठमका वती, तेहना होये ठमकार रे,लावी सूडो तेणी वार रे,चिहिवरावे शस्त्रनी धार रे, कहे सांनल तुं निरधार रे, करुं एहवो तुज परकार रे ॥ स०॥१०॥ तुजने मारी एणी परें रे, एक दिन एह हवाल ॥ ठमकावीशुं तुजने, एम बोले ते विकराल रे, सुणी पामे नय असराल रे, नित्य नित्य ए डुःखजं जाल रे, लहेतो काढे कोइ काल रे, जाणे मलीया ठे नरकपाल रे स०॥ ॥ ११ ॥ धन्यधन्य ते नर राजिया रे, जाणी एहवी नारि ॥ दूर रह्या महा नाग्य ते, जाणो जेम जंबूकुमार रे, वली वयरस्वामी खणगार रे, चोथे खंमें ए सार रे, ढाल उंगणीशमी खधिकार रे, कहे पद्मविजय धरी प्यार रे ॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४८५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे जे रत्नपुरें थयो, ते सुणजो खधिकार ॥ शेठें जाएयुं किहां गयो, श्रीमतीनो नरतार ॥ १ ॥ गयो ते पाठो नाविथो, खोळाव्यो बहु गाम ॥ विहाणे दीठो जे लख्यो, श्लोक मनोहर ताम ॥ २ ॥ तथाहि ॥ हसंती पुरें धनपति, शेठनो सुत धनदेव ॥ व्योम मार्ग खावी करी, परणी गयो ततखेव ॥ ३ ॥ तेय सुणी शेठें हवे, श्रीमती रोती जेह ॥ खाशातना देइ एम कहे, इहां तेहावुं तेह ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ वींठीयानी देशी ॥

॥ एकदिन एक सारथपति, सागरदत्त नामें शेठ रे ॥ व्यापारनें खरथें तिहां जतो,हसंती पुरी जिहां ठेठ रे ॥ १ ॥ जुर्ड जुर्ड कर्मविटंबना ॥ ए खांकणी ॥ तेहने श्रीपुंजें खापियो, बहुमूल्य रयण खलंकार रे ॥ कहे धनदेवनें तुमें खापजो, करी खादर खति सतकार रे ॥ जु० ॥ २ ॥ कहेजो संदेशो एणी परें, तुमें खावो एणे गाम रे ॥ निजनारी संनाळो मोहथी, तुम न घटे एहवुं काम रे ॥ जु० ॥ ३ ॥ हवे सागरदत्त वण थालियो, उलंघ्यो सागर जहाज रे ॥ पोहोंतो हसंती नयरीयें, जिहां करे व्यवसायनां काज रे ॥ जु० ॥ ४ ॥ धनदेव घर गयो खन्यदा रे, नवि दीठो

धन देव रे ॥ तव पूछे तेहनी नारिनें, नांखो मुजनें ततखेव
॥ जू० ॥ ५ ॥ धनदेव किहां छे दाखवो, तव बोली ते सुणो ना
रे ॥ देशांतरें व्यापारें गयो, आवशे ते दिन दश वार रे ॥ जू० ॥ ६ ॥ क
सार्थवाह नारी प्रत्यें,श्रीपुंजें दीयो अलंकार रे॥ धनदेव जमाइने कारणें,
मती कूरे तस नार रे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते कारण तेड्या छे तिहां, तव बोल
ते बेहु नार रे ॥ ए वात तो तेहुं कहेता हता, उत्सुकता चित्त बहु धार
॥ जू० ॥ ८॥ पण कार्यवशें देशांतरें, जावुं पडियुं ततकाल रे ॥ जातां
र्यें एणी परें नांखीयुं, भरी हर्षनें थईउजमाल रे ॥ जू० ॥ ए ॥ रत्न
थी आवे जो कोइ, आपजो तस ए शुकराज रे ॥ मुज नारी नवोढा र
णनें,वली प्रेम उपावण काज रे ॥ जू० ॥ १० ॥ लेजो वली सत्तरो मो
ले, एम कही आप्युं तस हाथ रे ॥ शुक सहित रूडुं ते पांजरुं, लीधी
लंकृतिनी आथ रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ हवे सागरदत्त ते नयरमां, करी क्रय
क्रय व्यवहार रे ॥ चढीयो घर जाया प्रवहणें, क्रमें सागर पाम्यो पार रे
॥ जू० ॥ १२ ॥ उतरी हवे नयरमां संचख्यो, पोहोतो श्रीपुंजनें गेह रे
कह्युं सर्व वृत्तांत ते शेठनें, जे नारीयें नांख्युं तेह रे ॥ जू० ॥ १३ ॥ अ
शुकपिंजर तेणें आपियुं, नारीनें रमवा हेत रे ॥ ते लेइनें अति मोदशुं,
जपुत्रीनें देइ संकेत रे ॥ जू० ॥ १४ ॥ नरतार प्रसाद ए पामीनें, शुकशुं
मती सुरसाल रे ॥ चोथे खंडें ए वीशमी, पद्मविजयें नांखी ढाल रे ॥ जू०

॥ दोहा ॥

॥ रमतां रमतां एकदा, दवरक दीठो पाय ॥ विस्मय पामी त्रोडीयो,
व तिहां अचरिज थाय ॥१॥ मूलरूपें धनदेव ते, देखी हर्ष न माय ॥
स्मय लइने पूछती, प्रणमी निजपति पाय ॥ २ ॥ स्वामी ए अद्भुत
श्युं, कहो मुजने अवदात ॥ ते कहे जिम देखो तुमें, तिमहिज छे ए वात
॥ ३ ॥ हमणां अधिक म पूछशो, सांभली एह विचार ॥ हर्ष जई निज
तातनें, नांख्यो तेह प्रकार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ आवो जमाई प्राहुणा जयवंताजी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपुंजशेठ हवे हर्षशुं जयवंताजी ॥ जोइ जमाई रूप गुणवंताजी ॥
अति हर्षित सहु कुटुंब ते ॥ ज० ॥ सांभली तेह स्वरूप ॥ गु० ॥१॥ अ
ति आदर सन्मानथी ज०॥ रहेवाने आवास गु० ॥ आप्यो स्वर्ग विमान

थयो ज० ॥ बहु धन पूरित ग्राम गु० ॥ २ ॥ तिहां धनदेव सुखें रहे ज० नवपरिणित लेइ नार गु० ॥ स्वेछायें अति स्नेहथी ज० ॥ जोगवे जोग श्रीकार गु० ॥ ३ ॥ जाणे पुण्य उदयथकी ज०॥ पाम्यो फरी अवतार गु० करे व्यवसाय घणा तिहां ज० ॥ सकलकला भंमार गु० ॥ ४ ॥ लाभ घ णो तेहमां थयो ज० ॥ इव्यपात्र हुउं ताम गु० ॥ काल केतोहिक निर्ग मे ज० ॥ रहेतां तिणहिज गाम गु० ॥ ५ ॥ इंइजाल सुपना समो ज०॥ एह अनित्य संसार गु० ॥ आयुःक्षयें तिणें कारणें ज०॥ शेव गया यमद्वा र गु० ॥ ६ ॥ जाई जोजाई एकमनां ज० ॥ श्रीमती ऊपर राग गु० ॥ अ ल्प थयो तिहां अनुक्रमें ज० ॥ विरुई बोले वाग गु० ॥ ७ ॥ यतः ॥ स्त्री पीयर नर सासरें, संयमीया सहवास ॥ एता होय अलखामणा, जो मंमे थिर वास ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीमती निज जरतारशुं ज० ॥ जावानें परिणा म गु० ॥ मन चिंते जरतारनुं ज० ॥ केहवुं रहेवा गाम गु० ॥ ८ ॥ के हवी दोय नारी अछे ज० ॥ जोउं तास स्वरूप गु०॥ उत्कंठित चित्त तेह शुं ज० ॥ कहे पतिने करी चूंप गु० ॥ ९ ॥ जनकनुं घर निज स्वामीजी ज० ॥ नवि देखाडो केम गु० ॥ सासरे रहेवुं नारीने ज० ॥ जनकगृहें नर नेम गु० ॥१०॥ यश कीर्त्ति पामे घणी ज०॥ अन्यथा होये अपमान गु० ॥ तव बोल्यो धनदेव ते ज०॥ अवसरें मेजशुं तान गु० ॥ ११ ॥ धी रजवंती श्रीमती ज० ॥ मौन करी रही ताम गु० ॥ वली कालांतरें एकदा ज० ॥ श्रीमती कहे सुणो स्वामि गु० ॥ १२ ॥ त्रण जातिना पुरुष छे ज० ॥ जघन्य उत्तम नर जात गु० ॥ त्रीजा मध्यम जाणीयें ज० ॥ प्र थम श्वसुर गुणें ख्यात गु० ॥ १३ ॥ निजगुण ख्यात उत्तम कह्या ज० ॥ मध्यम बाप गुणेण गु० ॥ तेणें तुमनें रहेतां इहां ज०॥ श्वसुर तणें इ व्येण ॥गु०॥ १४॥ उत्तमता नवि एहमां ज०॥ वली सुणो त्रण प्रकार गु०॥ बाप गुणें उत्तम कह्या ज० ॥ मध्यम मात प्रकार गु० ॥ १५ ॥ नारीगुणें जे विख्यात ज० ॥ तेह जघन्य कहेवाय गु०॥ यद्यपि गुणवंता तुमें ज०॥ सकल कलाना गाय गु० ॥ १६ ॥ समरथ इव्य उपार्जवा ज० ॥ तो पण एम कहेवाय गु०॥ जमाई श्रीपुंज शेठनो ज०॥ कहे जननो समवाय गु०॥ ॥ १७ ॥ तेणें लो उत्तम पुरुषना ज० ॥ मारगनी करो चाह गु० ॥ जनम जूमि तो अनुसरो ज०॥ शुं कहियें घणुं नाह गु०॥ १८ ॥ खंम चोथे एक

वीशमी ज० ॥ पद्मविजयें कही ढाल गु० ॥ श्रीजयानंदना रासमां ज०
सुणतां मंगलमाल गु० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनदेव नारी वयणथी, बोले एणी परें बोल ॥ श्वसुर तणे घर
रहे, जाणुं तेह निटोल ॥ १ ॥ पण ठमका नाजी तणा, नवि वीसरि
मुज्झ ॥ हैडामां खटके घणा, शुं नांखुं हुं तुज्झ ॥२॥ ते सांजली श्रीमती क
ठमकानी कहो वात ॥ तव ते धुरथी सवि कहे, ठमकानो अवदात ॥ ३
॥ढाल बावीशमी ॥ रूडीनें रढीयाली रे, वाहाला ताहारी वांसली रे ॥एदेशी
॥ रूडीनें रढीयाली रे, सुगुणा श्रीमती रे, हसीनें बोली तव तेणी वा
एहनो श्यो गणवो चित्त जार ॥ रू० ॥ १ ॥ मुजनें देखावो रे ते तुम
रजा रे, शक्ति हुं जोउं केहवी तास, मुजनें जोवा अति पीपास ॥ रू०
॥ २ ॥ शंका मूकी रे चालो निजघरें रे, तुमने बाधा नहीं लगार, मुज
रिखो पासें थकां नार ॥ रू० ॥ ३ ॥ तेह सुणीने रे धीरय धारतो रे,
व्य करी सहु चेतुं ताम, साथें लेई पोतानी वाम ॥ रू० ॥ ४ ॥ सयण
पूठी रे धनदेव चालियो रे, सागर ऊतरी पाम्यो पार, पोहोतो हसंतीनय
मझार ॥ रू०॥५॥ बहुधन देतो रे दीन अनाथनें रे, गंधहस्तीपरें पोहोत
द्वार, विस्मय पामी तव बेहु नार ॥ रू० ॥६॥ ए श्यो अचंनो रे आव्य
किहांथकी रे, शुक टलियो केम धरे संदेह, मलपतो आव्यो ए निजगेह ।
॥ रू० ॥ ७ ॥ एम विचारी रे बेहु ऊनी थई रे, जाणीयें हैयडे हर्ष न मा
य, करे मंगल उपचार बनाय ॥ रू० ॥८॥ गौरव करती रे विनय देखावती
रे, चित्रशालीमां लावी ताम, सिंहासन मांड्युं तेणें ठाम ॥ रू० ॥ ए॥
धनदेव बेठो रे साथें श्रीमती रे, कुशल खेमनी पूठे वात, धनदेव कहे सु
ल ठे सुखशात ॥ रू० ॥ १० ॥ मोहोटी नांखे रे न्हानीनें सुणो रे, जल
थी पखालो पियुना पाय, लघु पण शीघ्र थई जल लाय ॥ रू० ॥ ११ ॥
नकियी न्हानी रे पाय पखालती रे, त्रांबाकूंमीमांहे तेह, ते जल मही
टी ग्रही ससनेह ॥ रू० ॥ १२ ॥ मंत्रें मंत्री रे तिम आगोटीयुं रे, पृथिवी
उपर बलथी ताम, मंत्रनो महिमा अचिंत्य ठे आम ॥ रू० ॥ १३ ॥ वध
या लागुं रे पाणी वेल ज्युं रे, नय पाम्यो धनदेव अत्यंत, श्रीमती साहामुं
जोवे तंत ॥ रू० ॥ १४ ॥ श्रीमती नांखे रे मत बीहीजे मनें रे, पाणी वधतुं

-वाव्यूं जाय. अनुक्रमें फूंटी पग बोलाय ॥ रू० ॥ १५॥ ढींचणें थाव्युं रे
नाघणो बूडती रे, कटितटनें वली नाभि प्रमाण, ठदर हृदयनें कंठने मा
ण रू० ॥ १६ ॥ वधतुं वधतुं रे नासायें अडगुं रे, धनदेव मनमां अति
खेदाय, केम पाछो जल वधतुं जाय ॥ रू० ॥ १७ ॥ श्रीमती नांखे रे च
-प मन माणजो रे,करुं एहनो हवे हुं प्रतिकार.जो जो माहारो ए चमत्कार
॥ रू० ॥ १८ ॥ घुटडे एकें रे ते जल पी गई रे, जेम नवि धरतीयें जल
देखाय, एक बिंड नवि तेणें ठाय ॥ रू० ॥ १९ ॥ वेहु ते नारी रे श्रीमती
पाय पडे रे.शक्तियें जीती तें एणी वार.तुं विद्या गुणनो भंमार॥रू०॥२०॥
तुजनें आराधुं रे स्वामिनीनी परें रे. त्रणे प्रीति परस्पर जोडी, काम करे ध
रर्मा मन फोड ॥ रू० ॥ २१ ॥ कुइ विद्यायें रे त्रणे बराबरी रे,प्रीति घ
णी नित्य वधती जाय. सरिखे शीलें सहु सम ठाय ॥ रू० ॥२२ ॥ दोय
सम श्रीजी रे स्वेछाचारिणी रे, अवगुणी संगें अवगुण थाय,गुण सघला
तस नाशी जाय ॥ रू० ॥ २३ ॥ यतः ॥ अंबस्सय निंबस्सय, दोएहवि
समा गयाई मूलाई ॥ संसग्गीय विणहो, अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥१॥ढाल॥
धनदेव चिंते रे मनमां एणी परें रे, जो ए वे सम त्रीजी थाय, तो हुं शरण
करुं किहां जाय ॥ रू० ॥ २४ ॥ राक्षसी सरखी रे त्रणनें ठांडीनें रे, करुं
हवे आतम केरुं हित, जेम नवि होय मुज एहवी नीत ॥ रू० ॥ २५ ॥
चोथे खंमें रे ढाल बावीशमी रे, पद्मविजयें एम भांखी सार,धनदेव पाम
शे जयजयकार ॥ रू० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ५५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कांइक कारण मिश करी,घर ठोडणने हेत ॥ रूपनदेवनें देहरे,आव्यो
धर्मसंकेत ॥ १॥ ते धनदेव हुं जाणजे,वेगो ताहारी पास ॥ मूढापणुं में अ
नुभव्युं, केवल दुःख आवास ॥ २ ॥ पशुता आवी ढूकडी, पण कोइ दैव
संयोग ॥ पशुपणुं नवि पामीया, तेणें तुमें सुखीया लोग ॥ ३ ॥ में तो म
हारा तनुयकी, दुःख अनुभवियुं जोर ॥ तेणें तुमथी मुज आकरां,जाणो
कर्म कठोर ॥ ४ ॥ मदन सुणी रीझ्यो घणुं, विस्मय लही कहे एम ॥ तु
म दुःख जाणी कीजीयें,आतम हित विहुं प्रेम ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगर्या जी ॥ ए देशी ॥
॥ इंण अवसर तिहां मुनिवर आवीयाजी. विमलबाहु जसु नाम रे ॥

बहु मुनिवरनें वृंदें परिवस्याजी, साधुगुणें अनिराम रे ॥ इं०॥ १॥ पंच स
मिति सुमता सदाजी, त्रण गुपतिनः धार रे ॥ दशविध साधु धर्म अ
राधताजी, नावना नावता वार रे ॥ इं० ॥ २ ॥ जिनवर चैत्यमां जिनव
वांदीयाजी, स्तवना करीनें स्तविया देव रे ॥ तेह मंमपमां मुनिवर आव
याजी, जिहां मदन धनदेव रे॥ इं० ॥ ३ ॥ शिष्यें केवल प्राशुक था
केंजी, पायसुं आवी वेग ताम रे ॥ नक्तियी विहु जणे मुनिवर वंदीयाजी
करिय पंचांग प्रणाम रे ॥इं०॥४॥ धर्मलान दीयो मुनिवरेंजी,ज्ञानें करी ज
णी तास चरित्र रे ॥ धर्मदेशना दीये प्रतिबोधिनीजी,सांनलो प्राणी कर्म वि
चित्र रे ॥ इं० ॥ ५ ॥ जीवित तटिनीपूर समुं कह्युंजी, नटपेटक सम एह
कुटुंब परिवार रे ॥ शरदना अभ्रसमी लखमी कहीजी, धर्ममां जे मुंजे ते
गमार रे ॥ इं०॥ ६ ॥ आपद कालें शरण न को होयेजी, स्वारथ तत्पर
परिवार रे ॥ सडन पडन विध्वंसी ए तनुजी, ललना कूड कपट आगा
रे ॥ इं०॥ ७॥ एणी परें विघ्न नस्या संसारमांजी, जीवने सुख नहीं लवलेश
रे ॥ विषयनुं सुख अणुसम ते मानतोजी, ते ललना आयत छे सुविशेष
रे ॥ इं०॥ ८ ॥ ललना तो आपदानी छे प्रिय सखीजी, सापण वाघण र
क्तसिणीनें तोल रे ॥ स्वर्गनी नोगल नरकनी दीपिकाजी,राचे कोण पंमित
जेह अमोल रे ॥ इं०॥ ९॥ कार्य अकार्य न गणे प्राणियोजी, विविध प्र
कारनां करतो पाप रे ॥ तेहयी ए संसारमांहे नमेजी, खमतो ते चिहुं ग
तिनां डुःख आपा रे ॥ इं०॥ १० ॥ ते कारण तुमें धर्म समाचरोजी, विष
यथी विरमी महानुनाव रे ॥ सर्व विरति रूडी अंगीकरोजी, धर्म कार्यमां
आणी नाव रे ॥ इं०॥ ११ ॥ निग्रह कीजें सर्व कषायनोजी, इंद्रिय जे छे
चपल तुरंग रे ॥ डुर्दम दमीयें तपथी तेहनेंजी, गुरु कुलवासें वसीयें रंग
रे ॥ इं०॥ १२ ॥उपसर्गनें वली सहियें परिसहाजी,तो नवसायर तरियें न
व्य रे ॥ जनम जरा कल्लोलें न बूडियेंजी,निर्मल होय शुद्धातम ड्व्य रे ॥
इं०॥१३॥ सकल संसारिक डुःखनें वामताजी,अकल अबाधित लहे निर्वाण
रे ॥ निर्द्वंद्वी शाश्वत सुखनें अनुनवेजी,विलसे वर केवल दंसणनाण रे ॥
॥ इं०॥ १४ ॥ देशना सांनली मन संवेगीयाजी, मदननें धनदेव प्रणमी
पाय रे ॥ कहे नव अंधकूआथी उद्धरोजी, दीक्षा कर आलंबनें गुरु
राय रे ॥ इं०॥ १५॥ करो उपकार स्वामी अम रांकनेंजी, गुरुयें पण दीक्षा

दीधी ताम रे ॥ ग्रहण आसेवना शिक्षा बिहुं ग्रहेजी, द्वादशांगी धरे जेम निज नाम रे ॥ ई० ॥ १६ ॥ तीव्र तप चरण आराधे बिहुं मुनिजी, बिहुं जण स्नेह परस्पर धार रे ॥ गुरुकुल वासें वसता बिहुं जणाजी, प्रायें ते सायें करता विहार रे ॥ ई० ॥ १७ ॥ अनशन आराधि गया सोहमेंजी, पंच पल्योपम आयु रसाल रे ॥ खंम चोथे त्रेवीशमी ए कहीजी, पद्मविजय वर ढाल रे ॥ ई० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवजवें प्रीतिज घणी, करता कार्य अशेष ॥ तिहांथी चवी हवे कप नां, ते सांजलो सुविशेष ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ करकंकुनें करुं वंदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ मदनजीव हवे कपनो हुं वारिलाल, महाविदेह मकार रे हुं वारिला ल ॥ नयर विजयपुर शोहतुं हुं० ॥ अलकापुरी अनुहार रे हुं० ॥ १ ॥ समरसेन तिहां राजीयो हुं० ॥ विजया वली तस नार रे हुं० ॥ मणिप्रज नामें ते थयो हुं० ॥ सकल कला शिरदार रे हुं० ॥ २ ॥ यौवन पा म्यो जेटले हुं० ॥ परणाव्यो तस ताम रे हुं० ॥ पछि देखी प्रतिबूजीयो हुं० ॥ थाप्यो सुत निज गम रे हुं० ॥ ३ ॥ मणिप्रज राज्यनें पालतो हुं० वश कीधा बहु राय रे हुं० ॥ सांमत मंत्रीश्वर घणा हुं० ॥ प्रेमें प्रणमे पा य रे हुं० ॥ ४ ॥ काल गयो एम केटलो हुं० ॥ गज चढीयो एक दिन्न रे हुं० ॥ रयवाडीयें नीकल्यो हुं० ॥ करी एकाग्र मन्न रे हुं० ॥ ५ ॥ एक स रोवर मोटकुं हुं० ॥ कमल विकस्वर मांहि रे हुं० ॥ गगन तारा गणनी परें हुं० ॥ शोजे अतिशय त्यांहि रे हुं० ॥ ६ ॥ देखी रमणिकता घणी हुं० ॥ जोइ रह्यो चिरकाल रे हुं० ॥ पायक पासें अणाविउं हुं० ॥ एक कमल त तकाल रे हुं० ॥ ७ ॥ राय गयो हवे आगलें हुं० ॥ वलियो तेहज मग्ग रे हुं० ॥ तेह सरोवर देखिउं हुं० ॥ शोजा गइ ते अलग्ग रे हुं० ॥ ॥ ८ ॥ अहो अहो ए कहो शुं थयुं हुं० ॥ पूछे परिजन राय रे हुं० ॥ परिजन कहे सुणो नरपति हुं० ॥ जेम शोजा कमलाय रे हुं० ॥ ए ॥ कमल एकेकुं सहु लीये हुं० ॥ तव ए नीपनुं एम रे हुं० ॥ सुणी राजा मन चिंत वे हुं० ॥ अहो ए सरोवर जेम रे हुं० ॥ १० ॥ राजऋद्धि विण नर तथा हुं० ॥ न वि शोजे कोइ काल रे हुं० ॥ ऋद्धि अशाश्वती जाणीयें हुं० ॥ सुपननें जे

म इंद्रजाल रे हुं० ॥ ११ ॥ रमणिक जिम किंपाकनां हुं०॥ फल कडुआं परिणामरे हुं० ॥ इत्यादिक चिंता परो हुं०॥ चाल्यो आगल जाम रे हुं०॥ ॥ १२ तव दीठा उद्यानमां हुं० ॥ सूरिजिनेश्वर नाम रे हुं० ॥ धर्म कथा कहेतां थकां हुं० ॥ कीधो तास प्रणाम रे हुं० ॥१३॥ देशना सांभली ह र्षथी हुं० ॥ सुतनें सोंपी राज्य रे हुं० ॥ संयम लिये सूरिकने हुं० ॥ आप थया ऋषिराज रे हुं० ॥ १४ ॥ तीव्र तपस्या आदरी हुं० ॥ पाले शुद्ध आचार रे हुं० ॥ गगनगामिनी उपनी हुं० ॥ लब्धि बीजी प ण सार रे हुं० ॥ १५ ॥ अवधिनाण वली उपनुं हुं० ॥ जाणे जगत सभा व रे हुं० ॥ विचरी पृथिवी पावन करे हुं० ॥ लब्धि तणें परभाव रे हुं० ॥ ॥ १६ ॥ धनदेव सवे उपनुं हुं० ॥ ते सुणजो अधिकार रे हुं० ॥ नग वेता ढ्य सोहे घणुं हुं० ॥ जोयण पचाश विस्तार रे हुं० ॥ १७ ॥ जोयण पची श उंचो वली हुं० ॥ गगनशुं करतो वात रे हुं०॥ निर्झर कण शीतल घणा हुं० ॥ फरसी पवन आयात रे हुं० ॥ १८ ॥ तेणे सुर किन्नर यक्षनां हुं० लीलायें मिथुन उद्यान रे हुं० ॥ रयणीयें औषधि दीपती हुं०॥ दीपे दीप समान रे हुं० ॥१९॥ तिहां नयर वर नामथी हुं०॥ रथनेउर चक्रवाल रे हुं० ॥ अग्निनयनें जिहां धूपना हुं० ॥ धूम्र ते मेघनी माल रे हुं० ॥२०॥ रयण मणि पंक्तितणी हुं० ॥ प्रभा तें इंद्रचाप रे हुं० ॥ गगनें विद्याधर मलि तणा हुं० ॥ किरण ते विजली व्याप रे हुं० ॥२१ ॥ चोथे खंडें चो वीसमी हुं० ॥ श्रीजयानंदनें रास रे हुं० ॥ ढाल पद्में कही पुण्यथी हुं०॥ होये लीलविलास रे हुं० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ६०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर चक्री वडो,महेंद्र सिंह अभिधान ॥ बहुविद्याधर पय नमे, तेह महेंद्र समान ॥ १ ॥ दश दिशि जस कीर्त्ति घणी, करतो सघलो न्या य ॥ बंधुनें पण परिहरे, जो जाणे अन्याय ॥ २ ॥ न्यायवंतनें बंधुपरें, जाणे तेह नरिंद ॥ पररामाथी पराङ्मुखो, गुणगण केरो वृंद ॥३॥ राणी र यणमाला भली,पाणी पद्म समान ॥ खाणी सोहग गुण तणी,वाणी कोकि ल मान ॥ ४ ॥ रायहाणी कंदर्पनी, पट्टराणी मुखचंद ॥ रीसाणी दोषा वली,जाणी लोयण अरविंद ॥ ५ ॥ सुख भोगवतां दंपती,दोय पुत्र थया तास ॥ रत्नचूड मणिचूड तिम, करे कला अभ्यास ॥६॥ साधि विद्या बहु

तेणें, पाम्या यौवन वेश ॥ परणाव्या बहु पुत्रनें, रत्नचूड सुविशेष ॥ ७ ॥ योग्य जाणीनें खगपति, रत्नचूडनें ताम ॥ पदवी दिये युवराजनी, राज्य नारनां काम ॥ ८ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ इणे अवसर हुवे एकदा रे,अशुभ करमनें योग ॥ पूर्व निकाचित उदयथी रे, राणीनें थयो रोग ॥१॥ देखो गति कर्मनी रे,कर्म सुख दुःख होय ॥ दे० ॥ ए आंकणी ॥ रतनमाला राणी तणे रे, अंगें ज्वर असराल ॥ नूख गइ अन्न नवि रुचे रे, टलवले जेम मत्र जाल ॥ दे०॥२ ॥ दाह घणो अंगें थयो रे. बलती कूरे जोर ॥ हण पण निद्रा नवि लहे रे, थिर न रहे एक गेर ॥ दे० ॥ ३ ॥ मुख कुंमलाणुं मालती रे, फूल ते जेम कुमलाय ॥ राजवैद्य बहु तेडीया रे, विकल्प बहु करे राय ॥ दे० ॥ ४ ॥ औषध विविध प्रकारनां रे, करता तेह उपाय ॥ ॥ मंत्रवादी मंत्रे घणा रे, पण ते गुण नवि थाय ॥ दे० ॥ ५ ॥ राणीनें रोग व्यापीयो रे, वैद्यें जाणी असाध्य ॥ हाथ खंखेरी वलिया रे,को इ उपाय न लाध ॥ दे० ॥ ६ ॥ अनुक्रमें आयु अथिरथी रे,गंमयां तेणीयें प्राण ॥ तव आक्रंद ते उच्छल्यो रे, रोवे सहु तिणे गण ॥ दे० ॥ ७॥ राय आंसु जर लोयणे रे, करतो अनेक विलाप ॥ हा देवी तुं मुजनें रे, केम नवि आपे जवाप ॥ दे० ॥ ८ ॥ पोक मेली राजा रुवे रे,बोले रोतो वाणि ॥ कंकेली दल रातडा रे, हा तुज चरणनें पाणि ॥ दे० ॥ ए ॥ नेत्र ते कमलनां दलसमां रे, चंद वयणी दे बोल ॥ कुंद सुंदर दंत ताहरा रे, विद्रुम अधर अमोल ॥ दे० ॥ १० ॥ तुजने किहां हवे देखशुं रे, त्रिभुवन शून्युं आज ॥ नाते तुज विण मुजनें रे,एम रोवे महाराज ॥दे० ॥ ११ ॥ दाघ देइ हवे तेहनें रे, दोय पुत्रशुं राय ॥ रोतो न रहे कोयथी रे, न करे कांय व्यवसाय ॥ दे० ॥ १२ ॥ राज काज सवि गंमीयां रे,रहे योगीश्वर रीति ॥ मंत्री प्रमुख सवि रायनें रे, एम समजावे नीति ॥दे० ॥ ॥ १३ ॥ तुम सरिखा धीर पुरुषनें रे,न घटे करवो शोक ॥ राज्य सीदायें तुम तणुं रे,दुःखीया होये लोक ॥दे०॥१४॥ उत्पत्तिलयधुत सर्व छे रे,थिर नही जगमां कांय ॥ समजाव्यो समजे नही रे, अधिक धरे दुःख राय ॥ ॥ दे० १५ ॥ राणी सांजरे हण हणें रे,दुःख धरे तास वियोग ॥ शाता

क्यांहिए नवि लहे रे,कठिन कर्मनो जोग ॥ दे०॥१६॥ चोथे खंमें रे, पंचवीशमी ढाल ॥ पद्म कहे मुनि श्रावशे रे, डुःख थाशे वित ॥ दे० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ६१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गगनगामिनी लब्धिथी, मणिप्रन जे अणगार ॥ गगन मारगथ वीया, तास उद्यान मजार ॥ १ ॥ कुमर सहित वंदन जणी, जाय धर राय ॥ परम हर्ष धरतो थको,प्रणमे मुनिवर पाय ॥२॥ वेगे नि तासनें, मुनिवर दीये उपदेश ॥ नव्यजीव समजाववा,वली विशेष नरे

॥ ढाल उवीशमी ॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ अंग चार कह्यां दोहिलां, तिहां मानव अवतार रे ॥ दश दृष्ट हिलो, नमतां एणे संसार रे ॥ १ ॥ एमजाणीव्रत श्रादरो ॥ ए श्रां ते पामे पण दोहिलुं, सांनलवुं सिद्धांत रे ॥ घांची मोची आहेडी नव वली म्लेछमां हूंत रे ॥ ए० ॥ २ ॥ वाघरी माछी कसाइना, सूत्रधार रे ॥ सांनलवुं किहांथी होये,पामी एह श्रवतार रे ॥ए०॥३ पामे रोगी घणा, निरोगी कदी थाय रे ॥ सांनले श्रद्धा दोहिली,मिथ्य मुंजाय रे ॥ ए०॥ ४ ॥ श्रद्धा पुर्ण्यें पामीयो, डुर्लन संयम सार रे ॥ कषायमां राचियो, वली आरंन अपार रे ॥ ए०॥ ५ ॥ अणवाहालां मले, तेम वाहालांनो वियोग रे, तेहनुं डुःख धरतो थको, न लहे संयोग रे ॥ ए०॥ ६ ॥ मोहें आकुल व्याकुलो, करे विषाद अनेक रे ॥ जाणे इंइ जाल ए, सुपनथकी अतिरेक रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ तीर्थंकर जिस्या, बलदेवनें वासुदेव रे ॥ कालें कोइ रह्या नही,जस करता सुर ॥ ए० ॥ ८ ॥ कुश अग्र जल बिंडुउं,चपल जीवित तेम जोय रे ॥ ने टाढने सारिखा,प्रिय संगम तेम होय रे ॥ ए० ॥ ए ॥ गिरि नदी क सारिखी,लखमी अथिर असार रे ॥ यौवन गज कर्ण सारिखुं,रूप संध धार रे ॥ ए० ॥ १० ॥ देशना सुणी कहे खगपति, स्वामी सुणो मुज रे ॥ तुम देखी मुज हियडले, हर्ष आणंद न मात रे॥ रे० ॥ ११ ॥ गयो मुज वेगलो, हियडुं हसवा जाय रे॥ तुम मुखचंद विलोकवा, क पिपासा थाय रे ॥ ए० ॥ १२ ॥ वात न जाये ते कही,शुं कारण होय रे ॥ तुमशुं पूरव नव तणो, स्वामि संबंध छे कोय रे ॥ ए० ॥ १

तव गुरु बोल्या ज्ञानथी, जे तुज मुज संबंध रे ॥ एम कही धनदेव मदन नो,सर्व कह्यो प्रबंध रे ॥ ए० ॥ १४॥ धनदेव ते तुं उपन्यो, मदन ते मुजनें जाण रे ॥ सोहमथी आव्या बिहुं,ए संबंध प्रमाण रे ॥ ए० ॥ १५ ॥ तुज प्रतिबोधन कारणें, हुं आव्यो सुण राय रे ॥ आपण मित्र पूरव जवें, नारी शुं डुःख वित्तजाय रे ॥ ए०॥१६॥ संयम लेइ गुरुकुलें वस्या, उपन्या एक वि मान रे ॥ नारी तणें हवे कारणें,केम डुःख धरे अमानो रे ॥ए०॥१७॥ सां जली ईहापोह थयो,जातिस्मरण पायो रे ॥ नरपति गुरुने वीनवे,नगवन् स त्य कहायो रे ॥ ए० ॥ १८ ॥ मुज उपर अनुग्रह करी, पाउधाख्या मुनिरा य रे ॥ नवसायरमां बूडतां,कीधो मुज सुपसाय रे ॥ ए० ॥ १९ ॥ रतनचू डनें थापियो, वत्सलथी निज गम रे ॥ विरचावे जिनमंदिरें, पूजा अति अ जिराम रे ॥ ए० ॥ २० ॥ गुरुपासें दीक्षा ग्रही,श्रुत सायर लह्या पार रे ॥ तप तपता अति आकरा,अनिग्रह अनेक प्रकार रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ विद्या धर मुनि अनुक्रमें,लब्धि तणा नंमार रे ॥ बिहुं मुनि अनुक्रमें विचरता,शु क्लध्यान लहे पार रे ॥ ए० ॥ २२ ॥ क्षपकश्रेणि मांमी करी,पाम्या केव लज्ञान रे ॥ सकल कर्मनो क्षय करी.पाम्या शाश्वत थान रे ॥ ए० ॥ २३ ॥ चोथे खंमें वबीशमी,पद्मविजय एम ढाल रे ॥ ब्रह्मवैश्रवण वदे वली, आग ल वात रसाल रे ॥ ए० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनपति मदन डुविध तणुं,चरित्र विचारे जेह ॥ इहनव परनव डुः ख दीये. तरुणी केम ग्रहे तेह ॥ १ ॥ सांनली सहु विस्मय लह्या, चम क्या चातुर लोक ॥ राय कहे चित रीजीउं, हृदयथी वाणी रोक ॥ २ ॥ वात कही वारू परें,नारीचरित्र निदान ॥ डुःखें तजाये देवता,मांमयुं जेणें पर मान ॥ ३ ॥ निंदनीक तपजी नही. अवलां ए एकांत ॥ सुगतें गई म हिला घणी.पुष्ट पणुं ते पंत ॥ ४ ॥ कर्मवशें सहु कोपनें, गुणने दोष ग णाय ॥ आश्रव तस कारण थवे,निंदा आश्रव न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ सुंदर पापस्थानक तजो सोलमुं ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर तुमें अमनें पुरें नांलिउं, वयण संनालो आप हो ॥ सुंदर सा मान्यनें पर नवि घटे, दोष दिया संताप हो ॥ १ ॥ सुंदर तुमें अन बहु उपकारिया ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर नहीं सामान्य पुरुष तुमें, जेहनें पोहे

नारि हो।सुं०॥ प्रार्थनाभंग करे नहीं,सज्जन कोइ प्रकार हो॥सुं०॥तु०॥
सुं०॥ मुज पुत्री अंगी करो,तव बोले नृदेव हो ॥सुं०॥ एम छे तो पण
सीयें, अवसरें जाणजुं देव हो सुं०॥ तु०॥ ३ ॥ सुं०॥ कायक प्रतिज्ञा
रहे, ते जिहां नवि पूराय हो ॥ सुं० ॥ तिहां लगें तुमें नवि बोलवुं,
सुणी चुप रह्यो राय हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ ४ ॥ सुं० ॥ राय मंत्री मुख
व्यिपा,सांजली कन्या तेह हो ॥ सुं० ॥ मोद लही मनमां घणुं, अंग
री ससनेह हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ ५ ॥ सुं० ॥ एक दिन राय सना करी, बे
सह परिवार हो ॥ सुं०॥ तेणे समे प्रणमी वीनवे, आवीने प्रतिहार हो
सुं०॥ तु०॥ ६ ॥ सुं० ॥ दूत आव्यो पद्मरथ तणो, ते आवे के जाय हो
सुं० ॥ मोकल वेगें तेहनें, एणी परें बोले राय हो ॥ सुं०॥तु०॥७॥ सुं
मोकल्यो दूत ते आवियो, पर्षद देखे ताम हो ॥ सुं० ॥ रत्न थान
झलकतो, स्वर्गें जेहनो काम हो ॥ सुं०॥ तु०॥ ८ ॥ सुं०॥ मंत्री सामंतनें
कीया, सेनापति सारथवाह हो ॥ सुं० ॥ अंग रक्षक विविधायुधें, परिव
नृप अवगाह हो ॥ सुं०॥ तु०॥ ९ ॥ सुं० ॥ बेठो कनकसिंहासनें, चामर
धरंत हो ॥ सुं० ॥ वज्र वेश्रवण पासें रह्यो. दूत ते नृप प्रणमंत हो
सुं०॥ तु० ॥ १० ॥ सुं०॥ पंक्ति कथकनें दुर्धरा,चकतरीआ नड वीर हो
सुं०॥ आना अधिकी इंद्रथी, चमक्यो देखी नृप नीर हो ॥ सुं०॥तु०॥ १
॥सुं०॥ वृद्धि संज्ञायें बेसाडीयो, पूछे नृप सुखशात हो ॥ सुं० ॥ जगिनीपति
वली कहे,तुज आगमनी वात हो ॥ सुं०॥तु० ॥ १२ ॥ सुं० ॥ ते कहे तु
एनावली. मुजनें छे सुखशात हो ॥ सुं०॥ तुम जगिनीपति सुखें रहे,
सुणो मुज अवदात हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ १३ ॥ सुं०॥ तुम पासें मुज मो
कल्यो, सांजलो कारण तेह हो ॥सुं०॥ दैवयोगें कोय अपनो, पुत्री अवर सु
देह हो ॥ सुं० ॥ तु०॥ १४ ॥ सुं० ॥ विजय सुंदरी दीधी निजनें, तेह ग
कोइ ठाम हो ॥ सुं० ॥ खोज करी घणी तेहनी,वन वाडी पुर गाम हो
सुं०॥ तु०॥ १५ ॥ सुं०॥ खबर न लाधी तेहनी, तेणे चित्त खेद ते था
हो ॥ सुं०॥ तुमें पण सह जोवरावजो, विविध प्रकारनो दाय हो ॥ सुं०
तु०॥१६॥सुं०॥ वात सुणी एह मादरी, के तुम पुत्री तेह हो ॥सुं०॥ प
रण मुज सुतनें, परणावो तुमें तेह हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ १७ ॥ सुं० ॥ ते
वचन अवधें सुणी, नरपति करे विचार हो ॥ सुं० ॥ जनक पहनें आशी

कांपक उचित प्रकार हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ १८ ॥ सुं० ॥ भगिनी जो दीधी की
लनें, तो ए अनरथ कीध हो ॥ सुं० ॥ देवे जो पुत्री तस कुलें,तो अनरथ
प्रसिद्ध हो ॥सुं०॥तु०॥१९॥सुं०॥ ए नृप शूरवीर घणो. कोश सैन्य वलतार
हो॥सुं०॥ नीति दयणो निदेघीय,न्याय युक्ति अनुहार हो॥सुं०॥तु०॥२०॥सु०॥
एम विचार करी कहे. नइ करीमें शोध हो ॥ सुं० ॥ निजकुमरी कोइ था
नकें, नवि पाम्यो तस बोध हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ २१ ॥ सुं० ॥ कुमरनें जे ताजो
करे, निजपुत्री देउं तास हो ॥ सुं० ॥ एह प्रतिज्ञा कारणें, दीधी ब्राह्मणनें
खास हो ॥सुं०॥तु०॥२२॥सुं०॥ कुमरीनें पण ए गम्यो. देखी कला विशाल
हो ॥सुं०॥ ए सम अवर न को गुणी,जोतां जोडी न जाल हो ॥सुं०॥तु०॥
॥ २३ ॥ सुं० ॥ चोथे खंमें ए कही, सत्तावीशमी ढाल हो ॥ सुं० ॥ पद्मवि
जय कहे सांभजो, सुणतां मंगलमाल हो ॥ सुं० ॥ तु० ॥ २४ ॥ सर्व ॥६०३॥

॥ दोहा ॥

॥ निजकुमरी नजी दीकरी.दूत कहे केम दीध ॥ नृप कहे निजबल नणी,
पूरवें अर्पण कीध ॥१॥ ब्राह्मण बाळ निजदो.वदे दूत तब वाणि ॥ को
धवशें ए कीधलुं,जगतीपति कहे जाणि ॥२॥ प्रतिज्ञा धर्में पालवा. कीधुं
एहवुं काम ॥ दक्षपणे दूतज कहे,अवलुं कीधुं आम ॥ ३ ॥ राजकुमर छे
तरंग ते, ब्राह्मण बाह्य तलप ॥ मारग पाथरा मूकीनें, किहउं करो विकल्प
॥ ४ ॥ रूपें हरव्यो रतिपति, किहां ए कुमर स्वरूप ॥ नटविद्या प्रमुखें नि
रखर, किहां ए ब्रह्म कुरूप ॥५॥ उपकारीनें आपीयें.दक्षिणा धननुं दान ॥
राजकुमरी ए विप्रनें, पण देवी न प्रधान ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ उलंगडी आदिनाथनी जो ॥ ए देशी ॥

॥ दूतनें कहे हवे नरपति जो, करी प्रतिज्ञा तेह जो ॥ नेह युगांतें नवि
फरे जो, निर्वहेवुं धरी नेह जो ॥ ॥ दू० ॥१ ॥ यतः ॥ दिग्गजकूर्मकुला
चल. फणिपतिविधृतापि चलति वसुधेयं ॥ प्रतिपन्नममलमनसां, न चलति
पुंसां युगांतेपि ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सहु सम्मत में ए कर्युं जो. हवे न करो
अन्य विचार जो॥ दूत कहे हेत तुम कहुं जो,मानो वचन ए वार जो॥दू०॥
॥ २ ॥ वलीपाणुं तकनपणुं जो,राखीयें तो लहि काज जो ॥ कन्या राज
कुमारनें जो, नहीं आपो तो नहीं रहे लाज जो ॥ दू० ॥ ३ ॥ बलवी
सेरो जो कहा जो, कोण वारणहारो ताम जो ॥ शूरवीर ते नृप

ति जो, प्रतिवीर ते तृण ठे जास जो ॥ दू० ॥ ४ ॥ तेहनां सैन्य स
इमां जो, तुम बल साथुचूर्ण प्रमाण जो॥ तेह आक्रमशे तुजनें ज
तव नवि थाशे कोइ त्राण जो ॥ दू० ॥ ५ ॥ तेमाटे तुज राज्यनी जो,
वयानी जो होये चाह जो ॥ तो कन्या द्यो नृपकुमरनें जो,एहज सीधो
राह जो ॥ दू० ॥६॥ सांजली रायनें उपन्युं जो, बहु क्रोध तथा अभिमा
जो ॥ कहे रे दूत तुं बोलवा जो,घणो निपुण ने वली सावधान जो ॥दू
॥ ७ ॥ मुज आगल पण बोलतो जो, धीठाई धरीनें जोर जो ॥ पण नि
स्वामीनें नवि कहे जो, उपदेश वचन करी सोर जो ॥ दू०॥ ८॥ क्षत्री कु
मेलुं करे जो, ते क्षत्री पंक्तिमां नांहीं जो ॥ नास्तिकमां अग्रेसरी जो, के
अंतर केम उल्लाहि जो ॥ दू० ॥ ए ॥ तेहशुं सज्जनता करे जो, कुलवंत
आवे लाज जो ॥ पापी अन्यायीनें नहीं रहे जो, चिरकाल लखमीनें रा
जो ॥ दू०॥ १० ॥ यतः ॥ तरुवत्तटिनी तटोजतं, प्रमदाहृतगुह्यमंत्रवत्
जल वच मृदामनाजने, न चिरं तिष्ठति पापिषु श्रियः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल
शूरता ते निज गेहमां जो, पण शूरता नहीं संग्राम जो ॥ सहेजें तृ
सरिखा थशे जो, गली जाशे सघलुं धाम जो ॥ दू०॥ ११॥ तेहनां सैन्य
सायरें जो, साथुचूर्ण ते वीजा राय जो ॥ पीवा ते सायर नणी जो, मु
वडवानल सम काय जो ॥ दू०॥ १२ ॥ कोण बीहे ठे एहथी जो, निज ज
वित रूगो एह जो ॥ तो सन्नद्ध थइ आवजो जो, संग्रामें जोइशुं तेह जो
दू० ॥ १३ ॥ निग्रह योग्य ठे माहरे जो, मुज नाणेजीनें अपमान जो
कीधुं पण में राखियुं जो, स्वाजन्यपणुं बहु मान जो॥ दू० ॥ १४ ॥
दमातो वकुराइथी जो, जो लोपे स्वजनपणुं तेह जो ॥ तो खीरखांम घृ
नोजनें जो, नूख्याने आव्युं एह जो ॥ दू०॥१५॥ जा वहेलो निज स्वामी
जो, कहेजे तुं माहारी वाण जो ॥ कौलकुलें नवि दीजीयें जो, ए कन्या
अनरथ जाण जो ॥ दू० ॥ १६ ॥ करजो जेम जाणो तुमें जो, तव बोल्यो
ब्राह्मण वाणि जो ॥ अहो राजन अतिशय क्षमा जो, तुमची दीठी गुण
खाण जो ॥ दू०॥ १७ ॥ एम कहे पण दूतनें जो, हजी गल हस्त न कीध
जो ॥ कोइक सुनटें ते सांजली जो,दूतनें गल हस्त ते दीध जो ॥दू०॥१८॥
दूतनें क्रोध चढयो घणो जो, देखी निज अपकार जो ॥ चाल्यो पाठो वेग
ळुं जो, अमरष धरतो अपार जो ॥ दू० ॥१ए॥ पद्मरथ राजानें कह्यो जो,

मयलो मेहनो अवदात जो ॥ नरपति सुणी कोप्यो घणुं जो, अतिमा मधु नां पान जो ॥ दू० ॥ २० ॥ चोथे खंडे ए कही जो, अडत्रीसमी रुडी ढाल जो ॥ पद्म कहे मद छांमीयें जो, मदथी होये बहु जंजाल जो ॥ दू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सैन्य मेलवुं निज सामटुं, वाज्यां रण वाजित्र ॥ गजवर बेठो गेलसुं, चाल्यो सैन्य विचित्र ॥ १ ॥ अति उत्साह इलापति, छत्र चामर ढालंत ॥ गाजे वाजिंत्र गगन, हैयडे हर्ष धरंत ॥ २ ॥ शब्द शकुन थाये सकल, पण न थयो पल एक ॥ कमलप्रभ नृपने निकट, आव्यो अति अविवेक ॥ ३ ॥ हाथी त्रीस हजारसुं, रथ पण त्रीस हजार ॥ त्रीस लाख वली तुरंगसुं, चंचल पवन प्रचार ॥ ४ ॥ त्रीस कोडी पायक तुरत, आव्या मेली ग्राम ॥ सांनली निज मंत्री सहित, करे विचार एह काम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ओगणचालीसमी ॥ जीहो जाणुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कमलप्रभ कहे मंत्रीनें, लाला बलीयासुं जरी थाय ॥ जीहो कोप मानसुं बोलीया, लाला केम रहेशे एह साथ ॥ १ ॥ भविकजन जोजो पुण्य प्रकार ॥ ए आंकणी ॥ जीहो मंत्री कहे जे कोपसुं, लाला अण कीधुं नवि होय ॥ जीहो पर पराभव न सही शके, लाला क्षत्रीकुलनो कोय ॥ न० ॥ २ ॥ जीहो दोष देखी नास्तिक कुलें, लाला कन्या नवि देवराय ॥ जीहो अणघटती ए कांइ नथी, लाला सैन्य करो समुदाय ॥ न० ॥ ३ ॥ जीहो वप्र सज्ज करी झूझीयें, लाला भरीयें कणने नीर ॥ जीहो नृप कहे न गरथी नीकलो, लाला युद्ध करुं इण तीर ॥ न० ॥ ४ ॥ जीहो गढमां रहीनें झूझीयें, लाला देशभंग निज थाय ॥ जीहो शत्रु देशनें आक्रमे, लाला वीरथी केम सहेवाय ॥ न० ॥ ५ ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवण कहे तदा, लाला नृपें कही सत्य वात ॥ जीहो भय मनमां मत राखजो, लाला जय थाशे सुखसात ॥ न० ॥ ६ ॥ जीहो जीतशुं हुं ए एकलो, लाला रहो सघला सुखमांहिं ॥ जीहो नाटकनी परें देखजो, लाला संगर मुज उत्साहिं ॥ न० ॥ ७ ॥ जीहो सांनली नरपति हरखियो, लाला मेली सैन्य अपार ॥ जीहो पंच परमेष्टी समरतो, लाला करे मंगल उपचार ॥ न० ॥ ८ ॥ जीहो चामर छत्र धरावतो, लाला बेठो ते गजराज ॥ जीहो शुभ शकुनें ते नीकल्यो, लाला पुरबाहिर नरराज ॥ न० ॥ ९ ॥ जीहो विविध आयुध धरी रथ चढ्यो, ला

ला नृपनें पूठें जाय ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवण शोचे घणो,लाला युद्ध सामग्री
समजाय ॥ न० ॥१०॥ जीहो पूरवें कमलायें कह्युं,लाला तुमें कोइ अगम
सरूप ॥ जीहो मुज नरतार मत मारजो.लाला यद्यपि आग अनूप
॥ न० ॥ ११ ॥ जीहो निजनारी पण एम कहे.लाला मत मारेजो रे तात
॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवणें अंगीकर्युं, लाला तास वचन विख्यात ॥न०॥१२
जीहो शीघ्र थइ साहामो गई,लाला जे निज देशनी सीम ॥ जीहो ह
य गय रह नट अर्द्ध ते,लाला पण उत्साह असीम ॥ न० ॥१३ ॥जीहो
बिहुं दल सुनट उत्सव परें,लाला माने निजनिज गाम ॥ जीहो शस्त्रजा
गिरा जागता, लाला सूर उदय थयो ताम ॥ न० ॥१४ ॥ जीहो रण वा
जिंतर वाजीयां,लाला दोय सैन्यमां ताम ॥ जीहो नादें बिल फणी सज
गला,लाला गज गया गव्हर धाम ॥ न० ॥ १५ ॥ जीहो कौतुक जोवानें
मल्या,लाला राक्षसनें नूत प्रेत ॥ जीहो सन्नद्ध बद्ध थई मल्या, लाला
दोय सुनट रण खेत ॥ न० ॥ १६ ॥ जीहो हय गय रथ नट बिहुं तणा,
लाला निजनिज ठाम रहंत ॥ जीहो अग्रसेनानी बिहुं तणा, लाला मांहो
मांहे मिलंत ॥ न० ॥ १७ ॥ जीहो गजवर शोहे गिरि समा, लाला रथ
ते जाणुं विमान ॥ जीहो सुनट पडे वली उछले,लाला दीसे सिंह समान
॥ न० ॥ १८ ॥ जीहो गरुड परें हय हींसता,लाला गज गर्जारव जोर
॥ जीहो रथ चित्कार घणा होवे,लाला सुनट तणा बहु शोर ॥ न०॥१९॥
जीहो अट्टाट्ट हास्य नूत व्यंतरा, लाला फूटयुं मानुं आकाश ॥ जीहो नट
सुजरें हम्मी पड्या, लाला पक्षछेद नग खास ॥ न० ॥ २० ॥ जीहो पाग
ट परें रथ नांजता,लाला वाण मंकर विना होत ॥ जीहो आतप निवा
पसरे नहीं,लाला शस्त्र अग्नि उद्योत ॥ न० ॥ २१ ॥ जीहो एम चैरत
सानमां.लाला हार्युं कमलप्रन सैन्य ॥ जीहो कमलप्रन उठे हवे,लाला
राखो गैर गमेन ॥ न० ॥ २२ ॥ जीहो ब्रह्मवैश्रवण वदे तदा, लाला
हुन उदम एह ॥ जीहो मुज वेगो सुगमा रह्यो,लाला एम वारी नृप तेह
॥ न० ॥ २३ ॥ जीहो रथ बेठो विविधायुधें, लाला आव्यो वरसे वाण ॥
जीहो कवच सहित हणे सुनटनें,लाला केइकनां निर्वाण ॥ न० ॥२४॥
जीहो तोमरबाणहुं छावीया,लाला पाखर सहित तुरंग ॥ जीहो गमकाले
सहस्रां गमे,लाला लागे अन्नहित अंग ॥ न० ॥ २५ ॥ जीहो मराक

लित केइ थया,लाला कर पद रहित अनेक ॥ जीहो निजसैन्यें औषधि च र्षे, लाला सज्ज करे ते छेक ॥न०॥२६॥ जीहो चक्र गदा मुजर वली, ला ला खड्ग ते थया अर्कतूल ॥ जीहो शत्रु सैन्य लही त्रातने, लाला देखी ते प्रतिकूल ॥ न० ॥ २७ ॥ जीहो केइक मुखें तरणां दीये, लाला केइक मूके शस्त्र ॥ जीहो केइ जलाश्रयें केइ वली,लाला पहेरे नारीनां वस्त्र ॥ ॥ न० ॥ २८ ॥ जीहो केइक गव्हरमां गया,लाला केइ लीये जपमाल ॥ जीहो केइक शरण तेहनुं करे, लाला मारो रखे रूपाल ॥ न० ॥ २९ ॥ जीहो नमो अरिहंताणं कहे, लाला कपट श्रावक थई तेह ॥ जीहो मूके तेहनें जीवता, लाला कुमर रुपानो गेह ॥ न० ॥ ३० ॥ जीहो अरिहंत नामें विशेषथी,लाला मूके थाणी प्यार ॥ जीहो पुण्ये जयलछी वरे, लाला कोइ न लोपे कार ॥ न०॥ ३१ ॥ जीहो चोथे खंमें एणीपरें,लाला ढंगण त्रीशमीढाल ॥ जीहो पद्म कहे श्रोता घरें,लालाहोजो मंगलमाल॥न०॥३२॥

॥ दोहा ॥

॥ सैन्य विसंस्थल निज सवल, देखी तेह नरिंद ॥ अती क्रोधें आवियो, सुनटनां साथें वृंद ॥ १ ॥ ब्रह्म वैश्रवण प्रत्यें वदे,श्राज सुगाल अनंत ॥ निद्रा कण दीये जामिनी, मागी खाउं मरणांत ॥२॥ ताम्रचाजन देवं ति णवती, पर कामें केम प्राण ॥ ठामे ठोकरवादथी, एहवो केम अयाण ॥ ३॥ ब्रह्म जाणी अवेखियो,मारतां तुज मुज्झ ॥ लाजे बाण ते लोकमां, तेणें नवि मारुं तुज्झ ॥ ४ ॥ नाथ अछुं सेना तणो, मारे तेहनें केम ॥ क्रोध करी तव द्विज कहे, पृथिवीपति सुणो प्रेम ॥ ५ ॥ जिहां पराक्रम जो इयें, तिहां ब्रह्म क्षत्री न हेत ॥ कुलनुं काम ताहारे किश्युं, जाण श्युं पुरु संकेत ॥ ६ ॥ परनिंदानो प्रेम तुज, माहारे पराक्रम प्रेम ॥ सेना नाथ त णो हवे, आणुं अंत हुं एम ॥ ७ ॥ ताहरां प्राणथकी तुरत, सारो करुं सगाल ॥ प्रेतपति घर प्रेमथी,जाय सहु जंजाल ॥ ८ ॥ विधि निद्रा देश जली, ताहारुं राज्य तैय्यार ॥ नहीं तापपात्रनुं काम मुज, वली सांजलो विचार ॥ ९ ॥ पुत्री वधथी पापीया, नवि बीहिनो मनमांहि ॥ ब्रह्महत्या नी वातथी, समजावे शुं आंहिं ॥ १० ॥ ब्रह्म जाणी अवेखियो, ए कायर अवदात ॥ परउपकार पराक्रमें, करवो मुज एकांत ॥ ११ ॥ रविद्रुम चंद्र वारिद वली, दृष्टांतें तुं देख ॥ धर्म द्वेषें करी आंधली,निजपुत्री निरवेष

॥ १२ ॥ वली नास्तिक थइ वांछतो,पुत्री श्राद्धनी प्रेम ॥ तस फल देखाडुं तनें, जो तुं करियें जेम ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७६० ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥ धवल शेठ लइ नेटणुं ॥ ए देशी ॥

॥ क्षत्रीवट हवे दाखवो, गुण तो फलथी जणाय रे ॥ उत्तम नर लव नवि करे, सांजल तुं नरराय रे ॥ १ ॥ शूरपणुं जूउं शूरनुं ॥ ए आंकणी॥ क्रोध अग्नि दीप्यो घणुं, वरसे जडोजड बाण रे ॥ ब्रह्मवैश्रवण करे तदा, खंमो खंम प्रमाण रे ॥ शू० ॥ २ ॥ सुनट नृपतिनां कोडयो गमे, बाण मूके समकाल रे ॥ ते सहुनें ब्रह्म एकलो, बांणे वींधे ततकाल रे ॥ शू० ॥ ॥ ३ ॥ व्याधथी मृगपरें नासता, जाय दिशो दिश नागा रे ॥ लेता मूकता बाणनें,नवि देखे कोइ लागा रे ॥ शू० ॥ ४ ॥ अनुत शक्ति देखी करी, सहुये विस्मय पाया रे ॥ नाग्य तणी स्तवना करे,अहो बल अतिशय ना या रे ॥ शू० ॥ ५ ॥ कमलप्रनना सुनटनें, अति वधिउ उत्साह रे ॥ न र ह्या वाखा ते सहु, पेग संगरमांह रे ॥ शू० ॥ ६ ॥ कुमरने नृप वेहु ल डे, जूके सैन्य ते दोय रे ॥ सुनट मस्तक बहु गगनमां,राहुमय परें होय रे ॥ शू० ॥ ७ ॥ शस्त्र मूकी जा मूकीयो, कायरनें नवि मारुं रे ॥ जो क्षत्री पणुं धारतो, तो बल जोउं ताहारुं रे ॥ शू० ॥ ८ ॥ बाल तुं फोकट कां मरे, जा तुं मूक्यो जाणी रे ॥ वीर तुं शर वींध्यो थको,जूके ठे एम वाणी रे ॥ शू० ॥ ए ॥ उगे उगे मारो तुमें, मारो मारो एम नांखे रे ॥ शोर बको र घणो थयो,कविजन केतुं दाखे रे॥शू०॥१०॥ रायनुं धनुष ठेद्युं हवे, ठत्र चामर शिरत्राण रे ॥ राय ग्रहे अनिनव धनु, तेहथी चलावे बाण रे॥शू० ॥ ११ ॥ धनुष बाडवनुं ठेदीयुं, बाडव आणी रीश रे ॥ लेइ मोघर रथ नां जीयो, हवे कोपे पृथिवीश रे ॥ शू०॥ १२ ॥ विप्रनो रथ खंमो खंम कर्यो, गदा करी चकचूर रे ॥ ब्राह्मणें धनुष द्विधा कर्युं, आणी अतिशय शूर रे ॥ शू० ॥ १३ ॥ खड्गघात तव नृप करे, ते ब्राह्मण वंचावे रे ॥ खड्ग बाडव नुं ठेदीयुं, उलट पालट एम थावे रे ॥ शू० ॥ १४ ॥ अमर्ष धरी ब्राह्मण तदा, नृपनें एम बोलावे रे ॥ मल्लयुद्ध करीयें बिहु, नृप पण सन्मुख आवे रे ॥शू०॥१५॥ लुजास्फोट पदघातथी, ते पृथिवी कंपावे रे ॥ कुर्कुट परें उ पडे पडे, विस्मय सहु तिहां पावे रे ॥ शू० ॥ १६ ॥ तर्जना करे गाजे घ णुं, उठे आलोटे दोय रे ॥ उपर अध थाये दली, वलगे विठडे दोय रे

॥ शु० ॥ १७ ॥ शूरवीर जय इछता, थाको नृपति तास रे ॥ माया विप्र थाको नहीं, गजशुं हरि जिम हाम रे ॥ शु० ॥ १८ ॥ मुष्टियें मास्यो हृद यमां, मूर्छा लह्यो तव नृप रे ॥ मुखथी तेम लोही वमे, पडियो काष्ठ स रूप रे ॥ शु० ॥ १९ ॥ शूर सुनट लाखो गमे, नृपनें सेवा आवे रे ॥ तव वाडव वर्षा तिहां, बाण तणी वरसावे रे ॥ शु० ॥ २० ॥ शस्त्र तवे तस जोजीयां, नाठा मृग परें तेह रे ॥ बाणें आकुल व्याकुला, अति उत्सुक प ण जेह रे ॥ शु० ॥ २१॥ संग्रामें इण कालमां,स्वामीनें न सेवाय रे ॥ भू संज्ञा करी सुनटनें, प्रेरे कमलप्रन राय रे ॥ शु० ॥ २२ ॥ पद्मरथ राजा प्रत्यें, बांधी निज रथें घाले रे ॥ तेहना सुनट देखी करी,चिंतवे एम तेणें काले रे ॥ शु० ॥ २३ ॥ हवे लूजवुं शे कारणें,एहनुं शरण करीजें रे ॥ ए म करी द्विजशरणुं करे, द्विज पण तात वदीजें रे ॥ शु० ॥ २४ ॥ वीहिक म करो स्वामी थवुं,एम आशातना देवे रे ॥ जयजय शब्द थया तिहां,पु ष्पवृष्टि सुर खेवे रे ॥ शु०॥ २५ ॥ डुंडुनि वाजे आकाशमां, जयवार्जा बहु वाजे रे ॥ कमलप्रन नृप सैन्यमां, जयजय शब्द विराजे रे ॥ शु० ॥ २६॥ अरिहा देव गुरु निःस्पृही, धर्म केवलीनो नांख्यो रे ॥ जेहना हृदयमांहे व स्या,जय पण तेहनो दाख्यो रे ॥ शु० ॥ २७ ॥ चोथे खंमें त्रीशमी, पद्म विजय कही ढाल रे ॥ धर्म करो नवि प्राणीया,धर्मथी मंगल माल रे॥२८॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रण तत्त्व जस चित्त नहीं, ते लहे डुःख अनंत ॥ सुखनाजन न वि संजवे, केम करे कर्मनो अंत ॥ १ ॥ तासू वयण संनारीने, वली निज वधूनी वात ॥ औषधिथी कीधो धवल, वाडवें जग विख्यात ॥ २ ॥ निग डित करीनें नाखीयो, पिंजरमां नृपाल ॥ मत नास्तिकनो मूकशे, ढोंढीरा तव ढोंगाल ॥३॥ शत्रुसैन्य निजसैन्यमां,लक्ष कस्या सवि जीव ॥ औषधि जल सींची एणें,ते लह्या हर्ष अतीव ॥४॥ अहो स्वपर सरिखा अवे,उत्तम करे उप कार ॥ एम स्तवना अतिशय करे, प्रमुदित थई अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ जीरे म्हारे लाग्यो कुंवर जाम ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे म्हारे कमलप्रन हवे राय, कुमरनें आलिंगन करे जीरे जी ॥ जी० ॥ स्तवना करे एम तात,तुम सम कोण अम उपगरे जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ अहो तुम शक्ति अगाध, अहो शूरवीर गंजीरपणुं जीरे जी ॥

जी० ॥ पूरवपुण्य पसाय, अमें कृतार्थ थया घणुं जीरे जी ॥ २ ॥ जी०॥ घुणाक्षरनें न्याय,तुमें एक विधि निपजावीया जीरे जी ॥जी०॥ नृप चढयो गजवर खंध,साथें कुमर वेसारीया ॥ ३ ॥ जी० ॥ एेसें नगरीमांहे, विविध वाजित्र वजावतो जीरे जी ॥ जी० ॥ ब्राह्मण शत्रु सैन्य, नगर आसन्न ते आपतो जीरे जी ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंत्री सेनानी मुख्य, परिकर सार जोड़ करी जीरे जी ॥ जी० ॥ राखे तेहमांथी आप, सेवा कारण चित्त धरी जीरे जी ॥५॥जी०॥ घर घर तोरण माल,स्वस्तिक मुक्ताफलें करे जीरे जी ॥जी०॥ नाटक नव नव जांति, ध्वज आपण घरने शिरें जीरे जी ॥ ६ ॥ जी० ॥ पृथिवीपति द्विजयुक्त, चामर छत्र धरावता जीरे जी॥जी०॥ महा महोत्सव मंमाण,नृप मंदिर क्रमें पावता जीरे जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ मंत्री सामंत सहु लोक, विसर्ज्या निजघर गया जीरे जी ॥ जी० ॥ परिवस्यो निज परिवार, द्विज पण निजघर आवीया जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ राजवर्गी पुर लोक, ब्रह्मवैश्रवणना गुण स्तवे जीरे जी ॥जी०॥ रणकथा तेह संनारि, करे आलाप ते नव नवे जीरे जी ॥ए॥जी०॥ पंजर रथमां थापि,तेडाव्यो पद्मरथ प्रत्यें जीरें जी ॥ जी० ॥ हुकम करी द्विजराज, जुंजाव्यो अवसर थते जीरे जी ॥ १० ॥ जी०॥ बीजे दिन हवे नृप, वेग अर्द्धासनें द्विज मली जीरे जी ॥ जी० ॥ मेली सना तेणी वार, तेडयो पद्मराजा वली जीरे जी ॥११॥जी०॥ काढी पंजर बाहेर, बोलावी द्विज एम कहे जीरे जी॥जी०॥ पुत्री विटंबण पाप, तुज सरिखा एणी परें लहे जीरे जी ॥ १२ ॥ जी० ॥ हजीय न आव्यो अंत, फल देखावुं ते हवे जीरे जी ॥ जी० ॥ औषधि मस्तकें थापि, मंकड कीधो वाडवें जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोह शृंखला आणी,घाली गले कौतुक करी जीरे जी ॥जी०॥ सना लोक सहु देखि, हांशें जोवे फरी फरी जीरे जी ॥ १४ ॥ जी०॥ निज नरनें कहे विप्र, राय मार्ग त्रिक चाचरें जीरे जी ॥ जी० ॥ फेरवो घर घर हाट, जेम वली फरी न समाचरे ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥ जी०॥ मारो कोरडा तास, ते सहु नर अंगीकरे जीरे जी ॥ जी० ॥ लेई जाये जाम, तव कमला आंसु फरे जीरे जी ॥ १६ ॥ जी० ॥ पतिविडंबना देखी, कहे निज नृप भ्राता नणी जीरे जी ॥जी०॥ मुज तुज थाय अपवाद,वात वारो अनरथ तणी जीरे जी॥१७॥ जी०॥ कमला कहे सुणो वत्स, मात वचनें मूको तुमें ॥ जीरे जी ॥ जी०॥

अपराधी नरतार, पतिव्रता सेवुं अमें ॥ जीरे जी ॥ १८ ॥ जी० ॥ नृप कहे एह अनाथ,दीनशुं कोप घटे नहीं जीरे जी ॥ जी०॥ प्रणामांत होय कोप, तज्ञन ते कहीयें सही जीरे जी ॥१९॥जी०॥ कोप शंक तुम दीठ, हवे प्रसाद ते दाखवो जीरे जी ॥ जी० ॥ कीजें नृपसरूप, ए अम वच न ते राखवो जीरे जी ॥ २०॥ जी०॥ विप्र कहे जो एह, जैनधर्म चित्तधी करे जीरे जी ॥ जी०॥ तो करुं मूलस्वरूप,पूगे एहने दील खरे जीरे जी ॥ ॥ २१ ॥ जी० ॥ पूढ्युं तेहनें ताम, चेष्टायें कहे ए खरुं जीरे जी ॥ जी०॥ मूकुं नास्तिक वाद, जैनधर्म सावो करुं जीरे जी ॥ २२ ॥ जी० ॥ अह्मवे श्रवणें कीध, मूलगुं रूप औौपधिपकी जीरे जी ॥ जी० ॥ निगड भंजावी ताम, आश्वासना दीधे प्रतीतकी जीरे जी ॥ २३ ॥ जी० ॥ सिंहासनें ते राय, बेसाडयो आनंद थयो जीरे जी ॥ जी० ॥ कमलप्रन मुख राय, प्रणमे चित्र हृदय नयो जीरे जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ सोंप्युं सघलुं सैन्य, ते प्रणमे अति नेहशुं जीरे जी॥जी०॥ बोले तव नृपाल,नीचुं मुख करी तेह शुं जीरे जी ॥ २५ ॥ जी० ॥ एकत्रीशमी ढाल, चोथे खंनें ए कही जीरे जी ॥जी०॥ पद्मविजय सुरसाल, नांखी जिम शास्त्रें लही जीरे जी॥२६॥

॥ दोहा ॥

॥ गदगद स्वरथी नृप वदे,नमवा योग्य हुं नांहि ॥ महा पाप पंकिल मनें,केम जाणुं जइयुं क्यांहि ॥ १॥ दीठुं सांजल्युं नहीं कदा,कीधुं कर्म कठो र ॥ पुत्री हत्या करी पापीयें, अंध करी वली उंर ॥ २ ॥ निजनी कीधी ना मिनी,किहांये गइ कोइ ठाय ॥ ए पातक उदय थयुं,कीधुं कर्म न जाय ॥३॥ उग्रपाप पुण्य उदयथी,आव्युं तुरत अचान ॥ सहलगमें नट साखथी, फल दयो बाहवें पाण ॥ ४ ॥ मर्कट कीधो मानवी,ए फुःखनो क्यो अंत ॥ मरण श्रेय मुजनें अत्रे,सर्वप्रकारें संत ॥ ५ ॥ प्रगुण करो चय पेशीयें,एम सुणी अवनीपाल ॥ कमलप्रन कहे सांजलो,रूडी वात रसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ बहुयें जीत्यो एम जाणीयें, कुमलाउं मत स्वामी ॥ नर्चादिक परानव लह्या, बाहुबली मुख पामि ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी ॥ ए आंकणी ॥ बहुउं मात्र म जाणजो,दिव्यपुरुष कोइ एह ॥ तेतो अवसरें लाणशुं,तव बो ले द्विज तेह ॥ क० ॥ २ ॥ एतो फूल उग्यां अडे, फल तो नारकमांहि ॥ ब

जी० ॥ पूरवपुण्य पसाय, अमें कृतार्थ थया घणुं जीरे जी ॥ २ ॥ जी०
घुणाक्षरनें न्याय,तुमें एक विधि निपजावीया जीरे जी ॥जी०॥ नृप च
गजवर खंध,साथें कुमर वेसारीया ॥ ३ ॥ जी० ॥ पेसें नगरीमांहे, वि
वाजित्र वजावतो जीरे जी ॥ जी० ॥ ब्राह्मण शत्रु सैन्य, नगर आसन्न
थापतो जीरे जी ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंत्री सेनानी मुख्य, परिकर सार जोड़
री जीरे जी ॥ जी० ॥ राखे तेहमांथी आप, सेवा कारण चित्त धरी जी
जी ॥५॥जी०॥ घर घर तोरण माल,स्वस्तिक मुक्ताफलें करे जीरे जी ॥जी०
नाटक नव नव नांति, ध्वज आपण घरने शिरें जीरे जी ॥ ६ ॥ जी०
पृथिवीपति द्विजयुक्त, चामर छत्र धरावता जीरे जी॥जी०॥ महा महोत्स
मंमाण,नृप मंदिर क्रमें पावता जीरे जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ मंत्री सामंत स
लोक, विसर्ज्या निजघर गया जीरे जी ॥ जी० ॥ परिवस्यो निज परिवा
द्विज पण निजघर आवीया जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ राजवर्गी पुर लो
ब्रह्मवेश्रवणना गुण स्तवे जीरे जी ॥जी०॥ रणकथा तेह संनारि, करे अ
लाप ते नव नवे जीरे जी ॥९॥जी०॥ पंजर रयमां थापि,तेडाव्यो पद्मरा
प्रत्यें जीरे जी ॥ जी० ॥ हुकम करी द्विजराज, जुंजाव्यो अवसर
जीरे जी ॥ १० ॥ जी०॥ बीजे दिन हवे नृप, वेग अर्द्धासनें द्विज म
जीरे जी ॥ जी० ॥ मेली सना तेणी वार, तेड्यो पद्मराजा वली जीरे
॥११॥जी०॥ काढी पंजर बाहेर, बोलावी द्विज एम कहे जीरे जी॥जी०
पुत्री विटंबण पाप, तुज सरिखा एणी परें लहे जीरे जी ॥ १२ ॥ जी०
हजीय न आव्यो अंत, फल देखावुं ते हवे जीरे जी ॥ जी० ॥ औ
मस्तकें थापि, मंकड कीधो वाडवें जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोह
ला आणी,घाली गले कौतुक करी जीरे जी ॥जी०॥ सना लोक सहु
होंशें जोवे फरी फरी जीरे जी ॥ १४ ॥ जी०॥ निज नरनें कहे विप्र,
मार्ग त्रिक चाचरें जीरे जी ॥ जी० ॥ फेरवो घर घर हाट, जेम वली
री न समाचरे ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥ जी०॥ मारो कोरडा तास, ते सहु
अंगीकरे जीरे जी ॥ जी० ॥ लेई जाये जाम, तव कमला आंसु फरे ज
जी ॥ १६ ॥ जी० ॥ पतिविटंबना देखी, कहे निज नृप भ्राता नणी ज
जी॥जी०॥ मुज तुज थाय अपवाद,वात वारो अनरथ तणी जीरे जी॥१
जी०॥ कमला कहे सुणो वत्स, मात वचनें मूको तुमें ॥ जीरे जी ॥ जी०

अपराधी नरतार, पतिव्रता सेतुं अमें ॥ जीरे जी ॥ १८ ॥ जी० ॥ नृप कहे एह अनाथ,दीनथुं कोप घटे नहीं जीरे जी ॥ जी०॥ प्रणामांत होप कोप, सज्जन ते कहीयें सही जीरे जी ॥१९॥जी०॥ कोप शांत तुम दीठ, हवे प्रसाद ते दाखवो जीरे जी ॥ जी० ॥ कीजें नृपसरूप, ए अम वच न ते राखवो जीरे जी ॥ २०॥ जी०॥ विप्र कहे जो एह, जैनधर्म चित्तधी करे जीरे जी ॥ जी०॥ तो करुं मूलसरूप,पूठो एहने दीज खरे जीरे जी ॥ ॥ २१ ॥ जी० ॥ पुठ्युं तेहनें ताम, चेष्टायें कहे ए खरुं जीरे जी ॥ जी०॥ मूकुं नास्तिक वाद, जैनधर्म साचो करुं जीरे जी ॥ २२ ॥ जी० ॥ ब्रह्मवै श्रवणें कीध, मूलगुं रूप औपयिथकी जीरे जी ॥ जी० ॥ निगड भंजावी ताम, आश्वासना दीये प्रतीतकी जीरे जी ॥ २३ ॥ जी० ॥ सिंहासनें ते राय, वेसाड्यो आनंद थयो जीरे जी ॥ जी० ॥ कमलप्रन मुख राय, प्रणमे विप्र हृदय नयो जीरे जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ सोंप्युं सघलुं सैन्य, ते प्रणमे अति नेदशुं जीरे जी॥जी०॥ बोले तव नृपाल,नीचुं मुख करी तेह शुं जीरे जी ॥ २५ ॥ जी० ॥ एकत्रीशमी ढाल, चोथे खंनें ए कही जीरे जी ॥जी०॥ पद्मविजय सुरसाल, नांखी जिम शास्त्रें लही जीरे जी॥२६॥

॥ दोहा ॥

॥ गदगद स्वरथी नृप वदे,नमवा योग्य हुं नांहि ॥ महा पाप पंकिल मनें,केम जाणुं जश्युं क्यांहिं ॥ १॥ दीठुं सांजल्युं नहीं कदा,कीधुं कर्म कठो र ॥ पुत्री हत्या करी पापीयें, अंध करी वली उर ॥ २ ॥ निजनी कीधी चा मिनी,किहांये गइ कोइ ठाय ॥ ए पातक उदय थयुं, कीधुं कर्म न जाय ॥३॥ उग्रपाप पुण्य उदयथी,आव्युं तुरत अचान ॥ सहसगमें नट सांखथी, पक ड्यो वाडवें पाण ॥ ४ ॥ मर्कट कीधो मानवी,ए फुःखनो श्यो अंत ॥ मरण श्रेय मुजनें अठे,सर्वप्रकारें संत ॥ ५ ॥ प्रगुण करो चय पेशीयें,एम सुणी अवनीपाल ॥ कमलप्रन कहे सांजलो,रूडी वात रसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ कर्म न बूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ वटुर्यें जीत्यो एम जाणीयें, कुमलाउं मत स्वामी ॥ नर्तादिक पराजव लह्या, बाहुबली सुख पामि ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी ॥ ए आंकणी ॥ वटुउं मात्र म जाणजो,दिव्यपुरुष कोइ एह ॥ तेतो अवसरें जाणशुं,तव बो ले द्विज तेह ॥ क० ॥ २ ॥ एतो फूल उग्यां अठे, फल तो नारकमांहि ॥ व

जी० ॥ पूरवपुण्य पसाय, अमें कृतार्थ थया घणुं जीरे जी ॥ २ ॥ जी०
घुणाक्षरनें न्याय,तुमें एक विधि निपजावीया जीरे जी ॥जी०॥ नृप चढ्य
गजवर खंध,सार्थे कुमर वेसारीया ॥ ३ ॥ जी० ॥ पेसें नगरीमांहे, विवि
वाजित्र वजावतो जीरे जी ॥ जी० ॥ ब्राह्मण शत्रु सैन्य, नगर आसन्न
थापतो जीरे जी ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंत्री सेनानी मुख्य, परिकर सार जोइ
री जीरे जी ॥ जी० ॥ राखे तेहमांथी आप, सेवा कारण चित्त धरी जी
जी ॥५॥जी०॥ घर घर तोरण माल,स्वस्तिक मुक्ताफलें करे जीरे जी ॥जी०
नाटक नव नव जांति, ध्वज आपण घरने शिरें जीरे जी ॥ ६ ॥ जी०
पृथिवीपति द्विजयुक्त, चामर छत्र धरावता जीरे जी॥जी०॥ महा महोत्स
मंमाण,नृप मंदिर क्रमें पावता जीरे जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ मंत्री सामंत स
लोक, विसर्ज्या निजघर गया जीरे जी ॥ जी० ॥ परिवस्यो निज परिवा
द्विज पण निजघर आवीया जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ राजवर्गी पुर लोक
ब्रह्मवैश्रवणना गुण स्तवे जीरे जी ॥जी०॥ रणकथा तेह संजारि, करे
लाप ते नव नवे जीरे जी ॥९॥जी०॥ पंजर रथमां थापि,तेडाव्यो पद्मर
प्रत्यें जीरे जी ॥ जी० ॥ हुकम करी द्विजराज, जुंजाव्यो अवसर थ
जीरे जी ॥ १० ॥ जी०॥ बीजे दिन हवे नृप, बेठा अर्द्धासनें द्विज मल
जीरे जी ॥ जी० ॥ मेली सजा तेणी वार, तेडचो पद्मराजा वली जीरे
॥ ११ ॥जी०॥ काढी पंजर बाहेर, बोलावी द्विज एम कहे जीरे जी॥जी०
पुत्री विटंवण पाप, तुज सरिखा एणी परें लहे जीरे जी ॥ १२ ॥ जी०
हजीय न आव्यो अंत, फल देखावुं ते हवे जीरे जी ॥ जी० ॥ औष
मस्तकें थापि, मंकड कीधो वाडवें जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोह शृं
ला आणी,घाली गले कौतुक करी जीरे जी ॥जी०॥ सजा लोक सहु देखि
हर्षे जोवे फरी फरी जीरे जी ॥ १४ ॥ जी०॥ निज नरनें कहे विप्र, रा
मार्ग त्रिक चाचरें जीरे जी ॥ जी० ॥ फेरवो घर घर हाट, जेम वली
री न समाचरे ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥ जी०॥ मारो कोरडा तास, ते सहु
अंगीकरे जीरे जी ॥ जी० ॥ लेई जाये जाम, तव कमला आंसु झरे जी
जी ॥ १६ ॥ जी० ॥ पतिविडंबना देखी, कहे निज नृप भ्राता भणी जी
जी॥जी०॥ मुज तुज थाय अपवाद,वात वारो अनरथ तणी जीरे जी॥१
जी०॥ कमला कहे सुणो वत्स, मात वचनें मूको तुमें ॥ जीरे जी ॥ जी०

अपराधी नरतार, पतिव्रता सेवुं अर्मे ॥ जीरे जी ॥ १८ ॥ जी० ॥ नृप कहे एह अनाथ,दीनशुं कोप घटे नहीं जीरे जी ॥ जी०॥ प्रणामांत होय कोप, सज्जन ते कहीयें सही जीरे जी ॥१ए॥जी०॥ कोप शांति तुम दीठ, हवे प्रसाद ते दाखवो जीरे जी ॥ जी० ॥ कीजें नृपस्वरूप, ए अम वचन ते राखवो जीरे जी ॥ २०॥ जी०॥ विप्र कहे जो एह, जैनधर्म चित्तथी करें जीरे जी ॥ जी०॥ तो करुं मूलस्वरूप,पूगो एहने दील खरे जीरे जी ॥ ॥ २१ ॥ जी० ॥ पूठयुं तेहनें ताम, चेष्टायें कहे ए खरुं जीरे जी ॥ जी०॥ मूकुं नास्तिक वाद, जैनधर्म साचो करुं जीरे जी ॥ २२ ॥ जी० ॥ ब्रह्मवै श्रवणें कीध, मूलगुं रूप औपधियकी जीरे जी॥ जी०॥ निगड भंजावी ताम, आश्वासना दीये प्रतीतकी जीरे जी ॥ २३ ॥ जी० ॥ सिंहासनें ते राय, वेसाडयो आनंद थयो जीरे जी ॥ जी० ॥ कमलप्रभ सुख राय, प्रणमे चित्र हृदय नयो जीरे जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ सोंप्युं सघलुं सैन्य, ते प्रणमे अति नेहशुं जीरे जी॥जी०॥ बोले तव नृपाल,नीचुं मुख करी तेहशुं जीरे जी ॥ २५ ॥ जी० ॥ एकत्रीशमी ढाल, चोथे खंनें ए कही जीरे जी ॥जी०॥ पद्मविजय सुरसाल, नांखी जिम शास्त्रें लही जीरे जी॥२६॥

॥ दोहा ॥

॥ गदगद स्वरथी नृप वदे,नमवा योग्य हुं नांहि ॥ महा पाप पंकिल मनें,केम जाणुं जश्युं क्यांहिं ॥ १॥ दीठुं सांनल्युं नहीं कदा,कीधुं कर्म कठोर ॥ पुत्री हत्या करी पापीयें, अंध करी वली ढोर ॥ २ ॥ जिननी कीधी चामिनी,किहांये गइ कोइ ठाय ॥ ए पातक उदय थयुं, कीधुं कर्म न जाय ॥३॥ उग्रपाप पुण्य उदयथी,आव्युं तुरत अचान ॥ सहसगमें नट साखथी, पकडयो वाडवें पाण ॥ ४ ॥ मर्कट कीधो मानवी,ए दुःखनो श्यो अंत ॥ मरण श्रेय मुजनें अठे,सर्वप्रकारें संत ॥ ५ ॥ प्रगुण करो चय पेशीयें,एम सुणी अवनीपाल ॥ कमलप्रभ कहे सांभलो,रूडी वात रसाल॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ कर्म न बूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ वडुयें जीत्यो एम जाणीयें, कुमलाउ मत स्वामी ॥ नर्त्तादिक पराजव जहा, बाहुबली सुख पामि ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी ॥ ए आंकणी ॥ वटुउं मात्र म जाणजो,दिव्यपुरुष कोइ एह ॥ तेतो अवसरें जाणशुं,तव बोले दिज तेह ॥ क० ॥ २ ॥ एतो फूल आपां अठे, फल तो नारकमांहि ॥ व

जी० ॥ पूरवपुण्य पसाय, अमें कृतार्थ थया घणुं जीरे जी ॥ २ ॥ जी०
घुणाक्षरनें न्याय,तुमें एक विधि निपजावीया जीरे जी ॥जी०॥ नृप च
गजवर खंध,तायें कुमर बेसारीया ॥ ३ ॥ जी० ॥ पेसें नगरीमांहे, वि
वाजित्र वजावतो जीरे जी ॥ जी० ॥ ब्राह्मण शत्रु सैन्य, नगर थात
थापतो जीरे जी ॥ ४ ॥ जी० ॥ मंत्री सेनानी मुख्य, परिकर सार जो
री जीरे जी ॥ जी० ॥ राखे तेहमांथी आप, सेवा कारण चित्त धरी
जी ॥५॥जी०॥ घर घर तोरण माल,स्वस्तिक मुक्ताफलें करे जीरे जी ॥जी
नाटक नव नव भांति, ध्वज थापण घरने शिरें जीरे जी ॥ ६ ॥ जी
पृथिवीपति द्विजयुक्त, चामर छत्र धरावता जीरे जी॥जी०॥ महा मही
मंमाण,नृप मंदिर क्रमें पावता जीरे जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ मंत्री सामंत
लोक, विसर्ज्या निजघर गया जीरे जी ॥ जी० ॥ परिवस्यो निज परि
द्विज पण निजघर आवीया जीरे जी ॥ ८ ॥ जी० ॥ राजवर्गी पुर ल
ब्रह्मवै श्रवणना गुण स्तवे जीरे जी ॥जी०॥रणकथा तेह संभारि, क
लाप ते नव नवे जीरे जी ॥९॥जी०॥ पंजर रथमां थापि,तेडाव्यो
प्रत्यें जीरे जी ॥ जी० ॥ हुकम करी द्विजराज, मुंजाव्यो अवसर
लीरे जी ॥ १० ॥ जी०॥ बीजे दिन हवे नृप, वेग अर्धासनें द्विज म
जीरे जी ॥ जी० ॥ मेली सभा तेणी वार, तेडयो पद्मराजा वली जी
॥११॥जी०॥ काढो पंजर बाहेर, बोलावी द्विज एम कहे जीरे जी॥जी
पुत्री विटंबण पाप, तुज सरिखा एणी परें लहे जीरे जी ॥ १२ ॥ जी
हजीय न आव्यो अंत, फल देखावुं ते हवे जीरे जी ॥ जी० ॥ अ
मस्तकें थापि, मंकड कीधो वाडवें जीरे जी ॥ १३ ॥ जी० ॥ लोह
ला आणी,घाली गले कौतुक करी जीरे जी ॥जी०॥ सभा लोक सहु
होंशें जोवे फरी फरी जीरे जी ॥ १४ ॥ जी०॥ निज नरनें कहे वि
मार्ग त्रिक चाचरें जीरे जी ॥ जी० ॥ फेरवो घर घर हाट, जेम व
री न समाचरे ॥ जीरे जी ॥ १५ ॥ जी०॥ मारो कोरडा तास, ते स
अंगीकरे जीरे जी ॥ जी० ॥ लेई जाये जाम, तब कमला आंसु
जी ॥ १६ ॥ जी० ॥ पतिविडंबना देखी, कहे निज नृप भ्राता नधी
जी॥जी०॥ मुज तुज थाय अपवाद,वात वारो अनरथ तणी जीरे जी
जी०॥ कमला कहे सुणो वत्स, मात वचनें मूको तुमें ॥ जीरे जी ॥

अपराधी भरतार, पतिव्रता मेवुं धर्मे ॥ जीरे जी ॥ १८ ॥ जी० ॥ नृप कहे, एह अनाथ,दीनशुं कोप घटे नहीं जीरे जी ॥ जी०॥ प्रणामांत कोप कोप, सज्जन ते कहीयें सही जीरे जी ॥१९॥जी०॥ कोप शांत तुम कीज, दये प्रसाद ते चाखवो जीरे जी ॥ जी० ॥ कीजें नृपस्वरूप, ए अम वच न ते राखवो जीरे जी ॥ २०॥ जी०॥ विप्र कहे जो एह, जैनधर्म विनवी करे जीरे जी ॥ जी०॥ तो कहुं मूलस्वरूप,पूछो एहने दीन स्वरे जीरे जी ॥ ॥ २१ ॥ जी० ॥ पूछयुं तेहनें ताम, पेशायें कहे ए खरुं जीरे जी ॥ जी०॥ मूकुं नास्तिक वाद, जैनधर्म साचो करुं जीरे जी ॥ २२ ॥ जी० ॥ वशमये श्रवणें कीध, मूलगुं रूप औषधियकी जीरे जी ॥ जी० ॥ निगड भंजावी ताम, आश्वासना दीधे प्रतीतकी जीरे जी ॥ २३ ॥ जी० ॥ सिंहासनें ते राय, बेसाडयो आनंद थयो जीरे जी ॥ जी० ॥ कमलप्रभ सुख राय, प्रणमे विप्र हृदय नयो जीरे जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ सोंप्युं सघळुं सैन्य, ते प्रणमे अति नेहशुं जीरे जी॥जी०॥ बोले तव नृपाल,नीचुं मुख करी तेह शुं जीरे जी ॥ २५ ॥ जी० ॥ एकत्रीशमी ढाल, चोथे खंडें ए कही जीरे जी ॥जी०॥ पद्मविजय सुरसाल, नाखी जिम शास्त्रें लही जीरे जी॥२६॥

॥ दोहा ॥

॥ गदगद स्वरथी नृप वदे,नमवा योग्य हुं नांहि ॥ महा पाप पंकिल मनें,केम जाणुं जश्युं क्यांहि ॥ १॥ दीठुं सांभळ्युं नहीं कदा,कीधुं कर्म कठो र ॥ पुत्री हत्या करी पापीयें, अंध करी वली ढोर ॥ २ ॥ निरखनी कीधी भा मिनी,किहांये गइ कोइ ठाय ॥ ए पातक उदय थयुं, कीधुं कर्म न जाय ॥३॥ उग्रपाप पुण्य उदयथी,आव्युं तुरत अचान ॥ सहसगमें जट सालथी, पक डयो वादवें पाण ॥ ४ ॥ मर्कट कीधो मानवी,ए दुःखनो थयो अंत ॥ मरण शेष सुजनें अछे,सर्वप्रकारें संत ॥ ५ ॥ प्रगुण करो चय पेशीयें,एम सुणी अवनीपाल ॥ कमलप्रभ कहे सांभळो,रूडी वात रसाल॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ षट्खंडें जीत्यो एम जाणीयें, कुमलाउं मत स्वामी ॥ नर्चादिक पराजय लह्या, बाहुबली सुख पामि ॥ १ ॥ कर्म तणी गति एहवी ॥ ए आंकणी ॥ बहुउं मात्र म जाणजो,दिव्यपुरुष कोइ एह ॥ तेतो अवसरें जाणशुं,तव बो ले द्विज तेह ॥ क० ॥ २ ॥ एतो फूल चाख्यां अछे, फल तो नारकमांहि ॥ च

चनें कहेवाये ते नहिं, एहवां जोगवशो त्यांहि ॥ क० ॥ ३ ॥ आ नव पर
व सुख दीये, आदरो श्रीजिनधर्म ॥ दीठां पापनां फल तुमें,मूको नास्तिक
र्म ॥ क० ॥ ४ ॥ राणी मनावो रूठी तुमें, जोगवो आपनुं राज्य ॥ श्रीजि
धर्म प्रजावथी,सरशे सघलां रे काज ॥ क० ॥ ५ ॥ नृप सांजली तस वय
हां,चित्तमां पाम्यो समाधि ॥ कहे पुत्रीशुद्धि पामीनें, करशुं वचन आ
धि ॥ क० ॥ ६ ॥ पामी आणा जरतारनी, बहुजार्या कहे एम ॥ जयसुं
री कहुं ते खरुं, किं विजयसुंदरीयें केम ॥ क० ॥ ७ ॥ राय चिंते ए ज
ऐ किश्युं,ज्ञानीयें जांख्युं होय एह ॥ अथवा विजय ए सुंदरी,रूपांतरथी र
ह ॥ क० ॥ ८ ॥ अथवा कमलापासें रहे, सांजलीयुं तस पास ॥ नृप
हे संकटमां हुं पडशो,ते न रखाणो रे खास ॥ क०॥ ९ ॥ तो परजा मु
थी सुखी,केम कहेवाये रे एम ॥ पुण्यें सुखीया रे बहु परें, पापें मुज स
नेम ॥ क० ॥ १० ॥ सा कहे जो एम तो तुमें,पुण्य करो नही केम ॥ पुत्र
पीडा जो तुम नडे, तो पूछो बहु प्रेम ॥ क० ॥ ११ ॥ निमित्त वलें क
शे सवे, अतीत अनागत वात ॥ पूछे नृप मलशे कदा, पुत्री थाशे सु
शात ॥ क० ॥ १२ ॥ करी आमंबर बहु कहे, क्लेश न कीजें नृपाल ॥
गन वलें एम तुम कहुं, मलशे ते ततकाल ॥ क० ॥ १३ ॥ पण अम
पतीनें तुमें,कांइ उलखो छो के नांहि ॥ नृप कहे तुम गुणें उलखुं,तुमें अ
का जगमांहि ॥ क० ॥ १४ ॥ तव विवाहनें अवसरें,जेहवुं भिल्लनुं रूप
प्रगट करीनें जनो रह्यो, पतीमूल स्वरूप ॥ क० ॥ १५ ॥ रूपवती शिर
दरी, कुरूपी भिल्ल एह ॥ क्रोधने मानें विडंबीयो,दीधी भिल्लनें जेह ॥क०
॥ १६ ॥ सा कहे हवे मुंज उलखो, तव नृप वदन नमाय ॥ उलखुं
हुं जली परें,बोले एणि परें राय ॥ क० ॥ १७ ॥ डुर्बुद्धिमांहे शीरोमणि
शुं देखाडुं हुं मुख ॥ विस्मय खेद चिंता जयो, वली कांइ आणंद सुख
॥ क०॥ १८ ॥ विविधरसें जया रायना,प्रणमे सुंदरी पाय ॥ बोले सुंदर
जे हवे, ते आगल कहेवाय ॥ क०॥ १९ ॥ चोथे खंमें बत्रीशमी, पभवि
जय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, सुणतां मंगलमाल ॥क०॥२०

॥ दोहा ॥

॥ म म करो खेद महीपति, कह्यो तुमें जे क्रोध ॥ सुखदायक मुज स
, थइ रह्यो थिर थोन ॥ १ ॥ क्रोध न जो मुजनें करत, तो केम पति

मुज एह ॥ तातकोप ते ततक्षणें, हितकारी हुउं देह ॥ २ ॥ सांभली व
यण सनेहथी. आलिंगे अवनीश ॥ बोले वेतारी खबर,पूछे तब पृथिवीश
॥ ३ ॥ निज नणे तब सांभलो, जिम उजली निज जात ॥ मुज उजखे
कांइ महीपति, तब कहे पृथिवी तात ॥ ४ ॥ लक्षालक्ष तुमें लखुं, स्या
द्वाद जेम सूत्र ॥ रूप कमलाने कहि तुम, केम लहीयें आकूत ॥ ५ ॥
पंमित पण परखे नहीं, शक्ति तुमारी स्वामि ॥ पुत्री जे आपी प्रथम, रू
पें ते अनिराम ॥ ६ ॥ कमलप्रन मुख एम कहे, कीधुं कारिमुं रूप ॥ चि
त्र तणुं तेम वैनतुं.नारीनुं तेमज अनूप ॥ ७ ॥ विप्र वसत एहवुं नहीं,
लक्षणें लखीयें एम ॥ तब पद्मरथ बोलतो, आणी अधिको प्रेम ॥ ८ ॥
॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडीजी ॥ ए देशी ॥
॥ स्वामी अरज स्वामी अरज सुणो एक अम तणीजी, कहे पद्म कहे
पद्मरथ राजान हो ॥ जेम कीधुं जेम कीधुं स्वरूप ते निजतनुं जी, तेम दा
खवो तेम दाखवो मूल संस्थान हो ॥स्वा०॥१॥ मुंजावो मुंजावो केटलुं अम
प्रत्येजी. मायानित्र मायानित्र ते बोले तब हो ॥ जब चूरणें जब चूरणें
आंपलो निज सुताजी.करी तह्यारे करि तह्यारे में साजी सुतब हो॥स्वा०॥२॥
तिहां कीधी तिहां कीधी प्रतिज्ञा आपथी जी. देउं शिक्षा देउं शिक्षा ए
नरराय हो ॥ तिहां सुधी तिहां सुधी प्रगट न थायवुं जी ॥ निजरूपें निज
रूपें में कांइ गाय हो ॥स्वा०॥३॥ ते कीधुं ते कीधुं थालुं जे हवुं जी.तुम दीधुं
तुम दीधुं दुःख अतराल हो ॥ ते खमजो ते खमजो पूज्य तुमें अमोजी,
हवे थयो हवे थयो प्रतिज्ञा पाल हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ हवे परगट हवे पर
गट थावं एम कहीजी, निज दाखुं निज दाखुं मूल स्वरूप हो ॥ निज प
रनें निज परनें नानारूप करणथी जी, नवि जाणे नवि जाणे प्रजा तेम
नूप हो ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ रूप देखी रूप देखी नृपादिक हरखीयाजी, मोद
पामी मोद पामी सवे गुणरूप हो ॥ अहो नाटक अहो नाटक एणेहि
ज कीयलुं जी,वरणवीयें वरणवीयें शुं गुणरूप हो ॥स्वा०॥६॥ लाज मूकी
लाज मूकी आवी सुणी वारता जी,धरी हर्ष धरी हर्षने लइ वरमाल हो ॥
नृपकुमरी नृपकुमरी कुमर तणे गले जी, नाखे अति नाखे अति प्रेम वि
शाल हो ॥स्वा०॥७॥ रुडो वरियो रुडो वरियो सहु एम नांखतां जी, वाज्यां
तब वाज्यां तब मंगल तूर हो ॥ बंदिजन बंदिजन बोले बिरुदावली जी,

सहुनें सुख सहुने सुख वाध्यां नूर हो ॥ सा०॥ ८ ॥ आवी कमला आव कमला राणी ते सुणी जी,विजय सुंदरी विजय सुंदरी प्रणमे पाय हो ॥ मतानें मातानें हर्षे अलिंगती जी, आंसु आवे आंसु आवे हर्ष नराय हो। सा०॥९॥ जन्म सफलो जन्म सफलो आज अमारडो जी, थया पूरा थप पूरा मनोरथ आज हो ॥ गई आपद गई आपद सुख संपद मली जी,आज सीधां आज सीधां सघलां काज हो ॥सा०॥१०॥ सासूनें सासूनें कुमर नमे वली जी, आशीष दीये आशीष दीये बहु सास हो ॥ लही कुमर लही कुमरनी आणनें पुत्रीशुं जी,पोहोती ते पोहोती ते निज आवास हो ॥सा०॥ ॥ ११ ॥ सहु देखी सहु देखी शीश धुणावतां जी, हवे कमल हवे कमल प्रन राजान हो ॥ मंमाव्यो मंमाव्यो उत्सव नयरमां जी, नेट लेवे नेट लेवे देवे दान हो ॥ सा०॥ १२ ॥ खमावी खमावी श्वसुरनें प्रणमतो जी॥ प्रतिबोधन प्रतिबोधन काजें कुमार हो ॥ कहे सेवक कहे सेवक अन्य राजा तुमें जी, तुमें दाता तुमें दाता अन्य याचनार हो ॥ सा० ॥ १३ ॥ फल पुण्यनें फल पुण्यनें पापनां ए सवे जी,घरलखमी घरलखमी याचक करे शंस हो ॥ हृदयें बुद्धि हृदयें बुद्धि शरीरें सौनाग्यता जी,यश दश दिश यश दश दिश वल होय अंश हो ॥सा०॥१४॥ एह जिनना एह जिनना धर्मशुं फल थवे जी,नीच कुलमां नीच कुलमां जन्म दोनाग्य हो ॥ रोगनिर्धन रोगनिर्धननें कुकुटंबता जी,वध अपजश वध अपजशनें नहीं ताग हो ॥सा० ॥ १५ ॥ अणवाहलां अणवाहलां सहेजें आवी मले जी, वाहालांनो वाहालांनो थाय वियोग हो ॥ ए पाप ए पाप तणां फल देखजो जी, परानवनें परानवनें वली बहु शोग हो ॥सा०॥१६॥ विपुलाशय विपुलाशय शाखना जाणजो जी, सुकुलीना सुकुलीना अतिय विवेक हो ॥ करो सफलो करो सफलो नव जिनधर्मथी जी, इह परनव इह परनव जिनधर्म ठेक हो ॥सा०॥१७॥ पुण्यनां फल पुण्यनां फल पामी तुम सुताजी,तुमें दीठुं तुमें दीठुं नयणें साक्षात हो ॥ हवे करयो हवे करयो ढील न धर्ममां जी,नृप बोले नृप बोले सत्य ए वात हो ॥सा०॥१८॥ प्रतिबूज्यो प्रतिबूज्यो तुम वयणथी जी,गुरुपासें करुं गुरुपासें अंगीकार हो ॥ मत करजो मत करजो संदेह एहमां जी, धन्य तुमनें धन्य तुमनें कहे कुमार हो ॥ सा० ॥ १९ ॥ आरदायें आरदायें पण बूफे नहीं जी, दुर्जननें दुर्जननें कहे बहु वार

हो ॥ कमलप्रन कमलप्रन गौरव बहु करे जी. नृपनें दे नृपनें दे वस्त्र अलंकार हो ॥ स्वा० ॥ २० ॥ पद्मरथनें पद्मरथनें छत्र चामर दीये जी, पामी आणा पामी आणा कुमरनी ताम हो ॥ निज सेना निज सेनामां पोहोंचिया जी. हवे कमल हवे कमल सुंदरी नाम हो ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ निज पुत्री निज पुत्री कमलप्रन राजीवो जी, परणावे परणावे करी मनोहार हो ॥ देश आपे देश आपे पराणे कुमरनें जी. नवोढानें नवोढानें दीये ते सार हो ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ गज घोडा गज घोडा तो लीधा नहीं जी, रहे नृपना रहे नृपना दीधा आवास हो ॥ रतनें करी रतनें करी दान देतो थकोजी, पूरवपरें पूरवपरें करे विलास हो ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ पद्मरथ पण पद्मरथ पण आपे जमाइनें जी, विवाह समय विवाह समय उचित एक देश हो ॥ आपे तस आपे तस पुत्रीनें देश ते जी, कमलानें कमलानें मनावे नरेश हो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ जाइयें पण जाइयें पण सत्कारी घणुं जी,कमलप्रन कमलप्रन कुमर ए दोय हो ॥ पूजीनें पूजीनें विदाय करे हवे जी,सैन्यशुं ते सैन्यशुं ते प्रिया लेइ सोय हो ॥स्वा०॥२५॥ निज नयरें निजनयरें पोहोतो ते नृपतिजी, गुरु पासें गुरुपासें सुणी उपदेश हो ॥ शुनजावें शुनजावें धर्म अंगीकरे जी,श्रावकनां श्रावकनां व्रत धरे देश हो ॥ स्वा०॥२६॥ चिंतामणि चिंतामणि पाम्यो हुं मानतो जी, बंधादिक बंधादिक पाम्यो जेह हो ॥ ते आपद ते आपद तत्त्वथी संपदा जी, धर्मपाम्या धर्म पाम्याथी माने तेह हो ॥ स्वा० ॥२७॥ रतिप्रीति रतिप्रीतिशुं काम परें रमे जी, दोय नारी दोय नारीशुं कुमर विलास हो ॥ मूल अनिधा मूल अनिधा कोइ जाणे नहीं जी,गुणथी कहे गुणथी कहे नाम ते तास हो ॥स्वा०॥ ॥२८॥दानलीला दानलीला धन वकुराइथी जी,बलरूप बलरूप कला गुणग्राम हो ॥ लोक छत्रीनुं लोक छत्रीनुं तेज देखी घणुंजी,कहे छत्र कहे छत्र वैश्रवण ते नाम हो ॥ स्वा० ॥२९॥ बहुमित्र बहुमित्र स्नेही थया कुमरनेंजी, नक्तिवंतो नक्तिवंतो सहु परिवार हो ॥ लोक रीफे लोकरीफे देखी एहनी जी, लखमीनें लखमीनें पर उपगार हो ॥३०॥ एम चोथे एम चोथे खंमें तेत्रीशमी जी,ढाल पूरी ढाल पूरी थइ चोथे खंम हो ॥ सत्यविजय सत्यविजय पन्यास संवेगीया जी,ज्ञानक्रिया ज्ञानक्रिया जास प्रचंम हो ॥ स्वा० ॥ ३१ ॥ तस शिष्य तस शिष्य कपूरविजय कवि जी,क्षमाविजय क्षमाविजय ते तेहना

शिष्य हो ॥ जिनविजय जिनविजय विबुधवर तेहना जी,जस जगमां ज
जगमां चढती जगीश हो ॥स्वा०॥२१॥ तस शिष्य तस शिष्य उत्तमविजयो
यो जी,सिद्धांत शिरोमणि सिद्धांत शिरोमणि सार हो ॥ तस सेवक तस सेव
पद्मविजय कहेजी, सुणतां होय सुणतां होय जयजयकार हो ॥स्वा०॥२
॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजय गणिविरचिते
श्रीजयानंद केवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गगनगतिपल्यंकवलतकलत्रकमल
प्राप्ति कमलप्रजनृपपुत्राद्युपकारस्वपुत्रीविजयसुंदरीपितृपद्मरथजयपूर्वक
तिबोध कमलसुंदरीपरिणयन वर्णनोनामा चतुर्थः खंमः समाप्तः ॥ खंम त्र
मलिने गाथा ॥२१२१॥ चतुर्थखंमे गाथा ॥७७६॥ सर्वगाथा ॥२०१५॥ख
त्रय उक्तश्लोक ॥४२॥ चतुर्थ उक्तश्लोक ॥१०॥सर्वे थइ उक्त श्लोक ॥ ४ए
सवइयो एक,समस्या एक,दोहो एक,सर्वढाल ॥१०४॥ चतुर्थखंमः संपूर्ण

॥ अथ ॥

॥पंचमखंम प्रारंजः॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदीश्वर प्रमुखें नमुं, शाश्वतजिन शुज ध्यान ॥ रुषन चंडानन
अडा, वारिषेण वर्द्धमान ॥१॥ पंचम खंम प्रेमें करी,श्रोता सुणो सुजाण
आगें आगें रस अवल, चित्तमां जूर्ज पहिचाण ॥ २ ॥ एकदिन क्रीडा
यानमां, क्रीडा करवा काज ॥ मानिनीनें निज मित्रशुं, सघलो लेइ सा
॥ ३ ॥ दीग तिहां विद्याधरा, मानातीत विमान ॥ देवपरें तिहां देखतो
आकाशें असमान ॥ ४ ॥ किहां जाये कोडशो गमे, चित्तमां करे विचार
एक विद्याधर आवीयो, वावीमां पीवा वारि ॥५॥ पाणी पाय प्रिया प्रत्यें
तव जइ तिहां कुमार ॥ पूछे तेहनें प्रेमशुं,कहो ए किश्यो विचार ॥ ६
कहो जाये केणे कारणें, एवडा खेचर एह ॥ तेह कहे तुमें सांजलो, जि
ण कारण जाय जेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ द्वीप नंदीसर नाम, आठमो ते अजिराम,आठे लाल ॥ बावन चौ
खें सोहतो जी ॥ १ ॥ चार दधिमुख सार, एक अंजनगिरि धार, आठ
रतिकर आठ मनोहरु जी ॥ २ ॥ एकदिशें ए तेर,चिहुं दिशें नहीं कांइ फेर

आ० ॥ एम बावन चैत्यो चौमुखांजी ॥ ३ ॥ एकसो चोवीश जिनजाण, एक एक देहरे जाण, आ० ॥ अडतालीशनें चोशठ सयांजी ॥ ४ ॥ शोल वठे वली जइ, सोहम ईशान जे इंइ, आ०॥ अड अड तस अग्र महीषी नाजी ॥ ५ ॥ शोल प्रासाद वली तेह. प्रणमो आणी नेह, आ० ॥ शो जा तस केती कहुंजी ॥ ६ ॥ आगममां विस्तार, कहेतां नावे पार.आ०॥ मान प्रमाण तणो बहुजी ॥७॥ अठाइ महोत्सव त्यांहि,करशे अति उत्सा हि, आ० ॥ चैत्रमास छे ते वलीजी ॥ ८ ॥ मलशे सुरनां वृंद,तिम विद्या धर इंइ, आ० ॥ उत्सव महोत्सव बहु थशेजी ॥ ९ ॥ अठाइनुं पर्व, वि द्याधर सुपर्व, आ० ॥ शाश्वतुं जाणी आराधशेजी ॥ १० ॥ धन्य तेह नर नार, शाश्वतुं पर्व ए धार, आ० ॥ त्रिकरण शुद्धें आराधशेजी ॥ ११ ॥ ते कारण ए लोक. जाये जिनवर उंक, आ० ॥ सांजली कुमर ते चिंतवेजी ॥ १२ ॥ क्रीडायें काढुं काल, हुं पण प्रणमुं दयाल. आ० ॥ घर जइ नारी नें एम कहेजी ॥ १३ ॥ तुम्ह नारीशुं दोय, चित्त समाधि जेणें होय, आ०॥ करजो धर्म कथा सदाजी ॥ १४ ॥ नंदीश्वरनी यात्र, करवा निर्मल गात्र, आ० ॥ विद्याधर सायें जशुंजी ॥ १५ ॥ रहेजो तुमें सुखमांहिं, तुरत आ वुं हुं आंहिं, आ० ॥ साथ जाये छे उतावलोजी ॥ १६ ॥ जक्ति विनयथी ताम, माने वचन दोय वाम, आ० ॥ बेशी पल्यंकें चालीयोजी ॥ १७ ॥ खेचर वंचा जाय, कुमर पल्यंक खलाय,आ०॥ जंबूद्वीपनी जगतीयें जी ॥ ॥ १८ ॥ लाग्यो धर्म अंतराय, कुंअर मन खेदाय, आ० ॥ गगनगामिनी इछतो जी ॥ १९ ॥ विद्या जो होय पास, जाउं मन उल्लास, आ० ॥ एम चिंती पाछो वल्यो जी ॥ २० ॥ एक नगर उद्यान, चैत्य सोवन ध्वजवान, आ० ॥ मणिकलशें गगनें अडगुंजी ॥ २१ ॥ तीर्थ उल्लंघन थाय, आशात ना चित्त लाय, आ० ॥ उतर्यो हेठो धरतीयेंजी ॥ २२ ॥ चैत्यमां पेठो ते ह, विधिपूर्वक ससनेह, आ० ॥ रयणमयी रूपज प्रञ्जुजी ॥२३ ॥ देखी क रे परणाम, स्तवना करे अभिराम, आ० ॥ रोम रोम तनु उल्लसेजी ॥२४॥ पांचमे खंमें ढाल,नांखी प्रथम रसाल,आ०॥ पद्मविजय पुर्ये करीजी॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ चैत्य बाहेर चित्त चमकतो, नीकलीयो निरधार ॥ देखे तिहां दृष्टें करी, रुडा राजकुमार ॥ १ ॥ वीणा वंश करे वरु, रतिकनें रसनुं नाण ॥

करे अन्यास कला तणो, गीत नृत्य गुण जाण ॥ २ ॥ जाणुं गंधर्व जन मल्या,जाता आवता जाण ॥ पूछे कोइक पुरुषनें,कहो इहां किश्युं मंमाण॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥ सत्तरमुं पापनुं थान ॥ ए देशी ॥

॥ कहे पुरुष ते सांनलो वाण, लखमीपुर नयर ते जाण, उपमान न ही कोइ गाण हो राज ॥ १ ॥ सांनलो वयण रसालां ॥ ए आंकणी॥ डे श्री पतिनामें राय, देखी ठकुराइ अचरिज थाय, श्रीपति पण लाजें नराय हो राज ॥ सां० ॥ २ ॥ त्रण कन्या तेहनें थाय, तेहनी जूदी जूदी माय, नरप तिनें आवे दाय हो राज ॥ सां० ॥ ३ ॥ स्त्री सर्वनुं लेइ परमाणुं, सारसा रथी ए घडी जाणुं, तेणें सर्व स्त्री लाजनुं गणुं हो राज ॥ सां०॥ ४ ॥ पूर वें पुल्य जेवुं कीधुं, तेणें एहनुं रूप न सीधुं, देवी चिंतवे दान न दीधुं हो राज ॥ सां० ॥ ५ ॥ फरी लहीयें मनु अवतार,तप दान दीजें अपार, एहवुं रूप लहीयें निरधार हो राज ॥ सां० ॥ ६ ॥ विप्र नामकला विलास, कला वेदि अनुत्तर खास, जैनधर्ममां मति डे जास हो राज ॥ सां० ॥ ७ ॥ गंनी र घणो गुणवंत, धन आपी तस नूकंत, नणवा कुमरी दिये खंत हो राज ॥ सां० ॥ ८ ॥ जैनधर्मी मातनें तात, उपाध्याय जैन विख्यात,जैनधर्मी कु मरीयो थात हो राज ॥ सां० ॥ ए ॥ नणी थोडा दिनमां तेह, ते प्रज्ञा तुं मानुं गेह, त्रण रूपें सरसती एह हो राज ॥ सां० ॥ १० ॥ पहेलीना टयकलानी धार, नृप नाम दीये श्रीकार, नाटयसुंदरी जगमां सार हो राज ॥ सां० ॥ ११ ॥ नाटकथी जीते कोय, वली जैनधर्म जग होय, वरुं करी य प्रतिज्ञा सोय हो राज ॥ सां० ॥ १२ ॥ बीजी गीत कलायें रूडी, गी तसुंदरीनाम न कूडी, तस एह प्रतिज्ञा जेमी हो राज ॥ सां० ॥ १३ ॥ जैनगीत कला मुज जीतें, वरुं तेहनें जग वदीते, करी एह प्रतिज्ञा नीतें हो राज ॥ सां० ॥ १४ ॥ नृप नादसुंदरी दीये नाम, त्रीजीनुं अति अनि राम, तेतो वीणा नाद गुणधाम हो राज ॥ सां० ॥ १५ ॥ मुज नाद क लायें जीपे, वली जैनधर्मी अति दीपे, वरुं एह प्रतिज्ञा समीपें हो राज ॥ सां० ॥ १६ ॥ नृप पडह वजावे ताम, मुज कन्या प्रतिज्ञा आम, ए वात विस्तरी गाम गाम हो राज ॥सां०॥१७॥ निज परराज्यें दूत मूके, वा त संनलावे नवि चूके, सुणी ते पण आवी ढूके हो राज ॥ सां० ॥ ॥ १८ ॥ सहु क्षत्री कुमर ते मलीया, मन गमता अन्यासमां नलीया, कु

मरी आगळ सहु खळीया हो राज ॥ तां० ॥ १९ ॥ ते कुमरोने शीखवा ताल, नृपें धन आप्युं अति वाल, उपाध्याय घणा देदाल हो राज ॥तां०॥ ॥ २० ॥ कहे छत्रि कुमार शीखावो, उद्यानमां जाइ रखावो, पण लोकनें पणुं न देखावो हो राज ॥ तां० ॥ २१ ॥ तेणें उद्यानें उपाध्याय, शिखवे वे कला इणे ठाय, धन्यास सुवान कराय हो राज ॥ तां० ॥ २२ ॥ म हीनें महीनें नृपाल, परीक्षा करे सुविशाल, कुमरी आगें सहु बाल हो राज ॥ तां० ॥ २३ ॥ केइ शीखतां नागा जाय,केइ शीखवानें स्थिर थाय, तेणें गत आगत करे नाय हो राज ॥तां०॥ २४ ॥ तुमें पूठो ते में नांखी, कांई नवि कणीन राखी,कुमर पण थाय अनिजाखी हो राज ॥तां०॥२५॥ पल्यंक ठव्यो गुत ठामें, वस्त्रादिक आयुध वामें, कौतुक करवानें कामें हो राज ॥ तां० ॥ २६ ॥ औदयीधो वामण रूप, लोकनें होय हास्य सरूप, अलंकारनें वस्त्र अनूप हो राज ॥ तां० ॥ २७ ॥ पाठकनें कीध प्रणाम, आ शीर दीधी तेणें ताम, पूछे पाठक हवे आम हो राज ॥तां०॥ २८ ॥ खंम पांचमे बीजी ढाल, कही पद्मविजय सुरताल, सुणतां होय मंगलमाल हो राज ॥ तां० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोण ठो आव्या किहांथकी, शे कामें कहो साच ॥ पाठक एम पूछे थके, वामन बोले वाच ॥ १ ॥ नयर देश नेपालमां, विजय पत्तन वर नाम ॥ छत्रीय अंगज हुं खरो, वामन कर्मे ए वाम ॥ २ ॥ कुंकुणक नाम कह्यो मुनें, यौवन पाम्यो जाम ॥ कला नहीं कांइ मुज कनें, धन तो तातनें धाम ॥ ३ ॥ कोइ न दीये कन्या कदा, वामन रूप विचार, पण तातनें प्रिय अति घणो, आप्या वस्त्र अलंकार ॥ ४ ॥ कला ग्रहण कामें चल्यो, था व्यो फरतो आंहिं ॥ नाट्यादिक मुजनें कला, आपो धरी उत्साहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ थारा माथा उपर मेह, जबूके वीजली हो लाल ॥ जबूके वीजली ए ॥देशी।

॥ तेह सुणीनें राज, कुमर हसता सहु हो लाल ॥ कु० ॥ अहो अहो आव्यो वात्र, नाग्य मुरुडुं बहु हो लाल ॥ना०॥ एहने जणावे नृप, कन्या देशे खरी हो लाल ॥क०॥ तहथी संतोष दान, देशे गुरु घर भरी हो लाल ॥ दे० ॥ १ ॥ कन्या केरुं नाग्य, घणुं ए वर मल्यो हो लाल ॥घ०॥ ए

हवुं रूप न विभ्रमां,तेऐं सहु जय टल्यो हो लाल ।।ते०।। सांनली गात्रन
वयण,गुरु लाज्यो घणुं हो लाल ॥ गु० ॥ गुरु कहे पात्र कला नहीं,तुज
योग्यतापणुं हो लाल के।।तु०।।२।। करथी उतारी कंकण,पाठकनें दीये हो ला
ल के ।।पा०।। लाख सवालुं देखी,ते गुरु हरख्या हइये हो लाल ।।ते०।। शी
खवे नाट्यकला गुरु तेहनें आदरें हो लाल के ।।ते०।। पण ते कुंनार परें
मृत्तिकामर्दन करे हो लाल ॥ मृत्ति० ॥ ३ ॥ पदघातें कंपावे, पृथिवी व
घले हो लाल के ॥ पृ० ॥ कंडुक परें वली गिरि, शिला परें खलनले हो
लाल ॥ शि० ॥ पदना करे धबकार, तेऐं जन सहु हसे हो लाल ॥ ते० ॥
शीखवतां दिन दोय, त्रण एम नीकसे हो लाल ॥ त्र० ॥ ४ ॥ खेद लही
गुरु कहे तुज, नाट्य न आवडे हो लाल के ॥ ना० ॥ जण तुं गीत कहे
तव, ते मुज आवडे हो लाल के ।।ते०।। गुरु कहे तुजनें केहवुं, आवडे तव
कहे हो लाल के ।।आ०।। विकृत मुख ध्वनि करी कहे, जिम हास्यता लहे
हो लाल के ॥ जि० ॥ ५ ॥ यतः ॥ पंच निपंचा सुरई पविठा, कविठस्स हि
ठा, तउ संनिविठा ॥ पंमिअं कविठं नग्गं एगस्स सीसं, अपो हसंती किज
तीद सेसा ।।१।। पूर्वढाल ॥ सांनली गीतनें गात्र,सहु खडखड हसे हो लाल
।।स०।। अहो अहो गीतनें गानवुं, माहापण चिंतवसे हो लाल ।।मा०।। एणे
गीतें नृप कुमरी, परणशे एहनें हो लाल ॥ प० ॥ अधिक जणावुं काम,
ते शुं ठे जेहनें हो लाल के ॥ ते० ॥ ६ ॥ तो पण अधिक दानथी,पाठक
हरखता हो लाल के ॥ पा० ॥ ग्राम रागादिक यत्नथी, तेहनें वरखता हो
लाल के ॥ ते० ॥ पण नवि समजे कांइ,घणे यत्नें करी हो लाल ॥ घ० ॥
खेद लही क्षण पट दिनें,गुरु कहे हितधरी हो लाल ।।गु०।।७।। वीण कला
तुम शीखवुं, ज्यों वीणा करें हो लाल के ॥ ज्यो० ॥ एम करी शीखवे
वीण, कला गुरु शुनपरें हो लाल ॥ क० ॥ ततक्षण त्रूटी तांत, बीजी
वीणा दीये हो लाल ।।वी०।। नाख्युं तुंबडुं नांजी, तदा त्रीजी लीये हो ला
ल ॥ त०।। ८ ॥ दंम नांज्यो त्रीजी वार,गुरु तव दुःख धरे हो लाल ।।गु०
तुजनें न आवडे कांइ, वीलख्यों ततपरें हो लाल ॥ वी०।। चाल्यो कलागु
रु गेह, पाठकणीनें मल्यो हो लाल ॥ पा०।। कंकण आपी अन्य, देजें ते
हशुं हल्यो हो लाल ॥ हे० ॥ ए ॥ पामी विस्मय ताम, पूछे कारण हियुं
हो लाल ॥ पू० ॥ तं कहे तुजपति मुझ, नणावें नेहशुं हो लाल ॥ न०॥

एह सीपारस माहारी, करो तुमें वेगसुं हो लाल ॥ क० ॥ सा पण दान वशीकृत, ते अतिरेगसुं हो लाल के ॥ ते० ॥ १० ॥ कहेछुं सुरपति ने तव, निज थानक गयो हो लाल के ॥ नि० ॥ जाडे छेइ घर दात, दाती परिवृत नयो हो लाल ॥ दा० ॥ जिनपूजादिक रत्न, आवे पाठक कनें हो लाल ॥ आ० ॥ पाठकनें कहे नारी, सुणो तुमें एक मनें हो लाल ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ जेहनुं अद्भुत दान, जणावो वामणो हो लाल ॥ ज० ॥ एहवो नही दानेसरी, जन मन कामणो हो लाल के ॥ ज० ॥ सहु मजी आपे तो पण, इण समोवड नहीं हो लाल के ॥ इ० ॥ बहु भूकी तुमें एक, जणावो रही अहीं हो लाल ॥ ज० ॥ १२ ॥ पाठक कहे नवि जगमां, कंकण ए हवुं हो लाल के ॥ कं० ॥ पूर्वे दीधुं सुजनें, ए पण तेहवुं हो लाल के ॥ ॥ ए० ॥ आप्युं नारीनें ते पण, पहेरे दोय करें हो लाल के ॥ प० ॥ निज आतमनें माने, अप्सरा उपरें हो लाल के ॥ अ० ॥ १३ ॥ पाठक कहे हुं जणावीश, एहने पत्नथी हो लाल के ॥ ए० ॥ पण नवि समजे कांइ, बहु अपत्नथी हो लाल ॥ व० ॥ सा कहे अंग लाजियनें, स्वर वली जोइयें हो लाल के ॥ स्व० ॥ नाटक गीत आवे तव, सहु मन मोहियें हो लाल के ॥ स० ॥ १४ ॥ वीणानो अभ्यास, करावो केम नहीं हो लाल ॥ क० ॥ पाठक कहे त्रणे भंग, वात वेगें वही हो लाल ॥ वा० ॥ तंति इवेल जूनुं तुंबडुं, होंशे सा कहे हो लाल के ॥ हो० ॥ सडीयो दंम होये ते, केणी परें निवेहे हो लाल के ॥ के० ॥ १५ ॥ नविन वीणा देउं एम कही, एकांतें रही हो लाल के ॥ ए० ॥ शोजवे तेहनें छात्र, हांती चित्तमां लही हो लाल ॥ हां० ॥ आव्यो परीक्षा समय, हवे सहु आवीया हो लाल ॥ ह० ॥ राय परिवृत नगरना, लोक ते जावीया हो लाल के ॥ लो० ॥ १६ ॥ आवे पाठक छात्र, सहुसुं परवरी हो लाल ॥ स० ॥ तव वामण कहे वात, सुणो एक मुज खरी हो लाल ॥ मु० ॥ आवुं तुमची साथ, पाछें वेसाडजो हो लाल ॥ पा० ॥ नाटयादिक अवसरें मुज, मत वीसारजो हो लाल के ॥ म० ॥ १७ ॥ पाठक कहे मुज पास, वेसो लाहु थयो हो लाल ॥ वे० ॥ आल करुं केम नहीं, अभ्यास कला तणो हो लाल ॥ अ० ॥ कोडी मूल्यनो हार, पाठकनें आपियो हो लाल ॥ पा० ॥ तव मान्युं सवि तेह, हवे बहु भावीयो हो लाल ॥ ह० ॥ १८ ॥ मन चिंते सवि सजनो, एहवुं न

ल ॥ सामग्री युत रे, विश्वमोहन नाटक करे ॥ वल ताकता रे, गात्र अनेक परें परें ॥ पण दूषण रे, हस्तकादिकमां नवि लहे ॥ एक चित्तें रे, जोवे सना चित्त गहगहे ॥ १७ ॥ त्रुटक ॥ करी नाटक वली नचायें, फूल उपर सूची धरी ॥ तेह उपर कुसुम उपर, नाचतो रंगें करी ॥ वामेतर ह्य दश किरण दिये, आंखे फूल लीये तदा ॥ हर्षे बोले सहु सना तिहां, जी त्यो जीत्यो ए सदा ॥१८॥ढाल॥ जय जय रव रे, वाजित्र नाद बहु थया ॥ वंदि बोले रे, गायन गीत तत्पर नया ॥ अर्थीनें रे, दान दीये अढलक पणे ॥ नाट्यसुंदरी रे, रीजी लही कौतुक घणे ॥ १९ ॥ त्रुटक ॥ नाट्य सुंदरी वरे वामन, देव कहे साधु वखुं ॥ नृप चिंतवे खेद धरीनें, हे हे देव अवलुं कखुं ॥ एणे वामन वखो हवे दोय,राजकुमरनें जो वरे ॥ प्रतिहारनें हवे तुमुल रोकी, एणी परें आज्ञा करे ॥ २० ॥ ढाल ॥ नृप आणथी रे, कुमारोनें एणी परें उच्चरे ॥ गीतसुंदरी रे, एह कलामां सहु धुरें ॥ जेह जीते रे, कर ग्रहण एहनुं करे ॥ गीतकुशला रे, सांनली जैनधर्मा शिरें ॥ २१ ॥ त्रुटक ॥ सांनली जिन सामग्री संयुत,गावे अतिहर्षे करी ॥ चोथी ढाल ए खंम पंचम, पद्मविजयें चित्त धरी ॥ नांखी जे जे रसें गावे, तन्म यता सघला थया ॥ जाण पुरुष ते गीत लीना,नूख तृषादिक गत नया २२

॥ दोहा ॥

॥ चडते रस ते चतुर नर,गातां विरम्या गीत ॥ निजपुत्रीनें नरपति, प्रे रे धरतो प्रीत ॥ १ ॥ गीतसुंदरी हवे गायतां, मनुज थया रसमग्न ॥ नि द्रा पाम्या नर सवे,अतिमूर्छित जेम अज्ञ ॥ २ ॥ संकेतित दासी सवे, आ युध प्रमुख अपार ॥ नृपादिकना नली परें, लेइ गोपवे लगार ॥ ३ ॥ गाइ रही गीतसुंदरी, तव ते जाग्या ताम ॥ खड्गादिक खोले खरा, मन जाणे गइ माम ॥ ४ ॥ मान देइनें मानिनी, आपे सघला आण ॥ जय जयरव जीत्या तणो, प्रगट्यो जग परमाण ॥ ५ ॥ पूछे नृप पाठक प्रत्यें, वर नवि पामी वाम ॥ वरमालाइं वामणो, देखाडयो उद्दाम ॥ ६ ॥ वामननें नरपति वदे, गाइ जाणे गीत ॥ तास स्वरूप कहो तुमें, राखी सखरी रीत ॥ ७ ॥ गुरुप्रसादें गीतनुं, सखरुं लहुं स्वरूप ॥ संक्षेपें तुमनें सवे, नांखुं सुणजो नृप ॥ ८ ॥तथाहि श्लोकः ॥ गांधर्वं त्रिसमुद्यानं, तंत्रीवेणुनरोद्भवं ॥ वी णात्रिसरिका सारं, ग्यायातंत्र्यात्वनेकधा ॥ १ ॥ रागोविजृंनमाणोतु, हर्ष

मंदादिच्छेदतः ॥ तस्याश्छिद्रकसंस्पर्श, वणोनोत्पद्यते किल ॥२॥ एवं वेणोपि वीणाया, नालयुर्विद्स्तु वर्जनात् ॥ शल्यादीनां तथा तुंब, शुद्धिर्वृत्तादिकेंगु णैः ॥३॥ तंत्रीशुद्धिर्विज्ञिस्नायु. वालाद्युचिततत्कृतः ॥ इत्यादि वेणुसारंगी. त्रिसर्यादिष्वपीष्यते ॥ ४ ॥ दोहा ॥ इत्यादिक शास्त्रें श्रुति,विस्तर छे व्याख्या न ॥ केतुं कहियें इहां कहो, गांधर्वेनुं सुणो गान ॥ ए ॥ नहीं डुर्बल घूलज नहीं, गल मुख रोग न होय ॥ यौवन मुदित निरुज वली,कहियें गायन को य ॥ १० ॥ तिल कलमापने तेल गुड, खाय नहीं वली खाप ॥ साकर दू ध संगत पिये, गहगही तेहज गाय ॥ ११ ॥ सात प्रकारें स्वर वली, त्र ण ग्राम वली तह ॥ ग्रामें ग्रामें सग गणो ॥ एकवीश मूर्छना एह ॥१२॥ साते पटरागें सहित, एम चेंतालीश एह ॥ श्रीरागादिक पट सवे, रागिणी पट्क करेह ॥ १३ ॥ पट्रागिनी पटत्रीश होय,रागिणी रंग मफार ॥ नेद घणा तेहमां जलो,अनिनव होय विचार ॥ १४ ॥ अनुक्रमें हुं जणियो अ छुं, कालें ते कहेवाय ॥ प्रायें निंदा स्तुतिपणें, गीत सकल गवराय ॥१५॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सारंग ॥ हम मगन जए प्रनुध्यानमां ॥ ए देशी ॥

॥ सहु मगन जए तस गानमां,सज्जन मुख निंदा नवि होवे, शुं कहि यें ते मानमां ॥ स्तुति पण द्विविध ढता अढता गुण,ते सुणजो सहु शान मां ॥ सहु० ॥ १ ॥ विवाहादिक कारणें अढता,गुण गाये अनिमानमां ॥ ते पण मरपादोपथी सज्जन, नवि जांखे निज वाणिमां ॥ सहु० ॥ २ ॥ अढता गुण केइ विविधप्रकारें, गावे देव अज्ञानमां ॥ केइक अंगना धरे व त्संगें, केइ धरे शस्त्र पाणिमां ॥ स० ॥ ३ ॥ केती वात कहुं अज्ञानकी, ह ष्टिरागना वानमां ॥ बुधजन अंगीकरे नहीं कोई, सम्यक् दृष्टि जानमां ॥स०॥ ॥ ४ ॥ अरिहंत शासनमां जे नीरागी,जेह ढता असमानमां ॥ ते गुणथी पावन जीह्वा करुं, सांजलो तुमें सहु कानमां ॥ स० ॥ ५ ॥ दोप अढार रहित जे देवा, गुरु निस्पृह रह्या ध्यानमां ॥ एम कही सहुनी हांसी अ वगुणी, निज सम पुरुप ले तानमां ॥ स० ॥ ६ ॥ वामन गीत गाये ह वे एहवां, अधिक सुधारस पानमां ॥ हाहा हूहू देव गायन जे, श्रोतानें करे अपमानमां ॥ स० ॥ ७ ॥ एक ध्यानें सवि लीन थइनें, श्रोता रहे ते णे टाणमां ॥ उत्कृष्ट रसें गान थयुं तव,निडा लही अचानमां ॥स०॥८॥ नृप प्रमुखनां शस्त्र अलंकृति, लेई मूक्या कोइ थानमां ॥ वली हांसीका

रक नर मस्तक,मूंने जे पंच प्रधानमां ॥ स० ॥ ए ॥ वेदें रसांतर नहीं ते
हज रस, कोइ न जाणे तेणें करी ॥ गाई रह्यो तव चमतकार लही,जीत्यो
जीत्यो कहे फरी फरी ॥ स० ॥१०॥ सहु मगन थइ कहे चित्त धरी ॥ ए
श्रांकणी ॥ जय वाजित्र वाज्यां जय जय रव थयो,वामनें मुज कला हरी ॥
एम चिंती वरमाला नाखे, वामन गले गीतसुंदरी ॥ स० ॥ ११ ॥ नृप
कुलदेवीयें बहु परशंस्यो, तिहुं शिर पुष्पवृष्टि करी ॥ निज शिर मुंमित दे
खी लाज्या, नाशी गया हांसी खरी ॥ स० ॥ १२ ॥ श्रावुष वस्त्र अलंक
ति आपे,दासीयो धन आदरी ॥ दासीयो पण वामन प्रशंसे,अमनें पण ए
णें उधरी ॥स० ॥ १३ ॥ नृप चिंते हलकाइ मुज थइ, बेहु पुत्री वामन व
री ॥हरखुं जो कोइ राज्यकुमर वरे,जीतीनें नाद सुंदरी ॥ स० ॥१४॥ एम
विचारी उद्घोषणा करे, वामनें वरी दोय कुमरी ॥ जीते कोइ कुमर नाद
सुंदरी, सहुमां थइ अग्रेसरी ॥स०॥ १५ ॥ पंचम खंमें पंचमी ढालें, पद्म
विजय उत्तम चरी ॥ श्रीजयानंदना रासमां नांख्युं, आगल सुणो श्रोता
वरी ॥ स० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वामनें अमनें लाजव्या,एम मन आणी खेद ॥ नृप तथा कुमर जला,
अधिको धरत उमेद ॥ १ ॥ नाना राग निपजावता,तेहनें नादें तेह ॥ प
रिहरी सर्व व्यापारनें, सजा थया ससनेह ॥ २ ॥

॥ ढाल बही ॥ तुम तो जलें विराजोजी ॥ सिद्धाचलके ॥
॥ वाली साहेब,जले बिराजोजी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमें तो जोजो जोजो रे,वीणाने वजावे ॥ तुमें तो०॥ सहुये अनुक्रमें
तेह वजावे, सांजले सहु लय लाय ॥ एक एकथी चढीयाती वाजे, चित्र
परें थंजाय ॥ तु० ॥ १ ॥ निद्रितनी परें सहुये घूमे, कोइक वजावे ताम॥
उत्कृष्ट रसें तेह कला थई, कुमर तणे परिणाम ॥तु०॥२॥ पूर्वसंकेतित महा
वत महागज,मूके छूटो जाम ॥ गर्कारव करतो ते आवे,नाठी सजा तेणें ग
म ॥ तु० ॥ ३ ॥ नादना रसथी वाहालुं सहुनें, जीवित अतिशय होय ॥
नादसुंदरीनें हवे आणा, नरपति आपे सोय ॥ तु० ॥ ४ ॥ वीण वजावे ना
दसुंदरी, कानें अमृत समान ॥ गज थंनाणो सजा लोक पण, थंनाणा ग
ई शान ॥ तु० ॥ ५॥ विरम्यो नाद तदा तिहां महावत,गज खेंचे ततखेव ॥

कन्या जीती एम जय जय रव, लोकें कस्यो स्वयमेव ॥ तु० ॥ ६ ॥ खेद ल हीनें राजा पूछे, उपाध्यायनें जाम ॥ पूरव परें वामन देखाडे, उपाध्याय पण ताम ॥ तु० ॥ ७ ॥ वामन दोष मालायें रमणिक, उनो आगल आय ॥ वीणा वजाववा वामननें तव, नृपति आणा थाय ॥ ॥ तु० ॥ ८ ॥ तव वा मन तिहां वीणा मागे, रायपुरुष तव एक ॥ वीणा आपे नृपवयणथी, वामन कहे सुविवेक ॥ तु० ॥ ए ॥ वीणादंममांहे छे कीडो, पाम्यो कौतुक नृप ॥ नांगीनें ते कीट देखाड्यो. सहुयें दीठो अनूप ॥ तु० ॥ १० ॥ वीजी वीणा आपी तेहनुं, तुंवडुं कडुवं नांखे ॥ ते पण नांगी तास देखाड्युं,प्रत्य क्ष जाणी साखें ॥ तु० ॥ ११ ॥ त्रीजी वीणा तांत मांहे ने, सूक्ष्म वे खो वाल ॥ चोथीनो दंम जलमां नीनो,तेह रह्यो घणो काल ॥तु०॥१२॥ एम अनेक दूषवी वीणा. लीधी कोइक सार ॥ अलवे वीण वजावे वामन, लोक लहे चमत्कार ॥ तु० ॥१३॥ शुं कानें अमृत ए वरसवुं,अथवा मूक्यो इंड ॥ पृथिवी लोकनें सुख देवानें,ए तप महिमावृंद ॥ तु० ॥ १४ ॥ लय आणंदें सुख थ ऐतें, निद्रा पाम्यो लोक ॥ पूर्व संकेतित महावत गजनें, म दिरा पाई थोक ॥ तु० ॥ १५ ॥ कान वांधीनें हाथी मूक्यो, आव्यो सना आसन्न ॥ पण आव्यो नवि जाण्यो कोइयें,उनो रह्यो चासन्न ॥तु०॥१६॥ अंकुशनें प्रहार पडे पण, नवि चाले मृगमात ॥ घात देइ देइनें थाका, तव माहावतना व्रात ॥ तु० ॥ १७ ॥ जय जय शब्द करे तव महावत, लोकें पण तव कीध ॥ वीणा नाद रह्यो तव सुंदरी, वरमाला गले दीध ॥ ॥ तु० ॥१८॥ नादसुंदरी एम विचारे, जीताणी हुं आज ॥ फूलवृष्टि देवी शिर करती, जय जय वामनराज ॥ तु० ॥ १ए ॥ दान दीये याचकनें वांछित, लोक वखाणे दान ॥ अहो कलानें अहो चतुराई, वामन गुण नि धान ॥ तु० ॥ २० ॥ गुणवंतो एहवो नें रूपें,वामन छे ए दोष ॥ विधिनें जराजीर्णतानो ए, दोष तणो थयो पोष ॥तु०॥२१॥यतः॥ शशिनि खलु कलंकः कंटकाः पद्मनाले, प्रिययुवतिवियोगोऽकुनत्वं सुरूपे ॥ जलधिजल मपेयं पंमिते निर्धनत्वं,धनवति कृपणत्वं रत्नदोषी कृतांतः ॥१॥ पूर्वढाल ॥ अथवा वामन रूपें कोइक, दीसे दिव्य सरूप ॥ वादलथी जेम ढांयो दी से, अद्भुत जिम दिन नूप ॥ तु० ॥ २२ ॥ वामनमां एहवा गुण न धरे, विधि जिम अमृत सार ॥ काचा कुंजमांहे जिम न धरे,जाण पुरुष निरधा

र ॥ तु० ॥२३ ॥ कन्यानी ए धिक् प्रतिज्ञा,धिक् विधिनिंदित काम ॥ धिक् सुजनें जेणें आणा दीधी, धिग् ए कुमर निकाम ॥ तु०॥ २४ ॥ अणे क न्या रूप अनोपम, वाहाली जीवन प्राण ॥ दैवथकी वामण ए वरियो,जो कर्मांहे हुइ हाण ॥ तु० ॥ २५ ॥ कांइ थयुं नें कांइ चिंतव्युं उलंघे कोण दैव ॥ दैव प्रमाणें आत्मपरिणति, चाले जेह सदैव ॥ तु० ॥ २६ ॥ य तः ॥ प्रारब्धमन्यथा कार्य,मिदं निर्व्यूढमन्यथा ॥ इदं जातमसंलाघ्यं, दैवं को लंघितुं क्षमः ॥१॥ अन्नह चिंतियमाणं,उदय पउगेण अन्नहा जायं॥ चिंतोदय विवरीयं, तम्हा नो चिंतए मुणिंदा ॥२॥ अवश्यजावेव्यऽनवग्रहग्र हाः,यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा ॥ तृणेन वात्येव तयानुगम्यते,जनस्य चि त्तेन नृशा वशात्मता॥३ ॥ यन्मनोरथगतेरगोचरो,यत् स्पृशंति न गिरः क वेरपि ॥ स्वप्नवृत्तिरपि यत्र डुर्लना,हेलयैव विदधाति तद्विधिः॥४॥ पूर्वढाल ॥ एम चिंतातुर राजा पूछे,कला गुरुनें एम ॥ देश जाति कुल एहनी नांखो, जाणो यथारथ जेम ॥ तु० ॥ २७ ॥ पंचम खंमें छठी ढालें, श्रीजयानंदनें रास ॥ पद्मविजय कहे सुणतां होवे,घर घर लील विलास ॥ तु०॥२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास मातेरो मुज कनें,आव्यानें थयो आज ॥ पूछ्युं गुरु कहे में प्र थम,कोण तुं आव्यो शे काज॥१॥ विषय नेपाल विजयपुरें, क्षत्रीपुत्र हुं खांत ॥ कला शीखवा कारणें, आव्यो हुं एकांत ॥२ ॥ अधिक स्वरूप न एहनुं, जाणे कोइ सुजाण ॥ दिव्य अलंकरणादिकें,दानें धनद प्रमाण॥३॥ कला प्रयत्न घणुं करी, शीखवियो साक्षात् ॥ अमनें मूर्खपणुं अति,एटला दिन आख्यात ॥ ४ ॥ हमणां तो एणें होंशथी, कला देखावी कोय ॥ जे देखीनें सहु जना, चमत्कार चित्त होय ॥ ५ ॥ अलख स्वरूप ए उलखो, गुरु कहे एहनुं गूढ ॥ चतुर होय ते चिंतवे, मानवी न लहे मूढ ॥ ६ ॥ वाणी सुणी विकल्प करे, नरपति चित्त अनेक ॥ वैरी परें ए वामणो, अमनें थयो अतिरेक ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १८२ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जिनवचनें वैरागीयो हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

॥ राजकुमर हवे चिंतवे हो नाई,सघला मली लही खेद ॥ वामणे आ पण विगोविया हो नाई, कीधो नाकनो छेद रे, सुणो मोरा नाई ॥ १ ॥ वामणे ठगीया वे ॥ ए आंकणी ॥ मूर्खपणुं देखावीयुं हो नाई,थागलथी

एणें एम ॥ तमकालें कला दाखवी हो नाई, कन्या लीधी त्रण नेम रे, सुणो मोरा नाई ॥वा०॥२॥ फोकट पाढनो श्रम करशो हो नाइ,जो जाणता ए वात ॥ तो आगलथी मारता हो नाई, तो उपद्रव नवि घात रे ॥ सु०॥ ॥३॥ हजीय गयुं कांही नथी हो नाइ, ए निराश्रय ले एक ॥ कन्या लीये ते न खमी शकुं हो नाइ, मारीयें धरी मन टेक रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुल शील कोइ जाणे नहीं हो नाइ, कन्या लीये कुरूप ॥ हांसी पामीयें पंच मां हो नाइ, शुं करशो एह नूप रे ॥ सु०॥ ५ ॥ माया अपराधी एहनें हो नाइ, मारंतां नवि दोष ॥ मारंतां देखी मूकशे हो नाइ,वरमाला करी शोष रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ करिय विचार आणा लइ हो नाइ, शूरपाल एक राय ॥ मुख्य कहे वामन प्रत्यें हो नाइ, सांनल तुं हितदाय रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ उहाध्याय ले श्रम तणो हो नाइ, तेणें कहियें हित वात ॥ नाटक तो ले तोहिलुं हो नाइ, मर्कट मोर विख्यात रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कोकिल चांमाला दिक घणुं हो नाइ, गाय मनोहर गीत ॥ वीण ताल वजावता हो नाइ, तो सर्व प्रतीत रे ॥ सु०॥ ए॥ पण राय कन्या नवि वरे हो नाइ, तेम पण नहीं योग्य ॥ सुवर्ण घंटा नवि सोहियें हो नाइ,खरकंठें संयोग रे ॥ सु०॥ १०॥ क्षीर नोजन नवि श्वाननें हो नाइ, उंटगले मणिहार ॥ तेम तनें राजकन्यका हो नाइ,नवि सोहे किरतार रे॥सु०॥ ॥११॥ माला क ते कारणें हो नाइ, वर तुज योग्य जे नार॥ नाटकिया परें कला क हो नाइ,जीव तुं एणे संसार रे ॥ सु०॥ १२ ॥ अन्यथा तुज मरवुं प हो नाई, जाणे तुं तवि तेह ॥ तव कोपें वामन कहे हो नाई, सांनलो कहुं जेह रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ नाग्य कला नहीं तुम्हमां हो नाई, हजी न जाणो केम ॥ कलावादें नकारा करता हो नाई, रणजीवित लेवे ते रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ मुज नारी जेह निरखशे हो नाई, तस जोशे जमराय शूरपाल कहे वामणा हो नाई, जो होंशें रण कराय रे ॥ सु०॥ १५ ॥ ले शस्त्र तुं हाथमां हो नाई,वामन बोले ताम ॥ सुर असुरपति जे होवे नाई, आवा आवो आम रे ॥ सु० ॥१६॥ शस्त्र परिश्रम तुमें करो हो ई, मुज जीतवनें काज ॥ पण चपेटो मुज हाथनो हो नाई, नवि खमी सुरराज रे ॥ सु०॥ १७ ॥ तो तुम शशला ऊपरें हो नाई, शस्त्र तणुं शुं ॥ ऐरावत शुंढापरें हो नाई, मुज कर शस्त्रनें ताम रे ॥ सु० ॥१८॥

विक्रम ते वकतर नतुं हो नाई, नाग्य सखाई जाण ॥ रे तुमें मुज नवि उंलख्यो हो नाई, हजीय लगी हो अजाण रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ सातमी पांचमा खंममां हो नाई, पद्मविजयें कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां हो नाई, थाशे मंगलमाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ २०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सन्नद्ध थाउ तुमें सवे, शस्त्र लियो संग्राम ॥ कौतुक तुम पूरुं करुं, देखो तुमें उद्दाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ पारी रे जातनुं फूल स्वरगथी ॥ ए देशी ॥

॥ डुर्जय जाणी सहु सन्नद्ध थया,निज निज बल लेइ सायें ॥ मुंमित शिर पांच आवी आगल,टोप आछादित माथे के ॥ १ ॥ आवो के अडियें के, साहामा सहु पहेलां के,हांरे वाहाला अमें लडशुं एह सायें रे ॥ एह सायें एह सायें अम वयरी, देखो पराक्रम केहवुं रे ॥ ए आंकणी ॥ क्रोधें बलतां पांच ते बोले, एहनें हाथे हणशुं ॥ निज सेना लेइ आव्या वचमां, अमें शरम नवि गणशुं के ॥ आवो के० ॥ २ ॥ हांसी करतो वामन बोले, मुंमित शिर लक्षाणा ॥ आव्या ते रुंडुं कर्युं हवे तुम,लाज ठेउं जाउ उजाणा के ॥ आ० ॥ ३ ॥ एम सांनली क्रोधें चढ्या पांचे, वरसे बाणनी श्रेणी, व्योम पूरे बीजा पण बाणें,छाया करी मानुं तेण के ॥ आ०॥ ४ ॥ वामन सिंह उठ्यो तव साहामो, पंच परमेष्ठि संनारी ॥ थंन उपाडी ते मृग उपर, धाइ चोट करे नारी के ॥ आ० ॥५ ॥ गिरि शृंग परें गजनें तिहां पाडे, माहावतनें ते नमाडी ॥ पारेवा परें गगनें उछाले, केईक नूमि पछाडी के ॥ आ० ॥ ६ ॥ मूर्छावंतनें दयालु न मारे, पापड परें रथ नांजे ॥ थुद मोयर नालां अतिनें गदा, चूरण करतो गाजे के ॥ आ०॥ ७ ॥ क्षण गगनें क्षण धरतीयें दीसे, सैन्य आगें क्षण मांहे ॥ क्षणमां अंतें रिपुबल हणतो, वीर्यवंत उत्साहें के ॥ आ० ॥ ८ ॥ थंन मुष्टि पदघात करीनें, साहि निपादिनें मारे ॥ पडतां उपडतां नवि लखीये, मार पडे संनारे के ॥ आ० ॥ ए ॥ मारया उगघातें हवे वामन,घातें मूर्छा आपे ॥ कक्षास्कंध पाद हृय विचमां, ते पांचेनें थापे के ॥ आ० ॥ १० ॥ उगाली पल्लीनें ते सोंपे, मानुं थापण कीधी ॥ दासीपो पासें ते बंधावे, वली पतियें आणा दीधी के ॥ आ० ॥ ११ ॥ शीतल उपचारें जीवाडया, सैन्य

गयुं सवि नाठी ॥ सहुनें प्राण पोतानां वाहालां,कोइ न उठयो गाजी के ॥ श्रा० ॥ १२ ॥ श्रीपति राजानो सेनानी,सेना नागी जाणी ॥ राय श्राणा थी शस्त्र नरीनें, रथ लाव्यो तिहां ताणी के ॥ श्रा० ॥ १३ ॥ तेहनें उठं नें वली उठया, निज निज सेना लेइ ॥ क्रोधें चढिया चंमपालादिक, युद्ध करण श्राव्या केइ के ॥ श्रा० ॥ १४॥ थंन नमाडे निज श्रंग पाखलि, श त्रु शस्त्र न लागे ॥ शत्रुसेना हणतो तिहां चाल्यो, पकडे सुनटनें पागें के ॥ श्रा० ॥ १५ ॥ चक्रपरें नमाडी उछाले, दूर पडयो तस लेई ॥ नूमि प ठाडी मूर्छित कीनो,वली नर मोकले केइ के ॥ श्रा० ॥ १६॥ मूर्छित तेडा वी चिकित्सा करे, वली कोइ रथ शस्त्रें नरियो ॥ तिहां वेशी सारथीनें प्रे रे, शत्रु सैन्यें संचरियो के ॥ श्रा० ॥ १७ ॥ चंमपालादिक वाण वरसता, नें नट रथनें रूंधे ॥ वामन चोकफेर वरसे शर,मानुं सुनट निज नूंधे के ॥ श्रा० ॥१८ ॥ हयगय नट वींधे संग्रामें,रथ नांगी धनु छेदे ॥ चंमपालनुं मुंम मुंम विहुं,मुंमे क्षुरप्रें खेदे के ॥ श्रा० ॥ १९ ॥ वामन उपर खड्ग ले नें, चंमपाल करे घात ॥ वामन वंचावी ते खड्गनें, चूंटीनें करे मु ष्टिघात के ॥ श्रा० ॥ २० ॥ मूर्छा पमाडी तेहनें वस्त्रें, बांध्यो कठणें ला ॥ हढरथ कठयो वामन सायें,वाण वरसे विहुं ताम के ॥ श्रा०॥२१॥ क्षुरप्रें वामन तस मुंमे, लज्जायें नागो तेह ॥ एणी परें सात मुंम करी मू र्छा, नाग सहु गतनेह के ॥ श्रा० ॥ २२ ॥ बीजा पण कुमरोयें विचा र्या,वामणे सहुनें हणिया ॥ नहीं कोइ गरात वधारे न कीर्त्ति,मरणमां कि जाउं गणिया के ॥ श्रा०॥ २३ ॥ एम जाणी जीवितना इछक, नाठा जीवित लेइ ॥ तास सेनानें धीरप श्रापे,श्राशातना घणी देइ के ॥श्रा०॥२४॥ नरदृष्टि करे वामन उपर, व्यंतर देव रसाल ॥ पद्म कहे ए पंचम खंमें, नवमी ए घइ ढाल के ॥ श्रा०॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीपतिराजा सज्ज हुवे, एहवुं देखी एष ॥ श्रावी प्रधान श्रागे इ , कहो जाशो तुमें केथ ॥ १ ॥ एम उद्धतपणुं श्राचरी, श्रावरु जाशे ज ॥ मुंमे मस्तक वामणो, केम करो तेहशुं काज ॥ २ ॥ ए वामननें गजें, सहु नट तृण समान ॥ मरवानुं केम मन करो,समजण श्राणो न ॥ ३ ॥ सैन्य सहित समजावशो,वामन चारु रीत ॥ शी कीर्त्ति थाशे

कह्यो, जो न थई तुम जीत ॥ ४ ॥ जीवता मूकशो जाणिनें, ससरो वाम
सत्य ॥ सुख केम दाखशो मानमां, मोटी राखो मत्य ॥ ५ ॥
॥ ढाल नवमी॥ सांभल रे तुं सजनी म्हारी,रजनी किहां रमी
आव्यां जी ॥ ए देशी ॥
॥ सांभल रे तुं राजन वयणां,मंत्रीश्वर एम जापेजी ॥ प्रत्न होय ते हि
कारी जाणे, सेवक सत्य प्रकाशे ॥ १ ॥ मर नवि धरियेंजी ॥ पूर्व अपर
वि वात, चिंतवी करियेंजी ॥ ए आंकणी ॥ शस्त्र विना एकलडे एणें, कुमर
डंव्या सबलाजी ॥ एहनें आगल शक्र सरीखा, दीसे अतिशय नवला
॥ म० ॥ २ ॥ कलावंतनें वलीयो एहवो, कन्या जाग्यें पाम्योजी ॥ वर ए
पेनुं थानक पामी, खेद कह्यो केम जाम्यो ॥ म० ॥ ३ ॥ एह पराक्रम ए
कला वली, एह दयानें दानजी ॥ वामनमां गुण विण नवि संभवे, सत्य
हुं राजान ॥ म० ॥ ४ ॥ विद्यादिक शक्तें करी वामन, क्रीडा करे धरती
जी ॥ महापुरुष कोइ इच्छारूपी, ए अनुमान वरतीयें ॥ म० ॥ ५ ॥ कु
देवी पण कुसुमवृष्टि करे, एह अर्थ पण धारोजी ॥ प्रारथीयो कलापरें क
शे, सहजरूप निरधारो ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रार्थना करो तेहनी एहनें, वाण
सुणी हितकारीजी ॥ हर्ष लही वाजित्र वजडावे, नरपति चित्त विचारी
॥ म० ॥ ७ ॥ बंदी बिरुदावली बोलंते, गायन गीत ते गावेजी ॥ मंत्रीप्रध
न सहित हवे नृपति, वामन पासें आवे ॥ म० ॥ ८ ॥ दान देतो तेहनें
ते वामन, रथथी उतरी प्रणमेजी ॥ श्वसुर आशीष दीये जमाइनें, आलिं
न दीये क्षणमें ॥ म० ॥ ९ ॥ कनकासन उपर बेसाडी, सुख जय पूछे रा
यजी ॥ वामन कहे संग्राम कलामां, हुं नवि जीत्यो प्राय ॥ म० ॥ १० ॥
पण मुज हृदयें पंच परमेष्ठी, मंत्र वसे छे मोटोजी ॥ सुर पण वश हो
य मह पण न नडे, विघन तणो थाय त्रोटो ॥ म० ॥ ११ ॥ उपद्रव न
होये दुष्ट नृपनो,लखमी चाली आवेजी ॥ सांभली पर्षदा जैनधरमनें, स्तव
ता अतिशय चावें ॥ म० ॥ १२ ॥ वीर बांध्या ते संघला मूक्या,मुंमुंडित
चंमपालजी ॥ तेहनी हांसी करतो कुंवर, हास्य करे नरपाल ॥ म० ॥
॥ १३ ॥ चंमपाल हसतो तव बोले, पंचशुं दुःख नवि धरीयेंजी ॥ औष
धी जलथी हय गय जट सहु, वामनें ताजा करीयें ॥ म० ॥ १४ ॥ प्राय
रूपालु सुजटनें उपरें, सापेक्ष मूक्या घातजी ॥ तेणें बहु जननो घात न

हूउं, हवे नृपति कहे वात ॥ म० ॥ १५ ॥ जेम गुण प्रगट कथा तुमें पो
तें, तेम प्रगटावो रूपजी ॥ दाक्षिणथी ओषधी प्रभावें,कीधुं शुद्ध स्वरूप ॥
॥ म०॥१६॥ ते देखी सहु विस्मय पाम्या,आनंद अंग न मायजी ॥ जय
जय शब्द कोलाहल हूउं, वाजित्र गीत गवाय ॥ म० ॥ १७ ॥ इण अव
सर कोइ दूरथी आव्यो, बंदी उंजखो जापेजी ॥ जाग्यें नमतां दीठा तुम
नें, छत्र वैश्रवण प्रकासे ॥ म० ॥ १८ ॥ लखमी वरषी जग तृसो कस्यो,
ते सुणी पूछे रायजी ॥ छत्र वैश्रवण कहो कोण नांख्यो,अम मन कौतुक
थाय ॥ म० ॥ १९ ॥ तव बंदी पद्मरथ राजानी,पुत्री परणवा आवेंजी ॥
कमलप्रभ नृपालनी पुत्री, परस्या लगें अविवाहें ॥ म० ॥ २० ॥ चित्र
कारी चरित्र कयुं सयलुं, तव सहु करे विचारजी ॥ आपण नवि हास्या पा
मरथी,एतो मोहोटो कुमार ॥ म० ॥ २१॥ सहु जेला मली कुमरनें कहे,
अपराध कीध अजाणेंजी ॥ ते खमजो अपराध तुमारुं, कोइ स्वरूप न जा
णे ॥ म० ॥ २२ ॥ कुंवर पण अपराध खमावे, प्रीति वधि मांहो मांहिजी
॥ कन्या एह स्वरूप देखीनें,हैर धरे उत्साहिं ॥ म० ॥ २३ ॥ नृपति निज
चित्रशालामांहि. देइ परिवारनें राखेजी ॥ एक दिन पाणीग्रहणनें हेतें,
नरपति एणी परें जांखे ॥ म० ॥ २४ ॥ पाणीग्रहण करो कन्यानुं, कुंवर
कहे तव वाणीजी ॥ माहारे नाही प्रयोजन एहनुं,माहारे छे बहु राणी ॥
॥ म० ॥ २५ ॥ कलाकरण रणजय तो केवल, कौतुकथी में कीधुंजी ॥ अ
ण जाणे कुलें पुत्री देवी, ए नवि किहांये प्रसिद्धं ॥ म० ॥ २६ ॥ कलावंत
कोइ राजकुमरनें, कन्या आपो एहजी ॥ एहनी पण मेहेनत थाये सफलजी,
तव नृपति कहे तेह ॥ म० ॥ २७ ॥ रुडुं कयुं एम देवीयें जांख्युं, प्रतिज्ञा
पण पूरीजी ॥ बलात्कारथी एम मनावी, विघ्न सवे चकचूरी ॥ म० ॥२८॥
शुभलगनें परणावे त्रणे, महामहोत्सवथी रायजी ॥ गज रथ घोडा पायक
आपे, सुंदर मंदिर ठाय ॥ म०॥२९॥ घर वाखरो वली देश ते आपे, क्रीडा
करे स्त्रीसंगेंजी ॥ साते क्षेत्रें धन ते वावरे,देव गुरु पूजे रंगें ॥ म०॥३०॥
आय प्रमाणें वय ते करतो,एहनां पुण्यथी वाधेजी॥ राज्य राजानुं जन गु
ण गाये, नित्य नित्य एम आराधे ॥ म० ॥ ३१ ॥ परदेशें पण जयश्री पा
मे, पुण्यवंत जे प्राणीजी ॥ आदर करीने पुण्य करो नवि, जिनशासन एम
जाणी ॥ म० ॥३२॥ नवमी ढाल ए पंचम खंडें,पंचम खंड पण पूरो जी॥

एकाँपैमनी पुण्यप्रनावें, उपराजण तमें जूउं ॥ म० ॥ ३३ ॥ श्रीगुरु उत्त विजय पसायें, पद्मविजय एम नापेजी ॥ श्रीजयानंदना रासमां जाणो दिन दिन अधिक उल्लासें ॥ म० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ २६७ ॥

॥ इति श्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणिविरचिते श्री श्रीज यानंदकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे नाट्यसुंदरी,गीतसुंदरी,नादसुंदरी,परिणयन नामा पंचमः खंमः समाप्तः ॥ चतुष्कखंम मलिने गाथा ॥३२१५॥ पंचमखंमे गाथा ॥२६७॥ सर्वगाथा ॥३४८२॥ पूर्वखंमचतुष्के उक्तश्लोक ॥४ए॥ पंचम खंमे उक्तश्लोक ॥१०॥ सर्वश्लोक ॥५ए॥ सवईउं एक,समस्या एक,छुहो एक।

॥ अथ षष्ठखंम प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ प्रनु शोलमा, दान अनय दातार ॥ पदकज प्रणमुं पा सनां, चिंता चूरणहार ॥ १ ॥ पंच खंम पूरण कह्या, चढते रंगें चंग ॥ ह वे उठो कहुं होंशथी, आणी मन उछरंग ॥ २ ॥ क्रीडा वनमां क्रीडतां, धर्म करंता धीर ॥ काल केतो एक काढतो,व्यवहारें वड वीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ कडुआं फल ठे क्रोधनां ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन रमवा निकल्यो, श्रीजयानंद कुमार ॥ रमवानें उद्यानमां, तिहां देखे तेणी वार ॥ १ ॥ चोरी व्यसन ठे आकरुं ॥ ए आंकणी ॥ खर उपर अवले मुखें, शिर पटियां पाडी ॥ वेसाडी राख चोपडी, मुखें मेश लगाडी ॥चो०॥ २॥ आक्रोश ताडना बहु करे, ठोकरां धूल उमावे ॥ कांकरा नाखे अति घणा,फूटुं वाजुं वजावे ॥चो०॥३॥ व्रण जर्जरित नूख्यो घणुं, नर क वानकी आवे ॥ पापनी मूर्त्ति ते बनी,मारवा लेइ जावे ॥ चो०॥४॥ वध्य मंमन देखी करी, कोटवालनें पूढे ॥ कोण ए केम विटंबना, एहनें द्यो शुं ठे ॥ चो० ॥ ५ ॥ तेह कहे आज रातिमां, व्यवहारी गेह ॥ खातर देइ इव्य काढीयुं, जन जाग्या तेह ॥ चो० ॥ ६ ॥ लोकें कोलाहल कस्यो, अमें पोहोता ताम ॥ रायनी आणथकी अमें, मारवा जाउं आम ॥ चो० ॥ ॥ ७ ॥ पापनां फल एहवां कह्यां, चोरनी गति पण एह ॥ तव कुंअर मन चिंतवे, एह अनित्यनुं गेह ॥ चो० ॥ ८ ॥ दाता नाम ठे माहरुं, ए चोरी करे एम ॥ पीडा पामे अति घणी, वांक तेह माहारो नेम ॥ चो० ॥ ए॥

एम विचारी दया करे,मूकाव्यो तेह चोर ॥ घर लावी न्हवरावीयो, तेम नो जन शुन गोर ॥ चो० ॥ १० ॥ कुण रहीनें तस पुछियुं, कोण तुं केम करे चोरी ॥ कुमरनें उंलखो चोर ते, उठी हैयामां होरी ॥ चो० ॥ ११ ॥ नीचुं मुख करीनें रहे,तव बोले कुमार ॥ अनय दीधुं तव बोलियो,गद गद वयण प्रकार ॥ चो० ॥१२॥ पापीनुं चरित्र सुणाववुं, योग्य नहीं शुं नांखुं ॥ रूपस्वरें करी उंलखी, कुमर कहे सुण आखुं ॥ चो० ॥ १३ ॥ बांधव माहारो रूअडो, नामें सिंह कुमार ॥ एहवी अवस्था केम लह्या, नांखो तेह विचार ॥ चो० ॥ १४ ॥ स्नेहें आलिंगन करी, वेशी पूछे वात ॥ पालीनुं राज्य किहां गयुं, केम त्रणनो भ्रात ॥ चो० ॥ १५ ॥ कपट पोतानुं गोपवे, कहे कल्पी वात ॥ सुता तुमें देवी मंदिरें,हुं पोहोरीयो रात ॥चो०॥ ॥ १६ ॥ सिंह दीठो में आवतो, तेहनें करवा त्रास ॥ पूठें दूर गयो वही, पाछो वलीयो उल्लास ॥ चो० ॥ १७ ॥ नमतां मारग नूलीयो, थयो जव परजात ॥ देवी देहरे तव आवियो, मनमां धरी भ्रांत ॥ चो० ॥ १८ ॥ तुमनें नवि दीठा तदा,जोया पर्वत पालि ॥ जलधिमां रत्न गया परें,आशा त्रूटी नाली ॥ चो० ॥१९॥ तुज वियोगें पालुं पालिनें,इण समय महासेन ॥ मुज धरतीनें दावतो, आव्यो लेई सेन ॥ चो० ॥ २० ॥ हुं पण साहामो निकल्यो, युद्ध एहवुं कीधो ॥ मुज लसकर हारी गयुं, मुज बांधी लीधो ॥ ॥ चो० ॥ २१ ॥ जालरो कीधो प्रहारथी,नाख्यो बंदीखाणे ॥ राज्य करे ते पालिनुं, मन मद बहु आणे ॥ चो० ॥ २२ ॥ चामडे मढीयो मुजनें, गिरि टुक चढावी ॥ नाख्यो पलाशपत्रे पडयो, कर्म होय जे नावी ॥चो०॥२३॥ नावी नावथी वरसीयो, मेघ अकालें ताम ॥ चरम गंध तव उछल्यो,आवी शीयाल ते ठाम ॥ चो० ॥२४॥ चरम नख्युं तेणें वायरो, आव्यो चेतना पामी ॥ मूर्छा गइ अनाग्यथी, दुःख तणो विशरामी ॥ चो० ॥ २५ ॥ दुःखीयानें मरण ते दोहिलुं, नमतो पुरवर गाम ॥ इहां आवी निक्षा नमुं, त्रणें जर्जर आम ॥ चो० ॥ २६ ॥ नूख्यां त्रण दिन वही गया, निक्षा नवि लाधी ॥ चोरी कीधी एणी परें,नूखें देहडी दाधी ॥ चो० ॥ २७ ॥ यतः बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणानरा निःकरुणा नवंति ॥ आख्याहि नद्रे प्रियदर्शनस्य, न गंगदत्तः पुनरेति कूपं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ आगल तुमें जाणो सवे,जीवाडयो बहु वार ॥ उरखीयो न थाउं किमे,दासपणे पण

धार ॥ चो० ॥ २८ ॥ पद्मविजय पहेली कही, छठे खंडें ढाल ॥ श्रीजया नंदना रासमां, आगल वात रसाल ॥ चो० ॥ २ए ॥ सर्वगाथा ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन अगोचर वालहा, पूरवलुं मुज पाप ॥ पामुं आपद पग पगें, अधम संगति लही आप ॥ १ ॥ यतः ॥ अधमसंगतिडुर्मीतिडुःस्यता, प्रतिपदं वधबंधपराजवः ॥ प्रियवियुक्तयरिनोतिडुरापदः, खलु फलानि हि डुष्कृतशाखिनः ॥१॥ दोहा ॥ कुमर सुणी किरपालुळ, कहे तुमें न करो खेद ॥ सहुनें विपद संसारमां, न लहे पण निर्वेद ॥ २ ॥ रमणिक राज्य नें रुद्धि ए, ताहारुं जाणी तहत्ति ॥ लखमी पण तेहज लहो, निजगुं जुं जे निरत्ति ॥ ३ ॥ मण टाल्यां औषधि वनें, आपे वस्त्र अलंकार ॥ दाता क ल्पपादप परें, गंनीर गुण गणधार ॥ ४ ॥ जाईपणुं जनमां जण्युं, परगट राखे पास ॥ सोंप्यां काम एहनें सवे, आदर करी उल्लास ॥ ५ ॥ लहीयें धन लखो गमे, न मले जाइ निदान ॥ निजदेश चिंतक नारिनें, अनु मत करे अचान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ तट यमुनानुं रे अति रलियामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरें दीधुं रे धन विलमे सदा रे, लोकमां मान थयो सिंहसार ॥ संपदा कुमरनी देखी चित्त बले सदा रे, निज आपद संजारे गमार ॥ १ ॥ डुर्जन ते सज्जन न होये कदा रे ॥ ए आंकणी॥ देखी देखी डुबलो ते होय रे, जेम जवासो वरषा काल ॥ देखी तेज कुमरनुं रविपरें रे, अस्त थाये जेम घूक ते काल ॥ डु० ॥ २ ॥ मन चिंते संपद मुज नवि मली रे, तो हरुं एहनी कोय उपाय ॥ शत्रुवध तो थवेलुं नहीं रे, मारुं तो ए सवि मुज थाय ॥ डु० ॥ ३ ॥ नूपसवायी काम सिद्धे सवे रे, एम चिंती हवे कुमरनी साथ ॥ जइनें रायनी सेवामां रहे रे, अनुक्रमें नरपति कीधो हा थ ॥ डु० ॥ ४ ॥ डुष्टनो आशय मालम नवि पडे रे,कचरामां जेम कंटक होय ॥ मुखथी मीठो धीठो हृदयमां रे,तेहनी रीति न जाणे कोय ॥डु०॥५॥ जाण कुमर प्रिया जाणी डुष्टना रे, कुमरनें कहे पण माने नांहि ॥ सज्ज न ते सहुनें सज्जन लहे रे,डुष्ट तेनें सहु गणे डुष्ट मांहि ॥डु०॥६॥ सूर्य अह्न आलुं देखे सदा रे,घूक ते देखे नित्य अंधकार ॥ जे जेहवो होये ते तेहवो होये रे, चोर तथा साहुकार ॥ डु० ॥ ७ ॥ लोकविचारे रे चोरनें कम

करे रे,एवडो कुंअर आदर मान ॥ एहनें नाई रे एहवा नवि होये रे,वली की धुं बहु धनचुं दान ॥ कु० ॥ ८ ॥ एक दिन पूछे रे कुमरनें नृपति रे, एहनें केम करो आदर मान ॥ गुणथी अधिका रे बीजा छांमीनें रे,सिंह शीयालनें एह उपमान ॥ कु० ॥ ९ ॥ कुमर कहे नाई माटे आदर करूं रे,पण नवि माने ते राय ॥ एक दिन राय पूछे सिंहसारनें रे, कौतुकथी निरमाय ॥ कु० ॥ १० ॥ ते पण अवसर पामी माया करी रे, बोले एणी परें वाण ॥ में उपकार कर्यो पूर्वे घणो रे, माने छे तेह जाण ॥ कु० ॥ ११ ॥ वधती वात कहे वाचे नहीं इहां रे,तम दीशा छे ते माट ॥ कुमरें निषेध्यो छे वली तुमनें रे, डुःख थाये इण वाट ॥ कु० ॥ १२ ॥ नृपति कौतुक आशंका नखी रे, नृप कहे तोहे नांख ॥ जो मुज मानतो होय कोइ रीतिथी रे, तो कांइ छानुं म राख ॥ कु० ॥ १३ ॥ कुमरथकी तुम आणा मोटकी रे, सामीड़ोहनुं पाप ॥ में सांजलियुं छे तेणें नाखियें रे, सांजलो कहुं ते आलाप ॥ कु० ॥ १४ ॥ विजयपुरें जय नाम राजा तणो रे,सुत हुं त्यागी अथाग ॥ ते कारण चोरी पण हुं करुं रे, तव नृप कहे धरी राग ॥ कु० ॥ १५ ॥ अहो निज दोष कहे छे केहवो रे, सत्यवादी शिरदार ॥ एणी परें राय विचारे निज मनें रे, हवे आगल कहे सिंहसार ॥ कु० ॥ १६ ॥ मधुगीत नामें गायन रूअडुं रे, उपनो कुल ते चंमाल ॥ मधुर स्वरें करी रायनें रीजवे रे, करे प्रसाद नृपाल ॥ कु० ॥ १७ ॥ सुरगीत नामें सुत थयो तेहनें रे. सो नागी शूरवीर ॥ बालपणी पण सुस्वर अति घणो रे, प्रज्ञावंत सुधीर ॥ कु० ॥ १८ ॥ सौनाग्यादिक गुण आगर थयो रे, पंकजमां जेम गंध ॥ नीचकुलें पण तेहनें तस पिता रे, शीखवे ते रागबंध ॥ कु० ॥ १९ ॥ मुज आगल गाये सुस्वरें रे, दान देवं सुविशाल ॥ बीजी कला इधे पण को नहीं रे, पाछवे जाणी चंमाल ॥ कु० ॥ २० ॥ देशांतर जायवुं मन करे रे, पण धन नहीं निज पास ॥ मुज पासें माग्युं धन में तदा रे, चिंतव्युं करे ए अभ्यास ॥ कु० ॥ २१ ॥ शीखी कला मुजनें देखाडशे रे, आप्युं में धन कोडी ॥ जइ विशालपुरें विद्या नण्यो रे, धन आपी मन कोडि॥ कु० ॥ २२ ॥ क्षत्रीपणुं निज लोकमां दाखतो रे, दाखवी कलानें विज्ञान ॥ कोइक इष्ट आराधी सुर जिये रे, औषधि जाज्वल्यमान ॥ कु० ॥ २३ ॥ इष्टरूप करतो पृथिवी नमे रे, रीजवे लोकनां वृंद ॥ मनोवांछित धन मेल्युं लोकथी

रे, करी उपकार अमंद ॥ छु० ॥ २४ ॥ कोइ उत्कृष्ट कलाथी परणीयो रे, राजकन्या गाम गाम ॥ नाग्यकला गुण आगल कोण जूए रे,जातिनें कुल अनिराम ॥ छु० ॥ २५ ॥ मुज संगतिथी शीख्यो दाननें रे, दानें दोष ढंकाय ॥ फरतो फरतो इहां आव्यो पछें रे, तुमथी गानुं न कांय ॥ छु०॥ ॥२६॥ उठे खंमें बीजी ढालमां रे,छुर्जन एहवा होय ॥ पद्मविजय कहे तत विश्वासडो रे, मत करजो तुमें कोय ॥ छु० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विण उंलखे चारू परें,मूकाव्यो एणें मुऊ ॥ लाव्यो निजघर लक्षणें, उंलख्यो मुज ए गुऊ ॥१॥ देई धन दोलत तदा, सहुमां कस्यो सतकार ॥ एकांतें मुज आखियुं,सुण रे तुं सिंहसार ॥२॥ मुजकुल मत परकाश जे,सम दीधा सो वार ॥ वचनें एम विलखो थई,बांध्यो बहु प्रकार ॥३॥ राखे पासें रीतिशुं,विणचिंते विशवास ॥ करे बहु मान मन कातियें,आपे नहीं अवकाश ॥४॥ तुम आणा वशथी तुरत,गोप्य कह्युं गोसामि ॥ गुणवंत कुल गणियें नहीं, अप्रसन्न मत हो आम ॥ ५ ॥ सांनली नृप विस्मय लह्यो, मनमां क्रोध न माय ॥ वांबित फल्यां विचारीनें, सिंह उल्लास सवाय ॥ ६ ॥ सिंह विसर्ज्यो शुनपरें, क्रोधें नृप अकुलाय ॥ जैन नूपनें पण जुउ, दोष त्रण छुःखदाय ॥ ७ ॥ यतः ॥ तस्मिन् छुर्बलकर्णत्व, मविमृश्य विधायता ॥ स्वैरत्वं चेति जैनेपि, संति दोषास्त्रयोनृपे ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ माहारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चिंते क्रोध नरायो,जूउ मुज कुल एणे वटलायो रे ॥ धिक् धिक् ए जमाइ ॥ पापीयें बहु नृपकुल वटलाव्यां, सहुनें छुःख एणी परें आप्यां रे ॥ धि० ॥ १ ॥ कुल नवि पूठ्युं रानस वृत्तें,कुमरीयो दीधी मन प्रीतें रे॥ धि० ॥ पंक्तियें बेशीनें नोजन करीयें, कहो केम एणी परें पिंम नरीयें रे॥ धि०॥२॥ छत्र वैश्रवण ए नाम धरावी,करी धूर्तविद्या एणें गवी रे ॥धि०॥ पद्मरथ पद्मप्रन नेतरीया, महारां पण वस्त्र वेतरियां रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ राज्यांतरमां वात विस्तरशे, तो मुज निंदा करशे रे ॥ धि० ॥ कुल मुज लजशे ने हांसी करशे, ए केम मुज प्रवहण तरशे रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ आजज मारीयें रयणीयें एह, तो आवरु रहे रेह रे ॥ धि०॥ एम चिंतवे दोष घायक तेहे, विश्वासीनें तेडी नेडे रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ तुरगारूढ जे आजनी स

तें, राजमार्गे थइ जाते रे ॥ धि० ॥ वेहु जण मलीनें मारजो तेह, कोइ आगल कहे जो म एह रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ अंगीकार करी ते आदेश, रह्या गुनक परें ते देश रे ॥ धि० ॥ सावधान थई वगर विचारें, रहे ते ताकी तेवारें रे ॥धि०॥७॥ कोइ नर मूके श्रीजय पासें, ते जइ एम प्रकाशे रे ॥ धि० ॥ कांइक कार्यनो करवा विचार, नृप तेडे एणी वार रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ सरलपणे सुणी श्रीजयानंद, धरतो विनय अमंद रे ॥ धि० ॥ मूकी शय्या धरी विशवास, जव जावानें उल्लास रे ॥ धि०॥ ९ ॥ निपुण स्त्रीयो तव कुमरनी बोले, सरल नहीं तुम तोले रे ॥ पियु प्राण आधारा ॥ नीतिशास्त्रना जाण कहाउं, नविय विचार मन लाउं रे ॥ पि० ॥ १० ॥ श्यो अवसर आ आलोच केरो, पाछली रात अंधेरो रे ॥ पि० ॥ तेडवानो नहि अवसर सामी, तुमें गुणगणना धामी रे ॥ पि० ॥ ११ ॥ नर नारीनी न शंका करियें, सरलपणुं नित्य धरियें रे ॥ पि० ॥ वनसपति जे फूले अकालें, अरिष्ट थायें शरवाले रे ॥ पि० ॥ १२ ॥ दुष्ट कारण विण इंणहिज वेला, तेडे न एम एकेला रे ॥ पि० ॥ नृपचित्त चुकनें जूदी वाणी, किरिया भिन्न वखाणी रे ॥ पि० ॥ १३ ॥ जुडुं फल वेश्यानी रीतें, खबर पडे नहीं चित्तें रे ॥ पि०॥ ते कार्य कहो केणी परें करीयें, जेह्मां संशय धरीयें रे ॥ पि० ॥ १४ ॥ नृप विश्वास न करीयें विशेषें, त्रण अवगुण जस देखे रे ॥ पि० ॥ सर्वं कार्य करता सिंहसार, मोकलो तस इंण वार रे ॥ पि० ॥ १५ ॥ श्ये कामें कहो आवशे एह, इण अवसर जाशे न जेह रे ॥ पि० ॥ न्याय युक्त ए तांजनी वात, कुमर चित्त हरखात रे ॥ पि० ॥ १६ ॥ तेडो सिंहने जांखे एम, नृप तेडे तुम नेम रे ॥ पि० ॥ पूछवा तेडयो भुजनें राय, घात कुमरनो उपाय रे ॥पि०॥१७॥ जांखिश मन मान्युं तिहां जाई, सिंह चिंते एम चाई रे ॥ पि० ॥ तुरगारूढ थइ हवे चाल्यो, अर्द्धमारगें जइ माहाल्यो रे ॥ पि० ॥ १८ ॥ दोय पासें दोय बाणथी मार्यो, पडियो मूर्छायें धार्यो रे ॥ पि० ॥ जाई इंहनुं फल एह पायो, पर चिंतव्युं निज थायो रे ॥ पि० ॥ ॥ १९ ॥ ते पुरुषें जइ राजानें आख्युं, काम कर्युं तुमें जांख्युं रे ॥ पि० ॥ प्रायें नृपनें न होय विवेक, दर्प लह्यो अतिरेक रे ॥ पि० ॥ २० ॥ यतः ॥ विवेकोऽर्ज्जनः प्रायो, विशेषो महतामिह ॥ धनादयनृपदेवेषु, स मनागपि नेदयते ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ कोलाहल सुणी कोटवाल आयो, वाहार मोकले

नररायो रे ॥ पि० ॥ कोइक नरें कही कुमरनें वात, सांनली मन खेदात रे ॥ पि० ॥ २१ ॥ नारियो कहे स्वामी तुमें दीठुं, नृपनुं कार्य अनीठुं रे ॥ पि० ॥ मान्युं न होत जो अमचुं वयण, शी गति होत अम सयण रे ॥ पि० ॥ २२ ॥ आजथी रहेजो हवे सावधान, राजदुर्बल होय कान रे ॥ पि० ॥ खलसंगति थई रायनें जूनी, एह वात नहीं कूडी रे ॥ पि०॥२३॥ सरस्वती स्त्री तेणें तुम चित्त खेले, नरनें दूरें मेहेले रे ॥ पि० ॥ कुमर कहे स्त्रीनें एम वयणां, तुमें मुज ठो जेम नयणां रे ॥ पि० ॥ २४ ॥ नारीनें एम आनंद पमाडी, वचनयुक्ति कही जाडी रे ॥ पि० ॥ पतिव्रता जे नामिनी होय, नर्त्ता सम नहीं कोय रे ॥ पि०॥ २५॥ ठहे खंडें त्रीजी ढाल, सुणतां मंगलमाल रे ॥ पि० ॥ पद्मविजय कहे आगल देखो, दुर्जन सज्जन विशेषो रे ॥ पि० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ए० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवतो सिंह होयें यदि, तो लावो ततकाल ॥ मोकले एम कही मानवी, श्रीजयानंद संनाल ॥ १ ॥ लाव्या सास लेतो थको, ओषधि जल तव आण ॥ सज्ज कियो ढांटी शुनपरें, उत्तम नर एम जाण ॥ २ ॥ यतः ॥ उपकारिणि वीतमत्सरे वा, सदयत्वं यदि तत्र कोऽतिरेकः ॥ अहिते सहसापराधलुब्धे, सदयं यस्य मनः सतां स धुर्यः ॥ १ ॥ दोहा ॥ मरण आवे क्षण क्षण मनें, मूकावे ए मुज्ज ॥ एहथी शी आपद अधिक, सिंह विचारे गुज्ज ॥ ३ ॥ धातायें आपद धरी, अन्यस्थानक अण पाम ॥ पुण्य रहित मुज उपरें, मानुं मूकावी माम ॥ ४ ॥ दूबली वाडें देखीयें, अथवा विड् अनेक ॥ अथवा काम एणें कर्युं,अंधारे अविवेक ॥ ५ ॥ एहज अर्थ एणें कर्यो, बहु सत्कार बनाव ॥ जाण्यो धूर्त्त में आजथी, जेणें कर्यो एह जमाव ॥ ६ ॥ उपकारनें लहे अपक्रिया, तेह नीच तेणि वार ॥ सूर्य किरण नास्कर थएं,तम लहे घूक तेवार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रह्यो रे आवास दूवार ॥ ए देशी ॥

॥ जीवाडी सिंहनें मूता कुमार,निर्नय थइनें सिंहपरें तदाजी ॥सूतो न बीहे मृगथी रे सिंह,पण तस पन्नी शंक धरे सदाजी ॥१ ॥ सुनटोनें कहे तुमें थाउं सावधान, जालवो पोल प्राकार नली परेंजी ॥ रायनें जइ कहे कोइक वात, सिंह मार्यो कोइ वैरीयें एणी परेंजी ॥ २ ॥ राजा रे

पामे मनमां खेद,चिंते रे विपरीत कारज केम थयुंजी ॥ चिंतव्युं कांय नें नी पन्युं कांय,दैववांके सहु वांकुं थइ गयुंजी ॥३॥ यतः ॥ अन्नह चिंतियमाणं, उदय पत्तंगेण अन्नहा जार्य ॥ चिंतोदय विवरीयं,तम्हा नो चिंतए मुणिंदा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मारण योग्य न आव्यो एह, पालन योग्य ते हितुउं एम मुऊंजी ॥ गोप्य जे वात ते थइ परगट,काम न सीधुं माहारुं किम हूउंजी ॥ ४ ॥ खाधुं अनद्मपनें न गयो रे ताव, प्रतनो रे भंग थयो ए चिंतमां दहेजी ॥ गोत्रनो ध्वंस कस्यो वली राज्य, बलीया रे वयरी आवीनें ग्रहेजी ॥५॥ हाथ बल्या नें न खवाणो पोंक,ए दृष्टांत ते माहारे नीपन्युं जी॥ मारवो प्रगटपणे करी जोर, एहवुं रे नरपति चित्तमां उपन्युं जी ॥ ६ ॥ सुनट सहस गमे सन्नद्ध बद्ध, मोकले सूतो मारो एहनेंजी ॥ सहस गमे मली आव्या रे तेह, कुमरनी पोलें मद बहु जेहनेंजी ॥ ७ ॥ लोह मोवर थी नांजे रे पोल, तेटले पोल उघाडी कुमरनटेंजी ॥ तेहशुं रे करवा मांमयुं युद्ध, वींटया रे तेहने बलनें उत्कटेंजी ॥ ८ ॥ कुमरनटें बहु देखाडयो त्रास, नाठा रे नृपनट नृपना गेहमांजी ॥ कुंजमां जेम पेसे रे शीयाल, शक्ति न रही लव लेश ते देहमांजी ॥ ९ ॥ कुमर नटें अम नसाव्या रे स्वामि, रविकर जेणी परें महोटुं तम हणेजी ॥ सांनली क्रोधें चडियो रे राय, नेरी वजडावे विहाणें मद घणेजी ॥ १० ॥ युद्ध करणनें मलियुं रे सैन्य, जाग्यो रे कुमर कृत्य विहाणां तणांजी ॥ करीनें रे रमवा सोगठ पास, बेसे रे नारीनें कहि वयणां घणां जी॥११॥ सैन्य सहित नृप आवतो जाण, तूरीनो कटुक ध्वनि सुणी कानमांजी ॥ नयथी रे भ्रांत थइ कहे वाणी, सांनलो स्वामी कहुं ते शानमांजी ॥ १२ ॥ नृपनट तुम नटें नगव्या रे स्वामि, क्रोधें रे नृप नराणो आवियोजी ॥ तुमचो रे निग्रह करवा काज, सैन्य लेइने केम नवि नावियोजी ॥ १३॥ क्रीडानो अवसर नहीं इण वार,ल्यो करवाल ते शत्रु कारणें जी ॥ अमने रे रमवा मन नवि थाय, बीहीकें रे मन नवि रहे अम धारणें जी ॥ १४ ॥ बोले रे लीलायें हसीनें कुमार, शस्त्र विना बहु कुमरनें जीतीया जी ॥ बलीया रे बलशुं आव्याता तेह,माहारी भुजायें सहुये विभूतीया जी ॥ १५ ॥ क्रीडा करो तुमें निर्नय चित्त, क्रीडा रे करवा वेठी पण मनेंजी ॥ स्त्रीना स्वजावथी शंका रे धार, सैन्य सजावे दाखवी नयननेंजी ॥ १६ ॥ कुमरनां मं

२१ नर रे पि पि पि स रु ए [ ]

दिर सन्मुख ताम, जातां रे देखे सचिवादिक सहुजी ॥ काल
धानें ताम, जाय रे वावरीवाडे ते बहुजी ॥ १७ ॥ आवीने
पाय, वीनवे कर जोडी एम रायनेंजी ॥ सैन्यशुं चाल्या कोण
कोनें रे मारशो एणी परें धायनेंजी ॥ १८ ॥ रायें रे नांख्यु
त, सिंहें जे नांख्युं सघलुं ते सुणीजी ॥ नांखे रे सचिव ते
णि, सांभली अवगुणो केम न तुमें गुणीजी ॥१९॥ कारण वि
त्रु कहाय, धरतो रे मत्सर परगुण देखीनेंजी ॥ कांटा रे साह
ट, फल फूलें पूरी वाडी उवेखीनेंजी ॥२०॥ यतः ॥ खलोमृगय
गुणपूर्णोपि वस्तुनः ॥ वने पुष्पफलाकीर्णे, करभः कंटकानिव
वे ढाल ॥ पापी रे खल पण तेहथी अधिक, खलनी जे वात सुण
रीजी ॥ खलनी रे पूंठ पूरे तेह जीव, मान्युं रे दुर्गति जातां मन
॥ २१ ॥ महोटा ते विरुद्ध न सांभले कान, आपें उपानकें सुख
जी ॥ कंटक सरिखा खलनें रे जाणी, आदर न दीये संत खलनें
॥ २२॥ यतः ॥ कंटकानां खलानां च, सहश्येव प्रतिक्रिया ॥ उ
गोवा, दूरतोवा विसर्जनं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सांभले सज्जन ख
वात, जो कदी सांभले पण चित्त नवि धरेजी॥ कुंभनी परें न
सार, जोजो रे सहुये त्रुजगतणे गरेंजी ॥ २३ ॥ ठठे रे खंमें चोथ
नांखी रे पद्मविजय सोहामणीजी ॥ श्रीजयानंदना रासमां सार,
गुण अंगीकरो ए सुणीजी ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ १२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेजोमयी पूजित जनें, पण मले लोह प्रसंग ॥ अग्नि कूटाये
णी, ए खल संग एकंत ॥ १ ॥ खलसंगें आपद खरी, पामे महोटा प्र
कांकरी घट ठिद्रित करे, जल नें शोना जाय ॥ २ ॥ तुंब ते जलमां
लें, मध्यम मृत्तिका संग ॥ तेणें नवि सांभलवुं तुमें, वयण जे खल
ग ॥ ३ ॥ असंनाव्य नवि आखियें, जोइयें युक्तायुक्त ॥ वारु कुल
चोरनुं, संनालो वली सूक्त ॥४॥ यतः॥ खलःसत्क्रियमाणोपि, ददाति
सतां॥ दुग्धधौतोपि किं याति, वायसः कलहंसतां ॥ १ ॥दोहा॥ गिरुडने
त ए, जामाता एह जाण ॥ दुष्ट कुल तस दाखिवुं, पण केम थाय प्रमाण
॥ ढाल पांचमी ॥ हांरे मारे जोबनीयानो लटको दाहाडा चार जो ॥ए देश

॥हांरे माहारे महापराक्रमी वासुदेव सम कोय जो, कुलतो गुण ल
र्न नाग्यथी जाणीयो रे लो ॥ हां० ॥ एहने मस्तक थई कुसुमनी वृ
लो, कुलदेवीयें घोष करी जे वखाणीयो रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ ए सवि
रियुं केम राजन तुम लो, अविवेकें असमंजस करवा मांमियुं रे लो
० ॥ नरमां तुमें नृप तेम गुणमांहे विवेक जो, दोषमां तेम अविवेक
ाहापण ठांमियुं रेलो ॥ २ ॥ यदुक्तं ॥ सगुणमपगुणं वा कुर्वता का
र्त परिणतिरवधार्या, यत्नतः पंमितेन ॥ अतिरजसकृतानां, कर्मणा
विपत्ते, र्नवति हृदयदाही शल्यतुल्योविपाकः ॥ १ ॥ तथा ॥ सहसा
धीत न क्रिया,मविवेकः परमापदां पदम्॥ वृणुते हि विमृश्यकारिणं,गु
ुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ हां० ॥ लीलायें क्रीडा कर
वेगे तेह जो,एणि परें तुमें तो उद्यम मांम्यो ठे वृथा रे लो ॥हां० ॥
लायें तुम वल नगवे जात सुनट जो, नाग्य परीक्षा कीजें एणी रीतें
ा रेलो ॥ ३ ॥ हां० ॥ तुम सेनाशुं कुर्जय जाणो एह जो, पृथ सहि
करी सिंहने जीते केणी परें रेलो ॥ हां०॥ कुमर ससैन्य संग्रामें जीत्या
ण जो, तेम सेनापतिने पण ए विलखो करे रेलो ॥ ४ ॥ हां० ॥ एह
ा जो न करे तेणें काल जो, जीवतो कोण रहे एह वात विचारीयें रे
ो ॥ हां०॥ राज्यधणी कहो तुमें पण केणीपरें होत जो, कुमर विटंबणा
इ ते सवि संनारीयें रेलो ॥ ५ ॥ हां० ॥ बिरुदावली वंदी बोल्यो के
ी रीत जो, कोटि अनेक सुनटशुं पद्मरथ जे हतो रे लो ॥ हां० ॥ जी
गो वामण रूपें एकण पिंम जो, तेहशुं रण करीने कोण जगमां
ीततो रे लो ॥ ६ ॥हां०॥सैन्यनें मारशे कोय चढयो जब एह जो,निंदा
ामशो सकल नृपमांहे तुमें रे लो ॥ हां० ॥ जीववुं दोहिलुं तेणें तुम अ
नें खेम जो,वांछो तो तजो एह अकारय कहुं अमें रे लो ॥ ॥ ७ ॥ हां०
ामनें हणतां अमें जीवाशे केम जो, सांनली सचिवनी वाणी चिह्नो
ानमां घणुं रे लो ॥ हां०॥ सिंहनी वात ते कूडी हृदयमां धारि जो, बोले
तव नरपति वयण तोहामणुं रे लो ॥ ॥ ८ ॥ हां० ॥ तुमें प्रधान
ा युक्तुं नोरव्युं वयण जो, पण ते पापीयें माहारो स्नेह उतारीयो रे
ो ॥हां०॥ मनडुं माहारुं न मले एहशुं कोय जो,वली तुमें जातां सुजनें एणी
ारें वारियो रे लो ॥ ९ ॥ हां० ॥ जइनें पूछो सम्यग् कुल अवदात जो,

जेम मन निर्मल थाय विघन दूरें टले रे लो ॥ढां०॥ सचिव कहे केम उत्तम नांखे नाम जो,तो केम कुल कहेशे वली शूर घणो वलें रे लो॥१०॥ ढां० ॥ तो पण तुम आणायें जाउं तउ जो, कहेशे तो आवी तुमनें जां सछुं रे लो ॥ ढां० ॥ प्रणमी नृप गया कुमरनी पास प्रणाम जो, करी नें कहे तुम उत्तरें अमृत चाखवुं रे लो ॥ ११ ॥ ढां० ॥ तुमें शत्रुनें शिक्षा देवा शूर जो, गुरुजनना भक्ता नतवत्सल छो सदा रे लो ॥ ढां० ॥ जंगम कल्पवृक्ष सम तुम जो जोय जो,अर्थीने देतां तुमें नवि थाको कदा रे लो ॥ १२ ॥ ढां० ॥ निजकुल नांखो प्रार्थना न करो लोप जो, दुष्ट पापी कोइयें नृपनें भरमावियो रे लो ॥ढां०॥ तुम वयणें करी सहुना संशय जाय जो, अमें तुम पूछुं जे नृपें फरमावियो रे लो ॥ १३ ॥ ढां० ॥ कुमर कहे सुणो न करुं प्रार्थना भंग जो,मुज कुल मुज कर नांखशे संग्रामें करी रे लो ॥ ढां० ॥ उत्तम नर ते फलथी दाखवे वंश जो,पण नवि नांखे कोइ काले कंठें धरी रे लो ॥ १४ ॥ ढां० ॥ वैरी केरो थाशे तिहां विनाश जो, तुम सरिखा सज्जन ते वृद्धिपणुं लहे रे लो ॥ ढां० ॥ सज्जन थइनें सैन्य सहित भूपाल जो, आवो तुमें जेम भुज भुजा मुज कुल कहे रे लो ॥ १५ ॥ ढां० ॥ सांभली प्रणमी नृपनी पासें आय जो, संभलाव्युं ते सुणीनें नृप मन खेदियो रे लो ॥ ढां० ॥ आडंबर करी आव्यो केम जवाय जो, युद्धें पण नवि सिद्धि एम मन वेदीयो रे लो ॥ १६ ॥ ढां० ॥ थयो उनयथी भ्रष्ट कहो गति कोण जो, एम चिंतातुर देखी सचिव ते बोलीया रे लो ॥ढां०॥ इड समाणो संग्रामें अति शूर जो,कुल केम प्राणे नांखे जग तृण तोलीया रे लो ॥ १७ ॥ढां०॥ कुल पूछे शुं गुणथी सर्व जणाय जो,रत्नाकरथी उपन्यो मणि तेजें कहे रे लो ॥ढां०॥ जो तुम आणा होय तो मीठे वयण जो, दीर्घ रोष टालुं जेम प्रसन्नपणुं लहे रे लो ॥ १८ ॥ ढां० ॥ लावुं कुमरनें स्वामी तुमच पास जो, इण अवसर तिहां कुमर आव्य लही करी रे लो ॥ ढां० ॥ आवी पुत्री भणे राय हजूर जो, प्रणमी पाद पिताना संभ्रम बहु धरी रे लो ॥ १९ ॥ ढां० ॥ कुमरी कहे हवे तात नें निसुण वचन्न जो, ते कहेशये आगल सुणजो रंगथी रे लो ॥ ढां० ॥ बहे खंडे पांचमी ढाल रसाल जो, पद्मविजय कही श्रीगुरु उत्तमसंगथी रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सैन्य तणो तुमें. अकस्मात् आरंभ ॥ रण करवानें रीजवी, आव्या एह अचंभ ॥ १ ॥ सिंहवात सवि सामटी,मूलथकी मंमाण ॥ कही ते सांजली कुमरियो, बोली बुद्धिनी खाण ॥ २ ॥ सकल शौर्य संपन्न ए, धैर्यादिक गुण धार ॥ लक्षणें चक्री ए लख्यो, सवि सज्जन शिरदार ॥ ॥ ३ ॥ नीचकुलें जो नर इश्या,कोण कहो कुलवंत ॥ मुखाश्यें मरवा तणी, कहो कोण होंश करंत ॥ ४ ॥ चिंतामणि सरिखो चतुर,परिगल पुण्यें पामी ॥ उपरांगो करो आफणी, घहेलो दीसे निगाम ॥ ५ ॥ छुर्जन एह छुरात्मा, सिंह ते जाणो शियाल ॥ अमें तो पूर्वे ठंजख्यो,नजी परें नूपाल ॥ ६ ॥ वार वार अमें विनयथी, कह्युं विचित्र प्रकार ॥ पण सौजन्यपणा थकी, माने नहीं कुमार ॥ ७ ॥ कपटथकी एणे कुमरनें, रीजवीयो नरराय ॥ न त्यजे नोलो नाह ए,जेम शशि कलंक न जाय ॥ ८ ॥ तुमें पण मान्यो तेणें तुमें, आपद लह्या अपार ॥ जिहां कपोत वेसे जदा, शाखा सूके तिवार ॥ ९ ॥ यतः ॥ कपटी चित्त न दीजीयें,पेट पेशी बुध लेत ॥ पेजी थाग बनापकें, पीछें गोथां देत ॥ १ ॥ काज विचारी कीजीयें, जेम नोलं वर दृष्टांत ॥ गुह्यसंगम ऋतु नेह्नृप, नट तिय श्वानप्रधान ॥ कटत जटत उग्रत ग्रहत,फिर पीछें पछतान ॥ २ ॥

॥ ढाल छठी ॥ हरणी जव चरे लालनां ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी कुमरी कहे लालनां ॥ लला हो तात वयण अवधार ॥ ए वर वारू रे लालनां ॥ इह्वो जो निज पर कुशलनें लालनां ॥ ल० ॥ तो रीजवो ए कुमार ॥ ए० ॥ १ ॥ अमें हित कहीयें तुम तणे ला० ॥ ल० ॥ कटु पण मानो वाण ॥ ए० ॥ रोग शमाववा कारणें ला० ॥ ल० ॥ कटु औषध करे आण ॥ ए० ॥ २ ॥ राय कहे कुमरी सुणो ला० ॥ ल० ॥ आमंबर कस्यो एह ॥ ए० ॥ मूकतां लाज आवे घणी ला० ॥ ल० ॥ मान नडे बहु देह ॥ ए० ॥ ३ ॥ तात नक्ति तुम चित्त होये ला० ॥ ल० ॥ तो पति कुल निरधार ॥ ए० ॥ पूछीनें मुजनें कहो ला० ॥ ल० ॥ तो थाय जयजय कार ॥ ए० ॥ ४ ॥ तात वचन मानी करी ला० ॥ ल० ॥ विनय नक्ति धरी स्नेह ॥ ए० ॥ पूछे कुल तव ते कहे ला० ॥ ल० ॥ केहेशे सिंह ते एह ॥ ए० ॥ ॥ ५ ॥ नारी कहे सुणो स्वामीजी ला० ॥ ल० ॥ एणें कस्यो सर्व उपाधि

॥ ए० ॥ पापी नाम शुं उच्चरो ला० ॥ ल० ॥ नामें होये माहा व्याधि
॥ ए० ॥ ६ ॥ तातनी वात सवे कही ला० ॥ ल० ॥ सुणी कहे ताम कु
र ॥ ए० ॥ शुं एहवो ए खल अछे ला० ॥ल० ॥ में तो कस्यो सत्कार ॥
॥ ७ ॥ ए केम एहवुं आचरे ॥ ला० ॥ ल० ॥ त्यजवो दूरथी तेह ॥ए
एम चिंती कहे नारीनें ॥ ला० ॥ ल० ॥ सांजलो कहुं ते जेह ॥ए० ॥
औषधी ल्यो ए मुजथकी ला० ॥ल० ॥ पूतली शिर आरोप ॥ ए० ॥ जे
न माने ते पूछियें ला० ॥ ल० ॥ ते नवि करशे लोप ॥ ए० ॥ ए ॥ अ
त अनागत सहु कहे ला०॥ल०॥सांजली अचरिज थाय ॥ए०॥ औषधी
६ तातनें ला० ॥ ल० ॥ पासें आवी सुखसाय ॥ ए० ॥ १० ॥ सवे स
जोतां थकां ला० ॥ ल० ॥ शिर औषधि ठवी ताम ॥ ए०॥ पूछे पूतली
हवे ला० ॥ ल० ॥ कुमरनुं कुल नाम ठाम ॥ ए०॥ ११ ॥ मानुषिणी
परें कहे ला० ॥ ल० ॥ विजयपुराधिप राय ॥ए०॥ विजय राय सुत सुंद
ला० ॥ ल० ॥ श्रीजयानंद कहाय ॥ ए० ॥ १२॥ वर क्षत्री कुल उपन्
ला० ॥ल० ॥ गुणनिधि महिमा निधान ॥ ए० ॥ सांजली हरख्या सहु
ना ला० ॥ ल० ॥ चमक्यो सुणी राजान ॥ ए० ॥ १३ ॥ मंगलवाजां वाज
यां ला० ॥ ल० ॥ जय जय जणे नर नार ॥ ए० ॥ मान मूकी नरपति
वे ला० ॥ ल० ॥ आम खमावे कुमार ॥ ए० ॥ १४ ॥ निजपुत्रीनें खम
वतो ला० ॥ ल० ॥ निज अपराध नूपाल ॥ ए० ॥ सहु निज निज
नक गया ला० ॥ ल० ॥ एकदिन सजा विचाल ॥ ए० ॥ १५ ॥ पूछे
त्रीनें नरपति ला० ॥ ल० ॥ कहो शुं ए इंड्जाल ॥ ए० ॥ पूतली बोल
नवि सुणी ला० ॥ ल० ॥ ए अचरिज असराल ॥ ए० ॥ १६ ॥ मंत्री क
ए कुमरना ला० ॥ ल० ॥ जाग्यथी औषधि पाम ॥ ए० ॥ देव पेसे ते
लथकी ला० ॥ ल०॥ पूतली बोले आम ॥ ए० ॥१७॥ तो पण जो संश
होये ला० ॥ ल० ॥ तो शतबुद्धि प्रधान ॥ ए० ॥ बुद्धिचंड सुत तेहन
ला० ॥ल० ॥ द्विज बुद्धि असमान ॥ ए० ॥ १८॥ ज्योतिष प्रमुख जाणे
घणुं ला० ॥ ल० ॥ निपुण नें तुम जक्तिवंत ॥ ए० ॥ विजयपुरें तस मोक
ली ला० ॥ ल० ॥ निर्णय कीजें महंत ॥ ए० ॥ १९॥ सांजली नृप हर्षि
त थयो ला० ॥ ल० ॥ शीखवी मोकल्यो तास ॥ ए० ॥ नवमे दिन फरी
आववुं ला० ॥ ल० ॥ करिय प्रतिज्ञा खास ॥ ए० ॥ २० ॥ सात पुरुषशुं

चालीयो ला० ॥ ल० ॥ करनें वेगा वेगवंत ॥ ए० ॥ शो योजन उपर रह्युं ला० ॥ ल०॥ विजयपुरें पोहोचंत ॥ ए० ॥ २१ ॥ वेष निमित्तियानो करी ला० ॥ ल० ॥ पुस्तक राखी पास ॥ ए० ॥ प्रतिहार राय आणायकी ला० ॥ ल० ॥ पेसवा दीयो तास ॥ए०॥ २२ ॥ छही छघ खंमनां ला०॥ ल० ॥ पद्मविजय कही ढाल ॥ ए० ॥ निमित्तियो विस्मय लह्यो ला० ॥ ल० ॥ देखी सना विशाल ॥ए०॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सौधर्मा सरिखी सना, स्फटिक नीत अति फार ॥ रत्नथरा रत्नीयामणी, मनगमती मनोहार ॥ १ ॥ वेटा बांधव वेठुं तिहां, सेनानी सामंत ॥ शेठ मंत्रीश्वर सामटा, मल्लीया बहु माहंत ॥ २ ॥ सोहे मणि सिंहासणे, पायक सेवे पाय ॥ इंद्र समा अवनीपति, सुर जेम सर्व सखाय ॥३ ॥ आयुधनें अलंकारसुं, अंगरक्षक अनिराम ॥ ऊर्ध्व आयुधथी उद्यमी, करे रक्षा नृप काम ॥ ४ ॥ सौधर्मनें ईशान सम, चामर ढलके चार ॥ नाना देशथी नवनवां, प्राभृत आवे अपार ॥ ५ ॥ छत्र शिरें छाजे घणुं, राय तणा युवराय ॥ जयने विजयनुं जोडलुं, शशि सूरय समजाय ॥ ६ ॥ आशीर्वाद देई इश्यो,सर्वज्ञ आपो सिद्धि ॥ नव ग्रह सुख द्यो नवनवां,वली विशेषें वृद्धि ॥ ७ ॥ यतः ॥ सर्वज्ञः शिवमातनोतु सविता, चारोग्यमिंदुः श्रियं ॥ नौमः शत्रुजयं बुधश्चविशदं बोधं थियं गीःपतिः॥ सौनाग्यं नृगुजः शनिश्चचिरतां,राहुः प्रतापंश्च यं,केतुः कीर्त्तितती: सुखानि च गुरुस्तुभ्यं सदा नूपते ॥१॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्रथम जिनेसर पूजवा ॥ ए देशी ॥

॥ नूतंझार्ये आपतो ॥ साजन महारा ॥ वेसवा आसन ताम हो ॥ वेगो निज परिवारसुं ॥सा०॥ पूछे तव धरा स्वामि हो ॥१॥ नलें नलें आया तुमें, अम मन नाया तुमें, पंमित राया तुमें प्रीछियें ॥ साजन माहारा नांजो अम्ह संदेह हो ॥ ए आंकणी ॥ किहांना वासी किहांथी आवीया ॥ सा०॥ जावुं किहां कहो तेह हो ॥ शुं शुं जाणो शास्त्रथी ॥ सा० ॥ अम मन पूछवुं एह हो ॥न०॥२॥ विप्र कहे सुणो राजीया ॥सा०॥ वसियें सुरंगपुर गाम हो ॥ देश जोतां आव्या इहां ॥ सा० ॥ निरखवा तुमचुं गाम हो ॥ न० ॥३॥ नयन कृतारथ अम थयां ॥ सा० ॥ दीठो तुम देदार हो ॥ जाणुं अष्टांग निमित्त वलें ॥ सा० ॥ त्रण काल सुविचार हो ॥ न० ॥ ४ ॥ फल मूकी

तस यागलें ॥सा०॥ अतिशय करी बहुमान हो ॥ वे त्रण प्रश्न पूछी
॥ सा० ॥ पूछे ते तत्त्वविज्ञान हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ देहमात्रथी निन्न
॥ सा० ॥ दोय अमें सुत दोय हो ॥ सिंहसार ठे प्रथमनें ॥ सा० ॥ श्री
यानंद बीजो होय हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ पहेलो अन्यायकारी घणो ॥ सा०
काढी मूक्यो अमें वास हो ॥ डुर्गंध मल अंगें उपज्यो ॥ सा०॥ केम नवि
जीवें तास हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ बीजो निमित्तिये नांखीयो ॥ सा० ॥ रा
योग्य गुणवंत हो ॥ सहु जननें घणुं वालहो ॥ सा० ॥ ॥ जीवथी अ
क कहंत हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ कल्पवृक्ष अंकूर ज्युं ॥ सा० ॥ राखीयें
अपार हो ॥ पण कूड कपटथी नाइनें ॥ सा० ॥ लेई गयो सिंहसार हो
॥ ज० ॥ ९॥ ते पण सरल हृदयथकी ॥ सा० ॥ वगर कहे तेह साथ
॥ चाल्यो खोल करी घणी ॥ सा० ॥ पण आव्यो नवि हाथ हो ॥ ज०
॥१०॥ विशालपुरें तेह सांनव्या ॥ सा० ॥ करता कला अन्यास हो ॥
ल्या अमें सहजथी ॥सा०॥ तिहांथी गया कोइ वास हो ॥ ज० ॥ ११
खबर न लाधी तेहनी ॥ सा० ॥ काम नहीं सिंहसार हो ॥ श्रीजयान
जडयो नही ॥ सा० ॥ जेम समुद्रं रत्नसार हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ तेणें अ
डुःखीया बहु थया ॥ सा० ॥ निमित्त प्रमुख जोइ जाण हो ॥ मिलन अ
हायें जीवियें ॥ सा० ॥ सास मात्र धरुं प्राण हो ॥ज०॥१३॥ निमित्त
कुनने सपननी ॥सा०॥ अंग फुरण वली जेह हो ॥ देव उपासनथी कर
॥ सा० ॥ क्षेम प्रमुख होये तेह हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ आव्यो नही घर ए
ली ॥सा०॥ शुद्धि मात्र नवि लह हो ॥ आवे तो राज्य यापी अमें ॥सा०
तपोवन दृष्टिबद्द हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ सायें नीकलवा कारणें ॥ सा०
राज्य लीये नवि नाय हो ॥ तप वय जाय अमारडुं ॥ सा० ॥ तेणें अ
मन खेदाय हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ हय गय रय गयां वाल्हुडे ॥सा० ॥ इ
कुटुंब परिवार हो ॥ पण नरनव नवि वाल्हुडे ॥सा०॥ तेणें विनति अवध
र हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ जीवे ने के नही ते कहो ॥सा०॥ किहां ने ते म
शे केम हो ॥ मलशे केवारें ते कहो ॥सा०॥ आणी अम पर प्रेम हो
॥ज०॥१८॥एम कही पुत्र वियोगथी ॥सा०॥रुदन करे नरराय हो ॥ द
पजर जलयोगथी ॥ सा० ॥ जेणी परें धूम वमाय हो ॥ ज० ॥ १९ ॥
चइबुद्धि आमेंबर करी ॥सा०॥ मांमी लगन धरी ध्यान हो ॥ कहे नृपनें

खेद कां करो ॥ सा० ॥ पुत्रवियोग चित्त आण हो ॥ न० ॥ २० ॥ पुत्र सुखी छे तुम तणो ॥सा० ॥ जाणुं लगन विन्नाण हो ॥ चोथाना स्वामीना योगथी ॥ सा० ॥ सुख पामे अप्रमाण हो ॥न०॥२१ ॥ दशमपतिनी दृष्टि छे ॥सा०॥ जोगवे राज्य महंत हो ॥ वली तेम सप्तम पति देखे ॥सा०॥ तेम त्रण ग्रह देखंत हो ॥न०॥२२॥ नरपति पुत्री त्रणनो ॥ सा० ॥ ए जोगें नरतार हो ॥ सांजली नृप आणंदियो ॥ सा० ॥ पूछे वलीय विचार हो ॥ न० ॥ २३ ॥ कहो किहां छे तव निमित्तियो ॥ सा० ॥ मेषादिक गणी राशि हो ॥ होठ फरकावी बोलीयो ॥सा० ॥ लखमीपुर वसे वास हो ॥ ॥ न०॥२४ ॥ पूतलीनें नृप वयण ते ॥सा०॥ मलियो एकाकार हो ॥ वर्ण संस्थाननें वय कहे ॥ सा० ॥ सांजली हर्ष अपार हो ॥ न० ॥ २५ ॥ दो य जाई तव वरसता ॥ सा० ॥ कनकमणि अलंकार हो ॥ वस्त्र तथा फल फूलनी ॥सा० ॥ वृष्टि करी श्रीकार हो ॥ न० ॥ २६ ॥छठे खंमें सातमी ॥ ॥ सा० ॥ श्रीजयानंदनें रास हो ॥ पद्मविजयें कही ढाल ए ॥सा०॥ सुण तां लील विलास हो ॥ न० ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ २२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विसर्ज्यो रीतिशुं, चंद्रबुद्धि चल्यो जाय ॥ महीपतिनी ते मार्गमां, श्लाघा करे समवाय ॥ १ ॥ अहो उदारता एहनी, अहो अम्ह जाग्य अ मान ॥ अद्भुत वचन कला इसी, दाखवी जेणें लह्युं दान ॥ २ ॥ लखमी पुरें लीलापकी, श्रीपतिराय सकाश ॥ नवमे दिन आवी नमे, पूछे नृप तस पास ॥ ३ ॥ हर्षवंत हौंशे करी, वारू कह्युं वृत्तांत ॥ दानजिन्न जिन्न दाखवे, धनद परें धीवंत ॥ ४ ॥ बाप तिस्या बेटा होये, एह वात खरी अत्र ॥ कुमर दानमांहें किश्युं, चित्रकारी जे चरित्र ॥ ५ ॥ कहे हांसीयी केई जना, ए सघलो आरंज ॥ हेतें चित्रबुद्धि हतो, एहमां नांहि अचंज ॥६॥

॥ ढाल आवमी ॥ साहेबजी श्रीसिद्धाचल जेटीयें हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबजी॥ खेद आणंद विस्मय घणो होजी,बहु रस मय थयुं चित्त साहेबजी ॥ साहेबजी ॥ जूपति नवि बोली शके होजी,एणे समे सुणो शुन्न रीत सा० ॥१ ॥सा०॥ पुण्यवंत एम परखीयें होजी ॥ ए आंकणी ॥ सा०॥ श्रीजयानंदनें तेडवा होजी, पुरुष आव्या परधान सा० ॥ सा० ॥ श्रीजय रायें मोकल्या होजी, वना गोपुर थान सा० ॥ २ ॥ सा०॥ पुण्य०॥ सा०॥

एम पोजीये नृप वीनव्यो होजी, नृप कहे मोकल वेग सा०॥ सा०॥ वेत्र सहित ते आविया होजी, वस्त्र आजरणें सतेग सा० ॥ ३॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ नृप नमी उचितासनें होजी, बेठा तव नरराय ॥ सा० ॥ सा० ॥ क्षेम कुशल पूछे तदा होजी, प्रीति घणी परखाय सा०॥ ४ ॥ सा०॥ पु०॥ सा० ॥ ते नृपनें एम विनवे होजी, तुम मित्र नृप जुवराय ॥ सा०॥ सा०॥ कुशली पुरजनशुं अछे होजी, वरते छे सुख साय सा० ॥ ५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ तेहुयें एम कहेवराविवुं होजी, सांजलो स्नेह रसाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ श्रीजयानंद अम जीव छे होजी, कल्पवृक्षनी माल सा०॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ पु०॥ सा० ॥ तुमें उन्नति एहनी करी होजी, निमित्तियानें वयण सा० ॥ सा० ॥ जाएयुं अमें नली रीतिशुं होजी, तुमें अमचा खरा सयण सा० ॥ ७ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ चंद सूरय लगें थिर करी होजी, अम्ह कुलशुं तुम प्रीति सा०॥ सा०॥ मोकलो अम पासें हवे होजी, तो मानुं दीव जीवित सा० ॥ ८ ॥ सा० ॥पु० ॥ सा० ॥ अमें वियोगें तपाड्या होजी, शीतल करो तुमें भ्रात सा० ॥ सा० ॥ नहीं उपकार वीतारीयें होजी, त्रीजा भ्रात अम ख्यात सा० ॥ ए ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ अम्ह सम काम कहेजो सदा होजी, सांजली कहे नूपाल सा० ॥ सा० ॥ तुम वच अमृत अभिनवुं होजी, पीतां थाउं तृपाल सा० ॥ १० ॥सा०॥ ॥ पु० ॥ सा० ॥ तुमें कह्युं ते रूडुं थशे होजी, रयण अमूलक सार सा० ॥ सा० ॥ जेटएुं लेवे नरपति होजी, जे तेणें कीधुं उदार सा० ॥ ११ ॥ ॥सा०॥पु०॥सा०॥ तास उतारो करावियो होजी,मोकल्या कुंअर पास॥सा० ॥ सा० ॥ प्रतिहारें जणाव्युं सवे होजी, कुमरनें धरी उल्लास सा०॥१२॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ प्रणमे ते नर जेटले होजी, कुमर सजामां ताम सा० ॥ सा० ॥ उजा थई मलिया सहु होजी, जिन्न जिन्न उलखी नाम सा० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ हर्ष तणा आंसु जरे होजी,आसनें वेशीने वात सा० ॥ सा० ॥ पितृ पितृभ्राता जणी होजी, पूछे कुशल सुखशात सा० ॥ १४ ॥ सा० ॥पु० ॥ सा० ॥ साते सुख छे तेहनें होजी, पण एक तुम वियोग सा० ॥ सा० ॥ ते पीडे नृपनें घणुं होजी, संजारे बहु लोग सा० ॥ १५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ जाणजो पत्रथकी सहु होजी, एम कही आपे लेख सा० ॥ सा० ॥ कुमर चढावी मस्तकें होजी,

वांचे हर्ष विशेष सा० ॥ १६ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ स्वस्तिश्री नमी दे वनें होजी, जे सर्वज्ञ महेश सा० ॥ सा० ॥ होशें विजय पाटणपकी हो जी, श्रीजयनाम नरेश सा० ॥१७॥ सा०॥ पु० ॥ सा० ॥ श्रीविजयनाई स हु लिख्यो होजी, लखमी पुरवर गाम सा० ॥सा० ॥ मंदिर मानिये सोहुं होजी, तिहां श्रीजयानंद नाम सा० ॥ १८ ॥ सा० ॥ पु० ॥सा० ॥ तेह कुमरनें स्नेहथी होजी, हर्षे आलिंगन देय सा० ॥ सा० ॥ जांखुं खेम कुश ल अहे होजी, तुम खेम कुशलनुं ध्येय ॥ सा० ॥१९ ॥ सा०॥ पु० ॥सा०॥ समाचार एक बीजजो होजी, विगर जणावे अम सा० ॥ सा०॥ सिंहसार साथे गया होजी, करवुं न घटे तुम सा० ॥ २० ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ खलसंग करवो नवि घटे होजी, सज्जननें दुःखदाय सा० ॥ सा० ॥ राज्य नो जीवित तुं अहे होजी, खेद घणो अम थाय सा० ॥ २१ ॥ सा०॥पु०॥ ॥ सा० ॥ संपदा तुं पाम्यो घणी होजी, अम संजारे न केम सा० ॥ सा० ॥ जगत्नो एह स्वनाव हे होजी, पण तुज न घटे एम सा० ॥ २२ ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ सा० ॥ महोटा मोहोटा जहो होजी, अधिक पुष्टि करे तात सा०॥ ॥ सा० ॥ अधिक उदय जहो चंड्मा होजी, समुड पुष्ट करे जात सा० ॥ ॥ २३ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ कष्टें दिवस अमें काढीयें होजी, तुज विर हो दुःखदाय सा० ॥ सा० ॥ राज्यधुरा नवि वही शकुं होजी. गलियो बल द जेम गाय सा० ॥ २४ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ सहाय करो आवी हवे हो जी, जो होय अह्म परें जक्ति सा० ॥ सा० ॥ तो महा नृपनपरें तुमें हो जी, देखाडो निज शक्ति सा० ॥ २५ ॥ सा० ॥ पु० ॥ सा० ॥ वांची पत्रनें आवजो होजी, पाणी पीजो अम देख सा० ॥ सा० ॥ ए लिख्युं सहस्र गुणुं जाण जो होजी, हुं घणुं लखीयें विशेष सा० ॥ २६ ॥ सा०॥ पु०॥ ॥ सा० ॥ ठठे खंमें आठमी होजी, पद्मविजय कही ढाल सा० ॥ सा० ॥ श्रीजयानंदना रासमां होजी,सुणतां मंगलमाल सा०॥२७॥सा०॥पु०॥२५३॥

॥ दोहा ॥

॥ वांची पत्र विवेकह्युं. चिंतवे चित्त मजार ॥ तातनें दुःख देवा तणुं, कारण थयो कुमार ॥ १ ॥ वाल अचेतन वृक्ष ते. पत्र पल्लव पथराय ॥ पंथी रविकर तापिया,तपनानें सुखदाय ॥२॥ संपदा जहो सविता तणी, सुखकर न थया सहू ॥ दुःख वियोगनुं दाखियुं, रह्यो नहुं निज रहू ॥

॥ ३ ॥ जइ सुख करियें जोपशुं, एणी पेरें करो आलोच ॥ स्नान जोजन सायें करे,वर पुरुषाशुं विकोच ॥४॥ वेत्रीयें वात सवे वदी,नरपतिनें निर्धार ॥ राजा चिंते रागथी,किमहिक जाशे कुमार ॥५॥ मुज नरें कही ते सहु मला, तेडे पितरियो तात ॥ रहेशे नहीं मुज राज्यनो, वृद्धि कारक विख्यात ॥६॥

॥ ढाल नवमी ॥ सासू पूछे रे वहुअर वात,माला किहां छे रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा चिंते सजनके वयरी,वाला महारा ॥ कोण जाणे थशे केहवो रे ॥ सोनागी प्रियदर्शन सुखकर, जगमां न जडे एहवो रे ॥ १ ॥ कहो केम करीयें रे, जेम तेम करीनें एह,समजावी धरीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ चिंतामणि मुज हाथें चढीयो, वा० ॥ में मूर्खें ते हाखो रे ॥ अज्ञानें अमृत ढांमीनें, प्रतिकूल कखो न विचाखो रे ॥ क० ॥ २ ॥ महाप्रनावी विश्वमां जूषण,वा० ॥ पुरुष रतन नवि जाण्यो रे ॥ पूतली जेह अचेतन ते पण, सवती मन नवि आण्यो रे ॥ क०॥३॥ पुत्री विधवा आपद न गणी, वा०॥ राज्यविरोध अनेक रे ॥ पुरुष चिंतामणि हाणी में न गणी, सवलो गयो विवेक रे॥ क० ॥ ४ ॥ एम चिंतवतां हृदय संवटथी, वा० ॥ मूर्छा पाम्यो राय रे ॥ पडियो पृथिवीयें सिंहासनथी, मंत्री प्रमुख अकुलाय रे ॥ क०॥ ॥ ५ ॥ शीतल उपचारें थयो साजो, वा० ॥ पूछे सहुशुं एह रे ॥ नरपति निज कुकर्म ते निंदे, परषदमां कहे तेह रे ॥ क०॥ ६ ॥ सुणो सहु क्रूर हुं कुकर्म करतां, वा० ॥ अविवेकी अज्ञान रे ॥ कृतघ्नी मुज सरिखो नहीं जग मां, ए सम नहीं परधान रे ॥क० ॥ ७ ॥ मुज अपराधीनी नहीं शुद्धि, वा० ॥ मरण विना कोइ रीतें रे ॥ खड्ग काढीनें मरण करेवा, वा०॥ मूके निज गले नीतें रे ॥ क० ॥ ८ ॥ सचिवें फूंटावी खड्ग ते लीधुं,वा० ॥ शत वृद्धि तव बोले रे ॥ शुं असमंजस राजन मांमयुं,कोइ नहीं तुम तोलें रे॥ क० ॥ ए ॥ न्यायी धर्म उन्नति तुमें करता, वा० ॥ विश्वतणो आधार रे ॥ नोलाशो मरवा केम इछो, कर्म तणा सहु प्रकार रे ॥ १० ॥ यतः ॥ कस्य भ्राम्यति नो बुद्धिः,कर्मणा को न खंमितः ॥ नामुंचत् भ्रातरं हंतुं, चक्रि जरताधिपः ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ शास्त्र जाण पण करमें मुंने, वा०॥ निंदा प्रशंसा थाय रे ॥ पापनी शुद्धि मरणें न होये, तपथी कर्म खपि जाय रे ॥ क० ॥ ११ ॥ आत्मप्रदेशें कर्म रह्युं ले, वा० ॥ मरण शरीर विनाश रे ॥ पाप टालो प्रायश्चित्त आदरी, जाई गुरुनें पास रे ॥ क० १२ ॥ जीवतां ए

सवि वात निपजाये, वा० ॥ तेथें चिरंजीवो स्वामी रे ॥ एम कहुं पण नाना विकल्प, न करे नोजन पामी रे ॥ क० ॥१३॥ ते सांजलीनें पुत्रीयो आवी, वा० ॥ प्रणमी एणीपरें जासे रे ॥ न घटे तात ए तुमनें करवुं,दोष नहीं तुम पासें रे ॥ क० ॥१४॥ ए कारय सवि खलसंगतिनुं, वा०॥ नित्य वहे गिरिमां पाणी रे ॥ कविन हतो पण खाडा पाडे,ए केम वात न जाणो रे ॥ क० ॥ १५ ॥ नीचुं वदन करी कहे राजा वा० ॥ दूर रहीनें बोलो रे ॥ मुख न देखाडी शकीयें तुमनें,केम मुजनें तुमें जोलो रे ॥क० ॥१६॥ में तुम विधवापणुं उवेखी, वा० ॥ काम कर्युं में चूंकुं रे ॥ तुमनें जमाइनें मुखमुं देखाडुं, कहो में करुं शुं रूडुं रे ॥क०॥ १७ ॥ कुमरी कहे श्यो खेद करो गो, वा०॥ तुमें धन खरची अमनें रे ॥ कला जणावी निपुण करी घणुं, ए शोना सवि तमनें रे ॥ क० ॥ १८ ॥ अमची प्रतिज्ञानो जे सागर वा० ॥ विश्वोत्तम ए टाली रे ॥ कोण पूरत ए वातनो मनमां,हरख करो हो संना ली रे ॥ क० ॥ १९॥ वोरु कवोरु होये पण मावित्र, वा० ॥ हीणां न होये क्यारें रे ॥ ते विपरीत करतां नृप कहे, संतोष्यो सुप्रकारें रे ॥क०॥२०॥ पण सालुं हुं जमाईथी अधिको, वा० ॥ सांजली गइ पति पासें रे ॥ वात सुणावी मोकले पतिने,ते पण आवे उल्लासें रे ॥क०॥ २१ ॥ लज्जानम्र नृपति नें प्रणमी वा०॥ कहे सुख एणी परें वाणी रे ॥ कन्या त्रणनें राज्य दीधुं तुमें, सागर सम तुमें प्राणी रे ॥ क० ॥ २२ ॥ एक खलित खलना प्रेखाथी, वा० ॥ विधिवशथी थयुं एहवुं रे ॥ व्रांतिथकी कहो कोण न चूके,तो दुःख क रवुं केहवुं रे ॥क०॥ २३ ॥ पश्चात्तापें कर्म खपे चक्री,वा० ॥ जेम बाहुबली जरत रे ॥ घात उद्यम ते पश्चात्तापें, कर्म विजय थया तरत रे ॥क०॥२४ ॥ म करो खेद नें काम करो निज,वा०॥ स्वस्थ तुमें जव थाउ रे ॥ [illegible] रय थाये तव सघली. एह विचार मत लाउ रे ॥क०॥ २५॥ [illegible] सुणी कहे नृपति, वा० ॥ तुम अमृत सम वाणी रे ॥ [illegible] ताप गयो मुज, तुम सम को नहीं नाणी रे ॥ क० ॥ २६ ॥ [illegible] तुं हुं अविवेकी, वा० ॥ जगमां जोडी न लाधे रे ॥ [illegible] हुं हुं,ए श्रम हृदयमां वाधे रे ॥ क० ॥ २७॥ कुमरें [illegible] वा०॥ निजघर गया कुमार रे ॥ छठे खंडे नवमी ढालें, [illegible] पकार रे ॥ क० ॥ २८ ॥ सर्वगाथा ॥ २८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अशन करे अण इछतो,करे न राज्यनुं काम ॥ पाप शुद्धि करवा प्र
थम, धारीनें रह्यो धाम ॥ १ ॥ सिंह मारवा सुनटनें, आण करे
अवनीश ॥ चोर परें खर चाढीनें, राखशो मां करी रीश ॥ २ ॥ तेमज क
रे ते तुरतमां, जाण्युं कुमरें जाम ॥ तव चिंते दुःख ताततें, उपजशे बहु
आम ॥ ३ ॥ कही प्रधान मुखें कुमर, मूकावे महानाग ॥ प्रेरणा करे प्र
धान तव, लही अवसरनो लाग ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ अम घर मांमव सीअलो ए ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर पूछे तव रायनें ए, राय कहे सुणो वात ॥ साहेब सुणो सु
खकरु ए ॥ प्राण अमारा लेइ चलो ए,तुम विण ते न रहात ॥सा०॥१॥ ल
ह्या उद्वेग मुज पापथी रे, मानुं न रहे मुज पास ॥ सा० ॥ कुमर कहे
तव वीकथी रे, करवा नूप उल्लास ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमथी अधिक न तात
छे ए, रहेशुं सुख आवास ॥सा०॥ करिय प्रणाम घरें गयो रे, चिंतवे ज्ञान
प्रकाश ॥ सा० ॥ ३ ॥ जाणुं जो नृप उवेखीनें रे, तो करशे निजघात ॥
॥सा०॥ राज्यनो इछक पण नथी ए, एम नजरें आयात ॥ सा० ॥ ४ ॥
जीवे मुज गुणवातथी ए, तेणें नवि मूकी जवाय ॥ सा०॥ सिंह अर्थी छे
राज्यनो ए, तेणें ए करे छे उपाय ॥सा०॥५॥ तात पदें पुत्रज रहे ए, ए
हमां कांइ न विचार ॥ सा० ॥ संतोषाशे खल वली ए, एम चिंतवी सुप्र
कार ॥सा०॥ ६ ॥ सिंहनें कहे नाई सांनलो ए, तुमें जाउ निजधाम ॥
॥ सा० ॥ राज्य पितानुं नोगवो ए, माहारे नहीं राज्यकाम ॥ सा० ॥७॥
हुंतो रहेशुं तेणे इहां ए,एम करी मोकले तास ॥ सा० ॥ युक्ति करी सम
जावीया ए, तेह प्रधाननें खास ॥सा०॥८॥ पत्र लखे निज तातनें ए,आपे
प्रधाननें एह ॥ सा० ॥ सत्कारी विसर्जिया ए, सिंह संघातें तेह ॥सा० ॥
॥ ए ॥ विजयपत्तन पोहोता वली ए, रायनें करे परणाम ॥ सा० ॥ हे
तु नवि आव्या तणो ए, नांखे विस्तारें ताम ॥ सा० ॥ १० ॥श्रीपति आ
ग्रह सवि कह्यो ए, कुमरनां वयण रसाल ॥सा० ॥ सिंहसारनें वोलावता
ए, योग्य वयणें नृपाल ॥ सा०॥११ ॥ आपे प्रधान कागल प्रत्यें रे, वांच
तां हर्ष न माय ॥सा०॥ स्वस्तिश्री जिनवर नमी ए, विजयपत्तन वर ठाय ॥
सा० ॥ १२ ॥ पूज्य आराध्य काका प्रत्यें ए, तेम श्रीविजय निज तात

॥ सा० ॥ लखमीपुरवरथी लखे ए. श्रीजयानंद तुम जात ॥सा०॥१३॥ प्रणमी साष्टांगें जक्तिथी ए, अंजलि करी शिर नाय ॥सा०॥ विधियें विनयथकी नमी ए. विनति करे चित्त लाय ॥सा०॥१४॥ पूज्य प्रसादें कुशल अबे ए, शुन चिंतन अनुनाव ॥सा०॥ पूज्यप्रसाद पत्र दीजीयें ए, जेम उल्लसे मुज नाव ॥ सा० ॥ १५ ॥ कार्य सुणो समाचारनुं ए,तापित तात वियोग ॥ सा० ॥ अमृत सींचे जीवियो ए, जे तुम पत्र संयोग ॥ सा० ॥ १६ ॥ जीवीशुं हवे आगलें ए, ते तुमचे सुपसाय ॥ सा० ॥ मुज वियोग न सही शके ए, ते समजावी राय ॥ सा०॥ १७॥ थोडादिन मांहे आवशुं ए,प्रणमशुं तातना पाय ॥सा०॥ ध्यान करुं नित्य तातनुं ए, लीलामां दिन जाय ॥ सा० ॥१८॥ सिंहसारनें मोकल्यो ए, ते स्थानक उदेश ॥सा०॥ शीखामण नित्य कहावजो ए,शिर धरुं तुम आदेश ॥सा०॥१९॥ विज्ञप्तिनें आव्या नहीं ए, हर्ष खेद घणो थाय ॥सा०॥ परिकरनें दोय बांधवा ए, सुख दुःख मिश्रित थाय ॥सा०॥२०॥ पूठथकी तेह पुरुष कहे ए, श्रीपद्मरथ नूपाल ॥ सा० ॥ पुत्री पाणीग्रहणथी ए, मांमी कहे सुरसाल ॥ सा० ॥ २१ ॥ चरित्र कुमारनुं सांजली ए,(दुःखदायी सिंहसार,) पर्षदा तेम दोय राय ॥ सा० ॥ चित्र आनंदमयी थइ रे,कुमर प्रशंस कराय ॥ सा० ॥ २२॥ सिंहसार निंदे सहु ए,हवे नरपति देइ मान ॥सा०॥ विसर्ज्या सिंहसारशुं ए,सहु गया निज निज थान ॥सा०॥२३॥ दशमी ढाल खंममां ए,पद्मविजय कही ढाल ॥सा० ॥ श्रीजयानंदना रासमां ए,सुणतां मंगलमाल ॥सा०॥२४॥ सर्वगाथा॥३१५॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन जयराजा इश्युं, चिंते चित्त मकार ॥ नाइनें राज्य नावे नहीं, कहो नवि आव्यो कुमार ॥ १ ॥ अथवा निज करें अरजतो, राज्य लखमी रणमांहि ॥ आवे केम ते इहां कणे, आदर धरी उत्साहि ॥ २ ॥ परअर्जित नवि मांस पण,सिंह लीये ज्युं शीयाल ॥ वय ते तप विण व्यतिक्रमे, आ नव जाये आल ॥ ३ ॥ एह राज्यनो ए धणी, निमित्तिये निरधार ॥ नाख्यो बे ते जली परें,वितथ न थाय किवार ॥ ४॥ आखे पराक्रम एहनुं, एहज अरथ अवल ॥ होंशे मोकल्यो सिंहनें,नृप धावाने नवल ॥ ॥ ५ ॥ आपी आपद बहु एणें, महोटी जे मरणंत ॥ पापी दूरें पेखीयो, दुःखदायी जे डुरंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ गो वाछरूआं चारती, आहिरनो अवतार ॥ रूडुं गोकलीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ आपुं राज्य हुं एहनें, जाइनें मूकुं पास ॥ एहज रूडुं ठे ॥ शि देशे एहनें, मार्गे चलावशे तास ॥ ए० ॥ १ ॥ जो परजानें पीडशे,तो वि सहेशे कुमार ॥ ए० ॥ एम चिंतवीनें थापीयो,राज्यें ते सिंहसार ॥ए ॥ २ ॥ जाईने प्रार्थना करी, राख्या घरमां तेह ॥ ए०॥ सिंह पण आग्र करी, काको राख्या गेह ॥ ए० ॥ ३॥ पुत्रमिलन आशयें रह्या, हवे श्र जय राजान ॥ए०॥ महाजट गुरु पासें करे, तापस व्रत आदान ॥ ए० ॥ ४ ॥ नाम रतनजट आपियुं, हवे श्रीपति जे राय ॥ ए० ॥ राज्य चिं कांइ नवि करे, धर्में काल गमाय ॥ ए०॥ ५ ॥ वनपालक हवे एकदा, क आवी राजान ॥ ए० ॥ धर्मप्रज सूरिवरू, पाउ धारीया उद्यान ॥ ए० ॥६ पूर्वें वैरागी हता, वली सांजली एह वात ॥ ए० ॥ हृयमांहे साकर परें, नमां हर्ष न मात ॥ ए० ॥ ७ ॥ दान आपी संतोषियो, वेगे गजवर ध ॥ ए० ॥ कुमर सामंत मत्री मुखा, छत्र चामर संबंध ॥ ए०॥ ८ ॥ अं उरछुं आवीया, पंचाभिगम प्रकार ॥ ए० ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइनें, गुरु करे नमस्कार ॥ ए० ॥ ए ॥ धर्मलाज गुरुयें दियो, बेसे यथोचित ठाय ए० ॥ धर्मदेशना गुरु दीये, धर्म सदा सुखदाय ॥ ए० ॥ १० ॥ आप नासे वेगली, शिवसुख करतल आय ॥ ए०॥ वाह्य अंतर अरि मित्र जे जवमां नवि उलखाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ मोह अंतर शत्रु अठे, वाह्य ज कादिक होय ॥ए०॥ तेह तज्यां सुख उपजे,तेणें तजीयें सहु कोय ॥ए०॥१२ संवेगादिक मित्र जे,अंतरगुरु ते वाह्य ॥ए०॥ इह जव परजव सुख दीये,एह जाणो ग्राह्य ॥ ए० ॥ १३ ॥ इत्यादिक सुणी देशना, अवधिज्ञानी गुरु प स ॥ ए०॥ प्रतिबोध्या बहु जव्यनें, पाम्या जिनधर्म वास ॥ ए०॥ १४ केइ श्रावक केइ संयमी,केइक समकितवंत ॥ ए० ॥ केइ कंदादिक अभिग्रही जद्रकर्मे गुणवंत ॥ ए० ॥ १५ ॥ नृप अति संवेगीयो, चित्तमां करे वि चार ॥ए०॥ वाह्य अरि मित्रन उलख्या, अंतर वात अपार ॥ए०॥१६ वाह्य अंतर परिग्रह प्रत्यें, तेणें ठांमी जंजाल ॥ ए० ॥ जैन दीक्षा अंग करुं, अंतरशत्रुनें टाल ॥ ए० ॥ १७ ॥ एम चिंती गुरुनें कहे, लेउं दीक्ष तुम पास ॥ ए० ॥ पुत्र अजावें कुमरनें, थापे राज्य उल्लास ॥ ए०॥१८

दीक्षा लेवरावे तदा, उत्सव करी अपार ॥ ए० ॥ अमारि पढा महीना लगें, संघपूजा करी सार ॥ ए० ॥ १९ ॥ अठाई महोत्सव करे,देइ दीननें दान ॥ ए० ॥ सूरि वचन वैराग्यनां, सांजलीयां जेणें कान ॥ ए० ॥ २० ॥ पांचशें राजकुमर तदा, तेम राणी शत पांच ॥ ए० ॥ निर्मम राज्य विषय त्यजी, मोह तणो परपंच ॥ ए०॥ २१ ॥ स्नानादिक मंगल करी, वस्त्र आनरण अनेक ॥ ए० ॥ चामर छत्र धरावतो, गज बेगे सुविवेक ॥ ए०॥२२॥ तूर अनेक वाजी जते, अढलक देता दान ॥ ए० ॥ लोक प्रशंस करी जते, आव्या नृप उद्यान ॥ ए० ॥ २३ ॥ मंगल धवल गाई जते, गज रथ नट बहु कोडि ॥ ए० ॥ वंदी विरुद बोली जते, देइ आशीष कर जोडि ॥ ए०॥ ॥ २४ ॥ सरवे लोक खमावीनें, लोच करी गुरुपास ॥ ए० ॥ कहे नवसा यैर तारीयें, करुणानिधि आवास ॥ ए० ॥ २५ ॥ आगम विधिथी दाखीया, देइ तेहनें उपदेश ॥ ए० ॥ किरिया शिक्षा नली परें,शास्त्र नणे सुविशेष ॥ ए० ॥ २६ ॥ नृपनें पणुं स्तवता थका, पोहोता निज निज गेह ॥ ए० ॥ श्रीजयानंद गुण रागीया, मुनि पर धरता नेह ॥ ए० ॥ २७॥ हवे सिद्धांत नणता थका, करता उग्र विहार ॥ ए०॥ तप द्वादश नेदें करे,गीतारथ पद धार ॥ ए० ॥ २८ ॥ योग्य जाणी सूरिपद दीये, परिकर दीधो सर्व ॥ ए०॥ नव्यजीव प्रतिबोधता, विचरे मही निर्गर्व ॥ ए० ॥ २९॥ जिनशासन पर नावता, लब्धि तणो नंमार ॥ ए० ॥ केवलज्ञान लही करी,शिववधू वरिया सार ॥ ए० ॥ ३० ॥ श्रीजयानंदना रासमां, छठे खंमें ढाल ॥ ए० ॥ पद्म कहे अग्यारमी, सुणतां मंगलमाल ॥ ए० ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ ३५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंदनी नृप सवे, सेवा करे सुखदाय ॥ विविध देशनें वश करी, राज्य वधारे राय ॥ १ ॥ जिनमत प्रौढता जगतमां,पुण्यवंत पृथिवीश॥ कर टाले न्यायज करे, दान दिये निश दीश ॥ २॥ प्रजा सुखी तव संपजे, सुर तिम सुरनो स्वामि ॥ तृण समान गणे ते तदा,मद अहंकार उद्दाम ॥३॥

॥ ढाल बारमी ॥ सुगुण सुगुण सोनागी जंबूद्वीपमां होजी ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन एकदिन नृपनें वीनवे होजी, आवीनें वनपाल ॥ मावित्र मावित्र तुमचा उद्यानमां होजी, आव्या वे एणे ताल ॥ ए०॥१॥ सार्थे साथें परिकर पोढलो होजी, सांजली हर्ष न माय ॥ दान दान दीये तस ह

पेखुं होजी, अंगें पुलकित थाय ॥ ए० ॥ २ ॥ चाल्यो चाल्यो नृप पालो थ को होजी,हय गय विण परिवार ॥ उत्सुक उत्सुकतायें टक्या नहीं होजी, गया उद्यान मझार ॥ए०॥३॥ हर्ष हर्ष आंसुयें पखालतो होजी, प्रणमे मा वित्र पाय ॥ देइ देइ आलिंगन चुंबता होजी, आशिष वहु दीये माय ॥ ए० ॥ ४ ॥ आनंद आनंद लहीनें पूछता होजी, खेम प्रश्नादिक वात ॥ रा णी राणी त्रणे जाणी करी होजी,आवी करे प्रणिपात ॥ ए०॥ ५ ॥ वहुरो वहुरो देखी आणंदीयां होजी,आव्यो हवे परिवार ॥ तातनें तातनें गज वेसा रिया होजी, मात सिंहासन धार ॥ ए० ॥ ६ ॥ पोतें पोतें छत्र नृपनें धरे होजी, गौरव करी वहु मान ॥ लाव्या लाव्या नृप निजमंदिरें होजी. वेश विष्टर थान ॥ ए० ॥ ७ ॥ पाठ पाठ पीठें वेशी करी होजी, उत्संगें पद लाय ॥ देखी देखी सभा अति रीजती होजी, सहुनें करे विदाय ॥ ए० ॥ ॥ ८ ॥ पूजा पूजानें स्नान भोजन करे होजी, सायें सहु परिवार ॥ अव सरें अवसरें पूछे तातनें होजी, स्नेह भक्ति अपार ॥ए०॥ए॥ ऋद्धि ऋद्धिनें परिकर थोडले होजी, आववुं केम अकस्मात ॥ आंसु आंसु मिश्र आंखें कहे होजी, सांभल वत्स तुं वात ॥ ए० ॥ १० ॥ राज्य राज्य देइ सिंहसा रनें होजी, भ्राता तापस थाय ॥ थातां थातां तापस मुज वारियो होजी, सिंहे विनय देखाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ भक्ति भक्ति देखावे तेहवी होजी, वीतो केतोक काल ॥ माया मायावीनुं मन नवि लखुं होजी, डष्टनुं मन विक राल ॥ ए० ॥ १२ ॥ एकदिन एकदिन आलोचन मिषें होजी, तेडयो मुज नें एकांत ॥ हुं पण हुं पण विश्वासें गयो होजी, एकज धरी मन खांत ॥ ए०॥ १३ ॥ पूर्वें पूर्वें रचित सामग्रीयें होजी, बांधी बंधन मुज्ज ॥ बंदी बंदी खानें मुज नाखीयो होजी, तिमहिज माता तुज्ज ॥ ए०॥ १४ ॥ महारा म हारा वल्ला नाखीयां होजी,बांधी गुप्तज थान ॥ केइक केइक नाशीनें गया होजी, पामी अवसर तान ॥ ए० ॥ १५ ॥ माहारुं माहारुं घर लूटयुं एणें होजी, निज वश कीधलो देश ॥ चोकी चोकीमांहे हुं रहुं होजी, विवर न लहुं लवलेश ॥ ए० ॥ १६ ॥ परजा परजा वहु मुज रागिणी होजी, जाणी राज्यनो नाश ॥ तेणें ए तेणें ए काम कखुं वृथा होजी, मिथ्या मि थ्या नियास ॥ए०॥१७॥ सेवक सेवक सुरदत्त माहरो होजी,बीजो वीरदत्त नाम ॥ माहरा माहरा भक्तिवंता घणा होजी, नाशी गया कोइ गाम ॥

ए० ॥ १८ ॥ सेवक सेवक पण मुज मित्र ने होजी, नामें नरपति धीर ॥ तेहनें तेहनें घर ते विहुं रह्या होजी, साहस वड गंनीर ॥ ए० ॥ १ए॥ दीधी दीधी सुरंग तिहांथकी होजी, यावत शुचि थान ॥ काजें काजें स ज्जन नर परखीयें होजी कीधी मुज तेणें शान ॥ ए०॥ २० ॥ प्रिया प्रिया सहित मुज काढीयो होजी, लाव्या रात्रियें गेह ॥ स्वामी स्वामीनी नक्ति एम जाणीयें होजी, न गणे प्राणनो नेह ॥ ए० ॥ २१ ॥ पूर्वे पूर्वे सामग्री करी होजी, नाठी आव्या मुज संग ॥ सवें सवें सत्त्व धरी करी होजी, धरता चित्त उमंग ॥ए०॥२२ ॥ धीर धीर शूरवीरशुं चढ्या होजी,कोइक स्था नक पाम ॥ आव्या आव्या संकेतिक नर सहु होजी,पानादिकशुं ते गाम ॥ ए० ॥ २३ ॥ सज्जन सज्जन सपजे माहरा होजी, आव्या अनुक्रमें एथ ॥ स्वजन स्वजन केइक ने शुनिमां होजी, दुःखीया ने हजी तेथ ॥ ए० ॥ २४ ॥ तेहनें तेहनें मूकाववा योग्य तुं होजी, तांनली तेह कुमार ॥ खेद खेद प्रमोद आश्चर्यथी होजी,चिंते चित्त मजार ॥ ए० ॥ २५ ॥ कीधो कीधो उपकार में केटलो होजी,पण डुर्जन सिंहसार ॥ प्राण प्राण बहु वार उगारियें होजी, खल नवि निज निरधार ॥ ए०॥ २६ ॥ यतः ॥ धूमः पयो धरपदं कथमप्यवाप्य, वर्षांबुभिः शमयति ज्वलनस्य तापं॥दैवादवाप्य खल नीचजनःप्रतिष्ठां, प्रायः स्वबंधुजनमेव तिरस्करोति ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ खेद खेद करो शे मुज ढतां होजी,करशुं सर्वनी सार ॥ देशुं देशुं शिक्षा नक्ति ना तिशुं होजी, जे कर्त्ता अपकार ॥ ए० ॥ २७ ॥ करशुं करशुं प्रसाद ते उपरें होजी, जेणें तुम कस्यो उपकार ॥ प्रणे प्रणे सुनट बोलाविया होजी,गुण स्तवे वार वार ॥ए०॥२८॥ स्वामी स्वामी नका तुम सत्त्वनें होजी,वरणवीयें कहो केम ॥ तेहना तेहना कुटुंबनें तेडीनें होजी,करे सत्कार ते एम ॥ए० ॥२ए॥ वस्त्र वस्त्र आनरणादिक घणां होजी,दीये प्रत्येकें तास ॥ देश देश एकेक दिये प्रणनें होजी, ते लह्या हर्ष उल्लास ॥ए०॥३०॥ यतः ॥ सुवर्ण पुष्पां पृथिवीं, मुचिन्वंति नरास्त्रयः॥शूरश्चकृतविद्यश्च,यश्चजानाति सेवितुं॥१॥ ॥ पूर्वढाल ॥ निजवश निजवश देश ते जइ करे होजी,सेवे दोय राजान॥ बीजा बीजा साथें आव्या तेहनें होजी,करता प्रातरशुं दान ॥ए०॥३१॥ ढढे ढढे खंमें बारमी होजी, पद्यें नांखी ए ढाल ॥ सुणजो सुणजो श्रीजयानं दना होजी, रासमां वात रसाल ॥ ए० ॥ ३२ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीखामण सिंहसारनें, श्रीजयानंद सनूर ॥ माणस निज
दूत मोकले दूर ॥ १ ॥ विसंजयपुरें जइ वेगशुं, कहेजे एणीपरें
ज्य भ्रंश नय राखीनें, हाथें थयो हराम ॥ २ ॥ तें दीधुं दुःख
सहुनी लाज ॥ राज्य थाप्यो में रंगशुं, कीधुं अवलुं काज ॥
दान करूं, वारू नहीं ए वात ॥ मूकजे स्वजन ते माहरां, आग
वदात ॥ ४ ॥ हरिनुं मांस जंबूक हरे, कहेवी वात कहाय ॥
निग्रह करूं, एहमां नहीं अन्याय ॥ ५ ॥ कूतरो पय कुत्सित
पामे तेह ॥ लेख लखी एम मोकले, आगल कहुं वली एह
॥ ढाल तेरमी ॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडी, जी ॥
॥ वली सुणजे वली सुणजे महारा तातनुंजी, लूंट्युं धन
अणी बंध हो ॥ तिम स्वजन तिम स्वजननें सत्कारी घणुंज
मोकलजे टाली धंध हो ॥ १ ॥ जगमांहे जगमांहे श्रीजयानं
ए आंकणी ॥ एम न करे एम न करे तो मुझने सज थजे
थी दूतमुखथी जाणे सिंहसार हो ॥ वांची पत्र वांची पत्रनें
मां जी, जयनीत जयनीत थयो ते अपार हो ॥ ज० ॥ २ ॥ श्री
विजयरायनुं धन सवेजी,वली स्वजन वली स्वजननें दिये बहुमान
चेटणुं वली चेटणुं श्रीजयानंदनेंजी, लखे लेख लखे लेख मूकी
हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ देश नृपनो देश नृपनो पाछो आपीयोजी, दूत
तनें कहे नरम वचन्न हो ॥ दूत स्वजन दूत स्वजन पोहोता सहु
जी, वात सघली वात सघली सुणे नृप कन्न हो ॥ज०॥४॥देखी
जाणीनें हरखें ते बिहुंजी,नृप आपे नृप आपे स्वजननें देश हो
वसें एक दिवसें श्रीजयानंदनेंजी, माय ताय माय ताय पूछे
॥ ज० ॥ ५ ॥ विजयपुरथी विजयपुरथी गया ते दिनथकीजी,
त्र कहो चरित्र जे निपन्युं तुम्म हो ॥ इछाविण इछाविण तात
की जी, कहे कुमर कहे कुमर चरित्र सुणो अम्म हो ॥ ज०॥
मावित्र सुणी मावित्र आणंदमय थयांजी, सुतनकं सुतनकं
य राय हो ॥ चित्त चमक्या चित्त चमक्या बहु नृप सेवतांजी, का
काढे सखमां काल अमाय हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ सप्तांग सप्तांग राज्य

जी, निज अर्जित निज अर्जित राज्य विशाल हो ॥ निज तातनें निज तातनें आग्रह बहु करीजी,राज्य आपे राज्य आपे सुत नृपाल हो॥ज०॥८॥ नृप उत्तम नृप उत्तमनें निरीह पणो जी ॥ पुत्र प्रेम पुत्र प्रेम दाक्षिण्यें तेह हो ॥ करे अंगी करे अंगीनें श्रीजयानंदनेंजी, युवराज्यें युवराज्यें ठवे ससनेह हो ॥ज०॥ ९॥ कोइ आणा कोइ आणा न लोपे ते बिहु तणीजी, समसिंहासनें समसिंहासनें बेसंत हो ॥ वेष भूषण वेष भूषण न्याय तेजें करीजी, दोय सरिखा दोय सरिखा महापुण्यवंत हो ॥ज०॥१०॥ भीमकांत भीमकांत गुणें दोय सोहताजी, चंद्र सूरय चंद्र सूरय के दोय इंद्र हो ॥ पिता पुत्र पिता पुत्रस्नेही सुखमां रहेजी ॥ एक दिवस एक दिवस श्रीश्रीजयानंद हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ देश साधवा देश साधवानी इच्छा करीजी, राज्य चिंता राज्यचिंता पिता शिर थापी हो ॥ शक्र विक्रम शक्रविक्रम राज्य चूडामणिजी, सहु नृपमां सहु नृपमां अति परताप हो ॥ ज०॥ १२ ॥ मध्य खंमें मध्यखंमें जीतायें साधीयोजी, चक्रपुरनो चक्रपुरनो नृप चक्रसेन हो॥ जयपुरनो जयपुरनो जयी शत्रुंजय करेजी, अति बलीयो अति बलीयो जीतायें केन हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ जयंती जयंती नयरीनो धणी जी, जयंत जयंत शत्रु करे अंत हो ॥ पुरंदरपुर पुरंदरपुर पति नर केशरी जी, भीमराजा भीमराजा भोगवती कंत हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ सुमंगल सुमंगल कौशलनो पति जी, नंदीपुरनो नंदीपुरनो नरपति नंद हो ॥ सूर्यपुरनो सूर्यपुरनो सुरमल्ल पतीजी, वली पृथिवी वली पृथिवीचंद कलाचंद हो ॥ज०॥१५॥ रूपराजा रूपराजा प्रमुख सेवक कराजी, एम साधी एम साधी नृप अनेक हो ॥ सैन्य सायर सैन्य सायर लइनें आवीयाजी, मध्यखंम मध्यखंम साधी सुविवेक हो॥ज०॥१६॥ तात प्रणमे तात प्रणमे निजपुर आवीनें जी, सेवा करता सेवा करता निर अहंकार हो ॥ राजराजा राजराजा नो बिरुद वहेतो थकोजी, प्रसिद्धि प्रसिद्धि लहे सुविस्तार हो ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ ससरानें ससरानें पासेंथी तेडावतो जी, निजपरणी निजपरणी पूरवली नारि हो ॥ लेखमांहे लेखमांहे निशानी प्रमुख लखीजी, ससरा पण ससरा पण सुणीय तिवार हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ प्रहरीनें प्रहरीनें सेववो एहनें जी, सज्जनाइयें सज्जनाइयें सेववो सार हो ॥ एम चिंतवी एम चिंतवी सहु लइ भेटणां जी, निजकुमरी निजकुमरी लेई हार हो ॥ज०॥

॥१७॥ मणिमंजरी मणिमंजरी लेइ आवीयो जी,श्रीविशाल श्रीविशाल पुरन नाथ हो ॥ अंतेउर अंतेउरशुं आवी नमेजी, दीये पुत्री दीये पुत्री हाथ हाथ हो ॥ ज० ॥ २० ॥ हेमपुर हेमपुर धणी सौभाग्यमंजरी जी, पद्म यनृप पद्मरयनृप आवे वेग हो ॥ निज विजय निज विजयसुंदरी ला यो जी, अंतेउर अंतेउर लेइ सतेग हो ॥ ज०॥ २१ ॥ कमलप्रभ कमलप्र लेइ निज कुंवरीजी, कमलसुंदरी कमलसुंदरी रति अनुहार हो ॥ श्रीजय ण श्रीजय पण आदर आपता जी, वासग्राम वासग्राम आपे तस सा हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ रमणीशुं रमणीशुं रमतो नित्यप्रत्येंजी, राज्य सोंपी ज्य सोंपी तातनें ताम हो ॥ श्रीजय पण श्रीजय पण नृपति रंगशुं सुख भोगवे सुख भोगवे अति उदाम हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ तस शोना त शोना तिरिवल देखीनेंजी, ससरादिक ससरादिक लहे चमत्कार हो ॥ ठ खंमें ठठे खंमें ढाल ते तेरमीजी,कहे पद्म कहे पद्म सुणो जयकार हो॥२४

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंद सना करी, तातशुं वेगा ताम ॥ ससरा प्रमुख मलि वे, अचरिज लहे अनिराम ॥ १ ॥ एणे अवसर तिहां आवीयो,दूरदेश दक्ष ॥ गायन पेटक गुणी घणुं, सुकंठ तेहमां सुलक्ष ॥ २ ॥ मधुरध्वनि गाये मोजमां,वली एक तेहनें वाम ॥ सर्वकला सावधान जे,गीतना सरने ग्राम ॥ ३ ॥ नरताशुं गावा नणी,तुरत मेलवे तान ॥ राजसनामां रंगशुं आव्या अवसर जाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मोहनगारा हो राज, रूडा माहारा सांभल सुगुणा सूडा ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुण सौभागी हो राज, वारू म्हारुं गीत सुणो सुखकारू ॥ ए आं कणी ॥ पदमरय राजा तणीजी, पुत्री दोष निधान ॥ लघु आपी तिह निन्ननें जी,इतर दीधी राजान के ॥ सु० ॥ १ ॥ तिहांथी मांभीनें कहेजी, गायन घर गई जाय ॥ सुख दुःख पूर्वनुं सांभलशुंजी, रुदन कयुं तेणें ताव के ॥ सु० ॥ २ ॥ सुकंठ कहे रोवे किश्युंजी, रंगमांहें करे भंग ॥ आ अवसर ने दाननोजी, साजन मलियो संग के ॥ सु० ॥ ३ ॥ यतः ॥ तुह गीय णेण रंजिआ, सुचिरं सुंदरी कामदायया ॥ कह रोइसि दुहया खया, सरे नो सुलहो खणो पुणो ॥१॥ पूर्वढाल ॥ रोवुं मूकी गायतीजी, किम

कहि गद्गद वाणी ॥ गीतनां रजयी सर्वनेंजी, चित्रकारी गाय गान के ॥ ॥ सु० ॥ ४ ॥ तथाहि ॥ किहपउम पुर किह् पउमपहू, किह् पियडा मं गिण निल्ल गहु ॥ जयसुंदरि गायण घरिहिं गया, हह गायइ धणकक्षि द इव हुया ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ निज नरतार अनिया सुणी जी,विस्मित पद्म रथ राय ॥ चोंपथी जुवे नृप जेटले जी, निजसुता उंलखे ताय के ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ वत्स वत्स रे तुं किहांजी, केम आवी इंण गाय ॥ एम विलपती वलगी गलेजी, आवी एहनी माय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ बेहु परस्पर रोवतां जी, आव्यो तेहनो ताय ॥ ते पण उंलखी रोवतां जी, प्रणमे तातना पाय के ॥ सु० ॥ ७ ॥ करुणामय ते सना थइजी, जाणवा तत्त्वस्वरूप ॥ नृपनें पूछे ए किस्युं जी, तव जांखे एम नृप के ॥ सु० ॥ ८ ॥ बे कन्या मुज तेह नें जी, आपी समस्या एक, पूरी अनुकूल पहेलीयें जी, चित्तमां धरीय वि वेक के ॥ सु० ॥ ९ ॥ बीजी प्रतिकूल पूरती जी, रीश चढी मुज ताम ॥ कारिमा निल्लनणी तदा जी, आपी हीणे गाम के ॥ सु० ॥ १० ॥ वृद्धो ज यसुंदरी नणीजी, नरकेशरी नृप जात ॥ आपी हर्षे राखीयो जी, केइक दिन वहीजात के ॥ सु० ॥ ११ ॥ शीख दीधी में एकदा जी, लेइ प्रिया ग यो घेर ॥ गातां हमणां उंलखी जी, जयसुंदरी एणी पेर के ॥ सु० ॥ १२ ॥ स्वर अनुसारें जाणीयें जी,पुत्री इःखमां लीन ॥ आगल हुं जाणुं नहीं जी, एहज कहेशे अदीन के ॥ सु० ॥ १३॥ नृप आणाथी सा कहे जी, नर्चाग्नुं निज सहेर ॥ नोग क्रीडा मुजश्युं करेजी, अति आसक्त निजघेर के ॥ सु० ॥ १४ ॥ वसंत ऋतुमां अन्यदा जी, कुसुमाकर उद्यान ॥ दोय गाउ ते नय रथी जी, रमवा गयां तेणे थान के ॥ सु० ॥ १५ ॥ क्रीडाघर तिहां सुंदरु जी, ढांकी कुसुमनी माल ॥ रंजास्तंनें सोहतुं जी, दीसे शय्या सुकुमाल के ॥ सु० ॥ १६ ॥ नोग सामग्री लेइ सवे जी, दोय मासनें काज ॥ दूर सु नट चोकी रह्या जी, दासी वृंद चिहुं पाज के ॥ सु० ॥ १७ ॥ गीत नाटक वारांगना जी, करती अतिहिं रसाल ॥ नोगासक्तमां एणी परेंजी, काढे रीज मां काल के ॥ सु० ॥ १८ ॥ एणें अवसर हवे अन्यदा जी, सहस्रकूटनो स्वामी ॥ सैन्य सहित तिहां आवीयो जी, महासेन एणें नाम के ॥ सु० ॥ ॥ १९ ॥ लुंटवा कोइक गामनें जी, पण तस इवो जाण ॥ खाली आव्या ते फरीजी, आव्या अम तेणें ठाण के ॥ सु० ॥ २० ॥ तुम जमाइ लडवा ग

याजी, रात्रि समे तव तेह ॥ नागो जमाइ तुम तणोजी, लूंटयुं केलीनुं के ॥ सु० ॥ २१ ॥ मुज पकडी लेइ गयो जी, कहे मुज करशुं नार ॥ अंगना नयथकी जी,त्रण दिन कीधो न आहार के ॥सु०॥२२ ॥ पल्लिप कहे तुझने जी, आपशुं तुज नरतार ॥ धन लेइ तेणें कारणे जी, का सुखमां आहार के ॥ सु०॥ २३ ॥ जाणी समाधान में कर्युंजी, आहार विशवास ॥ हवे जे आगल नीपजे जी, ते सुणो कर्म विलास के ॥ सु ॥ २४ ॥ छठे खंडें चौदमी जी, पद्मविजयें कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना समां जी, आगल वात रसाल के ॥ सु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पल्लीपतिनी जे प्रिया,शोक्य ए माहारुं शाल ॥ पर्वतमांथी पाथरी,औ धी लावी आल ॥१॥ जोजनमां जेली दीये,जलोदर वाध्युं जोर ॥ वैद्य औ विण गद कह्यो, केम टले कर्म कठोर ॥ २ ॥ सुकंठ उपर समजणे, देव कें दान ॥ गीत सुणी रंगें करी, शोक्यनी आणी शान ॥ ३ ॥ पल्लिपति प तदा,धारी एहवुं ध्यान ॥ शाता करवा सोंपतो, विजयसुंदरी शुज वान ॥ रूप लोनें रंगें ग्रही, सज करशुं एम शान ॥ पसखंड पत्तन पामीयो,इव्य णुं करी दान ॥ ५ ॥ वारु सुमति वैद्य छे, मालम करी गद मूल ॥ रेच ख देइ रोगनें, उपशम करे अनुकूल ॥ ६ ॥ सुमतिनें संतोषीयो, मानि कीधी मुज्ऊ ॥ गीत शीखव्यां गेलशुं, गाउं गीत ए गुज्ऊ ॥ ७ ॥ नृपादिकनें ली परें,रीजवी लेउं रिद्धि ॥ महाधनी सुजपति थयो, सर्वकला परसिद्ध ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ संजवजिन अवधारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ जाणी श्रीजयानंदनें, मलीय बहुला राय सोजागी ॥ आव्या त तुमें जाणीयां, उल्लस्यो दुःख समवाय सोजागी ॥ १ ॥ मद मत कर मानवी ॥ ए आंकणी ॥ चरित्र पोतानुं जणाववा, गायुं गीत नवीन ॥ सो आगल वात सवे लहो, शुं कहुं तुमें छो प्रवीण सो०॥ म० ॥ २ ॥ विजय दरी जिल्लनें, दीधी शुं थयुं तास सो० ॥ किहां छे खबर न तेहनी, दुःखनो आवास सो० ॥म०॥३॥ जिल्ल नहीं ते नृप कहे, एतो राजकुमा सो० ॥ जाग्य परीक्षा कारणें, तादृशरूपनो धार सो० ॥ म० ॥ ४ ॥ सु जीत्यो जगजीत तो, श्रीविजयनृप पूत सो० ॥ राजेंद्र श्रीजयानंदजी, राखे घरसूत सो० ॥ म० ॥ ५ ॥ मावे पासें ए रही, नृपतिनुं बहु मा

सो० ॥ विजयसुंदरी बहेनडी, नारी जो असमान सो० ॥ म० ॥ ६ ॥ अंगुलीयें देखाडतो, मलवा चाये जाम सो० ॥ वलगी कंठें उठीनें, विजय सुंदरी ताम सो० ॥ म० ॥ ७ ॥ रोवे तव ते बिहुं जणी, रूपी रुदन तिवार सो० ॥ विजयसुंदरी एम कहे, धन्य तुज शीयल आचार सो० ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ तेहिज वात साची कही.ने दिन सना मजार सो० ॥ देव गुरु धर्म तत्त्वनो, महिमा अगम अपार ॥सो०॥म०॥९॥ में समस्या पूरी तदा, तेह अतात्त्विक जाण सो०॥ फल बिहुनें तेहवां थयां, कार्य कारण परमाण सो० ॥ म० ॥ १० ॥ नास्तिकवादें हुं हणी, रुठुं मनावया तात ॥सो०॥ पूरी समस्या तेहनुं.फल आपद आपात सो० ॥ म० ॥ ११ ॥ नृप प्रसन्न अप्रसन्नथी.न होय सुख दुःख कोय सो० ॥ सुख दुःख पुण्यनें पापथी, इहां दृष्टांत अम होय सो० ॥ म० ॥ १२ ॥ वात सुणी ते बेहु तणी, एम कहे श्रीजयानंद सो० ॥ परवदानें समजाववा, सुणतां धर्मनिस्पंद सो० ॥म०॥१३॥ विस्मय लोक लह्यां घणां,हवे सुकंठ बोलाय ॥ सो० ॥ इछित धन आपी करी, विजयसुंदरी आदाय सो० ॥ म० ॥ १४ ॥ आपी तेहना तातनें,ते पण परमां जाय सो० ॥ शास्त्रविधें तस शुद्ध करी, परमां राखे ताय सो० ॥ म० ॥ १५ ॥ तेहना नगरथी तेडियो, नरकुंजर जे राय सो० ॥ ठयको देइ बहु आपतो, विजयसुंदरी सुपसाय सो० ॥ म० ॥ ॥ १६ ॥ सतरादिकथी लाजतो, लेइ प्रिया निज पाणि सो० ॥ वीर नंद निजपुरें गयो, हर्ष घणो मन आणि सो० ॥ म० ॥ १७ ॥ प्रीति वधारी सहु प्रत्यें,करी आदर सत्कार सो० ॥ बोलाव्यां निजपुरें गया, करता धर्म विचार सो० ॥ म० ॥ १८ ॥ राज्य सोंपी निज तातनें, कुमर प्रियाशुं केलि सो० ॥ करता धर्म लोपे नहीं, विलसुं तेहमां वेली सो० ॥म०॥१९॥ वनपालक आवी कहे, फूल्यो नृप वसंत सो० ॥ कोकिलडा टहुका करे, चंदनवास वसंत ॥ सो० ॥ म० ॥ २० ॥ चंपक चोला फूलीया, तेम पुन्नागनी श्रेणि सो० ॥ अली झंकार करी रह्या, करुं विनति तुम तेण सो० ॥ म० ॥ २१ ॥ नृप श्रीविजय ते सांजली, कहे निजपुत्रनें एम सो० ॥ वय वीत्युं क्रीडातणुं, तेणें रमवा जाउं केम सो० ॥ म० ॥ २२ ॥ तेणे तुमें नीकलो क्रीडवा, तुम विण जन नहीं जाय सो० ॥ तात आणा शिर उपरें, धारी कुंवर राय सो० ॥ म० ॥ २३ ॥ अंतेउर परिवारशुं,

सामग्री सवि लेय सो० ॥ नगर लोकशुं निकल्या, देता दान अमेय सो० ।
॥म०॥ २४ ॥ ठछे खंमें ए कही, पन्नरमी वर ढाल ॥ सो० ॥ पद्मविज
कहे सांजलो, आगल वात रसाल सो० ॥ म० ॥२५॥ सर्वगाथा ॥४७०

॥ दोहा ॥

॥ निज निज रूध्धें नीकल्या, पुरजन बहु परिवार ॥ वाजित्र बहुवि
वाजते, नवरंग गीत गाय नार ॥ १ ॥ नाटकीया बहु नाचता, खेला खे
खांत, खजुर प्रमुख खाय खायनें, तरुण रमे एकांत ॥ २ ॥ रंनाघर रं
सुवे, प्रतिपादपपुष्प पाणि ॥ वसंत किणविध वरणवुं, जिहां बहु काम
जाण ॥३॥ क्रीडासरें बहु क्रीडतां, नर नारी निर्वाण ॥ सींचे जल शृं
घणुं, गाये वसंतनां गाण ॥ ४ ॥ क्रीडा करी कांठे रह्या,शोनावे सरपाल
सिंहासनें सोहे अति, नरनारीशुं नृपाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ शारद बुद्धि दायी ॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ इण अवसर आव्यो, जिल्ल एक कर चाप ॥ व्याघ्रचर्म
परेख्यो, दीन करे आलाप ॥ श्वान रज्जुयें बांध्यो, मोरपिछ धर्यां माथे
बाणनाया बिहुं दिश, केइ जिल्ल तस साथें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तेहमांथी
क आवी प्रणमे, नरपति पूछे ताम ॥ कोण तुमें तव जिल्ल कहे सुणो, म
हारी वात ते आम ॥ चंमसिंह पल्लिपति राज्यें, यमडुर्ग पर्वत सामि ॥ सिं
हव्याघ्र नामें सुत तेहने,तात ते परनवगामि ॥२॥ढाल॥ बिहुं नाइयें लीधुं
वहेंची राज्य उदार ॥ सिंह लीये तव बलथी,राज्य तथा वर नारि ॥ ते ड
खथी जमतो, वनमां मृगें जीवंतो, तुम पासें आव्यो, ते हुं अरज करतो
॥ ३ ॥ त्रु० ॥ ते नाइ मुज क्रीडा करतो,सिंह आव्यो इण वनमां ॥ मुज
पल्लीशुं रमतो बलीयो, हुं पण बलुं घणुं तनमां ॥ डुर्बलनुं बल राजा जा
णी, आव्यो हुं तुम पासें ॥ तुम सैन्यनो कोलाहल सुणीनें, रखे ते इहांथी
नासे ॥ ४ ॥ उक्तं च ॥ डुर्बलस्य बलं राजा,बालस्य रुदनं बलं ॥ बलं मूर्ख
स्य मौनत्वं, तस्करस्यानृतं बलं ॥ १ ॥ डुर्बलानामनाथानां, बालवृद्ध
पस्विनां ॥ अनार्यैःपरिनूतानां,सर्वेषां पार्थिवोगतिः ॥२॥ शकटं पंचहस्तेन
दशहस्तेन वाजीनः ॥ कुंजरः शतहस्तेन, देशत्यागेन डुर्जनः ॥ ३ ॥ आ
चारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति जाषितं ॥ संभ्रमः स्नेहमाख्याति, वपु
ख्याति जोजनं ॥ ४ ॥ दूधेंतो धात वधे,घीयें वधे कोपरी ॥ गोलें तो गुंदर व

थे, येंणें वधे उंफ री ॥ १ ॥ ढाल ॥ तेणें कारण चालो, एकाकी तुमें राय ॥ जो शक्ति होवे,तो विलंब बहु थाय ॥ ते डुष्टनें मारी,माहारी प्रिया मूंकावो, सज्जन उपकारी, माहारुं राज्य अपावो ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सज्जन पर आपद देखीनें, अधिकुं सौजन्य धारे ॥ ग्रीषमें तरु नव पल्लव होवे, आतप सहुनो वारे ॥ ते सांजलीनें राजा कोप्यो, मुज धरत्तीमां अन्याय ॥ केम करे एहवुं माहारा राज्यनें, मोहोटुं कलंक ते थाय ॥६॥ढाल॥ देखाड तुं मुजने, एहवो निग्रह कीजें ॥ क्षण मात्र न सहीयें,एणी परें राय वदीजें ॥ ठाना निकलिया, निलछुं लेइ समशेर ॥ महोटा जे बोले, तेहमां न पडे फेर ॥ ७ ॥त्रु० ॥ व न निकुंजनें मुख जई बोले,निल्लरायनें एम ॥ आ वनमां ठे माहारो नाई,ते णें हुं पेसुं केम ॥ बीहीक लागे तेणे ईहांहिज रहेछुं, एम सुणी पेसे राय ॥ वनमां सघले खोल्यो पण ते, न लह्यो किणही ठाय ॥ ८ ॥ ढाल ॥ नृप पाठो आव्यो, निल्ल तिहां नवि देखे, नृप एम विचारे, ईड्जाल ए लेखे ॥ पुरनणी जव आवे, गगनथी एक विमान ॥ आव्युं तेहमांथी, नीकल्यो खेचर प्रधान ॥ ए ॥ त्रु०॥ आवि नृपने प्रणमी बोले, शाने करो विचार ॥ ए सघली माया ठे माहारी, हुं लाव्यो एणें ठार ॥ तेहनुं कारण सांजल नर वर, वैताढ्यें नगर पचाश ॥ दक्षिणदिशि तेहमां रथनूपुर, चक्रवाल ते खा स ॥१०॥ ढाल ॥ तिहां पवनवेग हुं,बहुविद्याधर स्वामी ॥ दक्षिणदिशि खग सहु, माहारी आणाना कामी ॥ वज्रवेग माहारे सुत, बहुविद्या जेणें सा धी ॥ कर्युं पाणीग्रहण, कीर्त्ति जगमां वाधी ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ हेमगिरिशृंगें हेमपुर थाप्युं, तिहां कीडे सुविशाल ॥ ठठे खंमें पद्मविजयें कही, रंगें शो लमी ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां रूडी, सुणतां मंगलमाल ॥ पुण्यनो व लथी आगल वातो, सुंदर पणुं सुरसाल ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४ए६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बलियो विद्याबलथकी, परिवृत बहु परिवार ॥ वसे जालंधर पुर बडुं, सुवर्ण मणिग्रह सार ॥ १ ॥ तार सूरि तस स्वामिनी,कामाक्षी श्रीकार ॥ योगिनी वृंद पूजे जिका, परिछदरूप अपार ॥ २ ॥ नगर मध्ये जुवनें रही, तेह जुवनपुर नाम ॥ पीठ सुवर्ण मणिमय प्रवर, योगिनी पीठ जग नाम ॥ ३ ॥ आराधक तिहां आवीनें, साधि योगिनी सहित ॥ पीठनें चिहुं दिशि

परिसरें, वसे योगिणी वडवित्त ॥ ४ ॥ चोशठ रुद्धिवंती चतुर, परगट परिवार ॥ नाम ए तेहनां निरखीयें, सुणजो तास विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ हांरे हांरे साहेबा रे, गोकुल गामनें गोंदरे, ऊजला नंदकिशोर रेलाल ॥ ए देशी॥

॥ हांरे हांरे साहेबा रे, १ वाराहीने वली २ वामनी रे, ३ गारुडं इंद्राणी नाम रे लाल ॥ ५ आग्नेयी ६ व्यामा वली रे, ७ नैरुती सातमे रे लाल ॥१॥ योगिणी जगमां जागती रे लाल ॥ ए आंकणी ॥हांo॥ ८ णी ए वायव्या कही रे, १० सौम्या ११ ईशानी जाण रे लाल ॥ १२ ब्र णी १३ वैष्णवी तेरमी रे, १४ माहेश्वरी मन आण रे लाल ॥योगिo॥ हांo ॥ १५ वैनायकीनें १६ शिवा सुणी रे, १७ शिवदूती शिरदार रे ल ॥ १८ चामुंडी १९ जया जाणीयें रे, २० विजया २१ अजिता धार लाल ॥योगिo॥३॥हांo॥ २२ अपराजिता २३ हरसिद्धिनें रे, २४ कालि २५ चंडविचार रे लाल ॥ २६ सुचंमा ढवीशमी रे, करे ऊपकार अपका लाल ॥ योo ॥ ४ ॥ हांo ॥ २७ कनकदंता २८ सुनत्ता २९ उमा रे, घंटा ३१ सुघंटा सार रे लाल ॥ ३२ मांसप्रिया ३३ आशापुरी रे, ३४ हिता ३५ अंबा उदार रे लाल ॥ योo ॥ ५ ॥ हांo ॥ ३६ अस्थिभक्षी नारायणी रे, ३८ नारसिंही सुप्रसिद्ध रे लाल ॥ ३९ कौमारी ४० वानर सुरी रे, ४१ अंगा ४२ वंगा रिद्धि ईद्ध रे लाल ॥ योo॥ ६ ॥ हांo ॥ ४३ दं दंष्ट्रा ४४ सुदंष्ट्रा वली रे, ४५ प्रभा ४६ सुप्रभा वरदाय रे लाल ॥ ४७ वा ४८ लंबोष्ठी ४९ भद्रा वली रे, ५० सुभद्रा वर काय रे लाल ॥ योo ॥ ७ ॥ हांo॥ ५१ काली ५२ रौद्री ५३ रौद्रमुखी रे, ५४ कराली वली ते रे लाल ॥ ५५ विकराला ५६ साक्षी वली रे, ५७ विकटाक्षी धरे प्रेम लाल ॥ योo ॥ ८ ॥ हांo ॥ ५८ तारा ५९ सुतारा ६० रजनीकरी रे, ६ रंजना ६२ श्वेता सुजाण रे लाल ॥ ६३ भद्रकालीनें ६४ क्षमाकरी रे, चोशठ मंमाण रे लाल ॥ योo ॥ ९ ॥ हांo ॥ काम रूपी ए पूजे जि रे, ते जगमां पूजाय रे लाल ॥ विविध प्रकार वरदायिनी रे, दुःख दारि पलाय रे लाल ॥ योo ॥ १० ॥ हांo ॥ अणिमा लघिमा ऐश्वर्यता रे, शिता गरिमा आदि रे लाल ॥ शक्ति विविध छे तेहनी रे, नवि पोहों कोइ वादी रे लाल ॥ योo ॥ ११ ॥ हांo ॥ पर्वत वननें समुद्रमां रे, इ

नदीनें कासार रे लाल ॥ द्वीप प्रमुखमां ए रमे रे, दिव्य शक्ति सा धार रे लाल ॥ यो० ॥ १२ ॥ ह्वां० ॥ कोपी नर लोकमां करे रे, मरकी प्रमुख उप सर्ग रे लाल ॥ तूठी दीये बहु संपदा रे, पुत्र कलत्रना वर्ग रे लाल ॥ यो० ॥ १३ ॥ रांकनें बीहिवरावे घणुं रे, महोटानें दीये मोद रे लाल ॥ वेपक्रिया बहु जातिनी रे, करती विविध विनोद रे लाल ॥ यो० ॥ १४ ॥ ह्वां० ॥ हेम शृंगगिरि क्रीडा तणुं रे, योगिणीनुं ठे गाम रे लाल ॥ भुजपुत्रें अणजाणतां रे, तिहां वास्युं वर गाम रे लाल ॥ यो० ॥ १५ ॥ ह्वां० ॥ योगिणीयो को पी तदा रे, मरकी अतिशय कीध रे लाल ॥ लोक नागां उपड्ववयकी रे, लेइ निज निजनी ऋद्धि रे लाल ॥ यो० ॥ १६ ॥ ह्वां० ॥ योगिणी वश क रवा भणी रे, श्रीपर्वतमां जाय रे लाल ॥ वज्रवेग विद्याधरू रे, तिहां ज्वालामालिनी गाय रे लाल ॥ यो० ॥ १७ ॥ ह्वां० ॥ तेहनी दृष्टि आगल रही रे, करे तिहां जापनें ध्यान रे लाल ॥ लाख बीलां होमे तिहां रे, करे मन इछित दान रे लाल ॥ यो० ॥ १८ ॥ ह्वां० ॥ एह रीति देवी तणी रे, वज्रवेग पण ताम रे लाल ॥ सामग्री सवि मेलीनें रे, वेगे जापनें गाम रे लाल ॥ यो० ॥ १९ ॥ ह्वां० ॥ योगिणी जाणे ते सवे रे, सातमे दिन तिहां आय रे लाल ॥ करे प्रतिकूल उपसर्गनें रे, पण न खोनाणो जाय रे ला ल ॥ यो० ॥ २० ॥ ह्वां० ॥ ठठे खंमें ए कही रे, सत्तरमी वर ढाल रे लाल ॥ पद्मविजय कहे सांजलो रे, आगल वात रसाल रे लाल ॥ यो० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जालिम तुमें योगिणी कहे, रूप अनोपम धार ॥ तूठी हुं तुम उपरें, साहसिकमां शिरदार ॥१॥ नर्त्ता तुम करी जोगवुं, जोग जला मन जावि ॥ रूप लखमी सफली करुं, परगट अवसर पावि ॥२॥ सेवा करशुं साचली, डुर्लज दैवत जोग ॥ नर रूपें जोगवी नवल, शुज पामो संयोग ॥३॥ क्लेश फोकट कहो कोण करे, ध्यान तपादिक धार ॥ मोदक पामी मानवी, वाल न रांधे किवार ॥४॥ आलिंगन दे उवि तुं, रागिणी अमें रसाल ॥ खारां जल पीयां खरां, जलां अमृत तुं जाल ॥ ५ ॥ एम कही नाटक आदर्युं, गाये मोहन गीत ॥ नेउर कंकण रण फणे, चमके जिणथी चित्त ॥ ६ ॥ काम उद्दीपन कारिमुं, सांजली लागो स्वाद ॥ कंदर्पनें वश थई करी, नवि बोले

ज्यां नाद ॥ ७ ॥ हसती बांधे होंशथी, निगडित करीनें नार ॥ निज पत्तन मां नाखियो, क्रीडा करे किवार ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५३० ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ तुं कुलमांहे कपनी, उपजीनें तें खोयुं हो परियागतनुं पाणी हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ में ते जाणी वातडी, विविध प्रकारें पूजा हो, स्तवना पण बहु कीधी हो राज ॥ पुत्र मूकावण कारणें, संतोषी घणुं तेहनें हो, पण नवि जाये लीधी हो राज ॥ १ ॥ हवे वैताढ्यनो अधिपति, उत्तरश्रेणिमां सार हो, गगनवल्लनपुर राजे हो राज ॥ चक्रायुध तिहां राजियो, सर्व विद्याधर स्वामी हो, चक्री नाम ते गाजे हो राज ॥ २ ॥ ज्योतिषीमां सूर्य परें, कल्पवृक्ष जेम तरुमां हो, हरि जेम मृगमां बलियो हो राज ॥ मेरु जेम पर्वत माहे, तेम ए राम अथ अधिको हो, बल विद्यायें न कलीयो हो राज ॥ ॥ ३ ॥ विद्याधरमां को नहीं, भूचरनी शी वात हो, अजय श्रेणि तस सेवे हो राज ॥ मुजरो करी में विनव्यो, मुज सुतनें मूकावो हो,तव मुज उत्तर देवे हो राज ॥४॥ मूकावीश मुज पुत्रनें, योगिणीनो शो जोर हो, एणी परें मुजनें नाख्यो हो राज ॥ एम बहु वार में प्रेरीया,एहनो एहज मुजने हो, उत्तर फरि फरि दाख्यो हो राज ॥५॥ विषयादिक परमादथी,महोटानें छे क ठीठें हो,शक्तिनो संनय थावे हो राज ॥ पण मुज सरिखा मानवी,शक्ति अशक्ति न जाणे हो, कांयें सहु चित्त नावें हो राज ॥६॥ वज्रसुंदरी माहरे,गुणसुंदरीनें सरखी हो, सुर जुवे अनिमेष नयणें हो राज ॥ पुत्रनी अनुजा तेह छे,सर्वगुणें करी सरखी हो, शुं कहुं जाउं वयणें हो राज ॥ ७ ॥ जैनधर्म रुचि तेहनें, जैनकलामां कुशला हो, नाट्यकला सुविशेषें हो राज ॥ नंदनवननी धरतीयें, बहुनरमांहे कल्पत्रु हो, वृक्षनी श्रेणिनें लेखे हो राज ॥८॥ चक्रायुध ते सांभली,दूतमुखें मुज याचे हो, तव में चित्त विचार्युं हो राज ॥ बहु पत्नी होये जेहनें, त्रिगुणाधिक जस वय हो, तेहनें देवी न धार्युं हो राज ॥ ९ ॥ यदुक्तं ॥ वपुः शीलं कुलं वित्तं, वयो विद्या सनाथता ॥ एतानि यस्य विद्यंते,तस्य देया निजा सुता ॥ १ ॥ मूर्ख निर्धन दूरस्थ, बहुनार्याभिवार्थिनां. त्रिगुणाधिकवर्षाणां, अपि देया न कन्यका ॥ ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ जेम तेम ना न कही शकुं, हृदिर्योनो पति बलीयो हो, दूतनें उत्तर दाख्यो हो राज ॥ योगिणीयें मुज पुत्रनें,राख्यो छे ते छूटश हो,

ुज हृदयमां साल्यो हो राज ॥ १० ॥ सांभरे नहीं विवाहनी, वात ते मु
तनें सामी हो, सुत मूकावो माहारो हो राज ॥ सर्व पठी सारुं थशे, दूतें
ण जई नांख्युं हो,दीधो ठे एम लाहरो हो राज ॥ ११ ॥ माहारी सभा
ां एकदा, निमित्तियो एक आव्यो हो, भाव्यो चित्तमां काजें हो राज ॥
ल पुष्पादिक ढोश्यां, देइ सत्कारने पूठ्युं हो, कारय दोय मुज राज्यें हो
ज ॥ १२ ॥ मुज सुत कोण मूकावशे, कोण मुज पुत्री वरशे हो, कहो
चित्तमां धारी हो राज ॥ निमित्तियो कहे ए बिहुं, एकज प्राणी करशे
,में कहुं ताम विचारी हो राज ॥ १३ ॥ उंळखशुं कहो केणी परें,निमि
यो कहे सुणजो हो,वांधी पद्मरथ नृप हो राज ॥ जेह पमाडशे धर्मनें,
ती श्रीपतिनृप जीते हो, निजकळा दाखी अनूप हो राज ॥ १४ ॥ कन्या
ण तस परखशे, ते तुज सुत मूकावी हो, तुज पुत्री पण वरशे हो रा
॥ सांभळी बहु आणंदियो, ए जाणुं एह काम हो,एवडां महोटां करशे
राज ॥ १५ ॥ फल अलंकारें तोषियो, में हवे कीधी तेहनी हो, शुद्धि
तपत्ते जाणी हो राज ॥ ज्ञानी वचननें लक्षणें,तुजने उंळखी निद्र हो,
ह करी लाव्यो ताणी हो राज ॥१६॥ मात पिता जो तुज जाणे,तो जा
नवि आपे हो,लाव्यो तेणें एकाकी हो राज ॥ पुत्र मूकावो माहरो,अव
नां उपकारी हो, मूकी सर्व ते बाकी हो राज ॥ १७ ॥ नदी जल वहे
नवि पिये, वृक्ष फले नवि खावे हो, भोगवे रयण न खाणी हो रा
। पर उपकारनें कारणें, संतना जनम ते कीधा हो, एहवी ग्रंथें वाणी
राज ॥ १८ ॥ क्लेश पोतानो नवि गणे, पर उपकारनें माटें हो, सज्जन
वर सरिखा हो राज ॥ ठाया फल दीये पर भणी, खमे तडकानें शीत
वली खमे अतिशय वरषा हो राज ॥१९॥ हुं दुःखियामां शिरोमणि,तम
परदुःख हणवा हो, तुं मल्यो विद्धनो योग हो राज ॥ हवे निज उ
करो तुमें, सांभळी चिंते राजा हो, परउपकारी लोग हो राज ॥ २०॥
जेम संग्रामनो, नैयायिकनें साहमो हो, वादी आवे जेम हो राज ॥
ाजा मळी क्षुधितनें, रोगीने मल्यो वैद्य हो, दुर्गतिनें निधि प्रेम हो
॥ २१ ॥ अवसर पर उपकारनो,महोटा पुरुषनें आवे हो, वलब स
जाणे हो राज ॥ एक दिशि पर उपकारनें,बीजी दिशि सहु पुण्य हो,
सुर कोइ दाणे हो राज ॥ २२ ॥ पर उपकार बधे पणो,संविभाग नवि

कीजें हो, पुण्य उपार्जन वेला हो राज ॥ शोना मात्र ढे शूरनें, सेना परिवार हो, काम करे एकेला हो राज ॥ २३ ॥ एम विचारीनें कहे, परपकारनें कार्जे हो, हुं समरथ छुं एक हो राज ॥ एम कही खेट विमानमें वेशी चाल्यो सार्थे हो, महोटो धरिय विवेक हो राज ॥ २४ ॥ खेख सहित कोइ खेटनें, पवनवेग ते मूके हो, नृपना तातनी पासें हो राज ॥ धीर देवा कारणें, श्रीनगें पोहोता तेह हो, आगल मंगल थाशे हो राज ॥२५
ठठे खंमें अढारमी,श्रीजयानंदनें रासें हो,पद्मविजयें कही ढाल हो राज
सुणतां शाता उपजे,पुण्यवंतनी वात हो,दिन दिन रंग रसाल हो राज २

॥ दोहा ॥

॥ पवनवेग कहे नृपप्रत्यें, विद्यावारु एक ॥ मुज पासें ढे मोटकी, साध ते सुविवेक ॥१॥ साधवा हुं समरथ नहीं,ज्वालामालिनी जोर ॥ वश थाशे विद्याथकी, नमशे करी निहोर ॥ २ ॥ योगिणी पण वश जेहनें, सा सघी ते सवाय ॥ तेणें ए ल्यो तुमें तुरतमां, साधन विधि समुदाय ॥ ३ ॥ नृप लेइने एम नणे, बीजादिक बहु वार ॥ कोण होमशे मुजनें कहो, प पी पाप अपार ॥ ४ ॥ सत्त्वें विद्या सिऊशे, सत्त्व धरी बहु सार ॥ एम कही विधें आराधवा, ततक्षण थया तैय्यार ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ५६१ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ पद्मीसंयुत पोसह लीधो ॥ ए देशी ॥

॥ स्नानादिक करी उपवास कीधो, देवीनी पूजा करीजी ॥ साधर्मिण युद्दें विविध प्रकारें, नक्ति घणी चित्तमां धरीजी ॥ १ ॥ क्षेत्राधिष्ठायक प्रमुखनो काउस्सग्ग, करीनें मुख पूरवदिशेंजी ॥ आतम रक्षा करी परमेष्ठी पदथी, देवी मंदिरें उपविशेजी ॥ २ ॥ ध्याननें आसन पद्मासन करी, विद्या जाप हवे करेजी ॥ मन थिर राखी ध्यान धरीनें, मुझा प्रमुख विधि धरेजी ॥ ३ ॥ बीजे दिन हवे योगिणी जाणी, आवे तिहां शंका करेजी ॥ जो ए विद्या सिद्ध ते थाशे, तो अमें वश थाशुं खरीजी ॥ ४ ॥ प्रतिकूल उपसर्ग करवा मांमे, खोनना करवा कारणें जी ॥ साप सद्दिकडो महोटी काया, फुत्कारा नस धारणेजी ॥ ५ ॥ वींटी वींटी करडे नृपनें, दाढवो नांगे नि विद होयजी ॥ नांगे दाढनें मणि पण त्रूटे, उतरे तिहां न करी जूयेजी ॥ ॥ ६ ॥ जैननी रक्षाने परनावें, परानव करी शकीया नहींजी ॥ पंच परमे ष्टि पण मंत्र ते मोहोटो,एहवो महिमा जग नहीं कहींजी ॥ ७ ॥ गजादिक

करता गज मूके, वींधे दंतुसलें करीजी ॥ शुंढानें वली चरणे मर्दे, पण न चाल्या दृढता धरी जी ॥ ८ ॥ घोर शब्द करता वाघ मूके, तीखी दाढें विदारताजी ॥ नखथी घात करी करी थाका, पण रोम पण न संचारता जी ॥ ९ ॥ ज्वलती अग्नि विकूर्वे योगिणी. त्रट त्रटकार घणा करेजी ॥ धूं आडाथी अंधित दिशिगण, ज्वाला चिहुं दिशि संचरेजी ॥ १० ॥ महा तापें पण ध्यानें न चलीयो, अचलपरें नरराजीयोजी ॥ रौद्ररूप करी आवे ते हवे, नादथी पर्वत गाजीयोजी ॥ ११ ॥ ज्वलती आंख्यो जयंकर दाखे, वदनें अगनि ते वरसतीजी ॥ पर्वत दरि सम वदन देखाडे, सत्ववंत सत्वकर सतीजी ॥ १२ ॥ मम मम वाजे ममरुक वाजुं, पडछंदा उठे घणाजी ॥ अट्टाट हास्यथी फेत्कार मूके, बंध तूटे गगन तणाजी ॥ १३ ॥ हाथमां जालां खड्गनें तोमर, मोघर कंपावे घणुंजी ॥ पदघातें करी धरती कंपावे, वयण बोले मुखें ते जणुंजी ॥ १४ ॥ अम्ह पूज्या विणु विद्या साधे, रे मूढ उठ तुं जा परोजी ॥ नहीं तो मारखुं तुजनें कहेती, दाखवे जय तस आकरोजी ॥ १५ ॥ मारवा दोडे करे प्रहार, लागें तस अंगें नहींजी ॥ ध्यान एकाग्रे जेननी रह्या, सत्त्व धरे चित्त गहगहीजी ॥ १६ ॥ तेह पुरुषथी देवें न चाले, कोण मातर ते योगिणीजी ॥ १७ ॥ त्रण दिवस एम उपसर्ग काढया, रोम मात्र पण नवि चल्योजी ॥ खेद लहीनें चिंतवे चित्तमां, एतो मेरु सम अटकल्योजी ॥ १८ ॥ दिव्यांगनानां रूप करीनें, सर्व अलंकारें सोहतीजी ॥ चंदा वयणी कमल पांखडी, आंख हीयी मनमोहतीजी ॥ १९ ॥ कंचन वरणी रूप यौवन वय, सुजग आकार सवि अंगनाजी ॥ कंचुकंठी पीनस्तनी वली, पहेर्यां वस्त्र नाना रंगनां जी ॥ २० ॥ हंसगति जस कोकिल स्वरथी, गीत गाये एम उच्चरेजी ॥ जयजय स्वामी अहो तुज धीरज, सत्त्व शौर्य गुण सहु शिरेंजी ॥ २१ ॥ अम अपराध ते खमजो स्वामी, उपसर्ग कारणें अमें कर्योजी ॥ हेतु सांजल नर अमें खोळुं, रूप यौवनथी अलंकर्योजी ॥ २२ ॥ सत्ववंत तुं उपसर्ग न चढ्यो, स्वामी करी क्रीडा करुंजी ॥ अम नारीपणे अंगीकर तुं, तुज आणा अमें शिर धरुंजी ॥ २३ ॥ नरनें छुर्जन जोग ते सुरना, स्वेछायें तुमें जोगवोजी ॥ ताहारे वश अमें सघली जाणे, जन्म लगें ते जोगवो जी ॥ २४ ॥ धन धन श्रीजयानंद नृपतिनें, इणे वचनें पण थिर रह्याजी ॥

प्रतिकूल अनुकूल विविध प्रकारें, कीधा उपसर्ग सहु सह्याजी ॥ २५ ॥ त्रे
खंमें उंगणीशमी ए,ढाल पद्मविजयें कहीजी ॥ योगिणीयो वली शुं शुं बोले,
ते सांजलो आगल सहीजी ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ क्लेश विद्या साधन करे, शानें अमें तुं सिद्ध ॥ सहु विद्या अमथी
सधे, निपजे वली नवनिध ॥ १ ॥ आपुं बहु विद्या अमें, पाठसिद्ध सप्र
नाव ॥ जेहथी वश करी जगतनें, जुगतें थाशो जमाव ॥२॥ मनवंछित मनो
हारिणी, नारी परणो अनेक ॥ आकरषुं जगनें अमें, उपल जे होये ठेक
॥ ३ ॥ दूर ते पासें दाखवुं, अम नोगनो अनुनाव ॥ जरा न आवे तस ज
रा, वलक्षयनो न बनाव ॥ ४ ॥ हानि न इंड्रियनी होये, आमय नावे अं
ग ॥ काम सेवे कंदर्प वधे, रूडो करियें रंग ॥ ५॥ सुख नोगव अम साथ
तुं, शक्रनें डुर्लन सोय ॥ बहुरूपें युगपत् बहु, होंशें रमवुं होय ॥ ६ ॥
विविध वचन एहवां सुणी,जगतनें मोहे जेह॥ नरीयें जलनृत कुंनमां, तेम
नृप न नव्यां तेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ वेण म वाइश रे, विठल वारुं तुजने ॥ ए देशी ॥

॥ हृदयनें स्तन आगल कांइ नीडे, कांइक चुंबन करती ॥ कांइक आ
लिंगन वली करती, नयणें नेह धरंती ॥ १ ॥ अमें नलें दीठा रे, मनमो
हन प्रन्नु तुमनें ॥ ए आंकणी ॥ वीणावंशने पडह वजावे, नाटक करे अंग
वाली ॥ गीत गाये एम मोहन केरां, फूदडी दीये दीयें ताली ॥अमें०॥२॥

॥ अथ गीतं ॥ आवी चोशठ योगिणी, नित्य विलसुं नवनव नोगिणी ॥
अमें कामज्वर रोगिणी, रति न लहुं तुम वियोगिणी ॥ १ ॥ एम गाये रंगें
कामिणी, नव यौवन नज्ञे योगिणी ॥ अमें रंना गोरीअ अंगिणी, सोना
गी नरशुं रंगिणी ॥ २ ॥ तुम रूप सौनाग्यें राचती, इहां आवी हर्षे ना
चती ॥ तुं प्रियतम पामी मलपती, नवि मूंकुं कहमवि जीवती ॥ ३ ॥ वर
चंपक सोवन गोरडी, गुण गाती नांनर नोलडी ॥ पयसेव करेशुं तोरडी,
अमें तुं सोहग उरडी ॥ ४ ॥ अम अंग सुगंधें महमहे, दिशि पसरें परि
मल जे वहे ॥ नव पउमणी मालती केवडी, हिमवालुअ मृगमद वेवडी
॥ ५ ॥ अम पायें नेउर रणजणे, कर कंचन कंकण रणरणे ॥ उरें मो
तीहार सुलहलहे, तुम देखी हैयडां गहगहे ॥ ६ ॥ अम कानें कुंमल क्ल

हुलें, तनु मनमथ कंमू खल नले ॥ अम माथे ऊलके राखडी,गले ऊबकती माणिक पदकडी ॥ ७ ॥ अति शोहती निलवट तिलकडी. मणिमेहुलें मोहें कटितडी ॥ भुजें अंगद ज्युं अति मणि जडी. अम सांनल पिंयुडा वातडी ॥ ८ ॥ अम अंगुली दीपे मुड्डी. तुम विरहे नावे निड्डी ॥ मणि सोवन खलकती चूडली, प्रिय पामीश्र पुएयें रूअडी ॥ ए ॥ उत्कंठित आवी वहेल डी, पण लाम ते प्रेम गहेलडी ॥ रंगें नाचुं लोडत बांहडी, तुम करगुं हाथे टांहडी ॥ १० ॥ अमें कंत तुमारी दासडी, शिर वहेशुं तुमची खासडी ॥ तुम लोपुं आण न लीहडी, उर धरशुं तोरी शीखडी ॥ ११ ॥ अम ता दासुं जांच ने सामिया, ते अजवें अमें सवि पामियां ॥ अमें देवदेवीनी सामिणी.तुल आवी छे वर कामिणी ॥ १२ ॥ उठ उठनें कंता करी रूपा, अम परण तुं मेहेली हवे त्रपा ॥ अमें तेवड तेवडी वेहेनडी,सवि एकमनी सवि नानडी ॥ १३ ॥ अमें काल विलंबण नवि सहुं, तुम आगल परमह हवे कहुं ॥ अम जीवितनें धरि हाथडी, कर तेहीनें आपण साथडी ॥१४॥ सुरसुंदरी चंग सोनागिणी. कंत कां कवेखे सुरागिणी ॥ अमें जीवुं शरणें तुम तणे, हवे पडिवल जोइणि एम भणे ॥ १५ ॥ इति गीतं ॥

॥ पूर्वढाल ॥ सुसर जनकछुहजनें काजें. नृपनुं जे वड शील ॥ दृष्टता कहेवा गीत ए जांख्युं. जिनधर्म प्रियनी लील ॥ अ० ॥ ३ ॥ सना जोइनें कहेवुं सघले, जेम तेम कहेवुं नाहीं ॥ राग वसंतादिक वर ढालें, गावा सु सरें आहिं ॥अ०॥ ४ ॥ अंग हारादिक विभ्रमें मोहन, मृतकंदर्प जगावे ॥ एहवां त्रण दिवस लगें गाइ, तनमय तान लगावे ॥अ०॥५॥ गाइ गाइनें थाकी सघली,नाची नाची खेदाणी ॥ वजनें टंक न लागे तेम नृप,शोन न च लियुं जाणी ॥ अ०॥६ ॥ सातमे दिन हवे तूठी देवी,महाज्वाला अनिदानें॥ शिर उपर करे सूरज वदयें, पुष्पवृष्टि वहु मानें, मेंतो नजें दीठो रे॥म०॥७॥ ए आंकणी ॥ करती दश दिशिमां अजुआलुं, रूप प्रगट देखावे ॥ सिद्ध वि द्यानुं जब ते आवी, योगिणी नाठी जावे ॥ मे०॥८ ॥ महाज्वाला मधुरे स र बोले, हूं तूठी तुज राय ॥ शील ध्यान थिरता तुज देखी,पण सुण तुं थिर थाय ॥ मे० ॥ ए ॥ हे वत्स वर देइ नवि शकीयें, विधि कीधा विण तुजनें ॥ जो वर इछे तो विधि कर तुं, नृप कहे विधि कहो मुजनें ॥ मे० ॥१०॥ एक जीवनुं मांस जो आपे, तो मुज उपजे प्रीत ॥ राय कहे हुं जैन छुं जा

चो, सहु जीव माहारा मित्त ॥ में० ॥ ११ ॥ विण अपराधी जीव न मारुं जो तुज जोइयें मांस ॥ तो मुज तनु छेदीनें आपुं, श्यानें करे विखास ॥ ॥ में० ॥ १२ ॥ देवी कहे तो एमज कर तुं, तव नृप लीये करवाल ॥ छेदे उरु तव खड्ग उलाली, लीये देवी वजमाल ॥ में० ॥ १३ ॥ देवी कहे हुं पण हुं जैनी, मांसनो खप नहीं माहारे ॥ दया सत्वनें जैन धर्म तुज, परख्यो में धरी प्यारें ॥ में० ॥ १४ ॥ जगत वीर साधर्मिक माहारो, पा वसिद्धि देउं विद्या ॥ योगिणी प्रमुख आकर्षणी ले तुं, तव नृप प्रणमे अनिंद्या ॥ में०॥१५॥ पूजा देई विधि पूर्वक विद्या,लिये हर्षे नृपाल ॥ देव ता प्रमुख त्रिविध हरे उपद्रव, वाजुबंध तेणें ताल ॥ में०॥ १६ ॥ सूर्यहा स वली खड्गने आपे, चक्र दिये वर धार ॥ वैरी चक्र निकंदन करवा, शस्त्र शिरोमणि सार ॥ में० ॥ १७ ॥ शक्ति शस्त्र आपीनें देवी, अदृश्य मान ते थाय ॥ दिव्य मूर्ति हवे पूजे राजा, स्तवना करे सुखदाय ॥ में० ॥ ॥ १८ ॥ ज्वालामालिनी विद्या वोले, लक्षादिक जप होम ॥ करतां पण को इकनें सीद्धुं, बहुनें थाउं जेम व्योम ॥ में० ॥ १९ ॥ ताहरे अल्प प्रयासें सीधी, दृढधर्मा तुज जाणी ॥ आकर्ष्या सुर आवशे ताहरे, विद्या सिकशे शाणी ॥ में० ॥ २० ॥ एम कही रायनां दिलमां पेठी, इच्छित आपे समरी ॥ विश्वमां अर्थे ते आपे त्रूठी, वलवंती ए अमरी ॥ में० ॥ २१ ॥ हवे दे वीनी मूर्ति पूजी, वली जे देव होय पासें ॥ वली प्रमुखें संतोषी निसरे,देव गृहथी उल्लासें ॥ में० ॥ २२ ॥ छठे खंडे वीशमी नांखी, पद्मविजय कहे ढाल ॥ सुंदर ए तुमें श्रोता सुणजो, आगल वात रसाल ॥ में० ॥ २३ ॥ ए ढालना दोहा सात अने वच्चमां गीतनी गाथा पंदर मली पीस्तालीश गाथा थइ सर्व गाथा ॥ ६३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विद्याधर परिवारशुं, प्रणमे आवी पाय ॥ सिद्ध विद्या थइ सुखथकी, प्रश्न नृप पूछाय ॥ १ ॥ नृप यथारथथी जणे,चमत्कार लह्या चित्त ॥ स्तव ना नृपनी सहु करे, परगट धरता प्रीति ॥ २ ॥ पूजी जिन प्रणमी गुरु,सा गर सम गंभीर ॥ आहार करे दिन आठमे, विद्याधरशुं वीर ॥ ३ ॥ अपर विद्या आपे वली, शुभ मुहूर्त शुभवार ॥ आकाशगामिनी आदि दे, सि द्धविद्या श्रीकार ॥४॥ मासे सिके मेहनतें, ते साधे ततकाल ॥ शील तथा

वली तत्तनें,परनावे नरपाल ॥ ५ ॥ धरणीधव तातनें,पवनवेगसुं पत्र ॥ पोंहे रही विया प्रगट, संनारे परी तत्र ॥ ६ ॥ तत्र अनुनावे ते तुरत, आकर्षणी धाय ॥ जगतीपति कहे योगिणी,सांनलो रे सुखदाय ॥७॥ पवनवेगना पुत्रनें, मूको हृदये मानि ॥ नहीं तो हुं मूकुं नहीं, सुपजो ता नी वाणि ॥ ८ ॥ अंगदना अनुनावथी, उपद्रव न करो अंग ॥ मूकुं क हे मूको तुमें, स्वामी तुमें शुनवंग ॥ ९ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ मूके श्रीजयानंदजी रे, योगिणी गइ निज ठाम ॥ मनना रंगी ॥ वे हो मांगी तेहनी रे,आवी नृप पुर ताम ॥ १ ॥ सुखना संगी ॥ आवो आ वो रे सजन सुखसंगी. कीजें वात एकांतें सुरंगी, गुणीसंगें वाधे प्रीति ॥म न० ॥ ए आंकणी ॥ नृपतिनें वली तातनें रे, चरणे लागो तेह ॥म०॥ प वनवेग निजपुत्रनें रे, आलिंगे धणे नेह ॥ सु० ॥आ०॥ २ ॥ पुत्र आगल सघलो कहे रे, निज उद्यम अवदात ॥ म० ॥ नृपनें लाव्यो एणी परें रे, ते सघली कही वात ॥ सु० ॥ आ०॥ ३ ॥ कोइ न मूकावी शक्यो रे, यो गिणी धरथी तुज ॥ म० ॥ राजराजायें मूकाविथो रे, मेहेर करी बहु सुज ॥सु०॥आ०॥४॥ प्राण दीयां वत्स तुजनें रे, वज्रवेग सुणी एम ॥म०॥त्तवना करे नर रायनी रे, वज्र वेग धरी प्रेम ॥ सु० ॥ आ० ॥ ५ ॥ जाये गगनें जे हने रे, योगिणी वांछे ताम ॥ म० ॥ नाग्ये अम तुम पामीया रे, आवो अमचे धाम ॥ सु० ॥ आ० ॥ ६ ॥ प्राहुणा गति करुं तुम तणी रे, नृपति करे विचार ॥ म० ॥ प्रार्थना नंग न कीजीयें रे, एम करी कहे स्वाकार ॥ सु० ॥ आ० ॥ ७ ॥ योगिणी निज हार्यें करी रे, स्नानादिक प्रतिपत्ति ॥ ॥ म० ॥ अमृत सम आहारें करी रे,करती अतिशय नक्ति॥सु०॥आ०॥८॥ गीत नाटकें संतोषिया रे, हवे रहेवानें रात ॥ म० ॥ वाराही हवनें नृप ति रे,राख्या जगत विख्यात ॥ सु० ॥ आ० ॥ ९ ॥ विद्याधर आव्यो घरें रे, रातें राख्या दोय ॥ म० ॥ शय्या सुगंधी मृडु घणी रे, तिहां सुआरवा सो य ॥ सु० ॥ आ० ॥ १० ॥ कामाख्या स्वामिनी कन्हे रे,योगिणी जइ कहे तेह ॥ म० ॥ निज परानव आकर्षवुं रे, सघली लीधो जेह ॥ सु०॥ आ०॥ ॥ ११ ॥ कामाख्या कहे क्रोधथी रे, भ्रष्ट करुं तात ॥ म०॥ तुमनें सोंपुं बांधिनें रे, इछित करो करी दात ॥ सु०॥ आ०॥ १२ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक

सवे रे, देखी माहारुं रूप ॥ म० ॥ मूंझाइ रहे मनथकी रे, कोण मातर नर नूप ॥ सु० ॥ श्रा० ॥ १३ ॥ एम आश्वासना देइनें रे,आवी जिहां छे नूप ॥ म० ॥ विश्वमोहन परगट करे रे, कामाक्षा निज रूप ॥ सु० ॥ ॥ श्रा० ॥ १४ ॥ काम जगावे योगिणी परें रे, एहवी चेष्टा करंत ॥ म०॥ चार पोहोर नोग प्रार्थना रे, करी पण नवि खोनंत ॥ सु०॥ श्रा० ॥१५॥ शील अमृत जेणें सादाशुं रे, ते केम ठांमघुं खाय ॥ म० ॥ जैन जीवित तजे आपणुं रे, परस्त्रीयें पण न लेपाय ॥ सु० ॥ श्रा० ॥ १६ ॥ थाकी प्रात समय हवे रे,शीलथी अचरिज थाय ॥ म० ॥ स्तवना करती आपी यो रे, लोह मोघर वज्रकाय ॥ सु० ॥ श्रा० ॥ १७ ॥ अक्षय वाण नाथा बिहु रे, वज्रपृष्ठ धनु दाय ॥ म० ॥ आग्नेय नाग पाशादिका रे, दिव्य श स्त्र समुदाय ॥सु० ॥श्रा०॥ १८ ॥ आप्यां अनेक शस्त्र नूपनें रे, ठहे खर्ग ढाल ॥म०॥ एकवीशमी पद्में कहीरे,शीलथी मंगल माल ॥सु०॥श्रा०॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ कुष्ट ज्वर कंमू हरे, वन्हिदाह व्रण जाय ॥ शीत आतप जल क्लेद सवि, संहरे उपजे साय ॥ १ ॥ सर्व अंगें सुख दे फरस, अविनाशी उ द्योत ॥ नहीं मलिन नंगुर नही, जेहनी जागती ज्योत ॥२॥ एहवां वस्त्र ते आपती, वारु करी वखाण ॥ आपे बहु अलंकारनें,पुण्य तणे परिमाण॥३॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हमचडीनी देशी ॥

॥ मरकी वारवा मुकुट ते आपे, कुंमल ज्वरने टाले ॥ कुष्टादिक व्याधि हरे तेहवा, कंठ आनूपण आले रे ॥१॥ हमचडी ॥ जेर हरण मुद्रा ते आपे, वली केयूर उदार ॥ शाकिणी माकिणी व्यंतर प्रमुखना, दोषने टा लण हार रे ॥ ह० ॥ २ ॥ घातनां व्रण पूरावे सहेजें, कटक जडाव ते आपे ॥ सर्व वश थाये वली एहवो, हार गलामां थापे रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ जे वांकां होय ते थाये सरलां, आपे कटि कंदोरो ॥ एम सप्रनाव अलंकृत दे तां, वाध्यो पुण्यनो जोरो रे ॥ ह०॥ ४ ॥ देवता तूठा शुं नवि आपे, वली रायनुं शील ॥ तास प्रनावथकी होये सघले, जयजयकार सलील रे ॥ह० ॥ ५ ॥ अर्घ्यपूजा दीधी जब रायें, तब ते अदृश थाय ॥ नइ योगिणीनें कामाक्षा कहे, दैयहेइये न माय रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ शील चलाववा हेतें एह नो, बहु उद्यम में कीधो ॥ पण न चलावी शकी हुं एहनें, एह केम जाये

लीयो रे ॥ ह० ॥ ७ ॥ वायुथकी जेम मेरु न चले, तेम ए धर्मे धीर ॥ आ
रायी सत्कार करो तुमें, एह महा वडवीर रे ॥ ह० ॥ ८ ॥ उत्तम क्षेत्र ए
हनें जाणी, वावो बीज ए गाम ॥ फलवंतुं ए बोहोलुं थाशे, आवशे आग
ल काम रे ॥ ह० ॥ ए ॥ तास वचन प्रमाण कर्युं तव, तेह गइ गुण का
म ॥ कामाक्षा निज थानक पोहोती, शुद्ध वासना धाम रे ॥ ह० ॥ १० ॥
तेह पीठ उपर हुए वेगा, दोय विद्याधर राय ॥ योगिणीयो मुख आगल
आवे, चमत्कार चित्त लाय रे ॥ ह० ॥ ११ ॥ सवली नेली मली खमावे,
आपे ते अलंकार ॥ दिव्य वस्त्र तेम भिन्न भिन्न सवि, आपे अति धरी
प्यार रे ॥ ह० ॥ १२ ॥ ते सघलुं अंतेउर काजें, दिव्य शस्त्र दिये ताम ॥
अदृश प्रमुख शक्ति बहु आपे, करती तहु गुणग्राम रे ॥ ह० ॥ १३ ॥ पूजा
स्तवना करी संतोषी, वज्रवेगें सुरनारी ॥ तेहवें मत्सर रहित थइ वली,
रायनुं दाक्षिण्य धारी रे ॥ ह० ॥ १४ ॥ हेमकूट गिरि उपरें आपे, नृप वयणें
तस ठाम ॥ अर्घ्य दिये तव अदृश थाये, जाये निज निज धाम रे ॥ ह० ॥
॥ १५ ॥ सरसां गीत ए नृप चरित्रनां, बांधे रासा बंध ॥ गिरि वन प्रमुखें
क्रीडा करती, योगिनी गाय प्रबंध रे ॥ ह० ॥ १६ ॥ खेचरी योगिणी पासें
शीखे, एह चरित्र रसाल ॥ खेचरी पास मनुष्यणी शीखे, चित्त धरी प्रेम
विशाल रे ॥ ह० ॥ १७ ॥ प्रसिद्ध थयुं ए चरित्र भुवनमां, हवे ते त्रिहुं ज
ण आवे ॥ हेमकूट नग उपर हेमपुर, पूरव रीतें वसावे रे ॥ ह० ॥ १८ ॥
शीलगुणें एम विद्या औषधि, पाम्या वली सत्कार ॥ आपद सघली दूर प
लाणी, हूआ जयजयकार रे ॥ ह० ॥ १९ ॥ एम जाणीनें शील धरो तुमें,
इह परभव सुखकारी ॥ शीलें विघन टले वली संपद, थावे अति उपकारी
रे ॥ ह० ॥ २० ॥ छठे खंमें बावीशमी ए, भांखी रूडी ढाल ॥ श्रीजयानं
दना रासमां सुणतां, होवे मंगलमाल रे ॥ ह० ॥ २१ ॥ सत्यविजय प
न्यास संवेगी, कपूरविजय तस शिष्य ॥ तास शिष्य श्रीक्षिमाविजय वर, च
डती जास जगीश रे ॥ ह० ॥ २२ ॥ तास शिष्य पंमित जिनविजयो, सो
भागी शिरदार ॥ पंमित उत्तमविजय सोभागी, समता गुण भंमार रे ॥
ह० ॥ २३ ॥ तेहना चरण कमलें अलि सरिखो, पद्मविजय ए भांख्यो ॥
छठो खंम ए पूरण कीधो, गुणिजनें चितमां राख्यो रे ॥ ह० ॥ २४ ॥ ६८७ ॥

॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणिविनेयपंमित पद्मविजयगणिविरचिते श्रीश्री जयानंदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे श्रीश्रीजयानंदराज्यप्राप्तिविद्याप्ति स्वयोगिनीदेवीप्रसादयोगिनीवशीकारविद्यासाद्धिसमृद्धिप्राप्तिनिदानशीलाव दातवर्णनोनामा षष्ठः खंमः समाप्तः ॥ खंम पंच मलीने गाथा ॥ ३२०३॥ षष्ठखंमे गाथा ॥६८७॥ सर्वगाथा ॥३८९९॥ पूर्वखंमपंचके उक्त श्लोक॥५९॥ षष्ठखंमे श्लोक ॥१९॥सर्व श्लोक॥७८॥सवईयो एक,समस्या एक,डुहो एक॥

॥ अथ ॥

॥ सप्तम खंमः प्रारज्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ जक्ती धर्मचक्री नमुं, शोलशमा जिनशांत ॥ शांतिगनाशयथी करी, ज्ञगनीनो एकांत ॥ १ ॥ खंम उठो कह्यो खांतिथी, वारु विविध विचार ॥ सातमो खंम शोहामणो, पत्रणुं पुण्य प्रकार ॥ २ ॥ पर उपकार प्रगट करी, माने कृतारथ मन्न ॥ निजपुर जावा नृप कहे, कहे खेचरनें कन्न ॥ ३ ॥ शेठ विचारे ए खरो, कन्या नही करे पाणि ॥ करी उपकार कृता र्थथी, प्रत्युपकार विनाण ॥४॥ यतः ॥ इयमत्र सतामलौकिकी,महती का पि कठोरचित्तता ॥ उपकृत्य नवंति दूरतः परतः प्रत्युपकारजीरवः ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ कोइ उपायांतर करी, लेइ जावं निज द्वार ॥ कोइ रीतें कन्या देउं,नाख्यें ए नरनार ॥ ५ ॥ विद्याधर कहे वयणथी,सिद्धापतनें स्वामि ॥ जिनवंदननें योग्य ठो,वैताढ्यें वर गाम ॥ ६ ॥ परउपकारी पामीया, एहज अवसर आज ॥ ते सांजली जावा तिहां, रीज करे महाराज ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥

॥ एणि समे एक विद्याधरजी, आवीनें करे परणाम ॥ श्रीजयानंदजी पूठताजी, कुण तुमें शुं तुम नाम ॥ १ ॥ श्रीजयानंदजी जग जयोजी ॥ ए आंकणी ॥ कारणे श्ये इहां आवीयाजी,उत्तर तेह दीये जाम ॥ पवन वेग ईशनो नंदनजी, वांजीयो एणी परें ताम ॥ श्री० ॥ २ ॥ रे नाइ गंध मलि बहु दिनजी, देखीयो तुं स्वग राय ॥ शांकसंकथकी पीडियोजी, आज तुं केम इहाद ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इम होये तो कहो नृप प्रत्येजी, सांत्वि इ स भंजक एह ॥ नार्यना सहूनी पूरी करेजी, तव नृपनें कहे तेह ॥ श्री० ॥

॥ ४ ॥ दक्षिण श्रेणी वैताढ्यमांजी.हुं चंद्रपुरी तणो स्वामि ॥ चंद्रगति चंद्र माला प्रियाजी, रूप तणी तेह धाम॥श्री०॥५॥मद गल्यो तेहना रूपथीजी. गौरी अ्रणनयन भरतार ॥ लखमी जनार्दननें वरीजी. एहवी अद्भुत ना रि ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तेहशुं विषयसुख भोगवुंजी. पुत्री हुइ मुज एक ॥ ना मथी ते चंद्रसुंदरीजी. बहु कलावंत विवेक ॥श्री०॥७॥ यौवन आवी ते अ नुक्रमेंजी, नवि लह्यो वर अनुरूप ॥ तस गुणें इंद्र सरिखो नहीजी. भूचर खेचर नही भूप ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मानसरोवरें अन्यदाजी.हुं गयो क्रीडवा हेत ॥नारिशुं नीरक्रीडा करीजी. तन्मय चित्त तिहां देत ॥ श्री० ॥ ९ ॥ एक विमानथी नीकलीजी. सुरें तिहां कीधलुं स्नान ॥ रूपवंती देखी मुज प्रियाजी, हरी गयो तेह असमान ॥ श्री०॥ १०॥ तेह विमान देखारीनेंजी. वनिका जेम सीचाण ॥ क्रोधथी पूठें हुं दोडीयोजी, करमांहे लेइ कृपाण ॥ श्री० ॥ ११ ॥ हूकडो आवियो जाणीनेंजी. मूठीयें शिरमांहे घाय ॥ सुर वरें दीधलो तेहथी जी. पीडाथी मूर्छा थाय ॥ श्री० ॥ १२ ॥ हुं पडयो पद्मिनीजालमांजी. सरोवरमां कोइ ठाय ॥ जलकमल शीतवायें करीजी, मूर्छा माहारी जाय ॥ श्री० ॥ १३ ॥ आंख उघाडो जोवुं तदाजी, आगल को न देखाय ॥ तेह वियोग पीडायकीजी, मुज बहु चित्त खेदाय ॥श्री०॥ ॥ १४ ॥ आवियो विलपतो निज घरेजी. चेतना गतपरें ताम ॥ मंत्री प्रमु खें मुज पूछीयुंजी. तव कह्यो व्यतिकर वाम ॥ श्री० ॥ १५ ॥ देइ आश्वा सना मुनेंजी. सरोवर सिंधु वन द्वीप ॥ नग प्रमुख थानकें मोकलेजी. शु द्धिनें सुभट ते खीप ॥ श्री० ॥ १६ ॥ तेह विलखा थइ आवीयाजी,तेणें कह्युं नवि लही शुद्धि ॥ वली मूर्छा थइ सज थयोजी,उपदिशे मंत्री निज बुद्धि ॥ श्री० ॥ १७ ॥ स्वामि चक्रायुद्ध राजीयोजी, विद्यावलथी लही ता स ॥ जो प्रिया मूकावे एकदाजी, वीनवियें तस पास ॥ श्री० ॥ १८ ॥ एम आशायें तिहां जइजी, वीनव्यो करि मनोहार ॥ समरथ पण कांय नवि करयुंजी, कामचित्त धरिय लगार ॥ श्री० ॥ १९ ॥ पुरुषनुं भाग्य फले सदाजी,सेवा न फले कोइ काल ॥ निजपुर वनमां विलखो थइजी. आवीयो हुं तेणे ताल ॥ श्री० ॥ २० ॥ यतः ॥ तोयं नयेंद्रमपि चक्रधरं भजस्व, मंत्रान् प्रतापय वशीकुरु चेटकादीन् ॥ दुर्गाण्यटस्व विकटान् स्तर वारिराशीन्, भाग्यं विना नहि तथापि समीहितानि ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥

चारण मुनिवर तिहां मल्याजी, ज्ञानी गुरुना नम्या पाय ॥ परिछदशुं तस परिसरेजी, वेगे हुं चित्त लगाय ॥श्री०॥ २१॥ मुनिवरें देशना तव करीजी, पुण्यथी देव जिनराय ॥ गुरु मले शुद्ध चारित्रीयाजी. धर्म तस लावित था य ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मन अनुजाइ ललना मलेजी, परिछदनें घणे स्नेह ॥ पुत्र विनीत पुण्यें मलेजी, हवे सुणो पापथी जेह ॥ श्री०॥ २३ ॥ नीच कु लें जन्म दरिद्रताजी, वचन निष्ठुर घण रोग ॥ वध पराजव अपयश घणो जी, डुष्ट कुटुंब संयोग ॥ श्री० ॥ २४ ॥ पाप ठांमी ते कारणेजी, धर्म करियें नित्यमेव ॥ इष्ट पामे नें अनिष्ट टलेजी, जस मन श्रीजिनदेव ॥ ॥ श्री० ॥ २५ ॥ सातमे खंम पहेली कहीजी, पद्मविजयें वर ढाल ॥ श्री जयानंदना रासमांजी, धर्मथी मंगलमाल ॥श्री०॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

॥ सांजली मुनि वयणां सखर, कहे नृप केम करुं धर्म ॥ पत्नीवियो ग पीडे घणुं, करुं बंध बहु कर्म ॥ १ ॥ प्रसन्न थइ जांखो प्रजु, कामिनी अपहरि केण ॥कारण शुं नें छे किहां,जडशे के नही जेण ॥२॥ योग्य पु त्री जरता जीको, जांखो मुज जगवंत ॥ वली तुम देखी मुद वधे, ते कहो सहु विरतंत ॥ ३ ॥ महाजाग्य कहे मुनिवरु, पूरव जव परबंध ॥ जाणुं ज्ञानें जगतनें, सांजलो एह संबंध ॥ ४ ॥ संदेह जाशे सामटो, इणहिज जरतें आम ॥ शेठ पूरणजइ सिद्धपुरें, धर्मवंत धनधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बेडले जार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी॥

॥ दोय पुत्र तेहनें थया सुंदर, कोशल देशल नाम ॥ बालपकी सम किती व्रतवंता, जैनधर्मशुं काम ॥ १ ॥ जविजन जाव धरीनें एह, सांजलो चरित्र रसाल ॥ सांजली कर्म न करशो कोइ, जेहथी जवजंजाल ॥ ज०॥ ॥ २ ॥ गुणदत्त शेठ वसे तिण पुरमां, जैनधर्मी गुणवंत ॥ गुणमाला ना र। गुणसुंदरी, पुत्री बहु रूपवंत ॥ ज०॥ ३ ॥ देव गुरुनी जक्ति करे घणुं, बालथी धर्मे राती ॥ देवराज नृपनो एक सागर, मंत्री मिथ्यामति माती ॥ ज० ॥ ४ ॥ चैत्यथकी नीकलतां दीठी, गुणसुंदरीनें तेणें ॥ जाची पण नवि आपी तातें, मिथ्यात्वी छे जेणें ॥ ज० ॥ ५ ॥ कोशलनें परणावी तातें, कन्या गुणवती नामें, विधिपूर्वक पूर्णजइ आराधी, पोहोता सुरवर धामें ॥ ज०॥ ६ ॥ कोइक दिवस पठी हवे जाचे, गुणदत्त शेठनी कन्या ॥ को

शत्त देशल काजें रूडी, सायमिणी वर धन्या ॥ न० ॥ ७ ॥ तेणें पण पर णावी नली नांते, सागर ते हवे जाणो ॥ देशलनें ते जेम जेम देखे, दुःख लहे मत्सर आणी ॥ न० ॥ ८ ॥ नामें शेठ तिहां वैश्रमण. तेहनें पुत्र ठे चार ॥ धन धनपतिनें धवल ठे त्रीजो, सुजश चोथो गुणधार ॥ न०॥ ९॥ परणाव्या चारेनें तातें, सोंप्यो सवि व्यापार ॥ शेठ करे निज आतम साध न, पामवा नवोदधि पार ॥ न० ॥ १०॥ काल गयो बहु एणी परें करतां, अंते धर्मना जाण ॥ मरण उचित करणी करवानें,स्वजन तेडे तेणें टाण॥ न०॥ ११ ॥ सात लाख द्रव्य सातें क्षेत्रें.थापे शेठ ते हर्षे ॥ चार पुत्र बोला वी नांखे, रहेजो प्रीतें सरिखे ॥ न० ॥ १२ ॥ प्रीतें सहु निर्वाह थशे तुम, बाहिर वात न पडशे ॥ नेला रहेतां कोइक कालें, कदी कोइ आथडशे ॥ न० ॥ १३ ॥ त्यारें जुदा रहेवुं पडशें, तव घरनें चिहुं खूणे ॥ कलश एके को दाट्यो ठे में, ईशानादिक कूणे ॥ न०॥ १४ ॥ ते लेहेजो अनुक्रमें वहें ची, पण संक्लेश न करजो ॥ जो संक्लेश करो तो सहुये, शोखामण नली धरजो ॥ न० ॥ १५ ॥ एम शीखामण सहुनें आपी, विधिर्ये धर्म आरा धी ॥ दृढता धरीनें शेठे सुरगति, सहेजें सुखमां साधी ॥ न०॥ १६ ॥ चारे पुत्रें प्रीतें काढयो, तातवयणें चिरकाल ॥ नारीना प्रेर्या जुदा थावा, कलश लीये संनाल ॥ न० ॥ १७ ॥ निज निज नामांकित ते लेवे, पहेले मृत्तिका खंम ॥ बीजामां हाड त्रीजामां कागल,हवे चोथामां प्रचंम ॥ न०॥ १८ ॥ कंचन मणि नरियां ते देखी,त्रणें कीध विचार ॥ तात धर्मा पण लूटे लेतरीया, विश्वासें तेणी वार ॥ न० ॥ १९॥ लघुनें सघली ल खमी आपी, वंचना न होये प्रमाण ॥ लखमी जूदी वहेंची लीजें, चारे नाग समान ॥ न० ॥ २० ॥ वेंचवा लघु पासें त्रण मागे, पण ते लघु नवि आले ॥ साखीया स्वजननें साख पूरावी, क्लेश करे ततकालें ॥ न० ॥ ॥ २१ ॥ स्वजन जोइनें चित्त विचारे, एहुं कहीयें नाइ ॥ साखी आपण प ण अणघटती, वात ते करियें कांइ ॥ न० ॥ २२ ॥ जगडो नवि नांग्यो ए कोपथी, स्वजनशुं गया राजद्वार ॥ सघलो व्यतिकर तिहां संनलाव्यो, सां नली करे विचार ॥ न० ॥ २३ ॥ एकें कणा पांचशें मंत्री, करवा बेठा न्या य ॥ पण कोइ नहीं समरथ चूकववा, तव चिंतवे ते राय ॥ न० ॥ २४ ॥ सागर प्रमुख ते सघला थाका. पुरमां पडह वजावे ॥ जे कोइ एह विवा

चारण मुनिवर तिहां मल्याजी, ज्ञानी गुरुना नम्या पाय ॥ परिछदशुं त परिसरेजी, वेगो हुं चित्त लगाय ॥श्री०॥२१॥ मुनिवरें देशना तव करीः पुण्यथी देव जिनराय ॥ गुरु मले शुद्ध चारित्रीयाजी. धर्म तत्त्व नावित य ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मन अनुजाइ ललना मलेजी, परिछदनें घणे स्नेह पुत्र विनीत पुण्यें मलेजी, हवे सुणो पापथी जेह ॥ श्री०॥ २३ ॥ नीच लें जन्म दरिद्रताजी, वचन निष्ठुर घण रोग ॥ वध पराजव अपयश घ जी, डुष्ट कुटुंब संयोग ॥ श्री० ॥ २४ ॥ पाप ग्रंथी ते कारणेजी, ध करियें नित्यमेव ॥ इष्ट पामे नें अनिष्ट टलेजी, जस मन श्रीजिनदेव ॥ श्री० ॥ २५ ॥ सातमे खंम पहेली कहीजी, पद्मविजयें वर ढाल ॥ जयानंदना रासमांजी, धर्मथी मंगलमाल ॥श्री०॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३

॥ दोहा ॥

॥ सांजली मुनि वयणां सखर, कहे नृप केम करुं धर्म ॥ पत्नीवि ग पीडे घणुं, करुं बंध बहु कर्म ॥ १ ॥ प्रसन्न थइ नांखो प्रजु, कामि अपहरि केण ॥ कारण शुं नें छे किहां, जडशे के नही जेण ॥२॥ योग्य त्री नरता जीको, नांखो मुज नगवंत ॥ वली तुम देखी मुद वधे, ते कह सहु विरतंत ॥ ३ ॥ महानाग्य कहे मुनिवरु, पूरव नव परबंध ॥ जा ज्ञानें जगतनें, सांनलो एह संबंध ॥ ४ ॥ संदेह जाशे सामटो, इणवि नरतें आम ॥ शेठ पूरणनइ सिद्धपुरें, धर्मवंत धनधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बेडले नार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी

॥ दोय पुत्र तेहनें थया सुंदर, कौशल देशल नाम ॥ बालपकी स किती व्रतवंता, जैनधर्मशुं काम ॥ १ ॥ नविजन नाव धरीनें एह, सांन चरित्र रसाल ॥ सांनली कर्म न करशो कोइ, जेहथी नवजंजाल ॥ न० ॥ २ ॥ गुणदत्त शेठ वसे तिण पुरमां, जैनधर्मी गुणवंत ॥ गुणमाला न र। गुणसुंदरी, पुत्री बहु रूपवंत ॥ न०॥ ३ ॥ देव गुरुनी नक्ति करे घणुं बालथी धर्मे राती ॥ देवराज नृपनो एक सागर, मंत्री मिथ्यामति मात ॥ न० ॥ ४ ॥ चैत्यथकी नीकलतां दीठी, गुणसुंदरीनें तेणें ॥ जाची प नवि आपी तातें, मिथ्यात्वी छे जेणें ॥ न० ॥ ५ ॥ कौशलनें परणाव तातें, कन्या गुणवती नामें, विधिपूर्वक पूर्णनइ आराधी, पोहोता सुरव धामें ॥ न०॥ ६ ॥ कोइक दिवस पछी हवे जाचे, गुणदत्त शेठनी कन्या ॥ क

शल देशल काजें रूडी, साधर्मिणी वर धन्या ॥ न० ॥ ७ ॥ तेणें पण पर णावी नली नांते, सागर ते हवे जाणो ॥ देशलनें ते जेम जेम देखे, दुःख लहे मत्सर थाणो ॥ न० ॥ ८ ॥ नामें शेठ तिहां वैश्रमण, तेहनें पुत्र ने चार ॥ धन धनपतिनें धवल ने त्रीजो, सुजश चोथो गुणधार ॥ न०॥ ९ ॥ परणाव्या चारेनें ताते, सोंप्यो सवि व्यापार ॥ शेठ करे निज आतम साध न, पामवा नवोदधि पार ॥ न० ॥ १० ॥ काल गयो बहु एणी परें करतां, अंते धर्मना जाण ॥ मरण उचित करणी करवानें, स्वजन तेडे तेणें टाण ॥ न० ॥ ११ ॥ सात लाख इव्य साते क्षेत्रें, आपे शेठ ते हर्षे ॥ चार पुत्र बोला वी नांखे, रहेजो प्रीतें सरिखे ॥ न० ॥ १२ ॥ प्रीतें सहु निर्वाह थशे तुम, बाहिर वात न पडशे ॥ नेला रहेतां कोइक कालें, कदी कोइ आयडशे ॥ न० ॥ १३ ॥ त्यारें जुदा रहेवुं पडशे, तब घरनें चिहुं खूणे ॥ कलश एके को दाट्यो ने में, ईशानादिक कूणे ॥ न० ॥ १४ ॥ ते लेहेजो अनुक्रमें वहें ची, पण संक्लेश न करजो ॥ जो संक्लेश करो तो सहुये, शीखामण नली धरजो ॥ न० ॥ १५ ॥ एम शीखामण सहुनें आपी, विधियें धर्म आरा धी ॥ दृढता धरीनें शेठें सुरगति, सहेजें सुखमां साधी ॥ न० ॥ १६ ॥ चारे पुत्रें प्रीतें काढयो, तातवयणें चिरकाल ॥ नारीना प्रेर्या जुदा थावा, कलश लीधे संनाल ॥ न० ॥ १७ ॥ निज निज नामांकित ते लेवे. पहेले मृत्तिका खंम ॥ बीजामां हाड त्रीजामां कागल, हवे चोथामां प्रचंम ॥ न० ॥ १८ ॥ कंचन मणि नरियां ते देखी, त्रणें कीध विचार ॥ तात धर्मी पण जूठं ठेतरीया, विश्वासें तेणी वार ॥ न० ॥ १९ ॥ लघुनें सघली ल खमी आपी, वंचना न होये प्रमाण ॥ लखमी जूदी वहेंची लीजें, चारे नाग समान ॥ न० ॥ २० ॥ वेंचवा लघु पासें त्रण मागे, पण ते लघु नवि आले ॥ साखीया स्वजननें साख पूरावी, क्लेश करे ततकालें ॥ न० ॥ ॥ २१ ॥ स्वजन जोइनें चित्त विचारे, ए शुं कहीयें नाइ ॥ साखी आपण प ण अणघटती, वात ते करियें कांइ ॥ न० ॥ २२ ॥ कगडो नवि नांग्यो ए कोयथी, स्वजनशुं गया राजद्वार ॥ सघलो व्यतिकर तिहां संनलाव्यो, सां नली करे विचार ॥ न० ॥ २३ ॥ एकें कणा पांचशें मंत्री, करवा वेगा न्या य ॥ पण कोइ नहीं समरथ चूकववा, तव चिंतवे ते राय ॥ न० ॥ २४ ॥ सागर प्रमुख ते सघला थाका, पुरमां पडह वजावे ॥ जे कोइ एह विवा

चारण मुनिवर तिहां मल्याजी, ज्ञानी गुरुना नम्या पाय ॥ परिछदशुं
परिसरेजी, बेठो हुं चित्त लगाय ॥श्री०॥ २१॥ मुनिवरें देशना तव करी
पुण्यथी देव जिनराय ॥ गुरु मले शुद्ध चारित्रीयाजी. धर्म तस नावित
य ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मन अनुजाइ ललना मलेजी, परिछदनें घणे स्नेह
पुत्र विनीत पुण्यें मलेजी, हवे सुणो पापथी जेह ॥ श्री०॥ २३ ॥ नीच
लें जन्म दरिद्रताजी, वचन निष्ठुर घण रोग ॥ वध पराजव अपयश घ
जी, डुष्ट कुटुंब संयोग ॥ श्री० ॥ २४ ॥ पाप ठांमी ते कारणेजी,
करियें नित्यमेव ॥ इष्ट पामे नें अनिष्ट टलेजी, जस मन श्रीजिनदेव
॥ श्री० ॥ २५ ॥ सातमे खंम पहेली कहीजी, पद्मविजयें वर ढाल ॥
जयानंदना रासमांजी, धर्मथी मंगलमाल ॥श्री०॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३

॥ दोहा ॥

॥ सांनली मुनि वयणां सखर, कहे नृप केम करुं धर्म ॥ पत्नीवि
ग पीडे घणुं, करुं बंध बहु कर्म ॥ १ ॥ प्रसन्न थइ नांखो प्रज्जु, कामि
अपहरि केण ॥ कारण शुं नें ठे किहां, जडशे के नही जेण ॥२॥ योग्य
त्री नरता जीको, नांखो मुज जगवंत ॥ वली तुम देखी मुद वधे, ते क
सहु विरतंत ॥ ३ ॥ महाजाग्य कहे मुनिवरु, पूरव जव परबंध ॥ जा
ज्ञानें जगतनें, सांनलो एह संबंध ॥ ४ ॥ संदेह जाशे सामटो, इणहि
नरतें आम ॥ शेठ पूरणजइ सिद्धपुरें, धर्मवंत धनधाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बेडले नार घणो ठे राज, वातां केम करो ठो ॥ ए देशी

॥ दोय पुत्र तेहनें थया सुंदर, कोशल देशल नाम ॥ बालथकी स
किती व्रतवंता, जैनधर्मशुं काम ॥ १ ॥ जविजन नाव धरीनें एह, सांन
चरित्र रसाल ॥ सांनली कर्म न करशो कोइ, जेहथी जवजंजाल ॥ ज०
॥ २ ॥ गुणदत्त शेठ वसे तिण पुरमां, जैनधर्मी गुणवंत ॥ गुणमाला
र। गुणसुंदरी, पुत्री बहु रूपवंत ॥ ज०॥ ३ ॥ देव गुरुनी जक्ति करे घणु
बालथी धर्में राती ॥ देवराज नृपनो एक सागर, मंत्री मिथ्यामति मात
॥ ज० ॥ ४ ॥ चैत्यथकी नीकलतां दीठी, गुणसुंदरीनें तेणें ॥ जाची प
नवि आपी तातें, मिथ्यात्वी ठे जेणें ॥ ज० ॥ ५ ॥ कौशलनें परणाव
तातें, कन्या गुणवती नामें, विधिपूर्वक पूर्णजइ आराधी, पोहोता सुरव
धामें ॥ ज०॥ ६ ॥ कोइक दिवस पठी हवे जाचे, गुणदत्त शेठनी कन्या ॥

शल देशल काजें रूडी, साधर्मिणी वर धन्या ॥ न० ॥ ७ ॥ तेणें पण पर णावी नली नांते, सागर ते हवे जाणी ॥ देशलनें ते जेम जेम देखे, ङुःख लहे मत्सर आणी ॥ न० ॥ ८ ॥ नामें शेठ तिहां वैश्रमण, तेहनें पुत्र ठे चार ॥ धन धनपतिनें धवल ठे त्रीजो, सुजश चोथो गुणधार ॥ न०॥ ९ ॥ परणाव्या चारेनें तातें, सोंप्यो सवि व्यापार ॥ शेठ करे निज आतम साधन, पामवा नवोदधि पार ॥ न० ॥ १० ॥ काल गयो बहु एणी परें करतां, अंते धर्मना जाण ॥ मरण उचित करणी करवानें,स्वजन तेडे तेणें टाण ॥ न०॥ ११ ॥ सात लाख ऊव्य साते क्षेत्रें.आपे शेठ ते हर्षे ॥ चार पुत्र बोला वी नांखे, रहेजो प्रीतें सरिखे ॥ न० ॥ १२ ॥ प्रीतें सहु निर्वाह थशे तुम, बाहिर वात न पडशे ॥ नेला रहेतां कोइक कालें, कदी कोइ आथडशे ॥ न० ॥ १३ ॥ त्यारें जूदा रहेवुं पडशे, तब घरनें चिहुं खूणे ॥ कलश एके को दाट्यो ठे में, ईशानादिक कूणे ॥ न०॥ १४ ॥ ते लेहेजो अनुक्रमें वहें ची, पण संक्लेश न करजो ॥ जो संक्लेश करो तो सहुये, शोखामण नली धरजो ॥ न० ॥ १५ ॥ एम शीखामण सहुनें आपी, विधियें धर्म आराधी ॥ दृढता धरीनें शेठें सुरगति, सहेजें सुखमां साधी ॥ न०॥ १६ ॥ चारे पुत्रें प्रीतें काढ्यो, तातवयणें चिरकाल ॥ नारीना प्रेरया जूदा थावा, कलश लीये संनाल ॥ न० ॥ १७ ॥ निज निज नामांकित ते लेवे, पहेले मृत्तिका खंम ॥ बीजामां हाड त्रीजामां कागल, हवे चोथामां प्रचंम ॥ न०॥ १८ ॥ कंचन मणि नरियां ते देखी,त्रणें कीध विचार ॥ तात धर्मी पण जूठे ठेतरीया, विश्वासें तेणी वार ॥ न० ॥ १९॥ लघुनें सघली ल खमी आपी, वंचना न होये प्रमाण ॥ लखमी जूदी वहेंची लीजें, चारें नाग समान ॥ न० ॥ २० ॥ वेंचवा लघु पासें त्रण मागे, पण ते लघु नवि आले ॥ साखीया स्वजननें साख पूरावी, क्लेश करे ततकालें ॥ न० ॥ ॥ २१ ॥ स्वजन जोइनें चित्त विचारे, एशुं कहीयें नाइ ॥ साखी आपण प ण अणघटती, वात ते करियें कांइ ॥ न० ॥ २२ ॥ कगडो नवि नांग्यो ए कोयथी, स्वजनशुं गया राजद्वार ॥ सघलो व्यतिकर तिहां संनलाव्यो, सां नली करे विचार ॥ न० ॥ २३ ॥ एकें कणा पांचशें मंत्री, करवा बेठा न्याय ॥ पण कोइ नहीं समरथ चूकववा, तब चिंतवे ते राय ॥ न० ॥ २४ ॥ सागर प्रमुख ते सघला थाका, पुरमां पडह वजावे ॥ जे कोइ एह विवा

दनें जाजे, तस मंत्रि शिर गाजे ॥ न० ॥ १५ ॥ सातमे खंमें पद्मविजय
ही, बीजी ढाल रसाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां रूडी, सुणतां मंगल
ल ॥ न० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥६४॥

॥ दोहा ॥

॥ कौशल सांजली कानमां,पडह ठवे निज पाणि ॥ नृप आगल नमि
कहे, सांजलो राय सुजाण ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ आवो रंग लाग्यो रे, माणिगर महाराजा ॥ ए देशी

॥ सुणो नरराजा रे वाद हुं टालशुं, ऊगडो वांको ने अति एह ॥ कोप
खबर पडे तो टालजो, हुं टालुं निःसंदेह ॥१॥ आवो न्याय करजो रे, श्रे
तुमें सोनागी ॥ ए आंकणी ॥ एम कहे राजा रे तेहनें वयणडुं,तव तेणें
ज्या ते चार ॥ पूछे तात तुमारो जीवतां, श्यो श्यो करता व्यापार
आ० ॥ २ ॥ खेती वाडी हुं करतो तदा, पहेलो बोले ए रीति ॥ शेठ क
अन्न केटलुं तुम्ह थतुं, ते कहे धरी प्रीति ॥ आ० ॥ ३ ॥ लाख मूडा अ
आवतुं माहरे, पन्नर लाख ते मूल ॥ बीजो कहे हुं आपण माहरे, प
व्यापार अनुकूल ॥ आ० ॥ ४ ॥ वेचुं तुरगादिक दश सहस्रना,लान पन
लाख थाय ॥ त्रीजो कहे हुं व्याज वर्त्तरें, आपुं मंमलिक राय ॥ आ
॥ ५ ॥ पनर लाखनो लान तेहमां होवे, चोथो कहे मुज कोश ॥ स
प्यो हतो तस मूल जो कीजियें, पनर लाखनो जोस ॥ आ० ॥ ६ ॥
शल कहे नृपनें सुणो स्वामी, जे जे कामनो दक्ष ॥ ते ते काम सोंप
ए चारनें, सहुनें पन्नर लक्ष ॥ आ० ॥ ७ ॥ माटी कलशथी खेतर ज
णीयें, हाड कलशें पशुवृंद ॥ कागलथी नामें लेखे करी, धन पामे सुख
कंद ॥ आ० ॥ ८ ॥ परगट दीधी लखमी चोथा प्रत्यें, कोश तणो अधिक
र ॥ एहनें हतो तेणें तातें आपियो, नवि आवडे को व्यापार ॥ आ०
॥ ९ ॥ सरिखे नागें सरिखे आपियुं, मूर्ख करे रे विवाद ॥ चारे जाइ स
चली हर्षित थया, सहु गया मूकी विषाद ॥ आ० ॥ १० ॥ कौशलनी बु
ध्दिनें वरणवे, चारे धरता ते प्रीति ॥ तात उपर बहु आदर उपन्यो, तात
जाणे बहु नीति ॥ आ० ॥ ११ ॥ चमत्कार पाम्यो तस बुध्दिथी, राय कहे
सुणो शेठ ॥ ल्यो मंत्रीमुद्रा तुमें हर्षशुं, मंत्री सहु तुम हेठ ॥ आ०॥१२॥
कौशल कहे मुद्रा लेवुं नहीं, हुं श्रावक व्रत धार ॥ राज्य नियोगादिक में

पद्मखिर्यां, ए खर कर्म विचार ॥ आ० ॥ १३ ॥ मंत्रीमुद्रा विण नर राजी यो, मुख्यपणे करे तास ॥ सर्व कार्यमां पूछे एहनें, घरनो व्यय दीये खा त ॥ आ० ॥ १४ ॥ बीजा मंत्री बहु ईर्ष्या करे,सागर वली सुविशेष ॥ एक इष्यना सहु अनिज्ञापिया, तिहां ईर्ष्यानें रे द्वेष ॥ आ० ॥ १५ ॥ एक दिन मंत्री कहे नररायनें, रिपुमर्दन जेह राय ॥ दुर्दम बलीयो आण मानें नहीं, देवगिरि तस ठाय ॥ आ० ॥ १६ ॥ कौशल मोकलीयें तेणें कारणें, संधि करे बुद्धिमंत ॥ ग्रास खाये ते बलवंतो होय. परीक्षा पण होये सं त ॥ आ० ॥ १७ ॥ तेहनें योग्य ते भेटणुं आपीयें, सागरने कहे ताम ॥ एह दिशें अपूर्व ते मोकलो. एटलुं करो अम काम ॥ आ० ॥ १८ ॥ जा त्य अश्व वस्त्रादिक मोकलो, सांजली सहु हरखंत ॥ ईर्ष्यायें तस वयनें इ शतां, करंमीयो एक अर्पंत ॥ आ० ॥ १९ ॥ रत्नकरंक तेहमां धूर्ते जर्यो, मुद्रा देइने तास ॥ आप्यो तेणें पण सरलपणे ते ग्रह्यो, तेहनो धरी विश्वा स ॥ आ० ॥ २० ॥ कौशल लेइनें रे नृप आणापकी, देवगिरि पोहोतो नि हां नृप ॥ प्रणमी आगल भेटणुं मूकतो, नृप जाणे ए अनूप ॥ आ० ॥ २१ ॥ कुशलप्रश्नादि करे पूछे नृपति, कौशल कहे सुणो स्वाम ॥ संधि मेल करण मुज मोकल्यो, देवराय मुज स्वाम ॥ आ० ॥ २२ ॥ मित्राइयें करी रे प्रीति घरी घणी. भेटणुं मोकल्युं एह ॥ तव करंडक उघाडी जोईयो, चित्तमां धरी अति नेह ॥ आ० ॥ २३ ॥ सातमे खंडें रे ढाल त्रीजी कही, श्रीजयानंदनें ग स ॥ पद्मविजय कहे सांजलतां थकां, पामे लीलविलास ॥ आ० ॥ २४ ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धूली जस्यो पृथिवी धरे. दीठो कुंभरेदार ॥ कोप्यो नृप कौशल प्रति, वयण कहे तेणि वार ॥ १ ॥ तुज स्वामी उन्मत्त थयो.मरवानुं करे मन्न ॥ भेटणें धूल भरी करी. प्राभृत जुओ प्रछन्न ॥ २ ॥ क्रोध गहन्नन वलि कहे, तुज परिवार समेत ॥ वध्य नहीं नृप मंत्रवी. शुं करुं ए संकेत ॥ ३ ॥ तुज स्वामनें जइ तुरत. संजलावे धरी मान ॥ थाबुं हुं वनावजो. तेणें युद्धनुं करे तान ॥ ४ ॥ चित्तमां कौशल चिंतवे. नीति में संधी न्याय ॥ ईर्ष्यायें कर्युं एणी परे, एह मारणनो उपाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ यात्रा नवाणुं करीयें विमलगिरि. यात्रा नवाणुं करीयें ॥ ए देशी ॥
॥ नागर तुमारुं नारी ॥ नृपति जी ॥ नागर तुमारुं नारी ॥ रमतां रमतां

कौशल बोले, एणे वयणें निरधारी ॥ नू० ॥ चार बुद्धिनिधि चतुर विचक्ष
ण, बुद्धि उपनी अति सारी ॥नू०॥१॥ राय कहे तुं एम केम बोले, हृदयें
दृढता धारी ॥नू०॥ कनक कुंभमां रज कोण भरशे, चित्तमां जुर्ज विचारी॥
नू० ॥ २ ॥ नृप कहे कहो तुमें तेहनुं कारण, कौशल कहे अवधारी ॥ नू०॥
तुम प्रसाद होये तो हुं भाखुं, नृप कहे कहो सहु मारी ॥नू०॥ ३ ॥ मंत्री
कहे तिलपुरमां जाणो, उपद्रव थइ बहु मारी ॥ नू०॥ अंधजरेख्या देवी
आराधि, नरपति थइ उपगारी ॥ नू० ॥ ४ ॥ बहु चौटानी धूल भेली करी,
देवीयें तिहां अवतारी ॥ नू०॥तुष्टमान थइ एणी परें भाखे, करजो तिलक
सुखकारी ॥नू०॥५॥ मरकी उपद्रव सघलो टलशे,तुमनें कहुं हित आणी ॥
नूपतिजी तुमनें कहुं हित आणी ॥ए आंकणी॥ व्यंतर शाकिनी विविध उ
पद्रव, विविधनी होशे हाणी ॥नू०॥६॥ रायें पूजा करी रज लीधी, शिर धरी
तेहनी आण ॥ नू० ॥ नगरलोक वली अंतेउरनें, तिलक करावे जाण ॥
॥ नू० ॥ ७ ॥ सहुना उपद्रव पुरमां टलीया, हवे तुम प्राभृत दाण ॥ नू०
करवानें तुम पासें मोकल्यो, रज भरी कुंभ प्रमाण ॥ नू०॥ ८ ॥ मृगमदथी
पण ए बहु मूली,श्यां करुं अतिही वखाण ॥ नू० ॥ वात सांभलीनें ला
ज्यो राजा, प्रीति धरे अप्रमाण ॥ नू० ॥ ए ॥ कोइ आगल तुमें वात न
करजो, नरपति कहे एम वाण ॥ नू० ॥ राजस वृत्तियें में एम भाख्युं, अ
विचारें इण ठाण ॥ नू० ॥ १० ॥ तेहनुं तिलक करे निजभालें, बहु गुण
तेहनो जाणि ॥ नूपतिजी बहु गुण तेहनो जाणि ॥ ए आंकणी ॥ चपटी
चपटी देइ परिवारनें, वली जे अंतेउर राणी ॥ नू०॥ ११ ॥ तुष्टमान थइ
कौशलनें कहे,अहो अहो तुं भलो प्राणी ॥नू०॥ तुज स्वामीनें जइने तुं कहे
जे,आपणी प्रीति मचाणी ॥ नू०॥ १२ ॥ जावज्जीव अखंडित जाणे,नहीं
जाये ते खंभाणी ॥ नू० ॥ अम सरिखुं जे काम होये ते,कहेवरावजो निज
जाणी ॥ नू० ॥ १३ ॥ पूछे नृप तुज रायनी आणा, शक्ति ते केहवी पिछा
णी ॥ नू० ॥ कौशल कहे शुं कहीयें तेहनुं, पशुयें पण सुप्रमाणी ॥ नू० ॥
॥ १४ ॥ मुज नृपनी आणा जो दीजें, गज पण माने वाणी ॥नू०॥ एणें
अवसर तिहां गजवर छूटो, कल कल वाणी संभलाणी ॥ नू० ॥ १५ ॥ से
वकनें नृप पूछे शुं ए, सेवक कहे सुणो राय ॥ नू०॥ गज छूटो अहिरावण
सरिखो, उपद्रव बहुत कराय ॥ नू० ॥ १६ ॥ नरपति कहे कौशलनें एणी

परें, सत्य तो तुज वच थाय ॥ नू० ॥ गजने थंनावे देइ आणा, कार्य का रण जणाय ॥ नू० ॥ १७ ॥ कौशल गयो गजवरनी पासें, लेई परिछद समु दाय ॥ नू० ॥ परगट आण देई निज नृपनी,हृदयमां मंत्र सोहाय ॥नू०॥ ॥ १८ ॥ तास प्रनावथी तेह मतंगज, मंत्रबलें थंनाय ॥नू०॥ चमत्कार पा म्यो ते राजा,मंत्री प्रत्यें बोलाय ॥नू०॥१९॥ तुज धूर्त्ति सरखी दिव्य वस्तु नही, महारा घरमां कांय ॥नू०॥ तेहिज हाथी नेटणें आप्यो,बहु सत्कार कराय ॥नू०॥२०॥ एहवी वेला अमनें संनारजो,शुं कहीयें वारं वार ॥ मंत्री श्वर शुं कहीयें वारंवार ॥ ए आंकणी ॥ परिछद सहित पहेरामणी करतो, वस्त्र तथा अलंकार ॥ मं०॥ २१ ॥ अनुक्रमें सिद्धपुर परिसर पोहोता, ति हां कीधा उतार ॥ मं०॥ पूर्वमंत्रीश्वर सांनली बीहिना, आप करणी संना र ॥ मं० ॥ २२ ॥ साहामा आवीने ते खमावे, बहु पश्चाताप धार ॥मं०॥ गजवर आगल करीने चाल्या, नृपनें करे नमस्कार ॥ मं०॥ २३ ॥ नृप पू छे सुखशाता तेहनें, मंत्री करे उच्चार ॥ मं० ॥ तुम परतापें सुखशाता छे, कह्यो सघलो अधिकार ॥ मं० ॥ २४ ॥ धूर्त्तिवृत्तांत ते गोपवी राख्यो, स ज्ञनता अनुसार ॥ मं० ॥ वलीया रायशुं मेल सुणो वली, गजवर नेट विचार ॥ मं० ॥ २५ ॥ असंनाव्य एह वात सुणीने, नृपनें हर्ष अपार ॥ मं० ॥ सातमे खंमें चोथी ढालें, पद्मविजय जयकार ॥ मं०॥२६॥१२०॥

॥ दोहा ॥

॥ तुष्टमान तेह उपरें, देशलनाइनें देश ॥ आपे बहु आग्रह करी, लेवे नहीं ते लेश ॥१॥ पांचमुं व्रत पच्चख्खुं अछे,ते केम नांगे तेह ॥ सत्कारो स्तवना करी, गयो आपणे गेह ॥ २ ॥ मंत्रीमां महोटो थयो, सत्यादिक वली स्नेह ॥ पोहोंचाडे नृप पापरुं, मोदथकी जेम मेह ॥ ३ ॥ धूर्त्त वात परणीववें, सांनली कोइक पास ॥ पाप छानुं परगट होये, विरूप लसण जेम वास ॥४॥ यतः ॥ बीज चंद मुंजित छुरे,अमल लसणनी वास ॥ छानुं पाप जाते दिनें, किमहिक होय प्रकाश ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सोना केरुं बेडलुं, मारुजी वाव खोदाव ॥ रूपला इढाणी हेठ, वावडली पातालनी, पाणीडां नहुं रे तलाव ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चिंतवे एणी परें, नेटणुं लइ गयो धूर्त्त ॥ पण कोइ बुद्धि प्रना व, कारय करी आवीयो,नृपने कर्यो अनुकूल ॥१॥ सर्व नंमार जो दीजीयें,

पण न वले उपकार ॥ देशादिक देवे तेह.न लेवे कोइ परें, एणी परें मनमां रे धार ॥ २ ॥ राय प्रसाद बहु धरे, सागर दंमणो रे सोय ॥ एणहिज मोक ली धूल,ए अपराधी घणो,ए सम पापी न कोय ॥ ३ ॥ सागर चित्तमां चिंत वे, देशलें माहारी वात॥राय आगल कहि तिण,धरे द्वेष आकरे,देशलशुं धरे घात ॥ ४ ॥ नारीनो द्वेष ले धुरथकी, वली तस अधिको रे थाय ॥ पोतें करी अपराध, ढाले शिर पारके, अधम ते अवगुण गाय ॥ ५ ॥ प्रीतिदान नृप मोकले, एकदिन कौशल गेह ॥ घृतना वश सहस कुंन, मूडा तेम शाली ना, आणी अतिशय स्नेह ॥ ६ ॥ व्रतथी वमणा आवीया, वीहिकण व्रत नें रे नंग ॥ देशलनें कहे एम, सहस पांच मोकलो, पाला व्रतनें रे रंग ॥७॥ अथवा धर्ममां वावरो, पण नवि राखो रे एह ॥ व्रत आपणनुं नंग, था य तेम मत करो, चूकजो मत तुमें रेह ॥ ७ ॥ एम कही कौशल गया, दे शल चिंतवे ताम ॥ राज्यकुलें गयुं जेह, ते पाढुं नहीं फरे, केम मोकलीयें ते आम ॥ ए ॥ एम चिंतवीनें अधिक जे, आपे निज परिवार ॥ थापण हेतें तेह, विश्वास नाइ प्रत्यें,उपजावे धरी प्यार ॥ १० ॥ एम बहुवार क खो एणे, व्रतमांहे अतिचार ॥ आयु पूरुं करी देशल, व्यंतर ते थयो, रुधि अलपनें असार ॥ ११ ॥ तिहांथी दलिद्र ब्राह्मण थयो, वली थयो दलि द्रीनें घेर ॥ वणिककुलें धन काज, उपाय करे अति, क्लेश करे बहु पेर ॥ ॥ १२ ॥ पण नवि पामे पायको, व्रतखंमन फल जोय ॥ कौशल निरति चारें, श्रावक धर्म पालतो, महावैरागी होय ॥ १३ ॥ धर्मगुप्त गुरुनें कनें, आदरे ते व्रत नार ॥ त्रिकरण योगें आराधी, सातमे कल्पें थया, रुद्धि त णो नहीं पार ॥ १४ ॥ सत्तर सागर आउखे, तेह थयो सुरराय ॥ व्रत आ राधन ए फल, जाणी आराधजो,जेम लहो सुखसाय ॥ १५ ॥ अवधि ज्ञा नथी देवता, नाइ तणुं डुःख जाणी ॥ रुद्धि देखाडी आप, संविज्ञ दीक्षा ग्रहे, जाणी नवडुःख खाण ॥ १६ ॥ तप कीधुं अति आकरुं, सातमे देव लोकें देव ॥ नाइयें कस्रो उपकार, धर्मना रागथी, सुख नोगवे नित्यमेव ॥ ॥ १७ ॥ पूरव नव अन्यासथी, एण नव पण बहु स्नेह ॥ जिनपूजा वली तीर्थ, यात्रा बहु करे,पुण्य संचय करे तेह ॥ १७ ॥ सुखमां चर्वा तेह देव ता, कौशलनी सुणो वात ॥ वैताढ्यें मणिमंदिर, पुरनो राजियो, विद्याधर कहेवात ॥ १ए ॥ मणिधर नामें ते थयो, मणिमाला तस नारि ॥ मणिशे

र तस पुत्र, यौवन आव्यो यदा, विद्या कलानो भंमार ॥२०॥ कन्या व
ीश परणावीयो, नव नव खेले रे खेल ॥ देशल देव चवी थयो, चंद्रगति
ऐ, तुं ते करतोजी केल ॥ २१ ॥ पूरवनवें जे नामिनी, गुणसुंदरी जे ना
॥ तुज वियोगें तेह जीवे, व्रत तप तपी बहु, वरषां लगें सार ॥ २२ ॥
थे स्वर्ग सुर थयो,तिहांथी चवियो रे तेह ॥ शेठनो पुत्र थयो, चंद्रमुख
में खरो, रूपकला गुण गेह ॥ २३ ॥ धर्मधीर गुरुनें कनें, नोगवी नोग
ार ॥ दीक्षा लेइ सिद्धांत नण्यो, बहु तप तपी, देव थयो श्रीकार ॥२४॥
वमे देवलोकें सुखी, तिहांथी चवि तुज नारि ॥ चंद्रमाला अनिधानथी,
ह पूरव तणो, इहां तुमनें निर्धार ॥ २५ ॥ सातमे खंमें पांचमी, पन्न
नय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, नविजन सांनलो, आगल
रसाल ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ १५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर जे पूर्व सचिव, मिथ्या दृष्टि महंत ॥ आरंन परिग्रह अति
. प्रथम नरक पहोचंत ॥ १ ॥ नरकमांहेथी नीकली, सारंग प्रमुख अ
॥ नव कीधा बहु जातिना, शुं कहुं तेहनी संख्य ॥२॥ दुःखियो ब्रा
दरिद्रता, परिव्राजक पणुं पाम ॥ हवे सुणो तिहांथी जे हवुं, कही
हतुं काम ॥ ३ ॥

ढाल ठठी ॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥
लवण समुद्रनें वेताढ्य पासें रे, वनराजी पणुं शोहे विकाशें रे ॥ व
पर्वत ठे तठ रे, बहु देवता क्रीडा करे यठ रे ॥ १ ॥ त्रण योजन
नो नें लंबाण रे, ऊंचाणुं पण एहिज माण रे ॥ तेहनें गर्ने जुवन ठे
, गाउ ऊंचुं पोहोलुं सुविवेक रे ॥ २ ॥ लांबो पण एक गाउ जाणो
समय कांति उद्योत पिठाणो रे ॥ सरोवर वन वापी तिहां शोहे रे,
सुखकारी मन मोहे रे ॥ ३ ॥ पृथिवीनें पर्वत अर्हं विराजे रे, नर
म्य ते थानक ठाजे रे ॥ चार देवीशुं वज्रमुख नामें रे, क्रीडा करे ते
ी ठामें रे ॥ ४ ॥ तिहां उपजे तस नाम ते एह रे, हवे मंत्री जीव
जेह रे ॥ परिव्राजक मरी वज्रमुख थाय रे, तुज नारीनें ते ह
रे ॥ ५ ॥ पूरव अन्यासथी धरतो राग रे, क्रीडा करणनो पामी
॥ दृढ संस्कारनुं बीज जे होय रे, जन्मांतरें ते आवे जोय रे ॥६॥

राग उल्हायो ते वली जागे रे, संबंधी देखी लय लागे रे ॥ मेघ देख
जेम हडकवा थाय रे, ते सुर पोहोतो श्रपने ठाय रे ॥ ७ ॥ प्रार्थना क
तो जोगनी तेह रे, सती अन्य इछे न धरे नेह रे ॥ काल काढवा एणी प
जासे रे, ब्रह्मचर्य व्रत मुज एक मासें रे ॥ ८ ॥ विद्या कामें ए में कीधुं
ते केम जाये मेल्युं लीधुं रे ॥ एम करतां जो लोपिश शील रे, तो जी
चांपी मरण लहुं लील रे ॥ ९ ॥ एहमां कांइ संदेह न जाणे रे, सांभ
सुर बीहिनो तेणे टाणे रे ॥ जोग आशायें पडख्यो मास रे, आशायें जी
जाव बहुमास रे ॥ १० ॥ जैन सती न चलावीयें देवें रे, जैनधर्मनें
नित्य सेवे रे ॥ हवें कौशल सुर खेचर जेह रे, मणिशेखर क्रीडा करे ते
रे ॥ ११ ॥ एक दिन धर्मरुचि अणगार रे, आव्या नगर उद्यान मझार रे
प्रणमी तेहना जकें पाय रे, धर्म सांजल्यो चित्त लगाय रे ॥ १२ ॥ वैराग
वासित थइ लीधी रे, दीक्षा जैननी जेह प्रसिद्धि रे ॥ धीर पुरुष ते न क
ढील रे, धर्मकार्यमां उद्यमशील रे ॥ १३ ॥ सुव्रता गणिनी पासें दीक्ष
रे, तेहनी नारी लेइ धरे शिक्षा रे ॥ अनुक्रमें मुनिवर थया चउनाणी रे
ते हुं विचरतो आव्यो जाणी रे ॥ १४ ॥ वियोगथी तुं पीडाणो रे, प्रति
बोधवा आव्यो ए टाणो रे ॥ ते पण पूर्वनवनो नेह रे, तुजने पण उपजे
तेह रे ॥ १५ ॥ बुज तुं विरमी विषय विकार रे, लेइ चारित्रनें था अण
गार रे ॥ सातमा देवलोकना जोग रे, जोगव्या विविध ते देवी संयोग रे
॥ १६ ॥ मनुष्यना जोग तो अशुचि भंमार रे, तेहमां केम मूंज्यो एणी वा
र रे ॥ सागरोपम सरिखा जिहां काल रे, तृप्ति न पाम्यो ते जोग रसाल
रे ॥ १७ ॥ विड सम नर जोग ते आगें रे, अल्प आयु केम तरप ते जागे
रे ॥ ते सांजली में जाख्युं एम रे, बंधु परें तुमें राख्यो प्रेम रे ॥ १८ ॥ क
ल्पवृक्ष परें तुमें उपकारी रे, तुम वाणी मुजनें हितकारी रे ॥ पण हुं ना
रीनें स्नेहें बंधाणो रे, वली सुर हरि गयो तेणें पीडाणो रे ॥ १९ ॥ हुं न
त्यजी शकुं तेणें मुज दाखो रे, नारी वालानो उपाय ते जाखो रे ॥ कन्या
वर कोण थाशे एह रे, कहो मुजनें सघलुं करुं तेह रे ॥ २० ॥ थइ कता
थे रही कोइ काल रे, लेशुं दीक्षा परम दयाल रे ॥ मुनि कहे पवन वेग
सुत जेह रे, वज्रवेग मूकावशे तेह रे ॥ २१ ॥ योगिणी परथी सलकें राय
रे, ते तुज पुत्रीनो वर थाय रे ॥ ताहारी नारीनें तेह मूकावे रे, नाम क

में छे तेथें व्रत नावे रे ॥ २२ ॥ लेजे दीक्षा वहेलो भाइ रे,मोक्ष ते जश्यें साथें सखाइ रे ॥ सांभली पूर्व नव संभारे रे, श्रासक नहीं पण प्रिया मन धारे रे ॥ २३ ॥ मुनि प्रणमीनें हुं गयो गेह रे, मुनि विचरे बीजे गाम तेह रे ॥ वज्रवेग मूकावण हार रे, ते विनयी खोलुं हुं प्यार रे ॥२४॥ विद्याधरथी वात हुं जाणी रे, श्राव्यो तुम पासें मन आणी रे ॥ सातमे खंमें छही ढाल रे, पद्म कहे सुणो मंगलमाल रे ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

॥ रखे प्रारथना ए करे, एणी परें मन अवधार ॥ कामकुंभादिक सहु करे, प्रारथनायें प्यार ॥ १ ॥ हुं चेतन अचेतन तणो, अंतर स्यो होय एथ ॥ प्रार्थना विण प्रथमथी, प्रारंभ्या शुभपंथ ॥ २ ॥ उत्तम माहरे आवीयो, नाग्य उदय महानाग्य ॥ दोय कार्य इहां देखीयें, पर उपकार पराग ॥ ३ ॥ बीजुं दुष्ट निग्रह बने, उत्तम तृप्ति उपकार ॥ नृपद्रव्य द्विज अन्नथी, वणिक लानें व्यवहार ॥ ४ ॥ कामें वेश्या स्त्री कलहें, लांच नियोगी लेप ॥ खल छलथी तृप्तो खरो, दाता दानने देय ॥ ५ ॥ श्रीमंत रोगी सांजली, वैद्य हर्ष लहे वेग॥तेम तुज काम करुं तदा, तृप्ति लहुं अति रेग॥६॥

॥ ढाल सातमी ॥ योगमाया गरवे रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ सांजलो वली एक वातडी जो, केम सहे अन्याय ते नूप जो ॥ देवनो पण बीहीकण थइ जो, तो प्रजानुं शुं स्वरूप जो ॥ १ ॥ धीरजें सहु आवी मले जो ॥ ए आंकणी ॥ जइ परवत चूरण करुं जो, जीतुं सुर दुष्ट ते जाय जो ॥ विजय रायनो उपन्यो जो, तो वाधुं ताहरी जाय जो ॥ धी० ॥ २ ॥ पवनवेग साथें लेइ जो, वलीचंड्गतिशुं जेह जो ॥ वज्रकूट नग उपरें जो, सात्विक आव्यो सलगेह जो ॥ धी०॥ ३ ॥ उच्चस्वरें बोले तिहां जो, रे अधम दुष्ट परनारी जो ॥ लेइ पेठो पातालमां जो, अहि जेम बिलमां लेई हार जो ॥ धी०॥ ४ ॥ सन्नद्धबद्ध थइ आव्य तुं जो, जो समर थ छे संग्राम जो ॥ नहीं तो नारीनें आपीयें जो, अन्यथा फेडुं तुज गाम जो ॥ धी० ॥ ५ ॥ त्रण वार एम बोलीयो जो, पण परगट न थयो देव जो, क्रोधधकी तव धमधम्यो जो, गिरि चूरवा मांमयो हेव जो ॥ धी० ॥ ॥ ६ ॥ तथाहि ॥ मुजर कामाक्षा दियो जो, जेहनुं बल वज्र समान जो ॥ शृंगशीला पाडे घणी जो, महाराक्ष समूलां अमान जो ॥ धी०॥७ ॥ शृंगशी

लाना घोषथी जो, विश्वनें पण उपजे त्रास जो ॥ पृथिवी गाजे मेघ ज्युं जो, कलके सायर जलराशि जो ॥ धी०॥८॥ त्रास लहे जलचर बहु जो, उछले तिहां जलकल्लोल जो ॥ ज्योतिषी नासे वेगला जो, करता मांहो मांहे हलबोल जो ॥ धी० ॥ ए ॥ नदी इह जल बहु उछले जो, उन्मार्गे चाले तेह जो ॥ गाम नगर वहेवरावता जो, बहु वायरे वहे खेह जो ॥ धी०॥१०॥ शिला चूर्ण बहु उछले जो,तेणे दिशा अंधारी थाय जो॥ सूरय जांखो देखीयें जो, मानुं नूप प्रतापें हराय जो ॥ धी० ॥ ११ ॥ धूज्या बहु बीजा गिरि जो, मानुं नयथी कंप्या जोर जो ॥ निकरणां आंसु करे जो, निजजातिनुं डुःख धरे घोर जो ॥ धी० ॥ १२ ॥ पर्वत चूरतां कंपती जो, क्षय थाय डे निज आधार जो ॥ वसुमती मानुं ते नयें जो,केम थाशे एम अ वधार जो ॥ धी० ॥ १३ ॥ शृंग पडघाना शब्द जे जो, पृथिवी धड धड करे सोर जो ॥ शेषनाग धरे कष्टथी जो, पृथिवीने करी बहु जोर जो ॥ धी०॥ ॥ १४ ॥ पडती शिला चूरण करे जो, वनराजी वृक्ष समुदाय जो ॥ गज सिंह प्रमुख सावज घणा जो,ते नयथी नाशा जाय जो ॥ धी० ॥ १५ ॥ व्यंतर किन्नर देवता जो, जे क्रीडा गुफामां करंत जो ॥ शक्रवज्रार्त्ते क री जो, हा हा करता ते नासंत जो ॥धी०॥ १६ ॥ योगिणी नूतनी अंगना जो,वली व्यंतर प्रेतनी नारि जो ॥ आक्रंद करतां नासती जो, जगनें ते खो ननाकारि जो ॥ धी० ॥१७॥ चार घडी थइ चूरता जो, पोहोतो सुर नवन नी पास जो ॥ विद्या नाग्य बल आकरुं जो, नृपनें ब्रह्मचर्यनो वास जो ॥ ॥ धी० ॥ १८ ॥ घोर शब्द सुणी तेहना जो, निज आलय जोइ ताम जो ॥ शीतज्वरें जेम कंपतो जो, वज्रमुखनुं मुख थयुं श्याम जो ॥ धी०॥ १९॥ ए शुं ए शुं चिंतवे जो, संभ्रांत थइ मन मांहि जो ॥ विनंग ज्ञानें जोवतो जो,ए अद्भुत शुं थयुं आंहि जो ॥ धी० ॥ २० ॥ नवि थयुं नें नवि थायशे जो,क्रो धें धमधमतो देव जो, दोडयो निज परिवारशुं जो,शीघ्र आव्यो तिहां सयमे व जो ॥ धी० ॥ २१ ॥ धन्य ए नूपनां धैर्यनें जो,वली शीलवंतो ससनेह जो ॥ वात डे अद्भुत जेहनी जो, नवि कहेवाये मुखें तेह जो ॥ धी० ॥ ॥ २२ ॥ सातमे खंडें सातमी जो, ढाल पद्मविजय कही प्यार जो ॥ शील थी सवि कारय सरे जो, शीलथी होय जयजयकार जो ॥धी०॥२२॥२०७॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलें नवनिधि संपजे, शीलें सिंह शियाल ॥ शीलें सुरसान्निध करे, शील धरो सुरसाल ॥ १ ॥ शीलें सर्प होय रासडी, शीलें आग शमंत ॥ शीलें थल होये सागरें,शील आनूपण संत ॥ २ ॥ नेत्र ज्वाजल्यें निरख तो, क्रोधीनें महाक्रूर ॥ रे रे कां मरवा तणुं, शरण करे छे शूर ॥ ३ ॥ शे ल नांजे तुं शूरथी, आणुं ताहारो अंत ॥ मूरख तुं महीपति कहे, तुज क रुं अंत ए तंत ॥ ४ ॥ परस्त्री लेइ पातालमां, उंदर औषधी लेप॥ बिल पे से बलवंत तिम, छटके केम लुटेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल आवमी ॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजल रे मुज वात शोहामणी, मुंज वेगं अन्याय जीरे ॥ देववशें तें कीधुं एवडुं, पण तें नवि छूटायजी रे ॥ सां०॥१ ॥ चंड्गति नीरे पत्नी आप तुं, मत कर मरवानुं मन्नजी रे ॥नग चूरयो पण नवि तूटो थयो, चू रे मोघर तुज तन्न जीरे ॥ सां० ॥ २ ॥ देव कहे क्रोधें करी एहवुं, तुं बा लक नरमात जीरे ॥ सिंहथी मृगलो मूकाववा मन करे, तुंहिज मूढ ए णि वात जीरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मोघर उपाडी हणवा नणी, नृप उपर सुर धायो जीरे ॥ पवनवेगादिक वीहीकथी नासता, नृप पुंठे सहु आयो जी रे ॥ सां०॥ ४ ॥ नरपति विद्यायें सहु थंनीया, वज्रमोघर लेइ धाय जीरे ॥ घात मोघरना रे मांहो मांहे पडे, मानुं गगन फोडाय जीरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ बहु वेला एम मोघरे जूजीया, निज मोघरें नरराय जीरे ॥ सुर मोघर ते रे चूरी नाखीयो, तव ते क्रोधें नराय जीरे ॥ सां० ॥ ६ ॥ ज्वलती लेइ करवालनें दोडीयो,सूरप हासें नृप जीरे ॥ रंजास्तंनपरें खंमित करी,लीला यें धरी चूंप जीरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ दिव्य त्रिशूल गदादिक शस्त्रथी, युद्ध करे ते अनेक जीरे ॥ नागपाशथी रे बांधे परस्परें, तपले नृप जय टेक जीरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ समकेत शीलनें जिनशासनी वली, न परानव करे इंदो जीरे ॥ तो ए सुर किंकरनुं शुं गजुं, जे पडयो परस्त्री फंदो जीरे ॥ सां०॥ए ॥ नृप मस्तकमां रे तरु लेइ कूडीयो, पुष्प वेराणां ताम जीरे ॥ मानुं सुर वृष्टि करे फूलनी, कुमर शिरें अनिराम जीरे ॥ सां०॥ १० ॥ नृप पण तरु लेइ तस तरु नांजतो, तव ते शिलायें युद्ध जीरे ॥ युद्ध करे बेहु तेह सुनट थइ,रोषपकी अतिक्रुद्ध जीरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ शिलायें वली मुष्टियें चूरतो,

तास शिलानां वृंदो जीरे ॥ तस रजथी मुख मस्तक पूरियुं, तोपण मूके न दंदो जीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ वज्रवदन हवे शस्त्रनें मूकतो, पामी खेद अपार जीरे ॥ मुष्टियें मुष्टि रे युद्ध करे तदा, मदथी करता होकार जीरे ॥ सां० ॥ ॥ १३ ॥ युद्ध करंता रे मुष्टिघातथी, पृथिवी द्रुम कंपावे जीरे ॥ बिहुं दिश फरता बेहु नट गाजता, सर्व दिशा गर्जावे जीरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ देव म ल्या कौतुकथी गगनमां, बेहु पडता थावे वेगा जीरे ॥ उपडतां ऊंचा जाय देवता, एम करे बहु चेष्टा जीरे ॥ सां० ॥ १५ ॥ नमतां दृष्टि नमे जो नार नी,शूरवीरनी साथ जीरे ॥ कोण न चाले रे बुद्धिमंत कहो,जस दैवुं होय हाथ जीरे ॥सां०॥१६॥ युद्ध करे एम सुर नरराजीयो, एणी परें गयो बहु काल जीरे ॥ दुष्ट अन्यायीयो रे देवता जाणीनें, चिंतवी ते नूपाल जीरे ॥ सां० ॥ १७ ॥ पग पकडीनें रे मस्तकें फेरवी, शिला उपर पछाडे जीरे ॥ वस्त्र धूवे जेम धोबी तेणी परें, वेदनथी बुंब पाडे जीरे ॥ सां० ॥ १८ ॥ गातीयें पग देइनें दृढ रह्यो, बोले एणी परें वाणी जीरे ॥ तुजमां बल हो य तो देखाडजे, रे रे अधम अन्नाणी जीरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ ताहारा इष्टनें तुं संनारजे, नहीं तो आप तुं नारि जीरे ॥ आक्रंद करतो रे सुर एणी परें कहे, तुं माहारो आधारो जीरे ॥ सां० ॥ २० ॥ जगतमल्ल हवे मुजनें मूक तुं, ताहारो हुं छुं दास जीरे ॥ तेह कृपालु रे कृपापात्रनें,नरपति मूके ता स जीरे ॥ सां०॥ २१ ॥ जय जय शब्द करे तिहां देवता, कुसुमवृष्टि तिहां कीधी जीरे ॥ देवता लइनें लाव्यो नारीने, नूपने नेटणे दीधी जीरे ॥सां०॥ २२॥ आठमी ढाल ए सातमा खंममां, श्रीजयानंदनें रास जीरे ॥ पद्मविजय कहे सांनलतां थकां, होवे लील विलास जीरे ॥ सां० ॥ २३ ॥ २३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निजअपराध निर्झर हवे,खमावे बहु खांत ॥ पवनवेग सुख पामिया, अतिशय हर्ष एकांत ॥ १ ॥ सहु परिवारशुं सुर हवे, प्रणमे नरपति पाय ॥ कर जोडीनें सुर कहे, तुं समरथ तुं ताय ॥२॥ तुंही पराक्रमी तुं नथी, बा हुबलवंत दयाल ॥ सुर असुरा तुज सारिखो, मनुजमांहे न मयाल ॥ ३ ॥ कोइ न जीत्यो मुज कदा, तुरत जीत्यो तुं मुज ॥ मृत्यो कृपा करी मुजनें, तेणें शुं देयं तुज ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरबो केणेनें कोराव्यो के ॥ नंदजीना लाल रे॥ए देशी ॥

॥ तुजनें आपी कृतारथ थाउं के,गुणगण धामरे ॥ एहवुं जगमां कांइ न थाउं के ॥ तुनचर नाम रे ॥ बोले तव नरपति वाणि के ॥ गु० ॥ माहा रे नही कांइ प्रमाण के ॥ तु०॥ १ ॥ मिथ्यामत महाडःखकार के ॥गु०॥ ते जाणो नरकनुं व्दार के ॥ तु० ॥ मुनिनाषित जाणुं जेह के ॥ गु० ॥ चंड्ग तियें कह्युं तस तेह के ॥ तु० ॥ २ ॥ पूरव नव हितनें काजें के ॥ गु० ॥ सांनलीयो ते सुरराजें के ॥ तु०॥ महाकष्टमयी संसारे के ॥गु०॥ आरंन प रिग्रह परकारें के ॥ तु० ॥ ३ ॥ डःख छेदवा धर्मनें पूछे के ॥गु०॥ कहो सु खकारी धर्म शुं छे के ॥ तु० ॥ त्रण तत्त्व स्वरूप सुणावे के ॥ गु० ॥ तेहनें मिथ्यात्व वमावे के ॥तु०॥४॥ नृप वयणथी समकेत पाम्यो के ॥गु०॥ नृ पनें तव शिरथी नाम्यो के ॥तु०॥ देव गुरु पूजा करे अंगी के ॥गु०॥ गुण वंत थयो नृप संगी के ॥तु०॥५॥ तुं बोधिनो दाता मुज के ॥गु०॥ शुं आ पुं हुं हवे तुज के ॥तु०॥ तुज देवा योग्य न दान के ॥गु०॥ तें शिव सुख दीधुं प्रधान के ॥तु०॥६॥ पण आपुं शक्ति प्रमाण के ॥ गु० ॥ चिंतामणि दीये तेणे ठाण के ॥तु०॥ एहनुं स्वरूप सुणो स्वामि के ॥ गु०॥ एह रयण संसारे नाम के ॥ तु० ॥ ७ ॥ जेहवां रूप इछे मनमां के ॥ गु० ॥ निज परनां निपजे क्षणमां के ॥ तु० ॥ ते पण निपजे बहु रूप के ॥गु०॥ वली विद्या कामित रूप के ॥ तु० ॥ ८ ॥ साधन सहित आपे तेह के ॥ गु० ॥ नृपें दीध महा ते जेह के ॥ तु० ॥ विधिपूर्वक लेइ राय के ॥ गु० ॥ सुर रायनी स्तवना कराय के ॥ तु० ॥ ९ ॥ नृप कहे धन्य तुं सुरराय के ॥ गु० ॥ बोधि पाम्यो ने परस्त्री त्यजाय के ॥ तु० ॥ चंड्गतिनें मैत्री कराय के ॥ गु० ॥ सघलो अपराध खमाय के ॥ तु० ॥ १० ॥ अदृश्य थयो ते सुर ताम के ॥ गु० ॥ चंड्गतिनें सोंपी वाम के ॥तु०॥ हरषी कहे एणी परें वा णि के ॥ गु० ॥ मुज कन्यानो ग्रहो पाणि के ॥ तु० ॥ ११ ॥ श्रीजयानंद कुंअर राय के ॥ गु० ॥ सहु विसरजे निज ठाय के ॥ तु० ॥ चंड्गतिनें पव नवेग ताम के ॥ गु० ॥ कानमां कहे सांनलो आम के ॥ गु०॥ १२ ॥ मुज कन्या पाणिग्रह थाय के ॥ गु० ॥ तुज पुत्री लेइ ते ठाय के ॥ तु० ॥ आव जो तव चंड्गति नृप के ॥ गु०॥ नृपनें नमी तस अनुरूप के ॥ तु०॥१३॥ निज धाम गयो प्रिया लेइ के ॥ गु०॥ ते सांनली स्वजन मिलेइ के ॥ तु०॥

उत्सव करे नव नव रंगें के ॥ गु० ॥ हवे श्रीजयतातनें संगें के ॥ तु० ॥ १४ ॥ योगिणी दीधा अलंकार के ॥गु०॥ वली विनति पत्र उदार के ॥ तु० ॥ खेचर साथें ते मूके के ॥ गु० ॥ विश्वास देतें नवि चूके के ॥ तु०॥१५॥हवे पवनवेगादिक संगें के॥गु०॥वैताढ्यें आव्या मनरंगें के॥तु०॥ तिहां शाश्वत चैत्यनें वांदे के ॥ गु० ॥ रोमांचित थइ आणंदे के ॥ तु० ॥ ॥ १६ ॥ गौरव करी प्रार्थना करतो के ॥ गु०॥ निज नयर लावे मन हरतो के ॥ तु० ॥ पवनवेग दक्षिण श्रेणें के ॥ गु०॥ चंद्रगति बोलाव्यो तेणें के ॥ तु० ॥ १७ ॥ सुता चंद्रसुंदरी तास के ॥ गु० ॥ निज वज्रसुंदरी खास के ॥ तु०॥शुन मूहूर्तें दोय परणावे के॥गु०॥बहु आग्रहथी सुख पावे के ॥तु०॥ ॥ १८ ॥ चक्रायुध नये संखेवे के ॥ गु० ॥ बहु गज अश्वादिक देवे के ॥ तु० ॥ शत्रुमर्दिनी विद्या एक के ॥ गु० ॥ ठे पवनवेग घर ठेक के ॥ तु०॥ ॥ १९ ॥ पण दुःखथी सधाये तेह के ॥गु०॥ नवि साधी शके तेणें एह के ॥तु०॥ शील सत्त्वनें नाग्य विशाल के ॥गु०॥ उत्कृष्ट एहनुं नाल के॥तु०॥ ॥२०॥ नृपनें विधि सहित ते आपे के ॥गु०॥ वली मणिघरमां नृप थापे के ॥तु०॥ दोय नारीशुं नोग विलास के ॥गु०॥ तिहां रहेतां सुख आवास के ॥तु०॥२१॥ चक्रायुधशुं युद्ध थाय के ॥गु०॥ सैन्यशुं तिहां आवजो नाय के ॥तु०॥ एम कहीनें चंद्रगतिने वात के ॥ गु० ॥ पवनें मोकल्यो सुखशात के ॥तु०॥२२॥ जैनधर्म प्रनावें राय के ॥ गु० ॥ दोय नारीशुं सुखमां थाय के ॥ तु०॥ कौशल देशल दोय नाय के ॥ गु० ॥ पंचमव्रत केरे पसाय के ॥ तु० ॥ २३ ॥ आराधि विराधि फल पाया के ॥ गु० ॥ तेम श्रीजयानंदजी राया के ॥तु०॥ चौथा व्रतथी अरि कीपे के ॥ गु०॥ तेम पालो जेम पुण्य दीपे के ॥ तु० ॥ २४ ॥ सातमे खंमें ए नाखी के ॥ गु० ॥ सत्यवचनथी शास्त्र ठे साखी के ॥ तु० ॥ कीर्त्ति जस कपूर समान के ॥ गु० ॥ श्रीजया नंद रास प्रधान के ॥ तु० ॥ २५ ॥ ए नवमी ढाल रसाल के ॥ गु० ॥ ए सातमो खंम विशाल के ॥ तु० ॥ श्रीखिमाविजय गुरु नाम के ॥ गु० ॥ शिष्य जिनविजय गुणधाम के ॥ तु० ॥ २६ ॥ तस उत्तम विजय सुशिष्य के ॥ गु० ॥ कहे पद्मविजय सुजगीश के ॥ तु० ॥ सुणतां होये मंगलमाला के ॥ गु० ॥ वली घर घर लब्धि विशाला के ॥तु०॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥२६४॥

॥ इति श्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंडित पद्मविजयगणिविरचिते श्री श्रीजयानंदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे पंचमव्रतनिरतिचारसातिचार पालनविषये कौशलदेशजनिदर्शनगर्भवज्रकूट गिरिचूर्णनवज्रसुखसुरविज यंतचिंतामणि महाविद्या प्रदानवज्रसुंदरीचंद्रसुंदरीपाणिग्रहणवर्णनोनामा सप्तमः खंडः समाप्तः॥ षट्खंड गाथा ॥३९६९॥ सप्तम खंडे गाथा ॥२६६॥ सर्वगाथा ॥४२३५॥ षट् खंडे उक्त श्लोक ॥७८॥ सप्तम खंडे उक्तश्लोक बे, सर्व उक्त श्लोक ॥ ८० ॥ सवइयो एक, समस्या एक, दोहा बे ॥

॥ अथाष्टमखंडः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ अभिनव सूरज उगियो, शांतिनाथ नगवान ॥ त्रण जगतनां दुःख ते, टाले तमोवितान ॥ १ ॥ प्रणमी पदकज तेहनां, श्राखुं आठमो खंड ॥ सांजलतां जे उंघशे, तेहने दंम प्रचंम ॥ २ ॥ उंघे ने उंघुं नहीं, कहे तस दोहोलुं पाप ॥ उंघमांहे जूतुं नलुं, ए महोटो संताप ॥ ३ ॥ जेह जगाडे तेहशुं, उलटो आणे क्रोध ॥ दोष परंपर एणी परें, वाधे जाये बोध ॥४॥ उंघणनुं श्रुत उंघशे, नवि उंघो ते काम ॥ उंघण मृतकनी वानगी, तेहथी अधिको आम ॥ ५ ॥ धूणे नूआनी परें, व्यंतर पेठो जेम ॥ जागतां हांसी करे, तेणें कहो उंघीयें केम ॥ ६ ॥ तेम विकथा वर्जो वली, विकथा न करो जेण॥विकथा ते वितथा करे, नवि सुणवा दिये जेण॥७॥तेहथी उंघ्योरूअडो, जे नवि सांनले आप॥स्वपर न सांजलवा दिये, तेणें ए महोटुं पाप ॥ ८ ॥ निज्ञ विकथा परहरी, सांजलो चतुर सुजाण ॥ खंम खंम चढतुं अछे, श्रीजय पुण्यप्रमाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ प्रथम गोवाला तणे नवेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन उपवनमां गयाजी, श्रीजयानंद कुमार ॥ आव्य विद्याधर नर पतिजी, आवि करे नमस्कार ॥ १ ॥ नविक जन जुर्ज जुर्ज पुण्य विशेष ॥ दिन दिन चढतुं अशेष ॥ न० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ बेसारे सिंहासनेंजी, पवनवेग नरराय ॥ सुख प्रश्नादिक पूछताजी, मनमां आनंद थाय ॥ न० ॥ ॥ २ ॥ श्रीजयानंदनें आगलेंजी, ते थावेनुं स्वरूप ॥ पवनवेग नृप वर्णवे जी, सांनलजो तुमें नूप ॥ न० ॥ ३ ॥ दक्षिणश्रेणी वैताढ्यमांजी, जाणो सपत्ना रे एह ॥ १ ॥ नोगरति ए राजीयोजी, नोगपुरी धणी जेह ॥ न०॥

॥ ४ ॥ वज्रपुरीनो राजीयोजी, २ चंद्रबाहु नरराय ॥ रत्नपुरीनो ए पी
३ महाबाहु सुख दाय ॥ न० ॥ ५ ॥ ४ चंद्रवेग चोथो लह्योजी,एह
मणिधाम ॥ नगर वीरपुरनो धणीजी, ५ रविप्रन जेहनुं नाम ॥ न०
६ रत्नचूड नृप पुरतणुं जी, रत्नालय अनिधान ॥ कनककूट पुर सात
७ तडितवेग राजान ॥ न० ॥ ७ ॥ नगरगिरि चूड आठमो जी, ८
डान नूपाल ॥ चार चार पुत्री हवीजी, सवि बत्रीश रसाल ॥ न०
माता सहुनी जूजूइजी, सरखी वयनी रे प्राय ॥ सरिखी रूप कला
जी, रूपें रंना हराय ॥ न० ॥ ए ॥ साथें ते नेली नणीजी, ...
प्रेम ॥ करे प्रतिज्ञा सहु मलीजी, एकपति करणनो नेम ॥ न० ॥ १
रूप अनुत्तर जाणिनेंजी, ते कन्या बतरीश ॥तेहना तातनें मोकलेज
चक्रायुध ईश ॥ न० ॥११॥ पुत्र अमारानें दीयोजी, तुम कन्या अ
उत्तर आप्यो तेहनेंजी, सर्व मली एक रूप ॥न०॥१२॥ मेल लहेणे
तणोजी, जोवरावीनें रे स्वामि ॥ आवी उत्तर वालशुंजी, तुम चरणे
नामि ॥ न० ॥१३॥ नोगरति नगरें थयाजी,नेला आठे रे मित्त ॥
शुं करवुं आपणेजी, थाउं एकज चित्त ॥ न० ॥ १४ ॥ निन्न जन
नहींजी, कुमरीयो मनमांह ॥ एक कुमरनें जो दीजीयेंजी, मनमां
उत्साह ॥ न० ॥ १५ ॥ बीजी स्त्री ईर्ष्या करेजी,तेणे नवि सूजे रे क
जो नवि दीजें सर्वथाजी, तो ए क्रोधें नराय ॥ न० ॥ १६ ॥ राज्य
त सहु अपहरेजी,रुगो ए महाराय ॥ संकटमां आवी पडयाजी,उत्तर
स्यो कराय ॥ न० ॥१७॥ एण अवसर तिहां आवियोजी,एक निमि
रे जाण ॥ करी बहु माननें पूछियुंजी, विषम कार्य गति ठाण॥न०॥
निमित्त जोइ निमित्तियोजी, बोल्यो एणी परें वाण ॥ चक्रायुधनो न
मोजी, म म करो निमित्त प्रमाण ॥न०॥१ए॥ राज्य अल्पदिन एहवे
तव पूछे फरी तेह ॥ मरण के शत्रु एहनोजी,राज्य जशे कहो केह ॥
॥ २० ॥ ज्ञानी कहे ए पामशेजी, महा परानव दुःखखाणी ॥ वात
संनव सांनलीजी, पूछे फरी तिण ठाण ॥ न० ॥ २१ ॥ कोण शत्रु ए
थशेजी, ज्ञानी बोले रे ताम ॥ वज्रवेग मृकावशेजी,जे योगिणीनें धा
॥ न० ॥ २२ ॥ वज्रकूट नग चूरिनेंजी, चंद्रगतिनी रे नारि ॥ देव व
स जीतीनेंजी, मूकावश निरधार ॥ न०॥ २३ ॥ तेहनें कन्या आपजो

योग्य जणी ते रे सर्व ॥ राजाधिराज ते थावशेजी. मोटो नृप गतगर्व ॥ ज० ॥ २४ ॥ सांजली हर्षी आविवुंजी. दान दिसर्यो रे तास ॥ चंड गति देखी अमोजी. कह्यो निरधार ते खास ॥ ज० ॥ २५ ॥ निज सारथ देनें अमोजी. आव्या तुमची रे पास ॥ ए कन्या परणी तुमोजी. सफल करो अम आश ॥ ज० ॥ २६ ॥ पहेली आठमा खंडमांजी, पद्मविजय कही ढाल ॥ पुण्यवंत प्राणी सहेजी, लयहे मंगल माल ॥ ज० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आवो अम्ह पुर साहेबा, म म करो प्रार्थना भंग ॥ चक्रायुध जयें पर णीयें, एकांतें मनरंग ॥ १ ॥ श्रीजयानंद कहे तदा, चक्रायुध जय धारि ॥ परणवुं जे ठानां रही,स्वाद लिय्यो अवधारि ॥ २ ॥ पहलो जय टलवा लगें, एम कही कया विदाय ॥ पवनवेग कहे कानमां, सांजलो रे तुमें जाय ॥ ३॥ चक्रायुध संगर समे, सैन्य सामग्री समेत ॥ वहेला लइने आवजो, ए तुम अम संकेत ॥ ४ ॥ तद्दयें ते अंगीकरी, पोहोता निज निज धाम ॥ हवे वैता ढयनी उपरें. सिद्धकूट अभिराम ॥ ५ ॥ पवनवेग अनुमति तिहां,आव्या श्री जयानंद ॥ सुर खेचर दीवी तदा. दिया जे आणंद ॥ ६ ॥ सिद्ध प्रतिमानें आगलें, साधवा मांडे तेह॥विधिथी अल्पकालें करी, सिद्ध थइ गुणगेह ॥ ७॥

॥ ढाल बीजी ॥ साहेबा पंचमी मंगल वार, प्रजातें चालवुं रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबा विद्याधर बहु साथ के, परिवृत आवीयो रेलो ॥ साहेबा पव नवेग पुरें खेचरी. वृंदें वधावीयो रेलो ॥ साहेबा सुखथी महोलमां अथवा, सनामां क्रीडा करे ·रेलो॥ साहेबा प्रिया सहित मनमोजमां,जेम इच्छा धरे रेलो ॥ १ ॥ साहेबा पवनवेग दिन बीजे, बेठो सना करी रेलो ॥ साहेबा चक्रायुधनो दूत, आव्यो तेणी पुरी रेलो ॥ साहेबा आव्यो सनामकार, पवनवेग नमियो रेलो ॥ साहेबा कनकासन देइ हरषें, तास बेसाडियो रे लो ॥२॥ साहेबा सुख प्रश्नादिक वात, पूछे चक्री तणी रेलो ॥ साहेबा आ गम कारण पूछे,बोलुं सवि अवगणी रेलो ॥ साहेबा तेह कहे सुणो चक्री, तुम आणा करे रेलो ॥ साहेब वज्रसुंदरी तुम कन्या, मुज सयंवरे रेला ॥ ३ ॥ साहेबा मोकल्यो सांजली एम, के मनमां खलजल्यो रेलो ॥ साहेबा तो पण धीरप धारि, पवन कहे सांजलो रेलो ॥ साहेबा जो तुम मनमां एम, तो केम विलंब कर्यो रेलो ॥ साहेबा श्रीजयें पुत्र

के, मुजनें उपगस्यो रेलो ॥ ४ ॥ साहेबा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें देउं कनी रेलो ॥ साहेबा दीधी कन्या तास, के परण्यो ते धणी रेलो ॥ साहेबा पुत्र मूकावों मुज, के एम बहु कह्युं रेलो ॥ साहेबा पण मुज वचन स्वामियें, मनमां नवि लह्युं रेलो ॥ ५ ॥ साहेबा दूत कहे जो परणी, के पण मोक लो तमें रेलो ॥ साहेबा तो तुम तूसशे स्वामि के, वली कहेशुं अमें रे लो ॥ साहेबा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेलो ॥ साहेबा घटती वातनुं वयण, के मुखथी खोलीयें रेलो ॥ ६ ॥ यतः ॥ सकृत् ज ल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंमिताः ॥ सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेबा कन्यानुं मागुं होय, के एहनुं नहीं कदा रेलो ॥ साहेबा दूत कहे ए वलियो, के तुम रुसशे जदा रेलो ॥ सा हेबा ससरा जमाइनी नांखो, के गति तुम शी थशे रेलो ॥ साहेबा पवन कहे जे थानार, के थाशे नावि वशें रेलो॥ ७॥साहेबा प्राण जते पण एह,के नवि थाये किमे रेलो ॥ साहेबा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रे लो ॥ साहेबा उक्ति युक्तियी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेलो ॥ साहेबा तुमें ठो चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेलो ॥ ८ ॥ साहेबा दूत गयो हवे ताम, के चक्रीनी कनें रेलो ॥ साहेबा पवन ते मंत्रीनें पूछे, के वली चिंतवी मनें रेलो ॥ साहेबा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेलो॥ साहेबा मंत्री मूके बहु साथ, के वादनें जीपतो रेलो ॥९॥ साहेबा दूतें च क्रीनें वात, के संनलावी यदा रेलो ॥ साहेबा क्रोधयकी धमधमियो, के च क्रायुध तदा रेलो ॥ साहेबा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रे लो ॥ साहेबा इंद्रथी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेलो ॥ १० ॥ साहे बा कुलवंतामां धोरी, के जयवंता रहो रेलो ॥ साहेबा तुमथी अनीति अ न्याय, के सहु दूरें रहो रेलो ॥ साहेबा खेचर नर सुर असुर, के अुगम म ली सदा रेलो ॥ साहेबा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्त्ति संपदा रेलो ॥ ॥ ११ ॥ साहेबा चंद्र उज्ज्वल तुज कीर्त्ति,के जगमां विस्तरी रेलो ॥ साहे बा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेलो॥साहेबा अद्भुत रू प लावण्य, के कोडीगमें कनी रेलो ॥ साहेबा घर घर दीसे तेह, के रूपें रंना बनी रेलो ॥ १२ ॥ साहेबा इछायें परणी तेह,के जोगवो सुख घणुं रेलो॥ साहेबा परस्त्रीयी जाये कीर्त्ति के, थावे लघु पणुं रेलो ॥ १३ ॥ साहेबा

देव गुरु तेम धर्म के. जाणो नृपति रेलो ॥ साहिबा शुद्ध वंश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहिबा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहिबा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहिबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहिबा ज्ञान धर्म श्रुति कीर्ति, के जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहिबा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहिबा जन वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहिबा सेवकनो अपराध, के एक समीयें प्रभु रेलो ॥ साहिबा इत्यादिक उपदेश, के सांभली नृविभु रेलो ॥ साहिबा को इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहिबा पाछो उत्तर तास, के एणी परें भाखियो रेलो ॥ १६ ॥ साहिबा आठमे खंडें ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहिबा श्रीजयानंदनें रासें के, पद्मविजय भणी रेलो ॥ सा हिबा जेन मारगना जाण, के आगम सांभले रेलो ॥ साहिबा कामनदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥८०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करुं काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना बलवुं कह्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणाभंग नरेंद्रनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इछे जमाइ जीवतो, तो कहुं ते करे सो य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुध दासीपति, मौलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, छे कलावंती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपभानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंडित नें परधान रे ॥ विनीत ॥ हाकारो भ णी उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें जरी ॥ ए आंकणी ॥ संभलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानंदनें तेह रे ॥ वि०॥ विस्तारें संभलावतां, चक्रायुध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ पृ०॥

के, मुजनें उपगस्यो रेलो ॥ ४ ॥ साहेवा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें देवं कनी रेलो ॥ साहेवा दीधी कन्या तास, के परणयो ते धणी रेलो ॥ साहेवा पुत्र मूकावों मुज, के एम बहु कहुं रेलो ॥ साहेवा पण मुज वचन स्वामियें, मनमां नवि लह्युं रेलो ॥ ५ ॥ साहेवा दूत कहे जो परणी, के पण मोक लो तमें रेलो ॥ साहेवा तो तुम तूसशे स्वामि के, वली कहेशुं अमें रे लो ॥ साहेवा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेलो ॥ साहेवा घटती वातनुं वयण, के मुखथी खोलीयें रेलो ॥ ६ ॥ यतः ॥ सकृत् ज ल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंमिताः ॥ सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेवा कन्यानुं मागुं होय, के एहनुं नहीं कदा रेलो ॥ साहेवा दूत कहे ए वलियो, के तुम रुसशे जदा रेलो ॥ सा हेवा ससरा जमाइनी नांखो, के गति तुम शी थशे रेलो ॥ साहेवा पवन कहे जे थानार, के थाशे नावि वशें रेलो॥ ७॥साहेवा प्राण जते पण एह,के नवि थाये किमे रेलो ॥ साहेवा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रे लो ॥ साहेवा उक्ति युक्तियी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेलो ॥ साहेवा तुमें ठो चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेलो ॥ ८ ॥ साहेवा दूत गयो हवे ताम, के चक्रीनी कनें रेलो ॥ साहेवा पवन ते मंत्रीनें पूछे, के वली चिंतवी मनें रेलो ॥ साहेवा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेलो ॥ साहेवा मंत्री मूके बहु साथ, के वादनें जीपतो रेलो ॥ए॥ साहेवा दूतें च क्रीनें वात, के संनलावी यदा रेलो ॥ साहेवा क्रोधयकी धमधमियो,के च क्रायुध तदा रेलो ॥ साहेवा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रे लो ॥ साहेवा इंड्यी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेलो ॥ १० ॥ साहे वा कुलवंतामां धोरी, के जयवंता रहो रेलो ॥ साहेवा तुमथी अनीति अ न्याय, के सहु दूरें रहो रेलो ॥ साहेवा खेचर नर सुर असुर, के शुगम म ली सदा रेलो ॥ साहेवा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्त्ति संपदा रेलो ॥ ॥ ११ ॥ साहेवा चंड उज्ज्वल तुज कीर्त्ति,के जगमां विस्तरी रेलो ॥ साहे वा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेलो॥साहेवा अद्भुत रू प लावण्य, के कोडीगमें कनी रेलो ॥ साहेवा घर घर दीसे तेह, के रूपें रंना वनी रेलो ॥ १२ ॥ साहेवा इछायें परणी तेह,के नोगवो सुख घणुं रेलो ॥ साहेवा परस्त्रीयी जाये कीर्त्ति के, आवे लघु पणुं रेलो ॥ १३ ॥ साहेवा

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहेबा शुद्ध वंश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहेबा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहेबा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहेबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहेबा ज्ञान धर्म श्रुति कीर्त्ति, के जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहेबा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहेबा जक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहेबा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रजु रेलो ॥ साहेबा इत्यादिक उपदेश, के सांजली नृविजु रेलो ॥ साहेबा कां इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहेबा पाठो उत्तर तास, के एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहेबा आठमे खंमें ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहेबा श्रीजयानंदनें रासें के, पद्मविजय जणी रेलो ॥ सा हेबा जैन मारगना जाण,के आगम सांजले रेलो ॥ साहेबा काममदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करुं काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना वलवुं कह्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणाजंग नरेंइनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इहे जमाइ जीवतो, तो कहुं ते करे सो य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुद्ध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुद्ध दासीपति, मौलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, ठे कलावंती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपचानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंमित नें परधान रे ॥ विनीत ॥ हाकारो ज णी वलीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें नरी ॥ ए आंकणी ॥ संजलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानंदनें तेह रे ॥ वि० ॥ विस्तारें संजलावतां, चक्रायुद्ध बोल्या जेह रे ॥ वि० ॥ २० ॥

के, मुजनें उपगस्यो रेलो ॥ ४ ॥ साहेबा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें देवं कनी रेलो ॥ साहेबा दीधी कन्या तास, के परण्यो ते धणी रेलो ॥ साहेबा पुत्र मूकावो मुज, के एम बहु कयुं रेलो ॥ साहेबा पण मुज वचन स्वामियें, मनमां नवि लह्युं रेलो ॥ ५ ॥ साहेबा दूत कहे जो परणी, के पण मोक लो तमें रेलो ॥ साहेबा तो तुम तूसशो स्वामि के, वली कहेशुं श्रमें रे लो ॥ साहेबा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेलो ॥ साहेबा घटती वातनुं वयण, के मुखथी खोलीयें रेलो ॥ ६ ॥ यतः ॥ सकृत् ज ल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंमिताः ॥ सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेबा कन्यानुं मागुं होय, के एहनुं नहीं कदा रेलो ॥ साहेबा दूत कहे ए वलियो, के तुम रुसशे जदा रेलो ॥ सा हेबा ससरा जमाइनी जांखो, के गति तुम शी थशे रेलो ॥ साहेबा पवन कहे जे थानार, के थाशे नावि वशें रेलो॥ ७॥साहेबा प्राण जते पण एह,के नवि थाये किमे रेलो ॥ साहेबा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रे लो ॥ साहेबा उक्ति युक्तिथी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेलो ॥ साहेबा तुमें गे चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेलो ॥ ८ ॥ साहेबा दूत गयो हवे ताम, के चक्रीनी कनें रेलो ॥ साहेबा पवन ते मंत्रीनें पूछे, के वली चिंतवी मनें रेलो ॥ साहेबा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेलो॥ साहेबा मंत्री मूके बहु साथ, के वादनें जीपतो रेलो ॥९॥ साहेबा दूतें च क्रीनें वात, के संजलावी यदा रेलो ॥ साहेबा क्रोधयकी धमधमियो, के च क्रायुध तदा रेलो ॥ साहेबा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रे लो ॥ साहेबा इंद्रथी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेलो ॥ १० ॥ साहे बा कुलवंतामां धोरी, के जयवंता रहो रेलो ॥ साहेबा तुमथी अनीति अ न्याय, के सहु दूरें रहो रेलो ॥ साहेबा खेचर नर सुर असुर, के सुगम म ली सदा रेलो ॥ साहेबा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्त्ति संपदा रेलो ॥ ॥ ११ ॥ साहेबा चंद्र उज्ज्वल तुज कीर्त्ति, के जगमां विस्तरी रेलो ॥ साहे बा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेलो॥साहेबा अद्भुत रू प लावण्य, के कोडीगमें कनी रेलो ॥ साहेबा घर घर दीसे तेह, के रूपें रंना बनी रेलो ॥ १२ ॥ साहेबा इछायें परणी तेह, के जोगवो सुख घणुं रेलो ॥ साहेबा परस्त्रीथी जाये कीर्त्ति के, थावे लघु पणुं रेलो ॥ १३ ॥ साहेबा

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहेबा शुद्ध वंश उत्पन्न, के
अनीति न होय रति रेलो ॥ साहेबा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो
रेलो ॥ साहेबा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥
साहेबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहेबा
ज्ञान धर्म धृति कीर्त्ति, के. जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहेबा तेह कुपंथें
जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहेबा नक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न
ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहेबा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रनु
रेलो ॥ साहेबा इत्यादिक उपदेश, के सांनली नूविनु रेलो ॥ साहेबा कां
इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहेबा पाठो उत्तर तास, के
एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहेबा आठमे खंमें ढाल, ए बीजी सो
हामणी रेलो ॥ साहेबा श्रीजयानंदनें रासें के, पद्मविजय नणी रेलो ॥ सा
हेबा जैन मारगना जाण, के आगम सांनले रेलो ॥ साहेबा काममदें नवि
देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करुं काम ॥ पण लोपी मुज आ
णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना बलवुं कह्युं, शस्त्र विना
वध तेह ॥ आणानंग नरेंइनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें
कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इहे जमाइ जीवतो, तो कहुं ते करे सो
य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुद्ध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे
लिखे, मुज शांति होवे तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुद्ध दासीपति, मौलियें लिखुं
एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ
परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, ठे कलावंती तेह ॥ ६ ॥
राज्यसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता,
चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपनानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंमित नें परधान रे ॥ विनीत ॥ हाकारो न
[illegible] उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें
[illegible]ी ॥ ए आंकणी ॥ संनलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानंदनें
[illegible] रे ॥ वि०॥ विस्तारें संनलावतां, चक्रायुद्ध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ ए०॥

के, मुजनें उपगर्यो रेजो ॥ ४ ॥ साहेबा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें देउं कनी रेजो ॥ साहेबा दीधी कन्या तास, के परण्यो ते धणी रेजो ॥ साहेबा पुत्र मूकावो मुज. के एम बहु कहुं रेजो ॥ साहेबा पण मुज वचन स्वामियें, मनमां नवि लहुं रेजो ॥ ५ ॥ साहेबा दूत कहे जो परणी, के पण मोह लो तमें रेजो ॥ साहेबा तो तुम तूसशे स्वामि के, वली कहेशुं श्रमें रेजो ॥ साहेबा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेजो ॥ साहेबा घटती वातनुं वयण, के मुखथी खोलीयें रेजो ॥ ६ ॥ यतः ॥ सकृत् जल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंडिताः ॥ सकृत् कन्या प्रदीयते, त्रिण्येतानि सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेबा कन्यानुं मागुं होय, के एहनुं नहीं कदा रेजो ॥ साहेबा दूत कहे ए वलियो, के तुम रुसशे जदा रेजो ॥ साहेबा गगग जमाइनी चालो, के गति तुम शी थशे रेजो ॥ साहेबा पवन कहे जे थानार, के थाशे नावि वशें रेजो ॥ ७ ॥ साहेबा प्राण जते पण एह, के नवि थाये किमे रेजो ॥ साहेबा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रेजो ॥ साहेबा भक्ति युक्तिथी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेजो ॥ साहेबा तुमें जो चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेजो ॥ ८ ॥ साहेबा दूत गयो इहे ताम, के चक्रीनी कनें रेजो ॥ साहेबा पवन ते मंत्रीनें पूछे, के वली चिंतवी मनें रेजो ॥ साहेबा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेजो ॥ साहेबा मंत्री मूके बहु साथ, के वादनें जीपतो रेजो ॥ ९ ॥ साहेबा दूतें गयोनें वात, के मंनजावी यदा रेजो ॥ साहेबा क्रोधयकी धमधमियो, के श्रायुध तदा रेजो ॥ साहेबा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रेजो ॥ साहेबा इंद्रथी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेजो ॥ १० ॥ साहेबा कुलनंनामां धोरी, के जयवंता रहो रेजो ॥ साहेबा तुमथी अनीति अन्याय, के सहु दूरें रहो रेजो ॥ साहेबा खेचर नर सुर असुर, के गुणमणी सदा रेजो ॥ साहेबा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्ति संपदा रेजो ॥ ॥ ११ ॥ साहेबा चंद्र उज्ज्वल तुज कीर्ति, के जगमां विस्तरी रेजो ॥ साहेबा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेजो ॥ साहेबा अदभुत रूप लावण्य, के कोटीगमें कनी रेजो ॥ साहेबा घर घर दीसे तेह, के कहीं रेजो घनी रेजो ॥ १२ ॥ साहेबा इणायें परणी नेह, के भोगवो सुख घणुं रेजो ॥ साहेबा उपकारी जाये कीर्ति के, थाये लघु पणुं रेजो ॥ १३ ॥ साहेबा

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहिबा शुद्ध वंश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहिबा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहिबा तस इछा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहिबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहिबा ज्ञान धर्म धृति कीर्त्ति, के जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहिबा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहिबा नक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहिबा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रज्ञु रेलो ॥ साहिबा इत्यादिक उपदेश, के सांनली नृविज्ञु रेलो ॥ साहिबा कां इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहिबा पाठो उत्तर तास, के एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहिबा आठमे खंमें ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहिबा श्रीजयानंदनें रासें के, पद्मविजय नणी रेलो ॥ सा हेबा जैन मारगना जाण,के आगम सांनले रेलो ॥ साहेबा काममदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करुं काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना बलवुं कह्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणानंग नरेंइनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इछे जमाइ जीवतो, तो कहुं ते करे सो च ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुध दासीपति, मोलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, ठे कलावंती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपनानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंमित नें परधान रे ॥ विनीत ॥ हाकारो न णी उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें नरी ॥ ए आंकणी ॥ संनलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानंदनें तेह रे ॥ वि०॥ विस्तारें संनलावतां, चक्रायुध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ पृ०॥

के, मुजनें उपगस्यो रेलो ॥ ४ ॥ साहेबा मुज प्रतिज्ञा एह के, तेहनें ए
कनी रेलो ॥ साहेबा दीधी कन्या तास, के परण्यो ते धणी रेलो ॥ साहेबा
पुत्र मूकावो मुज, के एम बहु कह्युं रेलो ॥ साहेबा पण मुज वचन स्वामि,
मनमां नवि लह्युं रेलो ॥ ५ ॥ साहेबा दूत कहे जो परणी, के पण मोक
लो तमें रेलो ॥ साहेबा तो तुम तूसशे स्वामि के, वली कहेशुं अमें रे
लो ॥ साहेबा पवनवेग कहे ताम, के एम केम बोलीयें रेलो ॥ साहेबा
घटती वातनुं वयण, के मुखथी खोलीयें रेलो ॥ ६ ॥ यतः ॥ सकृत् ज
ल्पंति राजानः, सकृत् जल्पंति पंमिताः ॥ सकृत् कन्या प्रदीयंते, त्रिण्येतानि
सकृत् सकृत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ साहेबा कन्यानुं मागुं होय, के एहनुं नहीं
कदा रेलो ॥ साहेबा दूत कहे ए बलियो, के तुम रुसशे जदा रेलो ॥ सा
हेबा ससरा जमाइनी नांखो, के गति तुम शी थशे रेलो ॥ साहेबा पवन
कहे जे थानार, के थाशे नावि वशें रेलो॥ ७॥साहेबा प्राण जते पण एह,के
नवि थाये किमे रेलो ॥ साहेबा मीठे वचनें एह, के समजावजो तुमें रे
लो ॥ साहेबा उक्ति युक्तियी कहेजो, के जिम रूसे नहीं रेलो ॥ साहेबा
तुमें गे चतुर सुजाण, के गति एहवी अहीं रेलो ॥ ८ ॥ साहेबा दूत गयो
हवे ताम, के चक्रीनी कनें रेलो ॥ साहेबा पवन ते मंत्रीनें पूछे, के वली
चिंतवी मनें रेलो ॥ साहेबा नाम पटुवाक सार, के कोविद दीपतो रेलो ॥
साहेबा मंत्री मूके बहु साथ, के वादनें जींपतो रेलो ॥ए॥ साहेबा दूतें च
क्रीनें वात, के संजलावी यदा रेलो ॥ साहेबा क्रोधयकी धमधमियो,के न
कायुद्द तदा रेलो ॥ साहेबा पटुवाक पोहोतो ताम, के प्रणमीनें कहे रे
लो ॥ साहेबा इंद्रथी अधिकुं वीर्य, के तुज बाहु लहे रेलो ॥ १० ॥ साहे
बा कुलवंतामां धोरी, के जयवंता रहो रेलो ॥ साहेबा तुमयी अनीति अ
न्याय, के सहु दूरें रहो रेलो ॥ साहेबा खेचर नर सुर असुर, के युगम
ली तदा रेलो ॥ साहेबा कनकाचलें तुज गाय, के कीर्त्ति संपदा रेलो ॥
॥ ११ ॥ साहेबा चंद्र उज्ज्वल तुज कीर्त्ति,के जगमां विस्तरी रेलो ॥ साहे
बा नारि कारण ते मलिन, के केम करे तुं फरी रेलो॥साहेबा अद्भुत रू
प लावण्य, के कोडीगमें कनी रेलो ॥ साहेबा घर घर दीसे तेह, के रूपें रंभा
बनी रेलो ॥ १२ ॥ साहेबा इहायें परणी तेह,के जोगवो सुख घणुं रेलो ॥
साहेबा परस्त्रीयी जाये कीर्त्ति के, थावे लघु पणुं रेलो ॥ १३ ॥ साहेबा

देव गुरु तेम धर्म के, जाणो नृपति रेलो ॥ साहेबा शुद्ध वंश उत्पन्न, के अनीति न होय रति रेलो ॥ साहेबा कुलनें कलंक करी, परदारा परिहरो रेलो ॥ साहेबा तस इभा तुम थाय, के लाज न केम करो रेलो ॥ १४ ॥ साहेबा धिग् धिग् मदनने होय, के तुम सरिखा नरा रेलो ॥ साहेबा ज्ञान धर्म धृति कीर्ति, के जाणवा तत्परा रेलो ॥ साहेबा तेह कुपंथें जाय, के तेणें किरपा करी रेलो ॥ साहेबा जक्त वत्सल तुमें तेण, के प्रसन्न ता मन धरी रेलो ॥ १५ ॥ साहेबा सेवकनो अपराध, के एक खमीयें प्रभु रेलो ॥ साहेबा इत्यादिक उपदेश, के सांभली नृपविभु रेलो ॥ साहेबा फा इक शांत कोपाग्नि, के खेचर पति थयो रेलो ॥ साहेबा पाछो उत्तर तास, के एणी परें वालियो रेलो ॥ १६ ॥ साहेबा आठमे खंडें ढाल, ए बीजी सो हामणी रेलो ॥ साहेबा श्रीजयानंदनें रासें के, पद्मविजय भणी रेलो ॥ सा हेबा जैन मारगना जाण, के आगम सांभले रेलो ॥ साहेबा काममदें नवि देखे, अनरथ आगलें रेलो ॥ १७॥ सर्वगाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ मध्यवयें हुं आवियो, कामथी न करुं काम ॥ पण लोपी मुज आ णनें, नवि सही शकीयें नाम ॥ १ ॥ अग्नि विना बलवुं कह्युं, शस्त्र विना वध तेह ॥ आणाभंग नरेंद्रनी, तुमें सवि जाणो एह ॥ २ ॥ पवनवेग तेणें कारणें, राज्य जीवित खय होय ॥ इहां जमाइ जीवतो, तो कहुं ते करे सो य ॥ ३ ॥ दासी चक्रायुद्ध तणी, एहवा वर्णनी श्रेणि ॥ निजपुत्री कंकणे लिखे, मुज शांति होये तेण ॥ ४ ॥ चक्रायुद्ध दासीपति, मौलियें लिखुं एणी रीति ॥ ते आपुं हुं एहना, जामातानें प्रीति ॥ ५ ॥ ते पहेरे शिर उ परें, वली मुज पुत्री जेह ॥ चक्रसुंदरी नामथी, छे कलावंती तेह ॥ ६ ॥ वज्रसुंदरी आवीनें, मुज दत्त कंकण पहेरी ॥ नाटक शीखवे मुज सुता, चित्त राखी बहु पेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रीरूपचानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ वात सुणी चक्री तणी, ते पंडित नें परधान रे ॥ विनीत ॥ हाकारो भ णी उठीया, आव्या ते निजपुरथान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ पृथिवी पुरुष रयणें भरी ॥ ए आंकणी ॥ संभलावी वात ते पवननें, तिम श्रीजयानंदनें तेह रे ॥ वि०॥ विस्तारें संभलावतां, चक्रायुद्ध बोल्या जेह रे ॥ वि०॥ २०॥

॥ २ ॥ ह्वे पवनवेग मंत्री सहु, श्रीश्रीजयानंद एकांत रे ॥ वि० ॥ वात वि चार करता कहे, श्रीजय मत मन करो भ्रांति रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ३ ॥ जे चक्रायुधें तुमनें कह्युं, ते करियें अंगीकार रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरी राखो गो पवी, थोडो काल गेह मजार रे ॥ वि० ॥ ए०॥ ४ ॥ वज्रसुंदरीनुं करी रूप हुं, केटली लेइ साथें नारि रे ॥ वि० ॥ चक्रायुध पासें जइ करी, जणावीश तस कनी सार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥५॥ सघलुं करशुं रूडुं अमें, जेम उचित हशे तेम तेह रे ॥ वि० ॥ हुं कार्य करीश सवि एकलो, कांइ फिकर म कर शो एह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ६ ॥ एम कही सहु निज निज घर गया, तव चक्रीना पुरुष प्रधान रे ॥ वि०॥ आव्या तस पवनवेग करे, प्रतिपत्ति तथा बहु मान रे ॥ वि० ॥ ए०॥७ ॥ ते कहे चक्री एणी परें कहे, में केहेवराव्युं वे जेह रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरी मूको शीखाववा, वली वीजुं कह्युं जेह तेह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ८ ॥ जो न करे तो हुं आवीयो, युद्ध करवा थाजे ते व्यार रे ॥ वि० ॥ राज्य मूकीनें जाजो तुमें, त्रीजी गतिनो नहीं गार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ए ॥ कहे पवनवेग अं बोलीया, कोण नवि माने प्रभु आण रे ॥ वि० ॥ करी सामग्रीनें मोकलुं, आजनो दिन पडखो जाण रे ॥वि०॥ ॥ ए० ॥ १० ॥ उतारो आप्यो एम कही, अशनादिक युक्ति अपार रे ॥ ॥ वि० ॥ संतोष्या नली नीतिशुं, अवसर थयो रातनो त्यार रे ॥ वि०॥ ॥ए०॥११॥ तव श्रीजय पांचशें पुरुषनें, परीक्षा करी जेह युवान रे॥वि०॥ शस्त्र शास्त्रमां कुशल जे, काढ्यो ते करी विज्ञान रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १२ ॥ वीरांगद महाबाहु जे.सुघोष प्रमुख विदित्त रे ॥वि०॥ स्त्रीनां रूप करे तदा, थया आप समान विचित्त रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १३ ॥ वस्त्र आनूषण सा रिखां, वियायें ते करे रूप रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरीनां जेहवुं, आप रूप करे नरनूप रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १४ ॥ चिंतामणि रत्न प्रनावथी, रूडां वस्त्र त था अलंकार रे ॥ वि० ॥ दुर्जन नहीं वज्रसुंदरी, गोपवी वली गेह मजार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१५॥ पवनवेग प्रातःसमे, ते परधाननी साख रे ॥वि०॥ कारिमी पुत्रीनें कहे, सांनलो तुमें महारी नाख रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १६ ॥ नाटक कला शिखावीनें, करजो स्वामी संतोष रे ॥ वि० ॥ सा कहे तात ॥१७॥ करुं, एहमां नही कांइपे मोष रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१७॥ शस्त्र गुन रालो करो, वेग सहुये विमान रे ॥वि०॥ नाट्यसामग्री प्रगट पणे, पोहों

ना पत्नीनें पान रे ॥ वि० ॥ छ० ॥१०॥ सूरी तपावननी ते नगा, जइ कहे पत्नीने वात रे ॥ वि० ॥ वालीयो तेहवा मोकले, केयदे तस दर्व न मान रे ॥ वि० ॥ छ० ॥ १७ ॥ पर्वतनो कोइ पालके जइ, मुके गोवचो ते मग रे ॥ वि० ॥ पालमी म्हीलो सूखी करी, पहेरी नलंकृत वस्त्र रे ॥ वि०॥ ॥ छ० ॥२०॥ गय सुन्दर ते जाबीया, ते पदन जयोमुख शान्ति रे ॥ वि०॥ पद्मसुंदरी जसी म्ही. दूरे लाजयी घुंघट शान्ति रे ॥ वि० ॥ छ० ॥ २१॥ बहु नारी पही पडीने पयो, पाता विशालननी तीन रे ॥ वि०॥ नीरजावी ते पटी एहने.जगमां नहीं एहवुं नीम रे ॥ वि० ॥ छ० ॥२२॥ नरपति पुत्री परें दिल चिंतवी,बसो एह रूप प्रमाण रे ॥ वि० ॥ म्हारा कन्यानी ए छ डी, नृप करवानी आण रे ॥ वि० ॥ छ० ॥ २३ ॥ प्रीती म्हाडमा खंड मो,पर पद्मविजय कही ढाल रे ॥ वि० ॥ श्रीश्रीजयानंदना रासनी, पान सुणजो हवे सुरसाल रे ॥वि०॥छ०॥२४॥ सर्वगाथा ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप आपणो ते हवे.गीत वात मनोहार ॥ सर्वगोपें करी परवरी. नाटक करे उदार ॥१॥ देखी नृप सुख पामहिया. वस्त्र दाने अलंकार ॥ देखी देखी रीजतो. देवा दान अपार ॥ २ ॥ दास दासादिक बहु दीये, देइ आदर मान ॥ रहेवा आवास आपतो, जाणे मर्ग विमान ॥ ३ ॥ सोंपी पुत्री शीखवा. पद्मसुंदरी तेह ॥ निज परिवारें परवरी, रहे आवासें तेह ॥ ४ ॥ व ज्रसुंदरी शीखवे, नाटक कला अभ्यास ॥ निज सम पद्मसुंदरी प्रस्यें. नित्य नित्य गरली पास ॥ ५ ॥ प्रकारें सरलति सखी. सोनागिण सुविनीत ॥ सर कलाविदी गुणवती. हीहे परती प्रीति ॥ ६ ॥ योगिणीवृंद ते गावती, श्रीजयकुमर चरित्र ॥ माया नारी तद्दु मली.स्वर पद वर्ण विचित्र ॥ ७ ॥ च त्रि विचित्र सुणी करी, कन्या कुमरशुं राग ॥ परती पूछे हे सखी.कोण श्री जय महाभाग ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ न्हानोके न्हानो नाहलो रे. न्हानो वांसानो टोड ॥

॥ न्हानो० ॥ ए देशी ॥

॥ जे तुमें गावो गीतमां रे,श्रीजयानंद कुमार ॥ लागी मोहनीरे ॥ चकी के चकी समोवडे रे. जग नहीं एहवो उदार ॥ ला० ॥ १ ॥ ते मुज नांखो कोण छे रे, तव ते बोली नारि ॥ला०॥ योगिणीगण गातो चकी रे, पवेत

॥ २ ॥ हवे पवनवेग मंत्री सहु, श्रीश्रीजयानंद एकांत रे ॥ वि० ॥ वात वि चार करता कहे, श्रीजय मत मन करो भ्रांति रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ३ ॥ जे चक्रायुधें तुमनें कह्युं, ते करियें अंगीकार रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरी राखो गो पवी, थोडो काल गेह मझार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ४ ॥ वज्रसुंदरीनुं करी रूप हुं, केटली लेइ सार्थे नारि रे ॥ वि० ॥ चक्रायुध पासें जइ करी, नणावीश तस कनी सार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥५॥ सघलुं करशुं रूडुं अमें, जेम उचित हशे तेम तेह रे ॥ वि० ॥ हुं कार्य करीश सवि एकलो, कांइ फिकर म कर शो एह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ६ ॥ एम कही सहु निज निज घर गया, तव चक्रीना पुरुष प्रधान रे ॥ वि०॥ आव्या तस पवनवेग करे, प्रतिपत्ति तया बहु मान रे ॥ वि० ॥ ए०॥७ ॥ ते कहे चक्री एणी परें कहे, में केहेवराव्युं ते जेह रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरी मूको शीखाववा, वली बीजुं कह्युं जेह तेह रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ८ ॥ जो न करे तो हुं आवीयो, युद्ध करवा थाजे तै य्यार रे ॥ वि० ॥ राज्य मूकीनें जाजो तुमें, बीजी गतिनो नहीं वार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ ए ॥ कहे पवनवेग शुं बोलीया, कोण नवि माने प्रचु आण रे ॥ वि० ॥ करी सामग्रीनें मोकलुं, आजनो दिन पडखो जाण रे ॥वि०॥ ॥ ए० ॥ १० ॥ उतारो आप्यो एम कही, अशनादिक युक्ति अपार रे ॥ ॥ वि० ॥ संतोष्या नली नांतिशुं, अवसर थयो रातनो त्यार रे ॥ वि०॥ ॥ए०॥११॥ तव श्रीजय पांचशें पुरुषनें, परीक्षा करी जेह युवान रे॥वि०॥ शस्त्र शास्त्रमां कुशल जे, काढ्यो ते करी विज्ञान रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १२ ॥ वीरांगद महाबाहु जे,सुघोष प्रमुख विदित्त रे ॥वि०॥ स्त्रीनां रूप करे तदा, थया आप समान विचित्त रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १३ ॥ वस्त्र आनूषण सा रिखां, विद्यायें ते करे रूप रे ॥ वि० ॥ वज्रसुंदरीनां जेहवुं, आप रूप करे नरनूप रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १४ ॥ चिंतामणि रत्न प्रनावथी, रूडां वस्त्र त था अलंकार रे ॥ वि० ॥ कुलेन नहीं वज्रसुंदरी, गोपवी वली गेह मझार रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१५॥ पवनवेग प्रातःसमे, ते परधाननी साख रे ॥वि०॥ कारिमी पुत्रीनें कहे, सांजलो तुमें महारी भाख रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ १६ ॥ नाटक कला शिखावीनें, करजो स्वामी संतोष रे ॥ वि० ॥ सा कहे तात आण करुं, एहमां नही कांइये मोष रे ॥ वि० ॥ ए० ॥१७॥ शस्त्र गुप्त राखी करी, वेगा सहुये विमान रे ॥वि०॥ नाटयसामग्री प्रगट पणे, पोहो

पढो एहनें.जगमां नही एहवुं नीम रे ॥ वि० ॥ ए० ॥२२॥ नरपति एणी परें चित्त चिंतवी,अहो एह रूप प्रमाण रे ॥ वि० ॥ खाण कलानी ए ह शे, नृत्य करवानी आण रे ॥ वि० ॥ ए० ॥ २३ ॥ त्रीजी आठमा खंड मां,वर पद्मविजय कही ढाल रे ॥ वि० ॥ श्रीश्रीजयानंदना रासमां, वात सुणजो हवे सुरताल रे ॥वि०॥ए०॥२४॥ सर्वगाथा ॥ए१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप आणाथी ते हवे,गीत वात मनोहार ॥ सर्वस्त्रीयें करी परवरी. ना टक करे उदार ॥१॥ देखी नृप मुख चमकिया, वस्त्र अनें अलंकार ॥ देखी देखी रीजतो, देवा दान अपार ॥ २ ॥ ग्राम दासादिक बहु दीये, देइ आद र मान ॥ रहेवा आवास आपतो, जाणे स्वर्ग विमान ॥ ३ ॥ सोंपी पुत्रीश्री खवा, चक्रसुंदरी जेह ॥ निज परिवारें परवरी, रहे आवासें तेह ॥ ४ ॥ व जसुंदरी शीखवे, नाटक कला धन्यास ॥ निज सम चक्रसुंदरी प्रत्यें, नित्य नित्य राखी पास ॥ ५ ॥ प्रज्ञायें सरसति समी, सोनागिण सुविनीत ॥ सर्व कलाविधी गुणवती, शीखे धरती प्रीति ॥ ६ ॥ योगिणीवृंद ते गावती, श्रीजयकुमर चरित्र ॥ माया नारी सहु मली,स्वर पद वर्ण विचित्र ॥ ७ ॥ च रित्र विचित्र सुणी करी, कन्या कुमरशुं राग ॥ धरती पूछे हे सखी,कोण श्री जय महानाग ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ न्हानोके न्हानो नाहलो रे, न्हानो चांपानो छोड ॥

॥ न्हानो० ॥ ए देशी ॥

॥ जे तुमें गावो गीतमां रे,श्रीजयानंद कुमार ॥ लागी मोहनीरे ॥ चक्री के चक्री समोवडे रे, जग नहीं एहवो उदार ॥ ला० ॥ १ ॥ ते मुज नांखो कोण छे रे, तव ते बोली नारि ॥ला०॥ योगिणीगण गाती थकी रे, पर्वत

केली मजार ॥ ला० ॥ २ ॥ ते श्रमें सांजली शीखियां रे, पण नवी उंल खुं तास ॥ला०॥ पण वज्रसुंदरी वर समो रे, उत्तम गुण श्रावास ॥ला०॥ ॥ ३ ॥ ज्ञानीयें उत्कृष्टो कह्यो रे, इणहीज जरत मजार ॥ला०॥ संजवीयें एम सांजली रे, देखी कलादिक वार ॥ ला० ॥४॥ वज्रसुंदरीशुं रीजती रे, इछे रहेवुं तस पास ॥ ला०॥ जाग्य होये जो माहरुं रे,तो एहवो धव खास ॥ ला० ॥ ५ ॥ वज्रसुंदरी जेली रहुं रे, पण हवे परण्यो तेह ॥ ला० ॥ तात धरे द्वेप तेहशुं रे,केम श्रापे मुज एह ॥ ला० ॥ ६ ॥ तेणें हुं श्रनागिणी मावडी रे, एम मन धरती शोक ॥ ला० ॥ श्रामण दूमणी ते रहे रे, रवि विरहें जेम कोक ॥ला०॥७॥ तव ते देखी पूठती रे, कारमी नारीयो एम ॥ ॥ ला० ॥ रे वत्स तुं रंजा समी रे, इछे पुरंदर प्रेम ॥ला०॥८॥ सा कहे सां जलो बेहेनडी रे,चंद्र ग्रहेवा निज पाणि ॥ ला० ॥ हांसी थाये जेम तेणी परें रे, शुं श्रसाध्य वखाण ॥ ला० ॥९॥ नारियो कहे तुं सांजले रे, वज्र सुंदरी एह ॥ ला० ॥ एहनें श्रसाध्य कांइ नथी रे, इछे ते करे जेह ॥ला०॥ ॥ १० ॥ दीठी कला तें जेहवी रे,जगतनें जीतणहार ॥ ला० ॥ तेहवुं परा क्रम जाणजे रे, फेर पडे न लगार ॥ला० ॥११॥ पण मन थिर नवि सं जवे रे, ताहरुं श्रम मनमांहि ॥ ला० ॥ नारीनुं चित्त चपल होये रे,कदि प रें थिर नही क्यांहि ॥ ॥ ला० ॥ १२ ॥ चपल चित्त श्रर्थे करे रे, कोण विषम ए काम ॥ ला० ॥ सा कहे रत्नसंगति परें रे, माहारुं मन दृढ ठा म ॥ ला० ॥ १३ ॥ जेम दरिद्री धनरागीयो रे,श्रमृत रोगी मान ॥ला०॥ तरश्यानें श्रमृत परें रे, तेम माहारे बहु मान ॥ ला० ॥ १४ ॥ नारियो कहे जो एम ठे रे,तो तुं था तैयार ॥ ला० ॥ ते पण श्रावी उतावली रे, लइ निज धन सुख लार ॥ ला० ॥ १५ ॥ नारियो सहु संजलावती रे, श्रीजयानंदने वात ॥ ला० ॥ ततक्षण रचीया विमानमां रे, वेसाडी तं ख्यात ॥ ला० ॥ १६ ॥ चाल्यो गगनमां तेहवे रे, महोल उपर रही एम ॥ला०॥ उद्घोषणा करे श्राकरी रे, सुणजो श्राणी प्रेम ॥ ला० ॥ १७ ॥ रे चक्री रे खेचरा रे, वीर तणुं तुज मान ॥ला०॥ लेइ जाउं चक्रसुंदरी रे, संजलावी तुम कान ॥ ला० ॥ १८ ॥ बलवंता जो हो तुमें रे,तो श्रीजया नंद राय ॥ ला० ॥ पासेंथी मूकावजो रे, ठल न करुं एणें ठाय ॥ ला० ॥ ॥ १९ ॥ एम कही नगर उद्यानमां रे, श्रावी गुप्त हथीयार॥ला०॥ मंत्र

वे बहु जातिना रे, श्रीजयानंद कुमार ॥जा०॥१९॥ आठमे खंडें चोथी कही रे, पद्मविजयें वर ढाल ॥ जा० ॥ श्रीजयानंदना रासमां रे, पुरुषें मंगलमाल ॥ जा० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ ११९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते सांजली विस्मय लह्यो.चिंतवे खेचर राय ॥ अहो पराक्रम नारिनुं, अहो अनीति कराय ॥ १ ॥ बहु सुनटनें मोकले. कन्या वालवा काम ॥ माया स्त्रीशुं जूजिया, धरता अतिशय माम ॥ २ ॥ हाय्या ते नागायका, आव्या चक्री पाय ॥ स्त्रीयें हरव्या लाजथी, मुखथी नवि बोलाय ॥ ३ ॥ पण रुधिरें खरडया थका. देखी क्रोध नराय ॥ महाबल मोकले विस्मयें,पायकना समुदाय ॥ ४ ॥ केइ विमान मांहे रह्या, केइ वेग गजराज ॥ तुरग चढया केइ तेजशुं, लेइ निज निज साज ॥ ॥५॥ युद्ध करंता तेहशुं, नाग सुनट जे नारि ॥ राखो अम्ह कहेता थका, जिहां ने श्रीजयकुमार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ जाउं जाउं रे रुवडा नाथ, तुमशुं नहीं बोलुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी उठीया, कांइ युद्ध करणने काज रे ॥ स्त्रीरूपें आवी नडयो, कांइ बलवंतो महाराज ॥ १ ॥ गुणगणवंतो रे, मारो मारो रे करे हुंकार ॥ गु० ॥ लेइ लेइ रे कर हथियार ॥ गु० ॥ शूरवीर थइ शिरदार ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ गदा लेइने चूरतो, कांइ पापड परें विमान रे ॥ महावतशुं गज पाडतो, कांइ पर्वत शिला समान ॥ गु०॥ २ ॥ गरुड परें हय लेइने, कांइ गगनें नमाडे तेह रे ॥ चंचा पुरुष तणीपरें, कांइ पाडे सुनटनें जेह ॥ गु० ॥ ३ ॥ केलिनुं वन जेम हाथीयो, कांइ हिम जिम कमलनी खंम रे ॥ स्त्रीरूपें कुमरें तदा, कांइ त्रासव्यो तेज प्रचंम ॥ गु० ॥ ४ ॥ मूकी मन नाशि गया, कांइ निन्न निन्न सहु जाय रे ॥ रुधिर करंता लाजता, कांइ आव्या जिहां नरराय ॥ गु० ॥ ५ ॥ स्त्रीयें हरव्या ते लाजथी, कांइ मुख न देखाडे आय रे ॥ तेह सरूप चरयो सुणी, कांइ नरपति खेद न राय ॥ गु० ॥ ६ ॥ खेद लाज विस्मय घणो, कांइ क्रोधथी व्याकुल थाय रे ॥ पुत्री पाठी वालवा, कांइ उठे पोतें राय ॥ गु० ॥ ७॥ स्त्री उपर ए नाखतां, कांइ लाजे ठे मुज बाण रे ॥ मोहोटो अपजश चिंतवी, कांइ वेग तिणहिज गण ॥ गु० ॥ ८ ॥ पवनवेग खेचर पति, कांइ जोगरत्यादिक आव रे ॥ बोलाव्या ते आविया, कांइ बहु बलनो करी गाव ॥ गु० ॥

॥ ए ॥ चंद्गति वली आवीयो, कांइ लेइ बहु परिवार रे ॥ मित्रादिक संबंधथी, कांइ नृप विद्याधर वार ॥ गु० ॥ १० ॥ दक्षिण श्रेणिना राजवी, कांइ पवनवेगशुं मेल रे ॥ तस बोलाव्या आविया,कांइ तन मन तेहमां जेल ॥ गु० ॥ ११ ॥ प्रायें दक्षिण श्रेणिना, कांइ पवनवेग सहु लेय रे ॥ सैन्य घणुं नेळुं करी, कांइ आव्यो पूर्व संकेय ॥ गु० ॥ १२ ॥ चक्रायुध पण खोनियो, कांइ देखी तेह बनाव रे ॥ त्राण रहित जेम जय लहे, कांइ जेम शनि मकर स्थिति दाव ॥ गु० ॥ १३ ॥ काहला त्रट त्रट वाजती, कांइ नीपण उठे नाद रे ॥ शस्त्र लेइ नट धावता, करे बूंबारव सविषाद ॥ गु० ॥ १४ ॥ कायर सुनट ते नासता, कांइ जय कोलाहल जास रे ॥ केइं बालक लेइ रोवती, कांइ तरलाक्षी लेइ त्रास ॥ गु० ॥ १५ ॥ आलान मूल उमेलिनें, कांइ नाग तिहां गजराज रे ॥ अश्वस्वार नाखी दीये, कांइ अश्व ते न खमे ताज ॥ गु० ॥ १६ ॥ नीपण नांकारव करी, कांइ गायो त्रोडी राश रे ॥ वृषजनें महीषी तेम जमे, कांइ जयविव्हल लही त्रास ॥ गु० ॥ १७ ॥ पाणिहारी अंगें कंपती, कांइ फोडे घट समुदाय रे ॥ आजूषण खशीनें पडे, कांइ नारि न जाण्या जाय ॥ गु० ॥ १८ ॥ नासंतां ढोर ते पाडतां, कांइ नरनारीनें पंथ रे ॥ हाल कल्लोल नगरी थइ, कांइ स्थिर नहीं कांइ अंथ ॥ गु० ॥ १९ ॥ त्रुटचा हार मोती तणा, कांइ पुंज ते मानुं एह रे ॥ कुंअर आववा कारणें, कांइ स्वस्तिक पूरवा जेह ॥ गु० ॥ २० ॥ केइ कहे जूउ नारिथी, कांइ नगर खोजाणुं एम रे ॥ कोइ कहे ए नट थठे, कांइ नारी करे एम केम ॥ गु० ॥ २१ ॥ इंद्र तथा लोकपाल ए, कांइ शत्रुपक्षें आय रे ॥ नवि जीताये कोइ कहे, कांइ चक्रायुधें जीताय ॥ गु० ॥ २२ ॥ मत बीयो केइक कहे, कांइ एहनो कहो स्यो जार रे ॥ आपणा सामी आगलें, कांइ सहुए तृण अनुहार ॥ गु० ॥ २३ ॥ आठमे खंमें पांचमी, कांइ पद्मविजयें कही ढाल रे ॥ पुण्यपसायें जीवनें, कांइ होवे मंगलमाल ॥ गु० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ १४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ परचक्रागम सांजली, देखी पुरनो क्षोन ॥ कहे कोण मरवा आवियो,पाडवा घरनो मोन ॥१॥ चर आवी कहे चक्रीनें,पवनवेगादिक नाम ॥ चक्री कहे रंका अहो, नगर खोजावे आम ॥ २ ॥ सीमा लंघी मादरी, हा

स्य थयुं जनमांहि ॥ अथवा मुज उत्सव थयो, जेणें आव्यो ए आंहि ॥
॥ ३ ॥ कंमू जशे मुज कर तणी, मुज प्रताप वर आग ॥ वयरी इंधण पा
मीनें, अथवा दीपवा लाग ॥ ४ ॥ अथवा स्त्री आगल करी, सुनट जूऊशे
जेह ॥ मुज रण कौतुक पूरवा, केम समरथ ने तेह ॥ ५॥ आप शक्ति अ
ण जाणतो,आव्यो मुज पुर पास ॥ शिक्षा देइ लेउं पुत्रीनें,एहनें करुं नि
राश ॥६ ॥ एम चिंती चक्री हुवे,वजडावे रण नेरि ॥ सुनट सवे तव सज
थया, सांनली नादने सेर ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ लाल पीयारीनो साहेबो रे ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी मोरा रे, गज उपर चढे जेटले रे, पूर्वाचल जेम सूर लाल ॥ म
स्तक मुकुट पडि गयो रे, तेटले गयुं मानुं नूर लाल ॥ १ ॥ पुण्य प्रमाणें स
हु नीपजे रे ॥ ए आंकणी ॥ स्वा० ॥ लघु वडी नीति साथें करे रे, जयनी
परें गजराज लाल ॥ छींक थइ सन्मुख तदा रे, वारे शकुन ते काज लाल.
॥ पु० ॥ २ ॥ स्वा०॥ वलें पग स्खलिउं तदा रे,चामरधारिणी नार लाल ॥
चामर तस करथी पडयुं रे, सूचवे अतिघ्र असार लाल ॥पु०॥३॥ स्वा०॥
कारण विण चलियो तदा रे,छत्र तणो जेह दंम लाल ॥ सचिव ते देखीनें
नृपप्रत्यें रे, विनवे तेज प्रचंम लाल ॥पु०॥४॥स्वा०॥ ए अपशकुन ते एम
कहे रे, रणयात्रा नवि थाय लाल ॥ सांनलो विनती अम्ह तणी रे, वेसो
आसन गाय लाल ॥ पु०॥५॥स्वा० ॥ वेग खेचर पति तदा रे,हित कोण
माने न वयण लाल ॥ बोले सचिव स्वामी सुणो रे, हितकारी अम वयण
लाल ॥ पु० ॥ ६ ॥ स्वा० ॥ शत्रु सैन्य नांज्यां तुमें रे, लीलायें शूरवीर
लाल ॥ नवि नांज्युं सैन्य तुम तणुं रे, बलवंत तुम धीर लाल ॥ पु० ॥
॥७॥स्वा०॥ नारी एह न संनवे रे, परिकर पण नहीं नारी लाल ॥ पवन
वेगादिक राजिया रे, स्त्रीनें आवे नवि ल्हार लाल ॥ पु० ॥ ८ ॥ स्वा० ॥
नोगरत्यादिक नृपति रे, विद्याधर तणा वार लाल ॥ महाजड मानी आवे
नही रे, नारी पूठें अवधार लाल ॥ पु० ॥ ९ ॥ स्वा० ॥ वज्रसुंदरी वर ए
ह ठे रे, देवांगना गुण गाय लाल ॥ तुम वचनें परानव लही रे, आव्यो
श्रीजयराय लाल ॥ पु० ॥ १० ॥ स्वा० ॥ अपजश आपवा तुम्हनें रे, ना
रियोनां करी रूप लाल ॥ नारियें जींत्यो ए चक्रीनें रे, एहवुं मन धरी नूप
लाल ॥ पु० ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ कंकण मौलि अक्षर कदा रे, समरथ छत्री

जे होय लाल ॥ एह परानव श्राकरो रे, वीर खमे नहीं कोय लाल ॥ पु० ॥ १२ ॥ ॥ स्वा० ॥ सांजलीयें जनगीतमां रे, एहना तो अवदातें ला ल ॥ श्रीविशाल नृप रीजव्यो रे, बुद्धि पराक्रम वातें लाल ॥ पु० ॥ १३॥ स्वा० ॥ गिरिमालिनी प्रमुखा सूरी रे, वश कीधी प्रतिबोधि लाल ॥ गिरि चूड सुर कोल रूपथी रे, जीत्यो ए लक्ष्योधि लाल ॥ पु०॥ १४ ॥ स्वा०॥ जीत्यो एणें क्षेत्रपालनें रे, मलयमाल ते देव लाल ॥ श्रोपधियो तेणें दी धी घणी रे, समकेती थइ करे सेव लाल ॥ पु० ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ विप्र रूपें वली जींतीयो रे, पद्मरथ नरराय लाल ॥ कोडयो सुनटथ्रं एकले रे, नास्तिक नृपनें बंधाय लाल ॥ पु० ॥ १६ ॥ स्वा०॥ वानर करीनें विडंबी यो रे, प्रतिबोध्यो वली तेह लाल ॥ सहु कुटुंब नेलुं कर्युं रे, वाध्यो अति ससनेह लाल ॥ पु०॥ १७ ॥ स्वा०॥ वली वामन रूपें जींतीयो रे, राज कुमार अनेक लाल ॥ श्रीपतिरायनी कन्यका रे, जीती कलायें विवेक ला ल ॥ पु० ॥ १८ ॥ स्वा० ॥ परएयो तिहां त्रण कन्यका रे, वली योगिनी योयें परएयो लाल ॥ खोन्यो नहीं तेह देखीनें रे, अंतर आतम हरख्यो ला ल ॥ पु० ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ वज्रवेग मूकावीयो रे, वलयी योगिणी पास लाल ॥ महाज्वाला कामाक्षा वली रे, न पड्यो तेहनें पास लाल ॥ पु०॥ ॥ २० ॥ स्वा० ॥ योगिणी सहित ते तूवियां रे, दीधां दिव्य ते शस्त्र ला ल ॥ वली शक्ति दीधी नक्तियी रे, आनूपण वली वस्त्र लाल ॥ पु०॥२१॥ स्वा० ॥ चूर्यो वज्रकूट पाहाडनें रे, जीत्यो वज्रमुख नाम लाल ॥ चंडग तिनी जे नामिनी रे, ते मूकावण काम लाल ॥ पु० ॥ २२ ॥ स्वा० ॥ सा त्विकमांहे शिरोमणि रे, मूकावी तस नारि लाल ॥ स्त्री रूपें ए डुर्जय घणो रे, श्रीजयानंद कुमार लाल ॥ पु० ॥ २३ ॥ स्वा० ॥ कोप म करजो प्रसादयी रे, कन्या कोइने देवी लाल ॥ वर एहवो जडशे नहीं रे, वात कं कण मौलि केहवी लाल ॥ पु० ॥ २४ ॥ स्वा० ॥ वीसारी सवि वातनें रे, कन्या एहनें दीजें लाल ॥ स्वार्थे लाव्यो एहने इहां रे, पवनवेग वदी जें लाल ॥ पु० ॥ २५ ॥ स्वा० ॥ परणी लाशे निज राज्यमां रे, तुम्ह उपर धरी स्नेह लाल ॥ सेवक पवनवेगादिका रे, प्रीति विशेषें धरेह लाल ॥ पु० ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ पालो निष्कंटक राज्यनें रे, एकांतें नवि कीजें ला ल ॥ जो रति अवसर जोइनें रे, हितकारी ए कहिजें राज ॥पु०॥२७॥स्वा०॥

ठठो आठमा खंमां रे, पद्मविजय कही ढाल लाल ॥ श्रीजयानंदना रास मां रे, पुण्यथी मंगलमाल लाल ॥ पु० ॥ २८ ॥ सवा० ॥ सर्वगाथा ॥ १८४॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रि वाणी एम सांजली, बोल्यो खेचर राय ॥ अनिष्ट शंका चित्त मां धरी, स्नेह कारणें कहो आय ॥१॥ परनारी हरथी करी, परणावुं वली एह ॥ स्यो महिमा माहारो रहे, अपत्य न राखे जेह ॥ २ ॥ पवनवेगनी दीकरी, वियाकला उन्माद ॥ चेष्टा एहवी आचरे, उतारुं एह नाद ॥ ३ ॥ नारीनें न होये बुद्धडी, पूर्वापरनो विचार ॥ अयवा स्त्री रूपें हजो, श्रीजयानंद कुमार ॥ ४ ॥ वियाधर चक्री किस्यो, एहनो जय करुं मन्न ॥ जय न धरुं मनमां जरा, सांजलजो रे स कन्न ॥ ५ ॥ नृप सुर कीटक प्राय ते, देवीयो कीटिका प्राय ॥ तेणें जीत्या तो शुं थयुं, मुजनें नवि जीताय ॥ ६ ॥ शिलावटपरें चूरीयो, एणे पर्वत तो कांय ॥ दिव्यशस्त्र मुज आगलें, एहथी नवि रहेवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ सुगुण सुगुण सोनाग। जंबूद्विपमां होजी ॥ ए देशी ॥

॥ अर्द्ध अर्द्ध जरतमांहे रह्या होजी, नर सुर खेचर कोय ॥ आण आण उलंघे माहरी होजी, दीठो न सांजल्यो सोय ॥ अ० ॥ १ ॥ विया विया दिव्य शस्त्र जलां होजी, बाहुबल मुज जेह ॥ दीठुं दीठुं किहांये तुमें ते कहो होजी, शुं बीवरावे एह ॥ अ० ॥ २ ॥ इंद्र इंद्र चंद्र विरोचन वलि होजी, होय जनार्दन जोय ॥ तेहनें तेहनें पण जीतुं सदा होजी, ए कोण मातर होय ॥ अ० ॥ ३ ॥ सेवक सेवक चिरकालें रही होजी, नारी अनुत्त रो जेह ॥ बपरी बपरी पवनवेग देखीनें होजी, मुज चक्र न सहे तेह ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ ग्रास ग्रास पमाडुं हुं केहवो होजी, हरि जेम मृगनां बाल ॥ सचिव सचिव बोले ते सांजली होजी, सांजलो तुमें नृपाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सैन्य सैन्य वियाधरनां सहु होजी, तेहवो धरी नेह ॥ तेज तेजस्वी पण एकलो होजी, पामे पराजव तेह ॥ अ० ॥ ६ ॥ फरतो फरतो गगनें एकलो होजी, सूरय राहु ग्रसाय ॥ अल्प अल्प परिछेदें चंद्रमा होजी, पूनमें ग हु ग्रहाय ॥ अ० ॥ ७ ॥ बीनें बीनें बहुपरिवारथी होजी, राहु न आवे पास ॥ नृप नृप सुणी गरवें करी होजी, वक्र वक्र मुखें सवि रास ॥अ०॥ ॥८॥ पण ते पण ते मान्य तेणे करी होजी, मान्युं वचन प्रमाण ॥ एकलो

एकलो जय अर्थी थको होजी, भुजवलनुं बहु माण ॥ अ०॥ ए॥ शत्रु शत्रुनें कहेवराविशुं होजी,थाउं हुं अम्ह सङ्क ॥ त्रण त्रण दिवस पछखो तुमें होजी, पछे संग्रामनुं कङ्क ॥ अ० ॥ १० ॥ सायें सायें मूके दोय श्रेणिमा होजी, दूत नूपालनें ताम॥ सेना सेना लेइ सहु आवीया होजी,च क्रीनें करे प्रणाम ॥ अ० ॥ ११ ॥ आदर आदर बहु नृपनें दियो होजी, सैन्य सहित हरषत ॥ तत्पर तत्पर रण करवा नणी होजी, नृपनी शिक्षा सुणंत ॥अ०॥१२॥ चोथे चोथे दिन चक्री हवे होजी, स्नान पूजा विरचंत ॥ नोजन नोजन करे मनमोदशुं होजी, मंगलाचार करंत ॥ अ० ॥ १३॥ युद्धनी युद्धनी सामग्री सवे होजी, मेलवी ते नरनाह ॥ गजवर गजवर उपर हरखशुं होजी, बेसे धरत उत्साह ॥ अ० ॥ १४ ॥ छत्र छत्र चामर वींजो जते होजी, निकलीयो घर बाहार ॥ विविध विविध शस्त्रें नखो रथ तदा होजी, सन्नद्ध थाइ तैयार ॥ अ०॥ १५ ॥ चक्र चक्रवेग महावेगनें हो जी, वीरांगद एणें नाम ॥ महावल महाबल सुषेणनें सुमुखा होजी, नंद कुमर अनिराम ॥अ०॥१६॥ धीर धीर सेननें दृढायुधा होजी, महायुद्धनें चंद्रसेन ॥ सुवीर सुधीर नानु वज्ञानना होजी,नूवीरनें महासेन ॥अ०॥१७॥ शूर शूर वीर रविप्रन नामथी होजी,सिंहनें चंद्रमुख तेम॥ वज्ञा वज्ञाह्व वज्ञ माली वज्ञी होजी, शनि महाबाहु सप्रेम ॥अ०॥१८॥ महावीर्य महावीर्य चंद्रकेतन तथा होजी, वली चंद्रान विचार ॥ पुत्र पुत्र इत्यादिक चक्रीना होजी, विक्रमी बार हजार ॥ अ० ॥ १९ ॥ गजरथ गजरथ शार्दूल उपरें होजी, तुरगनें वली वराह ॥ विविध विविध वाहनें आवी मल्या होजी, विविध आयुध धरी चाह ॥ अ० ॥ २० ॥ तूर तूर वाजे समकालमां हो जी, नादें गगन नराय ॥ मेघ मेघ प्रलयना शब्दनें होजी, मानुं उलंघी जाय ॥ अ० ॥ २१ ॥ नगर नगरवासी बहु नट वडा होजी, नीकल्या रण का णाय ॥ एक एकथी जाये आगलें होजी, पंखी परें ते वजाय ॥अ०॥२२॥ आठमा आठमा खंडमां सातमी होजी, ढाल ए नाखी उदार ॥ पद्म पद्म विजय कहे पुण्यथी होजी,होवे जयजयकार ॥अ०॥२३॥ सर्वगाथा॥२१३

॥ दोहा ॥

॥ सेनानी नट कोटिशुं, परवारीयो परिवर ॥ चंद्रवेग सिंहरथें करी, नीसरीयो ते बाहार ॥ १ ॥ वज्र कंठ महाबल नला, नानुकेतु नरवीर ॥

तडितवेग कौशल वली, कलाचंद्र हरिवीर ॥ २ ॥ पवन अंगद महाकीर्त्ति तेम, सुजतानें वलवीर ॥ नंदन पृथु सुनीपण वली, कृतांतास्य महाधीर ॥ ३ ॥ धूमकेतु धूमाक्ष तेम, गजरथ वेग एह ॥ नरपति बहुनट परिव खा, नीसरीया रणनेह ॥ ४ ॥ मदन कासरनें महायशा, कामकेतु वली नीम ॥ तपन प्रताप तथा रमण, नहि पराक्रमनी सीम ॥ ५ ॥ कामनंद न अक्षोन तेम, इत्यादिक नरराय ॥ सिंहयुक्त रथें नीकले, इत्यादिक समु दाय ॥ ६ ॥ सुनट लखो गमे सामटा,देखी बीहे वीर ॥ कायर नवि देखी शके, वली नाखुं माहाधीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ मोरा साहेब हो श्रीशीतल नाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ हवे व्याघ्र हो जोडया रथ जास के,नाम सुणो तुमें तेहनां ॥ प्रल्हा दनें हो शत्रुदम अंकुश के, त्रास दीयें नाम जेहनां ॥ १ ॥ चंद्रवेग हो म हापाणि सुचक्र के, वज्रकेतन वली जाणीयें ॥ गदाधरनें हो वली चपल जोधार के, पराक्रमथी वखाणीयें ॥ २ ॥ लखो एहवा हो व्याघ्र रथ संयु क्त के, सहुने तृण सम जे गणे ॥ अश्व रथमां हो वेशानें जाय के, हुंका रा मुखथी नणे ॥ ३ ॥ नीष्म क्रोधन हो रणचंद्र महाशूर के, सागरनें व ज्रायुधो ॥ सुतेजा हो पूर्णचंद्र महाअस्त्र के, शतायुध कुलिशायुधो ॥ ४ ॥ इत्यादिक हो लक्ष गमे राजान के, अश्वरथें ते नीसरे ॥ उत्साहें हो उल्ल सता जेह के, रण उत्सुकता बहु धरे ॥ ५ ॥ वल सिंह हो कामांकुर हो य के, धूममाली चोथा वली ॥ शतायुध हो वज्रमाली होय के, विजय दु रंत दुर्द्धर मली ॥ ६ ॥ महाचक्र हो चक्रधारी नाम के, खेचर नृप मानी पणे ॥ इत्यादिक हो विमान आरूढ के, नीकल्या परिवृत नट घणे ॥ ७ ॥ गजसिंह हो गजानंद गजदेव के, गजप्रन गजवीर दाखीयें ॥ गजप्रीति हो गजध्वज गजकेलि के, गजवेग गजसेन नाखीयें ॥ ८ ॥ गजक्षेम हो गजानन वलवंत के, गजविक्रम प्रमुखा घणा ॥ लखो लेखे हो गज वाहन जास के, शत्रु करे दीयामणा ॥ ९ ॥ हयवेग हो महावाजि नरिंद के, हयवाहन खेचरपति ॥ महा अश्व हो हयवीर हयानंद के ॥ हयसा र हयोदय नृपतति ॥ १० ॥ अश्ववीर हो अश्वसेन राजान के, अश्वानंद अश्वें चढयो ॥ अश्वविक्रम हो हयसेन हयअस्त्र के, लखो गमे रणमां च ढयो ॥११॥ सिंह सिंहगति हो सिंहविक्रमसार के, सिंहवाहन सिंह केस

री ॥ सिंहवीर हो महासिंह सिंहास्त्र के, सिंहकेतु जीतें अरी ॥ १२ ॥ सिंहमाली हो सिंहकेतन नृप के, नृसिंह सिंहसेन शूरथी ॥ चाले रणमां हो सिंहवाहन एह के, साज लेइ संपूरथी ॥ १३ ॥ व्याघ्रमाली हो महाव्याघ्र व्याघ्रास्य के,व्याघ्रविक्रम चाले हवे ॥ व्याघ्रसेन हो वाघें चढया एह के, एक एकथी बिरुदें स्तवे ॥१४॥ शार्दूलो हो हरिशार्दूल नाम के ॥ शार्दूलानंद सोहामणा ॥ शार्दूलानन हो शार्दूलें चढया जेह के, कदीय न थाये दियामणा ॥ १५ ॥ शार्दूलविक्रम हो चढीया शार्दूल के, केइ चढीया महाअही॥ अष्टापदें हो केइ वाहन वराह के, केइ पामे चढयो फक नहीं ॥ ॥ १६ ॥ विविध वाहनें हो विविध हथियार के, विविध चिन्हथी चालीया ॥ कोडयो गमे हो पायक नरराय के, उत्सुकता रणे म्हालीया ॥ ॥१७॥ परवरियो हो खेचर चक्रीराय के, मदथी अशकुन नवि गणे ॥ सेनानो वली हो कोलाहल नाद के, तूरनो पोहोतो गयणांगणे ॥१८॥ पुर सीमायें हो उतरीया आय के, कुमर सैन्यनें ढूकडा ॥ जाणी कुमर हो खेटचक्री सचक्र के, न खसे रणें यदि टूकडा ॥ १९ ॥ कुंवर कटकें हो मल्या खेचरवृंद के, अक्षोहिणी शत मित्त मल्युं ॥ चक्रीनें हो एक सहस ते जाण के, अक्षोहिणी माणज कल्युं ॥२०॥ यतः ॥ सेना चा क्षोहिणी नाम, खागाऽष्टैकद्विकैर्गजैः २१८७० रथैश्चै २१८७० र्व्योहयैस्त्रिघ्नैः, ६५६१० पंचघ्नैश्च पदातिभिः १०९३५०॥ पूर्वढाल ॥ सहस एकवीश हो आवशें सितेर के, हाथीनें रथ वर कह्या ॥ सहस पांशठ हो छशें दश पाय के, त्रिगुणा हय चरित्रें लह्या ॥ २१ ॥ एक लाखनें हो त्रणशें नव सहस के, पंचास पायक जाणीयें ॥ अक्षोहिणी हो एकनुं परिमाण के,पंच गुणा मन आणीयें ॥ २२ ॥ बे कोडिनें हो वली लाख अढार के,सीत्तेर सहस उपर वली ॥ गजनें रथें हो सरिखा दोय होय के,तुरग सुणो कहे केवली ॥२३॥ छ कोडिनें हो छप्पन वली लाख के, दश हजार चक्री तणा ॥ दश कोडीनें हो साडी त्राणुं लाख के, जाणो ए पायक जना ॥२४ ॥ खंम आठमे हो आठमी वर ढाल के, सांभलो पद्मविजय कही ॥ श्रीजयना हो रासमां नवि लोक के, सम्यक रीतें सद्दही ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ २४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कलकल शब्द ते सांभली, रवि रथ हय लह्या त्रास ॥ पश्चिम समुद्र

जंपा करे, मूकी गगनावास ॥ १ ॥ सुनट तणी जे मावडी, तिम वली प्रेय
सी नारि ॥ देव देवी लह्यो गमे, मानत करे तिवार ॥ २ ॥ मात जननीनें
प्रिय वहू, जय लखमीनें हेत ॥ मंगल विचित्र प्रकारनां, करे ते वीर संके
त ॥ ३ ॥ नालें तिलक तदा करे, मंगल केरुं मात ॥ नाग्य लखमी रेखा
परें, नीसरतां कहे वात ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ टेकरी रही रे, शहेर नरुअचके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ दल दोय मलियां रे चक्री पुरके मेदान॥ बहु ललललयां रे फुरके
नेजा नीशान ॥ ए आंकणी ॥ जब संग्राममां जावा शूर, मायनें पय प्रण
मे वड नूर, मात नणे बहु स्नेहनें पूर, वीरनी पुत्री रे तुं वली वीरनी
नार, वीर ठे भ्राता रे तुं हवे वीरपणुं धार. तो थाउं मातारे मानुं धन्य
अवतार ॥ द० ॥ १ ॥ कोइ कहे मुज आणी स्नेह, पूठ म देजे माहरी दे
ह, मरण जीवन ठे ताहरी एह॥ कोइ कहे नारी रे वीरपत्नी पुत्री मात,
हवे थाउं जननी रे जो थाये वीर तुं भ्रांत, तो जग गावे रे ताहरा जस
अवदात ॥ द० ॥ २ ॥ माहरे शोक विना हता नोग, हवे संग्रामनो तुज
संयोग, जय लखमी अथवा देवलोग ॥ अप्सरा सार्थे रे शोक्यपणुं मुज था
य. कोइ कहे एहवुं रे पण मुज दुःख नही कांय, पण जयलखमी रे था
य तो अति सुखदाय ॥ द० ॥ ३ ॥ कोइ कहे जाउं हुं तब तेह, बोली
शुं जूतुं कहो एह. नवि निकलियो तुं कदी रेह, नोकलीश नाहीं रे माहरा
हृदयथी दूर, तुं मुज राखे रे ताहरा हृदय हजूर, तो संग्रामें रे अडियो
हाथे नरपूर ॥ द० ॥ ४ ॥ नमिअ कटाक्ष जूवे जे नाह, ते मुजथी अधिको
किण राह, मुजथी अधिको जयश्रीलाह, जग सहु बोले रे जेहनी कीर्त्ति
अथाह.ते सुखें लावो रे मुजनें हर्ष उत्साह॥ मुज पण तेहशुं रे प्रीति धर
णनी ठे चाह ॥ द०॥ ५ ॥ आलिंगन देतां कहे कोय, हमणां स्नेह देखा
वो सोय, जयलखमी वरशो जब तोय, अप्सरा अथवा रे मलशे तुमनें
जेवार, खबर ते पडशे रे स्नेहनी तुमची तिवार, साहमुं जोशो रे के नहीं
जोशो किवार ॥ द० ॥ ६ ॥ गज कुंनस्थल मोती स्वामि, तुज जयलखमी
केरे गाम, स्वस्तिक पूरणनुं मुज काम, लावजो तेणें रे कोइक बोले ए री
ति, तो मुज रहेशे रे तुमशुं जनमनी प्रीति, नहींतर रहेशे रे माहारुं महे
णुं नित्य नित्य ॥ द० ॥ ७ ॥ इत्यादिक कहेती जे नारि, तेहनें आश्वासना

देइ सार,महा उत्साह ते धरी अपार, जस करी आगें रे नीकल्या शु
विचार, नारी रूपें रे श्रीजयानंद कुमार, हवे करे रातें रे रणना बहु
चार ॥ द० ॥ ८ ॥ पवनवेग सुत जे वज्रवेग,सहु खेचर अनुमति सुविवे
सेनानी थापे वडवेग॥ बेहु दलमांहे रे शस्त्र जागरिकायें धीर, शस्त्रनें पूजे
पूवें थया वडवीर, जेहनी करे वातो रे जेणें उताखां अरिनीर ॥ द०॥९
संग्रामें शस्त्रज परधान, तेणें शस्त्र थापे पट्टनें थान, चक्र खड्ग धनु वज्र
मान, त्रिशूल कुंता रे तोमर मल्लिका सीर, परशुने शक्ति रे नलिका धरे
उवीर, नडमाल नामे रे मुष्टि अर्थ गंनीर ॥ द० ॥ १० ॥ कुशने क्षुरि
मूसल नाम, पाश गदा तरवार उदाम, घन पट्टिश मुजर अनिराम,डुस्फ
ट खुटि रे करवालिकानें कुदाल, शंकुनें शुलिका रे कणय कंपन्न सुविशाल
ग्रह गोफणनें रे कर्त्तरी जेह कराल ॥द०॥११॥ परपत्रक पट्टि अनिधान
ए उत्रीश आयुध बहु मान, पवित्र जलें करावया स्नान,चंदन लीपे रे अर
पुष्पनी माल, धूप उखेवे रे गीत नाटक सुरसाल, वली तस प्रणमे रे
मरे तस रखवाल ॥ द० ॥१२॥ बकतर टोप प्रमुख जे होय,तस संस्का
र करे सहु कोप, रात वोलावी एणी परें जोय,मित्र जाणीनें रे कौतुक ज
यानें काल,उदयाचलनें रे शिर आव्यो दिनराज, शूरनें देखी रे, शूर थय
अति नाल ॥ द० ॥१३॥ नेरी मादलनें कंसाल, तलिमा ऊंना ढका न
ल, हुडुक मृदंग वाजित्र संनाल, शंखनें काहला रे जल्लरी पडह प्रकार,स
रमुखो करटो रे ममरुक नानक श्रीकार, दर्दरी वाजे रे डपंखक प्रमुख वा
र ॥ द० ॥ १४ ॥ दोय दलमां एम वाजे तूर, सांनली वाधे सुनटनें शू
सायर लोनाणो मानुं क्रूर, वज्रें हणीयो रे पर्वतनो जेम नाद,जलजीव भ
या रे नाग गज उनमाद, परवत कंप्या रे शलशल्या शेष अविवाद ॥द०
॥ १५ ॥ कछप हढ थइ पृथिवी नार, पूठें धरता कष्ट तिवार, दशदिशा ग
ज रही नयकार, गिरिगुफा गाजे रे फूटे मानुं आकाश, सिंह ते पेसे रे दर
मांहे लही त्रास, दूरें पेठा रे महोरग नांजी आवास ॥द०॥१६॥ वननेता
ते नाठा जाय,नांजे वृक्षतणा समुदाय, सुरगण जोवानें तिहां आय, नाद
दीप्या रे सुनट ते रण करणाय, उत्साह पामी रे दोय दलना सह थाय,
क्षण क्षण वाधे रे सुनटनें दर्प न माय॥ द० ॥१७॥ आठमे खंडें नवमी
ढाल, नांखी पद्मविजय सुरसाल, जेम ए सुनट थया उजमाला, तेम तुम

धाई रे कर्मशत्रु जय राज, मोह नृप जीतो रे पहेली धारित्र लाज, जीती ने पामो रे नविजन शिवपुर राज ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ २६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सबलसकल सन्नाहथी, सजकर परिघन सार ॥ सुघरी चिहुं दिशि धमकती, पाखर अनिशय फार ॥ १॥ मदिरा पाइ उनमत्त कर्या, सुंडामां दीधा साग ॥ मोघर नाला प्रमुख जे, उछाले आकाश ॥ २ ॥ दंतुशलें बांध्या खड्ग, लोह पंजर दिढ पास ॥ तेहमांहे धनुर्धर रह्या, तद गान्नावे अहि नाश ॥ ३ ॥ सजकसन्नावत उपरें, बेठा सांहे जास ॥ पढवंता पर्वत शिरें, बेगा गनक संकाश ॥ ४ ॥ पगमां नेउर रणरणे, घंटाना टणकार ॥ करता गुलगुल शब्दनें, सिंदूरें शणगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ तुंगिया गिरिशिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ सुभट एणीपरें करे सजाइ, पाखर्या तेम तुरंग रे ॥ अश्ववार सुत मानु गोविंद, मन्द चढियो रंग रे ॥सुभ०॥१॥ उछलता पाखर्या दीसे, सायर जेम कल्लोल रे॥नलिनीदल सेवाल संयुत, उछले अनि लोल रे ॥सु०॥२॥ सुज सुझे गजतुरग देखे, सन्नद्ध करता जाम रे ॥ शकुन मानी गज तुरंगनें, पूजे आदरें ताम रे ॥सु०॥३॥ रथवग वलीकरे सामंत, मानुं क्रीडा गेहरे ॥ जय श्रीने खेलवाने, टढकरे धनस्नेह रे ॥४॥ सारथीनें केइ आपे, निज अधिक सन्नाह रे ॥ रथिक युद्धें तेह पाशे, सालीया उछाह रे ॥सु०॥५॥ बकतर मांहे तनु न माये, संगरनें उछरंग रे ॥ आप वाहन सज्ज करता, विविध मननें उमंग रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ स्तंभ ध्वजना दृढ करे केइ, निजनिज वाहनें धारिरे ॥ महासुभट हुं प्रगट करवा, ते ध्वज बहु परकार रे ॥सु० ॥ ७ ॥ विविध शस्त्रें रथ नरे नट, रणमां संबल एह रे ॥ चंट वस्त्रें नरे केइ, आप वारण तेह रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ केइक कंकट नवि पहेरे, नहीतो आवे कलंक रे ॥ वीरधिवीरपणुं रहे नही, एहवी धारी शंक रे ॥ सु०॥९॥ केइ शुरा शस्त्र मूके, मन धरी अनिमान रे ॥ बाहु मुष्टि प्रमुखें लडवुं, साहसा वीर समान रे ॥ सु०॥ १०॥ परखालो जल नरी चाले, प्रपा चालती तेह रे ॥ खाद्य प्रमुखें शकट नरियां, क्षुधित देवा जेह रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ औषधि घृत धूलि लेवें, केइ पर उपकार रे ॥ वहतुकता छे पण न चूके, विवेकी कोइ वार रे ॥ सु०॥ १२॥ नाटकिया परें शस्त्रधारि, धूंत अरिनें दीव रे ॥

आपकुलमां अजस आप्यो, जनम लही शुं कीध रे ॥ सु० ॥१३॥ तीरथ संगर समुं नाही, जीवतां जस श्री आय रे ॥ मूआं स्वर्ग लहे तेणे करी, ए सम तीरथ न थाय रे ॥ सु० ॥१४॥ दीपे क्षणएक रयणी दीवो, रवि दिने विधु राति रे ॥ संग्रामें जश जेह पाम्यो, युग लगें कीर्ति अमात रे ॥सु०॥ ॥१५॥ शत्रुजय करतां तुमारा, विघन थाशे दूर रे ॥ वैतालिक एम विह द बोले, दान दीये तस पूर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ एम वैतालिक वाणी सुण तां, पूज्यनी आशीष रे ॥ शुकन रूडे हरखिया ते, द्विगुण उत्साह जगीश रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ हवे श्रीजयानंद केरा, कटकमां जट जेह रे ॥ संग्रामें उजमालनां कहुं, नाम सुणजो तेह रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ ढाल दशमी पद्मवि जयें, जाखी ए मनोहार रे ॥ आठमे खंमें रामगिरिमां, सांजलतां जयकार रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ सर्वगाथा ॥ २ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वज्रवेगना सैन्यमां, रण रसीया महावीर ॥ सिंह युक्त रथमां रह्या, स हसगमे अतिधीर ॥ १ ॥ व्याघ्र रथें वेगा थका, बलगर्वित योधार ॥ चंडो दय सुख खेचरा, रणमां करे अवतार ॥ २ ॥ गज रथ वेसी नीकल्या, पव नवेगादिक राय ॥ गणता तृणपरें शत्रुनें, सेनानीनो ताय ॥ ३ ॥ तुरग रथें वेगा थका, जोगरत्यादिक जूप ॥ रथ शस्त्रें पूर्या घणुं, चाल्या मन धरी चूं प ॥४॥ श्रीधर श्रीपति अरिजयो, कांत दत्तनें नंद ॥ विक्रम जय अपरा जिता, अजित तथा आनंद ॥५॥ मणिचूडनें नरव्याघ्र तेम, अचल प्रमु ख राजान ॥ गज वेसी सन्नद्ध थइ, मन धरता अनिमान ॥ ६ ॥ गज वा जि हरि व्याघ्र तेम, शार्दूल महीपनें नाग ॥ लक्षोगमे निज वाहनें, खेचर नृप महानाग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ श्रीजयानंद आनंदमां जगजयो, जामिनी रूपथी शत्रु धूजे ॥ स्नान करी धौत धरी नमन वंदन करी, मोदथी श्रीजिनराज पूजे ॥ श्रीजय०॥१॥ इष्ट परमेष्टि संजारी नवकारनुं, ध्यान धरी हृदयमां लीन थावे ॥ वज्र स न्नाह उन्नाहथी पहेरीयो, सर्वदिश मणिय जासर सोहावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ दीप्त मणि लोह वेष्टित शिरस्त्राणजे, शिर धरे मेरूपरें शृंग सोहे ॥ मेघशुं परिवर्यो वीजली सहित मानुं, देखतां सुजटनां चित्त मोहे ॥ श्री० ॥ ३ ॥

बाण तूणीर अद्भय बिहु दिश धरे, वज्र पृष्ट धनुष सव्य पाणि धारे ॥ अंजन गिरि समा गजवर उपरें, इंद्रसम सोहतो सुतिथि वारे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांच शे शूर स्त्रीवेपथी तेणी परें, थइ सुसन्नद्ध गजवर आरोहे ॥ सुभट वर विकट कोडथी गमे चिहुं दिशें, परिवख्यो मानुं प्राकार सोहे॥ श्री० ॥ ५ ॥ विचित्र वाहनें रह्या विविध आयुध धरा, विचित्र ध्वजधारका सैन्य राजा ॥ कुमर नरराय ते सर्वशुं परिवख्या, सोहता शूर जेम तेज ताजा ॥ श्री० ॥ ॥ ६ ॥ मेरु गजदंत मुख अचलथी परिवख्यो, अहव भद्रशालवनथी विराजे ॥ तेणी परें कुमर नरराय खगरायशुं, चिहुं दिशें परिवख्यो परम राजे ॥ श्री०॥७॥खेट चक्रायुधो चक्री पण श्रावको,श्रीवीतरागनी पूज करतो, नमन स्तवना विधियें करी जिनतणुं,जिनपणुं याद करी ध्यान धरतो॥खेट०॥८॥ ए आंकणी ॥ दीप्रशिरस्त्राण सन्नाह मणि जडित ते, पहेरीयो राहु छाया मां चंदो ॥ तेणी परें दीपतो गर्व करी जीपतो, इंद्रनें चंद्र रवि कुण नागिंदो ॥ खेट० ॥ ए ॥ पार्श्वद्वय सोहतां, बाण भाथे करी, हाथमां धनुष संग्राम सजीयो ॥ श्वेत सामज चढयो मानुं अद्रिरावणें, एह देखीनें मांहेंद्र लजीयो ॥खेट०॥१०॥ कुमर सन्नद्ध थइ विविध वर वाहनें, परिवख्यो तरुवरो जंबू जेम, जंबूवलयें करी सहसगमे कुमरथी, परिवख्यो वीर लखोयें तेम ॥ खे०॥११ ॥ सैन्य चतुरंग संग्राममां सज्ज थइ, वींटीयो जंबूमध्य मेरु रीतें ॥ अहव सायरपरें हय गय जलचरा, चिहुं दिशें नीर कल्लोल नीतें ॥ ॥खे०॥१२॥खेट चक्री यथा श्रीजयानंद तथा,निज निज सैन्य परिवार जुत्ता ॥ दोय तेम दीपता धातकी खंममां, दोय मेरु निज वन संजुत्ता ॥ खेट चक्री यथा० ॥ ए आंकणी ॥१३॥ कल्पतरुनी परें दान दीये याचकां, सूर्य परें सर्वनां तेज लोपे ॥ निज निज सुभटशुं दृष्टि दीये स्नेहथी, शत्रुनें देखे कल्पांत कोपे ॥ खे० ॥ १४ ॥ महापराक्रमी गणे शत्रुनें तृण परें, शत्रुनें हरिपरें क्रूर नयणें॥छत्रधारीजतें चामरें वीजतें, सैन्यमां एम कहे सुणत सयणें ॥ खे० ॥ १५ ॥ आठमे खंम अग्यारमी ढाल ए, श्रीजयानंदनें रास नामी ॥ पद्मविजयें भली भविजने सांभली, विशद परें कौतुकें चित्त राखी ॥ खे० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ३१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज निज सैन्यमां एहवो, करता वेढु संकेत ॥ युद्ध करे नहीं तेह

ने, मारवो नहीं कोइ हेत ॥ १ ॥ वली जे शस्त्र मूकी दीये, अथवा दीन
होय ॥ अथवा नासतो ने पडचो, तेह न मारशो कोय ॥ २ ॥ समर्प
सहुयें रह्या, लही निजस्वामि आण ॥ दुर्द्धर वाजित्र नादथी, सैन्य प्रेर
जाण ॥ ३ ॥ वाजि क्रम गदा घातथी, पृथिवी जार नराय ॥ शेष नाग
फण सहस, तेहनें पीडा थाय ॥ ४ ॥ कच्छप पृष्ठ कठिन पणुं, प्राणनो स
य तास ॥ दाढ वराहनी दृढ घणी, पामी पीडा राश ॥ ५ ॥ अपूरव संग
जाणीनें, मांहो मांहे मलवा धाय ॥ पूर्वापर सायर परें, एम सहु उत्स
थाय ॥ ६ ॥ कोइ उत्सुकतायें करी, सहुथी आगल जाय ॥ वाले पा
तेहनें, प्रतिहारज ठवकाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ सुनट वर विकट कंकट धरी मोदशुं, एक एक आगलें ते उजाये
रेणु पण आगलें सहुथकी दोडती, शत्रुनें अंधपणुं करत प्रायें ॥ सु० ॥ १
चिन्ह हरि करि कपि मेष डुम शिखि तणा, उंजखी दूरथी देखी तेह
नाम पूर्वक वरे ते एक एकनें, कीर्त्ति जस पामशुं मारी एह ॥ सु० ॥ २
काल बहुथी मल्या बांधवनी परें, एक एक शत्रु आह्वान करता ॥ अ
नानी वेहु मांहोमांहे मल्या, मान वश अमरष बहुत धरता ॥ सु० ॥ ३
पांखवंता गिरिवर समा करिवरा,तुरग ते पाखरचा गरुड जेम ॥ न्याय यु
लडे सादाम सादामा समा, गज तुरग रथ सुनट लडत तेम ॥ सु० ॥ ४
नूरिरण तूर ढक्का हुडुका वली, काहला प्रमुख नंनानें नेरी ॥ तास पड
दथी गिरि गुफा गाजती, बधिर होवत महा कर्ण सेरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रेत
जेम मांस नक्षण होये उत्सुका, विविध आयुध धरी वीर धावे ॥ विघ
अम मत करो रेणुए संगरें, गज मदें मानु तेहनें समावे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कोटिगमे
सुनट आव्हान परस्परें करे, जेम नुजास्फोट गजगाज होते ॥ क्रोध अमर्ष
डुर्धर्ष नीषण रवें, हेयहेयारव तणा शब्द जोते ॥ सु० ॥ ७ ॥ रथ घणत्कार
धनुना टणत्कार जे, खड्ग खाट्कार अट्टहासें ॥ तूरनादे गिरि दरि पडठं
दथी, स्फोट ब्रह्मांम सरिखो प्रकाशे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जगतनें क्षोजना तेह
थी उपजे, कौतुकि जननें आव्हान करता ॥ विविध शब्दें करी, गगन पृ
थिवी नरी, जय जय शब्दथी सैन्य फरता ॥ सु० ॥ ९ ॥ आवरे आव उनो रहे
रहे इंहां, नाशिरे नाशि वहेलो रे मूढ ॥ नुज वहेलो थइ हण्यो हण्यो जा

णजे, मूक आयुध कहुं एह गूढ ॥ सु० ॥ १० ॥ कहे प्रतिपक्षी तव वच नें शुं राचतो, निज करें आप पराक्रम देखाउं ॥ रूशीयो तुम यमराय एम जणीयें, तुम निलाडे विधि एम लखाउं ॥ सु० ॥ ११ ॥ बाण धोरणी तिहां विस्तरी चिहुं दिशें, विचित्र आयुध वरसे तिवारें ॥ पवनथी पक्षीपरें विविध आयुध चले, गगनें मारग जतां कोण वारे ॥ सु०॥ १२ ॥ गगन भमी वृक्ष उपर पडे पंखीया, वीर उपरें पडे तेम शस्त्र ॥ बाणमय खड्ग मय कुंत गदा चक्रमय, शूलमय शक्तिमय कहीक अस्त्र ॥ सु० ॥ १३ ॥ विविध शस्त्रें तदा घोर संगर थयो, केलि कंडुक परें सुभट पडिया ॥ भूमें आलोटता किहांये मातंग तेम, किहांयक तुरग जमराय नडिया ॥ सु० ॥ १४ ॥ शीर्षनें हस्त पादादि कहीं रडवडे, शत्रु हणवा केइ सैन्य पेसे ॥ भग्नरथें कुसुमनी वृष्टिपरें करी तणा, कुंभ भेदायी मानुं मोती वरसे ॥सु०॥१५॥ कौतुकी व्यंतरा भ्रमत गगनें फरे, वाजते डमरुकें खेत्र पाला ॥ डाकिनी शाकिनी काकिनी हासिका, कौतुकें केली करती उताला ॥ सु० ॥ १६ ॥ विचित्र रूपें कर ताल देती थकी, योगिणी कौतुकें नाच करती ॥ विकट अट्टहासें मांस अर्थणी, राक्षस राक्षसी गगन फिरती ॥ सुं० ॥ १७ ॥ आमिषगिरधरा गृध्रवर पंखीया, शत्रुशालापरें चिहुंदिशि फिरंता ॥ कुमर कृपानिधि देखी भट तुरग मुख, शस्त्र पीडित तणे करुण करता ॥ सु०॥१८॥ औषधी नीर देइ मोकले खेचरा, सज्ज करे दोय सैन्ये ते नीरें ॥ द्विगुण उछाहथी तेह फरी जूफता, काल अनादि अभ्यास पीरें ॥ सु० ॥ १९ ॥ पूर्व अभ्यासथी विरमें नहीं प्राणिया, कोह अभिमानीउं सुभट एह ॥ धिक् पडो कर्मनें धिक् हो संसारनें, जो करे धर्ममां चित्त रेह ॥ सु० ॥ २० ॥ तो कोण कर्मने कोण संसार छे, अहव अशुभोदयें मरण पामे ॥ केइ पराभव लहे अंगक्षय केइ लहे, पाप परभावथी सुख वामे ॥ सु० ॥ २१ ॥ घोर रणमांहे पण केइ अक्षत रहे, पुण्यथी जयपताका वरंत ॥ ढाल ए बारमी आठमा खंममां, भाखी पद्मे जय जय करंता ॥ सु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक पूर्वज निज तणा, तेहना जयनें काम ॥ केइक उरणीआ थया, निज स्वामीनें नाम ॥ १ ॥ क्रोध अमर्ष अभिमानथी, विविध आयुधना धार ॥ युद्धकरण उठ्या फरी, दुर्धर विविध प्रकार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तेरमी कडखानी देशीमां ॥

॥शूर वडवीर माहावीर छच्या फरी, सारथी सहित योधारमारे॥हय न
मारिया चित्त दया धारिया, तेह रथें आप बेसे तिवारें ॥ शू० ॥ १ ॥ बे
मदें शस्त्र मूकी निज करें करी, दोय शत्रु दोय हाथ लाले ॥ परस्परं ते
आस्फालीनें पारिया, क्रोधथी प्रेतपतिधाम घाले ॥ शू०॥ २॥ वपहेने प
पत्ति जेम कुर्कुटा,परस्परं बाणथी मरण पामे,गर्वथी केइ मदजरत लेइ
यिपा, गगनें उछाले मानुं मेवठामे ॥ शू० ॥ ३ ॥ नांगी रथचक्र लेइ हा
मां अरि हणे, चक्री पणजाणे बहु चक्री आया ॥ सुनट बहुनट महा
पणें देखीयें, चक्रिनट बहुत आश्चर्य पाया ॥ शू०॥ ४ ॥ रणमहा गोरमां
मर सैन्यें तदा, चक्रीनुं सैन्य अमनुं नसाडयुं ॥ वार्द्धिवेला परें उलखुं ते
पण, जैत्रवाजित्र देवें वजाडयुं ॥शू०॥५॥ तूररणजीतनां कुमर कटकें
पां, जय जयारव करें सुनट सर्व ॥ शूरनिज नामथी शूर परानव लहं
अपर सायर पडे गलित गर्व ॥शू०॥ ६ ॥ मूकी संग्राम सेनापति आणपं
सस्त उतारे सहु सुनट आवे ॥ पंखी जेम नीडमां सर्व संध्या समे, कुम
करुणा हवे चित्त लावे ॥ शू० ॥ ७ ॥ कंठगत प्राण जे सुनट हय गय
सा, सज्ञ औषधी जलें करे तिवार ॥ पतित रणनूमिमां शस्त्र पातीत
का, शोध तेहनी करावे कुमार ॥ शू० ॥ ८॥ जीवता जाणी दोय सैन्यम
चिन्हथी, स्वपर अविजागथी ते जीवावे ॥ औषधि जल प्रचुर मोकली
ल नरें, परोपकृति सज्जन मन सोहावे ॥ शू०॥ ९ ॥ कुमर महामहोत्स
जय जय रव थके, बंदिजन बिरुद बोले विशेषं ॥ कटकमां नृपति स्त्री
गल गावतां, परिवरें आव आवास देशें ॥ शू० ॥ १०॥ नरेंद्र चक्रायुधो
पि रणनूमिका, जाय परिवारशुं निज उतारें ॥ जीवता शस्त्रथी व्यापत
प्राणीया, कुमरजल छांटियुं तेणें तिवारें ॥ आप मंत्रित जल दोय पारें
शू० ॥ ११ ॥ सज्ज हूआ सुनट दोय सैन्य तेणे निशि समे, निद करता ते
विश्राम पामे ॥ योग्य आहारें करी हय गय सुख लहे, तेरमी ढाल एक
ही आरामें ॥ आनना सर्गमां पद्म नामे ॥ शू० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥२५०॥
इतिश्री जयानंदराज.र्षिचरित्रे चक्रायुध खेटक चक्रवर्ती युद्धाधिकारे सामा
न्यतो युद्धवर्णन प्रबन्धनिरुद्ध ॥

॥ दोहा ॥

॥ निद्रा सुभट आलिंगीनें, सुखमां करे विलास ॥ रण चिंता शोकज म ली, तव थयो निद्रा नाश ॥ १ ॥ रण कौतुकीने विघन किम ॥ करियें एम विचार ॥ पूर्ण कौतुक देखाववा, क्षणदा गइ निरधार ॥ २ ॥ कोण नाग कोण जय लह्या, मरण लह्या कोण जीव ॥ उदयाचलें रवि देखवा, आ व्यो मानुं अतीव ॥३॥ पूरवपरें रण तूर वली, वाज्यां कटकें दोय ॥ महा उत्साहें उनय ते,रण करवा सज्ज होय ॥ ४ ॥ दोय सेनानी आगल रह्या, दोय नायक विचमांह ॥ पूर्वपरें मलिया बेहु, धरता अति उत्साह ॥५॥

॥ ढाल चौदमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ वाण विन्नाण महा जाण जे जूवि सुभट, वाणथी तेणें आकाश न रीयो ॥ काल कल्पांतें मानुं पक्ववंता अहो, केइ बाणे रिपु छेद करीयो ॥ ॥ वा० ॥ १ ॥ केइ संधा धरे एक शस्त्रज तणी, तेणे गदा मुग्गर चक्र हणि या ॥ अहो वली एक बाणे करी शत्रुनां, आवतां शस्त्र मनमां न गणीयां ॥ वा० ॥ २ ॥ बाणें करी शस्त्र सघलां हण्यां शत्रुनां, शत्रु तेहथी उदवे ग पामे ॥ शस्त्र लेइ मुकवा शक्ति नांही रही, केइ धमता रहे क्रोध धा मे ॥ वा० ॥ ३ ॥ केइ व्याकुल थका शस्त्र लेइ नवि शके, वदनमां तरणां देइ तेह बेसे ॥ केइ वाणे समपंक्ति स्थित बहु हणे, वाहण हय गज प्र मुख जूथन पेसे ॥ वा० ॥ ४ ॥ केइ शर शत्रु छेदे निज शरें करी, तेहनां चाप छेदी ते हणता ॥ वादि प्रतिवादि जेम तर्कशास्त्रें हणे, वादीने उक्ति प्रयुक्ति जणता ॥वा०॥५॥ वीर धोरी केइ निज कलायें करी, बाणे शत्रु ह णी गगनें जाये ॥ कष्टथी सुर असुर त्रास पामी करी, नासता चित्त मम मोल पाये ॥ वा०॥ ६ ॥ सुभट शिर वीर बाणे हण्यां उछले, राहु मानुं देव खी वदन चंद ॥ देखी ग्रसवा जणी जाय आकाशमां, जीती लहे देव ना रिनां वृंद ॥ वा० ॥ ७ ॥ केइ बाणें वपु चिहुं दिशें परिवखुं,वेगें उछलता मा नुं पांख आवी ॥ स्वर्गमां जायवा एह उद्यम करे, वात ए सहु तणे चित्त भा वी ॥ वा० ॥ ८ ॥ वाण करिवर तनु चिहुं दिशें वलगीयां, शैलेंद्रो सहित चा लंत दीसे ॥ अहव रुधिर स्रवत निर्झरणां झरे,गिरिवरा सोहता गेरु मि सें ॥ वा० ॥ ९ ॥ पूर्वना जयथकी चक्रना खेचरा, वरसता विविध आयुध समीपें ॥ समुद्रवेलायें जेम वेग नदी उतरे, तेम कुमर सैन्य जागुं प्रतापें ॥

वा० ॥ १० ॥ जोगरत्यादि आवे तेह देखीनें, रण करण उवीया वाण वर्षे ॥ तेह अमरष धरी सैन्य सजा जूफता, जाणे सहु एम कहो शुं ए करशे ॥ वा० ॥ ११ ॥ वाणनी श्रेणीयी शत्रुबल ढांकीउं, गाज वीजें मानुं मेघ चढीयो ॥ केइ ए वाणने सुजट वंचावता, कोइक सन्मुख आइ निडीयो ॥ वा० ॥ १२ ॥ शत्रुनां वर्म जेदी ते वाणावली, हृदयमां पेसतां तेम जाणो ॥ जेम मिथ्यात्व तृष्णा प्रत्यें छेदता, गुणगुरु गुरु वचन चित्त आणो ॥ वा० ॥ १३ ॥ वाण कोइ शत्रुने एक दिशें पेसीनें, नीकले अन्य दिशें आरपार ॥ दुष्ट बुद्धिने जेम गुरुवचन नवि टके, कोइनें नवि हवे खल प्रकार ॥वा०॥१४॥ जोग रत्यादि तृण परें गणे शत्रुनें, चिहुं दिशें प्रलयरज रीति व्यापे ॥ केइ मदसाथ रथ प्रवर जांजे तदा, केइ केतु जुज साथ कापे ॥वा० ॥ १५ ॥ केइ मनोरथ समा मस्तक छेदता, सत्व सायें केइ धनुष जागे ॥ विक्रम साथ खंम्या केइ शस्त्रनें,पार्श्व परें हृदय केइ शूल लागे ॥वा० ॥ १६ ॥ जोगरत्यादि सायें एम जूफता, उतरे चक्री सेना तिवारें ॥ अन्य जेम धर्मथी उतरे तेणी परें, चौदमी ढाल ए जांखी प्यारें ॥ आगमे खंम चित्तथी उदारें ॥ वा०॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंमवेग सेनापति, जट कोडयोधुं जेह ॥ सिंहयुक्त रथ वेशीनें, अमरषें देखी तेह ॥ १ ॥ सैन्यने धीरज आपतो, उगयो रण संग्राम ॥ जोगरत्यादिकशुं लडे, एहवा नृप उद्दाम ॥ २ ॥ अक्षोज कासर रमण नृप, मदन तपनने जीम ॥ नाम प्रतापसिंह रयथकी, युद्ध करणनें जीम ॥३॥

॥ ढाल पंदरमी॥कडखानी देशीमां ॥

॥ वाण बहु माण आणी सेनानी हवे, केइना कर पद नाजें वींधे ॥ केइनां मुख शिर केइनी नासिका, कोइक सुजट प्रतिशत्रु वींधे ॥वा०॥१॥ जोगरतियें सेनाधिपति रुंधियो, चंद्रबाहु मदनसाथें लागो ॥ रोकीयो तपनने महा बाहुराजीएं, चंड्वेग जीमने करिय नागो ॥वा०॥२॥ चंड्चूडरायें परतापनें वींटीउं,रत्नचूडें तेअक्षोज नृप॥तेम तडितवेग कासर प्रत्यें वलगीयो,रमण चंड्राजनें करीय चुंप ॥वा०॥३॥ एम जूपति बहु नूप सहामा अडया,सुजटन वाण तेसर्प पीधा॥वीरनां प्राण वायुथी मदधुं जया,दंशीनें शत्रु अचेत कीधा ॥वा०॥४॥ जोगरति चाप चंमवेगनुं छेदतो,नव्यमिथ्यात्व जेम गुरुनी वाणी॥

धनुष लावी नवुं मोगरति केरडुं, ठेदियुं धनुष कर्णात ताणी ॥ वा० ॥ ४ ॥
मोगरति श्रस्त्र तामस तणुं मूकतो,तेहथी तास अंधार थाय ॥ दिनकर शस्त्रें
उद्योत निज सैन्यमां, करीनें वाणें करी गगन ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥ तेहथी
व्याकुलो मोगरति मूकतो, जलधर शस्त्र सेनानी त्यारें ॥ पवन शस्त्रें करी,
तेह जलधर प्रत्यें, श्राप शर्कें करी दूर मारे ॥ वा०॥ ६ ॥ धनुष ठेदी वली
कवच तस ठेदीयुं, वाणे जर्जरित करी नाग पासें ॥ बांधीनें पकडी लीये ता
म नृप कुमरने, श्राव्यो सेनानी वज्रवेग पासे ॥ वा० ॥ ७ ॥ वाणथी ता
डीयो हृदयमां पीडियो,मोगरति मूकी क्रोधें नराणो ॥ वज्रवेगशुं लडे दोय
तरिखा मल्या, जयतिरि केरडो मन मोलाणो ॥ वा० ॥ ८ ॥ केहनें हुं
वरुं एम संशय पडी, एणी परें श्रागने पण पिछाणो ॥ पवनवेग श्रा
वीनें श्राठे लेइ गयो, कर्मनी वात कोइ निव्व जाणो ॥ वा० ॥ ए ॥ रायनें
श्रागलें ते लाव्या तव नृपें, ठेदीया पाश श्रहीना ते रायें ॥ गारुडी वियायें
लक्ष्य श्रौषधि जलें,दाय फरसें श्रधिक तेज थाये ॥ वा० ॥ १० ॥ पूर्वथी
धैर्य वल्लाइ वधियो घणो, सूर्यकर स्पर्शथी जेम पाषाणा ॥ पूरव परानव
थकी धावीया ते फरी, करण संग्राम खेदें नराणा ॥ वा० ॥ ११ ॥ देखी
सेनानी दोय जूऊता सहु जना, निज निज सैन्य सहु युद्ध करता ॥ केइ
शर विफल जाये शत्रुशरें खलितथी, धर्म इछा ज्युं श्रल्प सत्त्व धरता ॥
वा० ॥ १२ ॥ दोय सेनानी हवे छुद्ध करतां थकां, धनुष वज्रवेगनुं शरथी
ठेदे ॥ नविन धनुषें करी तेह चंमवेगनुं, धनुष ठेदे शरें धरीय खेदें ॥ वा०
॥ १३ ॥ चंमवेग मदथकी नविन धनु लावीनें, क्षुरप्रशस्त्रें वज्रवेग केरो ॥
नांजी रथ पाडी सारथि सिंहनें हणे, जाम वज्रवेग रथ से नलेरो ॥ वा०
॥ १४ ॥ ताम वाणे वज्रवेगनें ताडियो, लहीय मूर्छा वली जाम मारे ॥
मोगरति ताम श्रावी श्रकस्मातथी, चंमवेगनें शरें दीये प्रहारे ॥ वा० ॥
॥१५॥ चक्रीनो पुत्र मणिमाली तिहां श्रावियो, चक्रीदत्त जलें करी स
ज्ज कीधो ॥ मोगरति लेइ गयो वज्रवेगनें तदा, श्रीजय रायनें सोंपी दी
धो ॥ वा० ॥ १६ ॥ ठांटी श्रौषधी जलें सज्ज कीधो तिहां, मोगरति विणु
हवे सात राजा ॥ सात चक्री तणा राजवी मोटका, जीतिया सबल जे तेज
ताजा ॥ वा० ॥ १७ ॥ बांधी निज सैन्यमां मोकले तेह नृप, कर्मथी जीत
नें हार पामे ॥ शुन श्रशुन कर्म फल जाणीनें नवि जना, पुण्य करो जे

हयी अर्जुन वामे ॥ वा० ॥ १८ ॥ चंद्रवाह्वादि ते वीर तेम जूजीया, चक्रीसेना जेम हार पामी ॥ थाक ते देखतां सूर्यनें संक्रम्यो, शांति ठेरन तपन स्नान कामी ॥ वा० ॥ १९ ॥ पश्चिम सायरें मानुं श्रम टालीयो, दोय सेनानि निज सैन्य मांहि ॥ आण करे कर्मथी जय पराजय लहे, लाउं सहु निज निज गाम ज्यांहि ॥ वा० ॥ २० ॥ मंद उत्साह कांइ सत्र वीर वचनें, रणधरा छोडीयो सार लीधो ॥ चक्री खेचरचमू जागते पगय की. जेम तेम रयणी विश्राम कीधो ॥ वा० ॥ २१ ॥ मंगल पाठकें वीर गुण बोलतें. श्रीजयें औषधी नीर लेइ ॥ पूरव परें सज्ज करे सुभट पहुरं दनें, चक्री पण निज चमूमांहे वेइ ॥ वा० ॥ २२ ॥ मदनमुख राजीया औषधी नीरथी. सज्ज करी लोह पिंजरमें घाते ॥ पवनवेग राजीये ते ज पत्र गाजीयें, रहे सावधान ते सर्व वातें ॥वा०॥२३॥ पनरमी ढाल ए छट्ठा खंडनी, श्री जयानंदना रासमांहि ॥ चरित्रमांहि जसी पद्मविजयें कही, नयविजयें सहही धरि उछाहि ॥ वा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४०७ ॥ इति श्रीश्रीजयानंद केवलीचरित्रे द्वितीयदिने नोगरत्यादिसुलवडकादि लपनामा आर्णेरव युद्धाधिकारः ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयश्रीयोग्य राजा थने, युद्धविना नवि तेह ॥ युद्ध अवकाश देवा भणी, उदयाचल रवि एह ॥ १ ॥ मंगल तूरथी जागीया, रणरसीया महा वीर ॥ पूर्वपरें दोय सैन्यना, सज्ज हुआ साहस धीर ॥ २ ॥ निजसेनानी हुकमथी, उतला रण करणाय ॥ दोय सेनानां भट वडा, सन्मुख आव्या धाय ॥ ३ ॥ ईपणे अगनि घनें नृपति, परअंत्रे जूदेव ॥ मयप मयें वीर रणें, तृपति न पामे येव ॥ ४ ॥ चिन्हें उजली उजली, बोलावे युद्ध काम ॥ परनिंदे निज गुण स्तवे, उरा आवो थाम ॥ ५ ॥ भुजास्फोट करता थका, गगन उछाले बाण ॥ पालखंना मार्गे सर्प ए, युद्ध करे असमाण ॥ ६ ॥ वाहन गजवर प्रमुख जे, युद्ध करे मांहोमांहि ॥ स्वामि पराक्रम निज तणुं, संक्रमितुं ए आंहि ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ धवलशेठ लेइ भेटणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कुंडनां मद मोयर मुला, दंतूशलें करे घाय रे ॥ मेयरें गाजे घर्ट कोइने जय नवि थाय रे ॥ १ ॥ रणरंग मंच्यो एणी परें ॥ ए आंकणी ॥

सिंहनाद सुणी नाजीया, साहामो साहामा सिंह रे ॥ पन्नग फण आगोट ता, नाखे फुकारा अबीह रे ॥ रण० ॥ २ ॥ मणिसंधि त्रूटी पडे, सुअर क रता कलेप रे ॥ दाढायें हणता थका, घुर्घुर शब्द अशेष रे ॥ रण० ॥ ॥ ३ ॥ इत्यादिक पशुवृंदना, काल अनादि अन्यास रे ॥ वीरसंगें क्रोधें करी, स्वामि प्रेरण पण तास रे ॥ रण० ॥ ४ ॥ प्राण ते तृण समोवड गणे,जि हां लगें शत्रु न मारे रे॥पशु पराक्रम देखीनें, वीर अधिक रस धारे रे ॥ ॥ रण० ॥ ५ ॥ चक्रीसैन्य पराक्रमथकी, नरपति सैन्य ते नागे रे ॥ वीरां गद प्रमुखा बहु, आवी साहामा लागे रे ॥ रण० ॥ ६ ॥ वीरांगद मुख पां चशें, स्वामि निवारी नक्कें रे ॥ स्त्री रूपें जे पराक्रमी, शत्रु बोलावे शक्कें तें रे ॥ रण० ॥ ७ ॥ बाण लेतांने मूकतां, नजरें कोइ न देखे रे ॥ शत्रु शिर उपरें पडे, जाणे नाम विशेषें रे ॥ रण०॥ ८ ॥ मरण लह्या बहु बाण थी, केइक कपटें सूता रे ॥ मरणनो नय जग मोटको, कोइक रुधिरें चूता रे ॥ रण० ॥ ९ ॥ रथविहूणा ते रथी थया, रथि विहूणा रथ थाय रे ॥ तु रग विना सादी थया, तुरगना सादी जाय रे ॥रण० ॥ १०॥ एम हाथी म हावत विना, माहावत गज विण जोय रे ॥ योध विमान विना थया, वि मान योध विण होय रे ॥ रण० ॥ ११ ॥ चक्रीनुं बल ते निर्बल थयुं, गज सिंह तव गज चढीयो रे ॥ देखी नीर करवा नणी, नरपति बलछुं अढी यो रे ॥ रण० ॥ १२ ॥ बलियो होय ते आवजो, एम कहेतो मुख वाणी रे ॥ गजानंद मुख पांचशें, आव्या अवसर जाणी रे ॥ रण० ॥ १३ ॥ नि जसैन्यने आश्वासता, गज वेसीनें आव्या रे ॥ तेहनें वीरांगदादिक मली, रुंधे अवसर फाव्या रे ॥ रण० ॥ १४ ॥ नारी रूपें जूजता, गजसिंहादिक बोले रे ॥ रंभा रण योग्यज नहीं, पाणीहारी थाउ मोले रे ॥ रण० ॥१५॥ सूत्र कांतो मांही रेंटीयो, वैरणी नारी न मारुं रे ॥ तव माया नारी वदे, हसत वदनें वच प्यारुं रे ॥ रण० ॥ १६ ॥ वयरी नारी रंभाविषें, तेणे अ में रंभा साची रे ॥ जुद्ध करो अमशुं तुमें, वात करुं खरी राची रे ॥रण०॥ ॥१७॥ जुद्धें तुमनें मारीनें, जलांजलिनें देवा रे ॥ पाणी तैयार करुं अन्ने, नवि जाउं जल सेवा रे ॥रण०॥१८॥ वयरी बहुने बांधवा, सूत्र अमारे तै यार रे ॥ शे कारण कांतुं अमें, चित्तमां करजो विचार रे ॥ रण० ॥ १९ ॥ वीरांगद महावीर जे, बाणनो घन बरसावे रे ॥ स्त्रीरूपें जम रायनें, संतो

पे जन्ने नावें रे ॥रण०॥२०॥ गजसिंह पण निज बाणथी, शत्रु जम थर मूके रे ॥ नग विद्यायें वीरांगदो, पर्वत मूके न चूके रे ॥ रण० ॥२१॥ वज्र मूकी गजसिंह ते, पर्वत चूरण कीधो रे ॥ सिंह विकूर्वी मूकतो, वयरी ज्यांन गज लीधो रे ॥ रण० ॥ २२ ॥ वीरांगद विद्या बलें,अष्टापद सिंहमा थे रे ॥ शस्त्रविद्यायें मूकतो, लडतां गजसिंह सार्थे रे ॥रण०॥२३॥ गजसिंह बाण गदा असि, मूके शस्त्र हजारो रे ॥ उपडे जाव आकाशमां, त व अष्टापद धारे रे ॥ रण० ॥२४॥ पाडयो हेठो नखें हणी, वीरांगदें नागपाश रे ॥ बांधी लीधो तेहनें, हवे महाबाहु खास रे ॥ रण० ॥ २५ ॥ गजानंद सायें कर्युं, बाणयुद्ध स्त्री रूपें रे ॥ ज्वलनवर्षिणी शक्तिथी, वरसे अगनि सरूपें रे ॥ रण० ॥ २६ ॥ प्रतिशस्त्रें ते निवारतो, तव महाबाहु तास रे ॥ मोहन शस्त्रें मुंजावीनें, बांधी मह्यो घर पास रे ॥रण०॥ ॥ २७ ॥ एम सुयोध सुख वीर जे, वयरीनें देइ खेद रे ॥ जर्जर करी थ कय्या घणुं. केता कहुं तस नेद रे ॥ रण० ॥ २८ ॥ नागपाशें ते पांच जुं, निज शिबिरें राहु लाया रे॥ते देखी वलचक्रीजुं,त्रासने जय बहु पाया रे ॥ रण० ॥ २९ ॥ आठमे खंर्में शोलमी, ढाल कही सुरसालो रे ॥ प द्मविजय कहे रायना, सैन्यमां मंगलमालो रे ॥ रण० ॥ ३० ॥ ४४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पांचशें सुनट बांध्या गया,चक्रायुद्ध ते देखी॥ क्रोध मानथी परिजर्यो, हवे सवे उवेखी ॥ १ ॥ मणिमाली त्रीजो तनुज, वीनवे करी परणाम ॥ कीडी उपर कटक शुं, रंना उपर राम ॥ २ ॥ उवेखो स्त्री जाणीनें, तेम एणे कर्यो उन्माद ॥ एहनें तेम मह्या पुरुषनें, लावुं म करो विषाद ॥३॥ तात निषेधी गज चड्यो, चाल्यो परदल मांहिं ॥ परदलनें दलतो थको, मारग दीये सहु त्यांहि ॥४॥ कातर जेम कासारमां, मोहलतो आव्यो तत्र ॥ वी रांगदादिक पांचशें, सुनट मल्या ने जत्र ॥५॥ जइ तेहनें बोलावतो, रे तुमें कपट कांम ॥ नक जेडुं शिर मूंकीनें, नवि हलतो रे रंम ॥ ६ ॥ तिरस्कार सुणी आपणो, युद्ध करे बलवंत ॥ महावीरनें सिंह नवि, पर धिक्कार सहंत ॥ ७ ॥ मणिमालीनें रुंधतो, वीरांगद महावीर ॥ शरश्रेणि वरसावतो,नग उपर जेम नीर ॥८॥ मणिमाली पण झूझतो,वीरांगदशुं जोर ॥ वीरहाक गाजें निहां,दइ रह्यो सोर बकोर ॥९॥ एक कणा पांचशें,किरणमाली सुख वात ॥

सुरुकरण मणिमालीना, पूरेंची आयात ॥१०॥ वीरांगद विण सुनट जे, पांचशें तेहशुं लग्ग ॥ गगन धरा दिशि विदिशिमां,शिलिमुख केरा वग्ग॥११॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ करेलणां घडदेने ॥ ए देशी ॥

॥ मणिमाली मूके हवे, शक्ति शस्त्र बहु जाल ॥ वीरांगद प्रतिशक्तियी, तेह करे विसराल ॥ १ ॥ सुनट मल जुके रे. जेहनुं पुण्य अगाध, तेहनो जय सूझे रे ॥ ए आंकणी ॥ विद्यायें मूसर प्रत्यें,घुघुर शब्द करंत ॥ वीरां गद यपगे चणी. ते उपद्रव सुनटहंत ॥ सु० ॥ २ ॥ मणिमाली ते उपरें, मूके सिंह गंभीर ॥ विद्यायें ते खाइ जाये, वीरांगद नव वीर ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ सिंह उपरें ते मूकतो. शरन ते आवे ताम ॥ सिंहनुं नक्षण ते करे, जोइ मणिमाली वदाम ॥ सु० ॥ ४ ॥ मेघ गर्झारव ते करे, शरन मरण लहे तेह ॥ मणिमाली शरथी हणे, वीरांगद गज जेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ पवन वेग आणी दिये, सिंहयुक्त रथ ताम ॥ ते उपर बेसी हवे, मूके शरना ग्राम ॥ सु० ॥ ६ ॥ पाडे गज मणिमालिनो, विद्यारथ तेणी वार ॥ फरीनें वेगे शर घणां, वरसे ज्युं मेघ धार ॥ सु० ॥ ७ ॥ वीरांगदनां छेदीयां, अनु क्रमें धनुष ते सात ॥ बाण लेवानें मूकवा, शक्ति न रही तिलमात ॥ सु०॥ ॥ ८ ॥ बाण मूक्युं निद्रा तणुं, तेणे ते उंघी जाय ॥ स्त्री नट सघलां उं घियां. नागपाशें ते बंधाय ॥सु०॥ ए ॥ मणिमाली विद्यापटें, माछी जेम म छजाल॥लेवा जाये जेटले,पवनवेग तेणें ताल ॥ सु० ॥ १० ॥ बहु खेचर भेला करी, आव्यो तिणहीज गाम ॥ मणिमाली स्त्री नट तजी, लडवा आव्यो ताम ॥ सु० ॥ ११ ॥ जोगरत्यादिक नूपनें, पवन वोलावे तत्र ॥ वि चित्र शस्त्रथी जुकता, द्विप जेम मृगपति सत्र ॥सु०॥१२॥ ते एकें निर्मद कस्या, सूर्य जेम ग्रह वग्ग ॥ मणिमालीयें नाइ प्रेरियो, आप संग्रामें ल ग्ग ॥सु०॥१३॥ बांध्या स्त्री नट लेववा, किरणमाली ततकाल ॥ चंडगति ते जाणीनें, आव्यो तिहां नूपाल ॥ सु० ॥ १४ ॥ थंनणी विद्यायें थंनी यो,गारुड विद्यायें ताम ॥ नागपाश सवि त्रूटीया,वली प्रबोधिनी अनिराम ॥ सु० ॥ १५ ॥ विद्याथी सहु जागीया, पट छेदीनें तेह ॥ उठी नूप पासें ग या, धरता अतीव सनेह ॥ सु० ॥ १६ ॥ पान वस्त्र आपी करी, दीधो बहु सतकार ॥ नूप दयायें छोडतो, किरणमालीनें तिवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ थं न्यो मूक्यो जाणीनें, करतो कोप अपार ॥ मणिमाली श्रीजयप्रत्यें, लेइ

धायो तरवार ॥ सु० ॥ १८ ॥ उलाली लिये खड्गनें, नृपति श्रीजयानंद ॥ मुष्टियें ताडे मस्तकें, मूर्छा लेइ पड्यो मंद ॥ सु०॥ १९॥ मृड चपेटो सिंह नो, मृगथी ते न खमाय ॥ चंद्रगतियें बांधियो, ओषधि जल छंटाय ॥ ॥ सु० ॥ २० ॥ किरणमालीनें सज्ज कस्यो, नृपनी पासी आण ॥ पूर्ववद् मां चेलीयो, निज शक्तिनो अजाण ॥ सु० ॥ २१ ॥ नाम प्रतापें सारिखो, किरणमाली लही शूर ॥ ते बंधाणो एणी परें, गयुं एहनुं सवि नूर ॥सु०॥ ॥ २२ ॥ तेहनें देखी आपदा, पश्चिम सायर मांहे ॥ झंपा करे मानुं जय थकी, विगलित चित्त उछांहे ॥ सु० ॥ २३ ॥ पुत्र सुनटना बंधथी, खेचर चक्री राय ॥ रवि आक्रांत चंद्रकर परें, वदन थयुं विछाय ॥सु०॥२४॥ वैरी बहुनें बांधीया, नृप सैन्यें अति दर्प ॥ बंधयोग्य अर्थ बांधतां,कविचित्त जेम उत्कर्ष ॥सु०॥२५॥ सत्तरमी ए आठमा, खंममां नांखी ढाल ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, होवे मंगलमाल ॥ सु० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥४८१॥ इतिश्रीज यानंदराजर्षिचरित्रे खेचरचक्री श्रीजयानंदनृपयुद्धाधिकारे तृतीयदिनयुद्धं ॥

॥ दोहा ॥

॥ रणमां सुनट मरे घणा,तेणे सुत तोषण काज ॥ उम्यो कृतांत जनक हवे, युद्ध अकारण त्याज ॥ १ ॥ मलीया सुनट बेहु तणा, शर छडे आ काश ॥ तरुथी जेम वर पंखीया, उडे लेइ अवकाश ॥ २ ॥ बाण रुधिरें रा ता थया, सुनट ते किंशुक समान ॥ फूल्याली परें शोहता, रणरसीया अ समान ॥ ३ ॥ चक्री सैन्यें नृप सैन्यना, सुनट उसास्या तेम ॥ नदी कल्लोल पाछा हवे, समुद्र कल्लोलें जेम ॥ ४ ॥ उत्तर तुं वज्रवेग तव, देखी थातुं दी न ॥ सिंहयुक्त रथें बेसीनें, आव्यो पराक्रम पीन ॥ ५ ॥ युद्ध देखे जे जे दिशें, तेणे दिश करे संहार ॥ जेणे दिश दव लागे तिहां, बाले तरु अर वार ॥ ६ ॥ पवनवेग रण अवतस्यो, शत्रु तणो क्षयकार ॥ चंद्रगति ज स इछतो, आव्यो करत प्रहार ॥ ७ ॥ नोगरत्यादिक नृपति, आव्या करण संग्राम ॥ वैरी प्राण राखस समां, पोहोंचाडे यम धाम ॥८॥ अरिबलनें उ पद्रव करे, जेम संयमनें कषाय ॥ केइना धनुष केइनी पणछ, केइना शर समुदाय ॥ ९ ॥ केइक मरण संशय पड्या, चक्री शरणें जाय ॥ जवलीरुने मिथ्यात्वथी, समकेत शरणुं थाय ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ४९१ ॥

ढाल अढारमी॥ गोरि गोरि ग्वाजनीनें,लंबे लंबे केश॥ वाही गयो रे कान्हुडो बाले वेश, मोतुं नगर गयो, आजुनी मोरी माय ॥ मोतुं०॥ ए देशी॥

॥ निजबल जाणु चक्री रे देखी, पवनवेगादिक उपर आव्यो ते छेष ॥ १ ॥ शत्रुनगरो नयो, सांनलजो मोरा नाय ॥ शत्रु० ॥ बालथी माहारा दास ते एह, माहारा नटपुत्रनें, वांधे छे तेह ॥ शत्रु० ॥ २ ॥ खेचर चक्री छे माहारुं रे नाम, केम सह्ही शकीयें नाइ, जीवंता आम ॥ शत्रु० ॥ ३ ॥ दुष्ट पवनवेगादिक वध्य, एम कही बेसे यावत्, स्यंदन मध्य ॥ शत्रु० ॥ ४ ॥ प्रथम पुत्र चक्रवेग जे नाम, शत्रु तृण समान गणतो, करे प्रणाम ॥ शत्रु०॥ ५॥ एवडो खेद श्यो करवो रे तात, एणी परें नाखे ते, मनोहर वात ॥ शत्रु० ॥ ६ ॥ कागडो कीटक जेणी परें खाय, दीनहीन ए नाशीनें जाय ॥ शत्रु० ॥७॥ तुमें केम संरंन कीधो रे एम, जीतुं हुं एहनें जाइ, ए पोकमां नेम ॥ शत्रु०॥ ८ ॥ तुमशुं रण कोण करशे रे स्वामि, पुत्र पराक्रम तुमें, जुर्ड एणे ठाम ॥ श० ॥९॥ धरती नेदी अहिपति देउं त्रास, बाणे तारागण पाडुं, नेदी आकाश ॥ श० ॥ १० ॥ सायर शोषुंने चूरुं नगराय, आगना दीयो मुजनें, करी सुपसाय ॥श०॥११ ॥ आण दीधे तातें चाल्यो चक्रवेग, हणतो शत्रुनें क्रम उत्कर्में वेग॥ श० ॥ १२ ॥ न खजावे कोइ हय गय रथपति, सुनटनें चिहुं दिशे, वींधीया जति ॥श०॥१३॥ पवनवेग हवे बोलावे तास, चक्रवेग पण बोले ते खास ॥ श० ॥ १४ ॥ दर्पांधने बुद्धि न रहे लेश, मरवानुं मनडुं करतो, सहत कलेश ॥ श०॥ १५ ॥ तातनो सेवक तुं बाल्यथी आज, शत्रुपणुं तुं नजतो, केहनें काज ॥ श०॥ १६ ॥ नारीयें नोलव्यो तुज ताहारो श्यो वांक, पण हवे थाइश, रांकनो रांक ॥ श० ॥ १७ ॥ मुज मारंतां तुज नहीं राखे नार, सिंहे मारतां मृगी, न धरे किवार ॥ श० ॥ १८ ॥ नारियें आत्मरक्षणनें काज, रण मुखें धरियो छे, तुजनें आज ॥ श० ॥ १९ ॥ व्याध व्याघ्र मुखें मूके श्वान, प्रथमथी तेहनें दीये, नक्षण दान ॥ श० ॥ २० ॥ नारीशुं निग्रह करुं ताहरो देख, शशि रवि ग्रहे सहु, राहु विशेष ॥ श० ॥ २१ ॥ पवनवेग कहे सांनलो वात, स्वामी ते माहरो खरो, ताहरो तात ॥श०॥२२॥ परणी वहू इछे तुज ताय, उन्मार्गे एम, करत अन्याय ॥ श० ॥ २३ ॥ नातिका हीन न पूजीयें देव, अन्यायी स्वामीनी,करीयें न सेव॥श०॥२४॥ लखमी अन्यायीनें नवि रहे घेर,

खशो श्रागल, तेहनी पेर ॥श०॥२५॥ सैन्यनी सामिनी नामिनी म जाण, तो शिक्षा देवा देवता गण ॥ श०॥ २६ ॥ श्रकालें क्षय करे तुमचो एह, गणे ए वचननो निश्चर केह ॥ श० ॥ २७ ॥ मुजथी के तुजथी तुज मुज मरण, मुहमां जाणशुं, केहनुं ले हरण ॥ श० ॥ २८ ॥ दावानल जेम वधे प्रचंम वाय, तेम चक्रवेग सुणी ज्वलती, निज काय ॥ श० ॥ २९ ॥ पण जस पुण्य तेहनो जय थाय, बीजा तो वचमां, गडथोलां खाय ॥श०॥३०॥ छठमे खंमें श्रढारमी ढाल, सांनलतां पद्म कहे, मंगलमाल॥ श० ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रवेग मूके हवे, श्रगनि तणुं ते बाण ॥ पवनवेग शर धोरणी, वर ते जलधर जाण ॥१॥ श्रमज जूफतो देखीनें, महावेग लघु नाय ॥ श्राव्यो तव तिहां चंडगति, तेहनें सन्मुख थाय ॥२॥ त्रीजो मणिमाली वली,श्राव्यो श्रवसर जाण ॥ नोग रति साहामो थइ, रुंध्यो तिणहीज गण ॥३॥ चंम्रवेग सेनानी जे,श्राव्यो धनुपनो धार॥वज्रवेग सेनानी ते,साहामो थयो तेणि वार ॥ ४ ॥ श्राठे परस्पर गरजता, दिग्गजपरें रण घोर ॥ बाण वडे सहलो गमे, त्रोडे शत्रु तोर ॥ ५ ॥ प्राण गयां जोइ केइनां, केइ पराक्रम धार ॥ कोड्यो गमे नट परस्परें, जूफे श्रति जूफार ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ जीहो जाएयुं श्रवधि प्रयुंजीनें ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो पवनवेगनां धनुष जे, लाला कापे ते वारं वार ॥ जीहो नव नव धनुष लेइ लडे, लाला चक्रवेगशुं श्रपार ॥ १ ॥ सज्जन नर जूउ जूउ पुण्य प्रकार ॥ जीहो पुण्यें मनवंछित मले, लाला पुण्यें होये जयकार ॥ ॥ स० ॥ २ ॥ जीहो चक्रवेगनां कापतो, लाला तपथी जेम कर्मजाल ॥ जीहो रथ नांगे ते परस्परें, लाला एम बहु काढे काल ॥ स० ॥ ३ ॥ जीहो पहरनें गदा मोघरे, लाला बेहु जण करे चकचूर ॥ जीहो चक्रवेग गगनें जइ, लाला मूके शिला श्रविदूर ॥ स० ॥ ४ ॥ जीहो जीवनें मोह ठ एणा परें, लाला पवन मोघर लेइ हाथ ॥ जीहो नांगे नवस्थिति दीर्घनें, लाला समकेत लाजनें साथ ॥स० ॥ ५॥ जीहो चक्रवेग जे शस्त्रनें, लाला मूके महावडवीर॥ जीहो ते ते पवन निष्फल करे, लाला जाणी चक्रवेग धीर ॥ स० ॥ ६ ॥ जीहो शक्ति शस्त्र संनारतो, लाला ज्वालानो नहीं पार ॥ जीहो श्रावीनें करमां रह्युं, लाला करतुं त्रट त्रटकार ॥ स०॥ ७ ॥ जी

हो तेह जमाही मूकतो, लाला पवनवेग परिवार ॥ जीहो तेह निःफल करवा भणी, लाला नाखे विचित्र हथीयार ॥ स० ॥ ८ ॥ जीहो पण ते सवि निःफल गयां. लाला हृदयें हणे तेह शक्ति ॥ जीहो पवन मूर्छा खाइ पडयो, लाला न लहे कांइये व्यक्ति ॥ स०॥ ९ ॥ जीहो शक्ति आवी निज हाथमां, लाला पवन मूर्छागत जाण जीहो नागपाशें ते बांधीयो. लाला स्नेह रागें जेम जाण ॥स० ॥ १०॥ जीहो चंद्रगति बहुधा लडयो, लाला महावेग मूके शस्त्र ॥ जीहो आग्नेय तेहनें उजवे, लालो मूकी वारुण अस्त्र ॥ स० ॥ ११ ॥ जीहो त्रिशूल महावेग मूकतो, लाला चंद्रशरें करे छेद ॥ जीहो लीये गोल पंत्रें करी.लाला महावेग मूके अभेद ॥स०॥१२॥ जीहो चंद्रगति हृदयें हण्यो, लाला बांध्यो मूर्छा रे वंत ॥ जीहो नागपाशें पवन परें, लाला कर्मनी गति छे अचिंत्य ॥ स० ॥ १३ ॥ जीहो मणिमाली पण एणीपरें, लाला बांधे भोगरति राय ॥ जीहो श्वासोश्वास न लेइ शके, लाला कर्मथी बलियो न थाय ॥ स० ॥१४॥ जीहो चंमवेग सेनानीयें. लाला वज्रवेग पण तेम ॥ जीहो नागपाशें करी बांधीयो, लाला जाणियें ए नेम ॥ स०॥ १५ ॥ जीहो चक्रवेगादिक चारनें, लाला पवनादिकनें रे जाव ॥ जीहो जइ जातां वीरांगदें, लाला श्रीजय विनव्यो ताव ॥ स० ॥ ॥ १६ ॥ जीहो बाणधारा तिहां वरसतो, लाला आवी रुंध्या रे तेह ॥ जीहो बाणें ते सवि पीडिया, लाला चक्रवेगादिक जेह ॥ स० ॥ १७ ॥ जीहो बांध्या मूकी आविया, लाला युद्ध करणनें रे काज ॥ जीहो आकर्षिणी विद्या तिहां, लाला फोरवे श्रीजयराज ॥ स० ॥१८॥ जीहो आकर्षी ते चारने, लाला लाव्या निजरथमांहि ॥ जीहो नागपाश ते त्रोडीया, लाला गारुड विद्यायें त्यांहि ॥स०॥ १९ ॥ जीहो वीरांगद औषधि जले, लाला सज्ज करे तेणि वार ॥ जीहो निज निज वाहन वेती करी. लाला युद्ध करण योवार ॥ स०॥ २० ॥ जीहो पवनवेग चंमवेगते, लाला श्रीजय साथें लडंत ॥ जीहो देखीने बोलावतो, लाला क्रोधें रद पीसंत ॥ स० ॥ २१ ॥ जीहो ते पण सिंह परें आवीयो,लाला क्रोधें बोले रे वाणि ॥ जीहो कूदें केम पर बलथकी, लाला यद्यपि कंठगत प्राण ॥ स० ॥ २२ ॥ जीहो सूर्य तापें रज तपण जे, लाला केतो काल रहंत ॥ जीहो बांधीनें मूकुं नहीं, लाला मुज कर देख तुं तंत ॥ स० ॥ २३ ॥ जोहो जो मुज शक्ति जाणे न

ही, लाला तुज सुत पूठजे तेह ॥ जीहो प्राणसंशय मांहे पड्यो,लाला तुज मूकावे जेह ॥ स० ॥ २४ ॥ जीहो जा तुं मूक्यो जीवतो, लाला तुज मुज स्वामि रे एक ॥ जीहो स्वामी डोही न थाइयें, लाला धरीयें हृदय विवेक ॥ स० ॥ २५ ॥ जीहो पवन कहे परजयथकी, लाला अथवा जीत्यो रे बाल ॥ जीहो एक वार तेणें मावतो, लाला पूरव वात संनाल ॥ स० ॥ ॥ २६ ॥ जीहो बाल पीड्यो तें पापीयें, लाला हुं तुज मारण काम ॥ जीहो निज बालक पीडा नवि, लाला सिंह सही शके नाम ॥ स० ॥ २७ ॥ जीहो उक्ति प्रयुक्ति संग्राममां, लाला करवी न घटे रे कोय ॥ जीहो था साहामो तुजमां यदि, लाला कांय पराक्रम होय ॥ स० ॥ २८ ॥ जीहो सांनली कोपें कलकल्यो, लाला बाणें ठायो रे तेह ॥ जीहो ते पण वरसे बाणने, लाला जेम आषाढो मेह ॥ स० ॥ २९ ॥ जीहो चंद्रवेग थाको तिसे, लाला पवनें माखुं त्रिशूल ॥ जीहो मूर्छागत अही पाशथी, लाला बांध्यो ते प्रतिकूल ॥ स० ॥ ३० ॥ जीहो निज शिबिरें ते लेइ गयो, लाला श्रीजयानंद कुमार ॥ जीहो चक्रवेगादिकना सवे, लाला रथ नांगे तेणीवार ॥ स० ॥ ३१ ॥ जीहो बाणे शोणितछुं नखा, लाला अनुक्रमें बांध्या तेह ॥ जीहो दया धरी नवि मारीया, लाला चंद्रगतियें ग्रह्या एह ॥ स० ॥ ३२ ॥ जीहो नृप आणाथी लेइ गयो,लाला निज शिबिरें ततकाल ॥ जीहो किरणमाली हर्ष्यो घणुं, लाला बंधु संगम सुरसाल ॥ स० ॥ ३३ ॥ जीहो सुनट तणा जे उठल्यां, लाला रुधिरें रातो रवि थाय ॥ जीहो पवित्र थावा मारुं कारणे, लाला पश्चिम समुद्रमां जाय ॥ स० ॥ ३४ ॥ जीहो निज निज स्वामी आणाथकी, लाला दोय सैन्य निज ठाम ॥ जीहो जयनें शोकना शब्दनो, लाला कोलाहल थयो ताम ॥ स० ॥ ३५ ॥ जीहो सेनानी चक्री करे, लाला महाबलवंत कुमार ॥ जीहो महाबल नामें चक्रीनें, लाला शोक तणो नहीं पार ॥ स० ॥ ३६ ॥ जीहो सुनट हस्त्यादिक सज्ज करे, लाला जे होय कंठगत प्राण ॥ जीहो श्रीजयानंदना सैन्यमां, लाला जय जयकार कल्याण ॥ स० ॥ ३७ ॥ जीहो आठमा खंममांहे कही, लाला ठंगणीशमी ए ढाल ॥ जीहो पद्मविजय पुन्यें करी, लाला होवे मंगलमाल ॥ स० ॥ ३८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५६६ ॥ इतिश्रीजयानंदराजर्षिचरित्रे श्रीजयानंद खेचरचक्री महा युद्धाधिकारे चतुर्थदिनयुद्ध ॥

॥ दोहा ॥

॥ दान पुण्य न करी शके, रात समे नर कोय ॥ तेणें मानुं क्रोधें अरुण थइ, उग्यो सूरय सोय ॥ १ ॥ वाहन शस्त्रादिक सहु, सुनटनें आपे नृप ॥ चिंतामणि परनावथी, महिमा जास अनूप ॥ २ ॥ पूरव परें वहु सैन्यनां, सामग्री करी सर्व ॥ मलिया संगर कारणें, चित्तमां धरता गर्व ॥ ३ ॥ शर संग्राम करी घणो, पवनवेगादिक राय ॥ नागुं चक्री वल तदा, ते सहु ना ठा जाय ॥४॥ महावल सेनानी तदा, उठयो पराक्रमें इंद ॥ मार मार करतो थको, नसव्या सुनटनां वृंद ॥ ५ ॥ जीताये नहीं अन्यथी, जाणी श्रीज यानंद ॥ शत्रुध्यान रवि आवियो, जेहनुं तेज अमंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ सुण वांसलडी, वेरण थइ छुं लागी व्रजनी नारने ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां धनुष टंकराव ते करतो, वली वरसी वाण मंमप धरतो, तव परवल त्रासथी सहु मरतो ॥ १ ॥ सुणो सुनटोजी, श्रीजयानंद पराक्रम परपरें देखो ॥ जग जोतांजी, एहना पुण्य प्रवलनो नावे लेखो ॥ ए आं कणी ॥ जिण जिण दिशि नाखे ते वाण, तिण दिशि वहु सुनट वमे प्राण, कोण करिवरनें कोण केकाण ॥ सु० ॥ २ ॥ ते वाण घातें वीहिना वीर, वली महावल सेनाशुं धीर, तिहां न करे कोइ कोइनी नीर ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ नासतां केइ पडियां वस्त्र, वली केइ सुनटनां केइ शस्त्र, नवि खबर पडे लागे अस्त्र ॥ सु० ॥ ४ ॥ सम कालें कुमर सहस वार, पांचे कणा म हा योधार, वीजा खेचर वहु परिवार ॥सु०॥ ६ ॥ वीर मानी विचित्र आयु ध धार, पांचशें नारी ते कुमार, उपर वरसे शिलीमुख धार ॥सु०॥७ ॥ रण कौतुकी वहु खेचर निरखे, तेम तेम कुमर चित्तमां हरखे, पोतें पण वाण श्रेणी वरखे ॥ सु० ॥ ८ ॥ एकलो पण वहु वीरनें मारे, पण कांय प्रयास न चित्त धारे, जेम मृगपति वहु मृगनें मारे ॥ सु०॥ ए ॥ कांइ आदि मध्य जमी आकाश, नमतो अरि सेना चिहुं पास, कोय खबर पडे नहीं कि हां वास ॥ सु० ॥ ए ॥ कोइनें मारे करतल घात, कोइनें वली पाटु प्रहार लात, कोइनें कूर्परें पृथिवी पात ॥ सु०॥ १० ॥ गदा मोघर खड्ग तथा दंम, मांहोमांहे अथडावे परचंम, करे जालरा मूकी वहु कांम ॥ सु० ॥ ११ ॥ एम विविध आयुधें करया निस्त्राण, केइ शस्त्ररहित कंगत प्राण ॥ दयाथी नवि मारे केइ जाण ॥सु०॥१२॥ महावल प्रमुखनें दिये नागपाश, तेम एक

शो कुमर एकज राश, ते देखी सहुनें पडी नाश ॥ सु० ॥ १३ ॥ उवेंख्या नासता सहु तेह, चूसंज्ञायें पवनवेग जेह, लेइ चाल्यो सहु वांध्या एह ॥ ॥ सु० ॥ १४ ॥ चोरनी परें खंधा वार लावे, देखी चक्री निज चित्त नावे,अ हो महारा सुत वंध्या लावे ॥ सु० ॥ १५ ॥ वली वीजा सुत नाग आवे, क्रोधें धमधमीयो एम धावे,जइ मूकावुं एम कहेरावे ॥ सु० ॥ १६ ॥ ते रंभा कहो तुमें किहां गई,मस्तक ठेडुं तत्पर थई,वली मारुं हुं एहनो पई ॥सु०॥ ॥ १७ ॥ मुज कुमर कहो ते किहां अठे,वीजी सवि वात करुं पठें, एम कही अरि शिबिर मांहे गठे ॥ सु० ॥१८॥ कोइ खलना तेहनें नवि करे, जाणीयें जम रूपांतर धरे, कोइ सुनट न एह आगल वरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ स हु सुनट दिशो दिश नासंता, नयणें चक्री ते पासंता, वोले एम करुणा वासंता ॥ सु० ॥ २० ॥ रे सुनटो तुम मंगल थाउ, शत्रु होये ते पण कां जाउ, रंभा मुज शत्रुने वतलाउ ॥ सु० ॥ २१ ॥ मुजथी अधिको अथ स म नही, तेहनें नवि मारुं हुं अहीं, पण रंभा ते कहो ठे कहीं ॥ सु० ॥२२॥ तव स्त्रीरूपें नरपति आवी,कहे ते रंभा हुं सोहावी,तुज मारुं तुज प्रिया रंभा वी ॥ सु० ॥ २३ ॥ जो पुत्रनें मलवाने कामें,तो मलशो करतां संग्रामें,जव त स सम तुज दिशा पामे ॥ सु० ॥ २४ ॥ आठमे खंमें वेहु मलिया ठे, ढाल विशमी वातोमें नलीया ठे, कहे पद्म क्रोधें खलनलीया ठे ॥ सु० ॥ २५॥

॥ दोहा ॥

॥ मरम वचन शस्त्रें करी,वीधाणो खगराय॥ मूके वाण जडोजडें,जेम वा दलीयें ठाय ॥१॥ वाणवंतो लीये तेहनें, दूर करी दिशि सर्व ॥ उज्ज्वल करी नृपें तेणे समे, सुनट थया ते सगर्व ॥२ ॥ पवनवेगादिक खेचरा, चंद्रगत्या दिक तेम॥चक्रीसुत साहामा थया, युद्ध करणनें प्रेम ॥३॥ वेहु सेना संगर थतें, पृथिवी नग कंपाय ॥ सागर मर्यादा तजे,दिशि अंधारी थाय ॥४॥ खे चरपति नरपति तणुं, युद्ध मच्युं अति जोर ॥ एक एकनें गंजे नही, नवि ठे दाये कोर ॥ ५ ॥ वज्रपृष्ठ धनु जेहनें, अक्षय वाण तूणीर ॥ कामाक्षायें ज श दीउं, केम हारे नृप वीर ॥ ६ ॥ नव नवा शस्त्र वांठित दीये, तेह विद्या जस पास ॥ चक्री पण डुर्जय लह्यो, नवलो दैव विलास ॥ ७ ॥ चक्री चा प खंमित करे, वली चक्री नवलाय ॥ एम शत धनुष ते नवनवां,खंमो खं म करे राय ॥ ८ ॥ शूल मूके खेचर पति, शूलें नेद नृप ॥ सहस्स नार

लोढा तणो, चक्री गोल विरूप ॥ ए ॥ मूके नरपति उपरें, नरपति पण तेम तेह ॥ मोदकें मोदक नागीयें, नृप कलानो गेह ॥ १० ॥ सूर्यहास्य चक्री लीये, खड्ग नरेंद्र पण ताम ॥ चंद्रहास्यथी ठेदतो, दंभ गदायें संग्राम ॥११॥ खड्ग मुष्टि पग मोघरें, युद्ध करे ते दोय ॥ नवि जीते ते दोयमां, फरी शर युद्ध ते होय ॥ १२ ॥ चक्री धरतीयें पाडीयो, रथ नांग्यो ततकाल ॥ नवनव रथथी जूजतो,ते नांगे नूपाल ॥ १३ ॥ एकवीश वार एम नांजीया, रथ चक्रीनां तेण ॥ पण विरमे नही रणथकी, महावीरव्रती जेण ॥ १४ ॥ चक्रीना रथ नांजीया, निजरथ नंजण नीति ॥ लहीनें खे त्रांतरें गयो, रवि मानुं चिंतवि चित्त ॥ १५ ॥ विरम्या बेहु संग्रामथी, निजनिज खंधा वार ॥ आवी सहुनें सङ्ग कस्या, पूरवपरें निरधार ॥१६॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ राग बंगालो ॥

॥ चक्री चिंतातुर बहु होय, शोकमां आस्थानें रह्यो सोय ॥ साजन सांजलो ॥ पुत्र बंधाणा केम मूकाय, पूठे प्रधाननें खेचर राय ॥सा०॥१॥ कहे परधान सुणो हित आण, तो कहीयें तुम हितनी वाण ॥ सा हिव सांजलो ॥ हितकारी मनगमतुं जेह, वयण जगतमां डुर्लन तेह ॥ सा० ॥ २ ॥ स्त्रीरूपें ए श्रीजयानंद, मत जाणो तुमें स्त्रीनो वृंद ॥सा०॥ बंधन करतां तुम सुत सोय, तेणें कदाग्रह मूकवो होय ॥ सा० ॥ ३ ॥ मौक्तिकंकण सुख नांख्युं जे वयण, तेह खमावी कीजें ए सयण ॥सा०॥ तुम मन आवे जो विश्वास, तो वली आपो कन्या तास ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए ठे उत्तमनें दयावंत, तुम सुत मूकशे जाणो संत ॥ सा० ॥ एटले जाशे आपणे थान, तुम राज्यनो इछक न निदान ॥ सा० ॥ ५ ॥ सांजली मन मां धारी मान, विसर्ज्यो नृपें तेह प्रधान ॥ सा० ॥ मुज प्रतिज्ञा जाये केम, चक्री शीखवी दूतनें प्रेम ॥ सा० ॥ ६ ॥ पाठव्यो पवनवेगनें पास, पोहोता पवन उतारे आवास ॥ सा० ॥ चक्रीयें नाख्युं ते नाखे तास, तुमें सुणा अम्ह सङ्गन खास ॥ सा० ॥ ७ ॥ चंदन कापे आपे वास, सेलडी पीले रस दीये तास ॥ सा० ॥ तेम तुमें साचा सेवक अम्ह, एणी परें न घटे करवुं तुम्ह ॥ सा० ॥ ८ ॥ तुमचे जमाइयें मुज सुत बंध, लोक वचनें जाण्यो ए संबंध ॥ सा० ॥ तेहनी संधि करो तुमें एम, मुज सुत मूकावो धरी प्रेम ॥ सा० ॥ ए ॥ मुज कन्या वली पांचशें अन्य, आपुं नृपनी

रूअडी कन्य ॥ सा० ॥ आपुं अर्ध वैताढघनुं राज, जामाता समजावो आज ॥ सा० ॥ १० ॥ मोली कंकण मुख दिवस ते सात, मुज आणा पाले विख्यात ॥ सा० ॥ तो अम्ह बेहुने वाधे प्रीति, जनम लगें पालुं एह नीति ॥ सा० ॥ ११ ॥ पवनवेग पण सांजली जेह, जइ नरपतिनें नां खी तेह ॥ सा० ॥ नृपतियें जे उत्तर दीध, पवन आवी ते दूतनें कीध ॥ सा० ॥ १२ ॥ तुज स्वामीनें कहेजे नेम, तुज सुत बंधव नाखे छे एम ॥ सा० ॥ नहीं मुज कन्या केरुं काज, वली वैताढ्य अर्धनुं राज ॥ सा० ॥ ॥ १३ ॥ म्हारा नाम अंकित दिन सात, मुकुट वहे तुज नृप अवदा त ॥ सा० ॥ अरधनरत आपुं तुज राय, आपणे मेल छे कहेजे जाय ॥ सा० ॥ १४ ॥ दूतें जइ संजलावी वात, जूत जराड थयो खग तात ॥ सा० ॥ क्रोधें चक्री चिंतवे ताम, संधि करे नही वयणे साम ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ जितकाशी ए न गणे कोय, जेहनुं मन गर्वित एम होय ॥ सा० ॥ चक्री शक्रनें कृष्ण न एह मनुष्य मात्र अहंकारनुं गेह ॥ सा० ॥ ॥ १६ ॥ बीजे शस्त्रें न जीत्यो जाय, विद्या शस्त्रें एह जीताय ॥ सा० ॥ ते शस्त्रें हणी लावुं पूत, जे राखे माहारुं घर सूत ॥ सा० ॥ १७ ॥ एम करतां जश माहरुं थाय, अपजश अलक्षी ते दूर पलाय ॥ सा० ॥ सुन ट निद्रा सुख अनुजवे रात, एम करतां थयो हवे परजात ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ आठमे खंडें जांखी ढाल, एकवीशमी ए राग वंगाल ॥ सा० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यविशाल, आगल सांजलो वात रसाल ॥ सा० ॥ ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३२ ॥ इति श्रीजयानंद राजर्षिकेवलिचरित्रे श्री जयानंदनृपविद्याधर चक्रिपुत्राधिकारे पंचमदिनयुद्धं ॥

॥ दोहा ॥

॥ रणवाजां वली वाजीयां, बेहुनी सेना मांह ॥ नट जेम नादी शब्दथी, वधीयो नट उत्साह ॥ १ ॥ करी रणसामग्री सुनट, आव्या ते युद्धमान ॥ अ न्योन्यस्पर्धे बहु अरि हणे, मानुं कृतांत अनुमान ॥ २ ॥ चक्रीदल जाग्युं तदा, आव्या चक्री कुमार ॥ समकालें संग्राममां, धावे क्रोधें अपार ॥ ३ ॥ पवन वेगादिक रोकिया, दुष्ट विकल्प शुन ध्यान ॥ नृप नट मानुं क्रूर ग्रह, वक्र थया असमान ॥ ४ ॥ देखी चक्री कुमार ते, फोरवे विक्रम फार ॥ क्रम वंही उत्क्रम लडे, हत कणा सहस वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ कडखानी देशीमां ॥

॥ शूरनट क्रूर रण तूर अतिवाजते, चक्र केइ वक्र मूके कराल ॥ शक्ति अतिव्यक्ति उल्का सहस मूकती, शस्त्र परस्परथकी अग्नि जाल ॥शू०॥१॥ फर्हांक मुजर पडे नड अडे चिहुं दिशे, गृद्ध पंखी नमे बहु आकाशें ॥ घ कीना वीर प्रतिवीरने मारता, कोइ उनो रहे नाहीं पासें ॥ शू० ॥ २ ॥ सु नट संहार निराधार शंका धरी, श्रीजयानंद नारी सरूपें ॥ तिहरथ बेसीनें परदल पेशीनें, तेजथी बहु सुनट कोडी कंपे ॥ शू० ॥ ३ ॥ राय समुदाय नोलावतो चक्री सुत, विसखा बंध पडियारे जाइ ॥ नाश नाशज करो पा शमां केम पडो, कां मरो मुग्ध जाउ पलाइ ॥ शू० ॥ ४ ॥ कोण सहे तनु दहे मुज चपेटो कह्यो, सुर असुर कोइ एहवो न देखुं ॥ काष्ठ सम हय ग णुं चित्र सम नट गणुं, मृत्तिका गज सम गज उवेखुं ॥ शू० ॥ ५ ॥ शस्त्र तृण वस्त्रपरें खंम खंमित करुं,मारतां कोइ रक्षक न थाय ॥ मुग्ध तुम जग्य करशो जमराजीयो, मुज चपेटो न ईर्ष्ये खमाय ॥ शू० ॥ ६ ॥ सांनली वचन ते देहडी तस बली, क्रोधथी मूकतां योध बाण ॥ तृण समा प्राण निज जाणी कंपा करे, श्रीजयानंद तेहनें पिछाण ॥ शू० ॥ ७ ॥ नांजे रथ सब केइ सुनटनें पाडतो,केइ नट लेइ गगनें उगाले ॥ सुद्ध करे शुद्ध रणनूमिमां चक्रधर, आवी श्रीजयतणा बाण खाले ॥ शू० ॥ ८ ॥ रोषथी तोष नहीं दोष स्वामी तणे, सैन्य पण दैन्यता छंमी लडता ॥ मुष्टि वाहे अति शक्ति उत्साह्यो,युद्ध करतां केइ सुनट पडता ॥ शू० ॥ ९ ॥ दर्दरी दडदडे खांमा तिहां खड खडे, ढोल बली ढमढमे तव निसाण ॥ गमगमे बली ददामा तिहां दमदमे, जल्लरी छम छमे तिणहि टाण ॥ शू० ॥ १० ॥ ममरु वाजित्र योगिणी तिहां ममममे, कोपें करी धम धमें वयरीवग्ग ॥ जूकवा टम टमे कायर कम कमे, दिशो दिश गम गमे पामी खग्ग ॥ शू० ॥ ११ ॥ जेम जेम नड निडे तेम तेम रस चडे, काहला त्रड त्रडे सार सहें ॥ बकतर कड कडे नट पडत लडथडे,प्पंबक त्रहत्रहे नूरि नदें ॥ शू० ॥ १२ ॥ नूमि पडि या केइ फडफडे वडवडे, गिरि शिखर खडखडे नीर छलके ॥ बहु शिला रडवडे नूमिका धडहडे, कुंत करवाल बहु तेज चलके ॥ शू० ॥ १३ ॥ गज घटा गडहडे प्रेत बहु हडहडे,धीर तिहां गहगहे चित्तमांहि ॥ तेह बहु जस लहे महा ध्वजा लहलहे, वृक्ष बली कडकडे पडत दाहिं ॥ शू० ॥ १४ ॥

वीर कर चलचलें रुधिर वहे खलखले,लोक बहु कलकले खम्युं न जाय
नगरजन खलभले चालां बहु फलहले, जेह जूजार चूके न घाय ॥शू०
॥१५॥ हाथी शृंखलखलके हलके चलें, कायरा हाड अंगें टलके ॥ नाश
पूंठथी वाण मूके नही,एक नट तेजथी अति फलके ॥ शू०॥ १६ ॥ य
विण जे थया यान तेहनें दीये,शस्त्र हीणाने आपेते शस्त्र ॥ क्षुधितनें खा
जल तृषितने आपता, वस्त्र हीणानें आपे ते वस्त्र ॥ शू०॥ १७ ॥ आठ
खंम अखंम बावीशमी,ढाल कही पद्मविजयें रसाल ॥ चक्रपति नरपति दो
हवे जूफता,सांजलो तेह कहेशुं विशाल ॥शू०॥१८॥ सर्वगाथा ॥६५५

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करंता परस्परें,नांजे रथ गदाघाय ॥ बाहुयुद्ध वली मुष्टि युद्ध
करता रोप जराय ॥ १ ॥ चक्री मूके महातरु, नरपति उपर जाम ॥
त पीसी रोषें करी, नृप पण तेम करे ताम ॥ २ ॥ पछी महा शिलायें
कीया, पछी करे रजनी वृष्टि ॥ लोक माने उतपात ए,किम थाशे कहो
ष्टि ॥ ३ ॥ चक्री गिरिवर मूकतो,नृप उपर तरु साथ ॥ कामाक्षा दत्त
घरे, नृप चूरे लेइ हाथ ॥४॥ ते चूरणथी करहा परें, पडे पथरना खंम
लोक अकालें मानता, ए इयो दैवनो दंम ॥५॥ तेहमां तरुथरथी पडय
कुसुम ते देवें कीध ॥ पुष्पवृष्टि मानुं हर्षथी, नृप उपर परसिद्ध ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी कडखानी देशीमां ॥

॥ धीर महावीर मुख नीर आणी घणो, क्रुद्ध महा रौद्र ए शत्रु दीसे
॥ एह अजेय अमेय विक्रम धणी, केणी परें जीतुं जेम होयडुं हीसे ॥ धी
र० ॥ १ ॥ करिय विचारथें महारथें बेसीनें, शक्ति मूके महाज्वाल वम
ती ॥ तेह निज शक्ति प्रतिशक्तिथी नेदतो, एणी परें नूपमति चित्त रम
ती ॥ धी० ॥ २ ॥ चक्रधर चक्र अतिवक्र मूके तदा, नेत्र मीचे सुनट ते
ह देखी ॥ मूके प्रतिचक्र नूशक्र तस सन मुखें, कौतुकी नासता तेह पे
खी ॥ धी० ॥ ३ ॥ दोय चक्र खड खडे अग्नि कणीया जडे,दाह नीकें ए
र असुर नासें ॥ उपडे नें पडे गृद्ध पंखी परें, केहनें चित्त विस्मय न ना
से ॥ धी० ॥ ४ ॥ दलित मद शत्रुनो गलित अगनि सवे, दोय प्रतिहत
पराक्रम थइनें ॥ विरमीआ जुद्धथी न रमीया शक्तिथी, रह्यां निज सा
मी पासें जइनें ॥ धी० ॥ ५ ॥ शस्त्र तामस तणुं जामस नाव लहे, नृप

विलमां अंधकार थावे ॥ राति अमावासनी जातिथी घन सहित, हय गय सुनट नयणें न आवे ॥ धी० ॥ ६ ॥ स्वपर अविशेष मांहो मांहे हणे, हय गय तेम पडे रथ ते नांजे ॥ नृप करें रवि करे सर्व उद्योत मय, जेह देखी सहस नानु लाजे ॥ धी० ॥ ७ ॥ बाण विन्नाणथी नृप वरसे तदा, चक्री तव खोनीयो मन्न मांहि ॥ सांधवा मूकवा बाण समरथ नही, जे थो शिरत्राणनें वली सन्नाह ॥ धी० ॥ ८ ॥ शत्रु सैन्ये सुनट शिर तिहां रडवडे, क्षुधित जम केरडा कवल मानुं ॥ सुनटशरें मारीया मूर्बायें घारीया, गृद्ध आवे तिहां जाणी खाणुं ॥ धी० ॥ ९ ॥ तास ठद वायथी आय चेतन वली,नरपतिपत्ति हय गय न कोइ ॥ बाणथी वींधीयो विंधियो एहवो,सैन्यचक्री तणों नविश्च होइ ॥ धी० ॥ १० ॥ प्राण सहु जीवने जाणी वाहाला घणुं, नासता चक्रीना सैन्य वाला ॥ वयर करी केरकरें चक्रीवलीया समुं, निंदता स्वामीनें लही जंजाला ॥धी०॥ ११ ॥ खेचरपति नरपतियें बहु वारते, पाडीयो तोहि उठीनें जुऊयो ॥ शूर अतिक्रूर तेणें एहज एम अडे, एम सहु लोक चित्तमांहे बूऊयो ॥ धी० ॥ १२ ॥ शस्त्रे अंधकार तिरस्कार करी टालतो, माहरी तेह उद्योत जीपे ॥ लाज धरी अस्तगिरिराजमां रवि थयो, पश्चिम समुइनें ते समीपें ॥ धी० ॥ १३ ॥ अहवा परताप मुज तापथी अधिक ए, मित्र मुज चक्रीनें नृपति मारे ॥ एम गणी अस्त नणी सूर्य पश्चिम गयो, सैन्यमां दोय निज युद्ध वारे ॥ ॥ धी० ॥ १४ ॥ पूर्वपरें सज्ञ करया जेह घायें नखा, राति सुख निइमां सहु गमावे ॥ ढाल त्रेवीशमी आठमा खंममां, पद्म कहे हवे रवि पूर्व आवे पुण्य करवा परजात थावे, मंगलतूर सहुयें वजावे ॥ धी० ॥ १५ ॥ सर्व गया ॥ ६७६ ॥ इतिश्रीश्रीजयानंदराजर्षि केवलिचरित्रे श्रीजयानंदनृप चक्रायुद्ध खेटचक्री द्वयुद्धवर्णनो नाम पष्ठदिनांतर्गतो युद्धाधिकारः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूता जाग्या रवि किरणे,गुरु उपदेशें जेम ॥ मोहनिइा नवि जीवना, विलयें जाये तेम ॥ १ ॥ जयश्री योग्य ठे नृपति, युद्ध विना नवि तेह ॥ तेणे रवि पूर्वाचल चड्यो,मानुं जोवा एह ॥२॥ बेहु सेनामां वाजीया, रण वाजित्र अनेक ॥ मथतां जेम सायर तणी, ध्वनि उठे अतिरेक ॥ ३ ॥ जेम शुद्ध धर्म उद्यम करे,पामी गुरु उपदेश ॥ तेम ते वाजिंत्र शब्दथी,रण उ

यम सुविशेष ॥ ४ ॥ आह्वमां बहु वेला जम्यो, विप्र अहृतों होय ॥ युध्
कला बहु सुनटें तेम. रण अण तृता होय ॥ ५ ॥ मार मार करता थका,
पसख्यो चक्री मार ॥ जलनां बालक जेम गले, पामी वग कासार ॥ ६ ॥
पवन पांचशें स्वी सुनट, युध् करी बहु नांति ॥ विश अग्निम अहि पासथी,
बांध्या ते एकांत ॥ ७ ॥ चंड गत्यादिक खेचरा, नोग रत्यादिक तेम ॥ न
गये सुनट लखोगमे, चक्र वर्त्तीना नेम ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चंमर्द्दम दोर्दम दोनुं जडे, खेचरा राय अवाय करतो ॥ आवीयो धा
वीयो जेम मदें आंधलो. मयगल तरुगण कोडि हरतो ॥ चं० ॥ १ ॥ बहु
कुमर रोकतो वचनें अति टोकतो, नूप संहारतो सैन्य आवे ॥ चक्री कहे
केम रहे दुर्जीव मुज आगलें, रे रे रंका न तुं दूर जावे ॥ चं० ॥ २ ॥ खोरणे
जाणी मन आणी उवेखी में, तादृश चित्तमां ते न आवे ॥ शक्र पण तृण प
रे अपर कोण मुज शिरे, कोइ मुज आगलें बलें न फावे ॥ चं० ॥ ३ ॥ यतः ॥
वैद्याः संति पदेपदे गदगणान् हंतुं क्षमानैवजैः, दानैर्डुर्गतदौस्थ्यसंहियतिह
तो, ऽसंख्यापुनर्निस्तमणाः ॥ नत्वेषोस्तिजगत्सुयोप्यपनयेदौर्दमकंन्दुपयं,
शर्म्मेर्मेहियतवांश्चयोयुधि यशोदत्तेऽथवा कुर्वशः ॥ १ ॥ मृगैर्मृगारिर्नुजगैर्गुरु
रमान्, सुरैः सुरेंद्रस्तपनस्तमोनिः ॥ अग्निः पतंगैर्मुरजिद्वदैत्यैः, यं दृत्तथा हं
सुनटैर्न साध्यः ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ माहरुं बलनिर्बल थाय तुज वपयकी,
जातुं मूकी तुज नारि जाणी ॥ नहिंतो विद्या बलें पतंग परे कां बले, नृपति
कहे सुणो ताम वाणी ॥ ४ ॥ नूमि तुं सुवीयो ने वली उवीयो, जीवतो
तुज सुना यपणें मूक्यो ॥ नारिवध करण रण करण तुं आवीयो. बल नि
बल बातमां केम शंक्यो ॥ चं० ॥ ५ ॥ तुज सुनट तादृरुं विकट बल देखाडुं,
पूर्व षट दिवस पर्यंत मांहि ॥ बली अवशेष विशेष बल दीपतो, फोरवी
मानवो जेणे उद्यांहि ॥ चं० ॥ ६ ॥ यतः ॥ शूराः संति सहस्रशो नुजबल प्रो
दर्प्पदर्पो त्सुरा ॥ शस्त्राणि प्रतिवीरजीवतरमाकुंटाकवृत्तीन्यपि ॥ कोदंना
यतमायके मदिपुनर्निःशूर जन्मा मही, शस्त्रकंतृणमेकमेव यदिनं यंके द्वतं
नरहिरा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सांनली कलकली देहदी चक्रीनी, रोषपरस्परें बाण
नांदे ॥ मेघविद्यायें अमोघ वरसो करे, चक्रिनृपमन्यमा सुयरें दाखे ॥ चं०
॥ ७ ॥ पवनविद्यायें ते स्ववननृपनि करे, चक्रीवली पवनविद्या प्रयुंजे ॥

शृंग गिरिशृंग करे नृपतितव श्रग्नि धरे. लक्ष्मणमें पान करे पवन पूजे ॥चं०॥८॥ चक्रधर नक्षतनु सर्प्प कोपयो गमे, नरपति खगपति मूके ताम ॥ वींछी चक्री करे नृपति मयूर धरे. वयरीनो नाश करे ते प्रकाम ॥ चं० ॥ ए ॥ चक्रधर शस्त्र निद्रा श्रमंदा धरे,नृपनें श्रंगद वर्त्ते ते न लागे ॥ चक्री सैन्यें सूणा निंदमां नवि गण्या. नृपतिबोध विद्यायें जागे ॥चं०॥१०॥ प्रबलबल सबल चक्री चमुपुं लहे. श्राग्नेय शस्त्र चक्रधर प्रकाशे ॥ त्रटत त्रटकार करे जलदयी संहरे,नृपविद्यातणो ले श्रावास॥चं०॥११॥ बांधीयो नागपाशें नृपति सांधीयो. ते कमलनालपरे तुरत त्रोडे ॥ गरुड चक्री ठवे शत्रुनें जे खवे. नृप गोविंद श्रस्त्र तास जोडे ॥ चं० ॥ १२ ॥ गरुड नाशि गयो चक्री निःफल भयो, मोहन शस्त्र ठवे खेचरेश ॥ मांहोमांहे वढे खबर को नवि पडे. तेह देखी हवे नरवरेश ॥ चं० ॥ १३ ॥ ज्वाला मालिनी वर विद्यायें टालीयुं, एम विविध चक्रीविद्यानां शस्त्र ॥ नृप साहस धरी उलट विद्या फरी, मूकीनें वार तो तेह श्रस्त्र ॥ चं० ॥ १४ ॥ ऊपजमां सफल नवि बीज वाव्युं होये, तेम नृपति उपरें निःफल हुश्रां ॥ भुजपराक्रम घणुं ज्वालामालिनी तणुं, योगिणीबल भिन्न भिन्न जूश्रां ॥ चं० ॥ १५ ॥ श्रौषधिबल कामाक्षा तणुं सबल बल, ते कहो केणीपरें हार पामे ॥ खेद लही चक्रि वही चिंतवे एणीपरें, जीतीयें केम ए शत्रु वामें ॥ चं० ॥ १६ ॥ एह श्रलक्ष्य श्रध्यक्षपणे देखीयें, नारिरूपें पराक्रमथी इंद्र ॥ एहनें काज शुं राज्यमें श्ररजिउं, कीडी संचित तित्तरखविंद ॥ चं० ॥ १७ ॥ श्रहव संकल्प विकल्प स्यो एहवो, सुभट माहरे ठे श्रराध्य ॥ युद्ध करी श्रम धरीनें पठे मारशुं, एहथी कार्य थाशे सुसाध्य ॥ चं०॥ १८ ॥ चक्रधर शक्र विक्रम रथें बेसीनें, नृप उपर बहु बाण वरसे ॥ नृप श्रनूप शर मूकी उपद्रव करे, व्रणित करे चक्रीनुं श्रंग हरषें ॥ चं० ॥ १९ ॥ सुभट कर करें रुधिर श्रंगें फरें, करी पराक्रम दीये नृप माथे ॥ नयणमींची वयण बंधे मूर्छा लह्यो,सैन्यमांहि हाहाकार साथें ॥चं०॥ ॥ २० ॥ मारीयो धारीयो चित्तमां चक्रीयें, मोद लह्यो उठयो फरी घात करवा ॥ ताम भूपाल तेणें ताल चेतन लही, उठीयो चक्री जमगेह धरवा ॥ चं० ॥ २१ ॥ दीध कामाक्षायें लीध वज्र भेद कर, मूकीयो चक्रिशिर तेणे घाय ॥ लहीय मूर्छा श्रतुच्छा पडयो धरतीयें, छिन्न ठद वज्रेंजेम शिखरी थाय ॥ चं० ॥ २२ ॥ नागपाशें जडयो सुदृढबंधे पडयो, लेइ ते नवि शके श्वा

सोल्लास ॥ सुनट निषेधतो बाणथी बांधतो,ग्रहण नवि करण दीये नृप ता स ॥ चं० ॥ १३ ॥ शरण करी मरणनुं रणथी विरमे नहीं, निजतणुं सैन्य ते साथ लडतुं ॥ मोहनी मूकतो अवसर न चूकतो,परस्परें अथडाइ नूमि पडतो ॥चं०॥ २४॥ तेहनें मारता नृपति वारता, अग्नि बूजे किश्युं धूम कूटे ॥ कंठगत प्राण तस त्राण नृपति करे, हृदयथी करुणता नृपति तूटे ॥चं०॥ ॥२५॥ नृपति आकर्षिणी ऊटीति चक्रीप्रतें, खेचीनें पवननें सोंपी दीधो ॥ नृपति सैन्ये घणो तृपति आनंद पणो, सुर असुरें जय जय शब्द कीधो ॥चं०॥२६॥ आठमा खंममां रंग अखंममां, ढाल चोवीशमी पूर्ण कीधी ॥ पद्मविजयें नली नविजनें सांनली, श्रीजयानंदनी हुइ सिद्धि ॥ एक छत्री थइ राजरूद्धि ॥ जगतमां जश कीरति प्रसीद्धि ॥ पुण्यवंता लहे नवे निधि ॥ चं०॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७११ ॥ इतिपंमित प्रवर श्रीपद्मविजय गणि वि रचिते श्रीश्रीजयानंदराजर्षिकेवलीरासके खेचरेंद्र श्रीश्रीजयानंदनृपति यु द्धाधिकारे सप्तमदिनयुद्ध युद्धाधिकार समाप्त॥

॥ दोहा ॥

॥ फूलवृष्टि नृप उपरें, देवें कीधी ताम ॥ देव डुंडुनि आकाशमां, वाजे अति अनिराम ॥ १ ॥ वाजां चिहुंदिशें वाजीयां,हूठ ते जयजय कार ॥ मो द न माये अंगमां, श्रीजयानंद कुमार ॥ २ ॥ चक्रायुद्ध नररायनुं, निर्नायक थयुं सैन्य ॥ नयनें खेद विव्हल घणुं,अतिशय करतुं दैन्य ॥३॥ रथीने अ तिरथी सैन्यमां, कोडघो गमेठे जोय ॥ नाथ विना सहु रांकडा,खेदनें नय लहे तोय ॥ ४ ॥ राहु ग्रहे अथ आथमें, जब ग्रहपति दिन राज ॥ पण उद्योत न ग्रह करे, दिवस संबंधि आज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कोडी सोनैये कातिदी मारा वाला जीरे ॥
करनारो नहीं कोय, जइनें कहेजो माहारा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंद आणायकी, साजनीया जीरे, पवनवेग खगराय ॥ सुख मां रहेजो साजनीआ जीरे ॥ चक्रीचमू जे नाशती ॥ सा० ॥ तस आशात ना दाय ॥ सु०॥१ ॥ नासो मां नय मत करो ॥सा०॥ तुम अम स्वामी बे एक ॥ सु० ॥ श्रीजयानंद नरराजीयो ॥सा०॥ ते अंगीकरो छेक ॥सु०॥२॥ निज निजराज्यनें नोगवो सा० ॥ तुम स्वामी पण एह सु०॥ नतवत्सल बे मूकशे ॥सा०॥ करुणा केरो ए गेह ॥सु०॥३॥ पवननी वात सुणी करी सा०॥

श्रीजयनें करे नाथ सु० ॥ सैन्य खेचर चक्री तणुं सा० ॥ निर्नय रहे सहु साथ सु० ॥४॥ निगडवज्रपंजर दीयो सा० ॥ ज्वालामालिनी जेह सु० ॥ जडीयो निगडें चक्रीनें ॥सा०॥ पंजरमां ठव्यो तेह सु०॥ ५ ॥ औषधि नीरे सङ्ग करे सा० ॥ ठोडे वली नागपाश सु० ॥ गारुडविद्यायें करी ॥ सा० करुणानिधिनो आवास सु० ॥६॥ बंधन बीजा नट तणां सा० ॥ ठोडे सवेनां राय सु० ॥ औषधी नीरें सङ्घ कथा सा० ॥ स्वपर विनाग न कांय सु० ॥ ७ ॥ सर्व सैन्य प्रणम्यु हवे सा० ॥ मागध व्रजगुण ग्राम सु०॥ बिरुदावली बोली जते सा० ॥ जयजयरव गम गम सु० ॥ ८ ॥ आसन्न सेवक पांचशें सा० ॥ स्त्रीरूपें परिवार सु० ॥ वाजित्रनाद सुणीजते सा० ॥खेटचक्रीरथें धार सु० ॥ ए ॥ गज बेशीने आवीयो सा० ॥ निज उतारे आवास सु० ॥ गायन गाये गीतनें सा०॥ विविधप्रकार विलास सु० ॥ १० ॥ खेचरनृप विसर्जिया सा० ॥ उतारे गया सर्व सु० ॥ राय करावे चक्रीनें सा० ॥ नोजन ठांमीनें गर्व सु० ॥ ११ ॥ स्नान पूजा जिननी करी सा०॥ सैन्यशुं नोजन कीध सु० ॥ विविध मंगल उत्सवपकी सा० ॥ दान वंछित बहु दीध सु० ॥ १२ ॥ दिवस राति बोली गया सा० वाज्यां मंगल तूर सु० ॥ सिंहासन बेठा तदा सा० ॥ श्रीजय पवनादिक नूर सु० ॥ १३ ॥ चक्रसुंदरी एणे अवसरे, राजनीया जीरे ॥ बीनवे करी मनोहार सु० ॥ मुको महारा तातने रा० ॥ हृदयें करुणा अवधार सु० ॥ १४ ॥ मुकीशुं नृपति कहे रा० ॥ मोकली खेचर ताम सु० ॥ वज्रपंजर मंगावीयुं रा० ॥ आव्या खेचर स्वामि सु० ॥ १५ ॥ श्रीजय कहे चक्री सुणो रा० ॥ मौलि कंकण तेह सु० ॥ इट नामांकित लावीयें रा० ॥ सहु नृप साखथी एह सु० ॥ १६ ॥ पवन जामातानें सुता रा०॥ पहेरे तुम थरी आण सु०॥ जो नवि पहीया होय तो रा० ॥ पडो हवे समरथ जाण सु० ॥ १७ ॥ पंजरमां पण ठो बिल्लु रा० ॥ उतावल नथी कांय सु० ॥ बंधथी मारवो सोहिलो रा० ॥ पण नवि मारुं ते राय सु० ॥ १८ ॥ ते तुजपुत्री वचनथी रा० ॥ समरथ हुं पण मुज सु० ॥ दया नाव चित्तमां वस्यो सा०॥तेणे नवि मारुं हुं तुज सु० ॥ १९ ॥ आठमा खंममांहे कही रा० ॥ पंचीशमी वर ढाल सु० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी रा० ॥ होवे मंगल माल ॥सु०॥२०॥७३६॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप वचन चक्री सुणी, हैयडे फुःख न माय ॥ वज्रपात रणमां थकी, मरम वचन फुःख दाय ॥ १ ॥ रोवे चक्री फुःख थकी, पवनवेग ते देखी ॥ चित्तमां करुणा आणीनें, बोले एम सुविशेष ॥ २ ॥ मत रोवो बहु कालना, तुमे अमचा गे स्वामि ॥ दयावंत नृप वीनवी, मूकावुं हुं आम ॥ ३ ॥ मुकावण प्रयोजन नही,चक्री कहे सुणो वात ॥ जगजीवां में जोगव्यो, सुचिर काल विख्यात ॥४॥ सुरनर साखे बांधियो, नारि मात्रें मुक्त ॥ एह पराजव नवि खमी, शकीयें कहुं हुं युक्त ॥५ ॥ वीरनें मरण रुडुं कह्युं, जसके स्वर्गनो गार ॥ नविबंधन विटंबणा, वली फुर्जन धिक्कार ॥ ६ ॥ साचो सेवक होय तो, खडग आपो मुज हाथ ॥ बंध मोक्ष करुं करथकी, निज मस्तकनें साथ ॥ ७ ॥ पवनवेग निश्चल लही, चक्री मरणनी वात ॥ कहे तुमे जाण पुरुष थइ, केम कहो ए अवदात ॥ ॥ ८ ॥ तुमनें नारे न बांधीया, श्रीजयानंद कुमार ॥ सर्व विद्या निधि एह गे, देवीदत्तवर सार॥ ए॥

॥ ढाल उवीशमी ॥ तुम्हेतो जलें बिराजोजी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमेंतो जलें बिराजोजी, विद्याधरके चक्री तुमें तो जलें बिराजोजी॥ मान मरदियुं योगिणी केरुं, सर्वविद्या आवास ॥ गुण समुदाय ते नारिमां केम, होवे तेह विमास ॥ तु० ॥ १ ॥ महाज्वालानें कामाक्षा वली, वर ते एहनें नाम ॥ वज्रमुखादिक देव ते जीत्या, विक्रम तेजनुं धाम ॥तु०॥ ॥ २॥ अंगना रूप करीनें जीत्यो, ते तुम जणववा हेत ॥ खेद करो मत नारियें बांध्यो, मनमां धरी संकेत ॥ तु० ॥ ३ ॥ एह वचन अमृत उटकावे, कांइक पाम्यो शांति ॥ पवनवेग कहे कर्म तणो इहां, वांक अछे एकांत ॥ तु० ॥ ४ ॥ गर्व अगनियें बाली नाख्यो, फूल्यो रुख विवेक ॥जगत विख्यात ए तुम मंत्रीश्वरें, समजाव्या अतिरेक ॥ तु० ॥ ५ ॥ स्त्री रूपें तुम जशकर जीत्युं, तोही न समज्या कांय ॥ पूर्वें स्वामि धरी में कहेवराव्युं, सेवक रीति कराय ॥ तु० ॥ ६ ॥ पंमित सुंदरधान मोकल्या, दीधो बहु उपदेश ॥ ते अमृतथी गर्वहुताशन, नवि शमियो लवलेश ॥ तु० ॥ ॥ ७ ॥ सामान्य जन पण दास नामांकित, सही न शके तो एह॥ वीर पुरुष निज पत्नी पराजव, खमी शके कहो केह ॥ तु० ॥ ८ ॥ नारिबांध्यो

अपयश देवा, कीधुं नारि सरूप ॥ तेणे तुमें कोप अमर्ष गर्वादिक, दोष
नांमो प्रति रूप ॥तु०॥ ए ॥ मस्तक एहनी आण धरो तुमें, जेम मूके तुम
राय ॥ अनन्यगतिक ए वात सुणी तस, आण धरे शिर राय ॥तु०॥ १० ॥
पवनवेग जइ राय वीनवे, कीजें कृपा दयाल ॥ शौर्यादिक गुण जेम देखा
ड्या, रूप दाखो नूपाल ॥ तु० ॥ ११ ॥ टलवले सहु तुम रूप जोवानें,
मुंजवो केटलो काल ॥ बहु विद्याधर पण एम वीनवे, अंजलि करी निज भा
ल ॥ तु० ॥ १२ ॥ रूप स्वनावनुं परगट कीधुं, पांचशें सुनटनुं तेम ॥ जो
वा मली तव सुनटनी कोडघो, हर्ष आश्चर्य धरी प्रेम ॥ तु० ॥ १३ ॥ तूर
प्रमोदनां वाजां सघले, मंगल पाठ बोलाय ॥ चक्रसुंदरी तत्त्वनो निर्णय,
करती देखी राय ॥ तु० ॥ १४ ॥ पवनवेगादिक खेटक रायनी, प्रारथनायें
नूप ॥ विद्यायें पंजर नेदीनें, निगड नेदे करी चूप ॥ तु० ॥ १५ ॥ मह्रोटा
पुरुषनें अति विडंबन, अपराधि पण तोय ॥ करवुं न घटे एम विचारी, मू
क्यो चक्री सोय ॥ तु० ॥ १६ ॥ चक्रि नूपरूप देखीनें, हियडे हर्ष न मा
य ॥ वीसरी गयो ते सर्व पराजय, अचरिज अतिशय थाय ॥ तु० ॥१७॥
चक्रीनें सिंहासन बेसाडे, पवनवेगादिक राय ॥ खेटेश्वर सघला आवीनें,
प्रणमे चक्री पाय ॥ तु० ॥ १८ ॥ निज स्वामी मूकाणा जाणी, सैन्यनें
हर्ष अपार ॥ चक्रवेगादिक सुत चक्रीना, जे बांध्या तेणी वार ॥तु०॥१९॥
बीजा पण सहसो गमे बांध्या, मूक्या तेडी तेह ॥ नागपाश ते छोडी ना
ख्या, सह्रू कथा बली जेह ॥ तु० ॥ २० ॥ नूप चक्रीनें प्रणमे सघला,
चक्री आणंद थाय ॥ सकल लोक मन अचरिज हूउं, मंगल तूर बजा
य ॥ तु० ॥ २१ ॥ आठमे खंमें छवीशमी ए, पद्मविजयें कही ढाल ॥ श्री
जयानंदना रासमां रूडी, सुणतां मंगलमाल ॥तु०॥२२॥सर्वगाथा॥७६७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तेडी चक्रसुंदरी,सोंपे चक्रीनें राय ॥ यो निज इछा दोय तिहां,
माहरे अर्थ न कांय ॥१॥ में तो कौतुक मात्रथी,कीधो एह प्रकार ॥ चक्र
सुंदरी निज तातनें, प्रणमी कहे विचार ॥ २ ॥ इछायें वर में वरी, तुमनें
आपद दीध ॥ पापहेतु निज छोरुनो, खमो अपराध जे कीध ॥ ३ ॥
चक्रीकहे ताहरो नथी, इहां अपराध लगार ॥ प्रतिपद चंइधेनु परें, तें
उजवाल्यां नरतार ॥ ४ ॥ माहरी कन्या नृपतणी, वरे स्वयंवर सार ॥ विश्वो

सम गुणि आश्रयो, तुज गुणनो नही पार ॥ ५ ॥ गर्व दोष मांहरें करी पाम्यो आपद एह ॥ तुज प्रारथनाथी मनें, जीवतो मूक्यो जेह ॥ ६ ॥ तेणें सहु सुखकारी थयुं, साधु वखो नरतार ॥ आणंद लह्यो ए वातमां, न करो कांइ विचार ॥ ७ ॥

॥ढाल सत्तावीशमी॥ बावा किसनपुरी, तुमविना मढीयां उजड पडी ॥ए देशी॥

॥ वात सुधाथी ताप गमाय, पुत्रीनें हवे चक्रधर राय ॥ मनहरष न माय, मन्नियाजी नलें रे तुमें अहोजी अहो ॥ ए आंकणी ॥ दासी परिवृत मो कले गेह, निज मातानें मली ससनेह ॥ मनह० ॥ १ ॥ श्याम वदन करी नीचुं जोय, चक्री चिंतातुर बहु होय ॥ म० ॥ रे खगराय तुमें मम करो खेद, श्रीजय कहे सुणो तेहनो नेद ॥म० ॥ २ ॥ तुमें उत्तम नरमां शिरदार, जय तो थयो काकताली प्रकार ॥ म० ॥ तुम सम सुनट न जगमां होय, सुर नर मांहे जोतां कोय ॥ म० ॥ ३ ॥ दिव्यबल हुं मुजशुं संग्राम, एटलो काल काढ्यो तुमें आम ॥ म० ॥ एकले विद्याबलथी न कांय, जय पराजय तो कर्मथी थाय ॥ म० ॥ ४ ॥ जय अन्युदय लानादिक नाव, पुण्य प्रकृष्ट ना ए परनाव ॥ म० ॥ तप करतां कणिम करी कांय, तेणें पराजय पण एणी परें थाय ॥ म० ॥ ५ ॥ हेममां जडे अथवा वींधाय, मणि पण पथरनें नहीं कांय ॥ म० ॥ जय पराजय तेम शूरनें थाय ॥ कायर तो मनमां मुंजाय ॥ म० ॥ ६ ॥ एकवार हास्यो पण वीर, वीरपणुं नवि जाय सुधीर ॥म०॥ फाल चूक्यो हरि एकज वार, पण मारे गजवरनां वार ॥म०॥ ॥ ७ ॥ सुरवरें मथियो सायर तोय, सागर कणिमता नवि होय ॥ म० ॥ ग्रहित मूकाणो जे वली सूर, पण ग्रहगणनो हरतो नूर ॥ म० ॥ ८ ॥ अमावास्या लोपाए चंद, पुष्ट करे अमृतें सुरवृंद ॥ म० ॥ गोधूम रेखा स हित पीडाण, पण सहु कणथी शिरोमणि जाण ॥ म० ॥ ए ॥ पत्तीयां वैडूर्य न होये काच, हंस मलिन केम कागनी वाच ॥ म० ॥ गोत्रमां च क्र न घाले कोय, पण परनो संहार करे सोय ॥ म० ॥ १० ॥ अगनिनुं जोर न जलमां थाय, पण सहुथी तेजवंत कहाय ॥ म० ॥ महादेव लिंग छेद्युं पण लोक, आराधे जन थोकें थोक ॥ म० ॥ ११ ॥ इंद्रणुं नवि जाये सार, जो पण हुआं नग हजार ॥ म० ॥ रथ जोडे कवि हरि नें नार, दैत्यनें मारे हरि निरधार ॥ म० ॥ १२ ॥ महादेवें बाल्यो जे का

म, पण जग जीते ए अचरिज गाम ॥ म० ॥ जाइयें लीध्यो नरतज्ञ राय, पण चक्रवर्त्तिपणुं नवि जाय ॥ म० ॥ १३ ॥ खेद तजो तुमें महोटा राय, राज्य जोगवो निज जइ घिर थाय ॥ म० ॥ कोइक कर्म थयो संग्राम, आपणे पण एक सांजलो आम ॥ म० ॥ १४ ॥ मुज मन वाधे अधिको नेह, तुम देखी भ्राता परें एह ॥ म० ॥ तेणें पूरवनव जाणुं एम, मित्र थं हो ज्ञानी लहे नेम ॥ म० ॥ १५ ॥ खेद पमाड्यो रणमां तुम्ह, ते अपराध खमो तुम्हें अम्ह ॥ म० ॥ श्रीजपवचनें खेद पलाय, खेटचक्री कहे सांजलो राय ॥ म० ॥ १६ ॥ निपजावी विधियें तुम एक, मूर्त्ति गुणवंती सुविवेक ॥म०॥ शूरपणुं ने पर उपकार,सज्जनता नय धर्म विचार ॥म०॥ ॥ १७ ॥ समरथ गुण स्तवचा नहीं इंद,तुमें तो महोटा महाराजेंद्र ॥म०॥ क्रोध अज्ञान अने अनिमान, हुंतो परवश खूतो निदान ॥ म० ॥ १८ ॥ पंमित पवनना ने परधान. शिक्षा दीधी मुज असमान ॥ म०॥ पण मद अंध हाथीपरें तेह, अंकुश नवि मानी में रेह ॥ म० ॥ १९ ॥ गुणवंता तुमें मानवा योग्य, में अपमान्या कर्म संयोग ॥ म० ॥ तुम अपराध न ते एम रेप, मुज अपराध खमो सुविशेष ॥ म० ॥ २० ॥ शलन पोतें वसे दीपें जेह, दीवानो अपराध न तेह ॥ म० ॥ समरथनें वली तुं लघु बाल, रणमां मार्यो न तें तेणे ताल ॥ म० ॥ २१ ॥ दयापरम ताहारो अद्भुत, अपराधी उपर ए आकूत ॥ म० ॥ तुज उपर आवे मुज स्नेह, निश्चय परनव मैत्री सनेह ॥ म० ॥ २२ ॥ सत्तावीशमी जाखी ढाल, आगमा खंममांहे सुरसाल ॥ म० ॥ गुणिजन मलिया गुण बहु थाय, पद्म कहे सहु खटपट जाय ॥ म० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुज उपर सुप्रसन्न थइ, मुज पुर करो पवित्र ॥ प्रार्थना नंग नीरू तुमें, तुम्ह अदन्नुत चरित्र ॥ १ ॥ कुमरें मानी विनती, हवे खेचर नरराय ॥ सैन्य सहित पुरमां जइ, शणगारे चित्त लाय ॥ २ ॥ माणिक थंननी श्रेणिमां, पंचाली शुन रूप ॥ चामर श्रेणी वींजती, रंजानें अनुरूप ॥३॥ फरके ध्वजा तिहां चिहुं दिशें, घर घर तोरण माल ॥ मंचाश्रेणि ते मांमिया, राज्य पंथें सुविशाल ॥४॥ गीत गान गोरी करे,वाजित्र ध्वनि संगीत॥मंच उल्लोचें सोहतां,मुक्ता गुछ पवित्त ॥५॥ चंदन जलथी खेचरा, पंथ करे उरकाव ॥ वस्त्र

हेम मणि प्रमुखथी,हाट शणगारे साव ॥ ६ ॥ मणि मोतीना पूरीया, स्
स्तिक घर घर बार ॥ धूपघटी बहु महमहे, विविध सुगंध इव्य सार ॥ ७
फूल बिछाया पंथमें, थंजे फूलनी माल ॥ नगर सुगंधमयी थयुं, विस्तथ
गगन विशाल ॥ ८ ॥ हवे नररायनें तेडवा, खगपति लेइ परिवार ॥ विन
आवी पधारीयें, लेइ परिवार सुसार ॥ ए ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ वलद नला छे शोरठी रे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति मानी विनती रे लो, सायें विद्याधर केइ कोडि रे सोनागी
वयरीना मद सवि मोडि रे सो० ॥ कोण आवे एहनी तोडि रे सो० ॥
हनी नहीं जगमां जोडी रे सो० ॥ कोण करशे एहनी होडि रे सो० ॥ १
जय जय नणे नर नारी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ श्वेतगजेंइ उपर चढ्यो
लो, अहिरावण शिर जेम इंद रे सो० ॥ छत्र मिष सेवायें आव्यो चंद
सो० ॥ वींजे चामर खेचरी वृंद रे सो० ॥ खीर सायर ऊर्मि अमंद
सो० ॥ चामर मिष सेवे नरिंद रे सो० ॥ ज०॥ २ ॥ कोडगमे तूर वा
ते रे लो, जशनी परें व्याप्युं आकाश रे सो० ॥ गायन स्तवे गुण सुवि
लास रे सो०॥ बंदीबिरुदावली बोले तास रे सो०॥ गाये धवल मंगल स्त्री
रास रे सो० ॥ थाये नाटक पग पग खास रे सो० ॥ ज० ॥ ३ ॥ खेच
बहु गगनें चले रे लो, मानुं स्वर्गनें पृथिवी एक रे सो० ॥ कल्पवृक्षनी
रें धरी टेक रे सो०॥ जाचकने दान अनेक रे ॥सो०॥ एतो धनद कहायो
क रे ॥सो०॥ धरतो अतिशय सुविवेक रे सो०॥ज०॥४॥ चामर छत्रशुं गज च
ढ्यो रे लो, विद्याधर चक्रीराय रे सो०॥ तेतो परवर्यो छे जुवराय रे सो०॥ म
णिमोतीना समुदाय रे सो० ॥ विद्याधरी वृंद वधाय रे सो० ॥ लुंछणा हेम
वस्त्र कराय रे सो०॥ज०॥५॥ अद्भूत रूप शोना धरे रे लो,पहिरया दिव्य
वस्त्र अलंकार रे सो० ॥ राज्यपंथ उलंघी उदार रे ॥ सो० ॥ आव्या च
क्रीनें घरबार रे सो० ॥ उतरे गजवरथी तिवार रे सो० ॥ चक्री करालं
बन धार रे सो० ॥ ज० ॥ ६ ॥ स्फटिक निति कोइ स्थानकें रे लो, क
हीं वैडूर्यमणिंइो भ्रांति रे सो० ॥ पद्मराग कुट्टिम वन्हिकांति रे सो०॥ मर
कत्त बंध करी नूपांति रे सो०॥ नरपति जोतो मनखांत रे सो० ॥ पेंठा च
क्रीनें शांत रे सो० ॥ ज० ॥ ७ ॥ सना सौधर्म सना समी रेलो, मणि
सिंहासनें नृप ठाय रे सो० ॥ पासें सिंहासनें खेटराय रे सो० ॥ रवि चंद

परें सोहाय रे सो० ॥ मल्या खेचरना समवाय रे सो० ॥ निज पर वि नाग न जणाय रे सो०॥ ज० ॥ ८ ॥ सौधर्म ईशानेंद्र परें रेलो. प्रणमे स हु तस पाय रे सो० ॥ हवे केइ विद्याधर राय रे सो० ॥ वैताढ्यमां व स्तु जे थाय रे सो० ॥ सार सार ते नेटणुं लाय रे सो० ॥ हय गय पत्ति समुदाय रे सो० ॥ ज० ॥ ए ॥ वस्त्र शस्त्र बहु मूलनां रे लो, नेटणां मूके ताम रे सो० ॥ आदर दीये तस अनिराम रे सो० ॥ विसर्ज्या ते जाये निज गाम रे सो० ॥ नृपना करता गुणग्राम रे सो० ॥ अतिशय आनंद मन पाम रे सो० ॥ ज० ॥ १० ॥ स्नानादिक किरिया करे रे लो,चक्री व चणें नृपाल रे सो० ॥ चक्री सेवा करे सुरसाल रे सो०॥ चक्री प्रार्थना क रे तिण ताल रे सो० ॥ चक्रसुंदरी दिये निज बाल रे सो० ॥ मनवंछित फल्यां ततकाल रे सो० ॥ ज०॥ ११ ॥ पूर्ववचन संनारतां रे लो, नोगर त्यादिक बत्रीश रे सो०॥ निज कन्या थटत जगीश रे सो०॥ पाणिग्रहण मानें नरईश रे सो० ॥ बीजा खेचर जेह अधीश रे सो० ॥ चित्त धारी वि श्वावीश रे सो० ॥ ज० ॥ १२ ॥ निज निज कन्या आपता रेलो,आठ अधि क मली हजार रे सो०॥ तेतो रूपें रति अनुहार रे सो०॥ तेडयो ज्योतिषी ज्ञान उदार रे सो० ॥ दिये लगन उत्तम मनोहार रे सो० ॥ शुक्लपक्षनें शुन तिथिवार रे सो० ॥ ज० ॥ १३ ॥ ग्रहबल जोइ आपियुं रेलो, देइ निमित्ति आनें दान रे सो० ॥ वली आदरनें बहुमान रे सो० ॥ निजनगरें जइ सा मान रे सो० ॥ करी आव्या सहु तेणें थान रे सो० ॥ चक्रीनें हर्ष अमान रे सो० ॥ ज० ॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण श्रीजय करे रेलो.करमोचन वेला दी ध रे सो० ॥ हय गय रथ पत्ति प्रसिद्ध रे सो० ॥ बहु आनूषण समृद्ध रे सो० ॥ मानुं स्वर्गथी मोलें लिद्ध रे सो० ॥ सहु खेटराय दीये निद्ध रे सो० ॥ ज०॥ १५ ॥ सुख विलसे मणिसौधमां रे लो,रमे पत्नीशुं नृप देव रे सो० जेम देवांगनाशुं देव रे सो० ॥ करे चक्री अहर्निश सेव रे सो० ॥ एहने पर उपकारनी टेव रे सो० ॥ तेहथी पाम्यो ऋद्धि स्वयमेव रे सो० ॥ज०॥१६॥ श्रीविजयसिंह सूरीसरू रे लो, तेहना सत्यविजय पन्यास रे सो०॥ शिष्य क पूरविजय तस खास रे सो० ॥ जेहनुं जग नाम प्रकाश रे सो० ॥ तस खि मा विजय शुनवास रे सो०॥ तेतो क्षमा तणो आवास रे सो०॥ज०॥१७॥ जिनविजय वर तेहना रेलो, तस पंमितप्रवर प्रधान रे सो० ॥ श्रीउत्तमवि

जय अनिधान रे सो० ॥ तेहनो नाम परिणाम समान रे सो०॥ जेहनुं चित्त ज्ञानने ध्यान रे सो० ॥ किरिया करता अनिदान रे सो० ॥ ज०॥१७॥ आठमा खंममांहे कही रेजो, ए अठावीशमी ढाल रे सो० ॥ खंम पूरण थयो सुरसाल रे सो०॥ श्रीउत्तमविजयनो बाल रे सो० ॥ कहे पद्मविजय सुविशाल रे सो० ॥ सुणतां होये मंगलमाल रे सो०॥ज०॥१८॥८२५॥

॥ इतिश्रीमदुत्तमविजयगणि विनेय पंमित पद्मविजयगणि विरिचिते श्री श्रीजयानंदमहाराजाधिराजकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे चक्रायुधविद्याधर चक्रवर्त्तिजय चक्रसुंदर्यादि बहुसहस्रकन्यापाणिग्रहणादि पुण्यफलप्रकटनानु नवनादि विवर्णनोनामा अष्टमो खंमः समाप्तः सप्तम खंमे गाथा ॥४२१५॥ अष्टमखंमे गाथा ॥ ८२५ ॥ सर्वगाथा ॥ ५०६० ॥ सप्त खंमे उक्त श्लोक ॥ ८० ॥ अष्टमखंमे वक्तश्लोक ॥ ५ ॥ सर्वे उक्त श्लोक ॥ ८५ ॥ सवैयो एक,समस्या एक, दोहा बे ॥ इत्यष्टम खंमः समाप्तः ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमखंमः प्रारन्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ प्रनु शोलमा,स्वर्णकाय सुखदाय ॥ मनमां वसतां आपदा, पन्नग दूर पलाय ॥ १ ॥ पुरुषादाणी पासजी,जे टाले नवपास ॥ इह नव पण नवि जीवनी, वंछित पूरे आश ॥ २ ॥ वचन सरस सरसति दीये, गुणगुरु गुरु श्रुत दाय ॥ दीक्षा विद्या गुरु नमुं, नवतारण सुसहाय ॥ ३ ॥ आठ खंम एणी परें कह्या, नवलो नवमो खंम ॥ नवरसमय हुं वर्णवुं, सांजलो तेह अखंम ॥ ४ ॥ सांनलतां जे उंघशे, विकथा करशे जेह ॥ संमूर्छिम परें हारशे, धर्म अर्थ वली तेह ॥ ५ ॥ अधवच उठी मत जशो,मत हुलरावो बाल ॥ आकुं अवलुं मत जूउ, जो सुणो वयण रसाल ॥ ६ ॥ वदन प्रसन्न करी सांनले, समजे रहस्यनी वात ॥ पूर्वापर सवि मेलवे, श्रोता ते कहेवात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ घोडी ते आइ थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन बेठा सना करी राजनजी, चक्रीप्रमुख परिवारहो सुणो ध र्मस्नेही प्राणिया राजनजी ॥ वनपालक नूपालनें रा०॥ कहे विनती अव

धार हो सुणो० ॥ १ ॥ तात खेचर चक्री तणा रा० ॥ पाछ धाख्या उद्या न हो सु० ॥ बहुपरिवारें परवख्या रा०॥ चक्रवल अनिधान हो सु० ॥२॥ सांजली नृपति हरखिया रा० ॥ आनंद अंग न माय हो सु० ॥ हर्षदान दीये तेहनें रा०॥ शासन उन्नति थाय हो सु०॥ ३ ॥ पूर्वे अति वैरागीया रा० ॥ पाम्या परानव जेण हो सु०॥ गुरु आगमन सुणी तदा रा० ॥ शकरा पयना एण हो सु०॥ ४ ॥ हर्षथी नृपनें खगपति रा० ॥ अंतेवर प परिवार हो सु०॥ कोडथी गमे खग परिवख्या रा० ॥ गज वेसी छत्रधार हो सु० ॥ ५ ॥ सूरि वांदवा नीकल्या रा० ॥ अनुक्रमें पोहोता उद्यान हो सु० ॥ पंचानिगम ते साचवी रा० ॥ त्रण प्रदक्षिणादान हो सु० ॥ ६ ॥ वंदे गुरुनें विधिपकी रा० ॥ गुरु पण दीये धर्मलान हो सु० ॥ वेगा सुणवा धर्मनें रा० ॥ उचित थानक उत्साह हो सु०॥ ७॥ धर्मदेशना गुरु दीये रा० ॥ जैनधर्म जगतार हो सु० ॥ आपे त्रिभुवन संपदा रा० ॥ त्रण जगत आधार हो सु० ॥ ८ ॥ सुख अर्थी सवि प्राणिया रा० ॥ पण सुख दोय प्रकार हो सु०॥ अक्षय सुख पहेलुं कह्युं रा० ॥ निरुपाधिक अविकार हो सु०॥ ९ ॥ विषयादिकथी उपनुं रा०॥ वीजुं सुखडुःख रूप हो सु० ॥ उल्लख्युं जिनशासन जेणें रा० ॥ ते न पडे नवकूप हो सु० ॥१०॥ प्रथमज सुख अंगीकरे रा० ॥ विषयथी चिहुं गति डुःख हो सु० ॥ शीत ताप ज्वर कंमूनां रा० ॥ नरकमां डुःख वली नूख हो सु० ॥ ११ ॥ डुर्गंध फरस कठिन घणो रा० ॥ सुरकृत बहु संताप हो सु० ॥ ते डुःखथी वीहे नही रा० ॥ विषय अर्थे करे पाप हो सु० ॥१२॥ त्राडननें वहेवरावबुं रा० ॥ अहोनिशि तापनें शीत हो सु०॥ नूख तरषनें वायरा रा०॥ डुःख सहे तिर्यंच नित्य हो सु० ॥१३ ॥ निज परजातिनो नय घणो रा० ॥ परवशपणुं असराल हो सु०॥ खमीया नें खमशे वली रा०॥ डुःख पण वीहे न बाल हो सु० ॥१४ ॥ ईर्ष्या परानव निवलनें रा० ॥ देखी वली गर्भावास हो सु० ॥ ते डुःखथी लाजे घणो रा० ॥ शुं सुख देव आवास हो सु० ॥ १५ ॥ इष्ट वियोग अनिष्टनो रा० ॥ पामे वली संयोग हो सु० ॥ साते नय वली मनुजमां रा० ॥ कुपुत्रनें वली रोग हो सु० ॥ १६ ॥ विरलता मानव नवतणी रा० ॥ कहेतां नावे पार हो सु० ॥ तरस करे धर्म आदरी रा० ॥ धन्य तेहनो अवतार हो सु० ॥ १७॥ महा परानव शत्रुथ

की रा० ॥ पुत्र कलत्र अविश्वास हो सु० ॥ मरणनीक अति आ
रा० ॥ वली दुर्ध्यान अभ्यास हो सु० ॥ १८ ॥ परिग्रह आरंभ
करे रा० ॥ पाप करी अति घोर हो सु० ॥ मरण लहीनें परनवें रा
दुःख खमे अति जोर हो सु० ॥१९॥ वलीय कषाय उदीरता रा०॥
लता राक्षस तेह हो सु० ॥ पूरव पुण्य खाली करे रा० ॥ विषय वेत
वली जेह हो सु० ॥ २०॥ नाश करे विवेकनो रा० ॥ राज्य ते नरकनुं
य हो सु० ॥ माचे राज्यमां पण नही रा० ॥ दुःखदायक कोइ थाय
सु० ॥ २१ ॥ राज्यें मरण न राखीयुं रा०॥ रोगनें नय विध्वंस हो सु
न कस्यो तो मद राज्यनो रा० ॥ करतां होय गुणभ्रंश हो सु० ॥२२ ॥
ज्यमां धर्म न करी शके रा० ॥ राज्यमां बहु जंजाल हो सु० ॥ पुत्र कल
राहु सारथी रा० ॥ लखमी अनित्य संनाल हो सु० ॥ २३ ॥ मोह
ली राजऋद्धिनो रा० ॥ धर्म करो निराबाध हो सु०॥ धर्म ते वेहु नेदें कह
रा० ॥ गृही यतिधर्म सुसाध हो सु० ॥२४॥ पोहोंचाडे स्वर्ग बारमें रा
अनुक्रमें शिवपद थाय हो सु०॥उत्कृष्टो गृही धर्म ए रा० ॥ बीजो तुर
शिव दाय हो सु० ॥२५॥ पण यतिधर्म आराधीयें रा० ॥ तुरत वी
देववास हो सु० ॥ दान पूजा गृही धर्ममां रा० ॥ श्रद्धा व्रत वली ख
हो सु० ॥ २६ ॥ आवश्यक संघ पूजना रा० ॥ ए बेहु धर्ममां एक
सु० ॥ यथाशक्ति अंगीकरो रा० ॥ अंगें धरीय विवेक हो सु० ॥ २७
नरनव पामी दोहिलो रा० ॥ कोण करे धर्ममां ढील हो सु० ॥ मरण
हीक केम गइ अत्रे रा० ॥ आधि व्याधिनी पील हो सु० ॥ २८॥ के कर
आवबुं छे नही रा० ॥ के नही दुर्गति दुःख हो सु०॥ उद्यम न करो ध
नो रा० ॥ जेहथी लहो शिवसुख हो सु० ॥ २९ ॥ नवमे खंडें ए क
रा० ॥ एहेली देशना ढाल हो सु० ॥ पद्मविजय सोहामणी रा० ॥ सु
तां मंगलमाल हो सु० ॥ ३०॥ सर्वगाथा ॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ एणी परें सांनली देशना, प्रणमे श्रीगुरु पाय ॥ कर जोडीनें बोल
श्रीजयानंदजी राय ॥ १ ॥ शक्ति नथी चारित्रनी, दुष्कर संयम नार ॥
मकेत मूल में आदस्यां,एहेलां अणुव्रत चार॥२॥ नियम महुं तुम साखथी,
पूजा अष्ट प्रकार ॥ वली गुरु योगें प्रणमीने, करशुं नित्य आहार ॥३॥

नदिनें नित्य आदरूं, ब्रह्मचर्य मनोहार ॥ आरंभ वर्जुं ते दिनें, साधर्मिक सत्कार ॥४॥ चैत्र प्रमुख अठाइयें, वर्तावुं अमार ॥ जिनप्रासादनें बिंब व ली, सहस्त्र गमे करुं सार ॥ ५ ॥ पुस्तक वली लखावशुं, जिनवर नाषित जेह ॥ संघचतुर्विध पूजशुं, विधि पूर्वक ससनेह ॥ ६ ॥ श्रावक व्रतधारी त णो, कर नवि लेशुं कोय ॥ दानादिक वली आचरुं, दीन अनाथ जे होय ॥ ७ ॥ जिनशासन परजावना, करशुं बहु प्रकार ॥ गुरु कहे राजन सांन लो, पालजो चित्त उदार ॥ ८ ॥ धर्मतत्त्वनुं रहस्य ए, पाले कर्म क्षय था य ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य जे, एहथी बहु बंधाय ॥ ए ॥ निश्चल पद आराध जो, मोक्षनां सुख होये जाव ॥ प्रणमी नरपति विनवे, अवसर पामी ता व ॥ १० ॥ एणे नव होशे के नही, नगवन चारित्र मुक्त ॥ तव गुरु कहे तुज होयशे, हरख्यो सांनली गुह्य ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ संयमथी सुख पामीयें ॥ ए देशी ॥

॥ खेचर चक्री एम नणे, विनयें वंदी पाय सुगुरुनी ॥ पाम्यो परानव संगरें, कांयक बूज्यो ताय ॥ सु० ॥ १ ॥ तुम वयणां अति मीठडां ॥ ए आंकणी ॥ तुम वयणें हवे बूजीयो, लेशुं संयम नार सु० ॥ राज्यथकी हुं विरमियो, जाण्यो असार संसार सु० ॥ तु० ॥ २ ॥ राज्य स्वस्थ करी आ वशुं, तुम पासें निरधार सु० ॥ तावत्काल रूपा करी, रहेवुं मुज उपकार सु० ॥ तु० ॥ ३ ॥ एम कही गुरुना पय नमी, केइक समकेत धार सु०॥ देशविरति केइ आदरी, आवे निज आगार सु० ॥ तु० ॥ ४ ॥ हवे विद्या धर राजियो, मंत्रीशुं करीय विचार ॥ राजनजी ॥ स्नेहथी श्रीजयानंद नें, बोलावे अति प्यार रा०॥ तु०॥ ५ ॥ राज्य तुमें वैताढ्यनुं, मुज जीती नें लीध रा० ॥ ते कारण तुमनें हवे, करुं अनिषेक प्रसिद्ध रा० ॥ तु० ॥ ॥ ६ ॥ कहे श्रीजय मुज खप नही, निज राज्यें संतोष रा० ॥ आपो नि ज सुतनें तुमें, योग्य डे ते सुविशेष रा०॥ तु० ॥ ७ ॥ दूरथकी पण तेह नी, रक्षा करशुं नित्य रा०॥ तुम परें हित धरशुं सदा, चिंता न करवी चित्त रा०॥ तु०॥८॥ खेचर पति कहे सांनलो,तुम खोले डे एह रा०॥ राज्य तो एह तुमारडुं, एहमां नहीं संदेह रा० ॥ तु० ॥ ए ॥ तुमें एहनें वली आप जो, तुम रुचि होये जेह रा० ॥ में पण एहवुं सांनल्युं, सांनलो कहिये तेह रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ जरत अर्द्धना अधिपति, तिम वैताढ्य समेत

रा० ॥ ज्ञानीयें नाख्युं में सांजल्युं,करुं अनिषेक ते हेत रा०॥ तु०॥ ११ ॥
प्रार्थना नंग न कीजीयें, थाये धर्म अंतराय रा० ॥ मौन करे तव नृप
ति, तव खेचरपति राय ॥ रा० ॥ तु० ॥ १२ ॥ थापी मणिसिंहासनें
सामग्री सवि युत रा०॥ पवनवेगादिक खेचरा, कोडयो गमे संयुत रा० ॥
तु० ॥ १३॥ राजानिषेक करे तिहां,माहा महोत्सव विस्तार रा० ॥ चक्र
वेगादिक पुत्रनें, सोंपे सेना नंमार रा० ॥ तु० ॥ १४ ॥ प्रणमे खेटचक्री
तदा, तेम सहु खेचर राय रा०॥ इंड्र रूपांतरें आवियो, तेम शोना तस
थाय रा० ॥ तु० ॥१५॥ करे अहाइ महोत्सव वली, संघनक्ति सुविशाल
रा० ॥ पडह अमारि वजावतो, मास लगें खगपाल रा० ॥ तु० ॥ १६ ॥
आठ सहस खग राजिया, राणीयो शोल हजार रा० ॥ सज्ज थयां सहु
सामटां, लेवा संयम नार रा० ॥ तु० ॥ १७ ॥ शक्र तीर्थंकरनी परें, उ
त्सव श्रीजयानंद रा० ॥ चक्रवेगादिकशुं करे, मंगल स्नान खगेंद रा० ॥
॥ तु० ॥ १८ ॥ देवदूष्य पहेरावतां, दीपता अति अलंकार रा० ॥ बेस
प्रवर विमानमां, दीक्षा उत्सुक परिवार रा० ॥ तु० ॥ १९॥ अमर छत्र
धरावता, चंड्रउज्ज्वल अनुहार रा० ॥ कोडयो सुनटशुं नरपति, चाले आ
गल तेणि वार ॥रा०॥तु०॥२०॥ विद्या धरी कोडयो गमे, बेठी चाले विमान
रा० ॥ गीत गान करती थकी, देता दीननें दान रा० ॥ तु० ॥ २१ ॥ बंदि
बिरुद बोली जते, नाटक नवनव रंग रा० ॥ देवता जय जय रव करे, हर्ष
धरी उछरंग रा० ॥ तु० ॥ २२ ॥ वाजे देवनी छुंदनि, पग पग देता दान
रा० ॥ आव्या गुरु चरणे क्रमे, नगर बाहिर उद्यान रा० ॥ तु० ॥ २३ ॥ उ
तरीया ते विमानथी, सहु साथें करे लोच रा० ॥ गुरुने एणी परें विनवे,
ठांमी मन संकोच रा० ॥ तु० ॥ २४ ॥ नव सायरथी तारीयें, गुरुपण ते
हने ताम ॥ रा० ॥ विधिपूर्वक दीक्षादीये, सहुने गुरु गुण धाम ॥ रा० ॥
॥ तु०॥ २५ ॥ वास सुगंध गुरु दीये, सुरसंघनें अनिराम रा० ॥ सहु मली
तस मस्तक ठवे, जय जयकार उदाम रा० ॥तु०॥२६॥ हित शिक्षा सवि
संघने, देशना दीये गुरुराय रा० ॥ वंदी गुरुने नरपति, वंदे चक्री ऋषिराय
रा०॥तु० ॥ २७ ॥ नवमे खंमें बीजी कही, पद्मविजय एम ढाल रा० ॥
उत्सव रंग वधामणां, घर घर मंगल माल रा० ॥ तु० ॥ २८ ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ घवायुध्नैं खमावता. नरपति निज ध्यपराध ॥ शेष मुनीश्वरने न
म्रणमे नक्ति ध्यगाध ॥ १ ॥ सहु निज निज पानक गया, गुरु विचरया
न्य ठाण ॥ घकुपरिवारें परवस्या. विविध शिक्षा दिये दाण ॥ २ ॥ श्रीज
नंद नृपति हवे, घहु विद्याधर वृंद ॥ चक्रवेग पवनादिका, सेवे हवे अम
॥ ३ ॥ वैताढ्यने ध्यन्य दीपमां, वलीवासी वली जेह ॥ ध्यन्य पर्वतन
नायीया. सेवा ध्यपे तेह ॥ ४ ॥ सेनासुं जइ तिहां कणे. लीलायें जय की
ध ॥ एम विद्याधर चक्रीनी.पदवी घइ परसिद्ध ॥५॥ सुखमां एम रहेतां थकां,
गगन वल्लन पुरमांहि ॥ काल वेतो एक काढीयो.धरता ध्यंगउछांहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल ध्रीजी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन सूतां हो राज, रयणी समयें हो राज, जंपे के जागे रे ना
वे सुरवर एणीपरें जी ॥ नृप कहे जाणुं हो राज, तव सुर बोले हो राज,
गिरिचूड नामें रे,देव हुं ध्याव्यो तुज घरे जी ॥१॥ नें प्रतिबोध्यां हो राज.
इहां ध्याव्यो हो राज, तेहनो हेतु रे.सांनल तुजनें हुं कहुं जी ॥ तापस वो
धि हो राज, श्रावक कीधा हो राज, फरी तुमें नाव्या रे, वाट जुए तुमची
सहुजी ॥ २ ॥ हेमप्रन सूरि हो राज, तेहनी वाणी हो राज, सांनली म
नमां रे. तेह घणुं वैरागीयाजी ॥ तापससुंदरी हो राज, विघननो हेतु हो
राज. दीक्षा लेया रे, सहु इष्ट चित्त जागीयाजी ॥ ३ ॥ ए प्रतिबंधे हो
राज, व्रत न लेवाये हो राज, तेणे तिहां ध्यावी रे, निजप्रिया निज पासें
करोजी ॥ विघन ते टलशे हो राज, सहु व्रत लेशे हो राज, विण ध्यपरा
धें रे,नारीवियोग शाने धरोजी॥४॥ध्य छम करीने हो राज,मुज ध्याराध्यो हो रा
ज. ज्ञानीनें वचनें रे, जाणीनें ध्याव्यो इहांजी ॥ तुमनें जणव्युं हो राज,
गयो एम कहीनें हो राज, गुण संनारी रे, पत्नीना नृप चिंतवे तिहांजी ॥
॥ ५ ॥ मात पितानें हो राज, मलवा मनडुं हो राज, तेणें वर खेचर रे, ते
ही विचार करी हवेजी ॥ चक्रीसुतनें हो राज, चक्रवेगनें हो राज, उत्तर श्रे
णीनो रे. ध्यधिपति करी राज्यें ठवेजी ॥ ६ ॥ बीजा नाइनें हो राज, उचि
त ते दीधां हो राज,नगर पुरादिक रे,ध्यापी सहु संतोषीयाजी ॥ ध्यधिपति
कीधो हो राज, दक्षिण श्रेणीनो होराज, पवनवेगने रे, नरपतियें घणुं पो
षीयोजी ॥ ७ ॥ ग्राम पूरवला हो राज, सहुनें दीधा हो राज,केइनें दीधा

रे, वलीय नवा सेवक जणाजी ॥ निष्फल न होयें हो राज, कीधी सेवा हो राज, गुणनिधि साहेब रे, संभारे ते सहु तणीजी ॥ ८ ॥ विरुद्ध स्वभावी हो राज,योग्य खेचरनें हो राज,पूगी बहुलुं रे,सैन्य सहित नृप चालीयाजी ॥ बेशी विमानें होराज,सवि प्रिया सायें होराज,पवनवेगादिक राय रे, चक्रवेगशुं म्हालीयाजी ॥ ए ॥ खगपति कोडयो होराज, सायें चाल्या होराज, अनुक्रमें आव्या रे, तापस आश्रम जिहां कणेजी ॥ प्रतिपत्ति करीनें होराज, तापस तोष्या होराज, रोती आश्वासें रे, निज प्रियानें धैरय घणेजी ॥१०॥ हेमप्रज गुरुजी होराज, ज्ञाने जाणी होराज, अवसरनो अवसर रे, अनुग्रह करीने पधारीयाजी ॥ गिरिचूडदेव हो राज,नरपति मलीने हो राज, करता उत्सव रे, बहुविध मनमां धारियाजी ॥ ११॥ हेमजट प्रमुख हो राज,तापस सघला हो राज, लेवे दीक्षा रे,शिक्षा गुरुनी चित्त धरेजी ॥ करे प्रशंसा हो राज, तापस केरी हो राज, करकज जोडी रे, विनय धरी बहु आदरेंजी ॥१२॥ मुनिवर प्रणमी हो राज,नारीनें लेइ हो राज,लखमी पुरनें रे, बाहिर आव्या ते वहीजी ॥ गगन ते ढांयुं हो राज,विद्याधरशुं होराज, नरपति विजय रे, जाणे शत्रु आव्यो सहीजी ॥ १३ ॥ युद्ध सामग्री होराज, निकले करीनें होराज, विद्याधर दोय ताम रे, श्रीजयानंदजी मोकलेजी ॥ प्रणमी भाखे होराज,तुम सुत आया होराज,लखमी लीला रे, श्रीजयानंदनी को कलेजी ॥ १४ ॥ हर्ष आश्चर्य होराज, नृपति पामे होराज,बहुली ऋद्धि रे, पुत्र आगमन सुणी करीजी ॥ उचित ते आपी होराज, करिवरें बेशी होराज, साहामा आवे रे, चित्त प्रमोद घणो धरीजी ॥ १५ ॥ उतरे विमानथी होराज, श्रीजयानंद होराज, प्रणमे तातनां रे, चरण सरोज सुहंकरुजी ॥ खेचर सहुए हो राज, सहुप्रिया सायें होराज, प्रणमे नृपनें रे, बोलावे वयण मनोहरुजी ॥ १६ ॥ नवमे खंडें होराज, त्रीजी ढाल होराज, श्रीजयानंदनें रे, रासें पद्मविजय कहीजी॥ हर्षे मलिया होराज, सुखमां जलीया होराज, पुत्रपितायें रे, अंतर प्रीति बहु लहीजी ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ एए ॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्र जयंत परें बिहु, पेठा नयर मझार ॥ प्रिया सहित माता प्रत्यें, प्रणमे हर्ष अपार ॥ १ ॥ पुत्र पुत्रवधु देखीनें, मनमां हर्ष न माय ॥ श्री

जपपूर्वापर प्रिया, बोलावे चित्त लाय ॥ २ ॥ मधुर वय प्रिय सांभली.धरती अतिशय प्रीति ॥ गौरी गिरीश चंद्रकुमुदिनी.गज रेवानी रीति ॥३॥ श्रीविज पनी परषदा. मांहे अवसर पामि ॥ पवनवेग श्रीजयतणुं, चरित्र कहे अ भिराम ॥ ४ ॥ सांभली चित्तमां चमकिया, परपदनें वली ताय ॥ स्तवना करता सहु जना, हैयडे हर्ष न माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ आबु अचल रलियामणो रे, जिन राजे ले ॥ ए देशी ॥

॥ मध्यखंम हवे साधवा ॥ जश गाजे ले ॥ श्रीजयानंद राजान, ठ कुराइ गाजे ले ॥ पहेला पूरव दिशतणी ॥ जश० ॥ साथें सामंत प्रधान ॥ ठ० ॥ १ ॥ सेना चतुरंगी करी ॥ ज० ॥ सहु राजवी कीधा जेर ॥ ठ०॥ पूरव सायर तट लगें ॥ ज० ॥ बलवंती जस समसेर ॥ ठ० ॥ २॥ वंग क लंग कालिंगना ॥ ज० ॥ देशना जीत्या सहु राय ॥ठ० ॥ पग पग जश थं भ रोपीया ॥ ज० ॥ नाम सांभली नमवा आय ॥ ठ० ॥ ३ ॥ महेंद्रनाथ मुख राजिया ॥ ज० ॥ जे कोइनी न माने आण ॥ ठ० ॥ जोर करी ते जीतीया ॥ ज० ॥ थाप्या पोतें ते गण ॥ ठ० ॥ ४ ॥ लीधा दंमनें भेटणां ॥ज०॥ हवे कांठे कांठे जाय ॥ठ०॥ पूंगी तांबूल प्रमुखनां ॥ज०॥ वृक्षें शो भित वनराय ॥ ठ० ॥ ५ ॥ दक्षणदिश आव्या हवे ॥ ज० ॥ कावेर प्रमुख जे देश ॥ ठ० ॥ जीती भेटणे लीधलां ॥ ज० ॥ मुक्ताफल प्रमुख अशेष ॥ ठ० ॥ ६ ॥ जात्यवंत लाखो गमे ॥ ज०॥ मानुं सूरयना केकाण ॥ ठ० सहस्र गमे गजराजीया ॥ ज० ॥ आपे नृप मानी आण ॥ ठ० ॥ ७ ॥ म रिच चंदन नें एलची ॥ ज० ॥ सैन्यनें पण भोगमां थाय ॥ ठ० ॥ सह्य दर्डुर मलयगिरि ॥ ज० ॥ ठेलंघे श्रीजयराय ॥ठ०॥८॥ केरलादिक नृपजी तिनें ॥ ज० ॥ पश्चिम दिश आव्या जाम ॥ ठ० ॥ युद्ध करीनें जीतीआं ॥ ज० ॥ पारसी परमुख नृप ताम ॥ ठ० ॥ ९ ॥ मूके प्रणमी भेटणां ॥ ॥ ज० ॥ जिहां दिनकर तेज घटाय ॥ ठ० ॥ अभिनव सूरय देखीनें ॥ज० मानुं पश्चिम समुद्रमां जाय ॥ ठ० ॥ १० ॥ हवे उत्तरदिश साधतो ॥ ज० ॥ कांबोज नें हूण जे देश ॥ठ०॥ युद्ध परानव बहु लह्या ॥ज०॥ पण जीत्या सर्व नरेश ॥ ठ० ॥११॥ हय गय सार ते भेटणा ॥ज०॥ बहु द्रव्य देइ लख कोडि ॥ ठ० ॥ प्रणमी पदकज सेवता ॥ ज० ॥ सहु सेवे होडाहोडि ॥ठ०॥ ॥ १२ ॥ कैलास रायनें जीतीया ॥ज०॥ हिमाचल नग पर्यंत ॥ ठ० ॥ दोय

खंम दोय पासना ॥ ज० ॥ जीत्या ते दंम आपंत ॥ठ० ॥ १३॥ त्रण खंमा धिप थइ करी ॥ ज० ॥ सहु सैन्य युक्ता राजान ॥ ठ० ॥ पाठा वली प्रौढो त्सवें ॥ ज० ॥ सार्थे पागीआनें परधान ॥ ठ० ॥ १४ ॥ निज नगरें आव्या तिहां ॥ ज० ॥ सहु विद्याधर नरराय ॥ठ०॥ करे अनिषेक सुविस्तरे ॥ज० अर्द्धचक्रि पदवी थाय ॥ ठ० ॥ १५ ॥ गुणवंती कन्या गणी ॥ ज० ॥ सह स्रोगमे आपे नृप ॥ ठ०॥ परणे ते जयानंदजी ॥ ज०॥ अप्सरा पण जी ते रूप ॥ ठ० ॥ १६ ॥ राज प्रासादिक सर्वनें ॥ ज० ॥ जेहनें योग्य हुंता जेह ॥ ठ० ॥ तेहनें ते ते आपीया ॥ ज० ॥ थइ प्रसन्न ने आणी नेह ॥ ॥ ठ० ॥१७॥ जे जे जेम परण्या हता ॥ ज० ॥ लघु वृद्ध क्रमें कीधी तास ॥ ठ० ॥ परिच्छद प्रासादिक सहु ॥ ज० ॥ नृप आपे योग्य जे जास ॥ ठ० ॥ १८ ॥ चक्रवेगादिक आवीया ॥ ज० ॥ खेचरपतिनें सतकार ॥ ठ० ॥ देई सहु विसर्ज्जीया ॥ ज०॥ सहु गया निज राज्यनें ठार ॥ठ०॥ ॥ १९ ॥ सेवकपणुं श्रीजयतणुं ॥ ज० ॥ धरता जाणी उपकार ॥ ठ० ॥ सुख नोगवता स्वर्गनां ॥ज०॥ नित्य पामे जयजयकार ॥ठ०॥२०॥ नवमा खंममांहे कही ॥ ज० ॥ ए चोथी ढाल रसाल ॥ ठ० ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी ॥ ज० ॥ नित्य पामे मंगलमाल ॥ ठ० ॥ २१॥ सर्वगाथा ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रिया सहस्रोशुं रमें, पण रतिसुंदरी नारि ॥ संनारे नरपति तदा, पण संदेह लगार ॥ १ ॥ गणिका माता कारणें, मूक्यां बहु थयो काल ॥ शील अक्षत केम संनवे, एहवुं हृदयें सार ॥ २ ॥ तास परीक्षा कारणें,शूरदत्त अनिधान ॥ रूपकलावंतो घणुं, नृपनो मित्र युवान ॥३॥ स्थानक ते विश्वासनुं, रतिसुंदरीनें पास ॥ करी परीक्षा लावीयें,एम कही मोकल्यो तास ॥ ४॥ बहुधन देइ बोलावीयो, पल्यंक वेशी जाय ॥ रत्नपुरें पोहोतो वही,उतरीयो शुन ठाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ बहुधन देइ परिछद कर्यो रे, नाडे लीधुं गेह ॥ चित्तना रागी ॥ रति माला गृह ढूंकडुं रे, वसीयो घरमां तेह ॥ चि० ॥ १॥ आवो आवो रे स यण शुनमित्ता, करियें वात एकांतें एकचित्ता, सयणवातें घणुं सुख थाय ॥ चि० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ गणिकाने शील किहां थकी रे, स्वामि करे

इहां राग ॥ चि० ॥ महोटानें कहो कोण कहे रे, क्षणमां करुं विराग ॥ ॥ चि० ॥ आ० ॥ ३ ॥ भ्रष्ट करुं शीलथी हवे रे, कोइक करीनें उपाय ॥ चि० ॥ दासी रतिमाला तणी रे, एकांतें बोलाय ॥ चि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन आपीनें वश करी रे, पूछे एणी परें वात ॥ चि०॥ एहनें घर नवि दे खायें रे, कोइ पुरुष आयात ॥चि०॥आ०॥ ५ ॥ शुं कारण तेहनुं कहो रे, दासी बोलें ताम ॥ चि० ॥ रतिसुंदरीनें परणीयो रे, श्रीविलास जस नाम ॥ चि० ॥ आ० ॥ ६ ॥ आव नगर नृपें आपीयां रे,ते दीधा निजनारि ॥ ॥ चि० ॥ केटलो काल नोग नोगवी रे, तीरथ नमन मिषकार ॥ चि० ॥ ॥आ०॥ ७ ॥ किहांए गयो ते नावीउ रे, खबर न लाधी कांय ॥ चि० ॥ रतिसुंदरी पासें रही रे, रतिमाला निजमाय ॥ चि० ॥ आ० ॥ ८ ॥ संना रे नित्य निज कला रे, नहीं इहां पुरुष प्रवेश ॥ चि० ॥ शूरदत्त सुणि च मकीयो रे, अहो किम शील कुल वेश ॥ चि० ॥ आ० ॥ ए ॥ मधुरस्वरें निशि गायतो रे, काम दीपन जेणें थाय ॥ चि०॥ चतुराइ घणी केलवे रे,बे शी गोंखनें गाय ॥चि०॥ आ० ॥ १० ॥ फल पत्रादिक शुन करी रे, जेह अपूरव होय ॥ चि० ॥ नित्य दासी करें मोकले रे, प्रीतिकरणनें सोय ॥ ॥ चि० ॥ आ० ॥ ११ ॥ रतिसुंदरी पण सवि लीये रे,देखी ते संस्कार ॥ ॥ चि० ॥ तेह कलाथी चमकती रे, आप कला नंमार ॥ चि० ॥ आ० ॥ ॥ १२ ॥ एकदिन दासीनें पूछतो रे, सांनली माहारां गीत ॥ चि० ॥ रीजे छे तुज स्वामिनी रे,के नवि रीजे चित्त ॥ चि० ॥ आ० ॥ १३ ॥ दासीक हे रीजे खरी रे,पण नवि स्तवती तेह ॥ चि० ॥ देवगुरु विण किम स्तवे रे, सती शिरोमणी जेह ॥ चि० ॥ आ० ॥ १४ ॥ शृंगार रस मय ताहरुं रे, छे सुंदर गीतगान ॥ चि० ॥ पण तेहने चित्त नवि गमे रे, नवि मांमे तेह कान ॥ चि० ॥आ०॥१५॥ शूरदत्त कहे कामिनी रे, तुज स्वामिनी मुज प्रेम ॥चि०॥ कोइ उपायथी कीजीयें रे,सा कहे करीयें केम ॥चि०॥आ०॥१६॥ एह सतीना स्वप्नमां रे, परनर उपर राग ॥ चि० ॥ लेश मात्र आवे नहीं रे, तेणे नवि आवे लाग ॥ चि० ॥ आ० ॥१७॥ शूरदत्त कहे सांनलो रे, लेइ जाउं मुज तत्र ॥ चि०॥ सा कहे कोइ नर तिहां कणे रे,पेसी शके न ही जत्र ॥ चि० ॥ आ० ॥ १८ ॥ तिहां केम लेइ जाउं तनें रे, सांनली मौ न कराय ॥ चि०॥ दासी गइ निज थानकें रे, चिंतवे अन्य उपाय ॥चि०

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन कारिमी स्त्री कहे, यौवन फोकट जाय ॥ वनवल्लीपरें जोग विणुं,तुजनें केम सोहाय ॥१॥ कामक्रीडा वन यौवनं,तरुणनें नंदन वन्न ॥ रूप नहीं तुज सारिखुं, विश्वमां मोहे मन्न ॥२॥ तुज तनु दीपशिखा परें, तरुणना हृदय पतंग ॥ रमणिक सहज स्वनावथी, सघलां ताहारां अंग ॥ ३॥ सामग्री सवि पामीनें, सघली निज आधीन ॥ सफली ते केम नवि करे, रहे जेम दुःखिणी दीन ॥ ४॥ सफली पतिसंगें होये, तस नवि मालि म कांय ॥ खबर न जीवे के मूर्ड, तेणें पति नविन कराय ॥ ५ ॥ यतः ॥ नष्टे मृते प्रव्रजिते, क्लिवे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्योवि धीयते ॥ १ ॥ एहवां शास्त्रनां वचनथी, अपयश पण नवि थाय ॥ कुलस्त्री नें दूषण नही, तुजथी ठानुं न कांय ॥६॥ वली गणिकानी तुं सुता,तुजनें बाधा न कोय ॥ नवो नरता तेणें कीजीयें, शुं बहु कीधे होय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ एहवां वयण सुणी करी, पीडा लही चित्त अत्यंत मेरे लाल, हृदय शस्त्रें जेम कापीनुं, तेहनें धिक्कार करंत मे० ॥ १ ॥ सतीरे शिरोमणि एम लहो ॥ ए आंकणी ॥ माया स्त्री तव बोलती, में ताहरी परीक्षा काम मे० ॥ सतीपणुं तुज निरखवा, हुं बोली तुजनें आम मे० ॥ स० ॥ २ ॥ हुं ताहरी दुशमन नहीं, मुज वचनें उपनो खेद मे० ॥ सखीपणा थी ते खमो, हुं समजी तुमचो नेद मे० ॥ स०॥३॥ एहवे मधुरें वयणथी, रतिसुंदरीनें करी शांत मे० ॥ रतिसुंदरी पण खामती, वली तिमहिज थइ निभ्रांत मे० ॥ स० ॥ ४ ॥ पूर्वपरें वली गावती, कहेती पुण्यनां आख्यान मे० ॥ विच विच काम कथा करे,वली कामनां करे गीत गान मे०॥स०॥ ॥ ५ ॥ निजमंदिर नररूपथी, राणी चित्त सरल स्वनाव मे० ॥ आवर्जन करवा नणी, उजमाल थयो लही दाव मे० ॥ स० ॥६ ॥ अपूरव वस्तु मोकले, वली मोहननां गीत गाय मे० ॥ कामें अंतर पीडीयो,धर्मबुद्धि ना ठी ते जाय मे० ॥स०॥७॥ अंग ठबी श्यामल थइ, रतिसुंदरीनें नित्य ध्या य मे० ॥ नूख तरष गइ वेगली, स्वामि डोह पण न गणाय मे०॥स०॥ ॥ ८ ॥ निडा नावे रातिमां, राणीनो वांछे योग मे० ॥ आय उपाय व णा करे, पण न मले तेहशुं जोग मे० ॥ स० ॥ ए ॥ किमहीक आकार

अंगितें, रतिसुंदरी समजी चित्त मे० ॥ शुद्ध हृदयथी चिंतवे,एतो थाये ते ठल नित्य मे० ॥ स० ॥ १० ॥ ए स्त्री जेहवुं गाय ते. गातो नर पूर्वे एम मे० ॥ पाडोशी रहेतो थको, ए वात हशे कहो केम मे० ॥ स० ॥ ११ ॥ मुज देखी एहनें वधे, अंगें केम कामविकार मे० ॥ स्वर गति चेष्टा अंग नी,लक्षण पण नर आकार मे० ॥स०॥ १२ ॥ नारी रूपें एह देखीयें, पण नारी नहीं निरधार मे० ॥ कांइक कारक पामीनें, थयो पुरुष ते मायाना रि मे० ॥ स० ॥ १३ ॥ डुराचारी कोइ देखीयें, कामातुर पुरुष निदान मे० ॥ करवा शीलनी खंमना, आव्यो मुज करतो तान मे०॥स० ॥१४॥ एहवे आचारें करी, अपराधी माहारो एह मे० ॥ निग्रह करवो एहनो; में अवसर पामी तेह मे० ॥ स० ॥ १५ ॥ सतिय शिरोमणि एणी परें; चित्तमांहे धारी विचार मे० ॥ तेहशुं वात विनोदनी, करे पूरव परें ते उ दार मे० ॥ स० ॥ १६ ॥ एक दिन तेहशुं गोठडी, करतां आलाप संलाप मे० ॥ लाज मूकीनें बोलती. शणगार रसें चित्त पाप मे० ॥ स० ॥१७॥ कामकथा विस्तारती. उत्तम मारग करी दूर मे० ॥ सांभली वाह्यथी रीज ती, रतिसुंदरी आणंद पूर मे० ॥ स० ॥ १८ ॥ कहे रे सखी मुजने वाल ही, मीठी लागे तुज वाण मे० ॥ तुज वयणें मुज चित्त चल्युं, रतिसुख जोगवुं सुख खाण मे० ॥ स० ॥१९॥ पण ईंधुं जे खाइयें, लालच मीठा इनी होय मे०॥ करीयें अकारय पण तथा, तेहवो संयोग मले कोय मे० ॥स०॥ २० ॥तेहवो तरुण कोइ नर मले, गुणवंत अद्भुत आकार मे० ॥ पंमित सर्व कलानिधि,लक्षणनें रूप भंमार॥मे०॥स०॥२१॥प्राण दीयेप्रियाने वली, एहवो धरे प्रेम विशाल मे० ॥ एहवो नरत्ता कीजीयें,रमीयें वली रंग रसाल मे० ॥ स० ॥ २२ ॥ सातमी नवमा खंममां, कही पद्मविजय वर ढाल मे० ॥ राखे शील केणी परें, ते सांभलो वात रसाल॥मे०॥स०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ रतिसुंदरीनां वयण ते, सांभली हर्ष न माय ॥ माया स्त्री कहे सांभलो, उत्तम कहुं उपाय ॥ १ ॥ रूप कलायो आगलो, ठे माहारो भरतार ॥ रूपें पुरंदर सारिखो, धनद परें दातार ॥ २ ॥ स्नेह धरे तुज उपरें,तेडो तमारी पास ॥ इछा पूरण कीजीयें, बेहुनी फलशे आश ॥३॥यतः॥ पतिव्रता सदा पश्यु, स्वनुकूला स्थिराशया ॥ प्रियमेवाचरंत्युच्चै, रुच्चरंते च चारुता॥१॥दोहा॥

पतिव्रता पणे मुजनें, शोकनी अरुचि न थाय ॥ तेणें तुज जेवो होय ते, प्रगट करो अनिप्राय ॥४॥ जे नें मुजपति मोकलुं, राणी बोले ताम ॥ सर्वविडंबना सारिखुं, जिहां नही प्राप्ति दाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ बेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ मुज नरतारनें धन ठे बहुलुं, जोइयें ते तमे मागो ॥ नोग सामग्री जगमां जोतां, नावे कोडीमे नागो ॥ १ ॥ जूओ तुमें ख्यालो, सतीयानो प्रपंच, सुणीनें चित्त पखालो॥एम जाणी तुमे नवि जीव के शील ते पालो॥इहलो नरनव तुमें पामीने अजुआलो ॥ ए आंकणी ॥ मोकलुं जे मागो ते तुमनें, नोग लान वली थाशे ॥ कामपीडा मुज पतिनी टलशे, वेहुनां डुःखडां जाशे ॥जू० ॥ २ ॥ राणी कहे जो देवा शक्ति,तो आपो धन कोडी ॥ जो विश्वास न आवे तुमनें,तो दीयो मुज अर्द्धकोडि ॥ जू० ॥ ३ ॥ अर्द्धकोडी आवे तव जावे, सांनली प्रमुदित थाय ॥ अंगीकार करीनें निज घर, माया स्त्री हवे जाय ॥ जू० ॥ ४ ॥कामवशें करी कांइ न देखे, रात दिवस जे अंध ॥ अंधथकी कामांध ते अधिको, नावे शीलनो गंध ॥ जू० ॥ ५॥ यतः दिवा पश्यतिं नो घूकः,काकोनक्तं न पश्यति॥अपूर्वः कोपि कामांधो,दिवा नक्तं न पश्यति ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ अर्द्ध कोडी निज दासी हाथें, मोकल्युं पूरव दिन्न ॥ संकेतित दिवसें नररूपें, अर्द्ध कोडी लइ धन्न ॥ जू० ॥ ६ ॥ रतन गांठडी लेई चलो, राणीने दरवार॥मणि कंचन आनूषण पहेरी, वली बहु करी शणगार॥जू० ॥७॥ वस्त्रादिकनो आडंबर बहु, देखे किंकरी जाम ॥ जइनें संनलावे राणीनें, दासी दोडी ताम ॥ जू० ॥८ ॥ हारमांहे तेडी बेसाड्यो, चित्रशालामांहे तेह ॥ अर्द्धकोडी दासीने हाथे, वली मोकलतो जेह ॥ जू० ॥ए ॥ पूर्व पहेनां नेला करती, रतिसुंदरी ते राणी॥ तेजवंत बहु रत्न देखीनें, चित्तमां चिंतवे शाणी ॥ जू० ॥ १० ॥ हर्ष लहे विस्मय कांइ पामी, त्रास रहित ते देखी ॥ अहो अपूरव एह रतन ठे, पूरव समान गवेषी ॥ जू० ॥११ ॥ मुज नरतारनां रत्न सरिखां, वृत्तादिक आकार ॥ रक्तादिक वर्ण वली तेहनो, दीसे ठे विस्तार ॥ जू० ॥१२॥ मानुं सूर्यमंमलथी आयां, स्निग्धादिक गुणसार॥ संख्यातित स्वामि घर दीठां, तेहिज ए निरधार ॥ जू० ॥ १३॥ जाणुं मुज पतियें मोकलीयो, बहु आपीनें रत्न ॥ मुज देखी चलचित्त थयो ए, तेणें ए करतो यत्न ॥ जू० ॥ १४ ॥ इमेति सा

मिझोही पातकी, नरकनो आवण द्वार ॥ पण मूरख नवि जाणे एटलुं, अगम्य होये सति नार ॥ जु०॥ १५ ॥ तेहमां पण नवि साहामुं जोइयें,जे होये नृपनी राणी ॥ तास गमननी वात तो दूरें, जे माता सम जाणी ॥ ॥ जु० ॥१६॥ यतः ॥ राजपत्नी गुरोः पत्नी, पत्नी च सुहृदस्तथा ॥ पत्नीमाता स्वमाता च, पंचैता मातरः स्मृताः ॥१॥ पूर्वढाल ॥ त्रिविध सती उपर ए माया, करतो पण अवेखुं ॥ पण पुरुषाधम निजस्वामिनो, झोहीपणे ए देखुं ॥ जू० ॥ १७ ॥ अम दंपतिनो ए अपराधी, नवि करीयें विशवास ॥ निर्लज्ज दुष्ट बुद्धि सकषायी, बोले मरषा भाष ॥ जु० ॥ १८ ॥ यतः ॥ अंतर्दुष्टधियः पापाः, रुपामुक्तागतत्रपाः॥सततं कोपनाः केपि,व्रतलोपेप्यनीरवः ॥ १ ॥ गर्त्ताः शूकरवन्नित्यं, निःशूकाः कामलालसाः ॥ सकषायामृषावाद, विधुराः सदुरोदराः ॥२॥ व्यंसकाव्यसनव्यास,रसिकाविकथारसाः॥ विरसाःशुद्ध धर्मेषु, निर्गुणाः स्वार्थवञ्चनाः॥३॥लुब्धाःक्षुब्धाःशठाः कुंठाः,परोपकृतिकर्मसु॥ दुराचाराश्चदुर्वाचः प्रपंचपटवस्त्रियां ॥ ४ ॥ इत्याद्यशेषदुर्दोष, दुर्दशादूषिता त्मनां ॥ अधमाधमशीलाना, भपि नो संगतिः शुभा ॥५॥ ढाल पूर्वली ॥ धर्मे वर्जित काम अंधरा, सती सरुप न जाणे ॥ प्राणांतें पण शील न लोपे, महासती जेह वखाणे ॥ जू० ॥१९॥ फरस न सहे कोइ अन्य पुरुषनो, जेम अग्निनी ज्वाला ॥ असतिपणुं नवि तेह आचरे, मरण करे पण बाला ॥ ॥ जू० ॥ २० ॥ कुलस्त्री स्वपनें पण निज मेलुं, शील न करे कोइ कालें ॥ कुलने रतन दीपपरें रूडी, तेह सती अजुआले ॥ जू० ॥ २१ ॥ बलात्कार थी नर सुरपति पण,शील सतीनुं न लोपे ॥ जो लोपवा जाये तो तेहनें,बाली भस्म करे कोपें ॥ जू० ॥ २२ ॥ केशरीखंध केश अहिमस्तक, मणि बावण पय जाणो ॥ चमरी पूछ लेवा कोण समरथ, जो पण होये अति शाणो ॥ जु० ॥२३॥ जीवंतां शील सतीनुं न भागे, तेणे ए मूरख माथे ॥ शील माणिक मुज हरवा आव्यो, सतिशिरोमणि साथें ॥ जू० ॥ २४ ॥ धन्य ए रतिसुंदरी शीलवंती, नाम दीधे अघ जाय ॥ नवमे खंडें आठमी ढालें, पद्मविजय गवराय ॥ जू० ॥ २५॥ सर्वगाथा ॥ २३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लकुट प्रहार विना नही, शुद्ध बाजरी ज्वार ॥ तेम शिक्षा विण न वि रहे, परमां जे होये नारि ॥ १ ॥ मूर्ख चपेटा विण नही, सहेजें पाध

रो होय ॥ तेम शिक्षा देवी खरी, एहमां पाप न कोय ॥ २ ॥ जेम कुध्यी नतुं फल लहे, एणी परें करी विचार ॥ दासीनें तेडी कहे, सांजल मुज प्रकार ॥ ३ ॥ सुपनें पण वांछुं नही, ए पापीनो संग ॥ पेसवा दीयो थम्र हारमां, ते पण वित्त प्रसंग ॥४॥ जइ कहो अमची स्वामिनी, स्नान करी शणगार ॥ थइ तैयार बोलावशे, जाणो हृदय मकार ॥ ५ ॥ ए मणिमय पल्यंक छे, रति सुंदरीयें दीध ॥ तिहां लगें रहो तुमे इहां कणें, जाणो वंछित सिद्ध ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ प्यारे मोकुं ले चलो ॥ ए देशी ॥

॥ रतिसुंदरीयें मोकल्युं, ह्यो ए सुगंधी तंबोल हो ॥ नाना इव्यशुं जे लीयो, मुख थाये रंगचोल हो ॥ १ ॥ प्यारे तोकुं ले चलुं, ले चलुंगी मुज साथ हो ॥प्या०॥ ए आंकणी॥इत्यादिक वचनें करी, उपजावी सुखशात हो ॥ मुज पासें आवो तुम्हें, जाखो मुज अवदात हो ॥ प्या०॥२॥ ते करी आवी सवे कह्युं, पण तंबोलमां ताम हो ॥ तरष लागे घणी जेहथी, ए हवा इव्य अनिराम हो ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सुखमां रहे रतिसुंदरी, पल्यंक उ पर खास हो ॥ शूरदत्तनी सेवा करे, दासीयो विनय विलास हो ॥प्या० ॥ ४ ॥ बहु उपचार करे वली, पाद पखाले तास हो ॥ मणिपर्यंक रुडी तूलिका, शयन करे सुखवास हो ॥ प्या० ॥ ५ ॥ स्वर्गनां सुख जोगवुं अछुं, एम माने मनमांहि हो ॥ देवांगना सम दासियो, देखी मन उच्छा हि हो ॥ प्या० ॥६॥ कथा वारता करतां थकां, उपजे अंतर प्रीति हो ॥ सर्वस्वादथी शिरोमणि, तंबोलनी जली रीति हो ॥ प्या० ॥ ७ ॥ वारंवा र आस्वादता, विषय तृष्णापरें तास हो ॥ तंबोलना परजावथी, लागी अ तिय पिपास हो ॥ प्या०॥ ८ ॥ पाणी मागे ते हवे, दासीयो गइ घरमांहे हो ॥ निज स्वामिनीनें वीनवे, स्वामी तरष अथाह हो ॥ प्या० ॥ ९ ॥ स्वामिनी कहे सुणो किंकरी,मदकारी सुरा सार हो ॥ आपणा घरमां तैयार छे, इव्य अनेक प्रकार हो ॥ प्या० ॥ १० ॥ वासितनें मदा पराक्रमी, स्वादवंत घणुं तेह हो ॥ शाकर इाख जलथी घणुं, मधुरपणानो गेह हो ॥ प्या० ॥ ११ ॥ शीतल निर्मल तेह छे, इव्य सुगंध सुवास हो ॥ जल पानकें पाउं तुमें, वात म करशो तास हो ॥ प्या० ॥ १२ ॥ स्वामिनी आ णा शिरें करे, स्वाउ जल प्रमकार हो ॥ पाइ तेणें वधतो थयो, काम इच्छा

नो विकार हो ॥ प्या० ॥१३॥ लोचन मीचाइ गयां, आसव नीरनो नेद हो ॥ कनक नाजनें समज्यो नही, वलीय पिपासानो खेद हो ॥प्या०॥ ॥ १४॥ पान करी सूतो ढोलीये, पापी मन आराम हो ॥ क्षणमां घूमायो घणुं, शव परें पडीयो गम हो ॥ प्या० ॥ १५ ॥ नवि हाले चाले किमे, साप मड्यो होये जेम हो ॥ मूर्छाणो पीडा लहे, मानुं जमें दीठो नेम हो ॥ प्या० ॥ १६ ॥ दीर्घनिद्रानी वेहेनडी, आवी निद्रा ताम हो ॥ मृतक स मो जाणी करी,शंका रहित थइ जाम हो ॥प्या०॥१७॥ शोधे अंग शूरदत्तनुं, देखे तव शिरमांहे हो ॥ वेणीमांहे गोपवी जिके, औषधि दीठी त्यांहि हो ॥ प्या० ॥ १८ ॥ हर्षथी दासीयो लेइनें, आवे स्वामिनी पास हो ॥ आपे रतिसुंदरी करें, ते पण लहे उल्लास हो ॥ प्या० ॥ १९ ॥ जोइ जोइनें उ लखी, विस्मय पामी चित्त हो ॥ वदनकमल विकस्वर थयुं, हृदयें धरे जे म वित्त हो ॥ प्या० ॥ २० ॥ दिव्य औषधि ए पति तणी, महाप्रनावनुं धा म हो ॥ माया मंदिर माहरी, मातनें शिक्षा काम हो ॥प्या०॥ २१ ॥ मु जपतियें शूकरी करी, ते एहनें परनाव हो ॥ लांबी पोहोली पण तेहवी, वर्ण प्रमुख सवि नाव हो ॥ प्या०॥ २२ ॥ निश्चय हुं तेहज लहुं. नहींतो ए दुराचार हो ॥ नारि रूप ए केम करे, दुष्ट आशय निरधार हो ॥प्या०॥ ॥ २३ ॥ परनर नवि पेशी शके. कोई मुज आवास हो ॥ तिहां ए आव्यो पापीयो, औषधि धरी निज पास हो ॥ प्या० ॥ २४ ॥ केम एहनें करए चढ्या,विस्मय लहुं बहु एह हो ॥ अथवा स्वामीयें दीपली, जाणुं आ गल तेह हो ॥ प्या० ॥ २५॥ नवमी नवमा खंममां, पद्मविजय कही ढा ल हो ॥ शीलें मनवंछित फले, शीलें मंगल माल हो ॥ प्या० ॥२६॥२७०॥

॥ दोहा ॥

॥ जेम कहेशुं तेम नांखशे, बीजो नांहि विचार ॥ पण औषधि परनाव थी, करुं मर्कट आकार ॥ १ ॥ बीहीक देखाडी नली परें, शिक्षा देइश सार॥ रतिसुंदरीयें चित्तमां,एह कर्यो निरधार ॥२॥ दासीनें परशंसतो,नलुं की धुं तें काम ॥ आपी औषधि लावीनें, एह पासेंथी आम ॥ ३॥ धन्य पुण्य विनीत तुमें, कीधा गुणनी जाण ॥ तुमें स्वामिनी नगति घणुं,केतां करुं वखाण ॥ ४ ॥ उपजाव्यो आनंद बहु. वयण कही रसाल ॥ सूतां सुख निद्रा थकी, राति गमाव्यो काल ॥ ५ ॥ ब्राह्म मुहूर्ते उठी करी, आवश्यक

सवि अवदात रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ५ ॥ शूरदत्त कहे सांजलो रे, सवलोक हुं अधिकार रे ॥ रा० ॥ तुम नरता नूजर्त्ता तणो रे, सांजलो धुरथी सार रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ६ ॥ लखमीपुरें श्रीपति नलो रे, त्रण कन्यानो ताय रे ॥ रा० ॥ राजा सर्व शिरोमणि रे, जैनधर्म मन नाय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ॥ ७ ॥ दीधी त्रणे तुम पति रे, वली दीधुं निजराज रे ॥ रा० ॥ दीक्षा लीधी राजीये रे, वरवा शिवसाम्राज रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ८ ॥ वैताढ्य जइ विद्याधरा रे, बहु वश कीधा तास रे ॥ रा० ॥ करी महोटा उपकारनें रे, पाम्या जश सुविलास रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ ९ ॥ तास पुत्रीयो परणिया रे, वली चक्रायुध राय रे ॥ रा० ॥ जीतीनें तस कन्यका रे, परण्या सहस समुदाय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १० ॥ बहु उत्सव आडंबरें रे, आव्या निजपुर राय रे ॥ रा० ॥ शत्रुनृप जय चिहुंदिशें रे, करीनें आव्या गाय रे ॥ रा० ॥ ॥ तु० ॥ ११ ॥ जे जे आश्चर्य शतो गमे रे, वली तस तात संबंध रे ॥ ॥ रा० ॥ शूरदत्त सवि नांखीयो रे, विस्तारें परबंध रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १२ ॥ सांजली सर्व संबंधनें रे, आनंद अंग न माय रे ॥ रा० ॥ दान देइ संतोषियो रे, कीधो बहु सुपसाय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १३ ॥ रतिसुंदरीयें विसर्जीयो रे, पोहोतो लखमीपुर गाय रे ॥ रा० ॥ अनुक्रमें राज्यसना गयो रे, जिहां श्रीजयानंद राय रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १४ ॥ परीक्षा प्रमुख सवि वातडी रे, कही तस आमूल चूल रे ॥ रा० ॥ तेम वली जे कहेवरावीयुं रे, ते नाख्युं अनुकूल रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १५ ॥ तुमनें तेडवा छे वली रे, सांजली श्रीजयानंद रे ॥ रा० ॥ निजप्रीया शील शोहामणुं रे, धरता अति आणंद रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १६ ॥ नक्तिवंती नार्या तणुं रे, दर्शनतुं थयुं चित्त रे ॥ रा० ॥ वली तेडवा पण जायवुं रे, वेशी विमान विचित्त रे रा० ॥ तु० ॥ १७ ॥ पोहोता दिव्य विमानशुं रे, रत्नपुरें क्षण मांहि रे ॥ रा० ॥ सार सौजन्य परिवारशुं रे, धरता मन उछाहि रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १८ ॥ रत्नप्रन नूपनें मल्या रे, तेम नयरी जन व्रात रे ॥ रा० ॥ रत्नमाला नृपनी प्रिया रे, पाम्या अति सुखशात रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ १९ ॥ संतोषी रतिसुंदरी रे, आपी दर्शन आप रे ॥ रा० ॥ क्षणिक आनंद दीये घणो रे, उचित करी आलाप रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ २० ॥ अमृतवृष्टि अचिंतवी रे, माने आववुं राय रे ॥ रा० ॥ खेम प्रश्नादिक बहु करे रे, नकर्ते बमणो नराय रे ॥ रा० ॥

॥तु० ॥ २१ ॥ रत्नप्रन हवे राजियो रे, सामंतनें परधान रे ॥ रा० ॥ ह र्ष नगरना जन थये रे, सेवे करी एकतान रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ २२ ॥ गज रथ घोडा नेटणे रे. ॥ रत्नादिक बहु वस्त रे ॥ रा० ॥ जे जे अपूर्व देशमां रे, ते ते दीये सु प्रशस्त रे ॥ रा०॥तु०॥ २३ ॥ तिहां सुखमां रहेतां थकां रे, बा रमी ष्ट ए ढाल रे ॥ रा० ॥ पद्मविजयें कही सांजलो रे, नवमे खंमें रसाल रे ॥ रा० ॥ तु० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ३५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक दिन तिहां रही करी, पूठी ससरा सास ॥ श्रीजयानंद नृपति हवे. जावा मन उल्लास ॥ १ ॥ मात पिता भ्राता प्रमुख, रतिसुंदरीनें ता म ॥ आज्ञा दीये महासती प्रत्यें, थाये दुःखनां धाम ॥ २ ॥ दासी दास नें धन बहु, आपे मेवा काज ॥ सहुनें लेइ विमानमां, श्रीजयानंद महा राज ॥ ३ ॥ निजपरिवारशुं चालीया, वायुवेग आकाश॥ग्राम नगर उल्लंघता, आव्या निजपुर वास ॥४॥ उत्सव महोत्सवथी तिहां, आवे निज वर धा म ॥ रतिसुंदरीने राखवा, महोल दिये अनिराम ॥ ५ ॥ सहु प्रिया मेली करी, उचित दान सन्मान ॥ मंत्री पासें करावता, श्रीजयानंद राजान॥६॥ संतोषी सहु तेहनें, सुख सागरमां लीन ॥ पंच विषय सुख नोगवे, सहु राणीशुं पीन ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ केशर वरणो हो के काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ हवे सहु नृपति हो के परजा पाले मारा लाल, निज परजा सम होके सहु रखवाले मा० ॥ कनक सिंहासन हो के एकदिन बेठा मा० ॥ पं चपरमेष्टीना हो के ध्यानमां पेठा मा० ॥ १ ॥ बहु नृप नमता हो के आ णाने धारे मा० ॥ मुखशशि किरणें हो के दिशि अजुआले मा० ॥ परप द बेठी हो के निज निज कामें मा० ॥ प्रतिहार आवी हो के शीघ्र शिर ना में मा०॥ २ ॥ विनति एणी परें हो के नृपनें करतो मा० ॥ लोक बहु आ व्यो हो के बहु दुःख धरतो मा०॥विजयपुरथी हो के पोलने बारें मा०॥उनो तुमचा हो के दर्शन प्यारें मा० ॥३॥ मोकलो वहेला हो के नरपति ना ते मा० ॥ मोकले ते पण हो के जइ तस पासें मा० ॥ आवी प्रणमे हो के नरपति पाया मा० ॥ विनतिपत्रिका हो के नृपपुर गया मा० ॥४॥ मंत्री लेइनें हो के नृप कर देवे मा० ॥ नरपति हरषें हो के जोइ तस हे

ह ॥ द० ॥ ५ ॥ दोय पक्षमां जे जुगतुं होये जी, तेह कीजें सयमेव ॥ वां
ची वली सांनली वयणडांजी, अमरष आवियो देव ॥ द० ॥ ६ ॥ तातप
रानव वली सांनलीजी, दुःख प्रजानुं चित्त धार ॥ अर्द्ध नरतपति उठीयो
जी, वयरी जाण्यो सिंहसार ॥ द० ॥ ७ ॥ करिय सेनापति आगलेंजी, वा
जां वजडावे प्रयाण ॥ सैन्य चतुरंग तव सज्ज करीजी, चालीया ते सपराण
॥ द० ॥ ८ ॥ स्वल्प प्रयाण जइ तिहां रहीजी, मोकलीयो तिहां दूत ॥ ते
हनें जाण करवा नणीजी, संनलावे आप आकूत ॥ द० ॥ ९ ॥ शत गमे
ताहरा अन्यायनेंजी, खमीय उवेखीयो तुज्ज ॥ एटलो काल सौजन्यपणे
जी, वांक मत काढजे मुज्ज ॥ द० ॥ १० ॥ आज नवि खमुं हवे ताहरो
जी, राखी ए राज्यनी नीति ॥ कीध प्रयाण ते आगलेंजी, लोपतो नवि कोइ
रीति ॥ द० ॥ ११ ॥ सैन्य असंख्यशुं चालतांजी, कोयनें न होय संताप ॥
पर उपगारी दयालुयो जी, ते केम परें करे पाप ॥ द० ॥ १२ ॥ निज परदे
श सरिखा गणेजी, संम त्रणनो जे अधीश ॥ तस नगर ढूकडा आवीयाजी,
जाणतो सिंह नरेश ॥ द० ॥ १३ ॥ सन्मुख महाबलें नीकलेजी, व्याघ्र स
न्मुख शश जेम ॥ बल सहित सिंहशुं जूफीनेंजी, नांजे करी वृक्षनें तेम
॥द०॥१४॥ घात विधुरित पकडी लीयोजी, लीलायें ते सिंहसार ॥ बांधीनें
निगड घाली करीजी, सोंप्यो तातनें तेणी वार ॥द०॥ १५॥ पडियो कारा
गार मांहे ते जी, अनुनवे पीड अपार ॥ कर्म निज शोचतो तिहां रहेजी,
पाप तरु फल ए असार ॥ द० ॥ १६ ॥ कर्म कीधां ते मूके नहीजी, पा
प मत करो नवि जीव ॥ पापनां फल ए देखी करीजी, धर्म ते करीयें सदै
व ॥ द० ॥ १७ ॥ श्रीश्रीजयानंद नृपति जी, जयसिरि करी निज हाथ॥
नगर प्रवेश महामहोत्सवेंजी, राजन्य पुरजन साथ ॥ द० ॥ १८ ॥ करि
य प्रवेश निज तातशुं जी, हय गय रयणनें वस्त्र ॥ पौर जन राजवर्गी तथा
जी, नेटणे मूके केइ शस्त्र ॥ द० ॥ १९ ॥ सामंत मंत्रिपुर जन वली जी,
वलीअ सीमाडा राजान ॥ देश परदेशना लोकने जी, नृप बहु आदर मा
न ॥ द० ॥२०॥ जेहनें योग्य जेम तस करे जी, दाननें वली सनमान ॥
करिय प्रणाम स्तवना करेजी, चित्तमां अति बहु मान ॥ द० ॥२१ ॥ खं
म नवमे एह चौदमीजी, पद्मविजयें कही ढाल ॥ पुण्यथी सवि सुख नीर
नें जी, पुण्यथी मंगलमाल ॥ द० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तुम दरिशण अति दोहेलुं, नाग्यें पाम्या आज ॥ डुःख अंधकारमां उगीयो, स्वामी तुं दिनराज ॥ १ ॥ काल रात्रि परें एटलो, काल काढयो नय कार ॥ रूप कीधो अम्ह पुण्यनो,उदय ते तुं दिनकार ॥२॥ चिरंजीवो सफलुं करो, मूलराज्य महाराज ॥ अमृत सम दृष्टि देइ,पवित्र करो उडुराज ॥३॥ एम स्तवना करी हर्षशुं, पोहोता निज निज गेह ॥ देश नगर पुर गाममां, वूठा अमीरस मेह ॥ ४ ॥ देवपूजादिक कृत्य करे, उचितज वेला होय ॥लो क तुष्टि हेतें तिहां, काल गमावे कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ राग मारुणी॥श्रीसीमंधर साहेब आगें विनति रे॥ए देशी॥

॥ राज्यमांहे रह्या राज्य काज सवि साचवे रे, तेम तातनें परिवार ॥ आ गें रे आगें रे, लागें धर्म कथा कहे रे ॥ १ ॥ जिनवरनापित धर्म दया गुण मूल ठे रे,तेम दानादिक चार ॥ नाख्यो रे नाख्यो रे,दाख्यो देव गुरु धर्मथी रे ॥२॥ पुण्य पाप फल सुकृत डुःकृत कारण कहे रे,हेतु युक्ति अपार ॥ राज्य रे राज्य रे, काज करंतां पण कहे रे ॥३॥ विचें विचें अवसर लहीनें निपुण ते नृपति रे, नित्य नित्य करे व्याख्यान॥ सरसा रे सरसा रे, नही विरसा द ष्टांतथी रे ॥४॥ सारसंग्रह करी समकेत नित्य समजावता रे,श्रोतानें सुख कार॥हितकर रे हितकर रे,अंतर रहित ते उपदिशे रे॥५॥एम करतां जिन प्रव चन श्रावक सहु कस्या रे,पुत्र वचन घन सार॥सांजली रे सांजली रे,राघ का मली गद सवि गयो रे ॥६॥ अमृत परें निज आतम सींचो धर्मथी रे, अंगी करे गृही धर्म ॥ राय रे राय रे, ताय ते श्रीजयानंदनो रे ॥७॥ जैनधर्म दृढ करीनें जनकने थापता रे, तेह क्रमागत राज्य ॥ जाणी रे जाणी रे, मन आ णी नृप आदरे रे ॥ ८ ॥ पुत्र वयण गुणवंतनुं नवि उलंघता रे, हवे जाया नुं मन्न ॥ श्रीजय रे श्रीजय रे, विजय राय हवें राखता रे॥ए ॥तात संतोष नें कारण केइक दिन रही रे, परजानें सुखदाय ॥ थाय रे थाय रे, राय श्री विजय धर्मी पणुं रे ॥ १० ॥ परजानें पण जैनधर्म समजावता रे, श्रीश्री विजयनरिंद ॥ जोगवे रे जोगवे रे, जोगवे राज्य असंगनें रे ॥ ११ ॥ एकदि न विजयराय चित्तमांहे दयालुउ रे, कारागारमां जेह ॥ पाल्या रे पाल्या रे, आल्या मुगता तेहनें रे ॥ १२ ॥ सिंहसार हवे कारागारमां डुःख समे रे,व ध बंधादिक जोर ॥ खमतो रे खमतो रे,नवि नमतो मनथी कदा रे॥१३॥

नत्रीज जाणी काढी मूक्यो देशथी रे,पाले राज्य महांत॥राय रे रायरे,नवि अ न्याय कदा करे रे ॥ १४ ॥ श्रीजयानंद हवे अवसर लही एकदा रे, तात ना प्रणमी पाय ॥ नगतें रे नगतें रे, युकतें पूठी तातनें रे ॥ १५ ॥ मात प्रमुख गुरु जन प्रणमीनें आदरे रे, केइनें वात्सल कीध ॥ केइनें रे देइनें दृष्टि सोहामणी रे ॥ १६ ॥ केइनें मधुर वयणथी संतोष्या घणा रे, राज ननें परधान ॥ जेह रे जेह रे,नेह धरी घणुं पूठतो रे ॥ १७ ॥ जनपद लो क प्रजानें प्रीति उपायतो रे, वोलावा सहु जाय ॥ आवे रे आवे रे,नावे खे चर नृप बहु रे ॥ १८ ॥ शोल सहस नृप अरधा नरतना आवीया रे, निज निज लेइ सैन्य ॥ वलीया रे वलीया रे, टलीया नही रण कर्ममां रे ॥१९॥ चतुरंगी सेनायें चतुर ते चालीयो रे, निज पुर जावा काज ॥ कोइ रे को इ रे, नवि होये प्रतिमल्ल कदा रे ॥२०॥ वाजित्र शब्दें दिशा वलय सवि पू रीयुं रे, शत्रुवृंदनें त्रास ॥ आपे रे आपे रे, कापे डुःख मित्रजन तणां रे ॥ ॥ २१ ॥ केटलीक मजलें कोइ अटवीमां उतख्या रे, पूजा करी जिनराज ॥ नूप रे नूप रे, कूप अगाध ते सलनो रे ॥२२ ॥ अशनादिक करीने सहु रा जन्य लोकनें रे, वाले हरखथी राय ॥ अनुक्रमें रे अनुक्रमें रे, जिनधर्में जन वासतो रे ॥ २३ ॥ अनुक्रमें आव्या लखमी पुर महामहोत्सवें रे, अनुक्र में पोहोता गेह ॥ पाले रे पाले रे, टाले कंटक राज्यमां रे ॥२४॥ सहु नृ प नूचर खेचर प्रणमी मोदशुं रे,निज निज थानक जाय ॥ गाय रे गाय रे, राय तणा गुण नित्य प्रत्यें रे ॥२५॥ नवमे खंमें ढाल पन्नरमी ए कही रे, श्रीजयानंदनें रास॥नाखे रे नाखे रे, दाखे पद्मविजय मुनि रे॥२६॥४४३॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजयानंदना राज्यमां, जलचर नवि पकडाय ॥ थलचर खेचर प रस्परें, नवि कोइ हणवा धाय ॥ १ ॥ जनम मरण अकालें नहीं, कंटक कमलनी नाल ॥ सरोगता कमलें रहुं, दंम देउलशिर नाल ॥ २ ॥ कलह ते गजशाला रह्यो, डुहियां मंदिर होय ॥ स्नेहनो क्षय दीपक विषे, कुटिल सापिणि गति जोय ॥ ३ ॥ अदव कुटिल सरिता कही, फूलके वेणी बंधा य ॥ फर प्रचंम करिनो रणें,सकलंक शशी कहेवाय ॥ ४ ॥ निर्दयता खड्ग रही, कोरणी मंदिर मांहि ॥ पण ए लोक मांहि नहीं, रहेतां चित्त उबाहि ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४४८ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ पीउजी पीउजी नाम जपुं दिन रातीयां ॥ ए देशी ॥

॥ गो महिषी घट अधिक दीये पय लोकनें, धानक धानक पूरी धरा धान्य थोकनें ॥ कालें वरसे मेघ करे पुष्टता घणी,आपे फूलनें फल पट,ऋतु आप आपणी ॥ १ ॥ रत्न सुवर्णना आकर नीपजे नग नगें,रयणनिधान प्रगट होये धरतीयें पग पगें ॥ पूर्वजें दाटया धन परजानें नीसरे,नारी सुगुण सुखकर सुशील सहु शिरे ॥ २॥ द्यूत मद्य वेश्या परनारी गमन न ही, चोरीनें मृगया मांस ए व्यसन टाले सही ॥ निजपर चक्रनो जय उपसर्ग नहीं कदा, नहीं अतिवृष्टि अनावृष्टि डुःखदायी सदा ॥३ ॥ कलह ममर नहीं दंश मसादिक नवि नडे, मुषक तीडना जय सुपनें पण नवि लडे ॥ विविध उपायें मंत्री प्रधान बलें करी,राष्ट्र कोशादिकें पूरण राज्य सिरि धरी ॥ ४ ॥ हवे श्रीविजय नृप दानादिक आचरे, लक्षादिक वरसां लगें धर्म विविध करे ॥ निःस्पृह पणे राज्य पाले अजातशत्रु पणे, डुःख टाले परजानां राखे सुख घणे ॥ ५ ॥ जीर्ण उद्धार करावे इव्यनो व्यय करी, जैन शिरोमणि थइनें पुण्यलक्ष्मी नरी ॥ श्रीजयानंदनी आण लही लघु सुत जणी, शुजदिवसें राज्य थापे शीख देई घणी ॥ ६ ॥ नाम शतानंद योग्य उत्तम गंजीर ते, सहुनें सम्मत तेजस्वी धुरें धीर ते ॥ विनीत नें गुण अनुत्तर धर्मे थिर हितकरु, निश्चल थइ नृप धर्म करे निज सुखकरु ॥७॥ आगमसागर सद्गुरु तेणे समे आवीया, जाग्यथकी तेणे कालें मनमां जावीया ॥ लेइ प्रजानी आणनें दीक्षा मन धरे, निजसुत नरपति उत्सव महोत्सव बहु करे ॥ ८ ॥ सुख वाहन बेसीनें दान बहु दीये, जैन धरम परजावना, बहु आणंद हीये ॥ योग्य पुरुष परिवारथी गुरु पासें जइ, करी परणामनें आदरे व्रत शीघ्रज थइ ॥ ९ ॥ विजयराज्य ऋषि दक्ष गुरु सेवा करे, ग्रहण आसेवन शिक्षा अनुक्रमें दोय धरे ॥ तत्त्व जाण सत्ववंत अशेष आगम जणे, अंतर शत्रु जय करे कर्म कठिन हणे ॥ ॥ १० ॥ तप करता विचरे गुरु साथें विनय करे, शांतजितेंद्रिय गुण अणगारना आदरे ॥ तात दीक्षाथी हर्ष खेद नृपति लहे, सहु मुनिवंदना करीनें, जाये निज गृहे ॥ ११ ॥ श्रीशतानंद राजान जैनधर्म पालता, सैन्य परिग्रहशुं शासन यत्नथी आलता ॥ केइक दिन निज राज्यें रही बहु नेहथी, अग्रज उपरें जक्ति घणी चित्त नेहथी ॥ १२॥ श्रीजयानंदनी सेवा करवा

इठतो, सार सैन्य लेइ लखमीपुर नणी गहतो ॥ राज्य सोंपी विशवासी पुरुषनें चालीयो, पोहोतो लखमीपुर गाम ताम चित्त म्हालीयो ॥ १३ ॥ श्री जयानंदनरिंद चक्रीनें जइ मल्या. अनुजनी नक्तिथी आदर करी सुखमां नल्या ॥ नवमे खंडें ढाल ए शोलमी मन धरो, पद्म कहे नवि धर्म करी नवजल तरो ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बहु आदर सतकारिया, वली कीधुं बहु मान ॥ गुणीनें गुणवंता मले. वाधे प्रमोद प्रधान ॥ १ ॥ शतानंद नृप आदि दे. बांधव बहुपरिवार ॥ सहस गमे नूचर तथा, खेचरना पण वार ॥ २ ॥ राज्याधिराज्य एक दिन हुवे. रयवाडी सहु संग ॥ श्रीजयानंदजी आवीया, नगर बाहिर मनरंग ॥ ३ ॥ ताम लोक एकण दिशें, जाता देखे जाम ॥ तेम आवता वली जावता, लख्यो नर अनिराम ॥ ४ ॥ तेहमांथी कोइ पुरुषनें, तेडी पूछे राय ॥ इयो उद्यम ले लोकनें, केम गमनागम थाय ॥ ५ ॥

ढाल सत्तरमी ॥ राग चित्तागडो, मुज घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ ते नर कहे नरपति सुणो, ए वात ले अनुत ॥ एणे नगर ढूकडा आवीया, पूर्वदिशें अवधूत ॥ १ ॥ मन मानज्यो रे नाथ ॥ ए नगरी कीधी सनाथ ॥म०॥ ए आंकणी ॥ मनोरम उद्यानमां जयनाम ते ऋषिराय, तप करे ले अति आकरां, पंचाग्निनें तेह तपाय ॥ म० ॥ २ ॥ समता पण इंडियो दमी, यम नियम पाले सार ॥ ते ऋषि नमवा जाय ले, ए लोकनां हजार ॥ म० ॥ ३ ॥ उपकरण लेइ पूजा तणां, केइ धरी लोक विवेक ॥ जइ पूजशे ते ऋषि प्रत्यें, चित्त धारी धर्मनी टेक ॥ म०॥ ४ ॥ केइ नोजन फूल केइ वस्त्रथी, केइ विलेपन लेई जाय ॥ पण निःस्पृहमां ए अवधि ले, तपनो निधि ऋषिराय ॥ म० ॥ ५ ॥ सत्कारथी तुसे नहीं, कष्टे न लहे अपमान ॥ ए निरीहनें मणि मृत्तिका, शत्रुनें मित्र समान ॥म०॥ ६ ॥ कनक पत्थर समवडे, पृथिवी करे सुपवित्त ॥ करे स्नान त्रण वेला वली, धरे जटा मुकुटनी रीत ॥ म० ॥ ७ ॥ वस्त्र पहेरीयां तरु ढालनां. कंद मूल फलनो आहार ॥ मृगचर्म धरी संध्या करे, निद्रा नही निरधार ॥ म० ॥ ८ ॥ रहे ध्यान मांहे विधिपकी, निःस्पृह पोता नें देह ॥ वनवास नित्य जेणे कर्यो, नावना अन्यासी जेह ॥म०॥ए॥

पटुवचन पण शुण लेशनें, समरथ न कहेवा होय ॥ करे नकि एहनी तेहनें. नवि आवे नवनय कोय ॥ म० ॥ १० ॥ तेणे नगरनां जन सहु मली. ए आवे ने वली जाय ॥ ते सुणी श्रीजयानंदजी. चित्त चिंतवे महाराय ॥ म० ॥ ११ ॥ मनमां मानजो नवि जीव, नवस्थिति विचित्र सदैव ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ अज्ञान महाडुःखें नेदीयें, पन निविहनें अनंत ॥ काल रात्रि परें महा डुःख दीये, प्राणीनां सुख हरंत ॥म०॥१२॥ सन्मार्गनें ए आचरे, डुर्दशा कारण एह ॥ तिरियंच नरकना नव नमे, सवि डुःखनुं ए गेह ॥ म० ॥ १३ ॥ मिथ्यात्व रुखनुं कंद ए, सद्ज्ञाननुं ए चोर ॥ सहु कर्ममां ए शिरोमणि, अज्ञान अतिहि कठोर ॥ म० ॥ १४ ॥ तृष्णा विषयनी जे नदी, तेहनो ए गिरिवर जाण ॥ विचित्र नवनाटक करे, ते जाणो महिमा अन्नाण ॥ म० ॥ १५ ॥ चेतन ते पत्थर सारिखो, नवि जीव माने कोय ॥ एणी परें अज्ञानें करी, वेगे ते निज ऋद्धि खोय ॥ म० ॥ १६ ॥ पंचेंद्री पण अज्ञानथी,गत नयनपरें करे काम ॥ तेणें अंध तम अज्ञान ए, तत्त्वदृष्टि न रहे ठाम ॥ म० ॥१७ ॥ तेणें एह काका मा हरा, बुद्धिवंत पण अज्ञान ॥ मारग विना केम जइ शके, नेत्र हीन वंछित थान ॥ म० ॥ १८ ॥ तेणे हुं ए पीतरीया प्रत्यें, करुं सम्यग्दर्शनवंत ॥ गुनज्ञान अमृत आंजीनें, करुं दिव्य नेत्र महंत ॥ म० ॥१९॥ एम चित्त मांहे चिंतवी, श्रीजयानंद नृपाल ॥ पितृव्यबोधन कारणें, उपनी बुद्धिविशाल ॥ म० ॥२० ॥ नवमे खंमें ए सत्तरमी, थएं ढाल एह रसाल ॥ कहे पद्म श्रीजयानंदजी, करशे ते मंगलमाल ॥म०॥२१॥सर्वगाथा॥४८८॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रज्ञप्ति विद्या प्रतें, समरे श्रीजयानंद ॥ आवी प्रगटपणे तिहां, पूछे परमाणंद ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ति कहे सांनलो,एहनें बोध उपाय ॥ पंचाग्नि साधन करे, तापस ए ऋषि राय ॥२॥ पूरवदिशें अग्नि स्थलें,महोटुं काष्ट पोलार॥ महोटो नाग तिहां वसे,प्रथम तो ए अवधार ॥३॥ दक्षिणदिशिना काष्टमां, कांकिडो लहे दाह ॥ इंधण तापथी आकुलो,नविनासणनो राह॥४॥ पश्चिमदिशिअग्नि स्थलें,उदेही छे अपार॥ काष्टमां बलती तेहनें,नवि कोइ राखणहार ॥५॥ उत्तरदिशें छे काष्टमां, देडकीनो नही मान ॥ केइ मूइ केइ जीवतो,केइक मूआ समान ॥६॥ तिहां जइ काष्ट कढावीनें, करजो दो दो नाग ॥

पंचेंद्री वलतां थकां,देखावजो लइ लाग ॥७॥ धर्मदयामयी नापीनें,वयण सुकोमल रीति ॥ विद्रव्य तापस रूषि प्रत्यें, प्रतिबोधजो धरी प्रीति ॥ ८ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ देवी थानक गइ हवे तिहां रे, नरपति चित्त विचारे रे ॥ जिनशासन रसीयो ॥ जिनवचनें थापुं एह तपसी, जिम न पडे फरी लपसी रे ॥जि० ॥ १ ॥ तेणें मारग चाल्यो नरपाल, तिहां पोहोतो परम दयाल रे ॥जि० लोक सहुनें दूर करावे, नरपति पासें जावे रे ॥ जि० ॥२॥ आदरथी नय रहित नूपाल, कांयक नमतो चाल रे ॥ जि० ॥ धर्म सरूप हुं तुमनें नाखुं, तेहमां खलखंच न राखुं रे ॥जि०॥३॥ धर्मनुं मूल दया छे सवले,षटदर्शनमां पग पगले रे ॥जि०॥ सवि संपद सुख हेतु एह,कही वेद पुराणें जेह रे॥जि० ॥४॥नेह दयाशुं तप जप करीयें, तो नवसायर तरीयें रे॥जी०॥तडुक्तं॥ददातु दानं विदधातु मौनं,वेदादिकं चापि विदां करोतु ॥ देवादिकं ध्यायतु संततं वा, न चेद्दया निष्फलमेव सर्वं ॥१॥ न सा दीक्षा न सा निक्षा, न तद्दानं न तपः ॥ न तद्ध्यानं न तन्मौनं, दया यत्र न विद्यते ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एह दया सवि धर्मनुं मूल, ते विण सवि छे प्रतिकूल रे ॥ जि०॥ ५ ॥ सुख सघलानुं साधन तात, जे जगमांहे विख्यात रे ॥ जि० ॥ एह दया जेहनें चित्त आवी, तस नय नवि होये नावी रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ यतः ॥ कृपानदी महा तीरे, सर्वे धर्मास्तृणांकुराः ॥ तस्यां शोषमुपेतायां, कियन्नंदंति ते चिरं ॥१॥ पूर्व ढाल ॥ जाणे जीव अजीव स्वरूप, तव पाले दया अनुरूप रे ॥ जि०॥ तडुक्तं ॥ जो जीवे विवियाणइ,अजीवेविवियाणइ ॥ जीवाजीवे वियाणंतो, सोहु नाहि इ संजमं ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ जीवाजीव स्वरूप न जाणे, केम दया पाले अजाणे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ यतः ॥ जो जीवेवि न याणेइ, अजीवेवि न याणइ ॥ जीवा जीवे अयाणंतो,कह सो नाहि इ संजम ॥१॥ ॥ ढाल ॥ जो जैनागम होय अन्यास तो, होय सदगुरु पास रे ॥जि०॥ ते विण एह दयानो अंश, नवि आवे उलट होये भ्रंश रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ निधि औषधि मणि पगपग खाण, कोइ सिद्धपुरुष मले जाण रे ॥ जि० ॥ तो ते हाथ आवे सुख पावे, नहि तो महेनत सवि जावे रे ॥जि०॥ ए ॥ जैनागम गुरु विण धर्ममूल, केम पामीजें अनुकूल रे ॥ जि० ॥ ते आगम आसनो उपदेश, आप्त ते अरिहंत विशेष रे ॥ जि० ॥ १० ॥ यतः ॥ आगमाआप्तव

चनं, श्रासं दोपक्षयाद्भिः ॥ वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रूयाद्धेत्वसंनवात् ॥
॥ पूर्वढाल ॥ विण श्राधार श्राधेय न होय, गुरु विण श्रागम नही कोय रे
॥ जि० ॥ ज्ञान क्रिया संयुत गुरु जाणो, जिनवचन सम को न पीठाणो रे
॥ जि० ॥ ११ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र ठे जेहमां, वली देव गुरु धर्म एहमां
रे ॥जि०॥ नावथी दोय ए त्रिक श्राराधे,तव केवल ज्ञाननें साधे रे ॥जि०॥
॥ १२ ॥ योग ते एह दया जे पाले, दया विण योगनें गाले रे ॥ जी० ॥
नागो रहे वली शिर मुंमावे, मौन धरे वली राख लगावे रे ॥ १३ ॥ वांकलां
पहेरे जटानें धरावे,करे स्नान श्रग्निहोत्र ध्यावे रे ॥जि०॥ कंद मूल वली क
रे श्राहार, मृग प्रमुख चर्म वली धारे रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ वली पाखंम क
रे श्रधिकेरा, पंचाग्निप्रमुख बहुतेरा रे ॥ जि० ॥ चांड्रायणादिक तप बहु
तपतो,ध्यान नियमने जाप ते जपतो रे ॥ जि०॥ १५ ॥ देवार्चन वेद श्रा
गम जणतो, श्रातापना क्लेश न गणतो रे ॥ जि० ॥ एकादशी मुख व्रत
श्राचरतो, संन्यास प्रमुख श्रादरतो रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ नूमिशयन वली
विद्या साधे, बौधादिक दीक्षा श्राराधे रे ॥ जि० ॥ दया विना सवि फोक
ट जाणो, एहमां संदेह न श्राणो रे ॥ जि० ॥ १७ ॥ तात दया पालो न
ली रीतें, दया सर्वधर्मने जीते रे ॥ जि० ॥ पंचाग्नि तपमां नही लेश, दया
केरो कांइ प्रवेश रे ॥ जि० ॥ १८ ॥ नवमे खंमें श्रढारमी ढाल, कहे श्री
गुरु उत्तम वाल रे ॥ जि०॥ नृपिनें श्रीजयानंद नूपाल, केहवा करे जिव
प्रतिपाल रे ॥ जि०॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ५१५॥

॥ दोहा ॥

॥ तातजी सुणो पूरवदिशें,काष्टमां बलतो नाग ॥ दक्षिणदिशि सरडो
बले, धर्मनो केहो लाग ॥१॥ जूउ पश्चिमदिशि काष्टमां, उदेही संहार ॥
उत्तरदिशि बहु देडका, बतलावे निरधार ॥२॥ नू जल वायु श्रनल वली,
वनस्पति सहु जीव ॥ हेतुदृष्टांतें साधतो, श्रीजयानंद समीव ॥३॥ ते का
रण हे तातजी, तत्त्वातत्त्व विवेक ॥ करनारा तुमें पूज्य ठो, हिंसा न घटे
ठेक ॥ ४ ॥ इत्यादिक सुणी रायनां, वचन विचार पवित्र ॥ राजऋषि ज
य बूजीया, श्रीजयवात विचित्र ॥ ५ ॥ श्रादेय वचन तणा धणी, वयण
न निष्फल होय ॥ मेघधारा श्रमृत तणी, निष्फल कदि न जोय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ७गणीशमी ॥ नमो नमो मनक महा मुनि ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयराज ऋषि हवे, धुरथी पण वैराग रे ॥ नवव्रमणे उदवेगीया, वली नृप वयणनो लाग रे ॥१॥ धन धन ए तापस ऋषि ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धधर्मनुं मूल ठे, समकित धरे निज अंगें रे ॥ तापस पणुं हवे ठांमीनें, चारित्र मन करे रंगें रे ॥ ध०॥ २ ॥ तावत कोइ नर आवीनें, श्रीजयानंद नें नासे रे ॥ गुरु आव्या उद्यानमां, तव नृप एम प्रकाशे रे ॥ध०॥ ३ ॥ कोण गुरु कोण थानकें, तव उत्तर कहे तेह रे ॥ पूर्व उद्यानें चंपकवनें, पाउ धास्या गुणगेह रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ सूरि आगमसागरू, नाम तेहवो परि णाम रे ॥ पांचशें मुनिवरें परिवस्या, उतस्या निर्जीव ठाम रे ॥ध० ॥ ५॥ विजयराजऋषि साथ ठे, जे तपना करनार रे ॥ वचन सुणी नृप हरषियो, कुंद ज्युं मेघनी धार रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ विपुल देइ तस दाननें, नगर मांहे करे जाण रे ॥ अंतेउर पुर जन प्रत्यें, गुरु आगमनुं नाण रे ॥ध०॥ ७ ॥ तापस ऋषि आगल करी, श्रीजय तापस नाम रे ॥ अन्यलोक साथें थया, जोवा वात उद्दाम रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ सर्व ऋद्धिशुं परिवस्या, नृप शोना जेम इंद रे ॥ गुरु देखीनें साचवे, पंचानिगमनो वृंद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ वंदनविधि सवि जालवी, त्रण प्रदक्षिणा देइ रे ॥ सूरि वंदी वली वांदता, विजयादि क मुनि केइ रे ॥ ध० ॥ १० ॥ स्तुति करी श्रीगुरु राजनी, वेसे निज निज थान रे ॥ पितृव्य सहित राजा प्रत्यें, करे धर्मलाननुं दान रे ॥ ध० ॥ ११॥ देशना सरस सुधा रसें, मेघ धारा परें वरसी रे ॥ नव्य वृक्ष विकस्वर करे, गुण नवपल्लव फरसी रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ केइक देशना सांजली, सम्यग् दर्श न पामे रे ॥ देशविरति केइ आदरे, कइक महाव्रत कामे रे ॥ ध० ॥ १३॥ केइक समकेत व्रत लिये, तपसी श्रीजयराय रे ॥ वैरागें चारित्र आदरे,म होत्सव करे चक्रीराय रे ॥ ध० ॥ १४ ॥ गुरु वयणें जय मुनिवरु, विज यमुनीश्वर पासें रे ॥ ग्रहण आसेवना वेहु प्रत्यें, शिक्षा नित्य अन्यासे रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ गुरु तेम तात काका प्रत्यें, राजऋषिमां वडेरा रे ॥ अन्य वली मुनिराजनां, चरण नमे सहुकेरां रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ परिकर सहित घरें गया, त्रण खंम राज्य पाले रे ॥ आतम परें प्रजा पालतो,सर्व अनर्थनें टाले रे ॥ध०॥१७॥ दंम देवे अन्यायीनें, न्यायवंतथी रीजे रे ॥ तात पितृव्य संनारतो, अविरतिथी मन खीजे रे ॥ध०॥ १८ ॥ त्रण अर्थ निज अवसरें,

साचवतो नित्य नित्य रे ॥ राजगुणें राज्य पालतो, नीमकांत वहचित्त रे ॥ ॥ध०॥१९॥ यतः ॥ धर्मार्थकामेषु मिथो. व्याबाधां परिहृत्य यः ॥ प्रवर्त्तते कृतीनस्थ. तस्य लोकद्वयं शुभम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मुख्यफल नावथी बहु सुखी, इन्द्यथी संतति होय रे ॥ पुत्र एक लहु लक्षण धरा, बहु कलावंत ते जोय रे ॥ ध०॥ २०॥ शास्त्र बहु जाण यौवन लह्या,सत्यसंधा शूरवीर रे ॥ सुगुण मंतिवंत माहाशय घणो, प्रगुण आचार महाधीर रे ॥ध०॥२१॥ लोकप्रिय तात आणा करे, देश पुर गामनें गाम रे ॥ प्रौढ नृपकुलनी कन्या वरया, जैनशासनी अनिराम रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ महापराक्रमी विनयी घणा, करे क्रिया जेह निष्पाप रे ॥ तातनका नें न्यायी वली, करे गुरु देवनो जाप रे ॥ ध० ॥ २३॥ जिनवर पूजना नित्य करे, भुजबल जास अनंत रे ॥ हय गय सैन्यशुं परिवखा, कोश भंमार नरंत रे ॥ ध० ॥ २४॥ नूधर धीर गंनीर ते, रूपथी जीत्यो अनंग रे ॥ शशिपरें कीर्त्ति बहु उजली, कृतगुण जाण शुन संग रे ॥ ध०॥ २५ ॥ शत्रु उपर अति क्रूर ते, आण पाले घणी तास रे ॥ बहु प्रतापी परिवार अति, सार संस्थान वली जास रे ॥ ध० ॥ २६ ॥ श्रीजयानंदना पुत्रनी, ऋद्धि वरणवी कही जेम रे॥ खंम नवमे उंगणीशमी, ढाल पद्में कही प्रेम रे ॥ध०॥२७॥सर्वगाथा॥५४८॥

॥ दोहा ॥

॥ शतधनु उंचि देहडी, सोवन वर्ण शरीर ॥ सूर्यपरें तेजें तपे, समुद्र परें गंनीर ॥ १ ॥ लाख पूर्व दोय आउखुं, रोग रहित आणंद ॥ राज्य स्वर्ण मुद्रा धरे, न्याय माणिक सुखकंद ॥ २ ॥ चंद्रपरें कुवलय प्रत्यें, करतो नित्य विकाश ॥ तम राहु जस नवि ग्रहे, पसरे नित्य प्रकाश ॥३॥ सदानी कल्पवृक्ष परें, सुविधि नाथ जिनराज ॥ तेहनु तीर्थ प्रनावता, श्रीजयानंद माहाराज॥४॥दानमंमप पगपग करे. तिहां दीये दान अपार ॥ दीन अनाथ कोडयो गमे, संतोषे तेणी वार ॥५॥ स्थान शयन परदेशीनें, निपजावे बहु राय ॥ जिनप्रासाद घणा करे,पुण्यराशि मानुं थाय ॥६॥ ते पण गाम गामें करे,नगर नगर ठाम ठाम॥ कोडयो गमे ते नरावतो,जिनप्रतिमा शुन काम ॥७॥ तास प्रतिष्ठा करे वली,थापे देहरा मांहें ॥ पूजाविधि नित्य साचवे,धरतो अंग उमाहें ॥ ८ ॥ ग्रास ग्राम दीये देहरे, पुष्पवाडीयो चंग ॥ वावि प्रमुख चैत्य कारणे, नृप दीये धरी उछरंग ॥ ९ ॥ ५५६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ मोहनां मोतीडो० ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन राज्य सना नृप जोडी, अवर नूपाल रह्या कर जोडी ॥ साहेबा विनति सुणो मोरी, मोहना विनति० ॥ करकज जोडी कहे वनपाल; सांजलजो मुज वात रसाल ॥ सा० ॥ १ ॥ गुरु आगमनें वधावुं राय, नृपमन अधिक प्रमोद ते थाय ॥ विमलमति राजा कहे एम, कोण गुरु किहां ठे कह्यो जेम ॥ सा० ॥ २ ॥ वनपालक कहे सुणो नूपाल, गुरु गुणसायर षटकाय पाल ॥ महिमा जेहनो कह्यो न जाय, जगतमांहे गुण जास गवाय ॥ सा० ॥ ३ ॥ नाम लेतां जिह थाये पवित्र, त्रिजुवनमां अद्भुत चरित्र ॥ नामथकी दुःख विलयें जाये, गुण लखमी जस तनु नवि माय ॥ सा० ॥ ४ ॥ अवधिज्ञान मोहथी अधिकेरुं, प्रतिपाति नहिं तेह नलेरुं ॥ बहु साधु सेवे जस चरण, निरतिचार पाले जे चरण ॥ सा० ॥ ५ ॥ पृथु उद्यानमां निरवद्य गम, अवग्रह मागी रह्या गुणधाम ॥ राजऋषि चक्रायुध नामें, पाउ धारया ठे मुज आरामें ॥ सा० ॥ ६ ॥ सूरि तेजें सूरज जिपे, शांति गुणें शशीनी परें दीपे ॥ लब्धि अनेक निधान मुणिंद, प्रणमे सुर नर नारीवृंद ॥ सा० ॥ ७ ॥ पुर पुण्य होये जो अतोल, तो दर्शन थाये ए अमोल ॥ महाऋद्धें आवी मनरंगें, प्रणमो ते गुरु अति उठरंगें ॥ सा० ॥ ८ ॥ सांजली विकसे नृप रोम राय, अंग आजूषण वस्त्र अपाय ॥ पडह वजडावे नयरमां नूप, चालजो गुरु वंदन करी चूप ॥ सा० ॥ ॥ ९ ॥ करी सामग्री समग्र नरिंद, सैन्य सामंत प्रजानां वृंद ॥ वाजित्रनादें गगन ते गाजे, नृप आरोहे पटगज राजे ॥ सा० ॥ १० ॥ वीजाये चामर शशि परें श्वेत, उत्र धारे आतप नूनेते ॥ नीकलीयो गुरुवंदन हेतें, राणीयो सऊ थइ हवे तेतें ॥ सा० ॥ ११ ॥ रतिसुंदरी विजयादिक राणी, सहसगमे हुइ सपराणी ॥ निकले ते निज निज परिवारें, नृप पूठें बहु हर्षनें धारे ॥ सा० ॥ १२ ॥ सद्गुरु दर्शन दीठुं जिहारें, गजवरथी उतरे नृप तिहारें ॥ पंचाभिगम साचवे राय, त्रण प्रदक्षिणा दीये तेण ठाय ॥ सा० ॥ १३ ॥ विनय नम्र थइ धरिय विवेक, वंदना करे नक्तें अतिरेक ॥ विद्याचारण श्रमणनां धोरी, वंदे गुरु निजपाप विठोरी ॥ सा० ॥ १४ ॥ दीये धर्मलाज महालाजकारी, श्रीजयानंदनें बहु हर्षकारी ॥ श्रीजयानंद पण विकसित वयणे, गुरु सन्मुख जोइ रसजर नयणें ॥ सा० ॥ १५ ॥ गुरुस्तवना करे क

रकज जोडी, पाप तणा परपंचनें त्रोडी ॥ अनुक्रमें बीजा पण राजान, प रजा अंतेउर परधान ॥ सा० ॥ १६ ॥ इम प्रणमी स्तवना करता, नकिं पणी मनमंदिर धरता ॥ गुरुमुख आगल श्रीजयानंद. बेसे धरतो परमानंद ॥१७॥ उचितस्थानक निज निज सहु बेसे, जेम गुरु वयणां हृदयमां पेसे ॥ सुर असुरां नर पर्षद देखी. देशना दीये नव्य जीव गवेषी ॥ सा० ॥१८॥ नवमे खंमें वीशमो ढाल, श्रीजयानंदनें रास रसाल ॥ पद्म कहे सुणो बा ल गोपाल. श्रीगुरुथी होवे मंगलमाल ॥ सा०॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥५७६॥

॥ दोहा ॥

॥ देशना नवनी नाशिनी. साधारण दीये तोय ॥ श्रीजयानंद उद्देशि नें. प्रारंभे गुरु सोय ॥ १ ॥ क्षीराश्रव लब्धें करी,देवा नृप प्रतिबोध ॥ पूर वनव कही दाखवे. आप तणो संबंध ॥ २ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ निंदडी वेरण हुई रही ॥ ए देशी ॥

॥ आरामिक नवे प्रभु तणी, पूजानां हो फल पाम्यो सार के ॥ राजप्र साद घणो थयो. दोय नारी हो तिहां प्राण आधार के ॥ १ ॥ जिनपूजा फल सांनलो ॥ वली व्रतदानें हो फल होय अनंत के, पछी मतिसुंदर तुं थ यो, मंत्रीसर हो माहारो गुणवंत के ॥ जि०॥२॥ पूरवनवनी दोय प्रिया. ए नवमां हो थइ ताहरी नार के ॥ अतिबल राजरूपिकनें,अरिहंतनो हो लह्यो धर्मप्रकार के ॥जि०॥३॥ दोय प्रियाशुं आराधीयो, तुमें त्रण जण हो तिहांथी थया देव के ॥ तिहांथी चवीनें तुं थयो, त्रण खंमना हो ज न करता सेव के ॥ जि० ॥ ४ ॥ पूरवनव पत्नी थई, राज कुलमां हो कन्या रूपवंत के ॥ ते तुज रतिसुंदरी तथा, विजय सुंदरी हो सती महाशीलवंत के ॥जि०॥५॥ तुं नरवीर नृपति तणो, मतिसुंदर हो मंत्री निरमाय के ॥ धर्म पमाडयो रायनें, स्याद्वादें हो नाख्यो जिनराय के ॥ जि० ॥ ६ ॥ ध र्म आराधी सुर थयो, तिहांथी चवी हो चक्रबल नृपाल के ॥ तस सुत च क्रायुध थयो, हुं नरपति हो दोय श्रेणीप्रतिपाल के ॥ जि० ॥ ७ ॥ राज्य जोगवुं दोय श्रेणीनुं, तुं जीत्यो हो तेणे आव्यो वैराग्य के ॥ चार ज्ञानथी विशेषथुं, उपन्यो वली हो थयो चारित्र लाग के ॥ जि० ॥ ८ ॥ नारी प्रयो जनें तुजनें, बांधीनें हो खेपव्यो कारागार के ॥ पूर्वे तेणें तें मुज प्रत्यें, बांधीनें हो काष्ट पिंजर मजार के ॥ जि० ॥ ९ ॥ बंधन मांहेथी काढीयो,

पूरवनवें हो तुजनें ततकाल के ॥ उपकारी तुज जाणीनें, बहु मान्यो हो धरी प्रीति विशाल के ॥ जि० ॥ १० ॥ जेणें तें मुजनें ईहां मूकीयो, राज्य कन्या हो दीधी घणी प्रीति के ॥ आपणनें नित्य वाधती, नवी लंघे हो कोइ कर्मनी रीति के ॥ जि० ॥ ११ ॥ धर्मोपकारनें कारणें, आव्यो हुं हो वली सांजलो वात के ॥ राय मंत्री नवे आपणें, श्रावकनो हो कह्यो धर्म विख्यात के ॥ जि० ॥ १२ ॥ कल्पवृक्ष समो धर्म ते, शुद्धनावें हो आराध्यो ताम के ॥ राज्य संपद प्रबली जहां, नोग सुख लह्या हो एणी परें अनिराम के ॥ जि० ॥ १३ ॥ अतिशय श्रद्धा तुज हती, तेणें अतिशय हो लह्यो मुजथी ऋद्धि के ॥ कर्मथी कोइ बलीयो नही, तेम धर्मथी हो पामे सवि सिद्धि के ॥ जि० ॥१४॥ नेत्र गयां के सुजे नही, इत्यादिक हो पूरव नवें नेद के ॥ तें मुनिनें नाख्युं हतुं, तेणें आंख्यो हो गइ एणें नव एह के ॥ जि० ॥१५॥ पहेलीयें कुल निंदा करी, बीजीयें कह्युं हो निलनें थो अंध के ॥ वेश्याकुलें बीजी अंध थई, वली निल्लनो हो पामी संबंध के ॥ ॥ जि० ॥१६ ॥ पश्चात्तापयकी वली, कर्म खपीयां हो रह्यो कांइक अंश के ॥ तेणे इण नवें उदय थयो, नोगव्या विण हो नही कर्मनो नृंश के ॥ ॥ जि० ॥ १७ ॥ सिंहनो नव हवे सांजलो,पुरोहित मुज हो वसुसार जे हुंत के ॥ नास्तिक धर्म शिरोमणि, में दीधुं हो अपमान अत्यंत के ॥जि० ॥ १८ ॥ काढी मूक्यो देशथी, नवमांहे हो नमीयो बहु काल के ॥ परिव्राजक थयो कोइ नवे, थयो ज्योतिषी हो सुर प्रेम विशाल के ॥ जि० । ॥ १९ ॥ बहुनव नमीयो तिर्हायकी,तुज पितृव्य हो सुत थयो कुमार के। पापानुबंधी पुण्यथी, थयो महोटो हो नामें सिंहसार के ॥ जि० ॥२० । तें पुरोहितनें एम कह्युं, चंमालनो हो श्यो करवो संग के ॥ तेणें तुज द प दीधो एणे,चंमालनो हो नवि कर्मनो नंग के ॥ जि०॥ २१ ॥ नवमे ए में ए कही, एकवीशमी हो वर पर्वे ढाल के ॥ कर्म म करजो को सही कर्म करी हो होये बहु जंजाल के ॥ जि० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ८०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नास्तिक धर्म पूरव कथ्यो, तेणे थयो कर्म जमाय ॥ दोष नथ्यो नि र्गुण थयो, मायी क्रूर स्वनाव ॥ १ ॥ अन्यायी निर्दयी घणो, क्रोधनें नि नोग ॥ लोनी द्वेषी आकरो, पापमतिनो लाग॥२॥धर्म द्वेषी निरंकुश वली

रिहंत धर्म विशेष ॥ धर्म नामें ग्मारद धरे, अधर्मनो उपदेश ॥ ३ ॥ अ धर्म घडु हाल। वली, नें कल्लोघडु अपकार ॥ तोषण ६प धरे घणो, पूर्व नरें निदमार ॥४॥ तुल घडु मली पणे वहा, ने दिनयी कें पाप ॥ आज लगें पहानमा, पामे घडु संताप ॥ ५ ॥ पुण्य पाप फल व्यक्तिना, हेतु पूरव नव नाण ॥ धर्म अधम कर्यो तुमें, तेह नदा तुम न्याण ॥६॥ शुद्ध धर्म आपण देहु, न्यागणि ज्ञानशीति ॥ पुण्यानुबंधी पुण्यथी, जोगवीयें सुख नित्य ॥७॥ ॥ मानली नृप मानज मया, हण एक करे विचार ॥ पूरव नव आलोच नो, निस्मय लहा अपार ॥ ८ ॥ श्रीजयानंद प्रमुख सवे, लघुकर्मा ते जी व ॥ जातिस्मरण पार्मीया, आवरण गयो अतीव ॥ ९ ॥ ६०८ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ करमाग आपा गुरुजी प्राहुणा ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी एम नणे, प्रहु तुम वचन प्रमाण ॥ तुम वयणे मुज उपनुं, जाति समरण नाण ॥ १ ॥ महारा ज्ञानी गुरुजी, वाणी सुणी में अमृत सारिखी ॥ ए आंकणी ॥ जेम तुमें जाख्युं तेम लह्युं, वली नमे गुरुना पाय ॥ कर जोडीनें विनवे, स्वामी करो सुपसाय ॥ ॥मा०॥२॥ तात पितृव्य स्वामी माहारा, दीक्षादिनथी वात ॥ ही ही वली कहो आगले, सघलो मुल अवदात ॥ मा० ॥ ३ ॥ मोक्ष जाय तिहां लगें कहो, तव गुरु कहे सुणो राय ॥ गुरु साथें दीक्षा लेई, विचरे ते मुनिराय ॥ मा० ॥ ४ ॥ चार बरस लगें कीधलो, शिक्षा दोय अन्यास ॥ ज्ञान क्रिया दोय शिखीया, जिन शासन गुणवास ॥ मा० ॥ ५ ॥ निरतिचार चारित्रि या, विचरे महियल मांह ॥ बोध करे नवि जीवनें, शुद्ध क्रियानो उत्साह ॥ मा० ॥ ६ ॥ गुरु आणा नित्य पालता, गुरुनी करे अति नक्ति ॥ बाल वृद्ध मुनिवर तणुं, वैयावच्च यथाशक्ति ॥ मा० ॥ ७ ॥ तप करता अति आकरां, वली ते शम दमवंत ॥ राग द्वेष वर्जित मुनि, निःस्पृहनें गुण वंत ॥ मा०॥ ८ ॥ निर्मम नें कदाग्रह नहीं, सघले अप्रतिबंध ॥ सत्तावीश गुण साधुना, पाले ते निर्द्वंद्व ॥ मा०॥ ९ ॥ परिसह उपसर्ग करा, न चले ते तिल मात ॥ पृथिवीनें पावन करी, पाली प्रवचन मात ॥ मा० ॥१०॥ अणसण करीय समाधिमां, सनत कुमार माहिंद ॥ देवलोकें सात अयर नें, अधिक आउखे दोय इंद ॥ मा० ॥ ११ ॥ सुख जोगवी ते इंद्रनां, मा हाविदेह मजार ॥ निन्न निन्न देशें थशे, नरपतिनो अवतार ॥ मा० ॥१२॥

प्रौढराज्य तिहां पालता, लेशे संयम सार ॥ केवल लही मुकतें जशे, शाश्वत शिव सुख सार ॥ मा० ॥ १३ ॥ सांजली सूरि मुखथकी, तात पितृव्य विरतंत ॥ हरष लही प्रणमी करी, नरपति वली पूछंत ॥ मा० ॥ १४ ॥ महारुं तेम सिंहसारनुं, तेम मुज नारीनुं जेह ॥ नवसरूप स्वामी जापीयें, करीय प्रसाद मुज एह ॥ मा० ॥ १५ ॥ हुं जव्य के अनव्य छुं, जव्य तो इण जव सिद्धि ॥ अथवा आगें नवांतरें,जांखो करी हित बुद्धि ॥ मा० ॥ ॥१६॥ अथवा मुज प्रिया आदिके, केम लेहशे निरवाण ॥ अथवा नही जाये ते कहो, सघलुं मांहि मंमाण ॥मा०॥ १७ ॥ सूरि कहे सुणो नृपति, तुज पत्न्यादिक जेह ॥ आसन्नसिद्धि ते जव्य छे, इतर अयोग्य कहेह ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेहमां तुं तथा तादृशी, नारीयो पूरवनी होय ॥ तेम हुं पण एणेहिज नवें, सहुनें शिवसुख होय ॥ मा० ॥ १९॥ देशे ऊणा लाख वरसनो, केवलीनो पर्याय ॥ ज्ञान उद्योतें जगतनें, तारता करी सुपसाय ॥ ॥ मा० ॥ २० ॥ पृथिवीनें पावन करी, चरणकमलें चित्त लाय ॥ चोराशी लख वरसनुं, पाली मुनि पर्याय ॥ मा० ॥ २१ ॥ सकल कर्मनो क्षय करी वरशो शिववधू सार ॥ हुं पण केवल लही करी, करी जव्यनें उपकार ॥ ॥ मा० ॥ २२ ॥ केइक वर्ष विहरी करी, पामीश शाश्वत सुख ॥ सिंहनी वात हवे सुणो, जेम पामे अतिदुःख ॥ मा० ॥ २३ ॥ नवमे खंमें बावीशमी, पद्म विजय कही ढाल ॥ श्रीजयानंदना रासमां, पुण्यथी मंगलमाल ॥ मा० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ६३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहसार पुर बाहरें, नीसरीयो ते जाम ॥ जमतो पृथिविमां फिरे, देश नगर पुर ग्राम ॥१॥ उदर जरणनें कारणे, जिहां जिहां करतो वास ॥ तिहां तिहां आवे आपदा,मूके मुख निस्सास ॥ २ ॥ तिहां डुर्निक्ष पडे वली, ते हनुं कारण एह ॥ ज्ञानी निमित्तिया वयणथी, जाणी निर्व्रंछे तेह ॥३ ॥ लोक कोप करी एहनें, काढी मूके ताम ॥ सिंह सेवे जे नृपनें, प्रायें जाये जमधाम ॥ ४ ॥ लोक कहे पगलां बुरां, एहनां दीसे जाय ॥ शरण आधार जे आपणो, मरण लह्यो जूडे राय ॥ ५ ॥ ताडन तर्जना बहु करे, काढी मूके तास ॥ घोर पाप फल अनुजवे, नवि पामे कहीं वास ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ चक्रायुध सूरि कहे सांनलो, सिंह तणो अवदातजी ॥ पाप करी बहु व्यसननें सेवी, अशुन ध्यान दिन रातजी ॥ च० ॥ १ ॥ किहांयक चोरीमां पकडायो, मरण लह्यो तेणी वारजी ॥ पाप तणां फल कडुआं जाणी, पाप न करशो किवारजी ॥ च० ॥ २ ॥ सातमी नरकें घोर पापथी, उपन्यो आपद गणजी ॥ महादुःख सागर नोगवतो तिहां, बावीश अयर प्रमाणजी ॥ च० ॥३॥ तिहांथी नीकली मत्स्यादिकनां, अंतरे नव करी एमजी ॥ साते नरकें वार अनंती, उपन्यो नही कहीं खेमजी ॥ च० ॥ ४ ॥ सर्व तिर्यंचनें देव हीणामां, तेम दुष्ट नरकमां जायजी ॥ वार अनंति फरी फरि नमशे, पाप तणे सुपसायजी ॥ च० ॥ ५ ॥ एणी परें पाप विपाक आकरो,नव अनंत दुःखदायजी ॥ तास दृष्टांत ए सिंहनो नाख्यो, कर्म कथ्यां नवि जायजी ॥च०॥६॥ एम जाणी नवि पाप न कीजें,पुण्य मारग आदरीयेंजी ॥ जेहथी नव दुःख राशि न लहीयें,वहेलुं शिवसुख वरीयेंजी ॥च०॥७॥ तुज सायें जे दीक्षा लेशे, अंतर रिपु जय करताजी ॥ तुजप्रिया तुज सेवक बीजा, नरपति पण व्रत वरताजी ॥च०॥८॥ स्वर्गादिकमां सुरसुख लेहीने, महाविदेह उपजशेजी ॥ उत्तम चरण पाली ते सर्वे, अल्पनवें शिव लहेशेजी ॥च० ॥९॥ एह सर्व जे तुजनें नाख्युं, ते मुज बुद्धें न जाणोजी ॥ पण हुं विहरमान जिन वंदन,माहाविदेहनें गणोजी ॥च०॥१०॥ तिहां श्रीपुंमरकिणि नगरीयें, जिनवर करे व्याख्यानजी ॥ नव्यजीव प्रतिबोधन कारण, जेने सहुये समानजी ॥ च० ॥ ११ ॥ देशनामां तुज चरित्र वर्णव्युं, प्रभुजीयें करी विस्तारजी ॥ धुरथी मांमीनें जे नाख्यो, ते में सुण्यो अधिकारजी ॥ च० ॥ ॥१२॥ अवधिज्ञानें में जाण्यो हुंतो, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ क्षायिक ज्ञानीनी वली साखें, दृढता थइ दृष्टांतजी ॥ च० ॥ १३ ॥ तुजनें प्रतिबोधन हुं आव्यो,तें मुज कर्यो उपकारजी ॥ पूरवनवें जिनधर्म पमाडयो, तेहनो प्रत्युपकारजी ॥ च० ॥ १४ ॥ तुजनें ए संसार असारथी, तारवा आव्यो जाणीजी॥ देउं देशना नवनय हरणी, सांनल तुं मुज वाणीजी ॥ च० ॥ १५ ॥ नवमे खंमें ढाल त्रेवीशमी,श्रीजयानंदनें रासजी ॥ पद्मविजय कहे सांनलो नविजन, सुणतां लीलविलासजी ॥ च० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ८५४ ॥

॥ दोहा ॥

सुधा मुधा करे देशना, सांजली श्रीजयानंद ॥ कर जोडी विनयें करी,विकसित मुख अरविंद ॥ १ ॥ निद्रा विकथा वरजतो, निद्रा करे व्याघात ॥ निद्रा शवनी वानकी, कर्मबंध पण थात ॥ २ ॥ निद्रावंतनें सहु हसे, जागंतां नर जेह ॥ साचुं प्रायें नवि वदे, सांजली न शके तेह ॥ ३ ॥ अमली परें ते धूणतो, न रहे कांइ शुद्धि ॥ उंघे श्रुत उंघ्या तणुं,जागंतां वाधे बुद्धि ॥ ४ ॥ उंघण नर उंटज समो,कंटकमां मुख जाय ॥ द्राख मंमप सम जिन वयण, ढांकी ते उंघाय ॥ ५ ॥ तेम विकथा वर्जो वली, जेहथी बहु जंजाल ॥ जवनजानु जीव रोहिणी, जेम पामी दुःख जाल ॥ ६ ॥ विकथाथी उंघ्यो जलो, नवि मोले व्याख्यान ॥ विकथा कारक महीष सम,जांख्यो प्रगट प्रमाण ॥ ७ ॥ जखा टांकामां नाखीयें, मूतर चलुक प्रमाण ॥ विकथा ते वितथा करे, वक्ता तणुं वखाण ॥ ८ ॥ तेमाटे तुमें मत करो, निद्रा विथा कोय ॥ एम सुणतां प्रमुदित होये, वक्ता श्रोता दोय ॥ ए ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुरवर जलो,जिहां पांमुराजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदजी सांजलो, नरजव लही म करो प्रमाद रे ॥ फरि फरि नरजव दोहिलो, पामवो एम शास्त्र संवाद रे ॥ १ ॥ पामवो एम शास्त्र संवाद, सुणो नवि प्राणीयां, जिनवाणी रे ॥ जिनवाणी विन्नाण मुणिंद, कहे नविहित जणी, गुण खाणी रे ॥ ए आंकणी ॥ कायस्थिति अति जीवनी, पुढवी अप अनलनें वाय रे ॥ असंख्याती उत्सर्पिणी,रहे जिन्न जिन्न एक काय रे ॥ रहे० ॥ २ ॥ वनस्पतिमांहे जो रहे, अनंति उत्सर्पिणी थाय रे ॥ बि ति चउरिंदिय कायमां, संख्यातो काल रहाय रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ पंचिंद्रियमांहे जो करे, जव सात आठ संलग्ग रे ॥ संसरतां बहु दुःख लहे, नही सुख तणो संसग्ग रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जव एकेक सुर नरकनो, एम जाये प्रमादमां काल रे ॥ त्रस पणुं अति दोहिलुं, थावरमां रहे बहु काल रे ॥ था० ॥ ५ ॥ त्रसपणुं लहे दोहिलुं, पंचेंद्रियपणुं जगसार रे ॥ विकलेंद्रिय दीसे घणा, हीण इंद्रिय वली संसार रे ॥ ही० ॥६ ॥ पंचेंद्रिय लह्यो परवडां,पण डुर्लज मनु अवतार रे॥ सुर तिरि नरकमां बहु जमे, लहेतो तिहां दुःख अपार रे ॥ ल० ॥ ७ ॥ नरजव पामे दोहिलो, आरय खेत्रनो संबंध रे ॥ म्लेछादिक दीसे घणा,बहु पाप करम करे अंध रे ॥त्र०

॥८॥ खेत्र लहे कुल दोहलुं, कुल पामे उत्तम जाति रे ॥ जाति लहे बुद्धि दोहिली,बहु जड जगमां विख्यात रे ॥ज०॥ ए ॥ बुद्धि लहे गुरु दोहिला, जे निर्ममनें निरमाय रे ॥ गुरु पामे पण दोहिलुं, श्रवणे सांजलवुं थाय रे ॥ श्र० ॥ १० ॥ अन्यतीर्थी सेवे घणा, अथवा करे कातीया जंग रे ॥ धर्म सुण्यो गुरु संगतें, डुर्लन श्रद्धानो रंग रे ॥ डु० ॥ ११ ॥ द्रव्य नाव डुग जेदथी, सरधा तिहां द्रव्यथी जाण रे ॥ तत्त्वरुचि जिन वयणमां, य यपि परमारथ अजाण रे ॥ य० ॥ १२ ॥ नावथी परमारथ लहे,अथवा वली दोय प्रकार रे ॥ निश्चयनें व्यवहारथी, शुद्ध हेतु ते होये व्यवहार रे ॥ शु० ॥ १३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रना, निश्चयथी शुन परिणाम रे ॥ कारक रोचक दीपकें, ए त्रिविध जेद होये नाम रे ॥ ए० ॥ १४ ॥ श्रद्धा सम किरिया करे, ते कारक समकित होय रे ॥ गौतम प्रमुख तणी परें, तेतो दीसे विरला कोय रे ॥ ते० ॥ १५ ॥ रुचि मात्रज श्रद्धा होये, जेम श्रेणिक प्रमुख नरिंद रे ॥ रोचक समकेत ते लहो, करणी विण जे नवि वृंद रे ॥ क० ॥ १६ ॥ दीपक समकेत जाणीयें, देशनादिकें दीप समान रे ॥ दीपे पण निजमां नही, होये अनव्य प्रमुख एणी वाण रे ॥ हो० ॥ ॥ १७ ॥ समकेत रोचक जो लहे, पण कारक अतिडुर्लन रे ॥ विषय कषायमां मुंजीयो, वली पुत्र कलत्र आरंन रे ॥ व० ॥ १८ ॥ यतः ॥ मुक्का निर्कखिस्स विमाण वस्स,संसार निरुस्स विअस्स धम्मे ॥ न तारिसंडुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिउ बाल मणोहराउ ॥ १ ॥ ए ए असंगं समइक्कमित्ता, मुहु त्तराचेव नवंति सेसा ॥ जहा महासागरमुत्तरित्ता, नईनवेअविगंडा समा णा ॥२॥ सल्लं कामा वित्तंकामा, कामा आसिविसोवमा ॥ कामा पत्थे माणा, अकामा जंति डुग्गइं ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ डुर्गति दायक काम जे, पंमित करे तेहनो त्याग रे ॥ जे कारण ग्रहीनें होये, अनासक्तियें कामनो राग रे ॥ अ० ॥ १९ ॥ ब्रह्मव्रती पर्वनें दिनें, अन्यदिवस तणुं परिमाण रे ॥ ती व्राचिलाष न तेहमां, एहवो होये ग्रही घर वाण रे ॥ ए० ॥ २० ॥ एम जाणी ब्रह्म आदरे, नहीतो सदारा संतोष रे ॥ निजनरतार संतोषिणी, ना रीनें एम व्रत पोष रे ॥ ना० ॥२१॥ सर्वथकी ब्रह्म आचरे, घर नार त्यजी अणगार रे ॥ शीलांगरथ मुनिराजनो, परिमाण अढार हजार रे ॥ प०॥ ॥ २२ ॥ करण योगें त्रिक जेदथी, आहारादिकसंज्ञा चार रे ॥ इंद्रिय पं

चनो नय कह्यो, पृथिव्यादिक दशपद धार रे ॥ पृ०॥ २३ ॥ नू जल ज्वल न अनिल तरु, विकलेंद्रिय वली त्रण नेद रे ॥ पंचेंद्रियने अजीव ए, द श नेदनो संयम वेद रे ॥ द० ॥ २४ ॥ खात्यादिक दश धर्मथी, जोडतां हो ये सहस अढार रे ॥ एहवा अढार रथें करी, गुण नरिया श्रीअणगार रे ॥ गु० ॥२५ ॥ ते अणगार पणुं धरे,जगमां धन्य तस अवतार रे ॥ तस उपमान न जगतमां, जे सकल गुणा शिरदार रे ॥ जे० ॥ २६ ॥ इंद्र चं द्र नमे चरणने, उत्कृष्टथी तेणे नव सिद्धि रे ॥ सात आठ नव उंलंघे न ही, ए समयमांहि प्रसिद्ध रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ तेणे संयम लेवुं घटे, हवे करी संसारनो त्याग रे ॥ जनम मरणनां नय टले, वरवा शिव सुंदरी ला ग रे ॥ व० ॥ २८ ॥ आतम तत्त्वें रमण होये, परनाव प्रसंग न कोय रे ॥ चरण धरमना गुणथकी, चिदानंद प्रगट क्रमें होय रे ॥ चि० ॥ २९॥ ढाल चोवीशमी एणी परें, नवमे खंर्में सुरसाल रे ॥ पद्मविजय कहे धर्म थी, होये घर घर मंगल माल रे ॥ हो० ॥ ३० ॥ सर्वगाथा ॥ ६७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्रायुध चारित्रीया, दीधो एम उपदेश ॥ रोम रोम सुणी हरषीया, श्रीजयानंद नरेश ॥१॥ दान सुपात्रें दीधलुं, पूर्व संस्कार ते पाम ॥ सफल थयो उपदेश ते,दोलत न गमे दाम ॥२॥ वधतो थयो वैराग्य ते,पूर्व वैराग्य प्र माण ॥ पयमां साकर जेम पडे, समज्यो तेह सुजाण ॥३॥ चित्त थयुं चा रित्रनुं. कहे गुरुने किरपाल ॥ हितदेशक हित वांछकू,मुज हित करुं मया ल ॥४॥ प्रसन्न थइ इहां पडखीयें, जइनें हुं निज धाम ॥ पुत्रने राज्य था पी करी, आवुं छुं हुं आम ॥ ५॥ नव उदवेग लह्यो नलो, राज्यें न रीजे मन्न ॥ उत्सवथुं इहां आवीनें,आदरें तुम्ह आसन्न ॥ ६ ॥ दक्षपणे दीक्षा ग्रहुं,तुमची पासें ताम ॥ म करो विलंब ए काममां,धर्मी गयो निजधाम॥७॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ मीठा मीठुं बोलीनें शुं रीजवो रे ॥ ए देशी ॥

॥ राजन मीठुं बोलीनें सहु रीजवो रे, रखे कोइ प्रजानें खीजवो रे ॥ ॥ रा० ॥ पुत्र थापे महामहोत्सव करी रे, शीखामण दीये नृप हित धरी रे ॥ रा० ॥ सहोदरनी परें पालजो प्रजा रे, मत करजो कोइनी कूडी क जा रे ॥रा० ॥१ ॥ दूजे कामधेनुनी परें रे, जो सुखणी प्रजा होये चिरपरें रे ॥ रा० ॥ नृपनें नंमार ए चालतो रे, सुखमां प्रजालोक जो माहालतो

रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आशिष वचन परजा तणे रे, नरपति वाधे दोलत घणे रे ॥ रा० ॥ तेणे परजानें तुमें पालजो रे, पूर्वजनी रीति अजुआलजो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ परजा नृपनें लोपे नही रे, नवि नृप परजानें कोपे सही रे ॥ रा० ॥ परजा दानादिक जे करे रे,वली धर्म महोत्सव बहु आदरे रे ॥ रा० ॥४ ॥ ऋद्धिनें जशथी परजा वधे रे, वली अपर गुणे पण जे सधे रे ॥ रा० ॥ तेम तेम नृपनें आणंद घणो रे, परजा उपर प्रेमज घणो रे ॥ ॥रा०॥५॥ धन्य माने प्रजा सुत एहवी रे. पुण्यवंती प्रजा सुजनें हवी रे ॥ ॥रा०॥ ए राज्यस्थिरीनावें रहे रे, जस कीरति वित्त जगमां लहे रे ॥रा०॥ ॥ ६ ॥ वत्स राज्य पालजो एणीपरें सदा रे, जेम धर्म सीदाये नवि कदा रे ॥ रा० ॥ चिंतामणि परें उत्तम लह्यो रे, धर्म ते वीतरागनो जे कह्यो रे ॥रा०॥७॥ ते समकेतसार इछित दीये रे, वडबीज परें ते वधीजीयें रे ॥रा०॥ शत शाखायें ते विस्तरे रे, डुष्ट वयण वायुयें नवि फर फरे रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ पुरमां सात व्यसन निवारजो रे, अणहुंता पुरमां म लावजो रे॥रा०॥ देइ पुत्रनें शिक्षा एणीपरें रे, ते पुत्र सहु अंगीकरे रे॥ रा०॥९॥हवे स्वजन प्रधाननें पाणीया रे,महेता मसुदी जे राजीयारे॥रा०॥ पूठे सहुनें नर राजीयो रे.पुत्रपत्नीनें गुणगण गाजीयो रे॥रा०॥१०॥प्रमुदित करी सहु परजा प्रत्यें रे,करे महोत्सव दिन दिन वाधते रे॥रा०॥ जिनवर चैत्यें महोत्सव करे रे, आठ दिवस लगें नवनव परें रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ वजडावे पडह अमारिना रे, परराज्य मांहे श्रीकारना रे ॥ रा० ॥ नक्ति करे साधर्मिक तणी रे, वस्त्र आहार दानादिक अति घणी रे ॥ रा० ॥१२ ॥ पच्चवीशमी नवमा खंममां रे, ढाल जाखी रंग अखंममां रे ॥ रा० ॥ सुणो श्रोता पद्मविजय कहे रे, शासनरागी आनंद लहे रे ॥ ॥रा० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शासन उन्नति जेम होये, तेहवां कार्य अनेक ॥ निज आतम हित कारणे, करता धरिय विवेक ॥ १ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥ टुंक अने टोडावडें रे, मेंदीनां दोय रुंख, मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयानंदना सुत नला रे,श्रीकुलानंद नरिंद ॥ संयम रंग लागो॥ सामग्री अजिपेकनी रे, मेलवे उपकरण वृंद ॥ सं०॥१ ॥ विधिपूर्वक मक्त

न करे रे, वाजित्र गीत संगीत ॥ सं० ॥ बावना चंदन चरचीया रे, अंग लूही सुपवित्त ॥सं० ॥ २ ॥ पुष्पमाल्य पहेरें वली रे, दिव्य वस्त्र अलंकार ॥ सं० ॥ शिबिकामां आरोहीनें रे, पृथिवी पालण हार ॥ सं०॥ ३ ॥ सिंहासन नृप सोहीयें रे, छत्र चामर श्रीकार ॥ सं०॥ सर्व आडंबर रुद्धिशुं रे, देतो दान अपार ॥ सं० ॥ ४ ॥ प्रधाननें वली पागीया रे, परजानो समुदाय ॥ सं० ॥ महेता मसुदी सहु मल्या रे, मंगल गीत गवाय ॥ सं०॥ ॥ ५ ॥ नानाविध नाटक करे रे, पात्र विचित्र विशेष ॥ सं० ॥ बिरुदावली बहु बोलता रे, बंदीजन सुविशेष ॥सं०॥६॥ छत्र चामर हयगय नला रे, मंगल कुंज बजाय ॥ सं० ॥ अष्टमंगल आगल चले रे, ध्वज मोहोटो लहकाय ॥ सं० ॥ ७ ॥ चतुरंगी सेना चले रे, विद्याधर परिवार ॥सं०॥ सुर नर कोडी गमे मल्यां रे, देवांगना नही पार ॥ सं० ॥ ८ ॥ पुष्पवृष्टि करे सुरवरा रे, वाजे दुंदुभि खास ॥ सं०॥ वाजित्र पडछंदें करी रे, नरीयो वर आकाश ॥ सं० ॥ ए ॥ अनुक्रमें नगर मध्ये थइ रे, आवे तस उद्यान ॥ सं० ॥ शिबिकानें मूके तदा रे, मानुं मूके मान ॥ सं० ॥१० ॥ अंग नमावी विधि थकी रे, वंदे गुरुना पाय ॥ सं० ॥ स्वजन वर्गनें पूछतो रे,अंग वैराग्य न माय ॥ सं० ॥ ११ ॥ धीर गंभीर शिरोमणि रे, नरपति श्री जयानंद ॥ सं० ॥ वस्त्र आभूषण मूकतो रे, धरतो परमानंद ॥सं०॥१२॥ पंच मुष्टि करे लोचनें रे, आवे गुरुनी पास ॥ सं० ॥ संयम मुजनें दीजीयें रे, मुजने अति उल्लास ॥ सं०॥ १३ ॥ दीक्षा गुरु पण आपता रे, करता नवि उपकार ॥ सं० ॥ साथेवाह परें नरपति रे, साथें बहुपरिवार ॥सं०॥ ॥ १४ ॥ लक्खोगमे जन आदरे रे, दीक्षा दक्ष सुजाण ॥ सं०॥ अंतेवर राणी घणी रे, सार परिवार वखाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ पटराणी रतिसुंदरी रे, प्रमुख लीये व्रतनार ॥ सं०॥ पुत्र पौत्रादिक सहस्रोगमे रे, तेम नृप एक हजार ॥सं०॥१६॥ ते पण निज अंतेउरी रे, साथें लीये व्रत जार ॥सं०॥ जन जनपदमां नृपकुलें रे, हर्ष प्रमोद अपार ॥ सं० ॥१७॥ घर घर एहिज वातडी रे, लीजीयें संयम सार ॥ सं० ॥ हवे कुलानंद जे राजीया रे, परवर्यो निज परिवार ॥ सं० ॥ १८ ॥ श्रीजयानंदना तातनें रे, तेम श्री श्रीजयानंद ॥ सं० ॥ तेम गुरु चक्रायुध तणा रे, प्रणमी पद अरविंद ॥ ॥ सं० ॥ १९ ॥ धर्म वादी नित्य आदरे रे, श्रीजिनधर्म विशाल ॥ सं० ॥

परजानें पण तेणीपरें रे, धर्म करावे नृपाल ॥ सं० ॥ २० ॥ पग पग तात संभारतो रे, करतो तस बहु मान ॥ सं० ॥ हवे श्री श्रीजयानंदजी रे, गुरु सार्थे असमान ॥ सं० ॥ २१॥ विचरे संयम साधता रे, विनय तणा भंमार ॥ सं० ॥ सामाचारी शीखीया रे,गुरुपासें विधि सार ॥सं०॥२२॥ तिमहिज पोतें आचरे रे, करे श्रुतनो अभ्यास ॥सं०॥ अनुक्रमें थोडा कालमां रे, द्वा दशांगधर खास ॥सं०॥२३॥ नवमे खंम छवीशमी रे,पद्मविजयें कही ढाल ॥ सं० ॥ मुनिगुण सुणतां गावतां रे,होवे मंगल माल ॥सं०॥२४॥०३०॥

॥ दोहा ॥

॥ समितिपंच समिता सदा, गुप्ति त्रण आगार ॥ अप्रमादी अकिंचनी असंगी अणगार ॥ १ ॥ साधुगुणशुं शोभता,निर्ममनें निःकषाय ॥ तप क रता अति तीव्र ते, निर्भेदनें निर्माय ॥२॥ श्रीजयानंद सूरिपदें, गुरु थापे गंभीर ॥ लायक नाना लब्धिनें, धरता साहस धीर ॥ ३ ॥ आणा गुरुनी आदरी, पृथिवी करे पवित्र ॥ सूत्र भणावे साधुनें, निरति चार चरित्र ॥ ॥४॥ छत्रीश छत्रीशी गुणे, शोभित जास शरीर ॥ गुरु पासें आव्या गुणी, वंदननें वड वीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ कर कंकुनें करुं वंदना हुं वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ चक्रायुध सूरी सरू, हुं वारीलाल ॥ विचरे बहु परिवार रे ॥ हुं०॥ सार्थे श्रीजयानंदजी ॥ हुं० ॥ चरण करण व्रत धार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ए मुनिनें करुं वंदना हुंवारी लाल ॥ ए आंकणी ॥ चार ज्ञानी चारित्रीया हुं० ॥ चक्रायुध सूरिराय रे हुं० ॥ लखमी पुरनें ढूकडा हुं० ॥ आवी शा खा पुर ठाय रे हुं० ॥ ए० ॥ २ ॥ आयु अंत जाणी करी हुं० ॥ श्री जयानंदनें ताम रे हुं० ॥ गछभार सहु सोंपीयो हुं० ॥ गणेशपद अभिरा म रे हुं० ॥ ए० ॥ ३ ॥ कोइक तीरथ जइ करी हुं० ॥ उपधि शिष्य करी त्याग रे हुं० ॥ पादपोपगम आदरे हुं० ॥ अणशण परम वैराग्य रे हुं० ॥ ए० ॥ ४ ॥ त्रीश दिवस अणसण रह्या हुं० ॥ घातीकर्म खपाय रे ॥ हुं० ॥ केवलज्ञान गुणें करी हुं० ॥ लोकालोक जणाय रे हुं० ॥ए०॥ ५ ॥ शैलेशी करणे करी हुं० ॥ शेष कर्म करी नाश रे हुं० ॥ अजर अमर सु ख शाश्वतां हुं० ॥ वरिया शिव आवास रे हुं० ॥ ए० ॥ ६ ॥ आनन्द हे

कल्याणक पण एणे गिरि, कांइ जिनवर केरां थाशे रे ॥ पूर्वे थया वली एणे गिरें, बहु मोक्ष गया वली जाशे रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥ महिमावंत ए क्षेत्रमां, श्रीजयानंदजी आवे रे ॥ गिरि उपर अणसण करे, कांइ पादपोप गम गावे रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥ षटदिन अणसण पालीयुं, काइ योग निरोध करंत रे ॥ शैलेशी करणें करी, कांइ शेष कर्म करे अंत रे ॥ श्री०॥ १५ ॥ त्रीजो नाग संकेलीनें, करे अगुरु लघु अवगाह रे ॥ महानंद पद पामी या, कांइ जिहां सुख अव्याबाह रे ॥ श्री० ॥ १६ ॥ समश्रेणि एक समय मां, कांइ लोकायें कस्रो वास रे ॥ सिद्ध बुद्ध समृद्ध थया, कांइ अजराम र अविनाश रे ॥ श्री० ॥ १७ ॥ फरी नवि नवमां आववुं, जिहां एक ति हां अनंत रे ॥ देश प्रदेशें फरसीनें, रह्या असंख्य गुणा नगवंत रे॥ श्री० ॥ १८ ॥ पण निज निज स्वरूपमां, रहे चिदानंद नगवंत रे ॥ अरूपी को इ कोईनें, कांइ पीडा ते न करंत रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥ संकीरण पण नवि होयें, कांइ अनंत चतुष्टयवंत रे ॥ ज्ञान दर्शन सुख वीर्यनां, कांइ नोगी तेह महंत रे ॥ श्री० ॥ २० ॥ अशरीरी अणाहारी जे, कांइ निरुपाधिक सु ख वरीया रे ॥ जेहनी उपम जग नही, जे नवसायर निस्तरीया रे ॥श्री० ॥ २१ ॥ नाण दंसण उपयोगीया, कांइ समयांतर पलटाय रे ॥ पण एक समयमां सवि लहे, मुख्यता गौणता कहेवाय रे ॥ श्री० ॥ २२ ॥ परम ज्योति परमातमा,कांइ परम ब्रह्म स्वरूप रे ॥ जाणे पण नवि कही शके, कांइ केवलज्ञानी अनूप रे ॥श्री० ॥ २३ ॥ अठावीशमी ढाल ए, कांइ न वमे खंमें नाखी रे ॥ श्रीजयानंदना रासमां,कांइ तेहनुं चरित्र ठे साखी रे ॥ एम पद्मविजय चित्त राखी रे, शिवसुखनां थाउं अनिलाषी रे,परनाव दीउं सहु नाखी रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥ सर्वगाथा ॥ ७९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तत्क्षण मलीया देवता, चार निकाय मिलंत ॥ श्रीजयानंद वियोग नो, अतिशय शोक धरंत ॥ १ ॥ पण निर्वाण तणो करे,उत्सव अति वि स्तार ॥ प्रायें तीर्थंकर परें, प्रमुदित थइ अपार ॥ २ ॥ उत्सव करा नंदी श्वरें, अहाइ मह सार ॥ करीनें निज थानक गया, सुनिगुण चित्त संनार ॥ ३ ॥ एणी परें श्रीजयानंदजी, केवली जे ऋद्धि राय ॥ गुण गाया गुणी

जन तणा, मनमां रूपे न माय ॥ ४ ॥ ए श्रीजयानंदनी कथा, गुणगण महिम विशाल ॥ नणे गुणे नवि सांनले, तस घर मंगलमाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ तूठो तूठो रे मुज साहेब जगनो तूठो ॥ ए देशी ॥

॥ फलियो फलियो रे मुज सकल मनोरथ फलियो ॥ श्रीजयानंदनो रास करंतां, नाग्य अपूरव नलियो रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मुनिगुण गान नीरें करी माहारो, पाप पंक खलनलीयो ॥ नाम गोत्र सुणतां महा निर्जरा, सूत्रमांहे एम कलीयो रे ॥ मुज० ॥ २ ॥ मुनिगुणनां बहु मान करंतां, जन्मनुं फल हुं रलीयो ॥ आधि व्याधि उपद्रव सवि दूरें, मुजथी जाये टलीयो रे ॥ मुज० ॥ ३ ॥ पृथिवि मोक्ष साम्राज्यनी लखमी, श्रीजयानंद ते मलियो ॥ बाह्य अंतर शत्रु दोय जींत्या, ए बहु नाग्यथी बलीयो रे॥मुज०॥४॥ धीरज गुण महोटो मेरु सम, कोइ वातें नवि चलीयो ॥ जे मुनि दान दीये एणी रीतें, तस डुःख जाये गलीयो रे ॥ मुज० ॥५॥ रंनाफल सम श्रीजयानंदना, गुणमां दोष न उलियो ॥ लोह समान हुं तेहमां मुनिगुण, रसकूपी रस ढलीयो रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ मुनि गुण नक्तिथकी हवे माहारो, डुःखनो दिवस ते दलियो ॥ मुनिगुण गातां अंतरंग मुज, अनुनव हेजें हलीयो रे ॥ मुज० ॥ ७ ॥

॥ अथ कलश प्रशस्तिः ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तपगछपति श्रीजगतचंद सूरि, चौंआलीशमे पाटेंजी ॥ जावज्जीव जेणें आंबिल कीधां, तपगछ तेहिज माटेंजी॥१॥तस पट्टे श्रीदेवेंद्रसूरि, गातारथ उपगारीजी ॥ तेंतालीशमे धर्मघोष सूरि, ताख्यां बहु नरनारीजी ॥२॥ सोमप्रन सूरि तस पट्टराजें, सुडतालीशे गमेंजी ॥ सोमतिलक सूरि अडतालीशमे, पाटें गुणगण धामजी ॥३॥ तस पट्टे श्रीदेवसुंदरसूरि, गुणवंता गुणरागीजी ॥ सोमसुंदर सूरि पाट पचाशमे, किरियावंत वैरागीजी ॥ ४॥ मुनिसुंदर सूरि एकावनमे, पाटें गुण गण दरीया जी ॥ सहस्रावधानी बालपणाथी, ताख्या जिहां विचरीयाजी ॥ ५ ॥ अध्यातमकल्पद्रुम नामें, संतिकरं जेणें कीधोजी॥ एकशो आठ हाथनो कागल, लखीनें गुरुने दीधोजी॥६॥ एकशो आठ वर्तुलिकाना रव, निन्न निन्न उलखीयाजी॥ उपदेश रत्नाकर जेणें कीधो, वादिगोकुल शांढ लखीयाजी ॥ ७ ॥ इत्यादिक बहु ग्रंथना कर्त्ता, श्रीजयानंद चरित्रजी॥ जेणें कीधुं न्हाना रस संयुत्त, बहु वैराग्य पवित्रज

॥ ८ ॥ तेह चरित्रथी रास रच्यो में, उंठो अधिको लिखायोजी ॥ ते मुज मिच्छाडुक्कड होजो, पाप रति न रखायोजी ॥ ए ॥ तस पाटें रत्नशेखर सूरि, जे अतिशय गुणवंताजी ॥ लक्ष्मीसागर सूरि त्रेपनमे, पाटें जेह महंताजी ॥ १० ॥ सुमतिसाधु सूरि पाट चोपनमे, हेमविमल सूरि जाणोजी ॥ आणंद विमल सूरि उप्पन्नमे, पाटें गुणमणि खाणोजी ॥ ११ ॥ जेणें किरिया उद्धार करीनें,कुमति वृंद बहु काप्योजी ॥ विजयदान सूरि तस पटधर, बहु प्रतिष्ठा मह थाप्योजी ॥१२॥ तस पाटें श्रीहीरविजय सूरि, पातशाह दीधो मानजी ॥ विजयसेनसूरि तस पटधर, ग्रंथतणुं बहु ज्ञानजी॥१३॥तस पाटें श्रीविजयदेवसूरि, पाट शाठमें जाणुंजी ॥ विजयप्रनसूरि तस पाटें,एकशठमें मन आणुंजी ॥१४॥ विजयरत्नसूरि तस पटधर, श्रीविजयखिमा सूरिंदजी ॥ विजयदया सूरीश चोशठमे, पाटें जेम दिणंदजी ॥ १५ ॥ विजयधर्म सूरि तस पाटें,पुण्यवंत वडनागीजी ॥ विजयजिनेंद्रसूरि ठाशठमे,पाटें अधिक सोनागीजी ॥ १६ ॥ विद्यमान वरते जसु आणा, तेहनें राज्यें कीधोजी ॥ रास एह सुंदर मुज मतिसम, मनहमनोरथ सीधोजी ॥ १७ ॥ संवत अढार अठावन वर्षे, लींबडी रही चउमासजी ॥ पोष शुदि एकादशी दिवसें, कीधो एह अन्यासजी ॥ १८ ॥ अल्पबुद्धें असमंजस नांख्युं, ते सज्जन शोधाज्योजी ॥ खलबुद्धें जे दूषण दाखे, ते नवि मनमां लाज्योजी ॥ ॥ १९ ॥ नव खंमें करी नव नव रचना, नवरसमयी निरधारजी ॥ संघ आग्रहथी पूरण कीधो, हुउ जयजयकारजी ॥ २० ॥ श्रीविजयदेवसूरीश पटोधर, विजयसिंह गणराया जी ॥ तास शिष्य श्रीसत्यविजय बुध, पंमितजन सोहायाजी ॥ २१ ॥ कपूरविजय तस शिष्य सोनागी,खिमाविजय तस शिष्यजी ॥ पंमितप्रवर सुलक्षण लक्षित, जिनविजय सुजगीशजी ॥ ॥ २२ ॥ तास शिष्य समुदायमां उत्तम, उत्तमविजय मुणिंदजी ॥ समतावंतनें श्रुत अन्यासी, नरिया गुणगण वृंदजी ॥ २३ ॥ तस पदपद्म शिलीमुख सरिखुं, पद्मविजय अनिधानजी ॥ एह रासनो रचना कीधो, मुनिगुणनें बहु मानजी ॥ २४ ॥ जिहां लगें रवि शशी दीपनें सागर, जिहां लगें मेरु गिरिंदाजी ॥ तिहां लगें एह रास थिर होजो,वांचजो नविजन वृंदाजी ॥ २५ ॥ साडा आठ सहसनी उपर,श्लोक अग्यार गणायाजी ॥ ढाल बशें दोय कलशें कीधो, शांति पास सुपसायाजी ॥ २६ ॥ नणशें गणशें जे न

त्रि प्राणी, लेशे लच्छि विशालाजी ॥ अनुक्रमें शाश्वत पदवी पामी, वरशे मंगलमालाजी ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥८३२॥ प्रथमखंमे ढाल॥१५॥गाथा॥ ४४३॥ उक्तश्लोक॥१३॥ द्वितीयखंमेढाल॥२३॥गाथा ॥९६२॥ उक्तश्लोक ॥ २० ॥ तृतीयखंमे ॥ ढाल ॥२३॥ गाथा ॥ ७२९ ॥ उक्तश्लोक ॥१३॥ चतुर्थखंमे ढाल ॥३३॥ गाथा ॥ ८७६ ॥ उक्तश्लोक ॥ १० ॥ पंचमखंमे ढाल ॥ ९ ॥ गाथा॥२६७ ॥ उक्तश्लोक ॥११॥ षष्ठखंमे ढाल ॥२२॥ गाथा ॥ ६८७ ॥ उक्तश्लोक ॥१९ ॥ सप्तमखंमे ढाल ॥९॥ गाथा ॥२६६॥ उक्तश्लोक ॥ २ ॥ अष्टमखंमे ढाल ॥२८॥ गाथा ॥ ८२५ ॥ उक्तश्लोक ॥ ॥ ५ ॥ नवमखंमे ढाल ॥ २९ ॥ गाथा ॥८३२॥ उक्तश्लोक ॥ १९ ॥ सम ग्ररासनी ढाल ॥२०२॥ समग्रग्रंथ गाथा ॥५८७७ ॥ सर्वग्रंथना उक्तश्लो क, सवैया, दोहा, अने समस्या मलीने ॥११२ ॥

॥ इतिश्रीमडुत्तमविजयगणि विनेय पंमित श्रीपद्मविजय गीणविरचि ते श्रीश्रीजयानंदराजर्षिकेवलिचरित्रे प्राकृतप्रबंधे श्रीजयानंदराजेंद्र दीक्षा केवलज्ञानादिवर्णनोनामा नवम खंमः समाप्तः॥ तत्समाप्तौ च श्रीश्रीजया नंदकेवलिचरित्रं समाप्तम् ॥

इति मुनिश्रीपद्मविजय गणिविरचिते श्री श्राद्धव्रत
पालनफलमहात्म्योपरि श्रीश्रीजयानंद
केवली रासः संपूर्णः ॥

आ ग्रंथने प्रथमथी आश्रय आपनारा सुज्ञजनोनां नामो.

वालोचर. प्रां. मुर्शीदावाद.
रायलक्ष्मीपतिसिंहजी बाहादूर. १०
अजीमगंज. प्रां. मुर्शीदावाद.
रायधनपतिसिंहजी बाहादूर. २
भावनगर.
शा. पानाचंद तेजा. बुकसेलर. १०
वोरा. हठीसिंह कवेरचंद. ५
श्री जैनज्ञानवर्धक सभा. हा० मंत्री दीपचंद छगनलाल. ५
वोरा. अमरचंद जसराज. ३
शा. नरोत्तमदास भाउ. २
शा. नानचंद रायचंद. २
श्री जैनधर्मप्रसारक सभा. २
वोरा. नानचंद करशन. २
वोरा. अमरचंद ठाकरशी. २
शा. हीराचंद लखमीचंद. २
शा. मूलचंद वि. नथुभाई. २
शा. मगनलाल सुंदरजी. २
शेठ. दामोदर भाणजी. २
शंघवी. शिवचंद वेला. २
भावसार. कवेर नाराण. १
शा. सोमचंद उद्धवजी. १
शा. नानचंद आणंदजी. १
शा. गांधा वेला. १
वोरा. छगन जीवन. १
शा. वकोर शामजी. १
शा. पुरुषोत्तम हेमजी. १
शा. लल्लुभाई कानजी. १
शा. चुन्नीलाल दोलतचंद. १
शा. गिरधर बावा. १
शा. दामोदर हरजीवन. १
दोशी. आणंदजी पुरुषोत्तम. १
शा. नानचंद ताराचंद. १
शंघवी. चतुर्भुज धनजी. १
पारेख. मोतीचंद रामजी. १
श्री जैनधर्मश्रुभेच्छकसभा तरफथी पारेख. शामजी रामजी. १
शा. रायचंद हीराचंद. १
वोरा. मगनलाल हरखचंद. १
शा. हरगोविंद जीवा. तथा मगन लाल नानचंद. १
शा. तलकचंद नारणजी. १
शा. हठीसंग गांगजी. १
शा. गोविंदजी दीपचंद. १
शा. ठाकरशी वर्धमान. १
मास्तर. अमरचंद वसतचंद. १
शा. हेमचंद मंगल. १
शा. नानचंद गांधा. १
शा. लखमीचंद कल्याणजी. १
शा. वकोर उजमशी. १
पारेख. रघुनाथ नथु. १
शा. छगन मूलजी. १
शा. हरिचंद देवचंद. १
दोशी. फतेचंद हुकमचंद. १

शा. छगन उक्का. १
झवेरी. भीमचंद धर्मचंद. १
शा. प्रागजी दीपचंद. १
पारेख. हेमचंद मोनजी. १
शा. दीपचंद माणेकचंद. १
शा. गंभीर शामजी. १
शा. मोतीचंद साकलचंद. १
वोरा. छगन देवचंद. १
शेठ. माणेकचंद भाणजी. १
दोशी. जगजीवनदास धर्मचंद. १
पारेख. जगजीवनदास कस्तूरचंद. १
दोशी. दामोदर दयाल. १
वकील. वकोर ककल. १
शा. नगीनदास मोतीचंद. १
शा. हरजीवन कीला. १

पालीताणा.

श्री जैनविद्याशाला. ५
मास्तर. तलकचंद माणेकचंद. १
शेठ. नाराण हीरजी. १
शा. माणेकचंद जेठा. १
मेता. जीवा पीताम्बर. १
श्री जैनज्ञानउत्तेजकसभा. हा॰
शा. छगन जेठा. १

धोलेरा.

शा. हीराचंद मोतीचंद. १

माठा.

सलोत. उमेदचंद झवेरचंद. १

शा. लालचंद हरजीवन तथा अमीचंद भाणजी. १
दोशी. उद्धवजी देवचंद तथा वनमाली रायचंद. १
सलोत. दुर्लभजी गुलाबचंद. १

धुलिया.

शेठ. सखाराम भाई डुलनदास. १

गारीयाधार,

शा. गोपालजी गोविंदजी. १
शा. हीराचंद गोविंदजी. १

वरल.

दोशी विठ्ठल वेचर. १

वढवाण.

शा. मंगलजी जसराज. १
शा. गोकल भाणजी. १
शा. गोविंदजी भकन. १

अमरेली.

जैनज्ञानशालातरफथी शा. वीरचंद जीवा. १

अगाशी.

शा. केवल खीमचंद. २

कुंभला.

शेठ. वेचर राघवजी. १

महुवा.

शा. शूरचंद सवाईचंद. १
शा. गांगालाल आणंदजी. १

वरतेज.

शा. हेमचंद प्रागजी. १

सुरत.

शा. कल्याणचंद पानाचंद. १

शीहोर.

शा॰ कुंवरजी मूलजी. १

गोघा.

श्रीजैनज्ञानदीपकसना. हा०

शा. नीखानाई मानचंद. १

श्रीजैनविद्याशाला. १

शंघवी. खूपचंद पीताम्बर. १

दोशी. उत्तमचंद दामजी. १

दोशी. नरोत्तम पुरुषोत्तम. १

वला.

मेता. कालिदास मोतीचंद. १

जैनविद्याशाला. १

धोरांजी.

शा. वावा नाणजी. १

शा. जगजीवनदास सोनागचंद. १

कच्छ मांमवी.

शेठ नागजी विसनजी. १०

वीरमगाम.

शेठ वीरजी वालजी. १

वेन परशन. १

वगसरा.

दोशी. कपूरचंद करशनजी. २

पालण पुर.

रा. रा. मंगलजीनाई ईश्वरजी. २

शा. नाथानाई जेचंद. १

सायला.

शा. मामर नथु. १

गोंमल.

शा. नारणजी मूलजी. १

लींवडी.

शा. गिरधर लालचंद. १

चोकसी. कालिदास वजेचंद. १

पारेख नानचंद जेसंग. १

वडोदरा.

गांधी फतेचंद लालनाई. १

झवेरी. हीराचंद ईश्वरदास. १

झवेरी. माणकलाल घेलानाई. १

नारतवर्षीय जैनपुस्तकालय. १

मुंबई.

शेठ. परबत लधा. ५

शेठ. शामजी नरसी केशवजी. २

शेठ. फकीरचंद प्रेमचंद. २

शेठ. वीरचंद राघवजी. १

मोदी. अनुपचंद जगजीवन. १

मेता. मोतीचंद झवेरचंद. १

शा. वाडीलाल वोघानाई. १

शा. न्यालचंद वेलचंद. १

मारवाडी. राजाजी उमाजी. १

झवेरी. नेमचंद मेलापचंद. १

मारवाडी. खुमाजी प्रेमचंद. १

मारवाडी. दीपाजी कृष्णाजी. १

शेठ. तलकचंद माणेकचंद. १

शेठ. वीरचंद दीपचंद. १

शेठ. विठ्ठलदास मोतीचंद. १

शेठ. करमचंद कल्याणजी. १

शेठ. उद्धवजी देवजी. १